णमो सिरिवद्धमाणस्स ।

श्रीभूपेन्द्रसूरि जैनसाहित्यसमिति ग्रंथाङ्क १५

विजयराजेन्द्रसूरीश्वर–श्रीधनचन्द्रसूरि–भूपेन्द्रसूरीश्वरेभ्यो नमः ।

पूर्वाचार्यविरचित–

श्रीगच्छाचारपयन्ना ।



छाया सह गुजराती विवेचनयुक्त

पूज्य सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय भट्टारक श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज ।

–उपाध्याय श्रीगुलाबविजयजी महाराज ।

प्रकाशक—

भूपेन्द्रसूरि जैनसाहित्यसमिति

आहोर (मारवाड)

ज. सं. २४७१ विक्रम सं. २००२

रा. सं. ३९ मूल्य रु २ इस्वीसन् १९४५

समजणने माटे तेमणे आ गच्छाचारपयन्नानु गुजराती भाषामा विवरण रच्यु अने आ ग्रथनी विशेष उपादेयता माटे (१) मूळ गाथा, (२) तेनी संस्कृत छाया (३) मूळ गाथानो अर्थ अने (४) विस्तृत विवेचन-आ क्रम राख्यो छे

"गच्छाचार" ए नाम ज ग्रथनी सामग्री शु छे ते आपोआप जणावे छे साधु साध्वीना आचारविशेषनु अने कर्तव्यनु ज आमा मुख्यत्वे विवरण छे ग्रथ रोचक बने ते माटे प्रसगे प्रसगे कथाओ पण आपवामा आवी छे

आ गच्छाचारपयन्नानी हस्तलिखित प्रति स्व० श्रीविजयभूपेन्द्रसूरिजी महाराजना जोवामा आवी तेमणे तेने जनोपकारी जाणी मुद्रित करवानी इच्छा करी तेवामा तेओ स्वर्गवासी थया त्यारबाद व्या या वर्तमानाचार्य श्रीविजययतीन्द्रसूरिजीनी अध्यक्षतामा स्व० श्रीविजयभूपेन्द्रसूरिजीना ग्रथोने प्रकाशित करवा माटे "श्रीभूपेन्द्रसूरि जैनसाहित्यसमिति" नी स्थापना थई तेना कार्य माटे (१) साहित्यरसिक उपाध्याय श्रीगुलाबविजयजी महाराज (२) तपस्वी मुनिराज श्रीहर्षविजयजी महाराज (३) शातमूर्ति श्रीहसविजयजी महाराज अने (४) मुनिश्री कल्याणविजयजी महाराजनी नियुक्ति करवामा आवी

आ समितिए अत्यारसुधी १७ ग्रथो प्रगट कर्यां छे; आ गच्छाचार पयन्नो ए पदरमो ग्रथाङ्क छे अत्यार सुधीना प्रकाशनोनी माफक आ ग्रथ पण समाजना आदरने पात्र थशे आशा छे के-गुणग्राही सज्जनो आ ग्रथनो सनिदाप लाभ लई अमारो प्रयास सफळ करे

आचार्यश्रीनी जूनी गुजराती भाषाने रोचक ने शिष्ट भाषामा मूकवा माटे भावनगरनिवासी पडित वालुभाई रुगनाथे करेल सुप्रयास माटे आभार मानवामा आवे छे मुद्रणकार्यमा सारी काळजी राखवा आनद प्रेसना मालिक शेठ गुलाबचद देवचद पण धन्यवादने पात्र छ

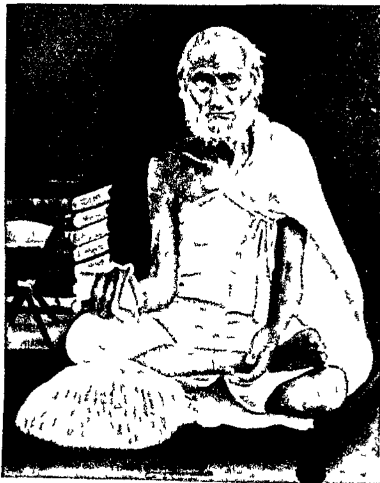
प्रूफ सुधारवा विगेरेमा पण पूरती काळजी राखवा छता दृष्टिदोष अने प्रेम दोषने कारणे कई खामी रही गई होय तो वाचकवर्ग सुधारी वाचवा कृपा करे.

वि स २००२ }
आषाढी }
पूर्णिमा }

सचालक—
श्रीभूपेन्द्रसूरिजैनसाहित्यसमिति
वाया-एरणपुरा मु. पो. आहोर (मारवाड)

श्रीसौधर्मबृहत्तपागच्छाधिपति-जगत्पूज्य-आचार्यवर—

जन्म-वि. सं. १८८३ पौष सुदि ७ भरतपुर   दीक्षा-वि. सं. १९०४ वैशाख सुदि ५ उदयपुर



श्रीपूज्यपदवी वि. सं. १९२४ वैशाख सुदि ५ आहोर क्रियोद्धार सूरिपद-वि. सं. १९२५ आषाढ वदि १० जावरा

श्रीमद्-विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज ।

स्वर्गवास-वि. सं. १९६३ पौष सुदि ७ मु० राजगढ़

मु. महोदय प्रेस भावनगर

विषयानुक्रम–

आचार्यस्वरूपनिरूपण–पहेलो अधिकार

यतिस्वरूप-त्रीजो अधिकार

साध्वीस्वरूपनिरूपण-त्रीजो अधिकार



मूलगाथानाम् अकारादिक्रम—



॥ वन्दे श्रीवर्द्धमानजिनेश्वरम् ॥

अनन्तलब्धिनिधानाय श्रीगौतमस्वामिने नमः ।

श्रीगच्छाचार–पयन्नो ।

[श्रीविजयविमलगणिविरचित टीकाना आधारे]

जैनाचार्य-श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरकृत-

सरल अने रोचक विवेचन युक्त

विवेचन-कर्तानु मंगलाचरण—

समस्तवस्तुपर्याय–स्तोमसत्यप्रकाशकः ।
निर्मोही शिवनारीशो, वीरोऽस्तु ज्ञानदो मम ॥ १ ॥
गच्छाचारप्रकीर्णस्य, टीकां लोकसुभाषया ।
कुर्वे वृत्त्यनुसारेण, चाऽधिका कुत्रचित्त्वपि ॥ २ ॥

श्लोकार्थ—सकल पदार्थोना पर्यायसमूहने सत्य स्वरूपे प्रकाशित करनार, मोहरहित, शिववधू-मोक्षरूपी स्त्रीना स्वामी श्रीवीरजिनेश्वर परमात्मा मने ज्ञान दाता थाओ गच्छाचारप्रकीर्णकनी टीकाना आधारे लोकभाषा-गुजराती भाषामां हुं अनुवाद-विवेचन करुं छुं आ अनुवादने मनोगम्य तथा सरल बनाववा माटे टीकामां उल्लेख करतां पण प्रसंगोचित विशेष विवेचन कर्युं छे

* * *

अनंतलब्धिनिधान श्रीगौतमस्वामी गणधरमहाराजे पर्षदा चोत्रीश अतिशय धारी, वाणीना पांत्रीश गुणोथी विभूषित श्रीवर्द्धमानस्वामीने सुविहित गच्छसबंधी पृच्छा करी, परम दयानिधि, अंतर्यामी श्रीवीर भगवंते भव्य प्राणीओने संसार सागरथी पार पमाडवामां नौका-जहाज समान, जन्ममरणरूपी दुःखदावानलने प्रशांत करवामां मेघधारा समान चारित्रधर्मनी प्ररूपणा करीने "गच्छाचारपयन्ना" प्रमाणे सुविहित गच्छनुं स्वरूप कही संभळाव्युं ते गच्छाचारपयन्ना स्वपरोपकारक

समजी, अथवा आ अनुपम ग्रंथनो सर्वसामान्य जनसमूह पण लाभ लई शके ते माटे लोकप्रिय गुजराती भाषामां तेनुं विवेचन करवानो में यथाशक्ति प्रयास कर्यो छे

मंगलादिनी आवश्यकता—

कोई पण ग्रंथनी शरूआत करतां प्रथम मंगल, अर्थसंबंध, नाम अने प्रयोजन ए चार हेतुओ दर्शाववा जोईए आना संबंधमां कोई एवी शंका करे के-'मंगळ करवानुं कारण शुं ?' तेनो उत्तर ए छे के-' विघ्नोनी उपशांतिने माटे मंगळ करवुं जोईए, मंगळ करवाथी विघ्नपरंपरा विनाश पामे छे आ उपरांत मंगळ करवानो बीजो हेतु ए छे के-ग्रंथने मंगळरूप मानीने शिष्यवर्ग तेनुं अध्ययन करवा उद्यमशील थाय त्रीजो लाभ ए पण छे के-शिष्टपुरुषोनी परंपरानुं अनुकरण पण सचवाय. आपणा पूर्वाचार्य महाराजाओ प्रथम मंगळ करीने ज ग्रंथप्रारंभ करता, एटले अन्य वर्ग पण तेमनी प्रणालिकानुं अनुकरण करवुं ज जोइए—आ बधा हेतुओने लक्षमां राखीने ज ग्रंथकर्ता महापुरुष पोताना इष्टदेव श्रीमहावीर परमात्मा-अपरनाम श्रीवर्द्धमानस्वामीने नमस्कार करवारूप मंगळ करे छे

वळी श्रोतागणनी ग्रंथ-श्रवण करवामां प्रवृत्ति थाय, तेमनी रुचि वृद्धि पामे तेमज शिष्टाचारनुं पालन थाय ते माटे अर्थसंबंध, नाम अने प्रयोजन ए त्रणे हेतुओ पण दर्शाववा जोईए. प्रस्तुत ग्रंथमां अमुक संबंध-वर्णन आवशे, ग्रंथनुं अमुक अभिधान छे अने ते ग्रंथ सांभळवाथी ज्ञानवृद्धि थवा साथे निर्जरा पण थशे एम श्रोतागणने जणाय तो ते वर्ग तेमां प्रवृत्ति करवा प्रयत्नशील बने

आटला समाधान पछी पण कोई वळी शंका करे के-अर्थसंबंधादि त्रण हेतुओनी आवश्यकता स्वीकारीए छीए पण मंगळ करवानुं शुं काम छे ? कारण के ज्ञानाध्ययन करवुं ते ज महामांगलिक छे तो पछी बीजुं मंगल शा माटे करवुं ? आ शंकाना प्रत्युत्तर ए छे के-श्रेय-कल्याणकारी कार्य हमेशा विघ्नव्याप्त होय छे कह्युं पण छे के-' श्रेयांसि बहुविघ्नानि ' जे पापकार्यनी प्रवृत्ति करे तेने विघ्न शुं नडवानुं छे कारण के पापरूप कार्य ते ज विघ्नरूप छे, एटले विघ्नमां विघ्न कयुं नडे ? आथी बराबर स्पष्ट थाय छे के श्रेयकार्यमां विघ्न न नडे ते माटे मंगळ करवुं ज जोइए प्रस्तुत विषयमां शास्त्रश्रवण ए श्रेय-कल्याणकारी कार्य छे, कारण के तेथी स्वर्गादि संपत्ति यावत् शिवसुखनी प्राप्ति थाय छे आ उपरांत ग्रंथकर्तानो ए पण आशय होय छे के-आ ग्रंथनुं रचनाकार्य निर्विघ्ने साद्यंत परिपूर्ण थाय, शरीर संबंधी व्याधिओ उपशमी जाय अने प्रफुल्ल चित्तथी ग्रंथनी रचना करी सुखरूप पूर्णाहुति थाय भाष्यकार पण आ संबंधमां जणावे छे के-

बहुविग्घाइ सेयाइ, तेण कयमंगलोवयारेहिं ।
सत्थे पयट्टिअव्व, विज्जाए महानिहीए व्व ॥ १ ॥

उपरना विषयनी पुष्टि करता भाष्यकार पण उपर्युक्त गाथामा कहे छे के-'श्रेयकार्यमा घणा विघ्नो आवी पडे छे, माटे मंगल उपचार-मंगळ करीने पछी ज ग्रंथ रचवामा उद्यम करवो. जेम महानिधान तेमज महाविद्या वखते मंगळ करवामा आय छे तेम आ शास्त्र संबंधमा पण समजी लेवु.' महानिधान-भंडारनु स्थापन करवु होय त्यारे गोळ प्रमुखनु दान करवामा आवे छे तेमज विद्याभ्यास करती वखते पण मंगळ करवामा आवे छे, तेवी रीते ग्रंथरचनामां पण मंगळनु अवलंबन लेवु ज जोईए.

आटला कथनथी समाधान न थता प्रतिवादी पुनः शंका करे छे के-ग्रंथनी शरूआतमा मंगळ करीने ग्रंथगौरव-ग्रंथविस्तार शा माटे करो छो ? जो विघ्ननी ज शांति करवी छे तो मनमा नमस्कार करवाथी अगर तो तप आदिक करवाथी विघ्नोनु उपशमन थइ जशे. आनो उत्तर पहलो ज के-तमे कहो तेम थई शके छे, पण ते भावमंगळ छे. ते अन्यना जाणवामा आवी शकतु नथी. ग्रंथकर्ताने तो मानसिक नमस्कारादिकथी जरूर लाभ थाय पण प्रमादी शिष्यने तेमज श्रोताने शो लाभ थाय ? मंगळना अभावे विघ्न उपस्थित थता तेमनु अध्ययन अपूर्ण रही जाय. जो ग्रंथनी आदिमा मंगळ होय तो तेनु अध्ययन कर्या पछी ज प्रमादी शिष्यने आगळ वधवानु रहे, अने मंगळना सामर्थ्यथी ते निरुपद्रव बनी पोतानु इच्छित कार्य पण पूर्ण करी शके. वळी ग्रंथना प्रारंभमा इष्टदेवने नमस्कार विगेरे जोईने तेने श्रद्धा थाय के आ ग्रंथ आगमानुसारी छे, तेमा वीतराग भगवंतने नमस्कार छे माटे ते उपादेय छे एवी प्रतीति पण थाय. आ बधा कारणोथी पण मंगळनी आवश्यकता सिद्ध थाय छे. कह्यु छे के-

मंगलपुव्वपवत्तो, पमत्तसीसो वि पारमिह जाइ ।
सत्थिविसेसणाउ, गोरवादिह पयट्टेज्जा ॥ १ ॥

मंगळनी पुष्टि करनारी आ गाथामा कहेवामा आव्यु छे के-'मंगल करीने प्रवृत्ति करेल प्रमादी शिष्य पण शास्त्रनो पारगत-पारगामी थाय छे, माटे आदर मान-बहुमानपुरस्सर जरूर मंगळ करवु.'

आम छता पण वादी पोताना बचावमा एक वधु दलील रजू करी कहे छे के-मंगळ विनाना पण घणा ग्रंथो जोवामा आवे छे अने तेवा ग्रंथो श्रोता समूह सांभळे पण छे तो तमे मंगळ माटे आटलो बधो आग्रह शा माटे राखो छो ? आनो सरळ अने स्पष्ट जवाब ए छे के-मंगळ ए शिष्टाचार पाळवानु कारण छे. पूर्वधर पुरुषो कोई पण मनवांछित कार्य माटे प्रवृत्ति करता त्यारे

मंगळ करीने ज-इष्टदेवने प्रणाम करीने ज प्रवृत्ति करता मूळ ग्रंथकर्ता पण पूर्वधर पुरुष छे एटले पण मंगळनी आवश्यकता प्रतिपादन थाय छे कह्युं छे के—

शिष्टाः शिष्टत्वमायान्ति, शिष्टमार्गानुपालनात् ।
तल्लङ्घनादशिष्टत्वं, तेषां समनुपद्यते ॥ १ ॥

' शिष्टमार्गना पालनथी-वडील पुरुषोए परमावेल नीतिरीतिने अनुसरवाथी शिष्टपणुं प्राप्त थाय छे अने तेओनी मर्यादानुं उल्लंघन करवाथी लघुता प्राप्त थाय छे' आ कारणथी ज पूर्वाचार्योए मंगळ करवानी प्रणालिका अंगीकार करी छे आवी रीते मंगळनी पूर्ण रीते पुष्टि कर्या पछी हवे संबंध, अभिधेय अने प्रयोजन-ए त्रणे कारणोनी दृढता करे छे

असंबंध ग्रंथ होय तो श्रोतावर्ग तेमां रस ले नहिं पंडित पुरुषो पण दश दाडिमादिक असंबंध वाक्यनी माफक तेमां प्रवृत्ति करे नहिं वळी नाम विनानो ग्रंथ होय तो पण श्रोतागण सांभळे नहिं कागडाना दांतनी परीक्षानी जेम ते निष्फळ ज जाय वळी ग्रंथनुं कशुं प्रयोजन न होय तो मंदबुद्धिवाळा प्राणीओ तेना श्रवणमां तथा अध्ययनमां उद्युक्त ज न थाय, कारण के कटक-कागनी शाखानुं मर्दन करवानो कोइ विचार करे? अर्थात् न ज करे तेवी रीते प्रयोजन विनाना ग्रंथना श्रवण के अभ्यासमां कोइ पण प्रवृत्ति न ज करे

संबंधादिकनी उपयोगिता जणाव्या छतां वादी तर्क करे छे के-जेओ अज्ञान छे तेओने वीतरागना वचनमां श्रद्धा होती नथी, वीतराग परमात्माए कह्युं ते साचुं ज कह्युं छे तेवो तेमने ख्याल होतो नथी अने आ संशयथी प्रवृत्ति करवामां आवे तो ते संबंधादिक विना पण थइ शके अर्थात् ' ए शुं कहेशे? ' एवी जेने जाणवानी इच्छा हशे ते तो संबंधादिक विना पण ग्रंथ सांभळशे, तेओनुं निवारण कोण करवानुं छे ? माटे मारा मत प्रमाणे तो संबंधादिक हकीकत श्रोताओ माटे आवश्यक नथी आ बधी हकीकतना परिहारपूर्वक ग्रंथकर्ता महाशय कहे छे के-शिष्टाचार तो राखवो ज जोईए, कारण के ग्रंथकर्ता जे हेतुथी ग्रंथनी शरुआतमां प्रयोजनादिक देखाडे छे ते शिष्ट अनुकरण छे आ संबंधी विशेष अधिकार वाक्यग्रंथोथी जाणवो उचित छे

हवे ' गच्छाचार-पयन्ना ' ग्रंथना कर्ता शरुआतमां मंगलादि चारे हेतुओने दर्शावता पहेली गाथा कहे छे-

नमिऊण महावीरं, तियसिंदनमंसिअं महाभागं।
गच्छायारं किंची, उद्धरिमो सुअसमुद्दाओ ॥ १ ॥

[नत्वा महावीरं, त्रिदशेन्द्रनमस्यितं महाभागम् ।
गच्छाचारं किञ्चिद्-उद्धरामः श्रुतसमुद्रात् ॥ १॥]

गाथार्थ–देवेंद्र–इन्द्रथी नमस्कार करायेल, महाप्रभावशाळी श्रीवीर परमात्माने प्रणाम करीने द्वादशांगीरूप श्रुत–सिद्धांतरूपी समुद्रमाथी साधुसमुदायरूपी गच्छनो ज्ञानाचारादि अथवा गणमर्यादारूप आचार स्वल्पमात्र उद्धरु छु. १.

विवेचन– उपर्युक्त गाथामां वीर परमात्माने प्रणाम कर्यो, पण वीर–महावीर एटले शु? 'महावीर' शब्दनो शब्दार्थ शो छे के–विशेषे करीने कर्मोने खपावे तेने वीर कहीए पूर्वाचार्यकृत नीचेनो श्लोक पण ए ज मतलबनु जणावता कहे छे के—

विदारयति यत्कर्म, तपसा च विराजते ।
तपोवीर्येण युक्तश्च, तस्माद् वीर इति स्मृतः ॥ १ ॥

जे कर्मने विदारे–तोडी नाखे, तेमज तपश्चर्याद्वारा जे विशेष शोभे अने तप तथा वीर्यथी जे युक्त होय तेने वीर कहेवामा आवे छे

बीजा वीरोनी अपेक्षाए जे महान्–श्रेष्ठ वीर ते महावीर–चरम जिनपतिने नमस्कार कर्यो छे महावीर नाम केवी रीते प्राप्त थयु ते माटे शास्त्रोमा नीचे प्रमाणे उल्लेख मळी आवे छे

ज्यारे वीर परमात्मानो जन्म थयो त्यारे तेमनो स्नात्राभिषेक करवा माटे तेमने मेरुपर्वत पर लई जवामा आव्या जेम दरेक तीर्थंकरोने माटे बने छे तेम जळना *कळशो तैयार करवामा आव्या तेवामा इन्द्रने संशय उपज्यो के–प्रभु तो हजु बाळक छे आटलो बधो विपुल जळराशि केवी रीते ते सहन करी शकशे? जन्मथी ज त्रण ज्ञानवाळा परमात्माए अवधिज्ञान द्वारा इन्द्रनो संशय जाण्यो एटले पोताना वाम चरणना अंगूठाथी मेरुपर्वतने दबाव्यो के तरत ज चारे तरफ उत्पात मची गयो, जेम के–पर्वतना शिखरो पडवा लाग्या, मेघगर्जनाओ थवा लागी, समुद्र प्रचंड नादपूर्वक उछळवा लाग्या, वायु झंझावातनी माफक फेलाई गयो, धरती धणधणी ऊठी एटले प्रभुना जन्ममहोत्सवना पवित्र काये प्रसंग आवो उपद्रव शो? एम विचारता इन्द्र पोताना अवधिज्ञाननो उपयोग मूक्यो तेवामा प्रभुनी ज आ बधी चेष्टा–लीला जणाई वीर परमात्माना

* स्नात्राभिषेक समये इन्द्रो, अग्रमहिषीओ अने बीजा देवोना कुल अढीसो अभिषेक थाय छे एक एक अभिषेकमां चोसठ हजार कळशो होय छे एटले सर्व कळशसंख्या एक करोड ने साठ लाख कळशनी थाय दरेक कळश २५ योजन ऊंचो, १२ योजन पहोळो अने एक योजनना नाळचावाळो होय छे

अनन्त बळती तेने धात्री थता प्रभुने तेणे तुर्त ज खमाव्या अने अनतबळी होवाथी तेमनु महावीर पशु बीजु नाम प्रसिद्धिमां मूक्यु.

कोइ कदाच कहे के-बीजा तीर्थंकरोना त्याग करीने महावीर भगवतने ज नमस्कार करवानु कारण शु ? आनो स्पष्ट खुलासो करता कहे छे के-वीर परमात्मा चालु चोवीशीना अतिम तीर्थंकर हता अने आपणे तमना शासनमा होइने तेओ आपणा अत्यत उपकारी छे तेथी तेमने नमस्कार करवामा आव्यो छे तेओ द्रवेश-द्रव्यथी नमस्कार करायल छे अने तीर्थंकरपणारूपी ऐश्वर्यना स्वामी होवाथी महात्मा पण कहेवाय छे तेमने नमस्कार करीने पाच समितिनु पालन करनार, त्रण गुप्तिने धारण करनार, छकायनी रक्षा करवामा तत्पर मुनिवरोना समुदायना आचार-गच्छाचारने हु वर्णवीश भगवान महावीरनी पाटे विराजित श्रीसुधर्मास्वामी आदि शिष्योए जे क्रियाकलापनु आचरण कर्यु अने पंचागीमा जेनु वर्णन करवामा आव्यु छे ते गच्छाचार कहेवाय तेनो प्रकीर्णक-पृथक् करवु ते गच्छाचार-पयन्नो आ अभिधेय-नाम समजवु कोइ शका करे के श्रीमान भद्रबाहुस्वामी आदि पूर्वपुरुषविरचित गच्छाचारना ग्रंथो छे तो आ नवीन ग्रथ रचवानु कारण शु ? आनो उत्तर आपता जणावे छे के ए ग्रंथो विस्तृत अने विद्वानोने गम्य छे मदबुद्धिवाळा-अल्पज्ञानी प्राणीओना माटे सक्षेपमा आ ग्रथरचना करी छे आ रीते ग्रथनु प्रयोजन पण जणावी दीधु, कारण के कह्यु छे के-" प्रयोजनमनुद्दिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते । " प्रयोजन विना मदमतिवाळो मूर्खजन पण कोइ कार्यमा प्रवृत्ति करतो नथी सक्षेपमा रचवानु कारण ए छे के ते सुखपूर्वक भणी शकाय, ग्रथ सक्षिप्त जाणी सामळवा वाळा लोको पण उत्सुक बने अने परिणामे ज्ञानलाभ थाय कोइ पछी शका करे के-आ ग्रथरचना तो नवी छे, सर्वज्ञभाषित नथी, माटे तेमा विसंवादपणु-अन्यापणु तथा क्षुद्रपणु जाणी लोको तेनो सांभळवा तथा शिखवामा अनादर करशे आ शकाना परिहार माटे ग्रंथकर्त्ता कहे छे के-आ ग्रथ श्रुतसमुद्रमाथी उद्धरवामा आव्यो छे-नवीन नथी माटे तेमा विसवादपणानी सभावना करवी नहि

आ प्रमाणे गाथाना पूर्वार्द्ध-पहेला तथा बीजा पादवडे मगळ अने उत्तरार्द्ध-त्रीजा तथा चोथा पादवडे नाम, प्रयोजन अने अर्थसबध पण दर्शाव्या छे प्रयोजन बे प्रकारना छे एक अनतरप्रयोजन अने बीजु परपरप्रयोजन ए बन्ने पण बब्बे प्रकारना छे एक कर्तानी अपेक्षाए एटले कर्ताने अनतर तमज परपर प्रयोजन अने श्रोता-सामळनारनी अपेक्षाए अनतर अने परपरप्रयोजन कर्ताने अनतरप्रयोजन एटले शिष्योने सक्षपथी गच्छाचारनो बोध करवो [१] अने कर्ताने परपरप्रयोजन एटले बीजाने गच्छाचारनो उपदेश आपी सद्धर्मना

छोडवो आवी जातना उपकारथी कर्म क्षय थाय छे अने छेवटे मोक्षसुखनी पण प्राप्ति थाय छे [२] शिष्यने अनंतरप्रयोजन एटले प्रथना संक्षेपथी अल्पप्रयासे गच्छाचारनु ज्ञान थाय [१] जेवी रीते श्रीशय्यंभवसूरिए अल्पायुषी पोताना पुत्र मनकने माटे दशवैकालिक सूत्रनी रचना करी, तेना द्वारा संक्षिप्तमां सघळो बोध समजाव्यो अने शिष्यने परंपरप्रयोजन ते गच्छाचार जाणी अनाचार छोडे अने तेथी शुद्ध आचरणाथी प्रांते तेने शिवसुखनी प्राप्ति थाय [२] ग्रथनु नाम गच्छाचार कर्युं नाम विना प्रयोजन होय नहि, कारण के महात्मा पुरुषो विना प्रयोजने प्रवृत्ति करता नथी

आ पयन्नो गच्छाचार जाणवानो उपाय छे, तेना विना गच्छाचार जाण वामा न आवे तेथी गच्छाचार जाणीने अगीकार करे ते उपेय छे ग्रथांतरमा तेने प्रतिपाद्य अने प्रतिपादक कहेवामा आवे छे प्रयोजन अने सबंधने प्रका रांतरे भिन्नपणु-जुदापणु होय छे कर्युं छे के—

समबन्धः प्रोक्त एव स्यात्, एतस्यैतत् प्रयोजनम् ।
इत्युक्तेन तन्नो वाच्यो, भेदेनासौ प्रयोजनात् ॥ १ ॥

श्रुतसमुद्रमाथी 'गच्छाचार-पयन्ना' उद्धर्यु छु एम कहेवाथी शिष्यने गुरुपरंपरा दर्शावे छे प्रथम श्रीवीर परमात्माए आ गच्छाचार प्रतिपादन कर्यो, श्रीसुधर्मास्वामीए तेने द्वादशांगीमा सूत्ररूपे गूथ्यो बाद श्रीभद्रबाहुस्वामी प्रमुखे तेने बृहत्कल्पादिकमा दाखल कर्यो अने ते ते ग्रथोमाथी उद्धरीने संक्षेपथी मंदबुद्धिवाळाओ माटे रच्यो एटले परंपराए आ ग्रथना कहेनारा सर्वज्ञ परमा त्मा ज छे एटले आ प्रकीर्णक अवश्य ग्रहण करवा योग्य-आदरवा योग्य छे आ पयन्नाना मूळश्लोक आर्या छदमा छे, तेथी तेनु लक्षण नीचे प्रमाणे जणावे छे—

यस्याः पादे प्रथमे, द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि ।
अष्टादश द्वितीये, चतुर्थके पञ्चदश सार्या ॥ १ ॥

आर्या छंदना प्रथम पादमा बार मात्रा होय, त्रीजामा पण बार होय, बीजामा अढार अने चोथामा पदर मात्रा होय छे आ आर्या छदने प्राकृतमा "गाथा" कहेवामा आवे छे

संसारने असार-दुःखरूप जाणी, मातपिताना वात्सल्यने तिलांजलि दई, ससारजन्य कष्टोने दूर करवा माटे तेमज इहलोक अने परलोक साधवा माटे जेओ साधुपणु अगीकार करे छे तेओनो जे गच्छ ते सुविहित गच्छ जाणवो ते गच्छमा चोयणा, पडिचोयणा इत्यादि होय अने शिष्यवर्गने शुद्ध आचरणमा प्रवर्तावे आवा सुविहित गच्छमां ज वास करवो योग्य छे, कदापि असदाचारी

भ्रष्ट गच्छमा निवास करवो नहि जे गच्छमा साधु परिग्रह अने आरंभमा आसक्त होय, नित्य अनाचार सेवता होय, गृहस्थो पासे कार्य करावता होय, गृहस्थो साथे आलाप-संलाप करवाने कारणे पडिलेहणादि आवश्यक क्रिया करवामा प्रमादी बनी जता होय तेवो गच्छ असदाचारी-भ्रष्ट कहेवाय तेनो तो सदैव त्याग ज करवो जोइए. आ संबंधमा टूंका टूंका दृष्टान्तो आपवामा आवे छे

पहेलु दृष्टांत-कोइएक पुरुष महामहेनते चित्रकला शीख्यो, परंतु चित्रकाम क्यां अने कयी रीते करवु तेनु तेने पूरेपूरु ज्ञान प्राप्त थयु नहि एकदा एक चित्रकलाशोखीन राजाए आ चितारोने एक मकानमा सुंदर चित्रकाम करवानो आदेश आप्यो ते मकाननी दिवालो खरबचडी अने खाडा-खडिया वाळी तेमज कोई कोई स्थळे तो ऊंचा-नीची पण हती चितारए ते भींतने मठारीने सारी कर्या सिवाय ज पोतानु चित्रकाम शरू कर्यु परंतु ते चित्रामण बेडोळ अने शोभाविहीन बन्यु राजाए आवी कार्य जोयु तो तेने चित्रकारनी महेनत माटे मान उपज्यु परन्तु तेनी अज्ञता-कया स्थळे चित्रकाम सुंदर देखाय तेनी असमजण माटे हास्य उत्पन्न थयु मतलब के चितारए काय तो कर्यु पण चित्रकामनी पूरती समजणना अभावे तेनो प्रयास वृथा थयो आ कथानो उपनय एवो छे के-अहीं चितारो ते साधु, अशुद्ध दिवाल-भींत ते भ्रष्टाचारी गच्छ अने चित्रामण ते साधुधर्मनु पालन अर्थात् अशुद्ध भींत पर करेल चित्रामण वृथा नीवड्यु तेम भ्रष्टाचारी गच्छमा निवास करवाथी अथवा तेना संसर्ग करवाथी साधुधर्मनु पालन निष्फल बने छे, माटे हमेशा भ्रष्टाचारी गच्छनो त्याग ज करवो

बीजु दृष्टांत-कोईएक शख्सने उतावळना कार्य प्रसंगे बहारगाम जवानु थयु तेणे पूरती तयारी करी प्रयाण कर्यु तो रस्तामा वच्चे नदी आवी नदी तरीने सामे काठे गया सिवाय तेने छूटको नहोतो नदी पण विशाळ अने बे काठामा होवाथी पग ने पग चालीने जइ शकाय तेम नहोतु तेणे नदी पार करवा माटे साधन मेळववा आसपास नजर फेंकी तो थोडेक दूर एक नौका पडेलो मालुम पडी तेणे तरत ज त्यां जई ते होडीनो उपयोग कर्यो परन्तु उतावळने कारणे तपास न करी के होडी केवी छे? होडीमां छिद्रो होवाथी थोडे दूर जता ज पाणी भरावा मांड्यु अने हजु तो काठे पहोंचे ते पहेला ज पाणीथी भराइ जवाथी होडी डूबी गई अने साथोसाथ ते शख्स पण डूबी गया आ कथानो उपनय एवो छे के-नदी ते संसार, शख्स ते साधु अने छिद्रवाळु नाव ते भ्रष्टाचारी गच्छ जेम ते शख्स छिद्रवाळी होडीना अवलंबनथी डूबी गयो तेम जे साधु भ्रष्टाचारी गच्छनो आश्रय ले ते जरूर पतित थाय

त्रीजु दृष्टांत-कोईएक माणसोने व्याधि थया तेणे एक कुशळ गणाता वैद्य

पासे जइ उपचार शरु कर्यो औषध आपवानी साथे वैद्ये शिखामणरूपे तेने कह्यु के– भाई, जो तु बराबर करी पाळीश, पथ्यनु ज सेवन करीश तो ज मात्र औषध फायदाकारक बनशे ' केटलाएक दिवस बाद ते मानवी पोतानी जिह्वाने वश राखी शक्यो नहिं अने अपथ्यनु सेवन करता व्याधि वृद्धि पामी गया अने प्राते ते यमराजनो अतिथि बन्यो आ कथानो उपनय एवो छे के–व्याधि ते कर्म, औषध ते चारित्र, वैद्य ते साधु अने अपथ्य ते भ्रष्टाचारी गच्छ जेम ते व्याधिग्रस्त अपथ्यनु सेवन करवाथी मृत्युने आधीन थयो अने वैद्यनु औषध गुण-फायदो करी शक्यु नहिं तेम भ्रष्टाचारी गच्छनु सेवन करवाथी चारित्र काई पण जातना लाभ करी शकतु नथी, माटे भ्रष्टाचारी गच्छनो कदी पण परिचय न करवो

चोथु दृष्टात–काइ एक द्विजपुत्र काशी भणवा गयो काशीमा तेने केट लाक पडितो मळ्या तेओए तेने सलाह आपी के–' तु प्रथम व्याकरण भणजे अने पछी तने न्यायना अभ्यासमा सुगमता थशे ' ते द्विजपुत्र जवाब आप्यो के–'ना, हु तो प्रथम न्याय ज भणीश, मारे तो सिद्धातनो अभ्यास करी तेना पार गामी बनवु छे ' ते पडिताए ते भोळा द्विजपुत्रने समजाव्यो के–' भला माणस ! व्याकरण विना न्याय भणीश ता छारना लींपण जेवु नकामु थशे व्याकरण विना शब्दोच्चार पण स्पष्ट नहिं थाय अने विद्वानोनी सभामा हासी थशे ' छता पण ते कदाग्रही द्विजपुत्रे पोताना हठाग्रह छोड्या नहिं अने अभ्यास शरु कर्यो न्यायना अभ्यास करता बार वर्ष व्यतीत थई गया एकमा पडितोनी सभा भराई द्विजपुत्र पण पोतानु पाडित्य दर्शाववाना हेतुथी त्या गयो पडितोए तेनी परीक्षा निमित्ते तेने कह्यु के–'पडितशेखर ! मगळाचरण करो ' द्विजपुत्र लक्षणत्री न्याय भण्यो हता पण व्याकरणनु ठेकाणु न हतु तेना मनमा थोडा वसवसो उत्पन्न थयो के व्याकरणना अभ्यास विना हु मगळाचरण केवी रीत करीश ? छता समग्र हिंमत एकठी करीने तणे मगलाचरणनी शरूआत करता कह्यु के " शब्दरि " आ "शब्दरि शब्द साभळता ज समग्र विद्वत्सभा हसवा लागी पडिताए ते द्विजपुत्रने " शब्दरि ' शु छे ते समजाववा कह्यु त्यारे ते बोल्या के–' अर्थरि, कर्त्तरि विगेरे शब्दोनी माफक ' शब्दरि ' पण हशे तेम मानीने बोल्या छु ' तेना आवो खुलासो साभळी सभाने विशेष हास्य आव्यु अने तना तिरस्कार करी सभामाथी काढी मूक्यो आ कथानो उपनय एवो छे के–बार बार वर्ष सुधी श्रम करवा छता व्याकरणना अभ्यास विना ते द्विजपुत्रना श्रम वृथा गया तेम कोइ पण साधु भ्रष्टाचारी गच्छमा रही गमे तेटलो श्रम कर ता पण ते कदी फळदायक बने नहिं

पांचमुं दृष्टांत-कोइएक माणसे मकान तैयार कराववा माडयुं पण जल्दी तैयार कराववाना आशयथी तेणे पाका पाया विना चणाववा माड्युं. थयुं एवुं के मकान थोडुं तैयार थाय अने तरत ज पडी जाय. आम रात दिवस-वारंवार बनवाथी तेणे कोइएक सज्जननी सलाह लीधी. सज्जने कह्युं के-'पहेला पाया खोदावी, तेने मजबूत करो अने पछी ते पर मकान चणावो' ते माणसे तेवी रीते करतां तेनुं इच्छित पार पड्युं. कथानो उपनय एवो छे के-सारा पाया विना जेम मकान टकी शके नहि तेम सुविहित-सदाचारी गच्छ सिवाय चारित्र टकी शके नहि.

छठ्ठुं दृष्टांत-कोइएक गृहस्थे पोतानी दासीने कह्युं के-'आपणा आवासना त्रीजे मजले लींपण करी आवजे' त्रीजो माळ वपराश वगरनो हतो तेथी त्यां धूळना ढग जाम्या हता. ते मूर्ख दासीए धूळने साफ कर्या वगर ज ते पर लींपण कर्युं परन्तु बन्युं एवुं के लींपण सुकाइ गयुं के तरत ज धूळनी साथोसाथ लींपणना पोपडेपोपडा उखडी गया अने लींपण निरर्थक बन्युं. आ कथानो उपनय एवो छे के-लींपण ते व्रत, धूळ ते भ्रष्ट गच्छ अने दासी ते साधु. जेम धूळना योगथी लींपण नाश पाम्युं तेम भ्रष्टाचारी गच्छना सहवासथी साधुनुं चारित्र नाश पामे छे.

सातमुं दृष्टांत-कोइएक मूर्ख जलरहित पत्थरवाळी भूमिमां कमळ रोपवा लाग्यो. तेने बीजा सज्जन माणसे कह्युं-'भाई! पत्थरवाळी भूमिमां कदी कमळ न ऊगे' पण मूर्ख माणसे हठपूर्वक कह्युं के-'हुं तो मारो उद्यम करीश अने अहिं रोपेला कमळनी जरूर सुगंध लइश' बीजाए तेने समजावतां कह्युं-'भला माणस! शा माटे महेनत करे छे? तारो आ प्रयत्न वन्ध्यासुतनी माफक वृथा थशे' आटलुं कहेवा छतां मूर्खे मान्युं नहि अने तेणे पोतानो प्रयत्न जारी राख्यो. क्रम क्रमे वर्षो पर वर्षो वीतता गया छतां परिणाम कंइ न आव्युं-कमळ ऊग्युं ज नहीं. ते मूर्ख माणस कमळनी पाछळ पूर्ण प्रयास करेल होवाथी बीजा उद्यमना अभावे निर्धन-दरिद्री बनी गयो. आ कथानो उपनय एवो छे के-मूर्ख ते साधु, कमळ ते चारित्र, निर्जळ पत्थरवाळी भूमि ते भ्रष्ट गच्छ. चारित्ररूप कमळनी वांछना करतो ते मूर्ख आवश्यकधर्मव्रत-पालनरूप बीजा उद्यमने मूकीने चार गतिमां रखडयो-भटक्यो.

आठमुं दृष्टांत-कोई अंध पुरुष पोतानी शोभा वधारवा माटे कानमां कुंडळ, भालमां तिलक कपालप्रदेश पर चित्रामण कराववा लाग्यो. तेनुं आवुं कृत्य जोइने कोई डाह्या पुरुषे तेने तेनुं कारण पूछ्युं. तेणे कह्युं के-'हुं सौंदर्यशाळी बनवा मांगुं छुं' सज्जन पुरुषे कह्युं के-भाइ, नेत्र विना मुख-मंडन शोभे नहि कारण के मुखनी शोभा तो नेत्र छे. तुं आ वृथा प्रयास त्यजी दे' उपनय-अंधपुरुष ते

साधु, नेत्र विनानु मुख ते भ्रष्ट गच्छ, शोभा ते चारित्र जेम नेत्रयुक्त मुख शोभे तेम सुविहित गच्छ होय तो ज चारित्र शोभनीय-प्रशसनीय बने

नवमु दृष्टांत-कोई खेडूत उखरभूमिमा बीजनी वावणी करवा लाग्यो तेने कोइ सज्जन पुरुषे कह्यु के-'आ खारवाळी जमीनमा वावेल बधा बीज बळी जशे अने धान्य नहिं नीपजे' छता तेणे मान्यु नहि अने पोतानु काय चालु राख्युं भाग्ययोगे वर्षा पण सारी थई छता बीजो बधा दग्ध थइ गयेला होवाथी धान्य पाक्यु नही परिणामे पनी महेनत वृथा-निष्फळ नीवडी उपनय-खेडूत ते साधु, उखरभूमि ते भ्रष्टाचारी गच्छ बीज ते चारित्र उखरभूमिमा धान्योत्पत्ति थाय नहिं तेम भ्रष्टाचारी गच्छमा कदी चारित्रशुद्धि थई शके नहि

दशमु दृष्टांत-बकरीनी डोक पासे नाना नाना बे स्तनो होय छे तेमांथी दूध झरतु नथी मात्र ते शोभा पूरता ज होय छे भ्रष्टाचारी गच्छ पण अजागल स्तन जेवो छे तेमाथी कदी चारित्रविशुद्धिरूप दूध प्राप्त थई शकतु नथी

आ बधा दृष्टांतोद्वारा रहस्य जाणीने उन्मार्गगामी गच्छनो हमेशा त्याग करवो जोइए उन्मार्गगामी साधुओ साथे आलाप-सलाप पण न करवो शुद्ध समाचारीमा वर्तनारा, मूलोत्तर गुण पाळनारा, दोषने आलोचनारा मुनिवरो जे गच्छमा रहेता होय ते सुविहित गच्छ-शुद्ध गच्छ जाणवो आवा गच्छमा चारित्रना रागी मुनिवरोए निवास करवो योग्य छे, छता पण जो कोई उन्मार्ग गामी गच्छमा वास करे तो तेओ दुःखी थाय तेनु ससारपरिभ्रमण वधे आ सबधी हकीकत बीजी गाथामा दर्शावता कहे छे के—

अत्थेगे गोअमा ! पाणी, ते उम्मगपइट्ठिए ।
गच्छम्मि सवसित्ता ण, भमई भवपरपर*॥२॥
[सन्त्येके गौतम! प्राणिन , ये उन्मार्गप्रतिष्ठिते ।
गच्छे सवसित्वा, भ्रमन्ति भवपरपराम् ॥२॥]

गाथार्थ-हे गौतम! एवा केटलाएक वैराग्यवत जीवो होय छे के जेओ अज्ञानपणे अने जाणपणाना मिथ्याभिमानवडे सन्मार्गने दूषित करवापूर्वक उत्सूत्रप्ररूपणा करे छे तेमज हिंसादिक पाचे आश्रवो जेमा प्रवर्ता रह्या छे तेवा उन्मार्गगामी गच्छमा वसीने चार गतिरूप ससारमा भटक्या करे छे

---

* आ गाथामां ण वाक्यालङ्कारमा अथवा छ बहुवचनमा एकवचन अने दीर्घपणादिक प्राकृत शलीने अग छ आ प्रमाणे ज्यां ज्यां विभक्तिना व्यत्यय ह्रस्वनो दीर्घ, दीर्घनो ह्रस्व तथा चतुर्थीना स्थाने छट्ठी विभक्ति आवे ते प्राकृत भाषाने अगे जाणवु तेमां दोष न समजवो

विवेचन—उन्मार्गगामी गच्छमा वर्तमान प्राणी भवपरंपराने वृद्धिगत करे छे दुर्जननो संग सज्जनने-शीलवानने पण भ्रष्ट करे छे आ संबंधे नीचेनी कथा समजवा योग्य छे एक ब्राह्मणने अत्यन्त चपळ पुत्र हतो नानपणमा ज हमेशा ते जुगारी तथा कपट पुरुषोनो सोबत करवा लाग्यो तेना पिताने ते पसंद न पडयुं तेणे ना कह्या छता पण ते जवा लाग्यो, तेथी तेना पिताए चौदमु रतन शब्द कर्यु अर्थात् तेने मारवा मांड्यो ते समये तेनी पत्नी पोताना स्वामीने कहेवा लागी के-' हे स्वामिन्! पुत्रने शा माटे मारो छो? ' ब्राह्मणे कह्यु के-'ते चोर लोको अने लुच्चाओनी संगतमा रहे छे' स्त्रीए कह्यु—'ते हमणा शुं समजे? पुत्र हजी नानो छे मोटो थशे त्यारे आपमेळे समजशे हमणा तेने स्वेच्छापूर्वक रमवा द्यो' ब्राह्मणे पोतानी अज्ञान स्त्रीने समजावता कह्यु के-'हे भोळी! जो तारो पुत्र अनाचारीना संगमा रहेशे तो आ संसारमा वधीखाना, प्रहार विगेरे दुःख सहन करशे अने परलोकमा नरकादि दुष्ट गति पामशे जो सज्जननी सोबत करशे तो सद्‌विद्या प्राप्त करी राजसभाने शोभावशे तेमज परभवमा पण देवगति विगेरे सद्‌गति प्राप्ति करशे कह्यु छे के—

यदि सत्सङ्गनिरतो भविष्यसि भविष्यसि ।
अथासज्जनगोष्ठीषु, पतिष्यसि पतिष्यसि ॥ १ ॥

जो सत्संगमा रत रहेशे तो गुणवान, आ लोकमा पूजापात्र अने सुखी थनशे जो दुष्टसंगति करशे तो आ लोकमा राजाना केदखानामा पडशे अने परभवमा पण नरकगतिमा पडशे' ब्राह्मणना आ प्रमाणे समजाववाथी तेनी स्त्री समजी आ कथानो उपनय ए छे के-साधु जो उन्मार्गगामी गच्छनो आश्रय ले तो साधुपणाथी च्युत थाय-पतन पामे अने संयमा आदरभ कारहीन बने

आ बीजी गाथामा श्रीगौतमस्वामीने संबोधन छे एटले श्रीमहावीरस्वामीए श्री गौतमस्वामीने करेल प्रश्ननो जवाब आप्यो छे एम जणाय छे श्रीगौतमस्वामीनो-'हे भगवंत! कल्याणभाजन! ज्ञानपाल! हे पूज्य! केटलाएक जीवो उन्मार्गगामी गच्छमा रहे तो तेनु शु थाय?' आवी जातनो प्रश्न गाथामा नथी छता श्रीगौतमस्वामीनो एवो प्रश्न जाणी लेवो, कारण के प्रश्न कर्या वगरनो उत्तर संभवी शकतो नथी घणी आगळ गाथाओमा पण आवी रीते जाणी लेवु एटले के जेवो जेवो उत्तर आवे तेवो तेवो प्रश्न समजवो केटलाक स्थळे प्रश्न विना पण उत्तर संभवे छे, कारण के केटलेक स्थळे शिष्य पूछे त्यारे गुरु उत्तर आपे अने केटलेक स्थळे पूछया विना पण उत्तर आपे

आ पयन्नाना रचनार कोण?

आ गच्छाचार-पयन्नो रच्यो कोणे? एवो आपणने प्रश्न थाय ते स्वाभा

मिक छे तेना खुलासामा आ ज पयन्नामा आगर उपर नीचेनी गाथा जणावे छे के—

महानिसीहकप्पाओ, ववहाराओ तहेव य ।
साहुसाहुणिअट्ठाए, गच्छायार समुद्धरिअ ॥

पटले के महानिशीथ, बृहत्कल्प, व्यवहारादिक सूत्रोमाथी साधु-साध्वी ओने माटे आ गच्छाचार पयन्ना उध्धृत कर्यामा आव्यो छे आ उपरथी पण अनुमान थाय छे के कर्ताए श्रीभद्रबाहुस्वामीना रचेला ग्रथोमाथी उध्धृत करीने आ पयन्नो रच्यो छे आ उपरथी ए पण साबित थाय छे के श्रीभद्रबाहुस्वामी पछी कोइ पूर्वधराचार्य आ पयन्नानी रचना करी हशे आम केम थती शके ? एवी शका थाय तो जणावे छे के-ज्योतिषकरडक पयन्नो पण आवी ज रीते पूर्वधर आचार्य रच्यो छे श्रीमलयगिरिजी महाराज ज्योतिषकरडकनी प्रथम गाथानी टीकामा कहे छे के-" अयमत्र पूर्वाचार्योपदर्शित उपोद्घातः–कोऽपि शिष्योऽल्पश्रुतः कश्चिदाचार्यं पूर्वगतसूत्रार्थधारक वा लभ्य श्रुतसागरपारगत शिरसा प्रणम्य निजपयति स्म, यथा–भगवन् ! इच्छामि युष्माक श्रुतनिधीनामन्ते यथावस्थित कालविभाग ज्ञातुमिति, तत एवमुक्ते आचार्य आह–शृणु वत्स ! तावदित्यादि०" 'कोइ अल्प बुद्धिवाळो शिष्य श्रुतना सागर समा पूर्वधर आचार्यने प्रणाम करीने विनयपूर्वक कहे छे के-'भगवन् ! श्रुतना निधान तुल्य आपनी पासे हु कालनु स्वरूप जाणवा इच्छु छु ' शिष्ये आ प्रमाणे कह्यु त्यारे पूर्वधराचार्य कहे छे के-'हे शिष्य ! तु साभळ, इत्यादि० " आ वचनोद्वारा आपणे जाणी शकीए के जेवी रीते ज्योतिषकरडक पूर्वधर महापुरुषनो रचेल छे तेवी ज रीते आ गच्छाचार पयन्नो पण पूर्वगत सूत्रार्थने जाणनारा पूर्वाचार्यप्रणीत छे आ उपरात ज्योतिषकरडक पयन्नाना बीजा प्राभृतनी टीकामा ज्या सख्यानु वर्णन आपवामा आव्यु छे त्या ते सख्या मतातरवाळी होइने ते सबधमा खुलासो करता जणावु छे के-" इह स्कन्दिलाचार्यप्रवृत्तौ दुःषमानुभावतो दुर्भिक्षप्रवृत्त्या साधूना पठनगुणनादिक सर्वमप्यनशत् । ततो दुर्भिक्षातिक्रमे सुभिक्षप्रवृत्तौ द्वयोः सङ्घयोर्मेलापकोऽभवत् । तद्यथा–एको वलभ्या, एको मथुरायाम्, तत्र च सूत्रार्थसङ्घटने परस्परवाचनाभेदो जात । विस्मृतयोर्हि सूत्रार्थयोः स्मृत्वा सङ्घटने भवत्यवश्य वाचनाभेदो न काचिदनुपपत्तिः, तत्रानुयोगद्वारादिकम् इदानीम् वर्तमान माथुरवाचनानुगत, ज्योतिष्करण्डकसूत्रकर्ता चाचार्यो वालभ्यः, तत इदेद सख्यास्थानप्रतिपादन वालभ्यवाचनानुगतमिति नास्यानुयोगद्वारप्रतिपादितसङ्ख्यास्थानैः सह विसदृशत्वमुपलभ्य विचिकित्सितव्यमिति ।" अर्थात्

"श्री स्कंदिलाचार्यना समयमां दुषमकाळना माहात्म्यथी भयंकर दुष्काळ पड्यो दुष्काळने अंगे साधुओनुं पठन-पाठन तद्दन अल्प थई गयुं अने छेवटे तेओ भण्या हता ते पण लगभग भूली जवा लाग्या पछीथी ज्यारे दुष्काळ दूर थई सुकाळ थयो त्यारे शासननी रक्षा माटे-भुलाई जता श्रुतनुं संरक्षण करवा माटे बे स्थळोए संघ एकत्र थयो एक वल्लभीपुरमां (हालनुं काठियावाडमां आवेल वळा गाम) अने बीजो मथुरा नगरीमां वल्लभीपुरमां अध्यक्षता नागार्जुननी हतो ज्यारे मथुरामां प्रमुखपद श्रीमान् स्कंदिलाचार्यनुं हतुं तेओए बन्ने ठेकाणे श्रुतनुं संरक्षण कर्युं आ बन्ने आचार्यो समकालीन होवा छतां परस्परने मळी शक्या नहि अने तेने कारण तेओए करेली वाचनामां मतभेद रही जवा पाम्या पाछळथी ज्यारे श्रीमान् देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमणे आगमोने पुस्तकारूढ कर्या त्यारे आ मतभेदोनुं स्पष्टीकरण करवा तेमणे स्कंदिलाचार्यनी वाचना प्रमाणे आगमो लख्या अने *नागार्जुननी वाचनानो विषय टीकामां अवतरित कर्यो विस्मरण थयेला सूत्रने संग्रहित करवामां आवे त्यारे वाचनाभेद थाय ते स्वाभाविक छे अत्यारे उपलब्ध थता आगमग्रंथोमां अनुयोग द्वारादि आगमसूत्रो माथुरीवाचनाना छे ज्यारे ज्योतिषकरंडक वल्लभी वाचनानो ग्रंथ छे, एटले मरण संबंधी तेना वर्णननी साथे अनुयोगद्वारमां दर्शावेल संख्या-वर्णन मळतुं न आवे ए स्वाभाविक छे, कारण के वाचनाभेद होवाथी तेम बनी जाय ते कल्पी शकाय तेवी हकीकत छे आ उपरथी ते वस्तु खोटी छे एवी शंका या विचिकित्सा करवी पण न घटे आटला विवेचन उपरथी आपणे समजी शकशुं के जेवी रीते ज्योतिषकरंडक पूर्वधरप्रणीत छे तेम गच्छाचार पयन्नो पण पूर्वधररचित ज छे

आ विषयनी विशेष पुष्टि करता श्रीमलयगिरिजी महाराज बीजो दाखलो आपे छे श्री मलयगिरिजी नंदीसूत्रनी टीकामां कहे छे के-"तदेवमभीष्टदेवतास्तवादिसम्पादितमङ्गलोपचारो भगवान् दूष्यगणिपादोपसेवी पूर्वान्तर्गत-सूत्रार्थधारको देववाचको योग्यविनेयपरीक्षां कृत्वा सम्प्रत्यधिकृताध्ययनविषयस्य ज्ञानस्य प्ररूपणां विदधाति-'नाणं पञ्चविहं पण्णत्तं' इत्यादि०" अर्थात्

* युगप्रधान नागार्जुननी अध्यक्षतामां वल्लभीमां वाचना थई अने तेने लीधे नागार्जुन विशेष प्रख्याति पाम्या वल्लभी वाचनाने "नागार्जुनी वाचना" पण कहेवामां आवे छे "वाचना" ए शब्द पारिभाषिक छे अने तेनो अर्थ 'भणाववुं ते' थाय छे वी नि स १३०मां श्रीभद्रबाहुस्वामीना समयमां पाटलीपुत्रमां वाचना थई हती त्यारबाद आ वल्लभी तेमज माथुरी वाचना समकाळ थई हती नागार्जुन धुरंधर ने प्रभाविक आचार्य हता अने वी नि स ८२९मां तेमनो स्वर्गवास थयो हतो

"इष्टदेवनी स्तुति-प्रार्थनाथी सुविहितपणु प्राप्त करनार श्री दूष्यगणिना चरणनी सेवा-उपासना करनार तेमज सूत्र तथा अर्थने जाणनार देववाचक नामना आचार्य योग्य शिष्यनी परीक्षा करीने अध्ययन विषयक पांच ज्ञाननी प्ररूपणा करे छे एटले के दूष्य गणिना शिष्य हु देववाचक नंदिसूत्रनी रचना करु छु तेमा पांच प्रकारनु ज्ञान वर्णववामा आव्यु छे इत्यादि" आ प्रमाणे नंदीसूत्रना कर्ता तरीके श्री देववाचकनु नाम मळी आववाथी श्री मलयगिरिजी महाराजे तेनो उल्लेख कर्यो छे आ उपरथी ए सिद्ध थाय छे के नाम मळे तो कर्तानु अभिधान जणावे अने न मळे तो न जणावे जेम ज्योतिषकरंडकना कर्तानु नाम उपलब्ध थई शक्यु न होवाथी ते जेम पूर्वधररचित छे तेम जणाव्यु तेवी रीते आ गच्छाचार पयन्नो पण पूर्वधररचित ज जाणी लेवो

वळी आ विषय परत्वे शका करता कोई प्रश्न करे के-ज्यारे तमे एम कहेता हो के आ गच्छाचार पयन्ना पूर्वधररचित छे तो तेमा श्रीगौतमस्वामीना प्रश्न अने भगवत श्री महावीरस्वामीना उत्तर एम केम घटी शके ? आ बाबतनो खुलासा करता टीकाकार जणावे छे के-आ गच्छाचार पयन्ना सूत्रमाथी उद्धरेल छे अने सूत्रना वक्ता तीर्थंकर परमात्मा ज होय छे, बीजा नहीं कारण के आ सबधमा सूत्र प्रचलित ज छे के-"अत्थं भासइ अरहा" अरिहत परमात्मा ज अर्थनी प्ररूपणा करे, गणधर महाराज तेने सूत्ररूपे गुथे आ रीते पण गच्छाचार पयन्नाना कर्ता श्री तीर्थंकर परमात्मा ज कही शकाय भगवान श्रीमहावीर आपणा आसन्नोपकारी अने चालु चोवीशीना चरम जिनपति छे अने श्रीगौतमस्वामी तेमना मुख्य गणधर छे एटले श्री गौतमस्वामीना प्रश्न अने भगवत महावीरस्वामीना प्रत्युत्तर-रूपी शैली गच्छाचार पयन्नाना कर्ता पूर्वधर महापुरुषे स्वीकारी तेमा लेश मात्र अनुचित नथी परन्तु खरी रीत तो ते सूत्रमाथी उद्धरेल छे ते वस्तुनी साबितीरूप छे वळी कर्ता पुरुष जणावे छे के आ गच्छाचारनी रचना मारी मति-कल्पनानुसार नथी करी पण भगवत श्रीमहावीरे श्रीगौतमस्वामीने जणावेल तेने अनुलक्षीने ज ग्रथ-रचना करी छे श्री पन्नवणा सूत्रना कर्ता आर्य श्यामाचार्ये पण श्रीगौतम स्वामीना प्रश्न अने वीरभगवतना उत्तर-रूपी पद्धति प्रमाण ज ते सूत्रनी रचना करी छे आ ज प्रमाणे श्री गच्छाचार पयन्नाने अगे पण समजी लेवु

प्रकीर्णक सबधी विशेष वृत्तात—

आटलो स्पष्ट ने बुद्धिगम्य खुलासा पछी पण प्रतिवादी विशेष समाधान माटे चार प्रश्न पूछता जणाय छे के (१) प्रकीर्णक शब्दनो अर्थ शु ? (२) प्रकीर्णको कया छे ? (३) दरेक तीर्थंकरना समयमा केटला प्रकीर्णको थया अने (४) प्रकीर्णको रचवा कोणे ? पहेला प्रश्नना जवाब ए छे के-प्रकीर्णक शब्दनो व्युत्पत्ति अने सज्ञार्थ एम बे प्रकारे अर्थ थाय छे ने सबध चालतो

होय तेनु सपूर्ण वर्णन कर तेनु नाम युत्पत्ति अरिहत परमात्माए जे श्रुत-सिद्धातनो उपदेश कर्या तेने स्वीकारीने जे साधुओ रचना करे त मध्ये प्रकी णक कहेवाय पटले य श्रुतमाथी उद्धरीने रचना करे ते प्रकीर्णक अथवा पयन्नो समजवा अथवा श्रुतना अगीकार करीने पातानी विद्वत्तापूरक तेन धम देशनादिकमा ग्रथ पद्धति प्रमाणे उपदेशे तेन पण प्रकीर्णक कहेवामा आव छे बीजा प्रश्नना उत्तर प छ क-श्री ऋषभदेव परमात्माना समये ८४०००, श्री अजितनाथादि बावीश तीर्थकराना समये सख्याता हजार अने श्री वीर भगवतना समयमा चाद हजार प्रकीर्णको थया आ मध्यमा बन्लाए आवाया धम पण कह छ क-परत्र तीर्थकरना समयमा असख्याता प्रकीर्णको रचाय छे चाथा प्रश्ननो जवाब प छ क-श्री ऋषभदवथी मारभीने श्री वीर परमात्मा पर्यतना तारमा जे ज मुनिवरो सूत्ररचना करवा शक्तिशाळी थया तेओ बधाप पयन्ना रच्या वळी प्रत्यकबुद्ध थया तेमण पण प्रकीर्णको रच्या आ हिसाबे पयन्ना असख्याता कही शकाय, कारण क केटलाक तीर्थकरना समयमा अस ख्याता साधुओ थया अने तमनु शासन पण असख्याता समय सुधी चाल्यु आवी ज मतलबनो उल्लेख नदीसूत्रना टीकाकार श्री मलयगिरिजी महाराज जणावता कह छ क-" अहवा त समासओ दुविह पन्नतम् इत्यादि " अर्थात् श्रुतज्ञान बे प्रकारनु छ (१) अगमा रहेलु जमक आचारागादि बार अग, तेने अगप्रतिष्ठित कहीप अने अगबाह्य पटल बार अगथी जुदु ते अगबाह्य बे प्रका रनु छ (१) आवश्यक अने (२) आवश्यकथी भिन्न आवश्यकना छ प्रकार छ (१) सामायिक, (२) चउविसत्थो, (३) वदनक, (४) प्रतिक्रमण, (५) काउसग्ग अन (६) पच्चक्खाण आवश्यकथी व्यतिरिक्त (भिन्न) पण बे प्रकारनु छे (१) कालिक अने (२) उत्कालिक प्रथम पारसी अने छल्ली पोरसी समये ज बचाय अर्थात् दिवस न रात्रिना पहला अने चाथा पहोरमा जे वचाय-भणाय ते श्रुतन कालिक अगबाह्यआवश्यकव्यतिरिक्त जाणवु काळ (योग्य समय) वर्जीन गम त्यार भणाय-वचाय ते श्रुतने उत्कालिक जाणवु आ उत्कालिक अनेक प्रकारनु छ दा त १ दशवैकालिक, २ कप्पियाकप्पिय (कल्प्याकल्प्य), ३ चुल्ल (नानु) कल्पश्रुत, ४ महाकल्पश्रुत, ५ उववाइ, ६ रायपसेणी, ७ जीवाभिगम, ८ पन्नवणा, ९ महापन्नवणा, १० पमायप्पमाय, ११ नदी, १२ अनुयोगद्वार, १३ देवेंद्रस्तव, १४ तदुलवेयालिय, १५ चदाविज्झय, १६ सूर्यपन्नत्ती, १७ पोरिसिमडल, १८ मडलप्रवेश, १९ विद्याचरणविनिश्चय, २० गणिविज्जा, २१ ध्यानविभक्ति, २२ मरणविभत्ती, २३ आत्मविशुद्धि, २४ वीतरागश्रुत, २५ सलेखणाश्रुत, २६ विहार कल्प, २७ चरणविधि, २८ आउरपच्चक्खाण अने २९ *महापच्चक्खाण विगेरे०

* पाक्षिक सूत्रमा २९ नामने बदले २८ जणावेल छे तेमा सोळमु सूर्यप्रज्ञप्ति जणावल नथी, परतु त ज नाम कालिक श्रुतमा जणावेल छे

१. दशवैकालिक—तेमा पाछले पहोरे अध्ययन करवा योग्य दश अध्ययनो छे आ सूत्र चोथा पट्टधर श्रीशय्यंभवसूरिए पोताना मनक नामना पुत्र अने पाछळथी दीक्षित थयेल ते बालमुनिना अध्ययनार्थे सूत्रोना साररूपे रचेल छ आ सूत्रमा साधुजीवनना नियमो दर्शावेलामा आव्या छे मूळ श्लोक ७००, अध्ययन १० आ सूत्र ऊपर त्रण टीकाओ छे श्रीतिलकाचार्यनी ७००० श्लोकप्रमाण, श्रीहरिभद्रसूरिनी ६८१० श्लोकप्रमाण तेमज श्रीमलयगिरिनी ७७०० श्लोकप्रमाण लघुटीका पण त्रण छे एक ३७०० श्लोकप्रमाणनी, बीजी सोमसुंदरसूरिकृत ४२०० श्लोकनी अने त्रीजी समयसुंदरगणिकृत २६०० श्लोकनी चूर्णि ७५०० श्लोकनी अने निर्युक्ति ४५० गाथानी छे

२. कल्पाकल्प—कल्प एटले आचार तेमा साधुना तथा स्थविरादिकना आचारनु वर्णन छे

३–४ चुल्ल (नानु) कल्पश्रुत अने महा (मोटु) कल्पश्रुत—तेने विषे स्थविरादिकना आचारनु वर्णन छ कल्पश्रुत बे प्रकारना छे-१ चुल्लकल्पश्रुत अने २ महाकल्पश्रुत पहेलामा श्रीमहावीरस्वामीना ज कल्पाचारनु वर्णन छे ज्यारे बीजामा चोवीशे तीर्थंकरोना आचारनु वर्णन छे

५. उववाई (औपपातिक)—देवगति, नरकगति अने सिद्धिगतिमा उपजवाना अधिकारनु वर्णन छे चानीय नामना गामना ईशान खूणामा द्विपलास नामनु चैत्य हतु त्या ते गामनो राजा जितशत्रु अने श्रावक आनद प्रभु श्रीमहावीरनी देशना साभळवा आव्या ते प्रसगने लगतु वर्णन छे वानीयने केटलाक वैशाली नगरी कहे छे अने जितशत्रु श्रेणिकनो पुत्र कोणिक होवानुं अनुमान करे छ मूळ श्लोकसख्या १२०० छ अने तेना पर श्रीअभयदेवसूरिजीनी ३१२५ श्लोकनी टीका छ

६. रायपसेणीय (राजप्रश्नीय)—जेमा प्रथम नास्तिक अने बाद गुरुसमागमथी आस्तिक बनेल प्रदेशी राजाए करेल प्रश्नो अने केशीकुमार गणधरे आपेल उत्तरोनु वर्णन छे प्रदेशी राजा मृत्यु पामीने सूर्याभ नामनो देव थया अने प्रभु श्रीमहावीरने वदन करवा आव्यो ते हकीकतनु वर्णन छे मूळ श्लोक २०७८ छ श्रीमलयगिरिजीकृत टीका ३७०० श्लोकप्रमाण छे

७ जीवाभिगम—जीव, अजीवनु विस्तारपूर्वक चमत्कारिक वर्णन छ मूळ श्लोक ४७०० छ श्रीमलयगिरिकृत मोटी टीका १४००० श्लोकप्रमाण छ ज्यारे लघुटीका ११००० श्लोकनी छे चूर्णी १५०० श्लोकनी छ

८. पन्नवणा (प्रज्ञापना)—जीव अने अजीव कोने कहेवाय ? तेने लगतु वर्णन छे तेना ३६ मा पदमा छत्रीश वस्तुआनु वर्णन विस्तृत रीते करेल छे मूळ श्लोक ७७८७, श्रीमलयगिरिकृत टीका १६००० श्लोकप्रमाण छे ज्यारे श्रीहरिभद्रसूरिकृत लघुटीका ३७२८ श्लोकनी छ

९. महापन्नवणा—जीव तेमज अजीवने ओळखवानो जेमा विस्तृत वृत्तात छे

१० पमायप्पमाय—आमा पमाद अने अप्रमादने लगतु विवेचन कर वामा आव्यु छे ज प्रमाद सेवे तने अशुभ विपाक-फळ अने न सेवे तेने शुभ विपाक प्राप्त थाय प्रमाद ए मानव जातना मोटामा मोटो शत्रु होवाथी तेना सबधे विशेष विवेचन करवामा आवे छे

चाराशी लाख जीवायोनिमा भमतो जीव कोई पुण्ययोगे दश दृष्टाते दुर्लभ मनुष्य जन्म प्राप्त करे छ अने पछी चिंतामणि रत्न तुल्य नरभव पामीने पण घणा लोक प्राणीओ प्रमादना वशवर्तीपणाथी तने वृथा गुमावी बेसे छे प्रमादना पाच कारणो जणावता कह्यु छे के—

मज्ज विसयकसाया, निद्दा विगहा य पचहा भणिया ।
एए पच पमाया, जीव पाडेंति ससारे ॥

अर्थात् मद्य, विषय, कषाय, निद्रा अने विकथा—आ पाच प्रकारना प्रमादो प्राणीने भ्रमण करावे छे-ससारमा जन्ममरणादिकना दु खमा नाखे छे

मद्य—मदिरा, भाग, गाजो, अफीण प्रमुख नशाना जे पदार्थो होय तेने मद्य जाणवु अथवा आठ प्रकारना [1]मदना प्रसगथी पण प्राणी धर्मकर्तव्यथी पतित बने छ रात्रिदिवस तना परवशपणाथी आरभ-समारभनी प्रवृत्तिमा रच्यो पच्यो रहे छे अने परिणामे भवोदधिमा भटक्या करे छे

विषय-शब्द, रूप, रस, गध अने स्पर्श-ए पाच प्रकारना विषयो छे

शब्द—स्त्रीओना मधुरा गीत तथा वार्तालाप साभळी तेना प्रत्ये उद्भवती आसक्तिने अगे तेना परिचयनी, तेनी साथे भोग विलास माणवानी अभिलाषा उत्पन्न थाय छे अने तेना परिणामे मनुष्य-जन्म हारी जवाय छे सगीत अने विविध वाजिंत्रना ध्वनिथी पण आसक्ति वृद्धिगत थाय छे वीणावाद्यमा आसक्त

---

[1] जातिमद रूपमद कुळमद, ज्ञानमद, बळमद, तपमद, ऋद्धि(ऐश्वर्य) मद अने लाभमद-आ आठ प्रकारनां मदो छ, जे प्राणीओने दुर्गतिरूपी ऊंडी खाइमा धकेले छे

थयेल मृग छेवटे पारधीनी जाळमा फसाइ मृत्युनु दुःख वहोरी ले छे

रूप-रूपवती स्त्रीओना दर्शनथी अथवा मनोहर अने रमणीय पदार्थोना अवलोकनथी तनमा विकार उपजे छे अने तेना परिणामे भोगविलासनी आशा उद्‌भवे छे तेनी प्राप्ति माटे अहोनिश इच्छना रहेया साथे आरंभ-समारंभ करतो प्राणी प्रांते ससार-समुद्रमा रखडे छे दीपकना रूप(प्रकाश)मा मुग्ध बनेल पतगीयु तेमा झपलावीने पोताना प्राणने कुरबान करी नाखे छे

रस-मीठाई अथवा मिष्ट रसवाळा पदार्थाने खावानी लोलुपताथी, जिह्वास्वादथी कोई पण प्रकारना भक्ष्याभक्ष्यनु भान रहेतु नथी तेमज तेवी वस्तुनी प्राप्ति माटे असत्यादि पापस्थानको पण सेवाय छे अने तेमा अहोनिश इच्छना रहेती होवाथी धर्मकार्यमा न्यूनता आवी जाय छे मासनी पेशीने विषे आसक्त थतु मत्स्य तेनी साथे लगाडेल लोढाना सळीयानी तीक्ष्ण अणीथी छेवटे मृत्युने आधीन बने छे

गध-सुगधने विषे आसक्त थइने प्राणी तेवा प्रकारनी सुवास प्राप्त करवामा अनेक समारभो करे छे अने तेमा ज लयलीन रहेवाथी धर्मकार्य पण तेने सूझतुं नथी सहेज पण दुर्गा सना-दुर्गंध तेने दुःखदायी थइ पडे छे तेनाथी परिषह सहन थइ शकता नथी तेमज जीव चचळ बनी जाय छे भ्रमर गध प्रत्येनी तीव्र आसक्तिने कारणे कमळमा बीडाई जाय छे अने छेवटे विनाश पामे छे

स्पर्श-स्त्रीआदिकना सुकोमळ स्पर्शने कारणे मन व्यग्र बनता कामोत्पत्ति थाय छे अने तेनी शातिने अर्थे प्राणी अनेक प्रकारना दुर्ध्यान करे छे हिंसादिकमा प्रवृत्त थता अचकातो नथी तेमज तेमा रक्त बनीने छेवटे प्राणोनी आहुति आपी दे छे हस्ती पण्ण कयो स्पर्शप्रेमी छे के कागळनी बनावेल कृत्रिम हाथणीने जाइने पण तेनी उत्कट काम-इच्छा जोर करे छे, अने तेने स्पर्शतो ते तेनी पाछळ अध बनीने दोडे छे तेवामा तेने फसाववा माटे खोदेला खाडामा पडी बधनमा जकडाय छे

आ प्रमाणे एक एक इन्द्रियना वशवर्तीपणाथी जीवन निरर्थक बने छे

तो पाचे इन्द्रियोनी आसक्तिवाळा मनुष्ये तो स्वयमेव पोतानी गतिनो तेमज स्थितिनो संपूर्ण विचार करी लेवा बरेखर एक कविए यथार्थ ज कह्यु छे के-

" कुरङ्गमातङ्गपतङ्गभृङ्गा, मीना हता पञ्चभिरेव पञ्च ।

एकः प्रमादी स कथं न हन्यात्, यः सेवते पञ्चभिरेव पञ्च ॥२॥"

अर्थात् मृग, हस्ती, पतगीयु, भ्रमर अने मत्स्य एक-एक इन्द्रियने विषे अतिशय गृद्धपणु राखवाथी यमराजने आधीन बने छे तो पाचे इन्द्रियोने आधीन बनीने जे प्रमादी जीवन व्यतीत करे छे ते केम जीवन-साफल्यता प्राप्त करी शके ?

कषाय-कषायो चार छे-क्रोध मान, माया अने लोभ

क्रोध-बीजा प्रत्ये तीव्र-उग्र परिणामना कारणे मुखादि अवयवो तपाववा तेने क्रोध कहेवामा आवे छे, तेथी कोईना उपर गुस्सो थाय, रोष आवे अने आर्त्तध्यान थाय तेमज तेने अगे हिंसादि कार्यमा पण प्रवर्ते

मान-प्राप्त अथवा अप्राप्त वस्तुनो अहकार ते मान तेनाथी पोताना ज्ञातपणानु, वाणिज्य-विचक्षणता आदिनु अभिमान करे, धर्म करणी न करे अने पोतानी प्रतिष्ठा साचवी राखवा अनेक प्रकारना आरभसमारभ करवापूर्वक आर्त्तध्यान करे

माया-गुप्तपणे स्वार्थवृत्ति सिद्ध करवानी वाछा ते माया तेथी कपट, छतरपींडी करी बीजाने वचे तेने मूझवे तेनो अयोग्य लाभ ले अने ए प्रमाणे वर्तन करी रत्नचिंतामणि सरखो मानव भव कोडीनी प्राप्ति माटे एळे गुमावे

लोभ-धनादि सपत्ति एकठी करी सग्रह करी राखवानी मनोवृत्ति ते लोभ तेथी अहोनिश परिग्रह वधारवामा, विशेष ने विशेष सपत्ति मेळववामा लयलीन रही धर्मकरणी भूली जाय

निद्रा-रातदिवस निद्रा लेवामा व्यतीत करे अथवा समय मळे तो बीजानी निंदा करवामा प्रवृत्त थाय पण धर्मकृत्य न करे

विकथा-जेनाथी आत्माने कई पण लाभ न थाय तेवी कथा-वार्ता ते विकथा विकथा करनार प्राणी नथी जाणता के पुण्ययोग हु मनुष्यपणु पाम्या छु अने फोगट विकथा करीश तो धर्मकरणी विना मानवजन्म निष्फळ जशे यथारुचि खाई-पीने फोगट गामगपाटा मारवा ते ज तेने प्रियकर थई पडे छे विकथा चार

प्रकारनी छे-राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा अने भक्तकथा अत्यारे प्रवर्तती स्थिति तपासशु तो मानवीनो मोटो भाग विकथा करवामा अथवा तो तने पुष्टि आपता वर्तमानपत्रो वाचवामा व्यतीत थाय छे, जे खरेखर शोचनीय छे मानवे पोतानी पळे-पळनो सदुपयोग करता शीखवु जोइए एटला ज खातर भगवान श्रीमहावीरे श्रीगौतमस्वामीने कह्यु हतु के-'समय गोयम ! मा पमायए' अर्थात् हे गौतम ! तुं एक समय मात्र पण प्रमाद करीश नहि

राजकथा-अमुक देशनो राजा महाशूरवीर छे, तेणे सिंहने एकले हाथे मारी नाख्यो, तेनी घोडेस्वारी जोइ होय तो भल भलाने आश्चर्य उत्पन्न थाय तेनी पासे हाथी, घोडा तथा पायदळनी संख्या विपुल छे तेना आभूषणो लाखोनी किंमतना छे तेनो राज्यभंडार अखूट खजानाथी भरपूर छे ते स्वभावनो अत्यंत क्रूर छे इत्यादि कथा ते राजकथा

देशकथा-अमुक देशमा घणी ऋद्धिसंपत्ति छे लोको घणा ज सुखी अने विलासी छे ते देशमा भोगविलासना साधनो, बाग-बगीचा विगेरे घणा ज छे आ उपरात पृथ्वी पण रसाळ होवाथी विधविध प्रकारना धान्यो अने फळो प्राप्त थाय छे ते देशमा गामडाओ सुशोभित, पहेरवेश सुंदर अने खानपान मिष्ट अने रोचक छे इत्यादि वातो करवामा वखत गुमावे अने धर्मकरणी न करे ते देशकथा

स्त्रीकथा-स्त्रीओ संबंधी विधविध वार्तालाप करी तेना गुणदोषनु पृथक्करण कर्या करे मोगलजातिनी सुंदरीओ तो खूबसूरत परी जेवी होय छे दक्षिणी लोकोनी स्त्रीओ सुंदर चहेरावाळी अने नित्य स्नान करनारी होय छे, नागर लोकोनी स्त्रीओ अत्यंत सुघड होय छे एवी विधविध देशनी सुंदरीओना वर्णन करे आ उपरात स्त्रीओना शृंगार, अवयवो विगेरेने लगती वात करे ते स्त्रीकथा

भक्तकथा-(भोजनकथा) फलाणा जमणवारने लगती वात करे के अमुकना जमणवारमा मिष्टान्न सारु थयु हतु शाक तम तमाटवाळु हतु, पेंडा घणा ज सारा हता विगेरे विगेरे वात करे ते भक्तकथा

ऊपरनी चारे कथाओ परत्वे विपरीत बोले एटले के निंदा करे ते पण विकथा ज कहेवाय, जेमके राजा तो पापी छे, निर्दय

छे, विषयी छे, अमुक देश तो क्लिष्ट छे, लोको दुराचारी छे, अमुक स्त्री ना आचार वगरनी ने विषयलपटी छे, कर्कशा तेमज क्रोधी छे, अमुक भोजन तो अस्वादिष्ट छे, मीठाइ तो गधाई गयेली छे, शाक सडेलु छे इत्यादि इत्यादि वार्तालापो करवामा रच्यापच्यो रहे ते पण विकथानो ज प्रकार छे

आवी रीते प्रमादना पाचे प्रकारोनु जे सेवन करे छे ते कर्मरुपी अग्निमा हरहमेश बळ्या करे छे, तेने रोग-सतापादि परिताप उपजे छे, मरणादिक महाभय रहे छे अने ससाररूपी कारागारना बधनमा जकडावु पडे छे आवी घोर विटबनामाथी मुक्त करावनार जो कोई होय तो श्रीकेवळी भगवंते उपदेशेल धर्म ज छे तेथी प्रखर शत्रु सदृश प्रमादना परित्याग करी धर्मसेवन करवु जोईए प्रमाद सेवे छे तेने नरकादि महादु खो, महायातनाओ सहन करवी पडे छे, महाभयंकर ताड, पिशाचादिकनु रूप जोवु पडे छे, शब, हाडका प्रमुखनी दुर्गंध सहन करवी पडे छे, अतिकडवो कदर्दायी आहार करवो पडे छे, करसी तथा तलवार जेवा तीक्ष्ण शस्त्र परथी चालवु पडे छे, अत्यत शीत तथा अत्यंत उष्णता सहन करवी पडे छे, अत्यत बोजो-असह्य भार उपाडवो पडे छे-आवा आवा कष्टो प्रमादना परवश पणथी सहन करवा पडे छे प्रमादनु आवु भयप्रद स्वरूप समजीने जे कोई महाव्रतनु पालन करे, इद्रियोने दमे, मनने काबूमा राखे, श्रावक धर्म पाळे शुद्ध समकितधारी बने ते मनुष्य मरण पामीने देवलोकमा जाय अने त्याथी च्यवीने पण सुख-सपत्ति भोगवी, धर्माराधन करी छेवट अक्षयसुखनो भोक्ता थाय

आवी रीते प्रमाद सेववाथी अशुभ फळ अने प्रमादनो परित्याग करवाथी देव लोकादिकनी प्राप्तिरूप शुभ विपाक-फल थाय तेने ज्गतु जेमा वर्णन छे ते दशमु पमायप्पमाय जाणवु

११ नंदी—तेमा महामागलिक मति श्रुत,अवधि,मन पर्यव अने केवळज्ञान ए पाच प्रकारना ज्ञाननु स्वरूप छे आ सूत्र देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमणकृत छे मूळ श्लोक ७०० श्रीमलयगिरिकृत टीका ७७,२८ श्लोकप्रमाणनी अने श्रीहरिभद्रसूरिकृत टीका २३१२ श्लोकनी छे चूर्णि २००० गाथानी छे, टिप्पण ३००० श्लोकनु छे

१२ अनुयोगद्वार—चार प्रकारना व्याख्यान करवानी पद्धति-रीतिनु तेमा वर्णन छे वळी नय-निक्षेपानु वर्णन अने सिद्धि दर्शाववामा आवल छ श्लोक १८०० छे मलधारी हेमचद्रसूरिकृत वृत्ति ६००० अने श्रीहरिभद्रसूरिकृत लघुवृत्ति ३५०० श्लोकनी छे श्रीजिनदासगणि महत्तरनी चूर्णि ३००० श्लोकनी छे

१३ देविंदत्थओ (देवेंद्रस्तव)—देवोना स्वामी इद्रे ने स्तवना-स्तुति करी त तेमा इद्राना स्वरूपनु कथन छे गाथा २००

१४ तदुलवेयालिय—जीव गर्भमा आवे त्यारे पेचढो होय अने क्रम क्रमे कल्लो वृद्धि पामे तेने लगतु तेमज जन्मथी माडीने मरण सुधीनु वृत्तात छे गाथा ४००

१५ चद्राविध्यक—चद्रमानी गतिनु प्रमाण जेम राधावेधमा चतुराइथी पुतळीनी आख वीधवामा आव छे तेम चद्रनी गति अनुसार अणसण साधवानी क्रियानु वर्णन

१६ सूर्यप्रज्ञप्ति—सूर्यनी गति तथा माडलादिकनु वर्णन मूळ श्लोक २२००, मलयगिरिकृत टीका ९००० श्लोकप्रमाण अने चूर्णि १००० श्लोकनी छे

१७ पोरिसीमडल—शकु तमज पुरुषना शरीरना प्रमाण जेटली छाया थाय त्यारे पोरिसी थाय अर्थात् जे जे वस्तुओ छे ते ते वस्तुओना पोताना शरीरप्रमाण छाया थाय त्यारे पोरिसी कहेवाय आ प्रमाण उत्तरायणना अतमा अने दक्षिणायननी आदिमा समजवु आ पोरिसीप्रमाण एक दिवस होय छे, पछी तो आठ आगळना एकसठ भाग करीए अने तेना एक भाग जेटलो दक्षिणायने पोतानी छाया ऊपर वधे अने उत्तरायणमा तेटलो घटे तेम समजवु आवी रीते माडले-माडले पोरिसीनु प्रमाण जे ग्रथमा आप्यु छे ते पोरिसीमडल

१८. मडलप्रवेश—दक्षिण तथा उत्तर दिशाना मडलोने विषे चालता सूर्य तथा चद्रनो एक एक मडल मूकीने बीजा मडलमा प्रवेश करवो तेने लगतु वर्णन ते मडलप्रवेश

१९. विज्जाचरणविनिश्चय—विद्या एटले ज्ञान, समकित युक्त ते चारित्र तेनु जे फळ-विनिश्चय तेने लगतु वर्णन अर्थात् विद्याचारणादिकनो वृत्तात

२०. गणिविद्या—बाल, वृद्ध साधुओनो समुदाय ते गण कहेवाय, ते गणनो नायक-अधिष्ठाता ते गणि अथवा आचार्य कहेवाय तेनी विद्या ते गणि विद्या आ विद्याद्वारा ज्योतिश्चक्रादीनु ज्ञान थाय, जेथी अमुक शुभ वार, नक्षत्र, तिथि, मुहूर्त जोईने दीक्षा आदि धार्मिक क्रिया करावी शकाय

२१. ध्यानविभक्ति—आर्त्त, रौद्र, धर्म अने शुक्लध्यान—आ चार ध्यानने लगतु तेमा वर्णन छे

२२. मरणविभक्ति—मरण एटले प्राणत्याग करवो ते बे प्रकारे थई शके-एक सारी रीते, बीजो दुष्ट अध्यवसायथी आने लगतु वर्णन करवामा आव्यु छे

२३ आयविसोही (आत्मविशुद्धि)—आत्माने कोई पण धार्मिक क्रिया करता अगर तो बीजी रीत भग पड्यो होय तेने माटे आलोयण-प्रायश्चित्त विगेरे लई आत्माने शुद्ध करवो तेने लगतो अधिकार आ ग्रथमा छे

२४. वीतरागश्रुत–रागीपणु त्यजी कइने वीतराग-रागरहित केम थवाय? तेने लगतु आमा वर्णन छे

२५ संलेखना श्रुत–द्रव्य तथा भावथी सलेखना करवानो अधिकार द्रव्य सलेखना एटले चार वर्ष सुधी विविध-जुदी जुदी जातनो तप करे अर्थात् छट्ठ, अट्ठम, चार उपवासादिक तप करे, बे वर्ष सुधी निवी करे, पछी एकातरे आयंबिल करे, पछी छ महिना सुधी उपवास करे, पछी प्रमाण सहित आयंबिल करे, जो मुखभग थाय एटले तपश्चर्यामा भागा पडे तो वळी छ मास सुधी करे त्यारपछी कोटिसहित तप करे एटले उपवास तथा एकासण एकएकने पारणे करे भावसलेखना एटले क्रोधादिक कषायो घटाडे-त्याग

२६. विहारकल्प–स्थविरकल्पी प्रमुखना विहारना आचारनु वर्णन

२७ चरणविधि–जेमा चारित्र पाळवानी विधिनु वर्णन छे

२८. आउरपच्चक्खाण–रोगोत्पत्ति थाय-व्याधि थाय त्यारे पच्चक्खाण कराववानी विधिनु वर्णन छे ध्यान अने जाणवा योग्य ६३ वस्तुओनु वर्णन आमा करवामा आव्यु छे गाथा ८४

२९ महापच्चक्खाण–स्थविरकल्पी तथा जिनकल्पी अंतकाले बार वर्षनी जे सलेखना करे तेने लगती विधिनु वर्णन गाथा १३४

कालिकश्रुत पण अनेक प्रकारनु छे जेमके-१ उत्तराध्ययन, २ दशाश्रुतस्कध, ३ बृहत्कल्प, ४ व्यवहारसूत्र, ५ निशीथ, ६ महानिशीथ, ७ ऋषिभाषित, ८ जबूद्वीपप्रज्ञप्ति,९ द्वीपसागरप्रज्ञप्ति, १० चद्रप्रज्ञप्ति, ११ खुड्डिया(क्षुल्लिका[नानी])-विमाणविभत्ति, १२ महल्लिया(महती [मोटी]) विमाणप्रविभक्ति, १३ अगचूलिका, १४ वर्गचूलिका, १५ विवाहचूलिका, १६ अरुणोपपात, १७ वरुणोपपात, १८ गरुडोपपात, १९ धरणोपपात, २० वैश्रमणोपपात, २१ वेलंधरोपपात, २२ देवेंद्रोपपात, २३ उत्थानश्रुत, २४ समुत्थानश्रुत, २५ नागपरिज्ञावलिका, २६ निर्यावलिका, २७ कप्पिआ (कल्पिका), २८ कप्पवडिसिया (कल्पावतसक), २९ पुप्फिया (पुष्पिता), ३० पुप्फचूलिया अने ३१ वह्निदशाग * इत्यादि

१. उत्तराध्ययन–जे सूत्रमा बधा अध्ययनो न्यून नथी, श्रेष्ठ छे ते तेना अध्ययन ३६ छे साधुओने सयममार्गमा स्थिर राखवाने उपदेशरूपे अनेक दृष्टातो सहित सुदर भावार्थ आप्या छे मूळ श्लोक २०००, वादीवेताळ श्रीशान्तिसूरिकृत

* पाक्षिक सूत्रमा आशीविषभावना, दृष्टिविषभावना, चारणभावना, महास्वप्नभावना अने तेजसनिसर्ग–एटला नामो विशेष जणाव्या छे २७ थी ३१ सुधीना पांच नामो निर्यावलिका सूत्रना विभागरूप ज छे

मोटी टीका १८००० श्लोकप्रमाण छे ज्यारे विक्रम सवत् ११२९ मा श्रीनेमि चद्रसूरिए लघुटीका १२६०० श्लोकनी बनावी छे श्रीभद्रबाहुस्वामीकृत निर्युक्ति ६०७ गाथानी छे चूर्णि ६००० श्लोकनी छे

२. दशाश्रुतस्कध–आ सूत्रमा दश अध्ययन छे आ सूत्रना आठमा अध्ययनमाथी उद्धृत करी श्रीकल्पसूत्रनी रचना करवामा आवी छे मूळ श्लोक १८३०, निर्युक्ति ११८ अने चूर्णी २२४ श्लोकप्रमाण छे

३. बृहत्कल्प–जेमा स्थविरकल्प अने जिनकल्प पाळवानो आचार छे उद्देश ३४ छे मूळ श्लोक ४७३ वि स १३३२मा बृहच्छाखीय श्रीक्षेमकीर्ति सूरिकृत टीका ४२००० श्लोकप्रमाण छे बृहद्भाष्य १२००० अने लघुभाष्य ८००० श्लोकनु छे चूर्णि १४०२५ श्लोकप्रमाण छे

४. व्यवहारसूत्र–आलोयण-प्रायश्चित्त सबधी अधिकार छे उद्देशा १०, मूळ श्लोक ६००, श्रीमलयगिरिजीकृत टीका ३३६२५ श्लोकप्रमाण छे भाष्य ६००० अने चूर्णी १०३६१ श्लोकप्रमाण छे

५. निशीथ–जे मुनिओ सान्वाचारथी च्युत थाय तेनी शिक्षा सबधी आ सूत्रमा अधिकार छे उद्देशक २०, मूळ श्लोक ८१५, मोटु भाष्य १२००० श्लोकनु अने लघुभाष्य ७४०० श्लोकनु छे चूर्णी २८००० श्लोकप्रमाण छे

६ महानिशीथ–जिनमदिर तथा जिनप्रतिमा, अठ्ठाइ महोत्सव, अनुकपा विगेरेने लगता शिक्षा-उपदेश सबधी मोटा श्लोकोनु सविस्तर वर्णन छे अध्ययन १३, मूळ श्लोक ४५०० मतातरे तनी त्रण प्रकारनी वाचना छे लघुवाचना ४२००, मध्यम वाचना ४५०० अने बृहद्वाचना ११८०० श्लोकप्रमाण छे

७ ऋषिभाषित–श्रीनेमिनाथना समयना २०, श्रीपार्श्वनाथना समयना १५ अने श्रीमहावीर परमात्माना समयना १०–कुल ४५ ऋषिओनु वणन छे

८. जबूद्वीपप्रज्ञप्ति–जबूद्वीप सबधी भौगालिक वर्णन छे मूळ श्लोक ४१४६, श्रीमलयगिरिजीकृत टीका १२००० श्लोकनी अने चूर्णी १८६० श्लोकनी छे

९. चद्रप्रज्ञप्ति–चद्रनो चार (गति) अने माडला सबधी अधिकार छे मळ श्लोक २१०० श्रीमलयगिरिजीकृत टीका ९४११ श्लोकनी छे ज्यारे लघु-टीका १००० श्लोकप्रमाण छे

१० द्वीपसागरप्रज्ञप्ति–तमा अनेक द्वीप अने समुद्र सबधी वर्णन छे आ उपरात मानुष्योत्तर पर्वत, नदीश्वरद्वीप, रुचकद्वीप इत्यादि पर रहेल जिन मदिरोनु वणन आपवामा आव्यु छे

११. क्षुद्रिकाविमानप्रविभक्ति—जेमां समश्रेणिए रहेला विमान अने छूटा विमाननुं अल्पसूत्रार्थद्वारा वर्णन करेल छे

१२. महतीविमानप्रविभक्ति—जेमां उपर्युक्त विमानोनुं विस्तृत सूत्रार्थथी विवेचन करवामां आव्युं छे

१३ अंगचूलिका—आचारांगादि जे अंगो छे तेनी चूलिका ते अंगचूलिका, आ चूलिकामां अंगमां ज कह्युं छे तेनो तेमज जे कहेल नथी ते सर्वनो संग्रह छे

१४ वर्गचूलिका—वर्ग पटल अध्ययन आमां अष्टवर्गादिक अध्ययननो संग्रह करवामां आव्या छे

१५. विवाहचूलिका—श्रीभगवती सूत्रनी (विवाहप्रज्ञप्तिनी) चूलिका छे

१६. अरुणोपपात, १७. वरुणोपपात, १८. गरुडोपपात, १९. धरणोपपात, २०. वैश्रमणोपपात, २१. वेलंधरोपपात अने २२. देवेंद्रोपपात—जेना अध्ययनथी ते ते नामना देव प्रत्यक्ष थाय अने स्मरण करनारनी स्तवना-स्तुति करी तेमनी कार्यसिद्धि करे अरुण, वरुण विगेरे देवोना जेमां संबंध छे ते अरुणोपपात, वरुणोपपात इत्यादि सूत्रो जाणवा

२३. उत्थानश्रुत—जेना अध्ययनथी गाम, नगर, कुल अने राजधानी विगेरे उज्जड थाय ते. ज्यारे कोई साधु-मुनिराज क्रोधावेशमां आवे त्यारे आ श्रुतनो एक वार पाठ करे त्यारे सर्वत्र लोक भयभ्रान्त थई जाय अने बीजी त्रीजी वार भणे त्यारे सर्व ग्राम-नगरादिक छोडीने चाल्या जाय-नाशी जाय

२४. समुत्थानश्रुत—ज्यारे उपर्युक्त क्रोधी मुनिराजनुं कार्य थई जवाथी तेमना चित्तनी शांति थाय-प्रसन्नचित्त थाय त्यारे पाछुं समुत्थानश्रुत भणे ने तेना एक-बे-त्रण वारना पाठथी नाशी गयेला लोको पाछा मंगलनी इच्छाथी आवीने ग्राम नगरादिकमां निवास करे

२५. नागपरिज्ञावलिका—नागकुमार देवनी परिज्ञा चूर्णिकार जणाय छे के-ज्यारे साधु आ अध्ययन भणे त्यारे संकल्प कर्या विना पण नागकुमार देव पोताना स्थानमां रह्या छतां ते साधु-मुनिराजने वांदे अने संघ पर कोई पण संकट आवी पडयुं होय तो तेनुं निवारण करे

२६. निरयावलिका—तेमां नरकावासानुं वर्णन छे नरकमां जनारा मनुष्य अने तिर्यंचो विगेरेनुं पण वर्णन आपवामां आव्युं छे

२७. सूत्रकल्पिक—सौधर्मादि देवलोकना कल्प संबंधी वर्णन छे

२८. कल्पावतंस–विमानना शिखरादिनुं वर्णन चूर्णिकार एम पण कहे छे के सौधर्म तथा ईशान देवलोकने विषे जे विमानो छे तेमा अत्यंत तपश्चर्या द्वारा जे देवपणे उपजे तेने लगतु वर्णन आपेल छे

२९ पुष्पिका–गृहस्थावासनो त्याग करी जे संयमभावमा स्थिर थया पछी सुखिया थया तेने लगतो अधिकार छे

३० पुष्पचूलिका–गृहस्थपणानो त्याग करी साधुत्व स्वीकार्या बाद पासत्थापणे विचर्या संबंधी अधिकार

३१. वह्निदशाग–अंधकवृष्णि राजाना कुळमा उत्पन्न थईने जेओ मोक्षे गया तेओने लगतो अधिकार

आ प्रमाणे उत्कालिक अने कालिक श्रुतनी संख्या गणावता पार आवे तेम नथी आपणे पूर्वे जाणी गया ते प्रमाणे श्रीऋषभदेवना समयमा ८४ हजार, बावीश तीर्थंकरना समयमा संख्याता हजार अने श्रीमहावीर परमात्माना समये चौद हजार प्रकीर्णको रचाया छे भगवान श्रीऋषभदेवना चोराशी हजार साधुओ हता माटे तेमना समयमा कालिक अने उत्कालिक श्रुतनी संख्या चोराशी हजारनी थई, कारण के भगवते उपदेशेल श्रुतनो अंगीकार करीने जे रचना करे ते सर्व प्रकीर्णक कहेवाय अथवा तो पोतानी कुशळता दर्शावया पूर्वक श्रुतने अनुसारे उपदेशने अवसरे रचना करी बोले ते पण प्रकीर्णक कहेवाय आ प्रमाणे श्रीऋषभदेवना समयमा ८४ हजार, बावीश तीर्थंकरना समयमा संख्याता हजार अने श्रीवीरपरमात्माना समयमा चौद हजार प्रकीर्णको नी रचना थई

ऊपर जणावेल हकीकतना संबंधमा केटलाक आचार्योनो मतभेद पण छे केटलाक आचार्यो एम पण जणावे छे के-श्रीऋषभदेवने आश्रयीने जे साधु संख्या कही छे ते सूत्र रचवानी श्रेष्ठ शक्ति धरावनारा साधुओनी समजवी बीजा सामान्य साधुओ तो घणा थया छे वळी केटलाक एम पण जणावे छे के-श्रीऋषभदेवनी विद्यमानतामा ज जणावी तेटली साधुसंख्या थई, पण तेमना निर्वाण पछी जे जे साधुओ तेमना शासनकाळमा थया अने तेमा पण जे श्रेष्ठ शास्त्र रचवानी शक्तिवाळा थया तेओना रचेला ग्रंथो ज सूत्रमा अधिकृत करेला जाणवा अने तेवा नाम ज श्रीनंदीसूत्रमा सूचवेल छे आवा प्रकारना मतांतर दर्शाववा माटे ज 'अहवा' शब्द सूत्रमा मूकवामा आव्यो छे श्रीऋषभदेवादिक तीर्थंकरना समयमा तेमना जे शिष्यो (१) उत्पातबुद्धि, (२) वैनेयिकी, (३) कामणकी अने (४) पारिणामिकी-आ चार बुद्धिना धरनार हता तेमना रचेला जे वचनो ते प्रकीर्णको जाणवा प्रत्येकबुद्ध पण तेटला ज जाणवा

आ संबंधमां कोई आचार्य एम कहे छे के-दरेक तीर्थंकरना समयमां असंख्याता पयन्ना रचाय छे, पण अहीं तो फक्त प्रत्येकबुद्धना रचेला ज प्रकीर्णको जाणवा आ कथन परत्वे कोई शंका करता कहे के-प्रत्येकबुद्धने शिष्य तो न होय तो तमारु कथन सत्य-न्यायवी जणातु नथी आ शंकाना संबंधमां खुलासो करता गीतार्थ जणावे छे के-परमात्माना शासनरहित काळमां जे प्रत्येकबुद्ध थाय तेने शिष्यनो अभाव होय छे, परन्तु जे परमात्माना शासनकाळमा प्रत्येकबुद्ध थाय छे तेने शिष्य करवानो निषेध नथी आ संबंधी नीचेनो मूळपाठ दर्पण सरखो स्पष्ट छे "इह तित्थे अपरिमाणा पइन्नगा पइण्णगसामिअपरिमाणत्तणओ, किं तु इह सुत्ते पत्तेयबुद्धपणीय पइन्नग भाणियव्वं, कम्हा जम्हा पइण्णगपरिमाणेण चेव पत्तेयबुद्धपरिमाण कीरइ, भणिय 'पत्तेयबुद्धा वि तत्तिया चेव'त्ति० चोयग आह-नणु पत्तेयबुद्धा सिस्सभावो य विरुज्झए ? आयरिओ आह-तित्थगरपणीयसासणपडिवन्नत्तणओ तस्स सीसा हवन्तीति" अर्थात् "तीर्थमां परिमाण रहित-संख्या रहित पयन्नानी रचना थाय छे, कारण के पयन्नाना रचनारनी संख्या परिमाण रहित होय छे, परन्तु अहीं तो प्रत्येकबुद्धना ज रचेल पयन्नानी संख्या ज सूत्रकार कहे छे आ संबंधमां शंका थता शिष्य पूछे छे के-'प्रत्येकबुद्धने तो शिष्यनो अभाव होय छे' आ शंकानु समाधान करता आचार्यभगवंत कहे छे के-'महानुभाव ! तीर्थंकर भगवंतना शासन-काळमां जे प्रत्येकबुद्ध थाय तेने शिष्य करवानो निषेध नथी"

सदाचारी गच्छमां निवास करवानु फल-

आ प्रमाणे आवश्यकव्यतिरिक्त श्रुतनु स्वरूप जाणवु अने साथोसाथ प्रकीर्णक संबंधी समजुती पण विचारी लेवी असदाचारी-भ्रष्ट गच्छमां रहेवाथी संसार-परिभ्रमण वधे तेम जणाव्यु हवे सदाचारी-सारा गच्छमां वास करवाथी जे फायदा-लाभ थाय ते संबंधी वर्णन त्रण गाथाद्वारा करे छे

जामद्धजामदिणपक्खं, मासं संवच्छरंपि वा ।
सम्मग्गपट्ठिए गच्छे, संवसमाणस्स गोअमा ! ॥ ३ ॥
लीलाअलसमाणस्स, निरुच्छाहस्स वीमणम् ।
पिक्खविक्खइ अन्नेसिं, महाणुभागाण साहूणम् ॥ ४ ॥
उज्जमं सव्वथामेसु, घोरवीरतवाइअ ।
लज्जं संकं अइक्कम्म, तस्स वीरिअं समुच्छले ॥ ५ ॥

[यामार्द्धं याम दिन पक्ष, मास सवत्सरमपि वा ।
सन्मार्गप्रस्थिते गच्छे, सवसमानस्य गौतम ! ॥ ३ ॥
लीलालसायमानस्य, निरुत्साहस्य विमनस्कस्य ।
पश्यत' अन्येपा, महानुभागाना साधूनाम् ॥ ४ ॥
उद्यम सर्वस्थामेपु, घोरवीरतपादिकम् ।
लज्जा शङ्कामतिक्रम्य, तस्य वीर्यं समुच्छलेत् ॥ ५ ॥]

गाथार्थः—हे गौतम ! अर्ध प्रहर, एक प्रहर, दिवस, पक्ष, मास के वर्ष पर्यन्त सन्मार्गगामी—सदाचारी गच्छमा रहेनारा सुखशील—आळसु, निरुद्यमी, निमनस्क-शून्य चित्तवाळो साधु पण बीजा प्रौढप्रभावी साधुओने सर्व क्रियाओमा प्रयत्नशील, घोर तपस्वी, दुष्कर वैयावच्चादिक करणी करवामा तत्पर जोईने पोतानी लज्जा—शरम—सकोच अने शका सर्वथा त्यजी दईने धर्मानुष्ठान करवामा उत्साहवत बने छे, अर्थात् ' हु पण जिनोक्त क्रिया करु, जेथी दुःख-रूपी दावानळथी मुक्त थाउ ' एवी भावना तेने स्फुरे छे. ३—५

विवेचन—श्रीवीरपरमात्मा श्रीगौतमस्वामीने उद्देशीने कहे छे के-' हे गौतम ! जे साधु सदाचारी गच्छमा रहे छे तेनु आळसुपणु, निरुत्साहपणु अने मननु शैथिल्य दूर थइ जाय छे प्रतिक्रमणमा उठवा-बेसवानी क्रियाने अगे आळस आवती होय अगर तो पडिलेहणादि क्रियामा मन्दता आवती होय ते बीजा सदाचारी साधुना अवलबनथी दूर थाय छे एक गामथी बीजे गाम , विहार करवो, अध्ययन करवु विगेरे क्रियाथी निरुद्यमीपणु पण दूर थई जाय छे वळी दीक्षा लीधा पछी चारित्रपालनमा कठिनता नीहाळी मन डामाडोळ थाय, मनमा ' हवे शु करीशु ? ज्योतिष, जत्र, मत्र अने तत्रादि करी आजीविका चलावु ' विगेरे विचार करे छता पण तेनु मन दृढ थइ जाय, कारण के सन्मार्गगामी गच्छमा रहेनारा साधुओनु यथा समये क्रियापूर्वकनु आचरण नीहाळे, ग्रामानुगाम विहार, उपवास, छट्ठ, अट्ठम, पासखमण तथा मासखमणादि उग्र तपश्चर्या जुए आ उपरात वर्धमान आय बिल तथा निधि आदि तपश्चर्या वारवार नीहाळे, ज्ञानवृद्धना विनयादिक जुए, वैयावच्चादिक प्रवृत्ति जाण, आहार-पाणी लावी देवा, पग चापवा इत्यादि क्रिया नीहाळे, केवलीभाषित धर्मना लेशमात्र पण अश्रद्धा न नीरखे, भूलचूक ना मिच्छा दुक्कड (माफी) माग, आलोयण-प्रायश्चित्त ग्रहण करे इत्यादि विविध शुद्ध करणी जोईने सुखशील-आळसु साधु विचारे के-' आ पण मनुष्य

छे अने हु पण मानव छु तो शा माटे माराथी शुद्ध चारित्रपालन न थई शके ? ' आवी जातनी विचारणाथी ते उद्यमवत थने अने मनमां आवेली नय ळाई दूर करवापूर्वक वीर्योल्लासपूर्वक सयमधर्मनुं सम्यग् प्रकारे आराधन करे

आ बाबतमां तर्क उठावता कोई प्रश्न करे के-घोर तपश्चर्या अगर तो उग्र क्रिया करनारा साधुओने जोई कोचोपोचो साधु तो नासी जाय अर्थात् व्रतभंग करे आ बाबतनु समाधान करता जणावे छे के—जे दु खगर्भित वैराग्यवासित आत्मा दीक्षा ग्रहण करे ते तो कदाच पतित थई जाय जे ससारनी असारता या तो अनित्यता नीहाळी नि स्पृही बनीने चारित्र अगीकार करवा पछी कुसगी थई जाय, पासत्थादिकना पासमा पड्यो रहे तो ते पण सुखशीलियो बनीने पासत्थो बनी जाय अने तेनु निर्वंदपणु चाल्यु जाय, परतु जो ते शुद्ध गच्छमां रहेतो होय तो शुभ योग अने शुभ करणी जोईने तेमा रक्त बने अने शुद्ध चारित्र पाळवा पण उद्यमवत थाय आ सबधमा [1]श्रीज्ञाताधर्मसूत्रना पाचमा अध्ययनमा आपेल शेलकाचार्यनु दृष्टान्त पूर्ण प्रकाश पाडे छे

शेलकाचार्यनी कथा—

द्वारिका नगरीने विषे श्रीकृष्ण वासुदेव राज्य करता हता ते नगरीना ईशान खूणामा रैवतगिरि—रैवताचल (हालनु गिरनार तीर्थ) नामनो पर्वत छे ते पर्वत नैसर्गिक सौंदर्यथी अति रमणीय अने अनेक प्रकारना वृक्ष-लताओथी चित्ताकर्षक छे ते पर्वतनी नजीकमा ज नदनवन नामनु उद्यान हतु, जे खरे खर इद्रना नदनवनने पण भुलावे तेवु हतु ते द्वारिका नगरीने विषे थावच्चा नामनो गाथापति-गृहस्थ वसतो हतो ते अत्यत धनिक अने नागरिक जनोने विषे प्रतिष्ठापात्र हतो तेमने थावच्चा नामनो रूपादि-गुणसपन्न पुत्र हतो तेने श्रेष्ठीए एक ज दिवसमा रभा सरखी रूपवती बत्रीश कन्याओ साथे परणाव्यो थावच्चाकुमार ते रामाओनी साथे भोगविलास भोगवता अने स्वर्गना सुखोना अनुभव करतो दिवसो व्यतीत करी रह्यो हतो, तेवामा श्रीनेमिनाथ भगवत नदन वनमा पोताना अढार हजार साधुओ अने चालीश हजार साध्वीओना परिवार सहित पधार्या नदनवनने विषे रहेला सुरप्रिय नामना यक्षचैत्यमा तेमणे वास कर्यो आ हकीकत वनपालके श्रीकृष्ण वासुदेवने जणावी एटले अत्यत हर्ष

---

[1] आ सूत्रमा त्रीजा आराना अंतभागथी पांचमा आराना शरूआत सुधीमा एटले श्री महावीरस्वामीनां जीवनकाल पर्यन्त थयेल जैनधर्मनी महान् विभूतिओ, आदर्श सतीओ अने प्रभाविक पुरुषोनु वर्णन आपवामां आव्यु छे अध्ययन १९, श्लोक ५५०० अने श्रीअभयदेव सूरिकृत टीका ४२५२ श्लोकप्रमाण छे

पामी, वनपालकने वधामणी आपी अतीव आडंबरपूर्वक श्रीनेमिनाथ भगवतने वादवा नीकळ्या थावच्चा पुत्रने आ समाचार मळता ते पण पोताने योग्य आडंबरपूर्वक प्रभुने वादवा गयो अने वांदीने योग्य स्थानने वेठो पछी श्रीनेमिनाथ भगवंते भव्य जीवोनो उद्धार करनारी रोचक देशना आपता कह्यु के-" हे भव्य प्राणीओ ! आ ससार असार छे तेने विषे जे सुखोपभोग आवाय छे ते मृगजळनी माफक वृथा छे माता, पिता, भाई, बहेन, स्त्री अने पुत्रादि स्वजन सघळा सर्व स्वार्थना ज सगा छे स्वार्थ पूर्ण थता तेओ शत्रुस्वरूप बनी जाय छे वळी विषयसुख तो विष-झेर सदृश छे विष भक्षणथी तो प्राणीना एक ज भव बगडे छे पण विषयसुख तो भवपरपरा वधारे छे, माटे तेनो त्याग करी *चार महाव्रतरूप धर्मनु आचरण करो भगवतनी आज्ञा प्रमाण जे तेनु यथार्थ पालन करशे ते शिवलक्ष्मीना सुखने प्राप्त करशे जे विषयसुखमा राचीमाची रहेशे ते चोराशी लाख जीवायोनिमा परिभ्रमण करवापूर्वक जन्म-मरणादिक अनेक प्रकारना कष्टो सहन करशे अनत भवो पछी महापुण्यना प्रभावथी आ दुर्लभ मानवदेह मळ्यो छे तो प्रमादनो परित्याग करीने तेने साथक करो लयो " आ प्रमाण देशना साभळी पर्षदा तो स्वस्थान गई, परन्तु लघुकर्मी थावच्चा कुमारनो आत्मा वैराग्यवासनाथी आर्द्र बन्यो तेने परमात्मानो अमृत-वाणीमा परम सत्यनु दर्शन थयु अने ते ज समये भागवती दीक्षा अंगीकार करवानो दृढ निश्चय करी भगवतने पोतानी इच्छा जणावी भगवत जणाव्यु के-" असार ससारमांथी सार ग्रहण करवारूप तमारो विचार प्रशसापात्र छे उत्तम कार्यमा कदापि ढील न करवी "

परमात्मानु प्रेरक कथन साभळी थावच्चाकुमार स्वमदिरे आव्यो अने माताने पोताना दीक्षाभिलाषा दर्शावी थावच्चाकुमारनी वात साभळता ज माता धरणी पर ढळी पडी अने मूर्च्छित बनी गई तरतज वायु अने शीतळ जळना उपचार करता ते अल्प समय सचेत थई त्यारे रुदन करती करती पोताना पुत्रने उद्देशीने कहेवा लागी के-" हे पुत्र ! मारे तो तु एकनो एक ज लाडकवायो पुत्र छे वळी हमणा ज तने अति रमणीय बत्रीश कन्याओ साथे परणाव्यो छे ते ओआ तारु स्मरण करीने मृत्युने वश थशे, माटे तारे दीक्षा लेवानी वात ज न उच्चारवी आपणा गृहमा विपुल धन छे, कमावानी कई पण चिंता करवा जेवु नथी माटे आ देवागना सदृश रमणीओ साथे यथेच्छित भोग विलास भोगव स्नानादिक कर्या पछी अने आ मळेल भोगविलासनी सामग्रीनो

* श्रीऋषभदेव अने महावीरस्वामी सिवायना बावीश तीर्थंकरने समये चार महाव्रत होय छे, ज्यारे पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरने समये पांच महाव्रत होय छे पांच महाव्रतना नाम आ प्रमाणे–१ प्राणातिपातविरमण, २ मृषावादविरमण, ३ अदत्तादानविरमण, ४ मैथुन विरमण अने ५ परिग्रह सर्वथा त्यागरूप

उपयोग कर्या पछी तु सुखपूर्वक संयम स्वीकारजे हु पण तेटला समयमा स्वर्गवासी थई जइश, तने काइ निषेध नहीं करे माटे पछी श्रीनेमिनाथ भगवत पासे प्रव्रज्या ग्रहण करजे दीक्षा लेवानी वात करवी अने ते पाळवी ते बन्ने वच्चे महद् अतर छे तारी वय लघु छे चारित्र खाडाना धार जेवु छे अने तेमा पण केशनु लोचन आदि क्रिया कायक्लेश उपजावनारी छे, माटे हे पुत्र ! तु दीक्षानो विचार मुलतवी राखी मनुष्यजीवननो भागविलास भोगववा रूप लहाव ग्रहण कर" मातानु आवु स्नेहाळ कथन साभळी थावच्चाकुमार कह्यु के-" हे माता ! तमे जे सुख भोगववानु कहो छो ते बधु असार न अनित्य छे ते सुखनु फळ नरकप्राप्ति छे वळी आयुष्यना विश्वास नथी वळी कोई जाणी शकतु नथी के कोण पहेला अने कोण पछी मृत्यु पामवाना छे धन तो चचळ होवाथी कोई पण स्थळे स्थिर रहेतु नथी ज्या पुण्यरूपी सामग्री पूरी थई के धन पग करीन चाल्यु जाय छे माटे हे माता ! मारा प्रत्येनी ममता अने मोहना त्याग करी मने मोक्षप्राप्तिना निमित्तरूप सयम स्वीकारवा आज्ञा आपो "

पुत्रना आवा प्रकारनो सदाग्रह जाणी माताए विचार्यु के-'पुत्र खरेखरा सयमरंगथी वासित थयो छे माटे तेना भव्य दीक्षा महोत्सवनी तयारी करु' एम विचारीने कृष्ण वासुदेव पासे गई अने सर्व हकीकत जणावी कह्यु के- हे महाराज ! पुत्रना आ महोत्सव प्रसग तमे मने छत्र, चामरादि उपरात राज्य सामग्रीनी सहायता करो" कृष्णे कह्यु के ' हे सार्थवाहिनी ! तमे लेशमात्र चिंता न करो तमारा पुत्रनो दीक्षा महोत्सव हु करीश ' आ प्रमाणे कहीने कृष्ण वासुदेव पोतानी चतुरंगिणी सेना साथे थावच्चा पुत्रना आवासे आव्या कृष्णने थावच्चा पुत्रना सयमरगनी परीक्षा करवानु मन थयु पटले आवीने तेमणे कह्यु के-' हे कुमार ! तमे आवा कोमळ वयमा शा माटे दुष्कर सयम स्वीकारो छो ? दीक्षापालन ए तो मीणना दातोथी लोढाना चणा चाववा जेवु दुष्कर छे, तमे ससार सबधी सुख भोगवो अने तमारी रक्षा करीश ' थावच्चा कुमारनो सयमनो रग कई पतगना रग जेवो अस्थायी के विनश्वर न हतो के जेथी कृष्णना प्रलोभनथी ते चलित थाय ते रग तो तेमने मजीठना रगनी माफक हाडोहाड व्यापी गयो हतो पटले कृष्णने जवाब आपता तेणे जणाव्यु के-" हे महाराज ! तमो कहो ते ठीक छे पण मारु मृत्यु आवशे त्यारे तमे मारु रक्षण करवा समर्थ हो तो हु तमे कहो तेम करवा तैयार छु" कृष्णे जवाब आप्यो के-' मरणसमये कोई पण कोइनु रक्षण करी शकतो नथी ता हु तारु रक्षण केम करी शकु ? चक्रवर्ती अने तीर्थंकर जेवाने पण काळने आधीन बनवु पडे छे तो बीजानी वात शा माटे करवी जोईए ?" त्यारे थावच्चा कुमार कह्यु-" हे राजन् ! आप शा माटे एम कहो छो के ' हु तारु रक्षण

करीश ' हु ज म मरणरूपी भयथी भयभीत थयो छु अने तेमाथी मुक्त थवा आ प्रवज्या अगीकार करु छु ' तेनु आ प्रमाणेनु दृढ म तव्य जाणी कृष्ण वासुदेव अत्यत हर्षित थया अने पोताना सेवकने बोलावी आदेश आप्यो के-'आ द्वारिका नगरीमा जाहेर उद्घोषणा करावो क-'जे कोईने थावच्चाकुमारनी साथे दीक्षा लेवी हशे तेना सर्व बदोबस्त कृष्ण महाराजा स्वय करशे अने कोइना कुटुंबने आधार नहो होय तो तेनु राजा पोते पालन करशे "
आ उद्घोषणाने परिणाम एक हजार पुरुषो थावच्चानी साथे दीक्षा लेवा उत्सुक बन्या पोतानी ज्ञातिने भोजन आपी, स्नान करी, सुन्दर वस्त्र तथा आभूषण पहेरी, हजार पुरुषो उपाडे तेवी शिबिकामा बेसी सव थावच्चा पुत्रना आवासे आव्या त समये कृष्ण वासुदेवे आठ जातिना कळशद्वारा थावच्चा पुत्रनो अभिषेक करी, स्वच्छ वस्त्रो अने उत्तम आभूषणो पहेराव्या बाद हजार पुरुषो उपाडे तेवी शोभनीय शिबिकामा विराजमान करी वाजिंत्रना नादपूर्वक श्रीनेमिनाथ परमात्मा ज्या बिराज्या हता त्या आव्या पालखीमाथी नीचे ऊतर्या त्यारे कृष्ण वासुदेवे तेमने आगळ कर्या अने पोते तेनी पाछळ चाल्या भगवान समीप आवीने कृष्णे कह्यु क-"हे भगवन ! आ थावच्चा सार्थवाहनो थावच्चा नामनो पुत्र मने अति वल्लभ छे ते ज ममरणरूपी भयवाळा आ ससारसागरथी उद्वेग पाम्यो छे अने आपनी पासे मोक्षना परवानारूप प्रव्रज्या अगीकार करवा इच्छे छे, माटे हे स्वामिन् ! आप तेमनी शिष्यभिक्षा स्वीकार करो " एटले परमात्माए कह्यु के-" जहा सुक्खं " अर्थात् सुख उपजे तेम करो प्रभुनी आज्ञा थता थावच्चाकुमारे पात पहेरेला आभूषणो एक पछी एक उतारवा शरु कर्या त्यारे ते सर्व तनी माताए पोताना वस्त्रना पालवमा अश्रु-झरती आखो सहित ग्रहण कर्या अने छेवटनी शिक्षारूप बे वचनो बोलता कह्यु के-" हे प्रिय पुत्र ! हवे तु लेश पण प्रमाद करीश नहि फरी वार बीजी माता न करवी पडे तेवी रीत चारित्र पालन करजे जेम सिंहनु शिशु घणा घेटाओथी पण डरतु नथी तेम तु पुष्कळ परिसहोथी पराभव पामीश नहि "आ प्रमाणे उपदेश-वचन साभळ्या बाद थावच्चापुत्रे हजार पुरुषो साथे पचमुष्टी लोच करी दीक्षा ग्रहण करी बाद परमात्माना मुखथी पाच [1]समिति तथा [2]त्रण गुप्तिनु स्वरूप जाणीने त प्रमाणे आचरण करता अने अ य स्थविरो पासे शास्त्राध्ययन करता समय पसार करवा लाग्या उपवास, छट्ठ, अट्ठमादिक तपश्चर्याओ द्वारा कर्मनी

१ ईर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति, आदानभडमत्तनिक्षेपणासमिति अने पारिष्ठापनिकासमिति २ मनगुप्ति, वचनगुप्ति ने कायगुप्ति

निर्जरा करवा लाग्या आ प्रमाणे अध्ययन अने संयमधर्मनी एकनिष्ठ उपासना करता अनुक्रमे तेओ चौदपूर्वना पारगामी बन्या

थावच्चापुत्रनी शक्ति हवे तो घणी ज वृद्धि पामी श्रीनेमिनाथ भगवंतने पण तेमनी शक्ति माटे मान उत्पन्न थयु एकदा थावच्चापुत्रे भगवंतथी जुदा विचरवानी वात करी अन्य देशमा धर्मप्रचार करवा जवा माटे आज्ञा मागी भगवंतनी आज्ञा मळता तेओ उग्रविहार करता करता शेलगपुरे आवी पहोच्या ते स्थळ सुभूमि भाग नामना उद्यानमा वास कर्या पटले त नगरनो शेलक नामनो राजा पोताना विचक्षण पथक आदि पाचसो प्रधानो साथे तेमने वंदन करवा आव्या नगरजनो पण वंदनार्थ आव्या अने मोटी पर्षदा थइ थावच्चा अणगारे उपदेश आपी लोकोने ससारनु स्वरूप यथार्थ समजाव्यु साथोसाथ जीवाजीवादि नव तत्त्वोनु स्वरूप समजावी श्रमणा अबाधित नियमनु पण दिग्दर्शन कराव्यु आवी सुदर देशना साभळी राजा तथा प्रजाजनो पण अत्यत हर्षित थया राजा शेलके कह्यु के-" उग्रकुलना, भोगकुलना, राजन्यकुलना तेम ज सेनापति अने सार्थवाह प्रमुख घणा दीक्षा अगीकार करीने विचरे छ, परन्तु मारी एवी शक्ति नथी माटे हे गुरुदेव ! मने समकितमूळ श्रावकना व्रत आपी श्रमणोपासक बनावो ' थावच्चा मुनिए तेने पूरती समजण आपी श्रावकधर्मना बार व्रत उच्चराव्या अने तेनी साथोसाथ राजाना पथक प्रमुख पाचसो मत्रीओ पण श्रमणोपासक बनवा साथे नवतत्त्वना विषयना ज्ञाता बन्या शेलकराजा स्व स्थाने गयो अने थावच्चा अणगार पण पृथ्वी पर विहार करवा लाग्या

आ बाजु सोगंधिया नामनी नगरीमा सुदर्शन नामनो महाश्रेष्ठी वसतो हतो ते नगरीमा एकदा चार वेदोनो ज्ञाण, महामिथ्यात्वी अने तेना शास्त्रोनो पारगामी, सांख्य मतवादी शुक नामनो परिव्राजक पोताना हजार शिष्यो साथे आवी पहोच्यो ते पाच नियम युक्त शौचधर्मनी प्ररूपणा करतो हतो, तेमज कषायी वस्त्र धारण करतो हतो परिव्राजकना आश्रममा तेने उतरेल जाणीने नगरीना लोको अने सुदर्शन शेठ पण तेमने वादवा गया ते समये उपदेश आपता तेणे सुदर्शन शेठने उद्देशीने कह्यु के-" हे श्रेष्ठी ! अमारो मूळ धर्म शौच छे ते बे प्रकारे छे-(१) द्रव्यशौच अने (२) भावशौच द्रव्यशौच एटले पाणी तथा माटीवडे अशुचि होय ते दूर करवी अने भावशौच एटले तृण अने मत्रादिकथी कोइ पण मलमूत्रादिकनी अशुचि थइ होय ते दूर करवी आ प्रमाणे अशुचि दूर करवाथी जीव विघ्न रहित स्वर्ग प्राप्त करे छे ' आ प्रमाणे शुक परिव्राजकनो उपदेश साभळी सुदर्शन शेठ अत्यत प्रमोद पाम्यो अने परिव्राजकनो धर्म स्वीकार्यो केटलाक समय बाद शुक परिव्राजक अन्य स्थळे गयो अने थावच्चा अणगार विचरता विचरता हजार मुनिओ साथे सोगंधिया नगरीए आव्या तेने नीलाशोक नामना उद्या

नमां उतरेला जाणीने पौरलाको साथे सुदर्शन श्रेष्ठी पण वंदनार्थे आव्यो त्रण प्रदक्षिणा आपी, मुनिवरने वांदी बेटो अने देशना सांभळ्या बाद प्रश्न कर्यों के-"हे भगवन् ! तमारो मूळ धर्म शु छे ?" थावच्चा अणगारे जवाब आप्यो के-"हे महानुभाव ! अमारो मूळ धर्म विनय छे तेना बे प्रकार छे- (१) गृहस्थना धर्म पांच अणुव्रत, त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत-ए प्रमाणे बार व्रतरूप तेमज अग्यार उपासगपडिमारूप छे अने (२) साधुनो पांच महाव्रतरूप, अढार पापस्थानकना परित्यागरूप तेमज बार पडिमारूप विनय धर्म छ आ बने प्रकारनो धर्म सेवे ते आठ* कर्मनी एकसो अट्ठावन प्रकृतिनो विनाश करी शिवसुखनी प्राप्ति करे " आ प्रमाणे कहीने थावच्चा अणगारे सुदर्शन शेठने प्रश्न कर्यों के " हे श्रेष्ठी ! तमारो मूळ धर्म शुं छे ? " त्यारे श्रेष्ठीए कह्यु के-"मारो मूळ धर्म शौच छे" बदले थावच्चा अणगारे कह्यु के-"हे देवानुप्रिय ! कोई माणस लोहीथी खरडायेला वस्त्रने पुन लोहीमां झबोळी धोवे तो ते शु शुद्ध थाय ? " सुदर्शने कह्यु-" ना " एटले थावच्चा मुनिए जणाव्यु के- "अढार पापस्थानकद्वारा बांधेल कर्मोने कोरा पाणी प्रमुखना जीवोनी हिंसा करीने दूर करवाने इच्छे ते बनी शके खरु ? लोहीथी आर्द्र बनेला वस्त्रने जेम स्वच्छ जळ अथवा तो क्षारादिकथी धोवामा आव तो ते शुद्ध बने तेम अढार पापस्था नकवडे उपार्जल कर्मनो क्षय करवा माटे अहिंसादिक क्रिया अने तपश्चर्यादि करवा जोईए पाणी तो बहारना मळने पण पूरेपूरु दूर करी शकतु नथी तो आत्माने लागेला कर्मनो नाश केवी रीते करी शके ? " आ प्रमाणे थावच्चा अणगारनो सचोट उपदेश सांभळता सुदर्शनने पोतानी भूलनु भान थयु पोते खोटे मार्गे प्रयाण कर्यु छे अने तेथी तो साध्यनी उलटी ज दिशा ग्रहण करी छे तेवो तेने ख्याल आव्यो पूर्व दिशामा गमन करवु होय अने पश्चिम मा चालवा माडे तो ते कदि पण इष्ट स्थळे पहोंची शके नहीं तेम विचारीने सुदर्शन श्रेष्ठीए विपरीत मार्गरूप शुक परिव्राजकना पथनो त्याग कर्या अने थावच्चा मुनि पासे केवलीभाषित जैनधर्मनो स्वीकार कर्या समकितना मळ रूप श्रावक धर्म ग्रहण कर्या अने जीवाजीवादि नव तत्त्वनु स्वरूप जाण्यु

आ हकीकत शुक परिव्राजकना कण अथडाता ते स्वय सोगंधिका नगरीए आव्या अने सुदर्शन श्रेष्ठीने आवासे गयो शुद्ध सम्यक्त्वधारी सुदर्शन शेठे तेनो आदर सत्कार पण न कर्यो तेम तेने वदना पण न करी त्यारे शुक परिव्राजक तेने कह्यु के-" हे श्रेष्ठिन् ! पहेला तो तु अमारी अत्यत भक्तिभावपूर्वक सेवा शुश्रूषा करतो अने हव तारामा आ परिवर्तन केम थई गयु ? शु तने मारो धर्म रुच्यो नहीं ? " त्यारे शेठे कह्यु के-" हे परिव्राजक ! श्रीनेमि

* ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय वेदनीय, मोहनीय, नाम, गोत्र, आयु अने अंतराय-ए प्रमाणे आठ प्रकारना कर्मों छे तेना क्षयथी प्राणी सिद्धिगति प्राप्त करे छे

नाथ भगवतना शिष्य थावच्चा अणगारे मने विनयमूळ धर्मनु सत्य स्वरूप समजाव्यु छे ते हालमा नीलाशोक उद्यानमा बिराजमान छे तेमणे मने शुद्ध निष्कलंक धर्मनु भान करावता में तमारो मिथ्या मार्ग त्यजी दीधो छे " आ प्रमाणे साभळी शुक परिव्राजकने पोताना पांडित्यनु अभिमान प्रगट्यु अने शेठने कह्यु के-" चालो, हु तमारा गुरु साथे वाद करवा मागु छु जो हु हारी जईश तो तेमने वदन करीश अने नहि तो तेनो पराजय थशे " आ प्रमाणे नोटी शेठ साथे ते थावच्चा अणगार पासे आव्यो अने प्रश्न पूछवा लाग्यो के-" हे भगवन् ! तमारे यात्रा छे ? जवणिज्ज छे ? अव्याबाध छे ? फासु विहार छे ?" थावच्चा मुनिए कह्यु के-" सर्व छे " शुके पूछयुं-" केवी रीते ? " मुनिए जवाब आप्यो के-' तप, नियम करवा, छकायनी जयणा-रक्षा करवी ते अमारी यात्रा छे पाच इन्द्रिय अने मन अमारे वशवर्ती छे ते अमारु जवणिज्ज छे अमारा शरीरमा कोइ पण प्रकारना व्याधिनी पीडा नथी ते अव्याबाध अने स्त्री, पशु अने पंडक (नपुसक) रहित आरामादि-उद्यानादिक स्थानोमा दोष रहित पीठ-फलकादिक लईने विचरवु ते फासु विहार छे " बाद शुक परिव्राजके बीजो प्रश्न करता पूछ्यु के-" हे मुनि ! तमे सरसव खाओ छो के नहि ?" मुनि बोल्या-" खाइए छीए, अने नथी पण खाता ' आवो सदिग्ध जवाब साभळी शुकने कइक अचबो उत्पन्न थयो तेणे कह्यु-" एम केम बने ?" मुनिराजे जवाब आपता जणाव्यु के-" सरसव वे प्रकारना छे-(१) समान वयना ते मित्र सरसव अने (२) धान सरसव मित्र सरसव पंचेंद्रिय मनुष्यादि माटे भक्ष्य नथी वळी धान सरसवना पण वे प्रकार छे-(१) शस्त्रादिकथी छेदन-भेदन थयेला भक्ष्य अने (२) सचित्त मारे अभक्ष्य छे अने शस्त्रपरिणत छे तेना पण बे प्रकार छे-(१) एक बेंतालीश दोषरहित अने (२) बेंतालीश दोषसहित दोषसहित छे ते मारे अभक्ष्य छे अने जे दोषरहित भक्ष्य छे तेना पण बे प्रकार छे-(१) एक मागेला अने (२) नहीं याचेला आचयाना पण बे भेद छे-(१) एक मळेला अने (२) नहीं मळेला नहीं मळेला मारे अभक्ष्य छे अने जे मळ्या ते भक्ष्य छे माटे मे कह्यु छे के-भक्खेया वि अभक्खेया वि-अर्थात् भक्षण करवा लायक अने नहीं भक्षण करवा लायक बने प्रकार छे " आ प्रमाण सामळी शुके पुन प्रश्न कर्या के-" कुलत्थ तमारे भक्ष्य छे के नहि ?" मुनि बोल्या-" खावा ने नही खावा लायक बने प्रकारे छे ' शुके साश्चर्य पूछ्यु-" एम केम ? " मुनिवरे जवाब आप्यो के-" कुलत्थ बे प्रकारना छे-(१) स्त्रीकुलत्थ अने (२) धानकुलत्थ तेमा पण स्त्रीकुलत्थ त्रण प्रकारना छे (१) कुलमाता, (२) कुलवधू अने (३) कुलपुत्री आ अमारे अभक्ष्य छे जे धानकुलत्थ छे तेना सरसवनी माफक ऊपर जणाव्या प्रमाणे भेद जाणी लेवा छेवटे जे मळ्या ते अमारे कल्पनीय छे एटले में कह्यु के अभक्ष्य अने भक्ष्य बने प्रकार छे " आटला

प्रश्नोत्तरथी शुकने संतोष न थयो तेथी तेणे वळी पण पृच्छा करी के-" हे स्थविर! मासा भक्ष्य छे के अभक्ष्य ?" अणगारे जवाब आप्यो के- "खावा लायक छे अने नथी पण " " एम केम ?" एम पुन पूछता मुनिपुंगवे प्रत्युत्तर आप्यो के-" मासा त्रण प्रकारना छे-(१) कालमासा, (२) अर्थ मासा अने (३) धान्यमासा कालमासा तो श्रावण आदि बार मास छे ते मारे अभक्ष्य छे अर्थमासा बे प्रकारना छे (१) सुवर्ण तोलवाना अने (२) रूपु तोलवाना- आ बने प्रकार अमारे अभक्ष्य छे धान्यमासा प्रासु-एषणीय मळे ते मारे भक्ष्य छे " आ प्रमाणे सर्व प्रश्नोनो युक्तिसंगत उत्तर आपवाथी शुक परिव्राजक विचारमा पडी गयो ने चिंतववा लाग्यो के ' मुनि एकपक्षी उत्तर आपशे एटले तेमने हु जीती लईश तेथी मारी धारणा धूळमा मळी छे तेओ नयना ज्ञाता छे माटे बोलवामा तो पकडाशे नहि माटे बीजी युक्ति करु तेमणे वैराग्यथी चारित्र-ग्रहण कर्यु छे माटे तेओ आत्माने पकडता मानता हशे अने तेना जवाबमा तेओ भूलथाप खाई जशे माटे तेवा ज प्रश्न करु ' एम विचारी तेणे तेमने पूछ्यु के-" हे भगवन् ! तमे एक छो के बे ? अनेक छो ? अक्षय छो ? अव्यय छो ? अवस्थित छो ? पूर्व जेवा हता, अत्यारे जेवा छो अने भविष्यमा थशो तेवा छो ? ' शुक परिव्राजकना आवा प्रश्नथी थावच्चा अणगारने तेनी युक्ति अने मूर्खाई बने पर मनमा सहेज हास्य उत्पन्न थयुं खजुओ सूर्यनो पराभव करवा इच्छे ते केम बनी शके ? परन्तु तेमणे गंभीर थइने जवाब आप्यो के- " हे महानुभाव ! हु एक छु बे पण छु इत्यादि तें जे प्रश्नो पूछ्या ते सर्व छु तेनु कारण सांभळ-द्रव्यार्थिक नयनी अपेक्षाए जीव द्रव्य एक छु छे तेथी हु एक छु ज्ञान अने दर्शन ए बे जीवद्रव्यथी जुदा नथी तेथी हु बे पण छु जीवद्रव्य असंख्यातप्रदेशी छे तेथी हु अनेक छु कोई पण प्रदेशनो क्षय थतो नथी तेथी हु अक्षय छु कोई प्रदेशनो विनाश नथी माटे अविनाशी छुं, जीव कोइ पण दिवसे नूतन-नवो थतो नथी तेथी शाश्वत-नित्य छु भूतकाळमा अनेक उपयोग कर्या छे, वर्तमानमा करी रह्यो छु अने भविष्यमा थशे तेनी अपेक्षाए तेवो पण छुं " आ प्रमाणे थावच्चा अणगारना युक्तियुक्त अने अकाट्य प्रमाणो सांभळी शुक परिव्राजक तो विचारमा ज गरकाव बनी गया तेणे कदी आवो उपदेश के ज्ञान जाण्यु ज न हतु तेमने पोताना अत्यार सुधीना मिथ्या मार्ग माटे खेद उपज्यो अने मुनिवरने विज्ञप्ति करी क-' हे भग वन् ! मने वीतरागभावित धर्म समजावो के जेथी मारु अज्ञानांधकार नाश पामे " थावच्चा अणगारे तेने प्रतिबोध पामेलो जाणी सर्वज्ञप्ररूपित सिद्धांतो अने तेनु स्वरूप संक्षिप्तमा जणाव्यु जेथी शुक परिव्राजकने जैनी दीक्षानो शुद्ध मार्ग ग्रहण करवानी इच्छा थई तेणे तरत ज पोतानी जिज्ञासा मुनिवरने जणावी मुनिश्रीए कह्यु क-" जेवी तमारी इच्छा शुभ कार्यमा विलंब न करवो " त्यारबाद पोताना गरु जेवा रंगवाळा वस्त्रनो त्याग करी, वधानो

लोच करी पोताना हजार शिष्यो साथे दीक्षा ग्रहण करी शुक परिव्राजक शास्त्रा
भ्यास करता चौद पूर्वना ज्ञाता थया पछी थावच्चा अणगारे तेमने तेमनी
साथे दीक्षा लीधेल हजार शिष्योना आचार्य तरीके स्थाप्या बाद पोतानो
अंतिम समय नजीक जाणी थावच्चा अणगार श्रीसिद्धाचल पर्यंते आव्या
अने त्यां एक मासनु अणशण कर्युं अणसणमा ज केवलज्ञान प्राप्त करी तेओ
छेवटे मोक्षलक्ष्मीना भोक्ता थया

आ बाजु शुक मुनि विचरता विचरता शैलगपुरना सुभूमिभाग उद्यानमा
रह्या तेवामा शैलक राजा अने नगरना लोको तेमने वदनार्थे आव्या शुक
मुनिनी वैराग्यवाहिनी देशना साभळी श्रावकधर्मी बनेल शैलक राजा विशेष
वैराग्ययत बन्यो अने तेणे शुक मुनिने कह्यु के-" मने ससार प्रत्ये उद्वेग उप
ज्यो छे तेथी मने दीक्षा लेवानी भावना उदभवी छे " मुनिराजे कह्यु-" सारा
कार्यमा विलंब न करवो " त्यारे शैलक राजाए कह्यु के-" मारे मारा पाचसो
प्रधानोने पूछवु जोईए माटे तेनी रजा लईने आवु त्या सुधी आप स्थिरता करो '
आ प्रमाणे कही राजमदिरे आवी तात्कालिक सर्व प्रधानोने बोलावी कह्यु
के-' हे प्रधानो ! मने शुकाचार्यनो उपदेश रुच्यो छे अने ससारनी विषम
परिस्थितिनु मने खरेखर भान थयु छे तेथी हु चारित्र ग्रहण करवा इच्छुं
छु तमारी शी इच्छा छे ते कहो " त्यारे पथक प्रमुख प्रधानोए कह्यु
के-' हे महाराज ! अमे पण ससारथी भय पाम्या छीए. पहेला पण तमे ज अमारा
आलंबनरूप हता तो हवे पण तमे ज आधारभूत थाओ तमे चारित्र ग्रहण
करशो तो साथोसाथ अमे पण सयम धर्म स्वीकारीशु " प्रधानोनो हकीकत
साभळी राजाए फरमाव्यु के-' जेओ ससारथी भयभीत थया हो तेओ पोतपो
ताना पुत्रोने कुटुबनो भार सोपी, शिबिकामा बेसी मारी पासे आवो "
आ प्रमाण सूचन कर्या बाद बधा प्रधानो आज्ञा मुजब आव्या बाद राजाए पण
पोताना मडुक नामना पुत्रने राज्यसिंहासने बेसाडीने, तेनी आज्ञा लईने महा
महोत्सवपूर्वक शुकाचार्य पासे पाचसो प्रधानो सहित प्रव्रज्या लीधी साधुप
णाना आचार पाळता सामायिकथी प्रारभीने क्रमश अगीआर अगना ज्ञाता
थया तेमने शक्तिशाळी अने गच्छ सभाळवाने लायक जाणी शुकाचार्ये शैलक
राजर्षिने पण आचार्यपदवी आपी शैलक राजर्षि पनाथा अने तेमन पाचसो
साधुओना परिवार सोंपी अलग विचरवानी आज्ञा आपी शुकाचार्ये पोतानो
अंतिम समय नजीक जाणी श्रीशत्रुजय तीर्थे आव्या अने अनशन केवळी
थई शिवसुखने पाम्या

आ बाजु शैलक राजर्षि पण अत्यत कठिन तपश्चर्या करवा लाग्या अने
पारणे पण लुख्खु-सुक्को आहार करवा लाग्या आम करवाथी परिणाम ए आव्यु
के-पूर्वे राजा हावाथी सुखपूर्वक रहेला अने मिष्ट तेमज रसवाळो आहार

करेलो तेने बदले आवो रस-कस विनाना आहार करवाथी शरीरमा व्याधि उत्पन्न थयो दाहज्वर तथा पीतज्वर थई गयो अने तेना महावेदना थवा लागी आवी असह्य वेदना सहन करता करता पण शेलक राजर्षि पृथ्वीपीठ पर विचरवा लाग्या व्याधिने कारणे तेमनु शरीर दिवसे दिवसे दुर्बळ बनवा लाग्यु आ प्रमाणे विचरता विचरता तेओ शेलगपुर आवी पहोंच्या अने सुभूमिभाग उद्यानमा आवी वास कर्यो पौरलोकोनी साथे मडुक राजा पण तेमने वांदवा आव्यो ते समये शेलक राजर्षिना अत्यंत दुर्बल देहने व्याधिग्रस्त जोइने ते विचारमा पडी गयो तेणे तेमने विज्ञप्ति करी के-' हे भगवंत ! आपनु शरीर व्याधिग्रस्त थयु छे आप जो के तेनी उपेक्षा करी रह्या छो, पण शरीर धर्मायतन छे एटले तेनी पण मावजत (हिफाजत) तो करवी पडे माटे आप मारी जनशाळामा पधारो हु वैद्योद्वारा आपनी चिकित्सा करावी निर्दोष ने पथ्य औषधथी आपने निरोगी बनावु " आ प्रमाणे विनति करी मडुक राजा स्वावासे गया बाद तेना आग्रहने वश थई शेलक राजर्षि पण बीजे दिवस सूर्योदय थया बाद, पोताना पथक प्रमुख पाचसो शिष्यो साथे जनशाळामा गया अने फासु पीठ, फलकादि भंडोपगरण लईने रहेवा लाग्या मडुक राजाए विचक्षण वैद्योने बोलावी कह्यु के-"शेलक राजर्षिनी चिकित्सा करो, तेमनु दोष रहित औषध करो " वैद्योए राजर्षिना व्याधिनु निदान करी कह्यु के-' जो तमो रस-कसवाळा आहारना साथे मदिरापान करो तो ज तमारो व्याधि विनाश पामे ' राजर्षिए वैद्योना कथन मुजब व्याधिना उपशमनार्थे आहार साथे ते लेवा माड्यु आ प्रमाणेना सुरापानथी तेमनो व्याधि नाश पाम्यो अने शरीरे पण पुष्ट थया, परंतु आ उपचारनु विपरीत परिणाम ए आव्यु के शेलक राजर्षि आ पौष्टिक आहार अने सुरापानमा आसक्त बनी गया कर्मयोगथी धीमे धीमे तेमनु अतिशय रसलोलुपपणु जागृत थयु हवे तेनाथी ते छोडातु नथी जे रसनेंद्रिय अत्यार सुधी काबूमा राखी हती ते हवे लगाम विनाना अश्वनी माफक स्वतंत्र बनी गई धीमे धीमे शेलकराजर्षि संयम-पालनथी पण च्युत थवा लाग्या पासत्थापणाना अंश आववा लाग्यो प्रमाद पण तेनामा प्रवेश करवा लाग्या पीठ, फलक, शय्या-संथारा समय परिपूर्ण थये पाछा आपवा जोईए छता तेम न करता ते भोगववा लाग्या हवे तो मडुक राजानी परवानगी विना तेओ विहार करवाने पण असमर्थ थया त्यारे पथक सिवायना बाकीना साधुओ एकठा थया अने परस्पर विचारवा लाग्या के-' शेलक राजर्षिए राज्य त्यजी दीक्षा लीधी हती परंतु कर्मयोगे पूर्ववत् पौष्टिक भोजन मळता तेओ तेमा गृद्ध बनी गया छे विहारनी तो वात ज करता नथी अने संयम-पालनमा दूषण लागे तेवु आचरण करी रह्या छे माटे आपणे तथा प्रमाद करवो उचित नथी कारण के करोडो रत्न आपता पण मनुष्य जीवननो पळ पुन प्राप्त थाय तेम नथी तो तेने

प्रमादरूपी धूळ मारथी शा माटे व्यर्थ गुमावर्वी ? आपण सर्वेय प्रात काळे शेलक राजर्षिनी आज्ञा लई अत्रेथी विहार करवो, पंथक मुनिने तेमनी थया वच्च करवा मूकी जवा अने आपणी पासे जेना जेना पीठ, फलकादि छे ते तमने पाछा सोंपी देवा " आ प्रमाणे निर्णय करी, सर्व हकीकत शेलक राज र्षिने जणावी, पंथक मुनिने तेमनी पासे राखी तेओ सव भव्यजनोने प्रतिबोधार्थे अन्य देशमा विहार करी गया

पंथकमुनिने पूर्ण विश्वास हतो के शेलक राजर्षिने वहेलु मोडु पण आत्मभान थशे अने शुद्ध मार्ग आवशे पंथक मुनि शेलक राजर्षिनी सारी रीते वैयावच्च करवा लाग्या तेमने आहार लावी आपवो, तेमनु मात्रु परठवी देवु, संथारो करी आपवो इत्यादि वैयावच्च शुद्ध मनथी करवा लाग्या आहार करीने जेम सिंह पोतानी गुफामा पड्यो रहे तेम हवे तो शेलक राजर्षि अतीव प्रमादी थई गया पडिलेहण, प्रतिक्रमणादिक आवश्यक क्रिया पण लगभग विस्मृत थवा जेवी थती गई अकुश विनाना हस्तीनी जेवी शी दशा थाय ? पछीमा कार्तिक चोमासु आव्यु शेलकराजर्षिनी साथे रहेवा छता पंथक मुनिना आच रणमा कदापि पण स्खलना न थई तेओ तो तन अने मनथी वैयावच्च करता अने सयमाराधनमा तत्पर रहेता कार्तिक चोमासाने दिवसे चारे प्रकारना आहार करी सुरापान करी शेलग राजर्षि तो सध्यासमये ज सूई गया चोमासी प्रतिक्रमण करता पंथक मुनिए चोमासी खामणा खामताना समये निद्राधीन बनेला शेलक राजर्षिना चरणने पोताना मस्तकद्वारा स्पर्श कर्यो तेथीमा निद्राभग थवाथी शेलकाचार्य अत्यन्त क्रोधी बनीने बोल्या के-' कोणे मारी निद्रानो भग कर्या ? अकाळे मृत्युने कोण वाछे छे ? आवो पुण्यहीन कोण छे ? ' त्यारे पंथकमुनिए अत्यन्त नम्रतापूर्वक जणाव्यु के-" हे भगवत ' हु आपनो शिष्य पंथक ज छु आज चोमासी प्रतिक्रमण करता आपने खमावता में मारा मस्तकद्वारा आपनो चरणस्पर्श कर्यो छे आपनो अविनय थयो होय तो हु माफी मागु छु फरी वार आवु कार्य नहिं करु " आ प्रमाणे कहीने पंथक मुनि शेलकाचार्यने वारवार खमाववा लाग्या पंथक मुनिना आ प्रमाणना कथनथी अने तेमना अत्यन्त विनयशीलपणाथी शेलक राजर्षिनो क्रोध शात थइ गया तमने पोताना अविचारीपणानु भान थयु पोते शुद्ध स्थविरपणाथी पतित थईने पासत्थापणाने पाम्या तेने माटे अ त्यन्त परिताप थवा लाग्यो हस्तिना गर्जारव साभळी सुषुप्त सिंह पण जागृत थई जाय तेम शेलक सचेत बन्या अत्यार सुधीना पोताना प्रमादीपणानु भान थयु अने निश्चय कर्यो के प्रात काले मडुकनी परवानगी लईने, पीठ-फल कादि पाछा सोंपीने अन्यत्र विहार करीश आ प्रमाणे अनाचार पाळवो ते मारे माटे योग्य नथी एक वखत भोगविलासोनो त्याग कर्या पछी पुन तेना भोगवटो करवो ते तो वमन करेला भाजननो पुन आहार करवा जेवु छे आ

प्रमाण पोताना मनमा मरुम निर्णय करीने, सद्गुरुने सर्व वस्तु [illegible] मुनिनी माफे पूर्ववत् उग्र विहार करवा लाग्या आ व्यतिकर [illegible] ४९९ शिष्योना ज्ञानध्यानमा आव्या पछी [illegible] स्कन्दकाचार्य पूर्वनी माफक उग्र तपश्चर्या शरू करी अने [illegible] गिरि उपर आव्या त्या पादपोपगम अनशन करी, [illegible] छेवट मोक्षलक्ष्मीना भोक्ता थया

आ दृष्टान्तनी मतलब [illegible] अने चारित्रना धणी मुनिने ज्ञान [illegible] पोताना प्रमाद [illegible] हशार आव्या, पोतानी भूल समजाई अने [illegible] दईने पुनः संयमधर्ममा स्थिर थया आ [illegible] कदाच कर्मवशात् पतित थयाना [illegible] उपमर्दन देखीने पोताना प्रमादाचरणना [illegible] बने छे, वीर्य [illegible] अने क्रिया प्रत्ये रुचि जाग छे परन्तु [illegible] नीसरणीना पगथियानी माफक [illegible] थवा लागे छे, माटे महाचारी [illegible] वीर्य [illegible] थवाथी शु [illegible] थाय ते [illegible] छे के—

वीरिएण तु जीवस्स, [illegible] ।

जम्मतरकए पावे, [illegible] ॥ ६ ॥

[वीर्येण तु जीवस्य [illegible] ।

जन्मान्तरकृतानि पापानि [illegible] ॥ ६ ॥]

गाथार्थ—हे गौतम ! [illegible]

अनेक भवोमा उपार्जन करेल [illegible]

मात्रमा—वे घडी [illegible] छे.

विवेचन—[illegible] थनी गई

आ गाथो [illegible] नी पाछर

of circumstances, [illegible] जडी पटल

पाप थया [illegible] महत्व अने

मान [illegible] नथी [illegible] अरणिकने

कर्मोपार्जन करे छे अने [illegible] पण गाथानी

[illegible] द्रव्यानुयोग [illegible]

अनेक भवोमां कर्मसंचय वधतो जाय छे, परन्तु तेनो आत्मा जागृत बनी अपूर्व आत्मोल्लास-वीर्योल्लासपूर्वक धर्मानुष्ठानमां रक्त बने, धर्मरंग रग-रग व्यापी जाय त्यारे ते आत्मा अनेक भवना समुहित करेला पापराशिने य घडी जेटला ज समयमां दग्ध करी शकवा शक्तिमान बने छे पहेले करेश प्राणीए आत्मवीर्य गोपववु नहिं तमज धर्मानुष्ठानमां पडी पण प्रमादी बन नाह संयमधर्मथी पतित थई पुन गृहस्थावास स्वीकारनार अरणिक मुनिवर अपूर्व वीर्योल्लासथी पाछी रीत शिवगति प्राप्त करी ते उदाहरण आ दर्शावेल जाणवा माटे अतीव उपयोगी छे मातना उद्बोधनथी तमने पतित थई गयेल आत्मा पुन जागृत थया अने स्वकल्याण साध्यु

अरणिक मुनिनु वृत्तांत–

तगरा नामनी नगरीमां दत्त नामनो व्यवहारी वसतो हतो तेनी धन धान्यादिकनी समृद्धि अपार हती भोगविलासमां पण कशी कमी न हती तेने भद्रा नामनी शियलवती अने धर्मश्रद्धालु पत्नी हती संसारावस्थाना फळस्वरूप ते दंपतीने अरणिक नामनो रूप, गुण अने कलामय पुत्र दवसमूह कांतिमान पुत्र हतो ते त्रण सुखपूर्वक रहेता हता तेवामां ते नगरीना उद्यानमां श्री अर्हन्‌मित्राचार्य नामना मुनिवर पधार्या गामना वंदनार्थे गया त्यारे दत्त श्रेष्ठी पण पोतानी पत्नी तथा पुत्र साथे देशना सांभळवा गया श्रीमित्राचार्य धर्मोपदेश आपता जणाव्यु के–'हे भव्य प्राणीओ ! आ संसार स्वार्थी छे–कोई कोईनु नथी आ निःसारभूत संसारमांथी सार ग्रहण करवो ए ज आ मनुष्य जन्मप्राप्तिनु फल छे भोगविलासो तो अल्प सुख अने अत्यंत दुःख आपनारा छे नरकगतिमां एक श्वासोश्वास प्रमाण समय पर्यन्त सुख नथी, त्यां साग रोपम जेटलो काळ दुःख सहन करवामां गाळवा पडे छे आवा कपरां छूट तथा दुःखमांथी बचवु होय तो धर्मनु सम्यक् प्रकारे आचरण करो आयुष्य डाभनी अणी पर रहेला जलबिंदुनी जेम अस्थिर छे अने लक्ष्मी पण विद्युतनी माफक चंचळ छे शाश्वत सुख देनार कोई पण होय तो ते सर्वज्ञभाषित-वीतराग प्ररूपित जैनधर्म ज छे माटे तेनु मन, वचन अने कायाथी यथाशक्ति पालन करो के जेथी जन्म-मरणना दुःखमांथी छूटकारो थाय " आ प्रमाण वैराग्य रसथी भरपूर देशना सांभळी दत्त श्रेष्ठीने वैराग्य उपज्यो तेणे पोतानी मनो भावना भद्राने जणावी, पहेल पति ए ज जेनो प्राण छे एवी भद्राए पण पतिना मार्गे स्वीकारवानु कबूल कर्यु पण विचारवानो प्रश्न रह्यो नाना अरणिकनु हतु ते उमर लायक थयो न हतो विचारने परिणामे एवु निर्णीत थयु के अरणिकने पण आ पवित्र मार्गनो पथिक बनाववो अने तेनी सारसंभाळ साधु दत्ते राखवी शुभ मुहूर्त दबदबापूर्वक त्रण जणाए दीक्षा लीधी अने

पोतानी सपत्निनो धर्ममार्गमां सदव्यय कर्यो दत्ते सिंहनी पेठे चारित्र ग्रहण करी तेनु सिंहवत् पालन करवा मांड्यु धीमे धीमे शास्त्राभ्यास शरू कर्यो परंतु ज्ञानावरणीय कर्मना प्रभावे स्मरणशक्ति मंद थती गइ तेणे विचार्यु के 'हवे पाका घडाए जेम काठा न चढे तेम वृद्धवये शास्त्राभ्यास नहीं थाय' तेणे अरणिकने शास्त्राध्ययन शरू कराव्यु अने तेनी पडिलेहणादि क्रिया पण पोते करवा लाग्या तेना प्रत्येना ममत्वभावना कारणे गोचरी पण पोते लई आवता तेमां पण तेने माटे मादक पेंडा आदि मिष्टान्न लावता कोई पण प्रकारनु कष्ट अरणिकने न पहोंचे तेवी संपूर्ण काळजी राखता आ प्रमाणे अरणिक साधुपणामां पण सुख शीलपणे उछरवा लाग्यो तेनु सुकुमारपणु वधतु गयु भद्रा साध्वी पण वार वार आवी समाचार मेळवी जती दत्तनी साथेना बीजा साधुओ दत्त मुनिने कांइ कोइवार कहेता के-"हे दत्तमुनि! आ अरणिकने तमे हवे गोचरी जता शीखवशो ते आचार नहीं शीखे तो भविष्यमां शु करशे? तमारी तप श्चर्याने दिवसे तो गोचरी माटे तमारे तेने ज मोकलवो" आना जवाबमां दत्त मुनि पुत्र प्रत्येना स्नेहथी कहेता के-"हे पूज्यो! हजु ते नानो छे हमणा तेने शास्त्राभ्यास करवा दो प गोचरीमां हजु शु समजे? गोचरी विगेरे माटे तो हु ज जईश" काळांतरे दत्तमुनि अणशण करी काळधर्म पाम्या त्यारे अर णिक मुनि रुदन करता करतां कहेवा लाग्या के-"हे पूज्य पिताजी! तमे कम आजे कंई बोलता नथी? हवे मने 'पुत्र' कहीने कोण बोलावशे? मारु मांडु मिष्ट भोजन कोण लावी आपशे? मारी सारसंभाळ कोण करशे? तमारा सिवाय मारो संयमनिर्वाह केम थशे? आ प्रमाणे विलाप करवा लाग्या तेवामां भद्रा साध्वी त्यां आव्या अने तेने समजावता कह्यु के-"वत्स! तारे आम रुदन करवु उचित नथी आ संसारनी लीला ज आवी छे, माटे तारे मोहमां मुंझावु नहीं कांइ सदाकाळ जीवत रहेतु नथी, माटे हवे स्वस्थ थईने शुद्ध चारित्र पालन कर" आ प्रमाणे भद्रा साध्वीनी शिखामणथी अरणिक कंईक स्वस्थ थया अने चारित्र पालन करवा लाग्यो

एकदा गोचरी जनारा मुनिओए अरणिकने साथे लीधो अने कह्यु के-'चालो, गोचरी केम ग्रहण करवी ते तमने समजावु" अरणिक साथे चाल्यो पण तेनु सुकोमळपणु तेने दुःखदायक थइ पड्यु तेनी गति मंद थती गइ बीजा साधुओ आगळ चालवा लाग्या अने अरणिक एकलो तेओनी पाछळ पाछळ जवा लाग्यो बीजा साधुओए विचार्यु के अरणिक हमणा भेगो थई जशे एटले तेओए गति चालु राखी सुकुमार अरणिक मंद गतिए चालतो हतो मस्तक अने चरण उघाडा हता माथे ज्येष्ठ मासनो प्रखर ताप तपतो हतो अरणिकने समग्र शरीरे प्रस्वेद थई गयो तेनाथी ताप सहन न थवा एटले एक गोखनी नीचे छाया हती त्यां अल्प समय विश्राम लेवा उभो रह्यो भाग्यानुयोग कयु

पडु छे ते हवेली एक धनाढ्य श्रेष्ठीनी हती ते श्रेष्ठी परदेश गयेल अने तेनी नवयौवनवती स्त्री ते हवेलीमा रहती हती ते विरहातुर बनेली हती तेनी नजरे राजकुमार जेवा अरणिक मुनि चढ्या पोताना गोखनी ज नीचे तेने ऊभा रहेल जाई तेणे अनेक सकल्पविकल्प कर्या तेणे मुनिने पोतानी जाळमा फसाववानो विचार करी पोतानी दासीने समजावीने तेनी पासे मोकली दासीए आवीने नम्रताथी कह्यु के-

"हे साधुपुरुष ! पधारो, अमारु आगणु पावन करो मारी शेठाणी आपने भोजन वहोराववा इच्छे छे आपने सूझतो आहार वहोरावशे, माटे पधारो ' अरणिके तरत ज ते वचन स्वीकारी लीधु, कारण के हवे आगळ वधवाने तेना चरणो आनाकानी करी रह्या हता सूर्यनो प्रचड आताप पण तेनी बेचेनीमा वधारो करी रह्यो हतो जेवो अरणिके हवेलीमा पग मूक्यो के दासीए द्वार बध करी दीधा मुनिने जोई ते व्यवहारीआनी स्त्रीए कह्यु के-"पधारो मुनिराज ! आटली नानी वयमा आ चारित्र वेष ग्रहण कर्यु ! हजी तो तमारे ससारोपभोग करवानो समय छे आवो अने आ सर्व अढळक सपत्तिनो यथेच्छ उपभोग करो धर्मकरणी तो वृद्धावस्थाए कर्तव्य छे आ ऊगती युवानीमा आवो वेष तमने शोभे ? हु, मारा दास-दासी विगेरे तमारी सेवामा हाजर ज छीए माटे मारी साथे ससार सबधी भोगविलास भोगवो अने पछी पाछळथी यथावसरे चारित्र स्वीकारजो धर्म करवाना दिवसो क्या ओछा छे ?"

आ प्रमाणे प्रलोभन आपी ते युवती हावभावपूर्वक चेष्टा करवा लागी कामदेवना ताता तीर जेवा पोताना नेत्रकटाक्ष मुनि प्रति फेंकवा लागी भोगावली कर्मना उदयथी अरणिक मुनिवर आ प्रेम-पाशमा फसाया चारित्रपालन तेमने तलवारनी धार पर चालवा जेवु विषम जणातु हतु तेमणे मनने चलित कर्यु अने व्यवहारी आनी स्त्री साथे गृहससार शरू कर्या पोतानी पासेना रजोहरणादि साधु-चिह्नो त्यजी दई गृहस्थनो वेश अगीकार कर्यो

आ बाजु पेला साधुओ गोचरी वहोरी जेवामा अरणिकनी तपास करे छे तो तेनो पत्तो ज न मळे तेओ विचारमा पडी गया अमुक अमुक स्थाने तपास करी पण गृहस्थी बनेला अरणिकनो पत्तो क्याथी मळे ? तेमणे आवी गुरुने वात करी गुरुए पण शोध करावी पण तरुणीना प्रेम-पिंजरमा पूरायेला अरणिकनी प्राप्ति न ज थई भद्रा साध्वीने पण आ समाचार मळ्या समाचार सांभळता ज ते घेली बनी गई तेनो सुसुप्त रहेलो पुत्र प्रेम उछळी आव्यो तेणे काई पण भोगे पुत्रने पाछो मेळववानो मन साथे सकल्प निर्णय कर्यो पण हवे तेनो पुत्र घेर घेर भिक्षार्थे भटकता भिक्षु न हता तेनी जीवनदिशा पलटाई गई हती तेना पुत्र तो हवेलीमा बेसीने भोगविलास माणी रह्यो हतो तेनी तेने क्या खबर हती धीमे धीमे तेनी घेल्छा वधवा लागी, ते

नगरीनी शेरीए शेरीए भटकवा लागी अने 'अरणिक-अरणिक' एम पोकार करवा लागी नगरनां छोकरो तेने गांडी समजी तेनी मश्करी करवा लाग्या छोकराओ तेने टगवा लाग्या 'अहीं तमारो अरणिक छे' एम कही एक शेरीमांथी बीजी शेरीमां दोडाववा लाग्या छोकराओने मन आ रमतनो विषय थई पड्यो पण विशाळ तगरा नगरीमां अरणिकनो पत्तो न मळ्यो ते न ज मळ्यो दिवसो पर दिवसो पसार थवा लाग्या चार वर्ष व्यतीत थई गया दैवानुयोगे एकदा अरणिक गोखमा बेसी पोतानी प्रियतमा साथे शेतरंज खेली रह्यो हतो तेवामा तेणे माताने पोताला नामनो पोकार पाडती अने आणे पोताने न जोवाथी गांडी बनी गई होय तेवी जोई जोता ज तेने पोतानी पूर्वावस्थानु भान थयु तेने पोतानी जात ने काय माटे धिक्कार उपज्यो क्षणिक सुख माटे तेणे पोतानो आत्मा वेची नाख्यो हतो तेयु तेने आत्मभान थयु चिंता मणिनो परित्याग करी तेना बदलामा काचना टुकडाथी पोते संतोष मान्यो हतो तेम पण जणायु वधारे विचार करवानो अवकाश न हतो तरत ज गोखथी नीचे ऊतरी पोतानी माताना चरणमा नमस्कार कर्यो अरणिकने जोता ज भद्रानी घेल्छा दूर थई गई अत्यंत वात्सल्यथी तेणे पुत्रने पपाल्यो अने कह्यु के-"पुत्र ! तने आ उचित नथी भगवतनो श्रेष्ठ मार्ग मळ्या पछी आ कष्टमय कारावासमा रहेवानु तने केम पसंद पडे छे ? चाल कर्मानुयोगे थवानु हतु ते थई गयु हवे चारित्र स्वीकारी ले अने आ गभीर भूलनु प्रायश्चित्त ग्रहण कर गुरुमहाराज जरूर तने क्षमा आपी सन्मार्गे चडावशे ' अरणिके कह्यु के-"माता! माराथी दीर्घसमय चारित्र पालन नहीं थई शके माटे बीजो रस्तो बतावो कहो तो हु अणशण स्वीकारी पापपुजने दग्ध करी नाखु " माता तेने समजावी गुरुमहाराज पासे लावी अने तेने अणशण स्वीकार्यु ज्येष्ठ मासना तापने जे अरणिक सहन नहीं करी शकता ते ज अरणिक मुनि अग्नि जेवी धगधगती पत्थरनी शिला ऊपर पादपोपगम अणशण स्वीकारी काउसग्ग ध्यानमा स्थित रह्या जेम अग्नि आगळ घृत पीगळी जाय तेम सुकुमार शरीरवाळा अरणिकना देह अगारा जेवी शिला ऊपर ओगळी गया अने अरणिकना आत्मा शुभ ध्याननी श्रेणीए चढी, काळ करी देवलोके गयो

आ कथानो सारांश एवो छे के-जेम उष्ण परिषह सहन करी अरणिके पोताना वीर्योल्लासपूर्वक श्रेय साध्यु तेम दरेक प्राणीए वीर्योल्लास करवो जे गच्छमा साधु आवा आत्मोल्लासपूर्वक क्रिया करे ते सुगच्छ जाणवो आ माटे शु करवु ते सूत्रने जणावता कहे छे के--

तम्हा निउण निहालेउ, गच्छ सम्मग्गपट्ठिअ ।
वसिज्ज तत्थ आजम्म, गोअमा ! सजए मुणी ॥ ७ ॥

[तस्मान्निपुणं निभाल्य, गच्छं सन्मार्गप्रस्थितम् ।
वसेत्तत्र आजन्म, गौतम ! संयतो मुनिः ॥ ७ ॥]

गाथार्थ—[सदाचारी गच्छमां वसतो प्रमादी शिष्य पण जागृत बनी अनेक भवसंचित पापपुंज दग्ध करी नाखे छे] माटे हे गौतम ! ज्ञानचक्षुद्वारा जाणी जेमां आत्मकल्याण सधाय तेवा सन्मार्गप्रतिष्ठित गच्छनी परीक्षा करी संयममार्गमां प्रयत्नशील साधुए जीवन पर्यन्त तेवा सुगुणी गच्छमां ज वास करवो जे सत्क्रियापात्र होय छे ते ज साधु-मुनि छे ७

विवेचन—मुमुक्षु आत्माए पोतानी आत्मोन्नति माटे सदाचारी गच्छमां ज वास करवो उचित छे जो उन्मार्गगामी-भ्रष्टाचारी गच्छमां वास करे तो तेनुं साधुपणुं रहेतुं नथी पासत्थादिकना प्रसंगथी चारित्रपालनमां शिथिलता आवी जाय छे अने घणा सरखा पक्षना मळवाथी कोई कोईने जागृत करी शकतो नथी परन्तु जो सदाचारी गच्छमां निवास होय अने पोतामां कंई पण प्रमादनो अंश प्रगटे तो पोतानी साथे रहेला अन्य साधुओनी क्रियातत्परताथी, तेमनी वैयावच्चादिक क्रियाथी प्रमादी बनता साधुने सचेत बनवुं पडे छे अने छेवटे लज्जाळुपणाथी पण संयममां दृढ रहेवुं पडे छे, माटे सुगच्छमां वास करवो ए ज योग्य छे हवे सुगच्छनी तपास केम करवी ? ते प्रश्न उपस्थित थाय छे दरेके दरेक मुनिवरोनी कंई परीक्षा करी शकाती नथी तेथी शास्त्रकारमहाराजा फरमावे छे के गच्छना आधारभूत आचार्य छे माटे जे आचार्य सद्गुणी क्रियापात्र अने शासनोन्नतिनी धगशवाळा होय तेनो गच्छ सुगच्छ ज होय माटे तेवा गच्छमां वास करवो हवे सारा आचार्यनी परीक्षा केवी रीते थई शके ते माटे जणावता कहे छे के—

मेढी आलंबणं खंभं, दिट्ठी जाणं सुउत्तमम् ।
सूरी जं होइ गच्छस्स, तम्हा तं तु परिक्खए ॥ ८ ॥

[मेधिरालम्बनं स्तम्भो-दृष्टिर्यानं सूत्तमम् ।
सूरिर्यस्माद् भवति गच्छस्य, तस्मात्तं तु (एव) परीक्षेत ॥८॥]

गाथार्थ—आचार्य महाराज गच्छने माटे मेढीभूत, अवलंबनस्वरूप, स्तंभनी माफक आधारभूत, नेत्र-दृष्टिनी जेवा उपयोगी अने छिद्र वगरना श्रेष्ठ जहाजनी जेवा होय छे जे गच्छमां आवा आचार्य होय ते सुगच्छ जाणवो माटे आचार्यनी परीक्षा उपर्युक्त साधनोद्वारा करवी ८

निवेचन—सुगुप्तिमान उत्तम आचार्यना लक्षण बतावता शास्त्रकारमहाराजा जणावे छे के ते मेढो जेवा होय मढी पटले खाड्ड खलरमा धान्य पाकी गया पछी तेना ढगला करवामा आवे छे ते खळामा डुडाओमा रहला धान्यने तेनाथी छूटा पाडवा माटे वृषभो पासे कचरावयामा आवे छे आ समये खळाना मध्यमा एक काष्ठ ऊभु करवामा आवे छे अने तेनी साथे वृषभोनी राश बाधी लेवामा आवे छे पछी वृषभो आघा-पाछा जई शकता नथी अने पोतानु काम करे छे आ ऊभु करेल काष्ठ ते मेढी कहेवाय छे जेवी रीते आ काष्ठथी वृषभो मर्यादा मा ज चाले, आघा-पाछा थई न शके तेम आचार्यनी आज्ञारूप राशथी बधायेल शिष्यसमुदाय पोतपोताना आचारमा-मर्यादामा ज मग्न रहे छे आचार्यना बीजो गुण अवलबन छे जेम कोई पुरुष खाडा विगरेमा पडी जतो होय तेने हस्तादिनु अवलबन आपवामा आवे तो तेनी रक्षा थाय छे अने पडता बची जाय छे तेम आचार्य पण भवरूप गर्तामा पडी जता गच्छने बचावे छे तेमनो त्रीजो गुण छे स्तभभूत प्रासाद विगरेने आधारभूत स्तभो छे, ते न होय तो महेल, हवेली विगरे मकानो टकी शके नहि तेम आचार्य पण गच्छना स्तभरूप छे तेमनी गेरहाजरीमा गच्छ टकी शके नहीं वळी आचार्यने नेत्र समान कह्या तेनु कारण ए छे के जेम दृष्टि जीवने शुभाशुभ बतावनार छे तेम गच्छने भावी शुभाशुभ दर्शावनार आचार्य छे तेमने छठ्ठु विशेषण आप्यु छे श्रेष्ठ यान-जहाज छिद्र विनानु यान-नाव जेम समुद्रनो पार पमाडे छे तेम आचार्य ससाररूपी समुद्रथी पार पहोंचाडनार शक्तिमान् छे आवा आचार्य जे गच्छमा होय ते सुगच्छ जाणवो अने तेवा गच्छमा वास करवो ते ज हितकारी छे आ ग्रन्थमा (१) आचार्यस्वरूपाधिकार, (२) साधुस्वरूपाधिकार अने (३) साध्वीस्वरूपाधिकार-ए प्रमाणे त्रण अधिकार आववाना छे तेमा प्रथम आचार्याधिकार जणावे छे सदाचारी आचार्यनु लक्षण बताव्यु त्यारे शिष्य प्रश्न करता पूछे छे के-" उन्मार्गगामी आचार्यने कयी रीते जाणी शकाय ? तेना लक्षण कया कया छे ? " तेनो खुलासो जणावता कहे छे के-

भयवं ! केहि लिंगेहि, सूरिं उम्मग्गपट्ठियम् ।
वियाणिज्जा छउमत्थे, मुणी त मे निसामय ॥ ९ ॥
[भगवन् ! कैर्लिङ्गैः, सूरिमुन्मार्गप्रस्थितम् ।
विजानीयात् छद्मस्थः, मुने ! तन्मे निशामय ॥ ९]

गाथार्थ—हे पूज्य ! ज्ञान-दर्शन रहित छद्मस्थ जीव कया कया लक्षण वडे सूरि—आचार्यने उन्मार्गगामी थयेला जाणी शके ते तमो मने समजावो—कहो. ९

विवेचन—उपरनी आठमी गाथामा सन्मार्गगामी-सदाचारी आचार्यना लक्षण जणाव्या तेमी साथे अथातरन्यासथी उन्मार्गगामी आचार्यना लक्षण पण जाणवा आवश्यक छे, कारण के त्यारेज ते बनेनो मुकाबलो (तुलना) थइ शके. छद्मस्थ जीव व्यवहारिक वर्तन परथी अनुमानो बांधी ले छे माटे तेने दिशा सूचन कराव्यु होय तो ते भूलने पात्र न बने आ कारणथी असदाचारी आचार्यना लक्षण जाणवानी जिज्ञासा दर्शाववामा आवी छ नीचना १०-११ श्लोकथी ते हकीकत जणाववामा आवे छे

सच्छंदयारिं दुस्सील, आरभे सुपवत्तयम् ।
पीढयाइपडिवद्ध, आउक्कायविहिंसगम् ॥ १० ॥
मूलुत्तरगुणभट्ठ, सामायारीविराहयम् ।
अदिन्नालोयण निच्च, निच्च विगहपरायणम् ॥११॥
[स्वच्छन्दचारिण दु:शील-मारम्भे सुप्रवर्तकम् ।
पीठकादिप्रतिबद्ध, अप्कायविहिंसकम् ॥ १० ॥
मूलोत्तरगुणभ्रष्ट, सामाचारीविराधकम् ।
अदत्तालोचन नित्य, नित्य विकथापरायणम् ॥ ११ ॥]

गाथार्थ—(१) स्वच्छदाचारी-पोतानी मरजी मुजब वर्तनार, (२) दुराचारी, (३) आरभ-समारभमा प्रवर्तावनार, (४) पाट-पाटलादि वगर कारणे वापरनार, (५) अप्काय जीवोनो अनेक रीते घात करनार, (६) अहिंसादिक मूळगुण अने पिंडविशुद्धि प्रमुख उत्तरगुणोथी भ्रष्ट थएल-तेनु परिपालन न करनार, (७) दश प्रकारनी सामाचारीनी विराधना करनार, (८) पोताना पापनी गुरु पासे आलोचना नहीं करनार तेम ज (९) राजकथा आदि चार विकथाओमा रक्त रहेनार आचार्यने उन्मार्गगामी जाणवा १०-११

विवेचन-(१) स्वच्छदाचारी—जिनराजनी आज्ञा प्रमाणे न वर्तता पोतानी मरजी मुजब वर्तन करे ते स्वच्छदाचारी कहेवाय स्वच्छदाचारी कदी पण साचा मार्गनो स्वीकार करी शकता नथी तमज पोतामा तेवी स्थिति नहा होवाने कारणे तेवा सत्य धर्मना उपदेश पण आपी शकता नथी परले तेवा आचार्यना अवलबनथी स्वश्रेयसिद्धि थई शकती नथी

(२) दुराचारी—ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार अने वीर्या

चार-आ पचाचारनो विराधक, तेनु यथार्थ पालन न करनार तेमज उद्भट वेष धारण करवा उपरात विपरीत क्रिया करनारने दुराचारी जाणवा

(३) आरभादिकमा रक्त—आरभ, सरभ अने समारभ-ए त्रण प्रकार छ पृथ्वीकायादिकने विषे प्रवृत्ति करे त आरभ कहेवाय जेमके-सचित्त माटी-पृथ्वी आदिथी पोताना हाथ धोवे, मकान चणाव, खेती करावे, अप्(काचा-सचित्त पाणी)थी स्नानादि करे, वस्त्रादि धोवे, तेउ-अग्निना दीवा बाळे, धूप कर वाउ-वायु, पवन माटे पखो राखे, चामर वींझावे, पोता पासे रहेल मुहपत्ति वद पवन खाय, उघाडे मुखे बोले, मुखघटे फूक मारे वनस्पति-लीलोतरी खाय, दातण कर, ताबूल खाय, गाय, घोडा प्रमुखने घास चरावे, तेमज गडोल, अळोष, अळसीयादिक बेइद्रिय,मकोडादिक तेइद्रिय, माखी, मच्छर प्रमुख चौरिंद्रिय, मेना, पोपट प्रमुख तिर्यचपचेंद्रिय, तेमज गाडा राखे, घोडा राखे, नोकर-चाकर दास-दासीवर्ग राख, गृहस्थ पासे भार वहन करावे इत्यादिक त्रसकाय विगेरेनो आरभ करे ऊपर वर्णवेली सर्व क्रियाने विषे प्रवृत्ति करवानो विचार करे ते सरभ कहेवाय अने विचार कर्या बाद ते-ते जीवोने कष्ट थाय, परिताप उपजे तेवु कार्य करे ते समारभ कहेवाय आ प्रमाणे पाते करे अथवा अन्यने प्रेरणा करे तेमज आवी प्रवृत्ति करनारने सारो माने अर्थात् तेनी अनुमोदना करे तो तेवा लक्षण-वाळाने उन्मार्गगामी आचार्य जाणवो आ आरभादिक पापप्रवृत्तिनु मूळ छे कह्यु छे के- " सकप्पो सरमो, परितावकरो भवे समारभो । आरभो उद्दवओ, सुद्धन याण तु सव्वेसिं ॥ १ ॥ " अर्थात् जीवादिकने हणवानो विचार करवो ते सकल्प, जीवोने परिताप उपजाववा ते समारभ अने जीवोनो घात थाय एवु कार्य करवु ते आरभ जाणवो सव नयोनो जे ज्ञाता छे एटले के जे तत्त्वज्ञ छ ते त्रणे प्रकारनु बराबर स्वरूप जाणीने ज प्रवृत्ति करे

(४) पीठ-फलकादि वापरनार—चातुर्मास व्यतीत थया छता पण पीठ, फलक अने सथारादिक कारण विना वापरे चातुर्मासमा ते ते वस्तुओनो उप योग करवानु अने ते सिवायनी ऋतुमा कारणे-प्रयोजन होय तो ज वापरवानु श्रीजिनेश्वर भगवतोए उपदेश्यु छे, छता पण तेनो भोगवटो करे तो आज्ञाभग थाय आ माटे निशीथसूत्रना बीजा उद्देशामा कह्यु छ के—" जे भिक्खू उडुब द्धिय सेज्जासथारय पर पज्जोसवणाओ उवाइणेइ उवाइणंत वा साइज्जइ " त्ति । निशीथसूत्रना चूर्णिकार पण कह छ क-" उडुबद्धगहित सेज्जासथारय पज्जोसवण रातीओ पर उवातिणावेइ तस्स मासलहु पच्छित्तं।" अर्थात् जे कोई साधु चोमासा पहेला गृहस्थे अर्पण करेल शय्या अने सथारा पर्युषणाकल्प पछी एटले के

कार्तिकी पूर्णिमा पछी पण राखे अथवा ग्रहण करी राखनारने सहाय करे तो तेने मासलघु प्रायश्चित्त आवे शय्या अने संथारा संबंधी भेद पण जाणवा जेवा छे जे सव शरीरप्रमाण होय ते शय्या अने अढी हाथ प्रमाण होय तेने संथारो कहेवाय अगर जे चाले नहीं ते शय्या अने चाले ते संथारो अथवा जो तत्पुरुष समास लईए तो शय्या एज संथारो थाय संथाराना बे भेद छे-(१) परिसाडी-संथारा करता जेमाथी कई पण पडे-खरे ते अने बीजो (२) अपरिसाडी-जेमाथी कई पण पडे नहीं परिसाडी संथाराना पण बे भेद छे-(१) शुषिर अने (२) अशुषिर सालना, पराल आदिनो पालो ते शुषिर अने बीजो डाभ, तृण विगेरेना पालो नहीं ते अशुषिर अपरिसाडीना पण बे भेद छे-(१) एकांगिक अने (२) अनेकांगिक एकांगिकना पण बे प्रकार छे-(१) असंघातिम अने (२) संघातिम असंघातिम एटले एक पाटियानो साध्या वगरनो अने संघातिम एटले बे पाटियानो भेगो साधेला अनेकांगिक एटले घास प्रमुखनो, अनेक काबीओ(काठा)नो बनावेल आटला प्रकार संथाराना बताव्या ते पैकी कोई एकनो कोई पण प्रकारे समय व्यतीत थया पछी उपयोग करे तो ते साधु मिथ्यात्वी उन्मार्गगामी कहेवाय कारण कह्यु छे के—" एते सामण्णयर, संथारुडवद्धि गेण्हए

जो उ । सो आणाअणवत्थ, मिच्छत्तविराहणं पावे ॥ १ ॥ " अर्थात् संथाराना जे जे प्रकारो दर्शाव्या ते पैकी कोई पण मर्यादा आवे ते संथारो ऋतु समय व्यतीत थया छता पण राखे, लाय अने लावनारने सारा माने तो ते साधु-मुनि जिनेश्वर भगवंतनी आज्ञानु उल्लंघन करे छे, मर्यादानो लोप करे छे, मिथ्यात्वने सेवे छे अने पोताना संयमधर्मनी पण विराधना करे छे निर्णीत करेला समय उपरांत जो संथारा राखवामा आवे तो तेनी गवेषणादिकने कारणे स्वाध्यायनो व्याक्षेप थाय, वळी संथारामा दीर्घकाळे जीवोत्पत्ति पण थाय अने तेने सम्यग् प्रकारे जोवे नहीं तो संजमविराधना थाय कदाच जीवोत्पत्तिनी संभावना जाणी संथारो अर्पण करनार गृहस्थ कहे के तमे मने पाछा सोपजो, हु बीजा आपीश तो पण ते बीजानी गवेषणादिकने कारणे स्वाध्यायमा स्खलना थाय, माटे शेष काळमा संथारो स्वीकारवो ज नहीं जो स्वीकारे तो ऊपर जणावेल दोषापत्ति आवे कदाच कोईने अज्ञानतामा तेवु काय थई गयु होय तो तेने माटे शिक्षा जणावता कहे छे के-परिसाडी अशुषिर संथारो लावे तेने एक लघु मासनो दंड, परिसाडी शुषिर, एकांगिक संघातिम, एकांगिक असंघातिम अने अनेकांगिक-आ चार प्रकार पैकी कोई पण जातनो संथारो ग्रहण करे, बीजा पासे ग्रहण करावे तेमज ग्रहण करनारनी अनुमोदना करे तो तेने लघु चारमासी दंड (प्रायश्चित्त) आवे आ बाबतमा प्रतिवादी तर्क उठावता प्रश्न करे छे के-"तमे ऊपर जणावेल सूत्रमा तो पर्युषण पूर्वे ग्रहण करेल संथाराने पर्युषण पछी शेषकाळ राखवाथी दंड जणावेल छे अने तमे तो शेष काळमा लाववानो दंड

जणायो छो तो ते केम घटी शके ? " आ बाबतनो स्पष्ट जवाब आपता सूत्रकार भगवत कहे छे के-"ए सूत्र तो कारणने आश्रयीने कहेल छे कोई साधु ग्लान होय, अणशन करवानो अभिलाषी होय अने भूमि शरदीवाळी होय तो तेवा कारणोने अगे चोमासा उपरात पण सथारो राखवो पडे तो पण पूर्व ग्रहण करेल सथारो तो न ज राखवो, बीजो लाववो एम सूत्रनो भावार्थ छे शेष काळमा पण सथारो लाववो एवो तेनो अर्थ ज नथी आ प्रमाणे पीठ, फलक अने संथारादिकनु जे स्वरूप कह्यु ते प्रमाणे वर्तन न करे तेने उन्मार्गगामी जाणवा

(५) सचित्त अप्कायनो विराधक पण उन्मार्गगामी जाणवो

(६) मूळ तथा उत्तरगुणनो विराधक—आ उपरात मूल तथा उत्तरगुणनो विराधक होय तेने पण भ्रष्टाचारी आचार्य जाणवो सर्वथकी प्राणातिपात विरमण, मृषावादविरमण अदत्तादानविरमण, मैथुनविरमण, परिग्रहनो त्याग अने रात्रिभोजनविरमण ए छ मूळगुण छे अने पाच समिति, त्रण गुप्ति तथा स्नान न करवु, मुख तथा हस्तादि न धोवा, शरीरनी शोभा न करवी, वस्त्र धोवा तेमज रगवा नही, बेतालीश दोष रहित गोचरी लाववी, गृहस्थ पासे काम न करावबु विगेरे विगेरे उत्तरगुण छे आ बन्ने प्रकारना गुणोथी जे रहित होय तेने उन्मार्गगामी जाणवा

(७) सामाचारीदूषक—पंचागीमा बताबेली साधुओने रात्रि तेमज दिवसमां जे क्रिया करवानी कही छे, जे मर्यादा बाधी छे ते प्रमाणे न करे, आघी-पाछी करे, ओछी-वधती करे ते सामाचारीना विराधक कहेवाय अने तेने पण उन्मार्गगामी जाणवा

(८) आलोयण नहीं लेनार—पोते जे पापप्रवृत्ति करी होय अथवा तो निरतर जे दोष लागता होय ते गुरु समक्ष प्रकट करी गुरु जे आलोयण-प्रायश्चित्त आपे ते स्वीकारी लेवु जोइए प्रायश्चित्तने अगे जे तपश्चर्यादि करणी करवानी कहे ते करवी जाइए, छता पण ते प्रमाणे न करे तेने भ्रष्टाचारी जाणवा अत्रे आलोयणनो प्रसग होवाथी तेने लगतु वर्णन व्यवहारवृत्ति तथा जीतकल्प प्रमुख ग्रंथने अनुसारे करतां कहे छे के-आलोयण आपनारना बे* प्रकार छे-(१) आगमव्यवहारी अने (२) श्रुतव्यवहारी आगमव्यवहारी छ प्रकारना छे-(१) केवळज्ञानी, (२) मन पर्यवज्ञानी, (३) अवधिज्ञानी, (४) चौद पूर्वी, (५) सपूर्ण दशपूर्वी अने (६) नवपूर्वी आ बधा प्रत्यक्ष ज्ञानवाळा छे एटले जे प्राणीने जेवो अतिचार लाग्यो होय ते सपूर्ण जाणे तेमनी पासे आवी कोई पण व्यक्ति पोताने लागेला अतिचारो पैकी काइ अतिचार कहेता भूली जाय अगर तो छुपावे ते समये ते पोते विचारे के-आने हु तेनी भूल कहीश अने

* आ ज ग्रथमां आगळ पांच प्रकार पण दर्शावेल छे

ते स्वीकारीने आलोयण लेशे तो तेने तेनो भूल कहे अने आलोयण आपे वळी विचारे के-आ पोतानी भूल कबूलशे नही अने सत्य बोलशे नही, तो तेवी व्यक्तिने काइ पण कहे नही तेमज आलोयण पण न आपे बीजा श्रुतव्यवहारी छे ते छेदादि ग्रथने जाणनारा होय छे पोतानी पासे आलोयण लेवा आवनारने तेओ त्रण वखत पूछीने खात्री करे छे के तेणे कई कपट तो कर्युं नथीने आलोयण लेनार कहे मैं साभळ्यु पण अवधार्यु नथी बीजी वार कहे साभळ्यु, पण निद्रानो समय थयो होवाथी बराबर उपयोग रह्यो नथी त्यारे त्रीजी वार पूछे अने उपयोगपूर्वक बराबर कहे त्यारे छेदादिग्रथने अनुसारे तेने आलोयण आपे जो आलोयण लेनार कपट राखे, भूलचूक के मायाप्रपंच करे तो तेने समजाववा निशीथचूर्णीना वीशमा उद्देशानु नीचे प्रमाणे दृष्टान्त कही समजावे—

कोई राजाने सर्व लक्षणयुक्त एक अश्व हतो ते घोडयामा अत्यत वेगवाळो अने नदी, पर्वत आदि उल्लघन करवामा अत्यत चतुर तेमज शक्तिशाळी हतो ते घोडाना आवा गुण-सामर्थ्यथी अन्य कोई पण राजा आ राजाने जीती शकवा समर्थ थतो नही उलटु आ राजाए बीजा अनेक राजाओने जीतो खडिया राजा बनाव्या, अने तेमनी पासे पोतानु कार्य करावे कोइ पण राजानी आ राजा सामे थवानी के तेनी आज्ञानु उल्लघन करवानी हिम्मत चालती नही आवी परिस्थितिथी खडिया राजाओ हृदयमा घणो ज परिताप पामवा लाग्या कोई पण रीते आ दुःख निवारण करवानो निर्णय कर्यो एक राजाए सौ सामन्त राजाओने एकठा करी तेनो उपाय पूछयो त्यारे कहलाने कह्यु के-" जो अश्वनो विनाश करवामा आवे तो आपणी मनसिद्धि थाय, कारण के ते अश्वना उत्तम लक्षणोने अगे ज ते राजा आपणा पराभव करे छे, परन्तु ते अश्वनो घात करवा ते सरळ के सुगम काय नथी, कारण के ते अश्वने तो किल्लामा पूरी राखवामा आवे छे अने ते फरतो फरता घणा ज माणसोनो पहेरो रहे छे तेथी आ अत्यत कठिन काम कोइ करी शकशे नहि " तेवामा एक बहादुर पुरुष राजा समक्ष आवीने कहेवा लाग्यो के- 'हे राजन्! ते अश्वने तो कोइ रीते त्याथी दूर करी शकाय तेम नथी, परन्तु जो तमे आज्ञा करो तो हु तेने मारी नाखुं " एवी राजाए कह्यु-" भले तेम करो एम करवा थी पण आपणो हेतु सरशे ते घोडो तेनो पण नहीं रहे अने बीजाना उपयोगमा पण नहीं आवे माटे काइ पण प्रकारे तेनो घात करवानो उद्यम कर " राजाज्ञा साभळी ते पुरुष अश्वना स्वामी राजानी पासे गयो अने तेनी सेवा-भक्ति करवा लाग्यो तेनी अत्यत सेवाभक्ति, सुहृदयता अने आज्ञाकित पणु जोई राजाने पण तेना पर विश्वास आव्यो एटले तेने योग्य वेतन आपी नोकरीमा राखी लीधो हवे ते पुरुषे पोतानी कार्यसिद्धि माटे छीणा-छीणा

काटा जेवा तीर बनाव्या अने ते तीरोने तेणे नाना बाणद्वारा घोडाने गुप्त रीते मार्या ते बधा तीरो झीणा काटानी जेम अश्वना अगमां प्रवेश करी गया तेथी घोडाने शल्यनी माफक दुःख थवा लाग्यु दुःख दिवसे दिवसे वधवा लाग्यु गुप्त वेदना सहन न थवाथी ते दुर्बल बनवा लाग्यो राजाए एकदा तपास करी तो अश्वनी काति अने अगसौष्ठवमा परिवर्तन जोयु तेणे राज वैद्यने बोलावी कह्यु के " हमेशा आ अश्व लीला जवनु भक्षण करे छे छता दुर्बल केम बनतो जाय छे? माटे तेनी व्याधिनी परीक्षा करी तेनी बराबर चिकित्सा करो ' वैद्ये उपचार करवा माड्या पण मूळ व्याधि बराबर न समजवाथी तेना बधा औषधोपचार निष्फळ नीवड्या विचक्षण वैद्य विचारमा पडी गयो तेणे पोताथी बने तेटला उपायो अजमानी जोया बाद मनमा निर्णय कर्यो के ' अश्वने धातुविकारनो व्याधि तो नथी ज, इच्छानो व्याधि छे तेना शरीरमा जरूर शल्य होवु जोईए " छेवटे तेणे छेल्लो उपाय अजमाव्यो अश्वना समग्र शरीरे लीली माटीनु विलेपन कराव्यु पटले जे जे स्थळे झीणा तीरनु शल्य हतु ते ते स्थानो एकदम अदरनी उष्माने कारणे सुकाइ गया, पछी वैद्ये ते ते स्थळोए जरा जरा खोदी त्याथी झीणा झीणा तीर बहार खेंची काढ्या अने पछी रोहिणी औषधीद्वारा ते बधा व्रण रुझावी दीधा आ प्रमाणे युक्तिथी वैद्ये अश्वने निरोगी-निःशल्य बनाव्यो आवी ज रीते बीजा अश्वनो पण वृत्तात जाणवो तेमा विशेष ए के-तेना शरीरमा रहेल झीणा तीर नीकळ्या नहि अने अते ते अश्व वेदनायुक्त मरण पाम्यो

आ दृष्टातनो उपनय आ प्रमाणे समजवो-चेतनरूपी राजा छे तेनो मनरूपी अश्व छे ते चारित्ररूपी लक्षणोथी युक्त छे तेना प्रभावथी मोहराय चेतनने जीती शकता नथी उलटु चेतनराज मोहराजाने दुःख देवा लाग्या अने शब्द, रूप, रस, गध अने स्पर्शादि जे मोहराजानु राज्य छे ते उज्जड करवा लाग्या वळी तेना सोळ कषाय अने नव नोकषायरूपी सामतोने पण हेरान करी मूक्या समकितमोह, मिथ्यात्वमोह अने मिश्रमोहरूपी त्रणे पराक्रमी पुत्रोने पण हणी नाख्या आथी मोहराजा अत्यत क्षोपाय मान थयो परतु लक्षणयुक्त अश्वना प्रभावथी तेनु कइ पण जोर चाल्यु नही पछी मोहराये सव सुभटोने एकठा कर्या अने पोतानु दुःख कही सभळाव्यु त्यारे एक सुभटे कह्यु-" हे महाराज ! ते अश्वने तो नव कोटी पच्चक्खाणरूप किल्लामा पूर्यो छे माटे तेने कोइ पण रीते अपहरण थइ शके नहीं, छता तमारी आज्ञा होय तो हु तेने मारी नाखु " मोहराजाए तेथी आज्ञा करवाथी ते सुभट चेतनराजनो सेवक थयो अने गुप्तपणे मूळगुण तथा उत्तरगुणना अतिचाररूप झीणा-झीणा तीर मारवा लाग्यो आथी अश्व शल्ययत थयो चेतन राजे विचार्यु के-" हु तप-जपरूपी अनेक लीला जव अश्वने आपु छु छता ते

दुर्बल केम थने ?" तेथी चेतनराजे आचार्यरूप वैद्यने बताव्यो अने तेमणे पण परीक्षा करी कह्यु के-" तेने मिथ्यात्वरूप मोहनो व्याधि नथी पण अतिचाररूप शल्य छे" पछी त्रण वखत पृच्छा करवारूप आलोयण आपी अने शल्य काढी नाख्युं तेमज जे व्रण पडया हता ते तपरूप औषधवडे रुझावी दीधा आथी मनरूप अश्व पुन निरोगी थयो अने तेना प्रभावथी चेतनराय पर मोहराजानुं कंई पण जोर चाली शक्य नही आथी आ रीते बीजा अश्वना शल्य नीकळ्या नही तेथी ते मृत्यु पाम्यो अर्थात् चारित्र नष्ट थयु पछी चेतनरायने मोहराजाए चोराशी लाख जीवयोनिमां भटकायो हे साधु ! जो तु पण कपट राखीश-शल्य राखीश तो तारा मनरूपी अश्वने लक्षण रहित बनावीने मोहराजा मरावी नाखशे, ताराथी मोक्षप्राप्ति थ शकशे नही अ जन्मरणादिक दुःखो भोगववा पडशे माटे सम्यक्प्रकारे आलोचना कर-प्रायश्चित्त स्वीकार

आलोचना कोनी पासे लेवी ?

ऊपर पोताने लागला अतिचार सबधी प्रायश्चित्त लेवानी आवश्यकता दर्शावी हवे आलोचना कोनी पासे लेवी ते बाबत जणावता कहे छे के-आलोयण पोताना गच्छना आचार्य पासे लेवी कह्य छे के—"आयरियाइ सगच्छे, सभो इयइयरगीअपासत्थे । सारूवीपच्छाकड-देवयपडिमाअरिहसिद्धे ॥१॥" अर्थात् (१) स्वगच्छना आचार्यादिक पासे (२) बीज ज सामाचारीवाळा अन्य गच्छना आचार्यादिक पासे, (३) गीतार्थ पासत्था पासे, (४) गीतार्थ सारूपी पासे, (५) गीतार्थ पच्छाकड पासे, (६) देव पासे (७) जिनप्रतिमा पासे अने छेवट (८) अरिहत, सिद्धभगवतनी साक्षीए आलोयणा लेवी 'श्रीव्यवहारसूत्रनी टीकामा आ सबधी विशेष वर्णन आपवामा आव्यु छे तेमा ते सबधे कह्यु छे के-आलोयणा स्वगच्छना आचार्य पासे लेवी तेना अभावमा उपाध्याय पासे, ते न मळे तो प्रवर्तक पासे, ते न मळे तो स्थविर पासे अने ते पण न मळे तो गणावच्छेदक* पासे आलोयण लेवी उचित छे आम पाचे अनुक्रमे लेवा आचार्य होवा छता उपाध्याय पासे, अने उपाध्याय होवा छता प्रवर्तक पासे प्रायश्चित्त ग्रहण न कराय दैवानुयोगे स्वगच्छना ऊपर जणावेल पाच पैकी कोईनो पण सहयोग न होय तो पोताना गच्छनी सामाचारी पाळता बीजा आचार्यादिकनी पासे आलोयण लेवी तेमा पण प्रथम आचार्य, तेना अभावमा उपाध्याय इत्यादिक पाच प्रकारो समजी लेवा आ प्रमाणे अन्य गच्छनो पण सयोग न थाय तो गीतार्थ पासत्था पासे आलोयणा लेवी ते पण न मळे तो गीतार्थ सारूपी× पासे लेवी लिंगमात्र स्वीकारीने गृहस्थपणे जे रहेल होय तेने

* गणना अमुक विभाग(थोडा साधुओ)ने लइने गच्छनी पुष्टि माटे तथा उपधिनी गवेषणा निमित्त विचरे तेने गणावच्छेदक कहेवामां आवे छे

× वर्तमान काळे गीतार्थ पासत्था, सारूपी के पच्छाकड विगेरे पासेथी प्रायश्चित्त ग्रहण करवानु प्रचलित जणातु नथी

गीतार्थ साधुथी कहेवाय तेनो पण अभाव होय तो गीतार्थ पच्छाकड एटले जेणे प्रथम चारित्र स्वीकार्युं होय अने पछी मूकी दीधु होय, गृहस्थपणे रहेल होय तेमज शास्त्रनो बोध होय तेने गीतार्थ पच्छाकड कहेवाय छे. गीतार्थ पासत्था के गीतार्थ साधुथी पासे आलोयण लेवानो प्रसंग आवे तो तेमनो आदरसत्कार करवो तथा वादणा देवापूर्वक सर्व मर्यादा साचववी, छतां एम पासत्थादिक पोते मनमा एम विचार करे के–मारामा तो कोइ पण [illegible] गुण नथी माटे हु शा माटे वंदावु ? अने तेम विचारीने वादवानो निषेध करे तो तेओने बेसवा माटे आसन आपी, प्रणाम करी आलोयणा लेवी [illegible] पच्छाकड पासे आलोयण लेवी पडे तो तेने थोडा समयनी सामायिक [illegible] दीने, साधुवेष पहेरावीने विधिपूर्वक आलोयण लेवी कदाच [illegible] वंदावानी अभिलाषा करे तो तेमने एकातमां वंदन करवु, पण [illegible] देखता वंदन करवु नहीं कारण के तेम करवाथी शासननी हीलना [illegible]

हवे ऊपर कह्या तेवो काइ पण योग न मळे तो देव पासे [illegible] कोरटकादिक चैत्य, गुणशीलादिक चैत्यमा भगवान मुनिसुव्रतस्वामी [illegible] मानस्वामी प्रमुख तीर्थंकर अगर तो गणधरभगवंतो समवसर्या होय [illegible] साधुओने जे प्रायश्चित्त आप्या होय ते त्याना चैत्यना अधिष्ठायक देवे [illegible] होय तेथी तेवा देव पासे पण आलोयणा लेवी ते समकिती देवनी [illegible] तप करवो अने तपश्चर्याना प्रभावथी आसन चलायमान थवाथी [illegible] थाय त्यारे तेने पोतानो अतिचार जणावीने जे प्रायश्चित्त आपे ते [illegible] ते अधिष्ठायक देव च्यवी गया होय अने तेने स्थाने बीजा देव [illegible] तो अट्ठम तप करवाथी ते आवे अने कहे के– 'हु महाविदेह क्षेत्रमा [illegible] तने पूछीने आवु " पछी आज्ञा लईने महाविदेहमा जाय अने [illegible] जे आलोयण दर्शावी होय ते साधुने जणावे अने ते प्रमाणे [illegible] प्रमाणे पण न बने तो अरिहंत परमात्मानी प्रतिमा पासे [illegible] पोताना पाप प्रकाशी, पोते प्रायश्चित्त आपवानु [illegible] सूत्रोक्त विधिपूर्वक अंगीकार करे परंतु जिनचैत्य पण [illegible] या सिद्धनी समीप आलोयण ले एटले के पूर्वदिशा [illegible] सन्मुख ऊभो रही, पोताना पाप प्रकाशी, सूत्रानुसार [illegible] पद्धति भणेलाए ग्रहण करवानी छे पोते जाणकार [illegible] आचार्यादिकनो योग होवा छता आपमेळे कपट [illegible] ते मिथ्या जाणवी, कारण के कपटपूर्वकनी क्रिया [illegible] यणनी महत्ता दर्शावता कहे छे के– "सल्लुद्धरणनि[illegible] अणमयाइ । कालेण वारवारिसा, गीयत्थगवेसणइ[illegible] पापरूपी शल्यने निर्मूळ करवाने माटे सातसो [illegible]

होय ता त्या जाय अने बार बरस पर्य त तेवा गीतार्थनी राह जुए आवी रीते शास्त्रोक्त विधिथी जे आलोचना करे ते शुद्ध आलोयण कहेवाय

(९) विकथा-रक्त-हवे नवमु लक्षण दर्शावता कहे छे क-त हमेशा विकथा करवामा आसक्त रहे चार प्रकारनी शुभ कथा छे, अने तेनाथी विप रीत विकथा सात प्रकारनी छे स्थानागादि सूत्रोमा तेनु वर्णन करवामा आव्यु छे " चउव्विहा कहा पन्नत्ता, तजहा-अक्खेवणी १, विक्खेवणी २, सवेयणी ३, निव्वेयणी ४। वीतराग परमात्माए चार प्रकारनी कथा कहेली छ (१) अक्खेवणी, (२) विक्खेवणी,(३) सवेयणी अने (४) निव्वेयणी. (१) अक्खेवणी आक्षेपणी कथा पटले जे कथाथी श्रोता ससार परत्वेनो मोह त्यजी दइ तत्त्वनी वात ग्रहण करे-तत्त्वनी वातमा त्यलीन बने ते (२) विक्खेवणी-विक्षेपणी कथा पटले जे कथा साभळवाथी श्रोतानु मन-चित्त कुमार्गथी पाछु हटे-कुमार्ग छोडी देवा तत्पर बने ते (३) सवयणी-सवदिनो कथा पटले जे कथा साभळवाथी श्रोताने मोक्षनी अभिलाषा थाय ते (४) निव्वेयणी-निर्वेदिनी कथा पटले श्रोतानु मन ससार परथी उतरी जाय ते हवे ते प्रत्येक कथा ओना भेदो दर्शावता प्रथम आक्षेपणी कथाना प्रकार कहे छे के-"आयारे १ ववहारे २, पन्नत्ती ३, चेव दिट्ठीवाए य ४। एसा चउव्विहा खलु, कहा उ अक्खे-वणी नाम ॥ १ ॥" आक्षेपणी कथाना चार भेद छे-आचार, व्यवहार, प्रज्ञप्ति अने दृष्टिवाद. आचार पटले श्रोताने साधुओनो आचार बताववो, पटले के साधुए लोच करवा, उघाडे पगे विहार करवो, जोई-तपासीने (इर्यासमिति पूर्वक) चालवु, उघाडे मुखे न बोलवु, प्राण जाय तो पण सचित्त पाणी न पीवु इत्यादि आचार दर्शाववो ते आ प्रमाणे कहेवाथी श्रोता सम्यक्त्व पामे अने बीजा मिथ्यात्वीना पाशमा न फसाता आवी क्रियावाळा शुद्ध गुरु होय तेने ज वादे बीजा भेद व्यवहार पटले साधुनो व्यवहार दर्शावे के-कोईनी सोय मागी लाव्या होय अने प्रमादथी देवी भूली जवाय अने रात रही जाय तो एकमासीनो दड आवे, काइ गृहस्थादि पासे पग चपावे अगर तो मसळावे तो निशीथसूत्रमा कहेल चारमासी दड आव, एवी ज रीत गृहस्थनी भाषा बोले अगर तो गृहस्थ पासे बोजो वहन करावे तो पण दड आव-आ प्रमाणे कहे वाथी श्रोतानु मन मिथ्यात्वथी उतरी जाय अने शुद्ध सयमना पालक साधु प्रत्ये अनुराग प्रगट त्रीजो भेद पन्नत्ती छे, पटले के कोइ श्रोताना मनमा शका उपजे अने ते गुरुने पूछे तो तेने मधुर वचनथी जवाब आपे, तेने जीवाजीवादि तत्त्वोमा श्रद्धा उपजे अने मनमा एवो निर्णय थाय के साधु हितकारक कहे छे अने मनमा लेशमात्र पण रोष नथी आ प्रमाणेना वर्तनथी श्रोताजन बधु

दृढ थने छे चोथो भेद दृष्टिवाद छे एटले ते श्राता समजु-ज्ञानवंत होय तो तेने जीवाजीवादिक तत्त्वोनु सूक्ष्म वर्णन समजावे-कहे जेथी श्रोताना मनमा आश्चर्य उत्पन्न थाय के आवु सूक्ष्म-तत्त्वस्पर्शी ज्ञान वीतराग परमात्मा सिवाय कोण कही शके ? आ प्रमाणे तेने समकित प्रत्ये दृढ अनुराग थाय आ चार भेदो आक्षेपणी कथाना छे केटलाक आचार्यो आ चार भेदोना अर्थ ते ते नाम प्रमाणे ना सूत्रो कहे छे आचाराग, व्यवहारसूत्र, प्रज्ञापना अने दृष्टिवाद आदि शब्दथी बीजा पण भेदो जाणवा, परन्तु मुख्यपणे आ चार भेद कह्या छे हवे आक्षेपणी कथानो रस वर्णवता कहे छे के—" विज्जाचरण च तवो, पुरिसक्कारो य समिइगुत्तीओ । उवइस्सइ खलु जहिय, कहाइ अक्खेवणीइ रसो ॥ १ ॥ " अर्थात् भावरूप अधकार-अज्ञाननो नाश करनार ज्ञान ते विद्या, सचित कर्मनी निर्जरार्थे जे तपश्चर्यादि करवामा आवे ते तप, कर्मरूपी शत्रुने हणवा माटे जे उद्यम शीलपणु ते पुरुषार्थ, पाच समिति अने त्रण गुप्ति-आवा प्रकारनी जे कथा करवी-उपदेश आपवो ते आक्षेपणी कथानु रहस्य छे

निक्षेपणी कथाना चार भेद दर्शावता कहे छे के—

" पुव्वि ससमय कहित्ता परसमय कहेइ, ससमयगुणे दीवेइ, परसमयदोसे उवदसेइ एसा पढमा १ । पुव्वि परसमय कहित्ता तस्सेव दोसे उवदसित्ता पुणो ससमय कहेइ गुणे उवदसेइ एसा बिइया २ । मिच्छावाय कहित्ता सम्मावाय कहेइ, परसमय कहित्ता तेसु चेव परसमएसु जे भावा जिणप्पणीएहिं भावेहिं सह विरुद्धा असता चेव विअप्पिआ ते पुव्वि कहित्ता दोसा य तेसिं भणिऊण पुणो जिणप्पणीयभावसारिसा घुणक्खरामिव कहवि सोभणा भणिया ते कहेइ, अहवा मिच्छावाओ नत्थित्त सम्मावाओ अत्थित्त, तत्थ पुव्वि नाहियवाईण दिट्ठीओ कहित्ता पच्छा अत्थित्तपक्खवाईण दिट्ठीओ कहेइ, एसा तइया ३ । सम्मावाय कहित्ता मिच्छावाय कहेइ, सोवि एव चेव नवर पुव्वि सोभणे कहेइ, पच्छा इयरे त्ति चउत्था ४ । " अर्थात् पोतानो धर्म सभळावोने तेना गुणनु वर्णन करे के-आ जैनमत जेवा बीजा कोई पण श्रेष्ठ धर्म नथी ते अहिंसामय छे, ते विनयमूळ धर्म छे, एनी सदुपासना करनार स्वर्ग अने प्राते मोक्षलक्ष्मीनो भोक्ता बने छे इत्यादि आ प्रमाणे प्रथम स्वधर्मनी श्रेष्ठता दर्शावी परमतना दोष दर्शाववापूर्वक कहे के-जैनधर्म सिवायना बीजा धर्म दोषयुक्त छे परधर्मीओ काचा-सचित्त पाणीवडे स्नान करी असख्याता जीवोने हणी नाखे छ, पचाग्नि तप करी तेमा तेउकायना अनेक जीवोनो सहार करे छ

तपश्चर्या करे छे पण ते अज्ञान कष्ट छे, कारण के अनंत जीवोना स्थानभूत अनंतकाय-कंदमूळ अने अभक्ष्य फळो खाय छे तेमज राक्षसनी पेठे रात्रिभोजन पण करे छे एवी रीते अन्य दर्शनोना दूषणो देखाडी स्वधर्मनी पुष्टि करे ते प्रथम भेद

पुव्विं परसमयं अन्य मतोनी वात करी तेनु मिथ्यापणु सिद्ध करी बताव विष्णुमार्गी कहे छे के-विष्णुए ज आ जगत रच्यु-उत्पन्न कर्यु जगतना जीवोने त उत्पन्न करे छे अने मृत्यु पण एज पमाडे छे परन्तु आ कथन वृथा छे जो विष्णु प्रथम जीवोने जन्मावी सुखो आप अने पाछो मृत्यु पमाडतो होय तो तेने बाळहत्या-जनहत्यानो दोष लागे बाळहत्या-जनहत्या करनार तो आ लोकमा महापातकी-महाघातकी गणाय छे एवी व्यक्तिनु नाम पण केम लेवाय ? अने तेनी पूजनादि क्रिया सभवी ज केम शके ? विष्णुनु जगत्कर्तृत्व कदी घटी शकतु ज नथी आवी रीते विष्णु मतनो निरास कर्या पछी ब्रह्मवादी एवधो कहेवु के-सर्व जीवाजीव ब्रह्म स्वरूप छे ते पण खोटु छे, कारण के तेम मानवाथी तप-जपादिक क्रिया अने धार्मिक करणी निष्फळ बने छे जो बधा ज ब्रह्मस्वरूप होय तो सर्वनी सरखी बुद्धि होवी जोइए अने एक-बीजी व्यक्तिनी वच्चे जे भिन्नता-विचारभेद अने असगतता जोवामा आवे छे ते कदी होइ शके नहीं आ रीते ब्रह्ममतने मिथ्या जणावी, साख्य, मीमासकादि दर्शनोनु निष्फळपणु दर्शावी स्वमत-जैनमतनी पुष्टि करवी स्याद्वाद सिद्धातनी अपूर्वता जणाववा अने स्वमतनु अविसवादपणु प्रगट करवु-आ बीजो भेद

मिच्छावाय कहित्ता सम्मावाय कहेइ मिथ्यावादनु कथन करीने पछी सम्य ग्वादनु निरूपण करवु परदर्शननी वात करीने तेमा जे जे स्थाने दोषापत्ति होय त दर्शावे अने तेनी साथोसाथ जैनदर्शनमा जणावेल विशिष्टता देखाडे दाखला तरीके भागवतमा एक एवो उल्लेख छे के पंडित लोक धनिक लोको पासे शा माटे जाय ? वस्त्र लेवा माटे त्यारे जणाववामा आवे छे के शु वस्त्रो रस्तामा नथी मळता के धनिक वग पासे जवु पडे ? रस्तामा जे वस्त्रना टुकडा पड्या होय ते ग्रहण करी, तने धोइ तेनी कथा बनावीने पहेरवी आ हकीकतनो जैन सिद्धातानुसार विरोध दर्शाववो के रस्तामा पण पडेला वस्त्रो ग्रहण करवाथी अदत्तादाननो दोष लागे, वस्त्र धोवाथी जीवहिंसा थाय अने कथामा जीवोत्पत्ति थवाथी तेनी जयणा न रहे आ प्रमाणे दोष देखाडी तेने अनुरूप जैन-*आम्नाय* समजाववो जैन साधुओ वस्त्रादि मागवा माटे जता नथी ते तेनु नि स्पृहपणु जाणवु आ कारणथी वस्त्रादिनी भिक्षा माटे गृहस्थवर्ग पासे जवानु वज्य गण्यु छ आवी रीते मिथ्यामतनु वर्णन करी, तेनी निरुपयोगिता दर्शावी *आस्तिक* मतनी सिद्धि करे ते त्रीजो भेद

सम्मानाय कहित्ता मिच्छाराय कहेइ पहेला सम्यग्वाद कहीने पछी नास्तिक मत कहे तेनी हकीकत ऊपरना बीजा भेदनी जेवी ज समजवी, परन्तु पहेला जैन मतनु श्रेष्ठपणु दर्शावी पछी बीजा दर्शनोनी वात करे तेमज दोषस्थान वर्णवे-आ चोथो भेद

संवेदनी कथाना चार भेद छे-(१) आयसरीरसंवेयणी-आ शरीर अशुचि जन्य छे ते शरीर शुक्र अने रुधिर आदिथी वधायेल छे वळी आ शरीरने विषे पण मास, चरबी, मेद, हाडका, मज्जा, चामडी, नसो, रोमा वलि, नख, दात, आंतरडा विगेरे दुर्गंधमय अवयवो छे वळी आ शरीरने विषे मळ, मूत्र भरेला छे आवा शरीरने धोवाथी पण शु ते शुद्ध थाय? हाडचाने वारंवार धोवाथी जो ते शुद्ध थाय तो आ शरीरने वारंवार धोवाथी शुद्ध थाय पण ते असंभवित छे, कारण के हाडकु कदापि शुद्ध थतु नथी आवी रीते वर्णन करी श्रोतानी शरीर प्रत्येनी रुचि ओछी करे, शरीर संबधी आचारने ज श्रेष्ठ मानता होय तो ते भ्रमणा टाळी, संवेग उपजे तेवी कथा करवी ते प्रथम भेद (२) परसरीरसंवेयणी-जेवी रीते पोताना शरीरनु अशुचिमय वर्णन कर्यु तेवी रीते पारकाना शरीरनी वात करवी मृत्यु पछीना शब विषे वर्णन करता सांभळनारने संवेग उपजे तेवु वर्णन करवु ते बीजो भेद (३) इहलोयसंवेयणी-आ मनुष्योना शरीर असार छे, अनित्य तेमज अध्रुव छे केळना थभ सरखी आ कायानी शोभा शा माटे करवी? कोई हमेश माटे रहेवानु नथी ता पछी नाशवत शरीरनी विभूषा शी? आ प्रमाणे वात करी संवेग उपजाववा प्रयत्न करवो ते त्रीजो भेद (४) परलोयसंवेयणी-परलोक संबधी दुःख-दर्शन करावी श्रोताने संवेग उपजाववो देवोने पण परस्पर ईर्ष्या होय छे, तेओ एक-बीजाओ उत्कर्ष सहन करी शकता नथी वळी क्रोध, मान, माया अने लोभने वश पडीने दुःखी थई रह्या छे लोभने वशी भूत थईने अनेक प्रकारनी चिंताओ करे छे अने मननी समाधि रहेती नथी देवगतिमा पण आवा प्रकारनु दुःख छे तो बीजी त्रण गतिनी तो वात ज शी करवी? मनुष्य अने तिर्यंचगतिना प्रत्यक्ष दुःख नजरे जोवाई रह्या छे आ चार गतिमा सुखनु बिन्दु पण नथी वळी नरकगतिना दुःखनु तो वर्णन ज शा माटे करवु? नरक एटले तो दुःखनो सागर आ रीते कथा कहीने श्रोताने संवेग-ज्ञानगर्भित वैराग्य उपजाववो ते चोथो भेद

निर्वेदनी कथा पण चार प्रकारे छे (१) इहलोए दुच्चिण्णा कम्मा इहलोए चेव दुहविवागसंजुत्ता भवंति-आ लोकमा जे कुपथगामी बने छे अगर तो दुष्कर्म करे छे तेने ते ते अशुभ कर्त्तव्यो आ ज लोकमा संतापदायक थाय

छे जेम-कोई चोरी करे, परस्त्रीगमन करे अथवा विषयलंपटी बने तो तेने लगता अशुभ पापथी आ ज लोकमां दुःखविपाक भोगववो पडे छे, कारण के राजा शिक्षा करी कारागृहमां नाखे, लोको अपमान-तिरस्कार करे अपकीर्ति प्रसरे, अन्यनो विश्वास ओछो थई जाय अने धनहानि थाय आ प्रमाणे श्रोताने समजावी पापकार्यथी पाछो वाळे, पापकृत्य करवाथी भयभीत बनावे ते प्रथम भेद (२) इहलोए दुच्चिण्णा कम्मा परलोए दुहविवागसंजुत्ता भवंति-आ भवमां करेला अकृत्यो परलोकने विषे अतिशय दुःखदायक थाय छे आवा प्रकारना पापोदयने कारणे जीव नरकमां पडे नरकना महादुःखो सांभळतां पण शरीरे कमकमाटी छूटे तो ते दुःखो सहन तो शी रीते थई शके ! नरकमां क्रूर, जंगली पशुओ फाडी खाय, ऊंधा टांगे, परमाधामी देवो करवतथी कापे, तृषानी इच्छा थाय त्यारे उकाळेलु तप्त सीसुं पीवरावे, शीतनी इच्छा थाय त्यारे करवत जेवा पांदडावाळा वृक्ष नीचे लई जाय परस्त्रीगमन करनार शख्सने तपावेला लोहस्तंभ साथे आलिंगन करावे आ प्रमाणे परलोकना दुःखदायी स्वरूपनुं वर्णन करी श्रोताने पापकार्यथी निवृत्त करे ते बीजो प्रकार (३) परलोए दुच्चिण्णा कम्मा इहलोए दुहविवागसंजुत्ता भवन्ति-पूर्वभवमां करेला दुष्ट पापकारी कार्योथी आ लोकमां दुःखपरंपरा प्राप्त थाय छे, तिर्यंचो केटलुं कष्ट भोगवे छे ! गमे तेटलुं दुःख थाय तो पण वाचाद्वारा कही शके छे ? मालीक ओछुं-वधतुं खावापीवानुं आपे अगर तो विशेष पडतो बोजो वहन करावे तो पण कोईनी पासे फरियाद करी शके छे ? सदैव पराधीन दशामां ज रहेवुं पडे छे आ उपरांत केटलाक मनुष्यो जन्मथी ज व्याधिवाळा, ठुंठा, लूला, लंगडा अने पागळा थाय छे ते पण पूर्वभवना पापकृत्यनुं ज परिणाम छे चंडालादि नीच कुळमां जन्म थवो, दरिद्री अवस्था प्राप्त थवी, आदर-सत्कार न मळवो भूख अगर तो तृषानुं दुःख सहन करवुं विगेरे विगेरे वर्णन करी श्रोताने पापकार्यथी पाछो वाळवो ते त्रीजो प्रकार. (४) परलोए दुच्चिण्णा कम्मा परलोए एव दुहविवागसंजुत्ता भवन्ति-पूर्वभवमां प्रचुर करेल पापपुंज परलोकमां अत्यंत कष्टकारक थाय छे बांधेला पापकर्मने योगे जीव नरकमां जाय, त्यां नरकभूमिनां अकथनीय अने असह्य संकटो सहन करे, क्रूर पक्षीओ देहने फोली खाय कुंभीपाकमां पकावे वैतरणी नदीमां उतारे, धगधगता अग्निकुंडमां फेंके, झेरी पशुओना डंख देवराय, शरीरना सरसव जेटला टुकडा करी नाखे-आ प्रमाणे अवर्णनीय दुःख सहन करीने पण आयु पूर्ण थये पाछो तिर्यंच योनिमां जन्मे, त्यां पण वारंवार कष्ट सहन करी धर्मभावनाना अभावमां पाछो दुर्गतिमां जाय जो तेने धर्मभावना स्फुरे नहीं अगर तो पुण्यसंचय न थाय तो आ भवपरंपरा चालु ज रहे आ प्रमाणे वर्णन करी श्रोताने वैराग्यवासित बनावे ते चोथो प्रकार

आ वर्णनमां कथन करनार व्यक्तिनी अपेक्षाए इहलोक अने परलोक समजवा प्ररूपणा करनार-व्याख्याता मनुष्य होवाथी मनुष्यलोक ते इहलोक अने बाकीनी त्रणे गति (देव, तिर्यंच अने नरक) परलोक समजवी ऊपर वर्णवेली चारे प्रकारनी कथाओ प्ररूपकारनी अपेक्षाए (१) अकथा, (२) कथा अने (३) निकथा थई शके छे ते केवी रीते सभवी शके ? ते सबधमा जणावता कहे छे के-" मिच्छत्त वेयन्तो, अन्नाणी ज कह परिकहेइ ॥ लिंगत्थो व गिही वा, सा अकहा देसिया समए ॥ १॥" अर्थात् मिथ्यात्वमोहनीयना उदयवाळो एटले के मिथ्यात्वी तेमज अज्ञानी एवो कोइ पण लिंगधारी एटले के साधुनो वेष धारण कर्यो होय परतु समकित जेने स्पर्श्यु नथी ते तेमज गृहस्थ जे कई पण कथा करे-कहे तेने सिद्धातने विषे अकथा कहेल छे द्रव्य लिंगी-मात्र वेषधारी कोने कही शकाय ? ते समजवाने माटे अगारमर्दकाचार्यनु कथानक शास्त्रकार महाराज जणावे छे

अगारमर्दकाचार्यनु दृष्टान्त--

कोई एक नगरने विषे एक आचार्य महाराज पोताना शिष्य-परिवार साथे स्थिरता करी रह्या हता तेवामा एक दिवसे तेमना एक शिष्यने रात्रि समये स्वप्नु आव्यु स्वप्नामा तेणे जोयु के-एक महाशूकरनी पाछळ पाच सो हस्तिओ चाल्या आवे छे शिष्य आ स्वप्नु रहस्य समजी शक्यो नहीं तेणे आ स्वप्ननो अर्थ समजवा स्वय घणो विचार कर्यो परतु तेनी बुद्धि तारतम्य समजवा निष्फळ नीवडी छेवटे तेणे ते हकीकत पोताना गुरुने जणावी तेनु रहस्य पूछ्यु विचक्षण गुरुए तात्कालिक जवाब आपता जणाव्यु के-" हे सुज्ञ शिष्य ! आजे आ नगरमा पाच सो शिष्यना परिवार साथे एक आचार्य आवशे पाच सो शिष्य ते हस्तिओ सदृश जाणवा अने महाशूकर समान आचार्य जाणवा पांच सो शिष्यो भव्य छे, ज्यारे तेओनो गुरु आचार्य अभव्य छे "

गुरुमहाराजे स्वशिष्यने आ प्रमाणे जणाव्या बाद गोचरीना समये पाच सो शिष्यना परिवारयुक्त अगारमर्दकाचार्य ते नगरमा आवी पहोंच्या तेनी रहेणीकरणी, क्रियाचुस्तता अने विधि-विधान नजरे देखी पेला स्वप्नवाळा शिष्यने मनमा विचार आव्यो के-आवा चारित्रधारी अने क्रियाशील गुरु अभव्य केम होइ शके ? तेणे तेमना आहार-विहार विगरे प्रत्येक क्रियानु सूक्ष्म रीते निरीक्षण करवा माड्यु छता पण तेने तेनो कोइ पण दोष या तो अतिचार मालूम पड्यो नहीं तेणे पोताना हृदयनी वात स्वगुरुने जणावी पूछ्यु के-" गुरुवर्य ! तेमनो आचार-विचार तो शुद्ध सयमाराधक साधु जेवो छे तो

तेमने अभव्य कई रीते कही शकाय ?" गुरुने पोताना शिष्यनी आ वात सांभळी, बाह्य देखाव परथी अनुमान बांधवाना तेनी उतावळ माटे मनमा कंईक हास्य आव्यु परन्तु तेने दबावी दई गुरुए तेने कह्यु के-" हे वत्स ! तारे जो खरेखर खात्री ज करवी होय तो हु कहु ते प्रमाणे कर ए प्रमाणे करवाथी तारी भ्रमणा ने शंका बधी दूर थइ जशे केटलाक कोलसा लावी तेने रात्रि समये गुप्त रीते तेना स्थंडिल-मातरु करवाना मार्गमा पाथरी दे पछी जागृत रही जे थाय तेनु बराबर निरीक्षण करजे " शिष्य गुरुना आ कथननो सारांश समजी शक्यो नहीं, कोलसा मात्रथी परीक्षा केवी रीते थशे ? ते पण समजायु नहीं, छता पण गुरुकथन पर पूर्ण विश्वास राखी तेणे ते प्रमाणे कर्यु

अल्प रात्रि व्यतीत थता अंगारमर्दकाचार्यना शिष्यो पैकी एक शिष्य लघुनीति (पेशाब) करवा उठ्यो आगळ चालता कोलसा पर पग पड्यो पडले कोलसो दबावाथी चरड एवो शब्द थयो ध्वनि थता ज ते शिष्ये विचार्यु के आ भूमि जीवव्याप्त जणाय छे आगळ चालीश तो विशेष जीवहिंसा थशे माटे जीवहिंसा करवा करतां लघुनीतिनु कष्ट सहन करवु ते ज श्रेयस्कर छे आवो विचार करी ते शिष्य पाछो वळी गयो अने लघुनीति कर्या सिवाय ज सुई गयो बाद थोडो समय पसार थता बीजो शिष्य जागृत थयो अने पूर्वना शिष्यनी माफक आगळ ज", कोलसानो ध्वनि सांभळता ज पहेला शिष्यनी माफक विचारणा करी, पाछो आवी सुई गयो आ बनावने थोडो समय पसार थयो हशे तेवामा अंगारमर्दकाचार्यने लघुनीति करवानी शंका थइ तेने ऊभा थता जोइ पहेला स्वप्नवाळा शिष्यना कर्ण विशेष सावचेत थया अने शु बने छे ते एकाग्रतापूर्वक जोवा लाग्यो अंगारमर्दकाचार्य आगळ चालता कोलसा पर पग पड्यो अने चरड-चरड एवो अवाज थवा लाग्यो पडले जे तेमना हृदयमा हतु ते वाणीद्वारा बहार आवी गयु चरड-चरड अवाज सांभळी तेओ बोल्या के-" बापडा आ जीवो तो आ प्रमाणे ज मृत्युने वश थवा लायक छे" आ वचन पेला शिष्ये सांभळ्या अंगारमर्दकाचार्य तो मातरु करी आवी निश्चिंतपणे सुई गया पेला स्वप्नवाळा शिष्यने खातरी थई के-आ आचार्य खरेखर अभव्य ज छे गुरुए कह्यु हतु ते अक्षरशः सत्य ज नीवड्यु आ आचार्य द्रव्यथी बधी क्रिया करे छे अने विधिविधान साचवे छे पण भाव थी वशु पण करता नथी तेमनु हृदय मगशेलिया पाषाण सदृश अनार्द्र ज जणाय छे आवा आत्मानो कदी उद्धार न ज थइ शके तेने पूरेपूरी साबिती थइ चूकी के आ आचार्य अभवी छे ते पोते पोताना शिष्योनो उद्धार करी शकशे नहीं पाषाणना जहाजनो नायक पोताना साथीओने तारे के डुबाडे ? आम विचारी परोपकार भावनाथी ते शिष्ये रात्रिनो सर्व वतिकर अंगारमर्दकाचार्यना शिष्य समूहने जणाव्यो शिष्योए बीजे दिवसे पण पूर्वनी पेठे परीक्षा करी, पोताना गुरुनु आवु दयाविहीन पाषाणहृदय निरखी शिष्यसमुदाय चेती गयो तरत ज

तेमनो त्याग करी ते सर्व पेला स्वप्नवाळा शिष्यना गुरुना शिष्यो थइने रह्या
आवा अगारमदकाचार्य जेवा द्रव्यलिंगी पण मिथ्यात्वी ज जाणवा तेमनी काइ पण प्रकारनी कथा अकथा ज जाणवी श्रीआवश्यकसूत्रनी चूर्णीमा पण " वामस्र दशणा खलु । " ए पदना विवरणमा जणाव्यु छे के-पासत्था पण मिथ्यादृष्टी ज जाणवा तेओ लिंगमात्र धारण करे छे परतु तेमनु हृदय वैराग्यरसथी लेपायेल होतु नथी तेना द्वारा कहेवायेल पूर्वोक्त चारे प्रकारनी-आक्षेपणी, विक्षेपणी, सवेदनी तथा निर्वेदनी-कथाओ पण अकथा ज जाणवी गृहस्थने माटे जणावता कहे छे के ब्राह्मणादि इतर जातीय गृहस्थे कहेल कथा पण अकथा जाणवी

हवे प्रतिवादी आ बाबतमा शका करता प्रश्न करे छे के-"तमे ऊपर कहेल व्यक्तिनी कथाने अकथा शा माटे कहो छो ? " शास्त्रकार तेनो जवाब आपता जणावे छे के-"विशिष्टफलाभावात्" अर्थात् कथाना विशिष्ट फळनो अभाव होवाथी कथानु फळ छे सवेग-वैराग्य जे कथा साभळवाथी वैराग्य उद्भवे, ससारनी असारता जणाय, द्रव्यादि सपत्तिनी क्षणभगुरता समजाय तो ते कथाने साची कथा कही शकाय द्रव्यलिंगी पासत्थादिकना कथनथी वैराग्य प्रगटतो नथी, कारण के जेओ पोते पत्थरना नावमा बेसीने तरवानी आकाक्षा राखे छे ते अन्यने कई रीते तारी शके ?

हवे बीजो कथा सबधी भेद दर्शावता कहे छे के-" तवसजमगुणधारी,जं चरणरया कहन्ति सब्भावम् । सव्वजगज्जीवहिय, सा उ कहा देसिया समए॥२॥" छ बाह्य अने छ आभ्यतर-ए प्रमाणे बार प्रकारना तपनु आचरण करनार, सत्तर प्रकारना सयमनु पालन करनार तेमज सयमने विषे रक्त थयो कोइ पण साधु, विश्वना समग्र प्राणिओने हितकारक-परोपकारक जे कथा कहे ते कथाने श्रुतसागर ने विषे कथा कहेली छे आ प्रमाणे कथा कहेवाथी तेमज साभळवाथी कर्मनी निर्जरा थाय छे, प्राणी सम्यग् बोध प्राप्त करे छे अने उपदेशदाता साधु पण शुद्ध आचारी होवाथी श्रोताजनने ते प्रमाणे सम्यग् अनुकरण करवानु मन थाय छे

हवे त्रीजो विकथानो भेद दर्शावता कहे छे के-" जो सजओ पमत्तो, रागद्दोसवसगो परिकहेइ । सा उ विकहा पवयणे, पन्नत्ता धीरपुरिसेहिं ॥३॥" कोई रागद्वेषयुक्त (मध्यस्थता विनाना) प्रमादी साधु जे कथा कहे तेने तीर्थंकर परमात्माओए प्रवचन विषे-सिद्धान्तने विषे विकथा ज कहेली छे आ प्रमाणे त्रणे प्रकारो समजी ते प्रमाणे आचरण करवा प्रयत्न करवो आ सबधमा विशेष पटलु जाणवु के-कथानो उपदेशक के साभळनार जो राग द्वेषथी युक्त होय तो ते कथातर बनी जाय छे पटले कथा पण विकथारूपे

बनी जाय छे अहीं प्रसंगोपात जणावल गाथाओ श्रीदशवैकालिक निर्युक्तिनी छे.

आपणे पूर्वे जोई गया छीए के आचार्य जो विकथा करे तो ते उन्मार्ग गामी कहेवाय हवे ते विकथानु स्वरूप अने प्रकारो संबंधी वर्णन करता जणावे छे के-"विकहा सत्तहा पन्नत्ता तंजहा-इत्थिकहा १ भत्तकहा २ देसकहा ३ रायकहा ४ मिउकालुणिया ५ दंसणभेइणी ६ चरित्तभेइणी ७।।" विकथा सात प्रकारनी छे—१ स्त्रीकथा, २ भोजनकथा, ३ देशकथा, ४ राज कथा, ५ मृदुकारुणिकी, ६ दर्शनभेदिनी अने ७ चारित्रभेदिनी कथा

१. स्त्रीकथा— स्त्री संबंधी कथा करवी स्त्रीनी प्रशंसा करता कहे के- अमुक जातिनी स्त्री तो अतिशय रूपवती होय छे, तेना देह कदली स्थंभ जेवो घाटीलो अने पातळो छे, शरीर पुष्प जेवु सुकोमळ छे, चंद्रना मंडळ सरखु तेनु कांतिमान मुख छे, कमळना पत्र जेवी अगर तो मृगना नेत्र जेवी तेनी आंखो छे, जेनो कटिप्रदेश सिंहनी कड जेवो पातळो छे, स्तन कळश जेवा उन्नत-ऊंचा ने पुष्ट छे,विलासी हाथीनी जेवी मदगति छे—आ प्रमाणे स्त्रीनी प्रशंसा करे तो पण ते विकथा छे प्रशंसा न करता निंदापूर्वक कहे छे के-आ स्त्रीनी गति तो ऊंट जेवी वक्र छे, कागडानी माफक वाणी कर्कश छे, गर्दभ जेवो अशुभ स्वर छ, कदरूपा स्वरूपवाळी छे, आवी अपशुकनियाळ स्त्रीनु मुख कोण जुए ? आ प्रमाणे निंदा करे तो पण ते विकथा ज छे

आ प्रमाणे स्त्रीकथा करवाथी पोताने तेमज सांभळनारने मोहनो प्रगटे, कामविकार जागृत थाय छे, मननी लागणीओ चळ-विचळ बने वळी अन्य कोई सांभळे तो तेने विचार थाय के-साधु संसारनो त्याग करी वैरागी बन्या छता स्त्रीकथा करे छ, स्त्रीनी वार्तामा आसक्ति धरावे छे माटे आ साधु कुशील जणाय छे वळी आवी कथा करवाथी विशेष समय तेमा व्यतीत थवाने कारणे स्वाध्यायनी हानि थाय, संयमनी हानि थाय अने ब्रह्मचर्यनी *नव वाडमा पण भंग पडे सांभळनारनुं पण मन विपरीत मार्गे

* जेम उद्यान अगर बगीचानु रक्षण करवा माटे कांटानी अगर तो बीजी कोई वाड करवामां आवे छे तेम शास्त्रकारोए ब्रह्मचर्यरूपी उपवनना रक्षण माटे नव प्रकारनी वाडो (गुप्ति) कही छे ते आ प्रमाणे—

१ स्त्री, पशु के नपुंसकनो निवास होय त्यां वसवाट न करवो-रहेवु नहीं
२ स्त्रीनी कथा न करवी अगर तो स्त्रीनी साथे एकांतमां वात न करवी
३ स्त्रीओना आसन पर एटले शयन, आसन, पाट-पाटला ऊपर ज्यां स्त्री बेठी होय ते स्थान पर बे घडी जेटलो समय व्यतीत थया पहेला बेसवु नहीं
४ स्त्रीओनो अंगोपांग जोवा के चिंतववा नहीं
५ भींत, पडदा के खपेडाना ओथे स्त्री-पुरुष कामक्रीडा करता होय त्यां बेसवुं नहीं
६ पूर्वे करेल कामभोगनु-काम-क्रीडानु स्मरण न करवुं
७ स्निग्ध-रसकसवाळो आहार न करवो
८ क्षुधा शांत थाय तेथी विशेष आहार करवो नहीं
९ शरीरनी विभूषा-शोभा करवी नहीं, शृंगारवडे टापटीप करवी नहीं

प्रेराय तो तेना दोषना भागीदार थवाय माटे स्त्रीकथानो सदंतर त्याग करवो

२. भोजनकथा–चार प्रकारना आहार छे अशन, पान, खादिम अने स्वादिम तेने लगता गुण अथवा अवगुण वर्णवे ते भोजनकथा, जेमके खीरमा खाड अने घी पूरता प्रमाणमा नाख्या होय तो अमृत समान स्वादिष्ट लागे छे पूरणपोळीमा अजरम तथा मसालो सारो नाख्यों होय तो तेनो स्वाद कदी भूलातो नथी वळीना लाडु, मसुर तथा मोहनथाळ विगेरेना जमणमा बे चार शाक अने जुदा जुदा रायता कर्या होय ता श्रेष्ठ भोजन गणाय छे घेबर तथा माल पुडानु भोजन उत्तम छे आ प्रमाणे विधविध पकवानाना नामनिर्देशपूर्वक प्रशंसा करे अगर तो निंदा करता कहे के-अमुक व्यक्तिना जमणवारमा काइ मजा ज नहीं, स्वाद विनानु जमण, मरचा, मीठु अने मसालो पूरता प्रमाणमा नहीं, कढीमा खटाश ज नहीं, चटणी, रायतु विगेरे कर्या ज नहीं–आ प्रमाणे निंदा करे ते पण विकथा ज छे

साधुओ जो आ प्रमाणे भोजनकथा करे तो आहारनी लालसा वधे, रसना इंद्रिय वधु सचेत थाय, छकायनी विराधनाना अनुमोदक थाय तेमज स्वाध्याय हानि व सयमहानि थाय ते वधारामा आ उपरात लोकोमा अपवाद थाय ते जुदो साभळनार लोक कहे के-'साधु थया छे पण खाना-पीवानी तृष्णा शमी नहीं स्वादिष्ट भोजन करवा माटे ज साधुनो भेख लीधो जणाय छे इत्यादि इत्यादि' स्वहित इच्छुक साधुओए आ भोजनकथानो पण परित्याग करवो

३. देशकथा–काइ पण देशनी प्रशसा अथवा अपभ्राजना न करवी मालव देश तो मनोहर छे, सारा सारा धान्य त्या निपजे छे कइय देशना लोकोनु शु वर्णन करवु ? ते लोको तो महाबुद्धिनिधान अने डाह्या छे गुर्जरदेशना लोको तो उद्भटवषधारी छे, कपटी छे, लाट देशना लोको तो पशु जेवा जड छे, काश्मीर देशना लोको बहु सुखी अने सौंदर्यशाळी होय छे, कामरु देशना लोको अत्य त रूपवाळा होय छे–आ प्रमाणे देशना गुणावगुण कहेवा नहीं

साधु जो आ प्रमाण देशकथा करे तो पोताना परिवारमा ते ते देशना साधुओ होय तेने खराब लाग, अथवा ते ते देशना लोको साभळे तो आवी वात करनार साधु ऊपर द्वेष उत्पन्न थाय, तेआनु मन तेमना ऊपरथी उतरी जाय अरस्परस कदाच देशवाळाने क्लेश थाय माटे आ विकथानो त्याग करवो

४ राजकथा–राजानी प्रशसा अथवा निंदा न करवी आ राजा तो पराक्रमी छे भीम जेवु तो तेनु बाहुबळ छे प्रजा पर युधिष्ठिरनी माफक वात्सल्य धरावनार छे शत्रु लोको तमज चोरोने दड आपवामा अतीव कुशळ छे तेनु तेज

इन्द्र जेवुं छे, राजनीतिमा विचक्षण छे अगर तो निंदा करता कहे के-आ राजा तो दुष्ट छे, परस्त्रीलंपट छे, प्रजा पासेथी कर-वेरा ले छ, तेनु मुख ता कागडा जेवु श्याम छ, शरीर कदरूपु छ शत्रुने आवतो साभळीने बिलामा भराइ जाय छे, कायर छ, काचा काननो छे, विषयासक्त छ विगेरे विगेरे

आ प्रमाणे बोलवाथी लोको जाणे के आ साधु राजाना छिद्र जोनार छ, कोई राजाना आ गुप्त चरपुरुष छे वळी राजा जाणे तो कोपायमान थाय कदाच आ प्रमाणे राजानु वृत्तात साभळीने राजसुख इच्छुक काइ पण व्यक्ति पर भवमा राजा थवानु नियाणु पण करे माची खोटी वात थवाथी कर्मबंध पण थाय माटे आ विकथाने तो सदतर देशवटा ज देवा

५. मृदुकारुणिकी कथा—मृदु-करुणा उपजावे तेनु नाम कोत्रु जेमके हे महा पुरुष ! तमो अमारो कम त्याग करी छा ? अमे तो अनाथ छीए, तमारे आश्रये आव्या छीए. तमारा सिवाय अमारा काई उद्धार नहीं करे अमे तो बळता अग्निमा पड्या छीए. हे पुत्र ! हे वत्स ! तु क्या गयो ? तु अमारी सार-सभाळ ले आ प्रमाणे करुणाजनक वचनो बोलवा ते विकथानो पाचमा प्रकार छे

आ प्रमाणे करुणाजनक कहेवाथी अन्य लोको हासी करे छ, आपणा मनमा निर्बलता घर करी जाय अने पुरुषार्थ करवानो प्रयत्न मनमा न थाय आवा नाना बच्चा तुल्य वचनो कदापि उच्चारवा नहीं

६. दर्शनभेदिनी कथा—दर्शन एटले समकित शुद्ध देव, गुरु अने धर्म ऊपर अविचल श्रद्धा तेनु नाम बोधिबीज अथवा सम्यक्त्व तेनो घात करनारी कथा ते दर्शनभेदिनी कथा काइ कुतीर्थी अगर तो मिथ्यात्वीनो चमत्कार देखी व्यामोहित थइ जवु, तेनी प्रशसा करवी, कोई अन्यमति न्यायशास्त्रनु अल्प अध्ययन करीने वाचाळतापूर्वक वात करता होय तो तेथी विस्मय पामी विचारे के-'जैनशास्त्रमा तो आवु कंइ वर्णन नथी आ तो काई महापडित जणाय छे तेना शास्त्रमा तो तत्त्वोनी सूक्ष्म सूक्ष्म हकीकतो वणथी जणाय छ जिन वचनमा शका करवी, इतर दर्शनना प्रभाव अगर तो चमत्कार निहाळी तेनो स्वीकार करवानी भावना उद्‌भववी, मिथ्यात्वीओनो ससर्ग करवा-आ बधा कारणो समकितना घात करनारा छे आ प्रमाणे वतवाथी समकितना अतिचार लाग अने छेवट अनाचार पण आवे वळी लौकिक वासनाओ वधे अने सन्मार्गथी अध पतन थाय माटे छठ्ठी विकथाथी पूरेपूरा सावचेत रहेवु

७ चारित्रभेदिनी कथा—जे कथा साभळवाथी चारित्रना परिणाम नष्ट थाय ते चारित्रभेदिनी कथा कहेवाय जेमके कोइ कहे के-'आ पाचमा आरामां ता चारित्र पाळवु घणु कठिन छे' वळी कोइ कहे के-" केवलिमणोहिचो

इस-दसनवपुव्वीहिं सपय रहिए। सुद्धमसुद्ध चरण, को जाणइ तस्स भाव वा ॥१॥" साम्प्रतकाळे केवळज्ञानी नथी, मन पर्यवज्ञानी नथी, अवधिज्ञानी पण नथी तेमज चौद पूर्वधर के दश या नव पूर्वधर महापुरुष पण नथी तो कोण जाणी शके तेम छे के साधु शुद्ध चारित्र पालन करे छे के अशुद्ध ? वळी तना अंतगत भाव केवा छे ते पण कोण जाणी शके छे ? परंपरानु चारित्र केवु हतुं अने अत्यारे केवु छे ? तेनो तफावत पण कोण समजावे ? कारण के घणा गच्छो अने अनेक मतो प्रचलित थई गया छे माटे आमा साचा या जूठानी खबर पडी शके तेम नथी वळी स्वमतव्यनी विशेष पुष्टि करता कहे के-" जह मचाओ पडियस्स, देहपीडा सुथोविया होइ। गिरिसिहराओ महती, तहणतभवो तओ भट्ठा ॥ २ ॥ काले पमायबहुले, दसणनाणेहिं वट्टए तित्थम्। वुच्छिन्न च चारित्त, तो गिहिधम्मो पर काउ ॥ ३ ॥" अर्थात् पूर्व कहेला कारणोथी शुद्ध चारित्र तो पाळवाना नथी अने छता चारित्रथी पतित थाय तो अनंता भवमा भ्रमण करवु पडे, कारण के को. एक शख्स माचा (खाटला) ऊपरथी पडी जाय तो तेने ओछु वाग-अल्प पीडा थाय, पण जो कोई पर्वतना शिखर उपरथी पडी जाय तो प्राणघातक दुःख सहन करवु पडे वळी आ पाचमा आरामा प्रमाद विशेष छे अने दर्शन ते समकित अने ज्ञान-मति अने श्रुत ए बे ज्ञानवडे प्रवर्ते छे श्रीमहावीरस्वामीवडे प्ररूपित चारित्र हमणा पाळी शकातु नथी तो तेवा चारित्र करता गृहस्थधर्म उत्तम छे, कारण के ऊपर कह्यु तेम माचा परथी पडनारने अल्प कष्ट थाय छे अने गिरिशिखर ऊपरथी पडनारने अतिशय कष्ट थाय छे तेम गृहस्थ धर्मथी जो पतित थवाय तो अल्प अतिचार लागे अने जो सर्वविरतिथी चुकाय तो अनंत भव पर्यन्त संसारसागरमां परिभ्रमण करवु पडे टूंकमा समजवानु एटलु के आ काळमा तो श्रावकना व्रत पाळवा तेज उत्तम अने श्रेष्ठ मार्ग छे तेनाथी देवलोकनी प्राप्ति थाय छे

आ प्रमाणे कहेवाथी कोई चारित्र लेवानो जिज्ञासु होय तो ते नाशी जाय, पूर्व कोइए दीक्षा लीधेल होय तो पण ते चंचळ चित्तवाळो थाय अने विचारे के-चारित्रमा दोष तो बहु लागे छे माटे ते करता तो दीक्षा छोडी देवी सारी आ प्रमाणे उंचे चढवाना प्रयत्न करतो प्राणी पण अधःपतन पामे आवो विचार अज्ञानीने आवे जो ज्ञानी होय तो ते विकथा करनारनी जाळमा न सपडाय ते तो श्रीभगवतीसूत्रना पाठनो विचार करे श्रीभगवतीसूत्रमां कह्यु छे के बहुसनियट्ठो-त दाखीलो ज होय अर्थात् जे दोषने आलोचे, पापनी गर्हा करे ते साधु चारित्रपात्र ज गणाय परन्तु जे अज्ञानी, अस्थिर मनवाळो अने दुःखगर्भित वैराग्यवाळो होय ते आ चारित्रभेदनी कथाथी विपरीत मार्गे वळी जाय माटे तेवी कथा कदापि पण न करवी

हे गौतम ! आ भात प्रकारनी शिक्षा करतो प्राणी घणा कर्मबंध करे छे राग-द्वेषथी जकडाय छे, अनेक प्रकारनी वातो करतां पोताना मंतव्यनी पुष्टि करवा माटे सदा तत्पर रहे छे अने पोतानुं कर्त्तव्य भूली जाय छे आवा लक्षणवाळाने तारे उन्मार्गगामी जाणवो गुणयुक्त आचार्य पण परनी साक्षीए पोताना अतिचारादिक दोषोनी आलोयणा लेवी, पोताना पाप प्रकाशी शुद्ध थवुं ते नीचेनी गाथाथी स्पष्ट थशे

छत्तीसगुणसमण्णा-गएण तेणवि अवस्स कायव्वा ।
परसक्खिया विसोही, सुट्ठुवि ववहारकुसलेण ॥ १२ ॥

[षट्त्रिंशद्‌गुणसमन्वागतेन तेनापि अवश्य कर्त्तव्या ।
परसाक्षिका विशोधिः, सुष्ठ्वपि व्यवहारकुशलेन ॥ १२ ॥]

गाथार्थ-छत्रीश गुण युक्त तेमज अतिशय व्यवहारकुशळ आचार्य महाराजे पण अन्य आचार्योनो साक्षीए स्वदोषनी निःशल्यपणे आलोचनारूप विशुद्धि करवी-प्रायश्चित्त ग्रहण करवुं १२

विवेचन-आचार्यना छत्रीश गुण कहेला छे तेवा गुणयुक्त अने पांच प्रकारना व्यवहारमां विचक्षण आचार्य पण बीजा आचार्य अथवा गीतार्थ प्रमुख पासे पोताना पापनुं प्रकाशन करी आलोयणा ग्रहण करवी आवा गुण युक्त आचार्यने पण प्रायश्चित्त ग्रहण करवानुं विधान छे-शास्त्राज्ञा छे तो सामान्य साधुनी तो वात ज शी करवी ? आचार्यना छत्रीश गुण वर्णवतां कहे छे के-

"देस १ कुले २ जाति ३ रूवी ४, सघयणी ५ धिइजुओ ६ अणाससी ७ ।
अविकत्थणो ८ अमाई ९, थिरपरिवाडी १० गहिअवक्को ११ ॥ १ ॥
जिअपरिसो १२ जिअनिद्दो १३, मज्झत्थो १४ देस १५ काल १६ भावन्नू १७ ।
आसन्नलद्धपइभो १८, नाणाविहदेसभासन्नू १९ ॥ २ ॥
पचविहे आयारे २०-२४ जुत्तो, सुत्तत्थतदुभयविहिन्नू २५ ।
आहरण २६ हेउ २७ उवणय २८-नयनिउणो २९ गाहणाकुसलो ३० ॥ ३ ॥
ससमयपरसमयविऊ ३१, गंभीरो ३२ दित्तिम ३३ सिवो ३४ सोमो ३५ ।
गुणसयकलिओ ३६ जुग्गो, पवयणसार परिकहेउ ॥ ४ ॥

१ देश-साडापचवीश जे आर्य क्षेत्र कहेवाय छे तेमां जन्मेलो होय-आर्य देशमां जन्म्यो होय तो ते आचार्य लोकोने प्रतिबोध थाय एवुं वर्णन करी शके आर्य देशनी भाषा जाणे अने तेथी रम्य वाग्धाराथी जनसमूहने रीझवी वैराग्यवासित

थमायी शके. २. कुल—श्रेष्ठ कुळवाळो होय पितानो जे वंश ते कुल कहेवाय उत्तम कुळमां उत्पन्न थयेल प्राणी पोताने शिरे जे बोजो आवे तेने सरलताथी ने सहन शीलताथी वहन करे तेम आचार्य जो उत्तम कुळमां जन्मेल होय तो आचार्य पणामां गच्छनी सारसंभाळरूपी जे भार तेने सम्यक् प्रकारे वहन करे ३ जाति—उत्तम जातिवाळो होय मातानु गोत्र ते जाति कहेवाय उत्तम जातिनी मातानी कुक्षीमां जन्म धारण करवाथी-जातिवंत होवाथी विनय विवेक, सरलता आदि गुणो स्वाभाविक ज प्राप्त थाय अने शासननु रुडी रीते पालन करे ४ रूपी—रूपवंत होय पांचे इन्द्रियो सम्पूर्ण अने देखावडी होय हाथ, पग अने उदरादिक अवयवो वाळिदाळा तथा घाटीला होय रूपवंत व्यक्तिमां आदेय वचनपणुं होय छे जेथी लोको तेनु कथन शीघ्र स्वीकारे छे रूपवंतमां तेम लिङ्ग रीते ज गुणसमूह होय छे ५. संघयणी—दृढ संघयणवाळो होय शरीरनो बांधो जो मजबूत होय तो व्याख्यानादि देवामां, उग्र विहार करवामां तेमज धार्मिक महोत्सवोमां ग्लानि न अनुभवे, प्रमादने परवश न पडे अने उत्तम प्रकारे शास्त्राध्ययन करी सारी वाचना आपी शके. ६ धृतिवंत—चित्तनी स्थिरतावाळा होय शास्त्रना गहन तत्वो अथवा अर्थो न समजाय तो पण तेमां भ्रांति न लावे, तथा पोतानी अप्रवृद्धिने कारणभूत माने ७ अनाशंसी—कोई पण प्रकारनी कोई पण पासेथी वांछा न राखे जेम अन्य मतावलम्बीओ-ब्रिजो विगेरे पोताना भक्तजन या तो यजमान पासेथी सुंदर भोजन अने वस्त्रादिनी अपेक्षा राखे छे तेम आचार्यमहाराज कशी पण तृष्णा न ज राखे ८ अविकत्थणो—बहु न बोले वाचाळता न दाखवे पारकी वातो विशेष न करे आ प्रमाणे वर्तवाथी लोको पर तेमनी प्रमाणिकपणानी सुंदर छाप पडे ९ अमायी—कपट न राखे माया-प्रपंचने दूर करे कांना कावत्रामां-मायाजालमां या तो षड्यन्त्रमां-राजखटपटी दमामां सामेल न थाय आ प्रमाणे वर्तवाथी लोकोनो सविशेष विश्वास थाय अने तेने कारणे शासनोद्योतना अनेक कार्यो निर्विघ्ने परिपूर्ण थाय १०. स्थिरपरिपाटी—जेटलु जेटलु पोते शास्त्रावगाहन कर्यु होय तेटलुं तेटलु उपस्थित-स्थिर होय कोई पण व्यक्ति सूत्रार्थनो गम तेवो प्रश्न करे तो शीघ्र जवाब आपी तेना मननुं समाधान करे ११. गृहीतवाक्य—तेमनी आज्ञा सहु माने, तेनो पडेलो बोल सहु झीले तेवा समर्थ होय-प्रतिभाशाळी होय १२ जितपर्षदा—पर्षदा-सभाने जीतनार होय राजा प्रमुखनी सभामां जवानो प्रसंग प्राप्त थाय तो मनमां क्षोभ न पामे ' हुं शुं कहीश ? ' तेवो विचार न लावता धर्मचर्चा करी राजाने प्रतिबोधवाने समर्थ होय अगर तो व्याख्यानादि करवामां पण कुशळ होय के समग्र सभा

रंजित थाय अने आचार्यना गुणानुवाद करे वादविवाद करवानो प्रसंग प्राप्त थाय तो पण क्षोभ न पामे अने शास्त्रवचन व युक्ति-प्रयुक्तिओथी सत्य धर्मनुं स्थापन करी प्रतिवादीने परास्त करे १३. जितनिद्रा-अल्पनिद्रावाळा होय आपणामा ध्याननिद्रा वखणाय छे. ध्यानने अल्प ज निद्रा होय छे लेशमात्र अवाज थाय के तरत ज ध्यान शीघ्र जाग्रत बनी जाय एवी रीते आचार्यनी निद्रा पण अल्प ज होय सूत्रादिकना अर्थगवेषणामां चित्त राखे, तेनु वारंवार परिशीलन कर्या करे एटले पण अल्प निद्रा होय १४. मध्यस्थ-तटस्थ वृत्ति धारण करवावाळा होय सर्व शिष्यो परत्य समभाव राखी सर्वेनी सारसंभाळ सरखा रीते ज राखे १५ देशज्ञाता-मरुधर, मेवाड अने गुर्जरादि राष्ट्रो संबंधी संपूर्ण ज्ञान धरावनार होय ते ते देशने अनुलक्षीने साधुओने विचरवानी आज्ञा आप १६. कालज्ञ-समयने जाणनार होय आ वर्षमा चोमासामा शु थशे ते शास्त्रज्ञानथी जाणे अने तेने अनुसरीने स्वपरिवारने विचरवानी अनुमति आपे १७. भावज्ञ-सामा माणसना अभिप्रायने जाणनार होय, अथवा क्षयोपशमादि भावना पण जाणनार होय आ गुणने आधारे सुखपूर्वक देश-विदेशमा विहार करी शक १८. हाजरजवाबी-कोई अन्यतीर्थी परीक्षार्थे प्रश्न करे तो तेने हृदयस्पर्शी सचोट जवाब आपे तेवा बुद्धिमान होय १९ अनेक देशभाषाओने जाणनार-जुदा जुदा देशानी भाषा जाणे मारवाडी, गुजराती हिंदी इत्यादिक भाषा जाणनार होय विहार दरमियान अनेक भव्यप्राणीआने दीक्षा आपी होय एटले त ते देशोना शिष्योने सरलताथी शास्त्राध्ययन करावी शके तेमज ते ते देशामा विचरवाना प्रसगे ते ते लोकानी भाषामा उपदेश आप वाथी अनेकगुणा लाभ थाय २०-२४ पंचाचारयुक्त-पाच प्रकारना आचार युक्त होय ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार अने वीर्याचार ए पाच आचार छ ज्ञानाचार एटले ज्ञाननु सम्यग् प्रकारे आराधन करे, दर्शनाचार एटले शुद्ध रीते समकित पाळे चारित्राचार एटले पाच समिति अने त्रण गुप्ति ए अष्टप्रवचनमाताnु रुडी रीते पालन करे-अतिचार न लगाडे, तपाचार एटले छ अभ्यतर अने छ बाह्य ए बार प्रकारना तपनु सारी रीते आराधन करे अने वीर्याचार एटले यथायोग्य धर्मक्रियामा पोताना पुरुषार्थ दाखवे, प्रमाद न सेवे, आवश्यक क्रिया उमगपूर्वक करे आ प्रमाणे पचाचार युक्त आचार्यनु वचन ग्रहणीय बने छे २५. सूत्रार्थतदुभयज्ञाता-सूत्रना, अर्थनो अने तदुभय एटले सूत्रार्थ बनेनो ज्ञाता होय सूत्रनो उच्चार तथा परपरा मुजब अर्थ-ए सर्व हकीकतना ज्ञाता होय आ उपरात उत्सर्ग अने अपवाद

ए बन्ने मार्गना प्ररूपक होय २६. आहरणक–दृष्टांत आपवामां विचक्षण-कुशळ होय. केवळ तत्त्वनी वातथी लोकोने गळे बोध उतरी शकतो नथी, व्याख्यान निरस जणाय छे परंतु तेनी साथोसाथ कथा-वृत्तांत कहेवामां आवे तो लोकोने मनरंजन थवा साथे ज्ञान पण थाय छे. सरस प्रतिपादक शैली साथे कथा-निरूपण थाय तो लोकोने व्याख्यान के उपदेश श्रवणनो उत्साह वधे छे. दृष्टान्तपूर्वक समजाववाथी अल्प प्रयासे लोकोना हृदयमां सुंदर असर उपजावी शकाय छे २७. हेतु–हेतुपूर्वक समजावे-उपदेश आपे. हेतु बे प्रकारना छे—(१) कारकहेतु अने (२) ज्ञापकहेतु. घडानो बनावनार कुंभार छे, एटले जे घडा घडे ते कुंभार अथवा प्रजापति कहेवाय, एम कारण दर्शावी समजावे ते कारकहेतु कहेवाय. अंधकारमां रहेल घटादिकने जणावनार दीपक छे, दीपक तेने प्रगट करे छे तेवी रीते हेतुओने समजावे ते ज्ञापकहेतु कहेवाय २८. उपनयज्ञ–कोइ पण प्रकारनी कथा-वार्ता कहीने तेना उपनय घटाव-सर खामणी करी बताबी साराश-रहस्य समजावे २९. नयनिपुण–नैगमादि सात नयोना ज्ञाता-जाणकार होय तो एकांत वात न करे, अनेकांत-स्याद्वादनुं स्वरूप यथार्थ समजावी शके अने नयना भेदोने आश्रयीने व्याख्या करवाथी तेमनो कोइ पण प्रकारनो दोष न काढी शके. छव्वीशमा गुणथी मांडीने आ ओगणत्रीशमा गुण सुधी जे गुणो दर्शाव्या तेनाथी श्रोताजनने जेम ज्ञान थाय तेवी रीते वर्णवे. प्रथम दृष्टांत कहे, पछी तेना हेतु समजावे, पछी तेनो उपसंहार करे एटले संक्षेपमां साराश समजावे अने कथामां प्रसंग आवे त्यारे नयनुं सुंदर स्वरूप समजावी तेने कथाना प्रवाहमां घटावे ३०. स्थापनाकुशळ–जे वात करे तेनी स्थापना करवामां, तेने स्पष्ट समजाववामां अने श्रोताजनना गळे उतराववामां कुशळ होय ३१. स्वपरसमयविज्ञ–पोतानो मत जैनमत अने अन्य मतो-परतीर्थिक मतो, ए सर्व मतना जाणनार होय. पोताना सिद्धांतनुं स्वरूप सुंदर रीते वर्णवी शके तेमज चार्वाक, बौद्ध, सांख्य, मीमांसक अने वैदिक मतवादीओ पोताना मत पूछे तो पण तेना मतनुं पण स्वरूप कही शके अर्थात् षड्दर्शनना ज्ञाता होय ३२. गंभीर–गंभीर हृदयवाळा होय, तुच्छ स्वभावनो त्याग करे. कोइ पण व्यक्ति गमे तेवो प्रश्न करे, तो पण कषाय न करता, आक्रोश न करतां शांतिथी धैर्यपूर्वक जवाब आपे ३३. दीप्तिमान–अत्यंत तेजस्वी होय तेमनुं भव्य मुख जोतां ज वाद करवा आवनार अगर तो अन्य मतवादीओ क्षोभ पामी जाय. आ व्यक्तिने नहीं जीती शकाय एम मनमां निर्णय करी ले अने गुपचुप थइ अन्य वातो करवा लागे ३४. शिवकर–महामारी, भूत-प्रेत

दिकना उपद्रव, शाकिणी डाकिणीना विघ्नोना विनाश करवामा शक्तिमान होय, जनसमूहनु कल्याण करवावाळा होय ३५ सौम्य-शात दृष्टि जानार, वैरीजन प्रत्ये पण शातिथी-स्नेहथी निहाळनार तेमज आचार्यने जोता पण सामा माणसने प्रेम उत्पन्न थाय ३६. गुणशतकलित-उदार, सहनशील, शास्त्रज्ञ, कृतज्ञ, शास्त्रावगाहनरक्त इत्यादि इत्यादि सैकडा गुणोथी विभूषित होय आवा प्रकारना छत्रीश गुणोवडे युक्त आचार्य प्रवचनना सार पटले रहस्य यथार्थ कही शके आवा गुण सहित आचार्यमहाराजे पण पोताना पापनु-अतिचारनु अन्य गीतार्थ आचार्य महाराज पासे प्रकाशन करी प्रायश्चित्त ग्रहण करवु

आचार्यना छत्रीश गुण दर्शाव्या बाद तेमना बीजा विशेषण-पाच प्रकारना व्यवहारना ज्ञाता-नु स्वरूप दर्शावता कहे छे के-" आगम १ सुय २ आणा ३ धारणा ४ य जीय ५ च हाइ ववहारो। केवलिमणोहिचोद्दस-दसनवपुव्वी अ पढमत्थो ॥ १ ॥ " १ आगमव्यवहारी, २ श्रुतव्यवहारी, ३ आज्ञाव्यवहारी, ४ धारणाव्यवहारी अने ५ जीतव्यवहारी-आ पाच प्रकारना व्यवहारो होय छे केवळज्ञानी, मन पर्यवज्ञानी, चौदपूर्वी, दशपूर्वी तेमज नव पूर्वी-ए प्रथम पटले आगमव्यवहारी कहवाय छे तेओ प्रत्यक्ष ज्ञानवाळा होवाथी प्रायश्चित्त लेवा आवनार व्यक्तिने जेवा अतिचार लाग्या होय ते जाणीने जेवा घटे तेवो दड-प्रायश्चित्त आपे छे श्रुतव्यवहारी छेदग्रथोनो ज्ञाता होय अथवा वर्तमानकाळमा जेटलु श्रुत वर्ततु होय तेनो पारगामी होय तेवा आचार्यनी पासे आलोयण स्वीकारे आज्ञाव्यवहारी पटले गीतार्थ बीजा देशमा विचरता होय तो तेनी पासे साधुने मोकलीने, गुप्त रीते आलोयण मगावीने ते प्रमाणे प्रायश्चित्त ग्रहण करे धारणाव्यवहारी-पूर्वे कहेला ग्रणनो अभाव होय अने आलोचना लेवानी होय त्यारे गीतार्थ पासे रहेल, तेनी वैयावच्च करेल, अनेक शख्सोने आलोचना अपायेल होय ते साभळेल होय तेवा साधुने कहे के-मने आलोयण आपो' ते जे प्रायश्चित्त जणाव ते गीतार्थे आप्या बराबर धारीने तपश्चर्यादिक आलोचन करे ते धारणाव्यवहार अथवा तो कोइ वृद्ध साधु होय, दीर्घ चारित्र पर्यायवाळो होय अने गीतार्थ पासे रह्यो अनेक शख्सोने आलोयण आपता समये ते अवधारी लीधु होय तेवा मुनि समीप पण आलोयण लवी ते धारणाव्यवहार जीतव्यवहार-काळनो प्रभाव जाणी उग्र तपश्चर्या करवा असमर्थ एवा साधुओने मर्यादामा रहे-ते पाळी शके तेवी रीते आलोयण आपवी के जेथी तेनी साधुपणा विषेनी श्रद्धा टकी रहे काळप्रभावथी चारित्रमा दोषो तो घणा लागे अने उग्र तपश्चर्या थइ शके नहीं पटले साधु विचारे के-" हवे पत्ति तो घणु थाय छे, तप, जप थता नथी माटे हवे चारित्र पाळवु शा कामनु? आवी विचारणाथी अनाचारमा प्रवर्ते अने सर्वथा चारित्रनो त्याग करवा प्रेराय

माटे आचार्य साधुने नवळा जाणीने तेने उचित आलोचना आपवी अथवा तो श्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रमणे जीतकल्प रच्यो छे तेमा जे प्रमाणे तपश्चर्या करवानु विधान दर्शाववामा आव्यु छे तेने अनुसरवु ते पण जीतकल्पव्यवहार कहेवाय

आवी रीते ऊपर जणावल पाचे व्यवहारना ज्ञाता होय, पोते अनेक प्राणिओने प्रायश्चित्त आप्यु होय तेवा आचार्ये पण अन्य गीतार्थ पासे पोताना दोषो अतिचारो, प्रायश्चित्त ग्रहण करवु जोईए, कारण के जो कोइ वैद्यने व्याधि थयो होय ता ते अन्य वैद्य पासे औषधोपचार करावे छे अने तेम करवाथी तेनो रोग पण नाश पामे छे तेवी रीते क्षपित थयेल आचार्य अन्य वैद्य सदृश अन्य गीतार्थ पास प्रायश्चित्त ग्रहण करे त्यारे तेनु पापरूपी शल्य विनाश पामे छे अहीं ज वैद्यनु दृष्टात आप्यु तेने ज पुष्ट करवा माटे सूत्रकार महाराज जणावे छे के-

जह सुकुसलो वि विज्जो, अण्णस्स कहेइ अत्तणो वाहिं ।
विज्जुवएस सुच्चा, पच्छा सो कम्ममायरइ ॥ १३ ॥

[यथा सुकुशलोऽपि वैद्यो-ऽन्यस्य कथयति आत्मनो व्याधिम् ।
वैद्योपदेश श्रुत्वा, पश्चात् स कर्म आचरति ॥ १३ ॥]

गाथार्थ–जेवी रीते अतिशय कुशळ वैद्य पण पोतानो व्याधि बीजा वैद्यने जणावे छे अने ते अन्य वैद्ये दर्शावेल व्याधिना प्रतिकाररूप कर्मने आचरे छे तेवी रीते आलोचना ग्रहण करनार सूरि पण पोताना पापनु अन्य आचार्य महाराज पासे प्रकाशन करे अने तेमणे जणावेल तपश्चर्यादि क्रिया विधिपूर्वक अगीकार करे.

विवेचन–वैद्य विचक्षण होय, वैद्यकशास्त्रादिकमा प्रवीण होय, अनेक प्रकारना औषधो-भस्म, अवलेह, चूर्ण विगेरमा प्रवीणता धरावतो होय अनेक व्‍याधिओना व्याधिओनु निवारण कर्यु होय, अनुभवी होय, वृद्ध [illegible], चिकित्सा करवानी प्रणालिकामा पारगत होय, निदान करवामा [illegible] होय–आवो कुशळ वैद्य पण जो बीमार पडे, मादो थाय तो ते [illegible] वैद्यनी सलाह ले छे, पोताना व्याधिना सर्व व्यतिकर कहीने तेनो [illegible] पोतानी पासे विविध प्रकारना उत्तम औषधो होवा छता पण तेनी पासेथी ज औषध ले छे अने परिणामे पूर्ववत् स्वास्थ्य प्राप्त करे छे तेम ज्ञानवत, आलोयणा आपनार, शास्त्रादिकमा कुशळ एवा आचार्य पण पोताने लागला अतिचारनी आलोयणा अन्य गीतार्थ पासे ज लेवी ए ज हितकर अने आत्मकल्याणना मार्ग छे

हवे सद्गुरुनु स्वरूप दर्शावता कहे छे के–

देसं खित्त तु जाणित्ता, वत्थं पॅत्त उवस्सयं।
सगहे साहुवग्ग च, सुत्तत्थ च निहालई ॥ १४ ॥

[देशं क्षेत्र तु ज्ञात्वा, वस्त्र पात्र उपाश्रयम्।
सगृह्णीत साधुवर्गं च, सूत्रार्थ च निभालयति॥ १४ ॥]

गाथार्थ–देश, क्षेत्र, द्रव्य, काळ अने भावने जाणीने वस्त्र, पात्र अने (स्त्री, पशु के पडक–नपुसक वगरनो) उपाश्रय सग्रह तथा साधु–साध्वीना समूहनु सारी रीते सरक्षण करे तेमज सूत्रार्थनु चितवन करे तेने सारा–मोक्षमार्ग वाही आचार्य जाणवा.

विवेचन–सारा आचार्य देश, क्षेत्र, द्रव्य, काळ अने भावने सारी रीते जाणे, अने जाणीने वस्त्र, पात्र, वसति तथा साधु-साध्वीना समूहने सग्रहे-तनु परिपालन करे माळवादि देशोनु स्वरूप जाण क्षेत्र सबधी विचार करे के क्षेत्र लूखु छे ष रसाळ पटले क सव प्रकारनी वस्तुओ मळी शके तो रसाळ अने न मळे तो लूखु समजवु, अथवा तो जैनधर्म प्रत्ये श्रद्धालु छे के अश्रद्धालु ते पण जाणे विविध क्षेत्रमा बौद्ध, सारयादिक कया कया धर्मनो विशेष प्रचार छ तेनु ज्ञान धरावे ग्लानादिक साधुआने वसवा लायक छे के नहीं अगर तो ग्लानादिकने योग्य आवश्यक पदार्थो प्राप्त थइ शकशे के नहीं ते जाण वळी द्रव्य पटल आहारादि वस्तुओ मळी शकशे के नहीं तेनो विचार करनारा होय काळ सबधी विचारणा करता सुकाळ क दुष्काळनो विचार करे-जाणे भाव पटले भिन्न भिन्न क्षेत्रवासी जना उदार छ क कृपण, साधुओने जोइने रजित थाय तेवा छे क मुख मरडे तेवा छे ते सबधी ज्ञान धरावे ऊपर जणावल व्यतिकरना ज्ञाता आचार्य वस्त्र, पात्र अने उपाश्रय (साधुओने योग्य निवासस्थान) सबधी राख–तेनी व्यवस्था करी मूके कोइ क्षेत्रमा वस्त्रादिक मळे, काइ क्षत्रमा न पण मळे त्यारे तना सग्रह करी राख्या होय तो साधुओने उपयोग माटे आपी शकाय जो आ प्रमाणे व्यवस्था न करी होय तो साधु सीदाय

देशस्वरूपना ज्ञाता आचार्य शीत शरीरवाळा साधुने सौराष्ट्रादि शीतप्रधान देशोमा न मोकले मरुधरादि देशोमा मोकले वळी वायुप्रधान देहवाळाने मगाद्ध देशमा विचरवानी आज्ञा न आप कारण के ते देशमा मकाइ अने चाखानो आहार मळता होवाथी वायुप्रकृतिवाळा साधुने माफक न आवे, तेवा शरीरवाळाने मालव देशमा मोकले क्षत्र सबधी विचारणा करे क उज्जैनी नगरीमा अन्य मतनु प्राबल्य विशेष छे, माटे त्या ओछा पाडित्यवाळा शिष्यने न मोकले, कारण क तम करवाथी शासननी लघुता थाय, तेवा अल्पज्ञ शिष्योने मारवाड, गुजर,

सौराष्ट्र आदि देशोमा मोकले मूठ प्रमुख द्रव्यादिकना जाणकार होय ग्लाना दिकने आ वस्तुनी जरूर छे, आ वस्तु तेमने उपयोगी थइ पडशे तेम जाणे वळी साधु स्थूळशरीरी होय तो तेमने घृतादिक पुष्टि करनारा द्रव्यो विशेष न आपे एवी रीते द्रव्यना पण विचारक होवा जोईए अमुक देशमा सुकाळ थशे के दुष्काळ पडशे ते पण जाणनार होवा जोईए, कारण के दुष्काळवाळा देशमा विचरे तो गोचरी पण न मळे, सकटमा सपडावु पडे अने धर्मसाधन के स्वाध्यायादि न थाय एवी रीते काळने विचारीने शिष्यादिक परिवारने विचर वानी आज्ञा आपे साधु प्रत्ये लोकोना स्वभाव-श्रद्धाने जाणी ते प्रमाणे विहारनी अनुमति आपे दूरना स्थळोमा विहार थोडो कराव परन्तु गुर्जर, सौराष्ट्रादि देशोमा साधुओ प्रत्ये अत्यन्त प्रीतिभाव के बहुमानभाव होय तेवा स्थळमा साधुओने विचरवानी आज्ञा आपे आ प्रमाणे सुगुरु पाच प्रकारना यथास्थित ज्ञाता होय

वस्त्र, पात्रादिकनो सग्रह करे पण ते प्रच्छन्न-गुप्त राखे, गृहस्थने न जणावे आनु कारण दर्शावता कहे छे के-भद्रिक-भोळो गृहस्थ होय तो एम पण कदाच विचारे के-साधु पासे घणा वस्त्र-पात्रादिक होय तो तेमा दोष नहीं होय परन्तु विचक्षण गृहस्थ तो समजे के आटला बधा वस्त्र-पात्रना उपकरण राखे छे तो साधु शा माटे थया ? आटला बधा परिग्रहधारीने साचा साधु कई रीते कही शकाय ? आवी अश्रद्धा न उत्पन्न थाय माटे शास्त्र कार महाराज कहे छे के-आचार्ये आ सग्रह गुप्त राखवो आ हकीकत प्रत्ये शका दर्शावता प्रतिवादी प्रश्न करे छे क-" आचार्य आवो सग्रह गुप्त राखवो तेवो काई पण शास्त्राधार छे ? " तेनो जवाब आपता श्रीस्थानागसूत्रना सातमा स्थानकनी टीकानो उल्लेख करी जणाय छे के-" आयरियउवज्झायाण गणसि सत्तसगहठाणा प० त०—आयरियउवज्झाए गणसि आण वा धारण वा सम्म पउजित्ता भवति १, आयरियउवज्झाए गणसि अहाराइणिआए किति-कम्म वेणइअ सम्म पउजित्ता भवइ २, आयरियउवज्झाए गणसि जे सुअएज्ज-वजाए धारेति ते काले काले सम्म अणुप्पवाएत्ता भवइ ३, आयरियउवज्झाए गणसि गिलाणसेहे वेआवच्च अब्भुट्ठित्ता भवति ४, आयरियउवज्झाए गणसि आपुच्छिसचारी आविहवइ णो अणापुच्छित्तचारी ५, आयरियउवज्झाए गणसि अणुप्पन्नाइ उवगरणाइ सम्म उप्पाएत्ता भवइ ६, आयरियउवज्झाए गणसि पुव्वप्पण्णाइ उवगरणाइ सम्म सारक्खित्ता सगोवित्ता भवति ७ ॥ "

अर्थ-आचार्यउपाध्यायना गणमा-गच्छमा ज्ञानादि सग्रहना सात हेतुओ दर्शा वला छ, ते आ प्रमाणे-१—आचार्यउपाध्यायना गच्छमा रूडी रीते आज्ञा तथा धारणा करे एटले क-' हे साधु ' आ प्रमाणे तमे करजो ' एवी रीते गुरुना आदेशथी ते प्रमाणे ज करे तेम ज ' हे साधु ! आ वात न करवी '

पम आज्ञा आपे तेने धारी राखे-ते प्रमाणे ज यत २—आचार्यउपाध्यायना गच्छमा जेओ गुणमा अथवा तो दीक्षापर्यायमा ज्येष्ठ होय तेना प्रत्ये यादणा, विनयादि उचितता लाळवे पटले के तेमने विधिपूर्वक वंदन करे, वैयावच्चमा स्थिर करे ३—आचार्यउपाध्यायना गच्छमा जे साधुओ सूत्र भणवाने योग्य थया होय तेओने अवसरे सूत्र सबंधी शिक्षा आपे, अध्ययन करावे, समयने प्रमादमा व्यर्थ व्यतीत थवा न दे ४—आचार्यउपाध्यायना गच्छमा व्याधिथी पीडित ग्लान साधु होय अगर तो लघु शिष्य होय तो तेने गोचरी लावी देवी, हाथ-पग दाबवा, औषधोपचार करवो इत्यादिक प्रकारे वैयावच्च करनार होय ५—आचार्यउपाध्यायना गच्छमा शिष्यने वहार गोचरी, स्थंडिल तथा विहारार्थे जवु होय तो आज्ञा लइने गुरुनी सम्मतिपूर्वक ज जाय परन्तु पूछ्या विना एक पगलु पण भरे नहीं ६—आचार्यउपाध्यायना गच्छमा न मळे तेवा वस्त्र, पात्रादिक उपकरणोने सम्यक् प्रकारे लावे, ज्या त्याथी मेळवीने एकत्र करे अने आचार्यने सोंपे ७—आचार्यउपाध्यायना गणने विषे पूर्वे प्राप्त करेल वस्त्र, पात्रादिक उपकरणानु चोरादिकथी सारी रीते रक्षण करे अने सारी रीते गोपवे आ रेखटे जणावेल सातमा प्रकारनी गच्छाचारनी टीकामा जणायु छे के-'सारक्खित्ता'—सरक्षयितोपापेन चौरादिभ्यः', 'सगोवित्ता'—सगोपयिताऽल्पसागारिककरणेन मलिनतारक्षणेन चेति। अर्थात् चोर प्रमुख चोरी न जाय तेम उपकरणोने सारी रीते साचववा अगर तो कोइने चोरवा, तोडवा के फाडवा देवा नहीं तेमज गृहस्थ देखी न जाय तेवा प्रकारे गोपवीने राखे अने तेने जेम तेम वापरीने मलिन न करे

आ रीते श्रीस्थानागसूत्रना पाठथी साबित थयु के आचार्य गृहस्थ कोइ पण तेमज जाणी पण न शके तेवी रीते वस्त्र पात्रादिक उपकरणो गुप्त राखवा हवे वस्त्रनो प्रसंग आव्याथी वस्त्र सबधी विशेष विवेचन करु छे

वस्त्र सबधी विवरण—जे वस्त्र प्राप्त थाय ते वस्त्रना प्रथम त्रण भाग कल्पे एटले त्रण पुट बराबर करे, पछी एक-एक पुटमा त्रण त्रण भाग कल्पे एटले के एवी रीते नव विभाग थाय तेजे नव खूणा थया ते पैकी चार खूणाना चार भाग देव सबधी जाणवा, छेडाना बे भाग मनुष्यने लगता जाणवा, ऊपर नीचेना जे बे भागो असुर सबधी जाणवा अने मध्यमा जे एक भाग बाकी रह्या ते राक्षसने लगतो जाणवो तेनी स्थापना यत्र नीचे प्रमाणे जाणवी

देव	असुर	देव
मनुष्य	राक्षस	मनुष्य
देव	असुर	देव

ऊपर जणावेल हकीकतनो सबध दर्शावनारी गाथा नीचे प्रमाणे छे " चउरो दिव्विआ भागा, दुवे भागा य माणुसा । आसुरा य दुवे भागा, मज्झे वत्थस्स रक्खसो ॥ १ ॥ "एटले के-देवोना चार, मनुष्यना बे, असुरना पण बे

अने राक्षसनो मध्यनो एक एम नव विभागो जाणवा आ नवे विभाग श्याम वर्ण, अञ्जन तथा कादवथी खरडायेल होय, ऊंदरे करडया होय, कसारीए खाधा होय, अग्निथी बळी गया होय, तूटी गया होय, धोबीवडे धोवाता छिद्र पडी गया होय, जीर्ण (जूना) थई गया होय, अथवा जाडो धागो (दोरो) आवी गयो होय तो तेना शुभ या अशुभ विविध प्रकारना फळनी प्राप्ति थाय छे तेना फल-स्वरूपनु दिग्दर्शन करावता जणावे छे के-" दिव्वेसु उत्तमो लाभो, मणुस्सेसु अ मज्झिमो । असुरेसु अ गेलन्न, मज्झे मरणमाइसे ॥ १ ॥ " अर्थ- देव संबंधी विभागमा जो वस्त्र अंजनादिवडे खरडायु होय अगर तो ऊंदर विगेरेवडे करडायु होय तो (चारित्रपालननो) श्रेष्ठ लाभ थाय, मनुष्य संबंधी विभागमां ते प्रमाणे थयुं होय मध्यम-अल्प लाभ थाय अने असुरना विभागवाळा विभागमा ते प्रमाणे थयु होय तो व्याधि उद्भवे, बीमारी आवे, अनेक प्रकारना रोगो थाय जो मध्यना राक्षसवाळो विभाग ते प्रमाणे खरडायो के करडायो होय तो ते वस्त्र पासे राखवाथी अवश्य मृत्यु ज थाय एटले साधुए नव भाग पैकी असुरना बे अने राक्षसनो एक एम त्रण भागथी दूषित वस्त्र ग्रहण न करवु कदापि कोई साधु आवु वस्त्र स्वीकारे तो तेने संपूर्ण चारमासी नु प्रायश्चित्त आवे, कारण के तेवो साधु आत्मानी विराधना करनारो तेमज श्रीजिनेश्वर भगवंतनी आज्ञानो भंग करनारो थाय छे, माटे निर्दोष, शुद्ध अने सुलक्षणवाळु वस्त्र ज ग्रहण करवु

वस्त्र संबंधी विशेष समजण आपता शास्त्रकारमहाराजा पुन जणावे छे के-आवु वस्त्र न ग्रहण करवुं कृत्स्न (आखु) वस्त्र चार प्रकारनु कहेलु छे, ते आ प्रमाणे-१ द्रव्यकृत्स्न, २ क्षेत्रकृत्स्न, ३ काळकृत्स्न अने ४ भावकृत्स्न १ द्रव्यकृत्स्न-बने बाजुना छेडा दशीयुक्त एटले संपूर्ण तेमज प्रमाणथी अधिक होय २. क्षेत्रकृत्स्न-जे क्षेत्रमा वस्त्र अति किंमती तेमज दुर्लभ होय ३ काळकृत्स्न-अमुक अमुक काळमा मागेलु वस्त्र न मळे अथवा तो दुर्लभ होय जेमके उनाळामा काषायिक-रंगेलुं वस्त्र दुर्लभ होय, शीत ऋतुमा कंबल-धाबळा दिक दुर्लभ होय तेमज वर्षाऋतुमा केशरमिश्रित-रंगित वस्त्र दुर्लभ होय ४ भावकृत्स्नना बे प्रकार छे (१) वर्ण अने (२) मूल्य वर्ण एटले पाच प्रकारना वर्णवाळु जेमके मयूरनी ग्रीवा-डोक सरीखु श्यामवर्णी पोपटनी पाख सरखु नीलवर्णी, इन्द्रगोपकनी जेवु रक्तवर्णी, सुवर्ण सरखु ते पीतवर्णी अने शंख सरखु ते श्वेतवर्णी-आ प्रमाणे जो वर्णकृत्स्न अने द्रव्यकृत्स्न वस्त्र साधु स्वीकारे तो ते साधुने उत्कृष्ट चार लघुमासी, मध्यम एक लघुमासी अने जघन्य पाच कल्याणकोनु प्रायश्चित्त आवे मूल्यकृत्स्नना पण त्रण प्रकार छे-(१) जघन्य, (२) मध्यम अने (३) उत्कृष्ट अढार रुपियानी किंमतनु होय ते जघन्य, एक लाख रुपियानी किंमतनु होय ते उत्कृष्ट अने ते बन्नेनी वचगाळानु एटले के अढार रुपिया

करतां वधारे अने लाख रुपिया करतां न्यून किंमतनु होय ते मध्यम जाणवुं हवे आ रुपियो केवा प्रकारनो जाणवो ते संबंधे जणावे छे के-द्वीप संबंधी बे रुपियानो उत्तरापथनो एक रुपियो जाणवो ए रुपियो पाटलिपुत्रनो जाणवा दक्षिणापथना बे रुपियाना कांचीपुरीनो एक रुपियो थाय अने कांचीपुरीना बे रुपियानो पाटलीपुत्रनो एक रुपियो थाय आ रुपिया आश्रयीने किंमतनो संबंध जाणवो हवे आ प्रमाणे ओछी-वधती किंमतनु वस्त्र साधु स्वीकारे तो तेने केटलो केटलो दंड आवे ते जणावता कहे छे के-अढार रुपियानी किंमतनु वस्त्र साधु स्वीकारे तो लघुमास प्रायश्चित्त आवे, वीश रुपियानु ले तो चार लघुमासी प्रायश्चित्त आवे, एक सो रुपियानु ग्रहण करे तो चार गुरुमासी दंड आवे, अढीसो रुपियानी किंमतवाळु वस्त्र ग्रहण करे तो छ लघुमास प्रायश्चित्त आवे पांचसो रुपियानी किंमतवाळु स्वीकारे तो छ गुरुमास प्रायश्चित्त आवे, हजार रुपियानी किंमतवाळु वस्त्र ले तो तेने छेद[1] आपवो दश हजार रुपियानी किंमतनु वस्त्र ग्रहण करे तो मूळ दंड करवो एटले के पुनः नवु चारित्र आपवु जो पचास हजार रुपियानी किंमतवाळुं वस्त्र ग्रहण करे तो [2]अनवस्थाप्यनो दंड करवो अने सो लाख रुपियानी किंमतनु वस्त्र ग्रहण

१ यथला अपराधनी शुद्धि करवी ते प्रायश्चित्त, अथवा विशेष प्रकार चित्तनी विशुद्धि करवी तेनु नाम प्रायश्चित्त प्रायश्चित्त दश प्रकारनां छे १ आलोचना, २ प्रतिक्रमण, ३ मिश्र, ४ विवेक, ५ कायोत्सर्ग, ६ तप, ७ छेद, ८ मूळ, ९ अनवस्थाप्य अने १० पारांचित

आलोचना एटले करेला पापनो गुरु आदि समक्ष प्रकाश करवो प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त एटले थयेल पाप पुनः नहीं करवा माटे 'मिच्छा मि दुक्कड' देवो मिश्र एटले करेल पापनो गुरु समक्ष प्रकाश करवो तेमज मिथ्या दुष्कृत पण आपवुं विवेक प्रायश्चित्त एटले अकल्पनीय अन्नपानादि विगेरेनो विधिपूर्वक त्याग करवो कायोत्सर्ग एटले कायाना सावद्य व्यापारनो परित्याग करी शुभ ध्यान करवुं तप प्रायश्चित्त एटले करेल पापना दंडरूप नीवी, आयंबिल उपवासादि तप करवो छेद एटले महाव्रतनो घात-खंडन थवाथी चारित्रपर्यायनो छेद करवो जेमके कोइ एक साधुने चारित्र ग्रहण कर्याबाद पंदर-वीस वर्षनो समय व्यतीत थइ गयो होय अने ते साधु प्रायश्चित्तनो भागी थाय तो तेना अमुक वर्षना दीक्षापर्यायनो छेद करे एटले के घटाडी नाखे तेने छेद आलोयण कहेवाय दा० त० पंदर वर्षना दीक्षापर्यायने बदले घटाडीने बार दस, आठ वर्षनो जेम आलोयण आपनारने योग्य लागे तेम, दीक्षापर्याय ओछो करे मूळ प्रायश्चित्त एटले महाअपराध थवाथी चारित्रनो संपूर्ण छेद करी पुनः नूतन चारित्र आपवु ते

२ अनवस्थाप्य-करेला अपराधनु प्रायश्चित्त ग्रहण न करे त्यां सुधी महाव्रत न उच्चरावथा आ प्रायश्चित्त उपाध्यायने ज होय उपाध्याये कोइ पण प्रकारनो महाअतिचार लगाडयो होय तो आ आलोयणा स्वीकारवी पडे एटले के उपाध्यायपदथी दूर करी, सामान्य गृहस्थ बनावी, आचार्यना मनमां आवे तेटलो समय तेवा गृहस्थवेषमां राखे अने पछी योग्य समये नूतन दीक्षा आपे ते अनवस्थाप्य प्रायश्चित्त कहेवाय

करे तो पाराचित[1] नामनुं प्रायश्चित्त आपवुं. प्रतिवादी आ प्रायश्चित्त परत्वे शंका उठावता कहे छे के-किंमती आवा वस्त्र माटे आटलो बधो दंड शा माटे ? तेनो जवाब आपता शास्त्रकार कहे छे के-जो किंमती वस्त्र देखवामा आवे तो चोरने चोरी करवानुं मन थाय, आत्मविराधना थाय, परिग्रह-ममताभाव वृद्धिगत थाय अने वीतरागनी आज्ञानुं उल्लंघन थयुं कहेवाय. आ संबंधमा एक राजानुं नीचे लखेल दृष्टान्त विशेष प्रकाश पाडे छे-

कोई एक राजाने एक आचार्यनो सुयोग थयो आचार्यना हृदयंगम उपदेशथी राजानी धर्मरुचि वधी. क्रमे क्रमे राजा सम्यक्त्वनी वाटिमा आव्यो. एकदा राजाने भावना थई के-"गच्छमा दरेक साधुओने रत्नकंबल वहोरावुं" आ प्रमाणे विचार थता ज तेणे आचार्य समीपे जई रत्नकंबल वहोराववानो पोतानो विचार जणाव्यो. आचार्ये राजाने निषेध कर्यो अने जणाव्युं के-" मूल्यवान वस्त्र-रत्न कंबल ग्रहण करवानो अमारो आचार नथी " आचार्यनुं आवुं कथन छता पण राजाए अतीव आग्रह कर्यो एटले एक रत्नकंबल राख्युं. आ प्रमाणे रत्नकंबल लईने जता एक चोरे जोयुं. ते चोरनुं मन रत्नकंबल प्रत्ये ललचायुं अने कोई पण प्रकारे ते चोरी लेवाना मनसूबा कर्या. मध्य रात्रिनो समय थयो अने सव लोको निद्रावश थई गया हता त्यारे चोर वसतिमा आव्यो अने आचार्यने कह्युं के-" रत्नकंबल आपो, नहीं तो मारी नाखीश " त्यारे आचार्ये कह्युं के-' ते रत्न कंबलना तो बे टुकडा करी नाख्या छे " चोरने आ वात पर विश्वास न आवता तेणे कह्युं के-" देखाडो " आचार्ये बे कटका देखाड्या त्यारे चोरे फरी कह्युं के-" ए बने कटका सांधीने आपो, नहीं तो तमारो शिरच्छेद करीश " मृत्युभयथी आचार्ये ते रत्नकंबलना बने टुकडा सांधी आप्या अने चोर ते लईने चालतो थयो. आ प्रमाणे बहु मूल्यवाळुं वस्त्र पासे राखवाथी मरणांत उपसर्ग उत्पन्न थवानो भय रहे छे. आ प्रमाणे अनेक घटना कारणभूत जाणीने तीर्थंकर परमात्माए अढार रुपियाथी विशेष किंमतनुं वस्त्र राखवाना साधुने माटे निषेध कर्यो छे.

आ प्रमाणेनो अधिकार श्रीसोमप्रभसूरिकृत ' यतिजीतकल्प ' नामना प्रकरण ऊपर श्रीसाधुरत्नसूरिए रचेल टीकामा जणावेल छे.

---

१ पाराचित-साध्वीना शीलनो भंग करवाथी, राजराणी साथे अनाचार सेववाथी अथवा शासनने उपघातक कार्यना दंड माटे आ प्रायश्चित्त अपाय छे. आ प्रायश्चित्त आचार्यने ज होय छे. उत्कृष्टमा उत्कृष्ट प्रायश्चित्त आ छे. आ प्रायश्चित्तमा गुप्त वेषे बार वर्ष सुधी गच्छ बहार रही, वेषनो त्याग करी कोई पण तीर्थनो उद्धार या तो समर्थ राजवीने प्रतिबोध पमाडवानुं, शासनप्रभावना करवानुं कार्य बजाववानुं होय छे. बाद पुनः दीक्षा लई गच्छमां आवे. श्री सिद्धसेनदिवाकरसूरिए आ प्रायश्चित्तना पालनरूपे उज्जैनना महाकाळ तीर्थनो उद्धार कर्यो हतो अने वीर विक्रमादित्य नृपने प्रतिबोध पमाड्या हता.

वस्त्रगवेषणा—

गच्छवासी एटले स्थविरकल्पी साधु वस्त्रनी गवेषणा कई रीते करे ? ते संबंधी विधि दर्शावता जणावे छे के-ज्यारे कोइ पण साधुने कांवली प्रमुख कोइ पण वस्त्रनी जरूरत होय त्यारे ते साधु गच्छमां रहेला प्रवर्तकने कहे के-" मारे अमुक प्रकारनुं वस्त्र जोईए छीए." आ हकीकत सांभळी प्रवर्तक आचार्यमहाराजने जणावे के-" अमुक साधुने वस्त्रनी जरूरत छे " आ प्रमाणे सांभळी आचार्य गच्छमां अभिग्रहधारी जे साधु होय तेने बोलावे अने जरूरियातनी वस्तु सूचवी ते लाववा माटे सूचन करे "जे कोइ पण साधुने वस्त्र, पात्रादिक वस्तुनी ज्यारे जरूरत होय त्यारे मारे लावी आपवी " आ प्रमाणे जे साधु अभिग्रह धारे तेने अभिग्रहधारी साधु कहेवाय कदाच गच्छने विषे तेवा अभिग्रहधारी साधु न होय तो आचार्यमहाराज बीजा साधुने कहे के-' अमुक साधु माटे अमुक वस्त्र लावी आपो ' आ अभिग्रहधारी अथवा तो अन्य साधु कई रीते वस्त्र-याचना करे ते संबंध जणावता कहे छे के-सूत्रपौरुषी अने अर्थपौरुषी करीने गोचरी माटे जाय गोचरी अर्थे जता ज वस्त्रनी गवेषणा करे गोचरीमां वस्त्र न मळे तो बीजे पहोरे अर्थपौरुषीमां लेवा जाय ते समये पण न मळे तो सूत्रपौरुषीमां पण लेवा जाय एटले के सूत्रपौरुषीनो समय थई जवा छतां ते न करे अने वस्त्र लेवा जाय आ समय पण कदाच वस्त्रादिकनी प्राप्ति न थई तो आचार्यमहाराज सर्व संघाडाने उद्देशीने कहे के-" तमे गोचरी अर्थे जाओ त्यारे वस्त्र मागीने लावजो " आ प्रमाणे अलग-अलग संघाडाओए याचना करवा छतां पण वस्त्रादिकनी प्राप्ति न थाय त्यारे आचार्य सर्व साधुओने एकत्र करीने कहे के-" तमे गोचरी अर्थे जाओ त्यारे वस्त्रनी याचना करजो आ प्रमाणे एक पछी एक उपायनो आचार्यमहाराज उपयोग करे परंतु पोते याचना करवा न जाय जो जाय तो चार गुरुमासी प्रायश्चित्त आवे अने ते उपरांत श्रीवीतराग परमात्मानी आज्ञाभंग आदि अनेक दोषापत्ति आवे लोकव्यवहारमां पण आचार्यनी लघुता थाय बीजा साधुओ जो गीतार्थ होय तो सर्व वस्त्र अर्थे जाय परन्तु जो एक ज गीतार्थ होय अने बीजा साधुओ अगीतार्थ होय तो गीतार्थने अग्रेसर-मुख्य बनावीने वस्त्र लेवा जाय कदाच मांदा के एक मात्र आचार्यमहाराज सिवाय बीजा बधा साधुओ अगीतार्थ होय तो अगीतार्थने विषे पण जे लब्धिसंपन्न होय एटले वाक्चातुर्यमां कुशळ होय, सामा माणसना भाव पारखनार होय तेने आचार्यमहाराज कहे के-" हे साधु ' तमे आ प्रमाणे निपुणताथी बोलीने वस्त्रनी याचना करजो ' एवी रीते अगीतार्थने पण वस्त्र याचवानी आज्ञा आपे परन्तु आचार्यमहाराज स्वयं वस्त्रनी याचना करवा कदापि न जाय वस्त्र याचना संबंधी आ विधि विस्तृत छे परंतु ग्रंथ विस्तारना भयथी अहीं संक्षेपमां ज जणावी छे, विस्तारपूर्वक विधि निशीथचूर्णीना पांचमा उद्देशामां वर्णवेल छे त्याथी जोई लेवी

जे स्थाने चातुर्मास रह्या होय त्या चातुर्मास पूर्ण थया बाद बे मास पर्यन्त वस्त्रादिक उपकरणो मागवा नहीं कदाच त्यांथी विहार करी अन्यत्र गया होय तो पण बे मास सुधीमा याचना करवी नहीं वळी जे स्थानमा शुद्ध चारित्रपात्र क्रियाशील मुनिवरनु चातुर्मास थयु होय तेवा क्षेत्रमा तेमज पाते करेल चातुर्मासना स्थानथी पाच गाउना विस्तारमा जे क्षेत्र होय त्या पण वस्त्रपात्रादिकनी याचना करवी नहीं, कारण के अगत्यना कारण सिवाय तेवी याचना करवानो शास्त्रकारोए निषेध करेल छे आम छता पण जे स्थळे ग्रामस्थादिक चातुर्मास रह्या होय त्या उपकरणोनी याचना करवानो निषेध करमावेल नथी चातुर्मास सिवायना शेष काळमा जे स्थाने मासकल्प कर्यु होय ते स्थळ पण खास प्रयोजन सिवाय बे मास पर्यन्तना समयमा उपकरणो न ग्रहण करवा आ सबंधी विशेष वर्णन जाणवाना इच्छुक श्रीनिशीथसूत्रना चौदमा उद्देशानी चूर्णी जोवी

उत्सर्गमार्ग प्रमाणे तो वस्त्रने थीगडु न देवानु फरमाव्यु छे कारण के कह्यु छ क-"जे भिक्खू वत्थस्स एगं पडिआणिअं देइ देन्तं वा साइज्जइ।" अर्थात् जे साधु वस्त्रने एक थीगडु आप अगर ता अन्य मुनि थीगडु देतो होय तेनी अनुमोदना करे ता तेने दोषापत्ति थाय साधुए सुतरना बे अने ऊननु एक-एम त्रण वस्त्रा राखवा वर्षाऋतुमा ऊननु वस्त्र वापरवु परन्तु वर्षाऋतु सिवायना शेष समयमा फक्त एकलु ऊनन वस्त्र न वापरवु अदर एक सुतरनु वस्त्र पण साथे राखवु अने तेनी ऊपर ऊननु वस्त्र ओढवु आ प्रमाण जा साधु न वर्ते ता अविधिना दोष आव, कारण के फक्त एकला ऊनना वस्त्रना परिधानथी शरीर ऊपर थता प्रस्वेदथी अगर ता शरीरना सलग्नपणाथी जू विगरे जीवोनी उत्पत्ति थाय अने परिणामे दोषोत्पत्ति संभव

साधुन वस्त्र जो फाटी जाय तो कारणप्रसग त्रण थीगडा देवाय परन्तु जो ते उपरान्त चोथु थीगडु आपे तो प्रायश्चित्त आव श्रीनिशीथसूत्रमा कह्यु पण छ क-" जे भिक्खू वत्थस्स परं तिण्हं पडिआणिआणं देइ देन्तं वा साइज्जइ।" अथात् जे भिक्षु-साधु वस्त्रने त्रण थीगडा उपरात चोथु थीगडु आपे अगर ता देनारनी अनुमोदना करे-प्रोत्साहन आपे तो प्रायश्चित्त आव आ सबधमा विशेष हकीकत जणावता कहे छे क-आवी ज रीते वस्त्रने रगे तेमज धोवे तो पण आलोयण आवे कारणवशात् रगवानु अगर धोवानु बने तो त्रण खोबा जेटला जळना उपयोग करवो, परन्तु तेथी विशेष जळ वापरे तो प्रायश्चित्त आवे

" जे भिक्खू अविहीए वत्थं सिव्वइ, सिव्वंतं वा साइज्जइ, जे भिक्खू वत्थस्स एगं फालिअं गठिअं करेइ, करेंतं वा साइज्जइ, जे भिक्खू वत्थस्स पर

तिण्ह फालिअगठियाण करेइ, करेंतं वा साइज्जइ, जे भिक्खू वत्थ अविहीए गठेइ, गठेंत वा साइज्जइ, जे भिक्खू वत्थ अतज्जाएण गठेइ, जे भिक्खू अइरेग वत्थ गवेसइ गवेसंत वा साइज्जइ, जे भिक्खू अइरेगगहिअं वत्थ परेण दिवड्ढाओ मासाओ धरेइ, धरेंतं वा साइज्जइ।" [निशीथसूत्रप्रथमोद्देशके]— अर्थात् जे साधु अविधिपूर्वक वस्त्र सीवे अगर तो सीवनारने सारो जाणे तो तेने आलोयण आवे जेवी रीत गृहस्थो वस्त्रना बन्ने पडखाने मेळवीने सीवे छे तेवी रीत सीवे तो अविधिपूर्वक सीव्युं कहेवाय तेवी रीत न सीववु जे साधु वस्त्र फाटया पछी तेने विशेष फाटतु अटकाववा माटे फाटेला छेडानी गांठ वाळे अगर तो गांठ वाळनारनी अनुमोदना करे तो पण प्रायश्चित्त ग्रहण करवु पडे आम छतां पण अपवाद मार्गे जणाववामां आव्यो छे के—कारणवशात् बीजु वस्त्र उपलब्ध न थाय तो निरुपाये त्रण गांठ वाळी शकाय, परन्तु ते उपरांत वाळवाथी गांठ वाळीने राखे तो दोष लागे वळी जे साधु अविधिए वस्त्रनी गांठ वाळे अने गांठ वाळनारनी अनुमोदना करे तो तेने अतिचार लागे जे साधु श्वेत वस्त्रनी साथे रक्तवर्णु वस्त्र सीवे अगर तो नवी-नवी जातना-वस्त्रोनी साथे सीवे तो पण दंड लागे जे साधु पोतानी जरूरीयात करतां वधारे वस्त्र याचे अगर तो याचनारनी प्रशंसा करे तो पण तेने दोष लागे कदाच कोई साधुए विशेष वस्त्र ग्रहण कर्यां होय-राख्यां होय तो तेणे ते वस्त्रो पोतानी पासे दोढ मास करतां विशेष समय न राखवा राखे अगर तो राखनारने सारो कहे तो आज्ञाभंगनो दोष लागे उपर जणावेल आज्ञाना अमल न करतां भंग करे तो पंचमासनो गुरुदंड आवे आ वस्त्र संबंधी विशेष हकीकत श्रीनिशीथसूत्रना प्रथम उद्देशामां जणावेल छे

पात्रविवरण—

जो साधु एक रुपियाथी ते त्रण रुपियानी किंमतनु पात्र ग्रहण करे तो 'लघुमास' नु प्रायश्चित्त आवे अने चार रुपियानी किंमतथी प्रारंभी अढार रुपियानी किंमत सुधीनु स्वीकारे तो 'गुरुमास'नी आलोयणा आवे आ उपरांतनी किंमतनु पात्र ग्रहण करे तो जेम जेम विशेष किंमत तेम तेम दंड-प्रायश्चित्त पण विशेष विशेष समजी लेवु पात्राना प्रकारो वर्णवतां कहे छे के—

"तुंबयदारुअमट्टिअ-पाय उक्कोसमज्झिमजहन्न। उप्परिवाडी गहणे, चाउम्मासा भवे लहुगा॥ १॥" अर्थात् पात्रो त्रण प्रकारना छे-(१) तुंबक-तांबाना,(२) दारुक-काष्ठना (लाकडाना) अने (३) मृत्तिक-माटीना आ त्रण प्रकारना पण त्रण त्रण भेदो छे-(१) उत्कृष्ट, (२) मध्यम अने (३) जघन्य आ पात्रोने विपरीत रीते ग्रहण करवाथी चार लघुमासी प्रायश्चित्त आवे काष्ठनु उत्कृष्ट पात्र नंदिपात्र,मध्यम मात्रक अने जघन्य टोप्परक जाणवुं माटीनु उत्कृष्ट पात्र गोळो, मध्यम पात्र

घडो अने जघन्य पात्र कुलडु (कुडुं) जाणवुं आ प्रमाणे तेना नव भेदो थया आ प्रत्येकना पण त्रण त्रण भेदो छे (१) यथाकृत,(२) अल्पपरिकर्म अने (३) बहु परिकम (१) यथाकृत-जेनु मुख पूर्वे करेल होय तेने लेपादि करीने कृत्रिमरूपे मळे तथा पडिमाथी निवृत्त थयेल कोई पण श्रावक अथवा तो निहवे करेल होय अने ते आपे ते यथाकृत कहेवाय (२) जे पात्रनु मुख अर्धांगुल प्रमाण छेदवु पडे ते अल्पपरिकर्मित कहेवाय अने (३) जेनु मुख अर्धांगुलथी विशेष छेदवु पडे तेने बहुपरिकर्मित कहेवाय आवा प्रकारना जे पात्रो छे तेने विपरीत प्रकारे ग्रहण करे तो चार लघुमासीनुं प्रायश्चित्त आवे उपलक्षणथी लघुमास तथा पाच अहोरात्रिनुं प्रायश्चित्त पण जाणवु

पात्र कई रीते ग्रहण करवु ?

यथाकृत पात्र ग्रहण करवाने माटे जाय त्यारे तेनी गवेषणा निमित्ते त्रण वार परिभ्रमण करवु जोईए आवु फरमान छता तेम न वर्तता अल्प परिकर्मित उत्कृष्ट पात्र ग्रहण करे तो चउमासी लघुदड आवे, अगर जो बहुपरिकर्मित पात्र प्रथमथी ज स्वीकारी ले तो पण चउमासी लघुदड आवे यथाकृत पात्रने माटे त्रण वार पर्यटन करवा छता पण उपलब्ध न थाय तो अल्पपरिकर्मित पात्रनी गवेषणा करे अने ते समये प्रथम ज बहुपरिकर्मित पात्र मळी जाय अने ते ग्रहण करी ले तो पण चउमासी लघुदड आवे आवी ज रीते मध्यम पात्रना सबधमा जाणवु परन्तु दड परत्वे चार मासी लघुदडने बदले त्रण लघु मास दड जाणवो आवी ज रीते जघन्य पात्र परत्वे पण जाणवु परन्तु दड पाच अहोरात्रिनो जाणवो

पात्र सबधी आटलु विवरण जणाव्या पछी कहे छे के-जे प्रकारनु पात्र लेवा नीकळ्या होय अने तेने बदले बीजा पात्रनु ग्रहण करे तो पण नीचे जणाव्या मुजब प्रायश्चित्त आवे उत्कृष्ट पात्रनी गवेषणा अर्थे नीकळ्या बाद तेना सबधी गवेषणा कर्या विना ज मध्यम पात्र ग्रहण करे तो एकमासी दड अने जघन्य ग्रहण करे तो पाच अहोरात्रिनो दड आवे, मध्यम पात्र लेवा नीकळ्या बाद त्रण वखत गवेषणा कर्या विना ज उत्कृष्ट पात्र ग्रहण करे तो चार लघुमासी अने जघन्य पात्र ग्रहण करे तो पाच अहोरात्रिनो दड आवे जघन्य पात्र लेवा नीकळ्या बाद गवेषणा कर्या विना ज उत्कृष्ट पात्रनो स्वीकार करे तो चार लघुमास दड आवे अने जो मध्यम पात्र स्वीकारे तो एक मासी प्रायश्चित्त लागे आ सबधे विशेष अधिकार श्रीयतिजीतकल्प प्रकरणनी टीकामा दर्शावेल छे

उत्सर्गमार्गने अग श्रीनिशीथसूत्र आ सबधे विशेष शु जणावे छे ते पण सक्षेपमा तपासी लइए "जे भिक्खू पायस्स एग तुडिअ तड्डेइ, तड्डेंत वा साइज्जइ। जे भिक्खू पायस्स पर तिण्ह तुडिआण तड्डेइ, तड्डेंत वा साइज्जइ।"

जे साधु पात्राने एक थीगडो आपे अगर तो आपनारने सारो कहे तेने आज्ञा भगनो दोष लागे जे मुनि पात्राने त्रण उपरात थीगडो आपे अगर तो आपनारनी अनुमोदना करे तेने पण प्रायश्चित्त आवे उत्सर्गमार्गथी पात्राने एक पण थीगडी लगाडवानो अधिकार नथी परन्तु अपवादमार्गथी कारणवशात् त्रण थीगडी लगाडवानु फरमान छे, परन्तु ते उपरात चोथी थीगडी लगाडी शकातो नथी जो लगाडे तो आलोयण आवे आ आज्ञाभगना दोषमांथी बचवा माटे शास्त्रकार महाराज फरमावे छे के-परिकर्मित पात्र ग्रहण ज न करवा, दोष बीजा प्रकारना ग्रहण करवा कारण के तेने रगवा पडता नथी तेमज थीगडो पण देवानी जरूरियात पडती नथी छता पण यथाकृत पात्रना अभावमा परिकर्मित पात्र ग्रहण करवा पडे तो ज ग्रहण करवा अने अपवादरूपे त्रण वार थीगडी लगाडवी अने लेप करवो ते उपरातने माटे निषेध सम जवो आहारादि ग्रहण करती वखते पात्र पातरु होय अने भागी पडवानो भय रहेतो होय तो बीजानु पात्र मागीने ते समये चलाववु परन्तु तेनु पात्र पुनः पाछु आपी देवु जे पात्रमा थोडो आहार समाय ते लघु पात्र समजवु कदाच कोइ देशमा चालतु तथा कामनु पात्र मळतु होय परन्तु त्या जवानो मार्ग विषम-भयावह होय तो पोताना भागेल पात्रने थीगडी दइने राखवु

हवे थीगडी देवानो अधिकार जणावता कहे छे के-" जे भिक्खू पायं अविहीए बधइ बधेंत वा साइज्जइ, जे भिक्खू एगेण बधेण बधइ, बधेंत वा साइजइ, जे भिक्खू पाय पर तिण्ह बधाण बधइ, बधेंत वा साइज्जइ।"
परन्तु के जे साधु पात्राने अविधिए बाधे अगर तो बाधनारने सारो जाणे तेने दोष लागे जे साधु एक बध(थीगडी)थी बाधे अगर तो बाधनारने अनुमोदे तेने आलोयण आवे जे साधु पात्राने त्रण करता वधारे थीगडी लगावे अगर तो लगाडनारनी अनुमोदना करे तो तेने दोष लागे स्वस्तिकबध अने स्तनबध ए अविधि छे, ज्यारे मुद्रिका तथा नौ(जहाज)बध ए विधिपूर्वकनो बध छे बध न करवो पडे एवु पात्र ग्रहण करवु, अने ते न मळे तो एक थीगडी लगाववी पडे तेवु पात्र स्वीकारवु तेवु पात्र पण न मळे तो बे अगर त्रण बध बाधवा पडे तेवु ग्रहण करवु परन्तु तेथी वधारे बध बाधे तो आज्ञाभगनो दोष लागे अने प्रायश्चित्त स्वीकारवु जोइए आ सबधमा अपवाद मार्गनु सूचन करता कहे छे के-" जे भिक्खू अइरेगबधण पाय दिवड्ढाओ मासाओ परेण धरइ, धरेंत वा साइज्जइ।" अर्थात् कारणवशात् त्रण बध उपरातनु पात्र राखवु पडतु होय तो तेने दोढ मासथी (४५ दिवसथी) विशेष समय राखवु नहीं जो राखे तो अन्य उपकरणोनो नाश थाय, स्वाना दिकनी विराधना थाय,शरीरने पीडा उपजे अने भिक्षा-गोचरी न मळे,वळी चारित्र विराधना थाय अने मरणात उपसर्ग पण आवी पडवानो भय रहे माटे समचोरस

अगर तो गोळ पात्र ग्रहण करवुं, जे भूमि पर रही शके वळी आ वस्त्र तथा पात्र साधुए केटला केटला राखवा अने केटला मोटा राखवा ते संबंधी विशेष वर्णन श्रीनिशीथसूत्रनी चूर्णीना सोळमा उद्देशामां, बृहत्कल्पना त्रीजा उद्देशानी टीकामां तथा ओघनिर्युक्तिमां जणावेल छे, माटे विशेष जाणवाना जिज्ञासुए त्यांथी जोइ लेवु

वसति संबंधी विवरण--

ज्यारे मुनि समुदाय विशेष होय अने वसति (उपाश्रय) साकडी होय त्यारे एक, बे अगर तो त्रण वसति पडिलेहवी चातुर्मासमां पण त्रण वसति पडिलेहवी हवे केवी वसति शोधवी अगर तो पसंद करवी ते संबंधे जणावता कहे छे के-" मूलुत्तरगुणसुद्धं, थीपसुपंडगविवज्जिय वसहिं । सेवेज्ज सव्वकाल, विवज्जए हुंति दोसाओ ॥ १ ॥" मूळ अने उत्तरगुणथी शुद्ध, स्त्री, तिर्यंच अने नपुंसकथी रहित होय एवी वसतिमां ज हमेशने माटे निवास करवो, तेनाथी विपरीत-मूळ अने उत्तरगुणथी रहित अने स्त्री, तिर्यंच तथा नपुंसकवाळी वसतिमां जो रहे तो दोषोत्पन्न थाय आवी दोषवाळी वसतिमां साधुए रहेवु नहीं मूळ गुणवडे अशुद्ध सात प्रकारनी वसति वर्णवता कहे छे क-" पिट्ठीवंसो १ दो धारणीउ २-३, चत्तारि मूलवेलीओ ४-७ । मूलगुणे हुववेया, एसा उ अहागडा वसही ॥२॥ " १ पृष्टिवंश-मध्यवलक एटले आडवलो (तारी), २-३ धारणी-उडीचेली (वळीओ) एटले आडवलने धारण करनारी, ४-७ मूळवेली घरने चारे बाजु रगाडे छे ते थल अर्थात् थंभ आ प्रमाणे सात प्रकारनी वसतो साधुने माटे करे-चणावे तो ते आधाकर्मी वसति जाणवी •साधुए आवी वसतिनो त्याग करवो उत्तरगुण वसति बे प्रकारनी छे-१ मूलोत्तरगुणवसति अने २ उत्तरोत्तरगुणवसति मूलोत्तरगुणवसतिना सात प्रकार छे " वंसग १ कडणु २ कंपण ३, छायण ४ लेवण ५ दुवार ६ भूमी य ७ । परिकम्मविप्पमुक्का, एसा मूलुत्तरगुणेसु ॥ ३ ॥" १ वंसक-वास (दाडा), २ कटक-घरने चारे तरफ कतान लगाडीने करातो भींत, ३ कंपण-वांसनी उपर बाधवानी कांबीओ, ४ छायण-कांबीनी ऊपर छाया माटे तृण अगर तो नळुनु आच्छादन करे ते, ५ लेपण-छाण, गारो विगेरेवडे करेल लींपण, ६ दुवारक-घरना बारणा मोटा करे अगर तो बीजा करे बारणु मोटुं होय तो नानु करे, नानु होय तो मोटु करे अथवा तो एक बारणाना बे बारणा करे ७ भूमिकर्म-भूमिकर्म करे एटले घरनी जमीन उंची-नीची होय तो सरखी करे, खाडा पड्या होय तो पूरे, टेकरा जेवु होय तो खोदी नाखीने सरखु करे-

आ प्रमाणे साधुने निमित्ते करे-बणावे तो तेवी वसति साधुने कल्पे नहीं आ प्रमाणे ऊपर जणावेल पृष्टिवश विगेरे सात अने वशक विगेरे सात-ए प्रमाणे चौद दोषवर्जित वसति साधुए शोधवी-पसद करवी हवे उत्तरोत्तरगुणवसतिना उपघातो जणावे छे के—"दूमियधूनियवासिय-उज्जोवियवलिकडा अवत्ता य। सित्ता सम्मट्ठावि य, विसोहिकोडीगया वसही ॥४॥" १ दूमिय—खडी प्रमुखथी भींत विगेरेने धाळ करावे, घठारी मठारी शोभायमान करे, २ धूनिय—धूपित एटले वसतिने धूपद्वारा सुवासित करे, दुर्गंधमय वसति जाणी धूप, अगरादि उखेवीने सुवासित करवी ३. वासित-पुष्प प्रमुख पथरावीने-छीछावीने दुर्गंधी दूर करवी, ४. उज्जोविय—वसतिमा अधकार जाणी प्रकाश करवा माटे दीपक विगेरे स्थापन करे अगर तो प्रकाश माटे नवा जालिया करावे, ५ बलिकडा—प्रथम वसति भोगवनारने भातनो बलि अर्पण करे अने पछी वसतिमा वास करे, ६ अव्यक्त छाण, माटी, जळ अगर तो गाराबडे आगणाने लिंपे अगर तो पवन आवतो होय तेने अटकाववा माटे सचित्त वस्तुओ बाधे ७ सित्ता—धूळ न उडे ते माटे पाणीनो छटकाव करावे, ८ सम्मट्ठा—कचरो कादीने साफ करी होय—सम्मार्जित थयेल होय अगर तो जाळा थयेल होय ते साधु निमित्ते साफ करायेल होय-आ आठ प्रकारो साधुने निमित्ते जे वसतिमा कर्या होय ते वसतिमा साधुए निवास न करवो आ प्रमाणे पउशालादिक वसतिने विषे पण मूलोत्तर गुणनो विचार जाणवो

वसतिने अंगे ऊपर जणाव्या ते दूषणो उपरात श्रीआचारागसूत्रने विषे कालातिक्रात विगेरे दोषो दर्शाव्या छे जेनु सक्षिप्त स्वरूप नीचे प्रमाणे छे—"कालाइक्कत १ उव-ट्ठाण २ अभिक्कत ३ अणभिकता ४ य। वज्जा ५ य महावज्जा ६, सावज्जा ७ मह ८ प्पकिरिया ९ य ॥१॥" १ कालातिकान्त-जे स्थाने चातुर्मास रह्या होय तथा बाकीना समयमा (शेष काळमा) जे वसतिमा मासकल्प कर्यो होय ते वसतिमा साधुए न रहेवु एटले के चातुर्मास करेल स्थानमा चातुर्मास उपरात एक दिवस पण न रहेवु, जो रहे तो कालातिक्रान्त वसतिना भोगवनार बने अने दड-प्रायश्चित्त आवे आवी ज रीते मासकल्प उपरान्त एक दिवस वधु रहे तो पण ते दोष लागे २ उपस्थापना-जे वसतिमा चातुर्मास करेल होय ते वसतिमा आठ मास वर्ज्या विना तेमज मासकल्प कर्यु होय ते वसतिमा बे मास पहेला आवे तो उपस्थापना दोष लागे एटले के जे स्थानमा चोमासु कर्यु होय ते स्थानमा आठ महिना व्यतीत थया पूर्वे आवे तो वास न करवो तेमज मासकल्प कर्यु होय तो बे महिनानो समय पसार थया बाद आववु आ प्रमाणे न वर्ते तो उपस्थापना दोष लागे अने आलोयण आवे

कोइ कोइ आचार्य एम कहे छे के-जे वसतिमा चातुर्मास करेल होय ते स्थान मा बे चातुर्मास जेटलो बीजो समय व्यतीत थइ जया बाद रहेवु ते प्रमाणे न वर्ते तो पण उपस्थापन दोष लागे ३ अभिक्रांत-जेटली वसतिनु बीजाए सेवन करेल होय ते अभिक्रांत वसति कहेवाय, तेवी दोषव्याप्त वसतिमा साधु रहे तो ते अभिक्रांत दोषनो भागी थाय ४ अनभिक्रान्त-आधाकर्मी दोष वाळी वसतिमा बीजा कोइए वास करेल होय ते ५ वर्ज्या-कोइ गृहस्थे पोता ना निमित्ते मकान बनाव्यु होय ते साधुने वसति माटे आपे अने पछी पोताना माटे नवु बनावे तो ते वसतिमा रहेनार साधुने वर्ज्या दोष लागे अगर तो कोइ गृहस्थे पोताने माटे तबू ऊभो कराव्यो होय अने ते तबू साधुने वसति माटे आप्या पछी पोताने माटे बीजो नवो तबू ऊभो करावे तो पण साधुने आ दोष लागे छे ६ महावर्ज्या-अन्यतीर्थिक, सन्यासी, बाबा, पाखंडी निमित्ते आरंभ करीने जे वसति बनावी होय तेवी वसतिमा साधु जो वास करे तो आ दोष लागे, ७ सावद्य-कोइ पण पंथ साधुने निमित्ते करेल वसतिमा रहे तो आ दोष लागे, ८ महासावद्य-सर्व साधुओने माटे करेल वसतिमा पात एकलो ज रहे तो आ दोष लागे ९ अल्पक्रिया-जे वसतिमा पूर्वे कही गयेल मूळगुण, मूळोत्तरगुण अने उत्तरोत्तरगुणना जे दोषो बताव्या ते न होय, तेमज कालातिक्रांतादि दोष रहित होय अने गृहस्थे पोताने माटे बनावी तेमा साधु निमित्ते कइ पण आरंभ-समारंभ न कर्या होय अगर तो कई पण वस्तु आघी-पाछी न करी होय, काजो पण न लीधो होय तेवी वसति अल्पक्रिया वसति जाणवी आवी वसतिमा निवास करता साधुने कोई पण प्रकारनो दोष न लागे अहीं 'अल्प' शब्द अभाववाचक छे, एटले अल्पक्रियाना अर्थ क्रियारहित अगर तो सर्व दोष रहित वसति जाणवी आ जणावेल नव प्रकारनी वसति पैकी छेल्ली नवमी 'अल्पक्रिया' वसतिनी पसंदगी करवी आ वसति मळे त्या सुधी आठ प्रकारनी वसतिनो उपयोग पण न करवो आ प्रमाणे उत्सर्गमार्ग जाणवो

हवे अपवादमार्ग दर्शावता कहे छे के-अल्पक्रिया नामनी नवमी वसति न मळे तो प्रथम कालातिक्रांत वसति ग्रहण करवी, ते प्रथम वसति पण न मळे तो बीजी उपस्थापना वसति स्वीकारवी ते बीजी न मळे तो त्रीजी, त्रीजी न मळे तो चोथी, चोथी न मळे तो पाचमी, पाचमी न मळे तो छट्ठी, छट्ठी न मळे तो सातमी अने सातमी न मळे तो आठमी वसति ग्रहण करवी, परंतु प्रमाद राखी वसतिनी गवेषणा कर्या विना रहे तो दड आवे-प्रायश्चित्त लेवु पडे जे आचार्य आवा प्रकारनी वसतिनो संग्रह करे तेने सदाचार्य जाणवा

त्यारपछीनु नवु विशेषण जणावता कहे छे-साहुवग्ग, साधुओना समुदा

आ प्रमाणे साधुने निमित्ते करे-चणावे तो तेवी वसति साधुने कल्पे नहीं आ प्रमाणे ऊपर जणावेल पृष्टिवंश विगेरे सात अने वदक विगेरे सात-ए प्रमाणे चौद दोषवर्जित वसति साधुए शोधवी-पसंद करवी हवे उत्तरोत्तरगुणवसतिना उपघातो जणावे छे के—"दूमियधूवियवासिय-उज्जोवियबलिकडा अवत्ता य। सित्ता सम्मट्ठावि य, विसोहिकोडीगया वसही ॥४॥" १ दूमिय—खडी प्रमुखथी भींत विगेरेने धोळ करावे, पठारी मठारी शोभायमान करे, २ धूविय—धूपित एटले वसतिने धूपद्वारा सुवासित करे, दुर्गंधमय वसति जाणी धूप, अगरादि उखेवीने सुवासित करवी ३. वासित-पुष्प प्रमुख पथरावीने-वीछावीने दुर्गंधी दूर करवी, ४. उज्जोविय—वसतिमा अंधकार जाणी प्रकाश करवा माटे दीपक विगेरे स्थापन करे अगर तो प्रकाश माटे नवा जाळिया करावे, ५ बलिकडा—प्रथम वसति भोगवनारने भातनो बलि अर्पण करे अने पछी वसतिमा वास करे, ६ अव्यक्त छाण, माटी, जळ अगर तो गाराबडे आंगणाने लिंपे अगर तो पवन आवतो होय तेने अटकाववा माटे सचित्त वस्तुओ बांधे ७ सित्ता—धूळ न उडे ते माटे पाणीनो छटकाव करावे, ८ सम्मट्ठा—कचरो काढीने साफ करी होय-सम्मार्जित थयेल होय अगर तो जाळा थयेल होय ते साधु निमित्ते साफ करायेल होय-आ आठ प्रकारो साधुने निमित्ते जे वसतिमा कर्या होय ते वसतिमा साधुए निवास न करवो आ प्रमाणे चउशालादिक वसतिने विषे पण मूलोत्तर गुणनो विचार जाणवो

वसतिने अंगे ऊपर जणाव्या ते दूषणो उपरांत श्रीआचारांगसूत्रने विषे कालातिक्रांत विगेरे दोषो दर्शाव्या छे, जेनुं सक्षिप्त स्वरूप नीचे प्रमाणे छे—"कालाइक्कंत १ उव-ट्ठाण २ अभिक्कंत ३ अणाभिकंता ४ य। वज्जा ५ य महावज्जा ६, सावज्जा ७ मह ८ प्पकिरिया ९ य ॥१॥" १ कालातिकान्त-जे स्थाने चातुर्मास रह्या होय तथा बाकीना समयमा (शेष काळमां) जे वसतिमा मासकल्प कर्यो होय ते वसतिमा साधुए न रहेवुं एटले के चातुर्मास करेल स्थानमा चातुर्मास उपरांत एक दिवस पण न रहेवुं, जो रहे तो कालातिक्रांत वसतिना भोगवनार बने अने दंड-प्रायश्चित्त आवे आवी ज रीते मासकल्प उपरांत एक दिवस वधु रहे तो पण ते दोष लागे २ उपस्थापना-जे वसतिमा चातुर्मास करेल होय ते वसतिमा आठ मास वज्र्या विना तेमज मासकल्प कर्युं होय ते वसतिमा बे मास पहेला आवे तो उपस्थापना दोष लागे एटले के जे स्थानमा चोमासु कर्युं होय ते स्थानमा आठ महिना व्यतीत थया पूर्वे आवे तो वास न करवो तेमज मासकल्प कर्युं होय तो बे महिनानो समय पसार थया बाद आववुं आ प्रमाणे न वर्ते तो उपस्थापना दोष लागे अने आलोयण आवे

विवेचन—सारा आचार्यना लक्षणो जाणवा तेम भ्रष्टाचारीना पण जाणवा उचित छे, कारण के तो ज कनक अने पीतळ वच्चे रहेला तफावत समजाय बाह्य देखाव परथी कोई पण प्रकारनु साधु अनुमान न थई शके, तेने माटे तो तमनी रहेणीकरणी अने अनुष्ठानोनी बारीक तपास करवी जोईए आवा मोक्षमार्गना भंजक आचार्यना पाशमा पडनार व्यक्तिना आत्मानो उद्धार थई शकतो नथी, कारण के लोढानो गोळो गळे बाधी तरवानी आशा राखीए ते क्याथी पार पडे ? लोढाना गोळो पोते डूबे छे अने पोताना आश्रयभूतने पण डुबाडे छे दु शील आचार्य शिष्यादिनो सग्रह न करे, तेनु सरक्षण न करे, आगममा दर्शाव्या प्रमाणे आहार-पाणीनी सारसभाळ न राखे तेमज सूत्र-सिद्धातनु अध्ययन पण न करावे अर्थ न शीखवे, साधु-साध्वीने तथा * प्रतीच्छक गणोने दीक्षा आपीने सामाचारी-पोताना गच्छनी रीतभात, आचार विचार तेमज पचागीमा दर्शावेल मार्ग, रात्रि सबधी क्रिया, दिवस सबधी क्रिया-अनुष्ठानो न शीखवे वळी बालशिष्यो-लघुशिष्याने लाड लडावे, पोताना मोहनीयकर्मना उदयथी तेना मस्तक तथा कोमळ हाथ प्रमुखने, जेम गाय पोताना वाछरडाने चाटे तेम, चुबन करे आ उपरात तेने ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप मोक्षमार्ग न दर्शावे परतु केवळ तेना प्रत्ये वात्सल्य राखे, तेने लाड लडावे, रमत करावे पण शुद्ध मार्ग न देखाडे, शास्त्र पण भणावे नहीं आवा आचार्यने शिष्यादिकनो शत्रु जाणवो कारण के साधु थया छता, ससारसागर तरवानो हेतु पार पडतो नथी तेमज भवभ्रमण वधे छे अने उभय आत्मानु अकल्याण थाय छे

अहीं कोई शका करता प्रश्न करे के-" बालादिकने दीक्षा देवानो शास्त्रमा निषेध छे अने तमे तो बालशिष्यनी वात करी ते कई रीते घटी शके ?" आ शकानु समाधान करता शास्त्रकार जणावे छे के-"शास्त्रमा बालदीक्षा देवानो निषेध कर्यो छे ते आठ वर्षथी ओछी वयनी दीक्षा माटे जाणवो परतु के छ-सात वर्षनी वयनो होय तो तने बाल जाणवो, आठ के तेथी विशेष उम्मरनो होय तो तेने बालशिष्य न जाणवो अहीं बालशिष्य एटले आठ वर्ष करता विशेष वयनो जाणवो आम छता पण शास्त्रमा अपवाद तरीके छ-सात वर्षनी वयना बाळकने पण दीक्षा देवानो अधिकार दर्शावेल छे अहीं प्रसगने लगतु विशेष वर्णन करता जणावे छे के-" बाले १ वुड्ढे २ नपुसे य ३, जड्डे ४ कीवे य ५ वाहिए ६ । तेणे ७ रायावगारी य ८, उम्मत्ते ९ य अदसणे १० ॥ १ ॥ दासे ११ दुट्ठे य १२ मूढे य १३, अणत्ते १४ जुगिए १५ इय । ओबद्धए य १६ मयए १७, सेहानिप्फेडिया १८ इय ॥ २ ॥ गुव्विणी सबालवच्छा, पव्वावेउ न कप्पए । कापव्वा दुपयसजुत्ता, एएसिं तु परूवणा ॥ ३ ॥"

* बीजा गच्छमाथी सूत्रार्थ जाणवा माटे आवेल साधु

यने संग्रहे पल्ले के आचारवंत, क्रियापात्र, संयमप्रेमी साधुओ होय तेने राखे, तेनुं रक्षण करे, तेनी गोचरी, पात्र तथा वस्त्रादिकनी सारसंभाळ राखे, औषध विगेरेनी तपास राखे परंतु जे शीलाचार होय, संयमथी पतित थयेला होय तेवा साधुने न राखे पण पोतानी प्रतिष्ठा के वाहवाहने माटे ज्यांत्यां जेवातेवा शिष्योना समुदाय वधार्या न करे

हवे सदाचार्यनु छठ्ठं विशेषण जणावता कहे छे के-सूत्रार्थनुं चिंतवन करे पल्ले के-आचारांग, सुयगडांगादि सूत्रोना अर्थ, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णी, संग्रहणी,वृत्ति तथा टिप्पनादिक जे पूर्वाचार्योए रचेला छे तेने अवधारे-जाणे-सूत्रार्थ चिंतवे अने शिष्यपरिवारने पण ते आप-समजावे, परंतु दुर्विनीत शिष्य होय तेने न भणावे-न शीखवे आवा लक्षणवाळा जे आचार्य होय ते सदाचार्य पल्ले के मोक्षमार्गग्राही जाणवा आनाथी विपरीत रीते वर्तनारा अनाचारी जाणवा तेवा भ्रष्टाचारी सूरि शिष्यना वैरी-शत्रु समान जाणवा शत्रु सदृश आचार्यना लक्षणो कया होय ते वे गाथावडे दर्शावता कहे छे के—

संगहोवग्गहं विहिणा, न करेइ अ जो गणी ।
समणं समणिं तु दिक्खित्ता, सामायारिं न गाहए ॥१५॥
बालाणं जो उ सीसाणं, जीहाए उवलिंपए ।
न सम्ममग्गं गाहेइ, सो सूरी जाण वेरिओ ॥ १६ ॥

[संग्रहोपग्रहं विधिना, न करोति च यो गणी ।
श्रमणं श्रमणीं तु दीक्षित्वा, सामाचारीं न ग्राहयेत् ॥ १५ ॥
बालानां य पुनः शिष्याणां, जिह्वया उपलिम्पेत् ।
न सम्यग्मार्गं ग्राहयति, स. सूरिर्जानीहि वैरी ॥ १६ ॥]

गाथार्थ –जे आचार्य आगमोक्त विधिपूर्वक ज्ञानादिक उपकरणो तेमज शिष्यनो तेमना संरक्षणपूर्वक संग्रह न करे, तेमने आहारपाणी प्रमुख के ज्ञान प्रमुखनी प्राप्ति थाय तेवो आश्रय न आपे, साधु–साध्वीओने दीक्षा आपी तेमने अष्ट प्रवचनमातानु पालन करवानी समजण पडे तेवी सामाचारी निःस्वार्थपणे न शीखवे, वळी बाळ-अज्ञ–अबोध शिष्यो प्रत्ये, गाय जेम वाछरडाने जीभवडे चाटे-चुंबन करे तेम मोहपूर्वक चुम्बनादिक चेष्टा करे, यथार्थ मोक्षमार्ग न बतावे-न समजावे अने कोई साधु शिखवता होय तो तेनु निवारण करे–आवा लक्षणवाळा सूरि–आचार्यने जैनशासनना शत्रु जाणवा. आवा आचार्यो मोक्ष-मार्गभंजक होय छे. १५–१६

अतिमुक्तक कुमारनी कथा–

भारतवर्षना विशाळ नगरोमां पोलासपुरनुं स्थान महत्वनु गणातु राजवी श्रीविजय अने राणी श्रीमती पोतानी प्रजाने स्वसंतान सदृश गणीने तेनु सारी रीते पालन करतां वंशपरंपराथी चाल्या आवता जैन धर्मना संस्कार उभय दंपतीमां पड़ेला बधा सुदृढ हता के शासननी प्रभावना निमित्ते अवारनवार धार्मिक महोत्सवो योजाता दीन के दरिद्र नजरे पडतां के तेनु श्रवण थतां ज राजवी तेना दारिद्र्य निवारणनो मार्ग योजतो अने ए रीते समग्र प्रजा राजवी नी राज्यप्रणालिकाथी संतुष्ट रहेती पोलासपुरनी यश-पताका पण देश-देशा तरमां विजयध्वजनी माफक, राजवीना गुणगान गाती फरफरवा लागी हती

आ संस्कारसंपन्न दंपतीना जीवनमां समग्र रीते सुख होवा छतां एक मात्र खामी हती 'सोनानी थाळीमां लोढानी मेख' ए उक्तिनी माफक संसारसुख भोगवतां बहु वर्षो व्यतीत थई जवा छतां संसारसुखना फलस्वरूप संतान तेमने प्राप्त थयु न हतु कर्मना अगम ने अचळ सिद्धांतोना जाणकार तेओ तेथी न तो ग्लानि अनुभवता के चिंतामग्न रहेता ऊलटुं प्रतिदिन तेओनो धर्म-भावना ने धर्मकरणी वृद्धिगत भावने प्राप्त थती कर्मराजा केवा केवा तमासा योजे छे अने पराधीन जगज्जीवो नटनी माफक आ संसार-रंगभूमि ऊपर केवा नाच-नृत्य करे छे ते समभावपूर्वक उभय निहाळता संतसमागम अने तेमना उपदेशनु श्रवण ए पण तेमनु अहोनिश आवश्यक कर्तव्य बनी गयु हतु

छेवटे भाग्ययोगे तेमना संसारजीवननी उणप-कमी पण दूर थइ राणी श्रीमती-ए दिव्य कांतिवाळा पुत्ररत्नने जन्म आप्यो पुत्रजन्मनी वधामणीमां राजवी ए द्रव्यने जळप्रवाहनी माफक वहेतु मूक्यु राजाने पितावत् गणनारी प्रजाए पण पूर्ण उत्साहथी आ आनंद-प्रसंगमां पोतानो साथ पूर्यो राजकुमारनु नाम अतिमुक्तक राखवामां आव्यु शुक्लपक्षनी द्वितीयाना चंद्रनी माफक ते प्रतिदिन वृद्धि पामवा लाग्यो बालसुलभ कालीघेली वाणीथी अने विविध क्रीडा-कुतुहळथी ते राजकुमार सौ कोइने आनंद उपजावी पोता प्रत्ये आकर्षी लेतो

भाग्यवान आत्मानी पूर्व तैयारी ज अनेरी होय छे तेमना आचार-विचार अने वर्तन विलक्षण रीते भिन्नभिन्न नजरे पडे छे एकादो प्रसंग सांपडतां तेओ पोतानु उच्च स्वभाव चढवानु अधूरु रहेलु कार्य पुन शरू करे छे अने सर्प जेम कांचळी नो त्याग करे तेम संसारसुखभोगोनो क्षण मात्रमां त्याग करे छे दारुगोळा थी भरपूर तोपने एक मात्र चीनगारीनी ज जरूर रहे छे, चीनगारी प्राप्त थतां ज ते पोतानु कार्य शरू करी दे छे तेम पूर्वजन्मना संस्कारी आत्माओने निमित्त मळतां ज पोतानु मोक्षमार्ग प्रतिनु प्रयाण लंबावे छे बाळवय के गिरी

१ बालक, २ वृद्ध, ३ नपुंसक, ४ क्लीब ५ जड[1], ६ व्याधिग्रस्त, ७ स्तेन-चोर, ८ राजद्रोही, ९ उन्मत्त-यक्ष विगरेना दोषथी गांडा बनेल, १० अंध,[2] ११ दास, १२ दुष्ट, १३ मूढ-विवेक रहित, १४ ऋणार्त्त, १५ जुंगित[3] (हलका कुळना), १६ अवबद्ध-ऋणादिकथी परवश पडेल, १७ भृत्य अने १८ शिष्यनिष्फेटिका मातापितादिनी आज्ञा विना—आ अढार प्रकारना पुरुषोने दीक्षा न आपवी स्त्रीओमां आ अढार प्रकार उपरांत बे भेद (ओगणीश तथा वीश) विशेष जाणवा १९ गर्भवती अने २० स्तनपान करता बाळकवाळी तेमने पण दीक्षा न देवी, छतां कारणवशात् दीक्षा देवी ज पडे तो अपवाद तथा उत्सर्गमार्गनो विचार करवो

१ बालक—छ सात वर्षनो होय ते बालक कहेवाय आवा लघुबालने दीक्षा आपे तो जिनशासननी हीलना थाय, संयमविराधना थाय, स्वाध्यायनी हानि थाय तेमज आत्मघातो पण बने बाल्यस्वभावसुलभ चपळ चित्तना कारण विशेष हलन-चलनथी अगर तो आवा-जावाथी जीवोनी विराधना थाय, संयमनी पण विराधना थाय, लोकमां पण अपभ्राजना-निंदा थाय लोको कहे के—"आवा लघु बालकने दीक्षा आपी पण ते बालक तेमां शुं जाणे? खावा-पीवाथी आ बालक दुःखी थाय तो पण आ साधुओने दया आवती नथी आ साधुओ तो निर्दय बनीने पोताना स्वार्थने माटे शिष्योनुं जूथ वधारे छे" लोकनिंदाना भय उपरांत दीक्षित बालकना मातपिता तेनी पासे आवे त्यारे पण ते तेना पुत्रने प्रलोभन आपता नथी ? एवी शंकाथी ते लघुशिष्यनी बराबर तपास राखवी पडे, अने तेने परिणामे स्वाध्यायनी हानि थाय जो बालकना माता-पिता रोषा वेशमां आव्या होय तो दीक्षा-गुरुने हणवानो-मारवानो पण प्रयत्न करे अने तेथी आत्मविराधना पण थई जाय आ बधा दोषोनो विचार करी बालदीक्षा न आपवी ते ज उचित छे आ संबंधमां बालदीक्षाना हिमायती कोई कहेशे के—"अतिमुक्तने छ वर्षनी उमरे अने वज्रस्वामीने पण लघुवयमां ज दीक्षा केम आपी?" आनो प्रत्युत्तर ए छे के—तेमने दीक्षा आपनारा आचार्य आगमव्यवहारी तेम ज ज्ञानी हता कोई बालकने श्रेष्ठ लक्षणवंत प्राणी, तेना द्वारा शासननी प्रभावना-उद्योत थशे एम विचारी श्रेष्ठ आचार्य दीक्षा आपे तो तेमां दोष न जाणवो-ए अपवाद मार्ग छे कारण के तेवो उल्लेख पंचकल्पभाष्य तथा चूर्णिमां करेल छे कोईनी देखादेखीथी बालदीक्षा न आपवी ए उत्सर्गमार्ग छे अयमत्ता मुनि तथा श्रीवज्रस्वामीनुं संक्षिप्त वृत्तांत नीचे प्रमाणे छे—

---

१ त्रण प्रकारना जड छे भाषाजड, शरीरजड अने इंद्रियजड

२ दृष्टिविहीन अथवा तो स्त्यानर्धि निद्राना उदयवाळा पण जाणवो

३ त्रण प्रकारना जुंगित छे जातिहीन, कर्महीन अने अंगहीन चांडालादि अस्पृश्य ते जातिहीन, कसाई, माछीमार विगेरे कर्महीन अने अवयवथी हीन ते अंगहीन जाणवा.

अतिमुक्तक कुमारनी कथा–

भारतवर्षना विशाळ नगरोमां पोलासपुरनुं स्थान महत्त्वनु गणातु राजवी श्रीविजय अने राणी श्रीमती पोतानी प्रजाने स्वसंतान सदृश जाणीने तेनु सारी रीते पालन करता वंशपरंपरायी चाल्या आवता जैन धर्मना संस्कार उभय दंपतीमां एटला बधा सुदृढ हता के शासननी प्रभावना निमित्ते अवारनवार धार्मिक महोत्सवो योजाता दीन के दरिद्र नजरे पडतां के तेनु श्रवण थतां ज राजवी तेना दारिद्र्य निवारणना मार्ग योजतो आम ए रीते समग्र प्रजा राजवी नी राज्यप्रणालिकाथी संतुष्ट रहेती पोलासपुरनी यश–पताका पण देश–देशा तरमां विजयध्वजनी माफक, राजवीना गुणगान गाती फरफरवा लागी हती

आ संस्कारसंपन्न दंपतीना जीवनमां समग्र रीते सुख होवा छतां एक मात्र खामी हती 'सोनानी थाळीमा लोढानी मेख' ए उक्तिनी माफक संसारसुख भोगवतां बहु वर्षो व्यतीत थई जवा छतां संसारसुखना फळस्वरूप संतान तेमने प्राप्त थयु न हतु कर्मना अगम ने अचळ सिद्धांतोना जाणकार तेओ तेथी न तो ग्लानि अनुभवता के चिंतामग्न रहेता ऊलटुं प्रतिदिन तेओनो धर्म–भावना ने धर्मकरणी वृद्धिगत भावने प्राप्त थती कर्मराजा केवा केवा तमासा योजे छे अने पराधीन जगजीवो नटनी माफक आ संसार–रंगभूमि ऊपर केवा नाच–नृत्य करे छे ते समभावपूर्वक उभय निहाळतां सतसमागम अने तेमना उपदेशनु श्रवण ए पण तेमनु अहोनिश आवश्यक कर्तव्य बनी गयु हतु

छेवटे भाग्ययोग तेमना संसारजीवननी ऊणप–कमी पण दूर थ, राणी श्रीमती–ए दिव्य कांतिवाळा पुत्ररत्नने जन्म आप्यो पुत्रजन्मनी वधामणीमां राजवी ए द्रव्यने जळप्रवाहनी माफक वहेतु मूक्यु राजाने पितावत् गणनारी प्रजाए पण पूर्ण उत्साहथी आ आनंद–प्रसंगमां पोतानो साथ पूर्यो राजकुमारनु नाम अतिमुक्तक राखवामां आव्यु शुक्लपक्षनी द्वितीयाना चंद्रनी माफक ते प्रतिदिन वृद्धि पामवा लाग्यो बाल्सुलभ कालो घेली वाणीथी अने विविध क्रीडा–कुतुहलथी ते राजकुमार सौ कोईने आनंद उपजावी पोता प्रत्ये आकर्षी लेतो

भाग्यवान आत्मानी तुच तैयारी ज अनेरी होय छे तेमना आचार–विचार अने वर्तन विलक्षण रीत भिन्नभिन्न नजरे पडे छे कदाच प्रसंग सांपडता तेओ पोतानु उच्च प्रभाव बहावानु अपूर्व रहेतु काय पुन शरू करे छे अने सप जेम कांचळी नो त्याग करे तेम संसारसुखभोगोनो क्षण मात्रमां त्याग करे छे दारुगोळा थी भरपूर तोपने एक मात्र चीणगारीनी ज अछत रहे छे, चीणगारी प्राप्त थतां ज ते पोतानु कार्य शरू करी दे छे तेम पूर्वजन्मना संस्कारी आत्माओने निमित्त मळतां ज पोतानु मोक्षमार्ग प्रतिनु प्रयाण लबावे छे बाल्यवय के गिरी

क्षण थय छे आ वयमां बाळक दरेके दरेक पदार्थोनुं निरीक्षण करी तेमांथी शिक्षण ग्रहण करे छे, अमुक प्रकारनु तेनु वलण निश्चित थती जाय छे एटले ज लोकोक्ति छे के-" कुमळा छोडने जेम वाळीए तेम वळे "

अतिमुक्त कुमारनी वय हजु छ वर्षनी थवा आवी हती छता तेनी निपुणता, चालाकी अने वाक्चातुर्य दीर्घअनुभवी वृद्ध पुरुष जेवी हती एकदा ते पोतानी उम्मरना बाळको साथे क्रीडा करी रह्यो हतो तेवामां गणधर श्रीगौतमस्वामी मद मद पगला भरता ईर्यासमितिपूर्वक ते बाजु ज आवी रह्या होय तेम जणायु श्रीगौतमस्वामी नजीक आवता ज तेणे भावपूर्वक नमस्कार कर्यो उभयना नेत्रो मळता ज अतिमुक्तकथी सहसा बोलाई जवायु के-" हे भगवन् ! हु तमारा जेवो थइश " पूर्वभवनी तैयारी विना, कुदरतना कोई अगम्य सकेत वगर आवु कथन शु शक्य छे ? खरेखर ज्ञानीना रहस्यपूर्ण वचनो अने कर्मराजनी गहनता अज्ञ जनथी परखाती नथी बाळकनी इच्छानो जवाब आपता श्रीगौतमस्वामीए कह्यु के-" वत्स ! तारी हजु लघुवय छे चारित्र तो खाडानी धार जेवु उग्र छे चारित्रपालन एटले मीणना दातथी लोढाना चणा चाववा जेवु छे "

कुमारे प्रत्युत्तर आपतां कह्यु के-" भगवन् ! जो के हु शिशु छु छता मारो आत्मध्वनि कहे छे के-हु जरूर तमारा जेवो थईश आप मारे त्या गोचरी अर्थे पधारो आपने अनुकूळ अन्नपान तैयार छे आपना पुनित पगलां करी मारा प्रासादने अने साथोसाथ मारा हृदयरूपी आवासने पवित्र बनावो " अतिमुक्तकना आग्रहथी श्रीगौतमस्वामी तेनी साथे गया अने उचित आहार वहोरी पाछा पधार्या

श्रीगौतमस्वामी गणधर महाराजना गमन बाद अतिमुक्तकना हृदयमा मथन शरू थयु विचारधारा वेगपूर्वक शरू थई गई एक ज मात्र लक्ष्यबिन्दु तेमनी नजर सामे तरवरवा लाग्यु-हु गौतमस्वामी जेवो कई रीते बनु ? श्रेष्ठ पक्तिना विचारो करवामा कई मुश्केली नथी, हवाई तरगो तो मन कल्प्या ज करे छे परन्तु तेनो अमल करवामा ज मानवनी महत्ता छे श्रीगौतमस्वामी जेवा बनवानो विचार करवामा कई मुश्केली नहोती परन्तु चारित्र स्वीकारी शुद्ध रीते तेनु पालन करी, साधुजीवनना परीषहो सहन करी तेमना जेवा थवु ए कई नानीसूनी वात नहोती परतु मक्कम मन शु नथी साधी शकतु ? मनना आवेग ने आवेगमा अतिमुक्तक ऊभो थयो अने शीघ्र गतिए श्रीगौतमस्वामीनी पाछळ गयो तेमने पोतानो चारित्र स्वीकारनी मनोभावना जणावी श्री गौतमस्वामी तेने प्रभु श्रीमहावीर समीप लई गया प्रभुए मात-पितानी सम्मति लई आववा कह्यु अतिमुक्तके मातपिता पासे आवी सब हकीकत जणावी पोतानी मागणी मूकी के-" मने परमात्मा श्रीमहावीर देव पासे प्रव्रज्या अपावो "

मात-पिताने मन अतिमुक्तकनी मागणी धरतीकपना ओवना जेवी हती विद्युतपात क्षणमात्रमां बाळीने भस्म करी मूके तेम राजकुमारना आ विचारथी राजदंपतीनो आशा-महेल भागीने भूक्को थ, जतो हतो एकना एक लाडकवाया पुत्र पर तेमणे केटलाय मनोरथ-महेल चण्या हता, ज्यारे पुत्रनी दिशा तो अनोखी ज मालुम पडी संस्कारसंपन्न राजवीने आनाकानी करवानु कई कारण नहोतु, ऊलटु पुत्रना आसन्नसिद्धित्व अने पूर्वसंस्कारित्व माटे मान उपज्य, हृदय प्रसन्नता अनुभववा लाग्यु छता पुत्रनो मयम-रग पतगना रग जेवो क्षणजीवी छे के मजीठना रग जेवो दृढ छ ते तपासवा माटे तेमणे कह्यु के-

"वहाला पुत्र ! आ तु शु बोले छे ? अधपुरुषनी लाकडी समान अने निराधारना आधार तुल्य तुं अमारी लाडकोडमा उछरेलो एकनो एक ज पुत्र छे तु तो अमारी आखनी कीकी कीकी नष्ट थई जता जेम आख निरुपयोगी थई जाय छे तेम तारा विना अमने पण आ राज्यवैभव नकामा थई पडशे अमारी वृद्धावस्थामा पण तारी सिवाय अमारी सारसभाळ कोण लेशे ? आ विशाळ राज्य अमे कोने सुप्रत करशु ? दीक्षाग्रहणनो समय अमारो छे के तारो ? तेनो तो जरा विचार कर अमारा केश श्वेत थया छे अने तु तो विकास पामता कुसुम सरखो छे माटे उतावळ न कर आ राजवैभव भोगवीने पछी तारु मनोवाछित साधजे"

" वहाला जनक तथा जननी ! विशिष्ट ज्ञान वगर केम जाणी शकाय के तमे वृद्ध छो अने हु बाळक छु ? शु यमराज केशनु श्वेतपण निरखी आमत्रण मोकले छे ? चक्षु साम आपणे जोई रह्या छीए के पग जेना शक्तिहीन थ, गया छे, नेत्र जेना वही रह्या छे अने गात्र जेना गळी जवा लाग्या छे एवा वृद्धने पडतो मूकी, जेने ससारने निहाळ्या पूरा पाच चोमासा पण नथी थया, अरे ! जेना केशनी काळाश पण मनोहरताने धारण करवा लागी होय छे अने जे हजु दुनिया कई चिडियानु नाम छे ए जाणतो पण नथी एवा अभकने शु यमराज नथी उपाडी लेतो ? माटे ज नाना-मोटाना के वयना विचार नकामा छे

वळी पूज्य पिताश्री ! विचारो के कोण पुत्र छे ने कोण माता के पिता छे ? ससारभ्रमणमा आ जीवने एवा केटलाय सबधो थई गया तेनी कइ नोंध छे ? आ जे माता छे ते भूतकाळमा पिता, भ्राता के पुत्रना सबधथी वेढली व यार जोडाइ चूकेल छे यमराजनी जाळमा सबधनी सरखाई शोधी पण जडे तेम नथी वीतरागना वचन मुजब सव आतमा पथिक तुल्य छे ए सिवाय न तो माता के न तो पिता, नथी तो प्रिया के नथी तो सतान, अने तेवी ज रीते तो भा, के न तो बहेन शरण आपनार थई शके छे ज्या पोते ज पराधीन छे त्या बीजाने शरणभूत थाय पण केवा प्रकारे ? रक आत्मा कोटि द्रव्यनु दान क्याथी करी शकवानो ? शरण तो ते महात्मानु लेवु घटे के जेणे त्रण लोकमा परम ऐश्वर्यता साधी छे एवी ऐश्वर्यतानी साधना अर्थे छे शिरछत्र !

हु आपनी अनुज्ञा चाहु छु आपना हार्दिक आशीर्वाद वगर मारु इच्छित कार्य सधाय तेम नथी, तेथी आप उभय राजीखुशीथी मने रजा आपो तमे सारी रीते समजो छो के आप वडिलोनी अनुज्ञा विना भगवत इन्द्रभूति मारो स्वीकार करे तेम नथी वळी विनयप्रधान जैनधर्ममां मारा जेवानुं स्वच्छंदी वर्तन तल मात्र चाली शके तेम पण नथी एम करवु ते मारो पुत्र तरीकेनो धर्म पण नथी, माटे आप अंतरना उमळकाथी हर्षपूर्वक मने अनुज्ञा आपो "

मातापिता पण अरिहंतदेवना उपासक हता संसारनी परिस्थितिने समजनारा हता तेथी तेओए महोत्सवपूर्वक पुत्रने श्रीमहावीरस्वामीने हस्ते प्रव्रज्या अपावी कुमार पण गुरुश्रीनु बहुमान करवापूर्वक शास्त्रना अध्ययनमां तेम ज क्रियाकलापमां तद्रूप थयो अंतरना उल्लासथी साधुधर्मनुं पालन करवा लाग्यो वयमां बाळ छतां ज्ञानथी अबाळ (पंडित) थयो स्खलना वगर चारित्रधर्मने दिवसानुदिवस विशुद्धिने धारण करी गुरु साथे विहरवा लाग्यो आम छतां बाळस्वभावसुलभ केटलीक स्खलनाओ-त्रुटीओ थई जती

एकदा प्रातःकाळमां क्षुधातुर थवाथी कोई श्रेष्ठीना घरमां अतिमुक्तक मुनि गोचरी लेवा गया ज्यां 'धर्मलाभ' शब्दनो उच्चार करी ऊभा त्यां शेठनी पुत्रवधूए हास्य करतां प्रश्न कर्यो के-" हे क्षुल्लक मुनिवर ! आटली जल्दी उतावळ केम करी ?" तेनी आवी अपूर्व ने मार्मिक वाणी सांभळी चमत्कार पामेला कुमारे जवाब आप्यो के-' यज्जानामि तन्न जानामि ' शेठनी पुत्रवधूने आ वाक्यनु रहस्य न समजायुं एटले तेणे पुन प्रश्न कर्यो-' आपे शुं कह्यु ? मने बराबर समजावो " " भगिनी ! तमारा प्रश्ननो आशय ता ए हतो के ' मने आटली नानी वयमां दीक्षा लेवानी उतावळ केम थई आवी ? ' में जणाव्यु के 'यज्जानामि' एटले मृत्यु गमे ते समये जरूर आववानु छे ए वात हु जाणु छु परन्तु 'तन्न जानामि' फक्त ए नथी जाणतो के एकदम ज के ए कई अवस्थामां आवशे ? बाळवयमां पण प्राप्त आवशे के वृद्धावस्थाने ज पसंद करशे ? अने ज्यां आ स्थिति होय त्यां पछी उतावळनो प्रश्न ज क्यां ? मारी पासे एवुं कोई विशिष्ट ज्ञान नथी के जेथी मृत्युना आगमननी चोक्कस तिथि वार अवधारी शकाय तेथी उतावळ कहेवाय पण केम ? '

शेठनी पुत्रवधू बाळसाधुना आ रहस्यपूर्ण वचनो श्रवण करी सम्यक्त्व मूळ बार प्रकारना व्रतयुक्त श्रावकधर्म ग्रहण करीने शुद्ध अन्नपानादिकथी मुनिश्रीने प्रतिलाभ्या

एकदा वर्षाऋतुमां धरती पर चोतरफ जळ पथराई रह्यु छे, विजळीओना चमकार ने वादळाना गर्जारव पछी मुशळधार वरसाद वरसी रह्यो छे जाणे

सृष्टिसुंदरी इवभर्यु स्नान करी रही होय तेवु चित्र नजर सन्मुख खडु थाय छे जनता पोताना आवासमाथी वर्षावाळनु आ हृदयगम दृश्य निहाळी रही छे पौषधशाळाना मकानमाथी बाळसाधु अतिमुक्तनी दृष्टि पण आ तरफ स्वाभाविक रीते खेंचाय छे घडीभर स्वाध्याय बाजु पर मूकी उपाश्रयमाथी नीचे उतरे छे अने पाणीना वहेता जता प्रवाह पर नजर मडाय छे वरसाद अटकता जाण कारागृहना बधनमाथी छूटेला होय एम नानी वयना केटला य बाळको घरमाथी बहार आवी, पाणीना नाना नाना खाबोचीयामा कागळनी होडीओ बनावी सागरमा वहाण हकार्या तुल्य आनद माणी रह्या छे आ दृश्य जोता ज अतिमुक्त मुनिवर पण बाळपणनी ऊर्मि जागृत थनता ज समान वयना शिशुओना साथे शरत करी काचलीनी होडी तराववामा लीन बने छे पोते कइ कक्षामा वर्ते छे, पोते नवदीक्षित त्यागी साधु छे ए वात तद्दन स्मृति बहार जाय छे आ समये ज्ञानी सिवाय कोण जाणी शके तेम छे के जळमा काचलीनु नाव तरावनार आ बाळसाधु अल्प काळ पछी ससारसागर मा आत्म-नाव तरावी आत्मसिद्धि प्राप्त करनार छे ' अज्ञानी जनता तो उघाडी आख जाइ रही छे के-मुनिपणाने न छाजे, एवा दूषण लागे तेवु अतिमुक्तनु वर्तन छे

उपाश्रयनी बारीयथी जोइ रहेला श्रीगौतमस्वामीनी दृष्टि अकस्मात् आ लघु शिष्य पर पडी तरत ज तेओश्री त्या जइ पहोंच्या गुरुश्रीने जोता ज अतिमुक्त शरमाया उभय प्रभु श्रीमहावीरदेव समीपे गया

ज्या प्रवेश करी ईर्यापथिकी पडिक्कमवा लाग्या त्या अतिमुक्त साधुए '**दगमट्टी दगमट्टी**' ए पदना अर्थमा पुष्कळ विचारणा करी पोते साधु जीवनना सुप्रोन अभराई ऊपर चडाव्या, नाव तराववामा हमणा ज पाणी तथा माटीना जीवोने जे किलामणा पहोंचाडी छे ए आखु य दृश्य चक्षु साम खडु करी पछी साचा मनथी क्षमापना आरभी खरु ज कह्यु छे के–'**मन एव मनुष्याणा, कारण बधमोक्षयो**' ।' कर्मबध के मुक्तिनु कारण मनुष्य मात्रने पोतानु एक मन ज छे

'दगमट्टी 'नी विचारणामा ने विचारणामा ज अतिमुक्तक मुनि लयलीन थनी गया विचारधारा एवी एकाग्र बनी गई के पोतानी आसपास शु चाली रह्यु छे तेनु पण तेमने भान न रह्यु पश्चात्तापनो पावक विशेष प्रदीप्त थयो अने ए पावकनी ज्वाळामा कर्मसमूह दग्ध थवा लाग्यो छेवट क्षपकश्रेणीनु अवलबन ग्रहण करी, सकल कर्मना क्षय करी अल्पकाळमा केवळज्ञान प्राप्त कर्यु समीपस्थ देवाए तेमनो केवळज्ञान महोत्सव कर्यो जे तीव्र कर्मो कोटि जन्म सुधीना तीव्र तपथी बाळी शकाता नथी ते अर्धी क्षणमा आत्मभावनारूपी तीव्र तपथी ने समताने अवलबन लइ बाळी शकाय छे

बाद अतिमुक्तक केवळीए पृथ्वीतळ पर विहार कर्यो, घणा भव्य जीवोने उपदेशवारिथी सिंचित करी, अधोगतिमा पडता अटकावी तेओनो उद्धार कर्यो आवी रीते विचरता विचरता, जुदा जुदा गाम-नगरोमा फरता फरता सूर्यपुर समीप आवी ते नगरना बहारना उद्यानमा समवसर्या जितशत्रु राजा श्रेष्ठ जन समूहयुक्त आवी, प्रदक्षिणा दइ, वदन करी, धर्मश्रवण करवा बेठो मुनिना मुखद्वारा उपदेशधारा वहेवा लागी–"ज्या लगी आ देह स्वस्थ छे अने वृद्धावस्था आवी नथी तेमज इद्रियो शिथिल थइ नथी ने आयुष्यनो अत आव्यो नथी त्या सुधीमा आत्मकल्याण अर्थे हे भव्यो ! जरूर यत्न करो आग लाग्या पछी कूवो खोदवो जेम मूर्खतानु कारण छे तेम आ स्थिति पलटाया पछी-बाजी हाथमाथी गया पछी–उद्यम शु कामनो ? जेने तमो पोताना मानो छो ते तमारा रहेवाना नथी लक्ष्मी चचळ छे, क्षणभगुर छे, आयुषनो भरोसो नथी, देह व्याधिग्रस्त क्यारे बनशे ते जाणी शकाय नहीं, पुत्र पत्नी आदि परिवार पण स्वार्थपरायण छे आवा असार ससारमाथी साररूप सयमनु ज ग्रहण करवु ते सर्व श्रेष्ठ छे"

प्रतिष्ठासपन्न अने अतिशयवताने वरेला अतिमुक्त केवळीनी देशना फळवती बने पमा शु आश्चर्य ? कएला य भव्यात्माओए साधुधर्मनो स्वीकार कर्यो राजाओए बार व्रतयुक्त श्रावकधर्मनो स्वीकार कर्यो आत्मकल्याणनी आवी केटली य परपरा प्रवर्तावी अंते अतिमुक्तकुमारे मुक्तिपुरीमा पगलां कर्या

श्रीअतकृतदशाग सूत्रना छठ्ठा वर्गमा पमलो १५ मो अधिकार छे तेमा अतकृतकेवळी थइने मोक्षे गयानु कहेलु छे तत्त्व केवळीगम्य बाल्यवयमा भाग वता दीक्षा स्वीकारी, इरियावही पडिक्कमता ज जेमणे केवळज्ञान प्राप्त कर्यु ते महात्मा अतिमुक्तकुमारने अनेकश वदन हो'।

श्रीवज्रस्वामीनु वृत्तांत–

सुप्रसिद्ध मालव देशमा तुंबवन नामनुं नगर हतु ते नगरने विषे धन नामनो व्यवहारविचक्षण अने श्रद्धालु श्रावक वसतो हतो तेने धनगिरि नामनो सद्गुणी पुत्र हतो सत्समागमने कारणे धनगिरिनु मन प्रथमथी ज वैराग्य प्रति ढळेलु हतुं परन्तु युवावस्थाना आंगणामा प्रवेश करता ज पिताना आग्रहथी सुनदा नामनी सुशील सुकन्या साथे पाणिग्रहण कर्यु सुनदाना भाइ आर्य समिते ससारनी विलक्षणता निहाळी सयम स्वीकार्युं हतु

"कार्येषु मत्री करणेषु दासी"नी माफक वनेना ससार सुखपूर्वक चालवा लाग्यो धनगिरि साथे ससारसुख भोगवता सुनदा सगर्भा बनी तिर्यग्जृंभक देवना (जे देव अष्टापद पर्वत पर श्रीगौतमस्वामीना मुखद्वारा पुंडरीक अध्ययन साभळ्यु हतु तेनो) जीव च्यवीने सुनदानी कुक्षिमा अवतर्यो उत्तम गर्भना प्रभावथी सुनदा धर्मकरणीमा अतिशय आसक्ति धरवा लागी तेने उत्तम प्रकारना दोहदो उपजवा लाग्या, जे सर्व धनगिरिए पूर्ण कर्या,

पोतानी भार्याने सगर्भा निहाळी धनगिरिनो अत्यार सुधी सुपुप्त रहेलो वैराग्यभाव जागृत थयो. एकदा प्रसंग जोइ तेण पोतानी प्रियाने कह्यु के–" हे सुलक्षणो! तारु अने तारा गर्भनु कल्याण थाओ. तारा जीवनना आधाररूप संताननी तने प्राप्ति थइ चूकी छे हु हवे मारु आ महित साधवा तारा भाई आर्यसमिते जेमनी पासे दीक्षा ग्रहण करी छ ते श्रीसिंहगिरि पासे सर्वविरति स्वीकारीश '

सुनंदाए घणा आग्रहपूर्वक आजीजी करी छता अमृतपानना इच्छावाळो धनगिरि तेणीना वचनरसमां आर्द्र न थयो पत्नीने विशेष समजावता छेवटे तेणे अनुमति आपी अने धनगिरिए चारित्र ग्रहण कर्यु

योग्य समये सुनंदाए एक सुंदर अर्भकने जन्म आप्यो पूर्वजन्मना संस्कारने योगे तेनी देह-कांति देव सरखी देदीप्यमान हती पुत्रमुखनु अवलोकन करी सुनंदा अतिशय हर्ष पामी घडीभर ते पोताना पतिनु वियोगदुःख पण भूली गइ कुलना विभूषणरूप आत्मजने निरखी कइ माताने हर्षाश्रु न आवे? पण भावीना गर्भमा शु छुपायु छे तेनी सामान्य मानवीने शु खबर पडे छे? सुनंदा पोताना संतानप्राप्तिना सुख उपर मनोरथना किल्ला चणवा मडी पडी पण तेने खबर न हती के लिखितमपि ललाटे प्रोज्झितु कः समर्थः ? अगर तो विधिरेव तानि घटयति यानि पुमान् नैव चिन्तयति ।

जन्मसमये पासे रहेली कोई एक सखीए तेने उद्देशीने कह्यु के–" वहाला तनुज! तारा पिताए जो संयम न स्वीकार्यु होत तो तारो जन्मोत्सव एक राजकुमारना जन्म जेवो उजवात " आ शब्दो कर्णपट पर अथडाता ज शिशु चमक्यु सखीए उच्चारेला शब्दो पर विशेष ऊहापोह करता तेने जातिस्मरण ज्ञान थयु पोतानो देव-भव स्मृतिपटमा आव्यो बस, बाळकनी मनोवृत्ति तरत ज बदलाई गई देव संबंधी दिव्य सुखो जेणे भोगव्या होय तेने आ संसार असार केम न जणाय ने? तेने देवसुख आकर्षण करवा लाग्यु परन्तु संयम पालन विना देवसुख क्याथी प्राप्त थाय? विचारणाने अंते तेणे चारित्र-ग्रहणनो निरधार कर्यो परन्तु जन्म धारण कर्याने मात्र गणत्रीना ज दिवसो व्यतीत थया हता आ स्थितिमा शीघ्र चारित्र-स्वीकार कई रीते थइ शके अने एक मात्र आधाररूप पोताने माता रजा पण केम आपे? आकाशपुष्पनी माफक तेनी आशा मनमा ने मनमा शमी गइ

तेणे विचार्यु के माताने कटाळो आपु तो ते नक्की मारो त्याग करशे, नहीं तो एकना एक पुत्र परत्वेनो तेना मोहभाव घटशे नहीं तेणे बालोचित रुदन शरू कर्यु रुदन सांभळी सुनंदा तेनु रंजन करवा लागी, तेने छानो

राखवा विधविध प्रयत्न करवा लागी, परंतु बाळकनुं रुदन बंध न थयुं जे जाणी जोइने रुदन करतुं होय ते क्याथी समजे ? बाळक थोडो वार शांत थतुं परंतु पाछुं तेनुं रुदन शरू थई जतुं सुनंदा आ जातना प्रतिदिनना कल्पांत थी कंटाळी गइ धीमे धीमे बाळक छ महिनानो थयो, परन्तु तेटला समय सुनंदाने तो छ वर्ष जेटलो दीर्घ थइ पड्यो

भाग्यानुयोगे श्रीसिंहगिरि पोताना धनगिरि तथा आर्यसमित प्रमुख शिष्यो साथे आ ज नगरमा आवी चड्या गोचरीसमय थता धनगिरिए गुरु-आज्ञा मागी ज्ञानातिशयथी भावी जाणी गुरुए धनगिरिने जणाव्युं के-' आजे तमोने जे गोचरी प्राप्त थाय ते लावजो सचित्त के अचित्तनो विचार न करशो " धनगिरि मुनि गोचरी माटे परिभ्रमण करतां करता सुनंदाना गृहे ज आई चड्या सुनंदा पोताना प्रतिदिन रुदन करता पुत्रथी परिताप पामी हती धन गिरिने जोता ज तेना स्वाभाविक क्रोध प्रगटी निकळ्या अने कह्युं के-' हुं तो तमारा पुत्रथी कंटाळी गइ छुं हवे तमे तेने लइ जाव अने पाळो-पोषो " आ प्रमाणे बोलीने आवेश ने आवेशमां तेणे पुत्रने वहोरावी दीधो धनगिरि तरत ज गुरु पासे आवी पहोंच्या पुत्रना वजनथी धनगिरिनो हाथ नमी जतो हतो ते जोई गुरुए कह्युं के-" आ पुत्र वज्र जेवो मजबूत ने शक्तिशाळी थशे माटे तेनुं वज्रस्वामी एवुं नाम राखो " लालनपालन माटे गुरुए तेने साध्वीओने सोंप्यो अने साध्वीओए पण शय्यातरीओ(उपाश्रय आपनार श्राविकाओ)ने सोंप्या तेओ पुत्रवत् तेनुं लालनपालन करवा लागी अने क्रमशः वज्रस्वामीनी त्रण वर्ष लगभगनी थई साध्वीओ अगियार अंगनी आवृत्ति करता तेने एकाग्र चित्तथी अवधारी लेवाथी वज्रस्वामी पण तीव्र प्रज्ञाशक्तिना प्रभावे अगियार अंगना ज्ञाता बनी गया खरेखर कह्युं छे के-' बुद्धिर्यस्य बलं तस्य । '

अमुक समय पसार थया बाद श्रीसिंहगिरि प्रमुख साधुओ पाछा ते ज नगरमां आवी चड्या पुत्र सोंपता तो सोंपाइ गयो परंतु त्यारबाद सुनंदाना पश्चात्तापनो पार न रह्यो कोई पण हिसाबे पुत्रने पाछो मेळववा तेणे महेनत करवा मांडी पण पाणी वलोववानी माफक ते सर्व वृथा थयुं छेवटे गुरु सन्मुख आवी पोतानो पुत्र पाछो माग्यो संघ पासे पण वात मूकाइ अने तेमां निष्फळ नीवडता छेवटे सुनंदाए राजदरबारमा पण फरियाद करी राजवीए योग्य तोड काढता फरमाव्युं के-" राजसभा भरवी अने तेमा पुत्रने वच्चे ऊभो राखवो जे तरफ पुत्र जाय तेनो करजो जाणवो " सुनंदाने आ पसंद पड्युं कारण के ते जाणती हती के-एवुं-आ पुत्रने मिष्ट भोजन न प्रन्य आदिना प्रलोभनथी ते पोता तरफ आकर्षी लेशे अने पोतानी धारणा पार पडशे सुनंदाए तरत ज विविध तरेहना सुंदर रमकडा अने अन्य मनगमता पदार्थो दर्शावी प्रलोभन आपवामां कशी कचाश न राखी छता वज्रस्वामीए तेनी साम

नजर मरजी पण करी नहीं गजेन्द्र पर आरोहण करनार शु गर्दभ पर बेसे? छेवटे धनगिरिए फक्त रजोहरण बताव्यु ते तरत ज तेमना तरफ दोडी गयो अने राजवीए सिंहगिरिनी तरफेणमा अभिप्राय आप्यो सुनंदाए पण छेवटे समजी लई दीक्षा लीधी धीमे धीमे वय वधवानी साथे शास्त्राभ्यास करतां, वज्रस्वामी पण व्याकरण, काव्य, सिद्धान्त अने तर्क विगेरेमा घणा ज निष्णात थया

वज्रस्वामी एकदा गोचरी लेवा जता हता त्यारे तेना एक मित्र देवे तेमनी बुद्धिनी परीक्षा करी रस्तामां देवे सूक्ष्म देडकीओ विकुर्वी पोते सार्थवाहनु रूप धारण करी पोतानी पर्णकुटीमा वहोरवा पधारवा माटे आग्रह कर्यो वज्रस्वामी इर्यासमितिपूर्वक गया अने जोयुं तो सार्थवाहना पग भूमिने स्पर्शता न हता नेत्रो पण निर्निमेष हता बुद्धिशाली वज्रस्वामीने मालूम पड्यु के-आ सार्थवाह नथी, पण कोइ देवे आ बधी जाळ रची छे तेमणे तरत ज शांत शब्दोमा कह्यु के-"महानुभाव अमने देवपिंड न कल्पे" वज्रस्वामीनु कथन साभळी देव अत्यंत विस्मित थयो अने स्वस्वरूपे प्रत्यक्ष थई श्रीवज्रस्वामीने वैक्रिय लब्धि आपी आवी ज रीते बीजे प्रसंगे घेवर संबंधी परीक्षा करता देवे प्रसन्न थइ आकाशगामिनी विद्या आपी हती

एकदा वज्रस्वामीमां रहेल अजाहेर गुरुनी नजरे चढ्यु वात एम बनी के तेओ स्थंडिलभूमि गया हता अने अन्य सर्व शिष्यो गोचरी गया हता वज्रस्वामी बधा उपकरणोने क्रमबद्ध गोठवी पोते वचमा बेठा अने समर्थ-शास्त्रवेत्ता गुरु स्वशिष्योने वाचना आपे तेम मोटे सादे अगियार अंगनी वाचना उपकरणोने उद्देशीने आपवा लाग्या गुरुमहाराज वसति नजीक आव्या तेवामा तेमणे मेघ जेवो गंभीर ध्वनि साभळ्यो साभळता ज तेमना कर्णो चमक्या छिद्रद्वारा जोता श्रीवज्रस्वामीनु उक्त आचरण निरखी अत्यंत हर्ष पाम्या बालमुनि श्रीवज्रस्वामी क्षोभ न पामे ते माटे तेमणे दीर्घ स्वरे निसीहि उच्चारी शब्द साभळता ज वज्रस्वामीए शीघ्र सर्व उपकरणो जेम हता तेम गोठवी दीधा अने बहार आवी गुरुमहाराजनी चरणरज दूर करी

वज्रस्वामीनी आवी प्रज्ञाशक्ति अने विनयशीलपणु जोई आ बालसाधुनी कोई अवज्ञा न करे तेमज तेमनी शक्तिनो अन्यने ख्याल आवे ते माटे तेमणे एक उपाय शोधी काढ्यो केटलाक शिष्योने बोलावी कह्यु के-"अमो आसपासना गामडामा विचरीए छीए अल्प समयमा पाछा आवशु, माटे तमो सर्व अत्रे रहो अने धर्मध्याननी वृद्धि करो" शिष्योए प्रश्न कर्यो के-"आपनी गेर हाजरीमा अमने वाचना कोण आपशे ?" गुरुए शांत रीते जवाब आप्यो के "श्रीवज्रस्वामी तमने वाचना आपशे" गुरु सत्य कहे छे के आपणो भ्रम छ एम विचारी तेओए पुन पूछ्युं छता गुरुए प्रथमनो मापक ज जवाब आपवाथी सर्व कोई आश्चर्यना सागरमा लीन बनी गया वज्रस्वामीनी वय वया

अने क्यां वाचना आपवा जेवु भगीरथ कार्य ? क्या दीर्घ चारित्रपर्यायवाळा साधुओ अने क्या एक बालसाधु ? आवी शंका धरावता छता गुरुए कहेल मिथ्या न होय तेवी भावनाथी तेओए ते सबधी विशेष पृच्छा न करी प्रभाते श्रीवज्रस्वामीए पवी उमदा रीते वाचना आपी के मंद बुद्धिवाळा साधु पण सहेलाईथी समजी शके श्रीवज्रस्वामी वाचना आपता त्यारे शिष्योने पयो भ्रम थई गयो के गुरुमहाराज वाचना आपवा माटे पाछा आव्या के शु ? शिष्यो श्री वज्रस्वामीनी मुक्त कठे प्रशसा करवा लाग्या अल्प समयबाद ज्यारे श्रीसिंहगिरि आव्या त्यारे तेओए कह्यु के-" हवेथी हमेशा श्रीवज्रस्वामी ज अमोने वाचना आपे तेवो बदोबस्त करो तेमनी समजावटथी जेम मेघागमन समये मयूर नृत्य करे तेम अमारा हृदयरूपी मयूरो हर्षभरपूर बने छे "

वज्रस्वामीनो अभ्यास वधता वधता वर्षोनो थई गयो ते समये दश पूर्व सुधीनु शास्त्राध्ययन शेष रह्यु हतु अने तेनु सपूर्ण ज्ञान श्रीभद्रगुप्तसूरिने हतु एकदा श्रीसिंहगिरिने विचार स्फुर्यो के-श्रीवज्रस्वामीने भद्रगुप्तसूरि पासे मोकलीए अने सफल शास्त्रपारगत बनावीए गुरु आज्ञा थता ज तेओए विहार कर्यो अने रात्रि थई जता तेओ नगर बहार रातवासो रह्या आ बाजु भद्रगुप्त सूरिने स्वप्न आव्यु के तेमना हाथमाथी दूधपूर्ण पात्र कोइए लई लीधु अने तेनु पान करी प्रमोद अनुभव्यो श्रीवज्रस्वामीए आगमन-हेतु दर्शावी अभ्यास कर्यो अने अल्प समयमा ज पारगतपणु प्राप्त करी गुरु समीपे आवी पहोंच्या गुरुए दश पूर्वमा निष्णात थया जाणी आचार्यपद आपी गच्छनो भार पण तेमना शिरे नाख्यो.

एकदा वज्रस्वामी विहार करता करता पाटलीपुत्र नगरे आव्या त्या विद्याप्रभावथी बदरूपी काया बनावी सुन्दर देशना आपी देशना साभळ्या बाद नगरजनो टीका करवा लाग्या के देशनाने अनुकूळ रूप नथी बीजे दिवसे कामदेव सदृश रूप बनावी देशना आपी आ व्यतिकर सांभळी ते नगरना धनश्रेष्ठीनी रुक्मिणी नामनी कन्याए मनथी निरधार कर्यो के " परणु तो वज्रस्वामीने ज नहीं तो प्राणभक्षण (मृत्यु) श्रेष्ठ छे " धनश्रेष्ठीने आ वात काने आवता ज तेमणे श्रीवज्रस्वामीने कह्यु के-"हु आपने एक करोड रत्न कन्यादानमा आपीश माटे मारी कन्याजी स्वीकारो " बाद श्रीवज्रस्वामीए रुक्मिणीने समजावी अने पोताना साध्वीसघमा एक लायक व्यक्तिनो उमेरो कर्यो

एकदा ते प्रदेशमा भयकर दुष्काळ पड्यो प्राणीओ दु खी थवा लाग्या अने सकल सघ पण भूखमरा तेमज अनेक आपत्तिओने कारणे त्रासी उठ्यो साधु-समुदायमा पण भूखमराए स्थान जमाव्यु आ आफतमाथी बचाववा माटे श्रीसघे वज्रस्वामीने विज्ञप्ति करी श्रीवज्रस्वामीने स्वकीय फोरववानो प्रसंग प्राप्त थयो तेमणे तरत ज पोतानी शक्तिथी विशाळ पट विकुर्व्या अने तेना ऊपर सकल सघने बेसाडी महापुर नामना नगरमा पहोंचाड्यो

महापुर नगरमा बौद्धोनु साम्राज्य चालतु हतु बौद्ध लोको जैनोनी सारी रीते निन्दा तथा इर्ष्या करता धीमे धीमे ते नगरना राजाना कर्णमा झेर रेडवामा आव्यु अने कोई पण प्रकारे जैनोने हेरान करवानो मनसूबो कर्यो पर्युषण पर्व आवता राजवीए माळीओने गुप्त रीते कहेवराव्यु के " जैनोने एक पण फूल न आपशो " पर्युषण जेवा पवित्र दिवसोमा एक पण पुष्प न मळवाथी श्रीसंघनु मन संताप अनुभववा लाग्यु श्रीसंघे वज्रस्वामीने आ वृत्तांत जणाव्यो शासनप्रभावना अर्थे श्रीवज्रस्वामी आकाशमार्ग माहेश्वरी नगरीए गया अने त्यां तेमनो मित्र तडिग नामनो माळी रहेतो हतो तेणे वीश लाख पुष्प ते ज समये अर्पण कर्या क्षुद्रहिमवंत पर्वत परथी लक्ष्मीदेवीनु सहस्रपत्रयाळु कमळ जिनपूजा माटे लाव्या आ चमत्कार जोई बौद्ध लोको झंखवाणा पडी गया अने राजा पण जैन धर्मावलंबी बन्यो आ प्रमाणे तेओश्रीए जैनशासननी महा प्रभावना करी

एकदा वज्रस्वामीने श्लेष्म रोग थयो तेथी सुंठनो कटको उपयोगमा लई तेमाथी थोडो वापरी बाकीनो साजे वापरवा माटे कानना भाग पर राखी मूक्यो दैवयोगे तेनी विस्मृति थई गई साजे पडिलेहण करता मुहपत्ति द्वारा ते कटको नीचे पडयो सुज्ञ वज्रस्वामी समजी गया के हवे पोतानु आयुष्य ओछुं छे

पछीथी बीजो भयंकर द्वादशवर्षीय दुष्काळ पडयो श्रीवज्रस्वामीए अणशण करवानो विचार कर्यो अने एक पर्वत पर गया अणशण करी स्वर्गे संचर्या पछी तेमना प्रत्येना भक्तिभावथी इन्द्रमहाराज त्या आव्या अने पोताना रथने चारे तरफ फेरवी वृक्ष तथा गहन वनने सरखा कर्या ते पर्वतनु नाम त्यारथी रथावर्त पडयुं छे अत्यारे दक्षिण माळवामा विदिशा(भेलसा)नी पासे आ पर्वत आव्यो होवानु मनाय छे

तेमना स्वर्गगमननी साथोसाथ ज (१) दशपूर्व (२) चोथु संहनन अने (३) चोथु संस्थान-ए पण वस्तुओ विच्छेद पामी तेमनाथी वज्रशाखा शरू थई तेमनो समय भयमप्रधान हतो अने पुष्पनी खातर तेमणे कमर कसी ते परथी फलितार्थ ए थाय छे के चैत्यपूजा ए धर्मनु अति आवश्यक अंग छे

२. वृद्ध–जेनी वय ७० वर्ष उपरातनी होय तेने वृद्ध कहेवाय केटलाक आचार्यो एम पण कहे छे के जेनी इन्द्रियो शिथिल-निबल-शक्तिहीन थई गई होय ते ६० वर्ष उपरांतनी उम्मरवाळो होय तो पण वृद्ध जाणवो तेनी दया करवी पडे, ते साधु आचारनु सारी रीते पालन करी शके नहीं वळी तेनामा स्वाभाविक रीते दुपद-अभिमान होय के हु वृद्ध छु, बीजा तो लघु छे, तेओने हुं केम नमस्कार करुं ? इत्यादि इत्यादि आम छता पण कोई दृढ-मजबूत

संघयणवाळो होय अने साधुना आचार-विचार बराबर पाळी शके तेम जणातुं होय तो अपवादरूपे तेवा वृद्धने पण दीक्षा आपी शकाय आ सर्वधर्मां विशेष वर्णन पचकल्पभाष्यमां जणावेल छे

३. नपुंसक-जे पुरुषमा पण न होय अने स्त्रीमा पण न होय तेने नपुंसक जाणवो ते बीजा साधुओने दुराचारी बनावे संयमनी विराधना करे, लोकोमां हांसी करावे माटे तेवा नपुंसकने दीक्षा न आपवी कदाच अजाणता अपाई गई होय तो तेने काढी मूकवो कदाच ते स्वय न चाल्यो जाय तो तेने भाळ बीने-समजावीने पण काढवो कदाच ते नपुंसक राजा पासे पोताने काढी मूक्या सबधी फरियाद करे अने राजा तेनो पक्ष लइ तेने गच्छमा राखवा आग्रह करे त्यारे सुज्ञ आचार्य अगर तो मुनिराजे राजाने समजाववा माटे कहेवु के-" आपना कोठागारमां कोई दुष्ट माणस होय तो आप तेने माटे केवा पगला भरो ? राजा जवाब आपे के तेने तरत ज काढी मूकु राजानो आवो जवाब साभळी सुज्ञ साधु कहे के-आ नपुंसक अमारा ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूपी भडारने लूटनार-दोषित करनार छे माटे तेने अमारे बहिष्कृत करवो ज जोइए " आ प्रमाणे छेवटे राजाने पण समजावे कदाच वैयावच्चादिक कोई कारण प्रसगने अगे नपुंसकने दीक्षा देवी पडे तो काय सधाय त्या सुधी राखे, पण तेने क्रिया कलाप कई पण न शीखवे पछी काढी मूके न चाल्यो जाय तो योगीनो वेष पहेरावी अन्यत्र मूकी आवे आ सबधी विशेष विवरण आवश्यक चूर्णीमा तथा वृत्तिमा ' पारिट्ठावणिया 'ना अधिकारमा आपवामा आवेल छे

४ क्लीब-स्त्रीना निमन्त्रणथी, स्त्रीना अगोपांगादिना दर्शनथी, स्त्रीओ साथेना मिष्ट वार्तालापथी जेने काम उत्पन्न थाय, स्त्री साथे भोग भोगववा तीव्र अभिलाषा उद्भवे, कामना वेगने रोकी शके नहीं-विह्वल बनी जाय परन्तु कामभोगने भोगवी शके नहीं ते क्लीब जाणवो ते स्त्रीओनी पाछळ अंध थइने फर्या करे, शासननी हेलना करावे, लोकोमा निंदानु पात्र बने माटे तेवा क्लीबने दीक्षा न आपवी कदाच अपवाद तरीके दीक्षा आपी होय तो पण काढी मूकवो

५ जड-त्रण प्रकारना जड छे-१ भाषाजड, २ शरीरजड अने करण जड (१) जे भाषा बराबर न बोली शके ते भाषाजड कहेवाय तेना पण त्रण भेद छे-(अ) जलमूक (आ) मन्मनमूक अने (इ) एलमूक जळमां कोइ डूबता मांडे त्यारे जेवो 'बलबल' ध्वनि थाय तेनी माफक बोले ते जलमूक जे बोलता थका वच्चे हवडी खाईने-रोचकाई बोले तेने मन्मनमूक जाणवो तेम ज जे बकराआनी माफक अव्यक्त बोले, तेनुं वचन न समजाय, फक्त शब्द मात्र करे तेने एलकमूक जाणवो आवा जडने दीक्षा न आपवी कदाच वैयावच्चादिने कारणे दीक्षित कर्या होय तो पण तेने काढी मूकवो आ सबधी

विशेष स्वरूप पंचकल्पभाष्यमा अने आवश्यक सूत्रनी वृत्तिमा आपवामा आवेल छे (२) शरीरजड-शरीरे विशेष स्थूल होय, हृष्टपुष्ट होय, तथा थाका चवा अवयवबाळो होय तो ते विहारमा जल्दी चाली शके नहीं, गोचरी लाववामा पण उपयोगी न नीवडे तेम ज आवश्यक क्रिया करता वादणा देवाना समये ऊठ-बेठ न करी शके माटे तेवा शरीरजडने दीक्षा न आपवी पाते पहला होय अने सहयोगी तरीके बीजा साधुनी जरूर ज होय तेवे समये तेने दीक्षा आप परन्तु कार्य पूर्ण थये तेने काढी मूकवो (३) कारणजड-साधुना आचारने अगे जे जे क्रिया बतावीए ते भूली जाय, स्मरणमा न रहे, पडिलेहण न करी शके, प्रतिक्रमणादि आवश्यक क्रिया वारवार भूली जाय, बतावीए त्यारे लक्ष न राखे-आवा शरसने दीक्षा न आपवी कारणवशात आपी होय तो कायनी समाप्ति थये तेने काढी मूकवो

६. व्याधिग्रस्त—अतिसार, भगदर, कोढ, शूळ, दीर्घज्वर, जीर्णज्वर इत्यादि व्याधिवाळाने दीक्षा न आपवी तेथी सयम तथा स्वाध्यायादिकनी हानि थाय

७. स्तेन (चोर)–चोरी करे, मार्गमा लोकोना खीसा कातरे तेवा स्तेन (चोर)ने दीक्षा न आपवी, छता कोई चोर पोतानु व्यसन मूकी दे, चोरी न ज करे, चोरी न करवानी प्रतिज्ञा करे तो तेने कारणवशात् दीक्षा आपे परन्तु जेनु चोरी करवानु व्यसन न ज छूटे तेने कदापि दीक्षा न आपवी

८. राजद्रोही—राजानो गुनेगार होय, राजानो भडार लूटयो होय, राजानो घात कर्यो होय, राजपुत्रनो द्रोह करनार होय, अगर तो कोइ पण प्रकार राजदडने पात्र होय तेने दीक्षा न आपवी

९. उन्मत्त—जेना शरीरमा भूत, प्रेत अगर तो यक्षादिकनो प्रवेश थयेल होय तथा महामोहनीयनो जेने उदय होय, मिथ्यादृष्टि होय, जेनु मन परवश-पराधीन होय तेने दीक्षा न आपवी

१०. अध—जे अध होय, थीणद्धी निद्रावाळो होय, काणो होय, ठुठो होय, नकटो होय तेने दीक्षा न आपवी थीणद्धी निद्राना उदयथी हस्ती प्रमुखना दात खेंची काढे, जीवोनी हिंसा करे, साधुओनो पण घात करी नाखे वळी आधळो होय ते जीवदया न पाळी शके, लोकमा निंदा थाय अपवादथी थीणद्धी निद्रावाळाने दीक्षा आपी होय तो तेने दूर करवो-काढी मूकवो अपवाद मार्ग काणाने दीक्षा आपी शकाय परन्तु आधळाने तो सर्वथा दीक्षा न ज आपी शकाय जो आप तो विराधक गणाय, आ सबधी विशेष हकीकत पचकल्प भाष्य विगेरे ग्रंथोद्वारा जाणवी

११. दास—दासीना पुत्र होय, रोकड वेचाता लीधा होय, बान (जामीन) तरीके राखेलो होय अगर तो कोइना रोकल होय तेवा दास-चाकरने दीक्षा न आपवी कदाच दासनो मालीक कहे के-दीक्षा आपो तो दीक्षा आपवी पण ते अपवाद मार्गे जाणवो

१२. दुष्ट—बे प्रकारना दुष्ट छे-(१) कषायदुष्ट अने (२) विषयदुष्ट महा क्रोध करे, अभिमानी होय, माया-प्रपंचमा पूरो होय ते कषायदुष्ट जाणवो आ संबंधमा एक संक्षिप्त दृष्टांत आपे छ कोई एक आचार्यने एक कषायदुष्ट शिष्य हता एक वखत गोचरी माटे जता ते शिष्यने सरसवनी स्वादिष्ट भाजी मळी गोचरी लइ पाछा वळता तेणे मनमा विचार कर्यो के-आजे तो आ भाजी हु ज खाइश साधुना नियम प्रमाणे उपाश्रये आवो तेणे लावेल सव गोचरी गुरुने बतावी गुरुए ते सरसवनी बधी भाजी पोताना आहारार्थे लई लीधी ते समये तो शिष्यथी कई पण बोली शकाय नहीं पण ते क्रोधी शिष्ये मनमा संकल्प कर्यो के आ गुरुए मारी लावेली स्वादिष्ट गोचरी आरोगी छे माटे तेना दांत पाडी नाखु तो ज हु खरो आ प्रमाणे मानसिक प्रतिज्ञा करी ते गुरुने हेरान करवाना छिद्र जोवा लाग्या, परंतु दांत पाडी नाखवाना प्रसंग प्राप्त न थाय धीमे धीमे आ शिष्यनी हीलचाल अने तेना मनोभाव गुरुना जाणवामा आव्या तेणे पोतानी पासे बीजा शिष्य राख्यो अने तेने भलामण पूर्वक कह्यु के-पेला कषायदुष्ट शिष्यने मारी समीपे न ज आववा देवो क्रमशः गुरुए अंतसमय नजीक जाणी पोते अणशण स्वीकारवानो निरधार कर्यो अने पासे रहेला अन्य शिष्यने सूचना आपी के-" हु जीवु त्या सुधी ते कषायदुष्ट शिष्यने मारी पासे न लाववो तेमज न आववा देवो ' आ प्रमाणे कहीने गुरु तो सूई गया आ बाजु पेलो कषायदुष्ट शिष्य कोइ कारण प्रसंगे बीजे गाम बीजा संघाडामा गयो .आ समय दरमियान गुरु काळधर्म पामी गया शिष्यो तेमना देहने वोसिरावी आव्या पेलो शिष्य आवतां तेणे आ समाचार जाण्या तेना उद्वेगनो पार न रह्यो तेने गुरुना स्वर्गवासनो शोक नहोतो थतो, मात्र पोतानी प्रतिज्ञा अधूरी रही गई तेनो शोक थतो हतो कोइ पण हिसाबे पोतानी प्रतिज्ञा पूर्ण करवाना निरधारथी तेणे अन्य शिष्यने पूछ्यु के-" कया स्थळे गुरुनी कायाने वोसरावी छे ? " भयभीत बनेला शिष्योए जे स्थाने गुरुना शरीरने वोसिराव्यु हतु ते स्थान दर्शाव्यु एटले कषायदुष्ट शिष्य शीघ्र ते स्थळे गयो अने गुरुना शरीर ने दांत शोधी काढीने पाडी नाख्या अने पोतानी प्रतिज्ञा पूर्ण करी-आवा कषायदुष्टने दीक्षा न ज आपवी (२) जे परस्त्रीमां लंपट होय, विषयासक्त होय ते विषयदुष्ट कहेवाय, तेवाने दीक्षा न आपवी

१३. मूढ—अज्ञानी होय, परवश होय, वस्तुने वस्तुस्वरूपे न जाणे, अतिशय स्नेह राखे, शून्यमनस्क होय तेने दीक्षा न आपे

१४. ऋणार्त—जे कोइ राजादिकनो देवादार होय, जेने माथे घणाअनु दवु होय तेने दीक्षा न आपवी आवा व्यक्तिने दीक्षा आपवाथी लोको निंदा करे के-देवाळिया थइ गया, घरमा खावानु कई न रह्यु पछी दव दीक्षा लीधी वळी घणा लणदार शख्सो पकड थइन वेष छुटवी ले, हासी करे माटे दीक्षा न आपवी

१५. जुंगित—त्रण प्रकारना जुगित छे १ जातिजुंगित, २ कर्मजुंगित अने ३ शरीरजुंगित (१) जे हल्की-नीच जातिना होय ते जातिजुंगित कहेवाय भंगी, चंडाल, कोळी, चमार, वणकर, भील, दरजी विगेरे (२) कर्म जुंगित-स्त्रीना पोषक भडवा प्रमुख, मयूर, कुकडादिना पालक-पोषक, वांस ऊपर चढीने नृत्य करनार, शिकारी धूतरा प्रमुख राखनार तेमज वागुरी-जाळ नाख नार विगेरे (३) शरीरजुंगित-हाथ, पग, नाक तथा कानरहित तेमज पांगळा, कूबडा, ठींगणा तथा काणा, ठुंठा विगेरे छद्मा भेदमा नकटानो पण उल्लेख करेल छे परंतु अहीं जणावल नथी, परन्तु ते पण समजी लेवो जाति तथा कर्मजुंगित बनेने दीक्षा न देवी, कारण के ते हल्का कुळना होवाथी लोकमा निंदा थाय, आहारादिक न मळे तेमज तेना कारणे श्रेष्ठ जातिना शिष्यो प्राप्त न थाय त्रीजो प्रकार तो सर्वथा निषेधने पात्र ज छे

१६. अवबद्ध—कोइ विद्या भणवा अगर तो शास्त्र जाणवा तथा अमुक समय पर्यंत उदरपूर्ति करवा माटे गुरुने कहे के-हु अमुक समय पर्यन्त दीक्षा लइश अने शास्त्राध्ययन करीश, पछी चारित्र मूकी दइश आवा धनार्थी न पण दीक्षा न आपवी कारण के आवा देखावथी लोको भ्रममा पडे के साधुओ तो आवा ज वर्तनवाळा हशे, लोकोने निंदा करवानु कारण मळे

१७. भृत्य—जे कोइ रुपियाने माटे धनिक गृहस्थनी नोकरी करता होय तेने दीक्षा न आपवी तेनो स्वामी आज्ञा आपे तो आपवी

१८. शिष्यनिष्फेटिका—मात पितानी आज्ञा सिवाय नसाडीने जे दीक्षा अपाय ते शिष्यनिष्फेटिका (शिष्यनी चोरी ने अपहरण) कहेवाय आवी रीते शिष्य चोरी करी दीक्षा आपे तो शासनहीलना थाय, संयमथी पतित कराय, संयमनी विराधना थाय, राजदरबारमा फरियाद थता भय उत्पन्न थाय, आत्मविराधना थवानो पण प्रसंग आवे माटे शिष्य अपहरण करी

दीक्षा न दरा अपवाद तगर शिष्यहरण करवु पडे ता तनी विधि श्रीनिशी थचूर्णी प्रमुख ग्रन्थमा छ आवा प्रकारनी शिष्यनिष्फेटिका तासलिपुत्र आचार्य आर्यरक्षितसूरिनी करी हतो जे सबधी संक्षिप्त वृत्तात नीचे प्रमाण छ

श्रीआर्यरक्षितसूरिनु वृत्तात—

दशपुर नामना सर्व ऋद्धिसिद्धिसपन्न नगरमा उदायन नामनो समर्थ अने प्रतापशाळी राजवी राज्य करता हता तने पण्डित-शिरोमणि अने ब्र ह्मचारी सोमदेव नामनो पुरोहित हतो सोमदेवने सुशील अने सस्कारी रुद्रसोमा नामनी सद्गुणी पत्नी हती जेना द्वारा तेन आर्यरक्षित अने फल्गु रक्षित नामना पुत्ररत्नानी प्राप्ति थइ हती जन्मथी ज बुद्धिशाळा आ बधु-बेलडीने सुशिक्षित बनाववा सोमदेव पूरा प्रयत्न कर्यो अन पाताना रहेल सर्व ज्ञान तने विषे ठाल्व्यु, परन्तु ज्ञानसागरमा तरवानी इच्छावाळा आर्य रक्षितने आटला मात्रथी तृप्ति न थइ तेणे मातापितानी समति मळवी विशेष विद्याभ्यास माट पाटलीपुत्र नगरे प्रयाण कर्यु

पाटलीपुत्र ते समये आर्यावर्तना प्रथम पक्तिना शहेरामा अग्रस्थान हतु षड्दर्शनना ज्ञाता विद्वान पंडितो त्या रहेता अत्यारे जे स्थान काशीनु छे तेवु स्थान ते समये पाटलीपुत्रनु हतु सारा आचार्यना हाथ नीचे रही आर्यरक्षिते वेदोपनिषदनो अभ्यास कर्यो अने पोताना उत्कृष्ट प्रज्ञा तमज शीघ्र ग्राह्य-बुद्धिथी तेणे पोताना सहाध्यायीओ तेम ज आचार्यनो पण चाह मळवी लीधो अभ्यास सबधी कार्य पूर्ण थता ते स्वजन्मभूमि प्रत्ये पाछो फर्यो सोमदेवने मन आ प्रसग महोत्सवरूप हतो एक तो पोताना पुत्र अने विद्याभ्यास करी पाछो आवतो हतो तना बहुमानने माटे तने लागणी उत्पन्न थइ राजान आ समाचारनी जाण थता पोताना पुरोहितपुत्रना आदरसत्कारार्थे राजा पण हाथी पर बेसी सामे गयो अने बहुमानपुरस्सर राज-रियासत साथे तेनो नगर प्रवेश करायो आर्यरक्षितने माटे पण जीवनमा आ अमूल्य पळ हतो

सोमदेव पुरोहित हता छता रुद्रसोमा जैनधर्मानुयायी हती साध्वी समूहना ससर्गथी जैनमत माटे अपूर्व सद्भाव उपज्यो हता धीमे धीमे अभ्यास करता तणी जीवाजीवादिक तत्वोना स्वरूपने समजनारी श्राविका बना हती सोमदेव आ जाणता हतो छता त पण सर्वधर्म प्रत्ये समभाववाळो होवाथी वचे न आवतो आर्यरक्षितनो पुर-प्रवेश थया त्यारे ते सामायिक लइने बेठी हती आर्यरक्षिते स्वगृहे आवीने माताने विनयपुरस्सर प्रणाम कर्यो परन्तु सासारिक व्यापारनो त्याग करी सामायिकमा बेठेल रुद्रसोमा तो पोताना एक ध्यानमा ज लयलीन रही आर्यरक्षितने माताना आवा वर्तनथी कइक खेद उपज्यो तेने विचार थया के-मारा पाण्डित्यने

कारणे राजाए अने पौरजनोए मारो सविशेष आदर सत्कार कर्यो त्यारे माता मारा माटे पोताना मुखमांथी आशीर्वादनो एक अक्षर सरखो पण उच्चारती नथी तेने खबर न हती के सामायिक एटले सावद्य व्यापारनो त्याग एक मात्र धर्मध्यान सिवाय तेमा व्यवहारोपयोगी कार्यनो निषेध होय छे सामायिक पूर्ण थया बाद योग्य समये आर्यरक्षिते माताने हर्ष नहीं थयानुं कारण पुछ्युं

रुद्रसोमाए जाण्युं के पुत्रने सन्मार्ग चढाववानो आ उचित समय छे एटले नम्र वाणीमां कह्युं के-" पुत्र ! दुर्गतिदायक तारा अभ्यासथी के पांडित्यथी हुं शी रीते संतुष्ट थाउं ? " माताना आ वचनो सांभळतां ज आर्यरक्षित समजयो तेणे माताना कथनमां कंइ ऊंडो मर्म समजायो

विशेष पृच्छा करतां रुद्रसोमाए कह्युं के-" पुत्र ! आ भौतिक ज्ञान तने बहुमान अपावशे, तारी कीर्ति फेलावशे परन्तु साचुं ज्ञान तो ते ज छे के जे आत्मानी उन्नति करे आत्माने सन्मार्गना पथे वाळे जैनदर्शननो अभ्यास विना तारुं ज्ञान अपूर्ण ज रहेवानुं जेम जळ विनानुं सरोवर शोभे नहीं तेम दृष्टिवाद विनानुं तारुं ज्ञान शोभशे नहीं " दृष्टिवाद ए शुं कहेवाय तेम पूछतां माताए कह्युं के-" आपणा नगरने विषे तोसलीपुत्रनामना जैनाचार्य छे, तेनी पासे जजे अने ते तने सर्व वस्तु समजावशे ' " प्रातःकाळे जइश" एम कहीने मातानो आदेश आर्यरक्षिते मस्तके चढाव्यो

माता साथेना वार्तालाप पछी आर्यरक्षितनुं मन चकडोळे चढयुं तेणे विचार्युं के-" आटला वर्षोनी विद्याप्राप्ति माटेनो परिश्रम मातानी दृष्टिए तो वृथा ज नीवडयो कंइ माता पोताना पुत्रना हितने माटे उत्कंठित न होय ? खरेखर माताए मने सन्मार्गे लाववा ज आ प्रयास कर्यो छे, कारण के माता कडवुं औषध बाळकने पीवडावे छे ते तेना स्वास्थ्यने माटे ज माताए जणावेल तोसलिपुत्र आचार्य पासे जवुं अने तेनी पासे अवश्य अभ्यास करवो पण तोसलिपुत्र पासे केवी रीते जवुं ? केम बोलवुं ? जैनाचार्यना शुं आचार-विचारो ने विधिप्रणालिका हशे ? " आ प्रमाणे विचार-मंथनमां ज तेणे अर्धी रात्रि व्यतीत करी अने ते ज विचारमां तेने निद्रा पण आवी गई प्रातःविधि आटोपी लईने जेवामां गृहमांथी बहार निकळे छे तेवामां पोताना पितानो मित्र शेरडीना साडानव सांठा लईने सामो मळ्यो आ शुभ शुकन थया जाणी आर्यरक्षित आगळ चाल्यो अने उपाश्रय पासे आवी पहोंच्यो केवी रीते उपर जवुं अने शुं करवुं ? तेनो विचार करे छे तेवामां ढड्ढर नामनो श्रावक गुरुने वंदन निमित्ते आव्यो अने तेनी पाछळ-पाछळ आर्यरक्षित पण गयो

ढड्ढरनी माफक तेणे पण तोसलीपुत्र आचार्यने वंदन कर्युं नवो आगंतुक जाणी आचार्ये तेने तेनुं नाम, गोत्र अने कुळ संबंधी पृच्छा करता जणायुं के-

राजाए जेनो बहुमानपुरस्सर नगर-प्रवेश कराव्यो हतो ते ज आ पुरोहित पुत्र आर्यरक्षित छे बाद तेना आगमननु कारण पूछता आर्यरक्षिते माता साथेनो संपूर्ण वार्तालाप कही संभळावी दृष्टिवाद भणाववा माटे प्रार्थना करी तोसली पुत्र आचार्य पण आ सांभळी ज्ञानोपयोग दीधो ज्ञानदृष्टि द्वारा तेमने जणायु के-श्रीवज्रस्वामी पछी आर्यरक्षित प्रभावक आचार्य थशे पटले तेने शांत वाणी द्वारा जणाव्यु के-"आर्यरक्षित ! तारो उत्साह प्रशंसापात्र छे तारी तेजस्विता पण आ अभ्यासनो त्वरयात प्रचार करे छे, परन्तु अमारी शास्त्राज्ञा प्रमाणे जे जैनी दीक्षा स्वीकारे तेने ज दृष्टिवादनो अभ्यास कराबी शकाय"

आर्यरक्षितने तो कोई पण प्रकारे विद्याभ्यासनी लगनी लागी हती अने तेनी पछवाडे पूज्य मातानी प्रेरणा हती पटले विशेष विचार कर्या वगर तेणे गुरुने पोतानी दीक्षा लेवानी संमति दर्शावी आचार्यश्रीए विचार्यु के-"आर्यरक्षित हमणा ज पाटलीपुत्रथी सुपंडित पदवी लई आवेल छे, प्रजानो पण तेना परत्वे पूरेपूरो चाह छे पुरोहितपुत्र छे अने तेने कारणे राजवीने पण बहुमान्य छे पटले जो तेने दीक्षा आपीने अहीं ने अहीं राखीश तो तेना प्रत्ये प्रेम धरावनारा विघ्नकारक थशे" आ प्रमाणे विचारी तेणे आर्यरक्षितने ते वात जणावी कह्यु के-"दीक्षा लइने आपणे अहींथी गुपचुप अन्यत्र विहार करवो पडशे" आर्यरक्षिते ते पण स्वीकार्यु अने योग्य मुहूर्तमा आर्य रक्षित संसारी मटी मोक्षमार्गना मुसाफर बन्या जैनशासनमां आ प्रमाणे आ पहेल-वहेली ज शिष्यनिष्फेटिका बनी

जाणे पूर्व तैयारी ज होय तेम आर्यरक्षिते अल्प समयमा ज पूर्वोनो अभ्यास अवधारी लीधो विशेष विद्याभ्यास माटे तोसलीपुत्रे तेमने श्रीवज्रस्वामी पासे मोकलवानो विचार कर्यो अने आज्ञा पण आपी आ बाजु श्रीवज्रस्वामीने स्वप्न आव्यु के-पायसथी भरेल पात्रद्वारा में कोई पण अतिथिने पारणु कराव्यु परन्तु पात्रमा शेष अल्प ज पायस बाकी रह्यु आर्यरक्षित तेमनी सेवामा हाजर थया अने अभ्यास कराववा माटे प्रार्थना करी श्रीवज्रस्वामीए तेमने अध्ययन करावतां तेओ नवपूर्वना ज्ञानी थया

आ बाजु आर्यरक्षितना चाल्या जवा बाद नगरमा सहेज खळभळाट मच्यो परन्तु आर्यरक्षितनी संमतिथी ज आ बनाव बनेल होवाथी तेनो विशेष ऊहापोह न थया रुद्रसोमाए पुत्रना मळवाथी दृष्टिवादनो अभ्यास करवा कही नाख्यु परन्तु लांबा समयना विरहथी तेनु वात्सल्य आर्यरक्षितनी झंखना करी रह्यु हतु रुद्रसोमाने आर्यरक्षितने मळवानी उत्कंठा थई पटले फल्गुरक्षितने तेमने तेडवा माटे मोकल्यो

फल्गुरक्षिते आवी आर्यरक्षितने मातृस्नेहनु स्मरण कराव्यु आर्यरक्षिते

जणाव्यु " आ क्षणभगुर ससारमा स्नेह ने मोह केवा ? हाथिए बहार काढेला दात शु पाछा अदर जाय छे ? आ ससार ज आवो विचित्र बीनाओथी भर पूर छे मोहराजा आ जीवने विविध रूपे नचावे छे अने आपणे नटनी माफक आ ससार–रगभूमि ऊपर नाचीए छीए " बाद फल्गुरक्षितने पण प्रतिबोधी प्रव्रज्या ग्रहण करावी

नव पूर्वनो अभ्यास तो सरळताथी कर्या बाद आर्यरक्षिते दशमा पूर्वनो शरूआत करी, परन्तु अत्यार सुधी न जणायेल तेवो श्रम हवे तेमने जणावा लाग्यो कठिन भागाओ, दुगम गमक, दुष्कर पर्याय अने समान शब्दोना अर्थ शोधता तेमनी बुद्धि हवे थाकवा लागी, छता पण दृढ मनोबलथी अध्ययन शरू राख्यु परन्तु कटाळो प्रतिदिन वधवा लाग्यो एकदा तेमणे श्रीवज्रस्वामीने एकातमा पूछ्यु के–" हे भगवन् ! हजु मारे केटलु अध्ययन करवु शेष रह्यु छे ? " वज्रस्वामीए तेमनो हृदयगतभाव जाणी लइ एटलुं ज कह्यु के–" तेनो विचार न करो, अभ्यास शरू राखो मनने चचळ न बनवा दो " आ प्रमाणे केटलोक समय व्यतीत थया बाद पुन पूछ्यु त्यारे श्रीवज्रस्वामीए शातवाणी द्वारा जणाव्यु के–" हजु सरसव प्रमाण भण्या छो अने मेरुपर्वत प्रमाण बाकी छे अध्ययनमा कटाळो न लावो " लज्जाने लीधे आर्यरक्षिते अध्ययन शरू तो राख्यु परन्तु मन पाछु हठतु जतु जणायु छेवटे माताने मळवा जवाना आशयथी तेमणे श्रीवज्रस्वामी पासे विहार करवानी आज्ञा मागी श्रीवज्रस्वामीए ज्ञानदृष्टिथी जोयुं तो तेमने जणायु के आर्यरक्षित हवे विशेष अभ्यास करी शकशे नहीं, कारण के स्वप्न फळ मिथ्या न थाय समग्र पायसमाथी शेष बाकी रह्यु हतु एटले आर्यरक्षित समग्र दशे पूर्वनो मारा द्वारा लाभ प्राप्त करी शकशे नहीं मारु आयुष्य हवे अति अल्प छे अने आर्यरक्षित पुन· आ स्थळे आवशे ते पहेला तो हु काळधर्म पामी जईश ' भाविभाव जाणी श्रीवज्रस्वामीए तेमने आज्ञा आपी आर्यरक्षित विहार करी पाटलीपुत्र आव्या अने दीक्षागुरु तोसलीपुत्र आचार्यने मळ्या त्याथी विहार करी जन्मस्थान दशपुर आव्या राजाए अत्यत बहुमानपूर्वक सामैयु कर्यु केटलाक समयनी स्थिरता दरमियान तेमणे पोताना माता, पिता, स्वजनसबधीवर्ग तेम ज बीजा अनेक भव्य प्राणीने पारमेश्वरी दीक्षा आपी

श्रीवज्रस्वामीना काळधर्म पाम्याना समाचार आर्यरक्षितने मळता तेमने पोताना अपूर्ण रही गयेला अभ्यास माटे पश्चात्ताप थयो, परन्तु ज्यारे पोते प्रथम वार ज तोसलीपुत्र आचार्यने मळवा जता हता त्यारे ज साडानव शेरडीना साठा मळ्या तेनु तात्पर्य हवे तेमने समजायु साडानव साठा ए सूचन करता हता के साडानव पूर्व पर्यन्तनु ज्ञान तमने प्राप्त थशे

पूर्वना अभ्यासने लीधे आर्यरक्षितनी ख्याति अनेक दिशाओमा विस्तृत

थई हतो तेमनु ज्ञान-यळ अनेक शंकाना समाधान करवा शक्तिमान नीवड्यु एकदा महाविदेह क्षेत्रमां श्रीसीमधरस्वामीने वदन करवा गयेल शक्रेंद्रे प्रभुने पृच्छा करी के-" हे स्वामिन् ! आपना जेवु निगोदनुं सूक्ष्म स्वरूप भरतक्षेत्रने विषे कोई जाणे छे ?" परमात्माए श्रीआर्यरक्षितसूरिनु नाम आप्यु एटले तेमने जोवानी इच्छाथी इद्र वृद्ध ब्राह्मणनु रूप धारण करी मथुरानगरीमा आव्या अने गुरु समीपे जई निगोदनु स्वरूप पूछ्यु एटले भगवतना कथन मुजब ज सूरिश्रीए यथास्थित निरूपण कर्यु इद्र तेमनी आवी शक्तिथी अत्यंत रजित थयो बाद विशेष परीक्षा माटे तेमने स्व आयुष्य संबधी पृच्छा करी त्यारे गुरुश्रीए चिह्न, आकृति अने लक्षण विगेरे ज्ञानथी जाणीने सागरो पमनु आयु जणाव्यु आ सांभळी अत्यत हर्ष पामेला शक्रेंद्रे श्रीसीमधरस्वामीए कहेल सर्व व्यतिकर तेमने संभळाव्यो अने पोताना आगमननी निशानी तरीके वसतिनु द्वार फेरवी दीधु बहार गयेला शिष्यो ज्यारे आव्या त्यारे तेओ विस्मय पाम्या अने उपाश्रयनु द्वार शोधवा लाग्या त्यारे गुरुना दर्शाववाथी शिष्योए प्रवेश कर्यो ज्यारे गुरुए तेओने इद्र-आगम संबधी व्यतिकर कही संभळाव्यो त्यारे शिष्योना आत्मामा आश्चर्यनी अवधी ज न रही तेमना जीवननु सर्वश्रेष्ठ कार्य ते शास्त्रज्ञानने चार अनुयोगमा विभक्त करवु-द्रव्यानुयोग, चरणकरणानुयोग, गणितानुयोग अने धर्मकथानुयोग× श्रीआर्य रक्षितसूरिना समय पूर्वे साधुओ साधु पासे अने साध्वीओ साध्वी पासे आलो चना ग्रहण करती परतु त्यारबाद साध्वीओए पण साधु पासे ज प्रायश्चित्त ग्रहण करवानो नियम कर्यो

श्रीआर्यरक्षितसूरि शासनप्रभावना करी स्वर्गे सचर्या तेमना शिष्यो पैकी दुर्बलिकापुष्पमित्र, फल्गुरक्षित अने विध्यमुनि विगेरे महाप्राज्ञ अने विलक्षण मुनिवरो हता

आ अढार प्रकारे पुरुषने दीक्षा देवा संबधी विचारवाना छे ऊपर जणावेल अढार प्रकारना पुरुषोने दीक्षा न आपवी आ अढार प्रकारो स्त्रीसबधी पण जाणवा, परन्तु स्त्री नपुसक कोने जाणवी ते सबधी जणावता कहे छे के-ते पुरुष नपुसकने सेवे तथा सेवावे तेमज पुरुषनो वेश धारण करी सेवे तेम ज सेवावे तेने स्त्री नपुसक जाणवी ते स्त्रीवेद तथा नपुंसकवेद एम बन्ने वेदनी वेदनारी होय छे स्त्रीओने माटे ऊपर जणावेल अढार भेद उपरांत बीजा पण बे भेद होय छे, जे नीचे प्रमाणे-

१९ गर्भवती-गर्भवती स्त्रीने दीक्षा न देवी कारण के असतीपोषणनो

× आ चार अनुयोगने विभक्त करवानी तेम ज निगोदना सत्य स्वरूप संबधी हकीकत केटलाक आचार्यो श्रीकालकाचार्यना नामे चढावे छे ते तरह केवलिगम्य छे

दाष लाग, बाळकने त्यजी देवु पडे तेमज ऊचा उदरने जोईन लाको निंदा करे

२० सवत्सा–जे स्त्रीने बाळक धावतु होय तेने दीक्षा न आपवी अतराय दाष लाग, लोको अवर्णवाद बोले

हव नपुसक सबधी वर्णन करता शास्त्रकार जणाव छे क–नपुसको सोळ प्रकारना छे, त पैकी दीक्षा माट दश याग्य नथी, ज्यार छ योग्य छे जे दश अयोग्य छे ते नीचे प्रमाणे जाणवा–

" पडए १ वाइए २ कीवे ३, कुभी ४ ईसालुए ५ त्तिया–सउणी ६ तक्कम्मसेवी य ७, पक्खियापक्खिए ८ इय ॥ ४ ॥ सोगंधिए अ ९ आसत्ते १०, दस एए नपुसगा । संकिलिट्ठ त्ति साहूण, पव्वावेउ अकप्पिया ॥ ५ ॥

१ पडक, २ वातिक, ३ क्लीव, ४ कुभिक, ५ ईर्षालु, ६ शकुनी, ७ तत्कर्मसेवी, ८ पाक्षिकापाक्षिक, ९ सोगधिक अने १० आसक्त–आ दश प्रकारना नपुसको अशुभ परिणामवाळा होवाथी दीक्षा आपवा याग्य नथी

१. पडक–जे पुरुष पुरुषाकार लिगधारी होय परन्तु जेनो हावभाव, गति विगरे स्त्री जेवा होय ते पडक–नपुसक कहेवाय तेना छ भेद छे–(अ) महिला स्वभाव–चालवानी गति मद हाय, चालता चालता पाछु वाळी जुए, शका पूवक चाल, शीतळ अने कामळ शरीर होय, स्त्रीनी माफक हाथ हलाववा पूवक बोल, स्त्रीनी पेठ हाथना लटका–मटका–चेनचाळा करे, पेट ऊपर तिर्च्छो जमणो हाथ राखे, तथा डावा हाथनी कोणी पट ऊपर स्थापन करी, हथेली ऊपर मुख राखी ऊभो रह, पोताना वस्त्रने वारवार हाथथी स्पश करे, शरीरे वस्त्र धारण न करेल होय तो हाथवडे छाती, हृदय विगरे ढाक, बोलवाना समये आखना भ्रुवा ऊचा–नीचा करे, स्त्रीना घरेणा पहेरवानु विशेष मन कर, पुरुषोनी सभामा बेसता भय पाम–सकोच थाय, स्त्रीनी सभामा बेसे ता आनद पाम, स्त्रीना काम जेवा के–राधवु, पीरसवु, खाडवु, साधवु विगर कार्य करवामा कुशळ होय ते महिलास्वभाव (आ) स्वरभेद–स्त्री जेवा अगर ता पुरुष जेवो स्वर न होय (इ) वर्णभेद–स्त्री तथा पुरुषथी भिन्न वण होय (ई) पुरुषचिह्न मोटु तथा जाडु हाय (उ) स्त्री सरखा कामळ वाणी होय अने (ऊ) स्त्रीनी माफक पेशाब करे एटले क 'छरछर' ध्वनि करता स्त्रीना पेशाबनी माफक मातर करे तमज तेना पेशाबमा फीण न होय–आ छ प्रकार पडक–नपुंसकना लक्षण जाणवा

२. वातिक–जेनु लिंग कारणे अगर तो वगर प्रयोजने पण स्तब्ध–शात होय, स्त्रीनी साथे भोग भोगवता दीर्घ समये मैथुन कर्म करवा लायक थाय

३. क्लीब–तेना चार प्रकार छे (१) नग्न स्त्रीने निरखीने जेनु मन क्षोभ पामे, मनना वेग रोकी न शके ते दृष्टिक्लीब, (२) जे स्त्रीनो ध्वनि मात्र सांभळी मनना वेग न रोकी शके ते शब्दक्लीब, (३) जे स्त्रीनो स्पर्श सहन न करी शके ते अश्लिष्ट क्लीब अने (४) स्त्रीए बोलाव्या मात्रथी जे मैथुनना मनो रथवाळो ते आमंत्रित क्लीब

४. कुंभिक–जेने मोहनीयना प्रबल उदयथी धातु निकळवाना समये लिंग तथा अंड बने कुंभनी माफक फूली जाय–विकारयत बनी जाय ते

५. ईर्ष्यालु–कोइ बीजाने स्त्री साथे भोग भोगवतो जोइने तेनी ईर्ष्या करे

६. शकुनी–चकला, पारेवानी माफक वारंवार मैथुन सेवन कर्या करे तेम ज हमेशा विषयमा ज आसक्त रहे

७. तत्कर्मसेवी–पोताना लिंगमांथी वीर्य निकळ्या पछी, जेवी रीते कुतरो पोताना लिंगने चाटे छे तेनी माफक स्वलिंगने चाटे

८. पाक्षिकापाक्षिक–शुक्लपक्षमा काम भोगनो तीव्र अभिलाष होय परंतु कृष्णपक्षमा शांत होय अगर तो कृष्णपक्षमा मदनकामेच्छावाळो होय परन्तु शुक्लपक्षमा शांत होय पटले के एक पक्षमा नपुंसक अने एक पक्षमां पुरुष अर्थात् जे पक्षमा उदय ते पक्षमा अत्यंत वेदोदय होय ते पाक्षिकापाक्षिक वळी केटलाक मास तथा छ मासमा बे पखवाडिया स्त्री तथा पुरुषवेदना उदयवाळा होय छे, तेमज नपुंसकवेदना पण होय छे ते पाक्षिकापाक्षिक

९. सौगंधिक–पोताना लिंगने सारु जाणीने तेमज लिंगने आगळी लगा डीने सुंघे ते

१०. आसक्त–भोग भोगवता वीर्य स्खलित थइ गयु, हवे बीजी वार भोग करवानी शक्ति नथी त्यारे पोते स्त्रीने आलिंगन आपीने रहे

आ दशे प्रकारना नपुंसको दीक्षा आपवाने लायक नथी

कोई शंका करता कहे छे के–पुरुषमां पण नपुंसक कह्या अने अहीं पण नपुंसक कह्या तो ते बने वच्चे शो तफावत छे ? आनो जवाब जणावता कहे छे के पूर्वे तो पुरुषना जेवी आकृतिना नपुंसक कह्या छे अने अहीं तो नपुंसक जेवी आकृतिना नपुंसको वर्णव्या छे स्त्रियो संबधी पण एम ज जाणी लेवु

हवे दीक्षाने लायक छ नपुंसको जणावता कहे छे के-" वद्धिए १ चिप्पिए २ चेव, मंतओसहिउवहए ३-४ । इसिसत्ते ५ देवसत्ते ६, पव्वावेज्ज

नपुसए ॥ ६ ॥ " १ वर्द्धितक, २ चिप्पिक ३-४ मन्त्रौषधिसमुपहत, ५ ऋषि शापित अने ६ देवशापित-आ छ प्रकारना नपुसकोने प्रव्राजित करवा.

१ वर्द्धितक—राजाना अत पुरमा चोकी करनार(कञ्चुकी)नी बाळवयमाथी ज अडगोळ्कने छेदी नाखवामा आव्या होय ते कृत्रिम नपुसको वर्द्धितक जाणवा

२. चिप्पिक—जन्मता थका ज जेना अड आगळीयडे मसळी नाख्या होय त आ बने जणावेल भेदमा चाकम नपुसकवेदनो उदय थाय ता शामाटे दीक्षा आपवी जोइए? ए शकाना निरसन माटे कहे छे के-तेओमा केटलाकने उपशम थइ जाय छे एटले तेओ कृत्रिम नपुसक छे पण सक्लिष्ट(अशुभ)परि णामी नथी माटे दीक्षाने लायक छे

३-४. मन्त्रौपधिसमुपहत—मत्रना प्रभावथी पुरुषवेद हणावाने कारणे नपुसक थइ गयो होय एवा केटलाक मत्र, जत्र होय छे जेना योगथी कुल्डी प्रमुख समानमा दाट तो लिंग नि सत्त्व बनी जाय अने कृत्रिम नपुसक बने एवी ज रीत औपधी वगराजीने पण नपुसक बनाव्यो होय आ बने प्रकारना नपुसको दीक्षान लायक छे

५. ऋपिशापित—कोई तपस्वी ऋषिए श्राप आपता कह्यु होय क-" मारी तपश्चर्याना प्रभावथी तु नपुसक थइ जा " ए प्रमाणे जे नपुसक बनेल होय ते पण प्रव्रज्या लइ शक छे

६. देवशापित—देवे श्राप आपीने नपुसक बनावेल हाय

आ रीत विचारता अडताळीश भेदो दीक्षा देवाने योग्य नथी आ सबध मा अपवाद अने उत्सर्गमार्ग जाणवो होय तो निशीथचूर्णी, पचकल्पभाष्य चूर्णी, व्यवहारचूर्णा प्रमुख पचागीना सूत्रो तथा ग्रथो जोवा

जे आचार्य सामाचारी न भणाव ते शत्रु समान जाणवा आचार्य जिह्वा द्वारा चेलाने चाटे, लाड लडावे तेने पण वैरी सदृश ज जाणवो ते सबधे विशेष वृत्तात जणावता कहे छे-

जीहाए विलिहंतो, न भद्दओ सारणा जहिं नत्थि ।
दंडेण वि ताडतो, स भद्दओ सारणा जत्थ ॥ १७ ॥

[जिह्वया विलिहन्, न भद्रक' सारणा यत्र नास्ति ।
दण्डेनापि ताडयन्, स भद्रक. सारणा यत्र ॥ १७ ॥]

गाथार्थ—जे आचार्य शिष्योने स्नेहपूर्वक चुम्बन करे छे, परन्तु हितमार्ग

मा प्रवृत्ति करावनार तथा स्वकर्तव्यनु स्मरण करावनार सारणा, वारणा, चोयणा अने पडिचोयणा न करावे-न समजावे ते आचार्य श्रेष्ठ नथी-कल्याणकारी नथी, परन्तु जे सद्गुरु समीपे रहेता छता सारणा, वारणादिक थता होय अने कदा चने दड आदिवडे ताडना करे तो पण ते श्रेष्ठ-हितकारी छे १७.

विवेचन-सुवर्णनी शृखला शा कामनी ? शृखला सोनानी होवा छता पण ते बधनकारक ज छे कोई आचार्य शिष्य प्रत्ये गमे तेटला वात्सल्यभाव धरा वता होय, स्नेहभाव राखता होय, मस्तक पर चुम्बनादिवडे प्रेम दर्शावता होय छता पण जो ते शिष्यने सयममार्गमा प्रवर्तावे नहीं, सारणा, वारणा, चोयणा अने पडिचोयणारूप धर्मकृत्य समजावे नहीं तो ते आचार्य शुभेच्छक न गणाय सारणा, वारणा इत्यादिक क्रिया जो न थाय तो साधु प्रमादी बने, कुसशीलियो थाय अने धीमे धीमे अधःपतनना मार्गे आगळ वधे सारणा-हितकारी कार्यमा प्रवर्तावे, उपदेश आपे के-'तारे गमन करती वखत ईर्यासमितिपूर्वक चालवु, आ काय त खोटु कर्यु, तेनु स्मरण राखजे अने फरी तनु अकाय न करीश' वारणा-विपरीत मार्गथी निवर्तवारूप 'हे साधु' आवु अशुभ काय हवेथी करशो नहीं, आ कार्य तमारे करवा लायक नथी, आ कार्यथी तमारु अहित-अकल्याण थशे' आ प्रमाणे पापकारी कार्यथी पाछो वाळे त वारणा चोयणा-'तमारा जेवाने आम करवु अयुक्त छे' एम जे कहेवु ते चोयणा हा त 'हे साधु' आवु अकार्य न करशो, एम मे कह्या छता तमे कर्यु तो तमे दोषना भागी थया, चारित्रमा स्खलन थयु, अतिचार लाग्यो, तमारा जेवाए तो आवु अकार्य-अशुद्ध आचरण न करवु जोईए' आ प्रमाणे वारवार करातो प्रेरणा ते पडिचोयणा

आवी चारे प्रकारनी प्रणालिका जे गच्छमा नथी ते आचार्य हितसाधक न जाणवा वळी जे आचाय दडे-ताडन-तर्जनादि करे परन्तु सारणा, वारणा दिक करे ते आचार्य सारा जाणवा ते ताडनादिक करे छे ते पण शिष्यना हितने माटे, वळी चारित्रमा विराधना थवा देता नथी ताडन-तर्जन करे ता पण सार णादिक करता होय तेवा आचाय समीपे रहेवु परन्तु लाड लडावता होय, रमत करावता होय परन्तु चारित्रना आधाररूप सारणादिक न होय तो तेवा आचार्य नी पासे न रहेवु प आ गाथानो भावार्थ छे ऊपर पदर तथा सोळमी गाथामां आचार्य शिष्य-शत्रु क्यारे कहेवाय ते जणाव्यु, हवे शिष्य गुरुनो वैरी क्यो रीत बने ? ते जणावे छ-

सीसो वि वेरिओ सो उ, जो गुरु न विबोहए ।

पमायमइराघत्थं, सामायारीविराहयम् ॥ १८ ॥

[शिष्योऽपि वैरी स तु, यो गुरु न विबोधयति ।
प्रमादमदिराग्रस्तम्, सामाचारीविराधकम् ॥ १८ ॥]

गाथार्थ–निद्रा, विकथादिक प्रमादरूपी मदिरावडे जेनु ज्ञान आवृत्त थई गयु छे तेवा तेमज सामाचारीना विराधक गुरुने हितोपदेश द्वारा जे धर्ममार्गमा स्थापन न करे ते शिष्य पण शत्रु सदृश ज छे. १८.

विवेचन–पदर तथा सोळमी गाथामा शत्रुसदृश आचार्य सबधी वर्णन कर्यु, हवे आ गाथामा शिष्य शत्रु जेवो क्यारे बने–शिष्यने शत्रु क्यारे जाणवो ? ते सबधी निरूपण करवामां आव्यु छे जो आचार्य अथवा गुरु निद्रा, विकथादिक पाच प्रकारनी प्रमादरूपी मदिरामा आसक्त होय, तेमा ज रच्यापच्या रहेता होय तो तेने साचो उपदेश आपवो, ज्ञानमार्गनी प्रेरणा करवी तेमज श्रीवीत राग परमात्माए प्ररूपेल सामाचारीनु यथार्थ पालन न करे तो तेने पंचाचार, प्रतिक्रमण अने पडिलेहणादि क्रियामा प्रवर्तावी, बीजाने पण प्रवर्तावया प्रेरणा करवी–आ प्रमाणे जो शिष्य गुरुने स मार्ग न लावे तो ते शिष्य शत्रुसदृश जाणवो आपणे आ ज ग्रंथमा शेलकाचार्यनी कथामा (पृ ३० थी ४१) जोई गया छीए के प्रमादी अने क्रियाशून्य बनेला शेलकाचार्यने तेमना पथक नामना शिष्ये पुन सयममार्गमा स्थिर कर्या हता जो आ प्रमाणे शिष्य स्वगुरुने पुन स्थिर न करे तो ते शिष्य पण शत्रुसदृश ज मनाय माता–पितानो प्रत्युपकार करी करी शकातो नथी तेम दीक्षागुरु के विद्यागुरुनो पण प्रत्युपकार कोई पण प्रकारे करी शकातो ज नथी मात्र जो गुरुने स्वधर्ममा स्थिर करे, तेने पतित थता अटकावे अने मोक्षमार्गना पथिक बनावे तो ज कईक अशे तेमना उपकारनो बदलो वळी शके श्रीस्थानागसूत्रमा(स्था० ३ उद्देशो १, सू० १३५) आ संबधी विवेचन करता जणाव्यु छे के–" तिण्ह दुप्पडियार समणाउसो ! त०–अम्मापिउणो १, भट्टिस्स २, धम्मायरियस्स ३, सपातोऽवि य ण केइ पुरिसे अम्मापियर सयपाग-सहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भगेत्ता सुरभिणा गधवट्टएण उव्वट्टित्ता तिहिं उदगेहिं मज्जावित्ता सव्वालकारविभूसिय करेत्ता मणुन्न थालीपागसुद्ध अट्ठारसवजणाउल भोयण भोयावेत्ता जावज्जीव पिट्ठिवडेंसियाए परिवहेज्जा, तेणावि तस्स अम्मा पिउस्स दुप्पडियार हवइ । " त्रण जणा दुष्प्रतिकार छे एटले ते त्रणनो प्रत्यु पकार करवो ते अति कठिन छे १ मातपितानो, २ भर्ता–स्वामी–मालीकनो, आपणने सुखी करे तेनो अने ३ धर्मपिता–धर्मगुरुनो, जेणे आपणने समकित पमाड्युं होय तेनो

(१) कोई पुरुष पोताना मातपितानु सहस्रपाक तेलवडे मर्दन करे, पछी करीने

तेनो संताप-कष्ट दूर करे, पछी सुगंधी पदार्थवडे उवट्टण करे-पीठी करे, पछी शुद्ध सुगंधी जळवडे त्रण वखत स्नान करावे, पछी उत्तम आभूषणो अने श्रेष्ठ वस्त्रो पहेरावे, पछी मनपसंद पढे तेवो स्वादिष्ट अढार व्यंजन (पदार्थ) युक्त भोजन करावे, तेमनी जिंदगी पर्यन्त एकधारी इत्यादिक वैयावच्च करे, पोताना स्कंध पर बेसाडी चाले अर्थात् तेमने लेशमात्र पण दु:खी न थवा दे छतां पण शास्त्रकार भगवंत कहे छे के ते पुत्र मातपिताना उपकारनो बदलो वाळी शके नहीं परंतु जो ते पुत्र मातपिताने केवलिप्ररूपित धर्म समजावे, तेमां स्थिर करे, धर्मक्रियामां अनुमोदन आपे तो ते पुत्र मातपिताना करेल उपकारनो बदलो वाळी शके, कारण के कह्यु छे के-धर्मस्थापनस्य महोपकारकत्वात्। अर्थात् धर्मप्राप्ति करावबाथी महाउपकार थाय छे आ प्रथम दुष्प्रतिकार जाणवो

(२) कोइ एक श्रेष्ठी पोताना दरिद्री गुमास्ताने-नोकरने पोतानो संपत्तिथी धनवंत बनावे, पछी ते भृत्य क्रमे क्रमे अनेक प्रकारे धनप्राप्ति करी अतुल समृद्धिवाळो बने अने विविध प्रकारना भोगविलासो भोगवे त्यारबाद जे प्रथम श्रेष्ठी हतो ते कर्मप्रभावे निर्धन-दरिद्री बनी जाय अने विचारे के-' मारो नोकर विपुल धनराशिवाळो थयो छे माटे ते मने कंईक आपशे '-आ प्रमाणे धारणा करीने पोताना पूर्वना गुमास्ता पासे जाय त्यारे ते नोकर विचारे के-'हू दरिद्री हतो त्यारे आ शेठना ज प्रतापथी धन-संपत्तिवाळो थयो छु माटे आ सर्व संपत्ति तेमने आपी दउ ?' आ प्रमाणे विचारी सर्व साहिबी शेठने अर्पण करी दे तो पण पोताना शेठना उपकारनो बदलो न वाळी शके परन्तु जो ते शेठने श्रीजिनेश्वरभगवंतभाषित धर्म पमाडे तेने समकिती बनावे तो तेना उपकारनो बदलो वाळी शके आवी ज रीते स्त्री पोताना पतिने धर्म पमाडे, प्रधान राजाने धर्म पमाडे इत्यादिक बीजो दुष्प्रतिकार जाणवो

(३) कोई शुद्ध चारित्रपात्र, क्रियातत्पर, पांच महाव्रतोनु यथार्थ पालन करनार साधु होय, तेनी पासे कोइ पण भव्य प्राणी आवी चढे अने तेमनी पासेथी वीतराग धर्मनु वचन सांभळीने तेनी सद्दहणा करीने, तेनो रूडी रीते स्वीकार करीने, तेनु यथार्थ रीते पालन करीने तेमज पोताना आयुभये मृत्यु पामीने चार निकाय पैकी (भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक) कोई पण एक निकायमां देव तरीके उपजे बाद अवधिज्ञानथी जोता तेने जणाय के-मारा धर्मगुरु अमुक क्षेत्रमां छे, परन्तु त्यां दुष्काल वर्ते छे पल्ले पोताना गुरुने लेशमात्र कष्ट न पडे ते माटे तेमने त्यांथी उपाडीने सुभिक्ष-सुकाळवाळा देशमां मूके अथवा तो भयंकर अटवीमां भूल्या पड्या होय त्यांथी उपाडीने वसतिवाळा स्थानमां मूके अगर तो तेमना शरीरमां घणा समयनो व्याधि होय ते दूर करीने तेमने निरोगी बनावे तो पण ते धर्माचार्य करेला

उपकारनो बदलो वळी शके नहीं, परन्तु कदाच ते धर्मगुरु संयमथी पतित थया होय, तेमनी धर्मश्रद्धा ओछी थती जती होय, उन्मार्गनु सेवन करी रह्या होय त्यारे देवलोकथी आवीने, केवलीभगवतप्ररूपित धर्म कहीने तेमा तेमने पुन स्थिर करे तो पूर्व करेला तेमना उपकारनो बदलो वळी शके

आ संबंधमा विशेष चीना जणावता कहे छे के-मातापिता विगेरेनो प्रत्युपकार थइ शके छे परन्तु धर्मगुरुनो तो आ लोक अने परलोकमा पण परेपूरा प्रत्युपकार थइ शकतो नथी, पहले के आ मर्ममा गुरु सविशेष दुष्प्रतिकारक छे श्रीउमास्वातिवाचक-महाशये श्रीप्रशमरतिग्रथमा कह्य छे के-" दुःप्रतिकारौ माता-पितरौ स्वामी गुरुश्च लोकेऽस्मिन्। तत्र गुरुरिहामुत्र च, सुदुष्करतर-प्रतीकारः॥" पहले के मातापिता पोषण करनार शेठ तथा धर्मगुरु आ लोकने विषे दुष्प्रतिकार छे, तेमा पण धर्मगुरु तो आ लोक अने परलोकमा पण दु खे करीने प्रतिकार करवा योग्य छे अर्थात् मातापिता विगेरेने जो धर्ममा स्थापन करीए तो आ लोकमा अनृणी थवाय परन्तु गुरुना अनृणी आ लोकने परलोकमा पण थई शकयु मुश्केल छे

आटला माटे ज आ अढारमी गाथामा कह्य छे के-जो आचार्य उन्मार्गगामी थया होय, विपरीत क्रिया करता होय तो तेना शिष्ये तेमने पुन धर्ममार्गमा स्थापन करवा, तेमने स्थिर न करे तो तेवा चेलाने वैरी-शत्रु सदृश जाणवो आ अढारमी गाथामा गुरुने प्रतिबोध आपवानो शिष्य माटे निर्देश कर्यो, परतु शिष्ये पोताना प्रमादी गुरुने केवी रीते समजाववा ते माटे नीचेनी गाथा दर्शावता कहे छे के-

तुम्हारिसा वि मुणिवर !, पमायवसगा हवंति जइ पुरिसा ।
तेणन्नो को अम्ह, आलंबण हुज्ज संसारे ? ॥ १९ ॥

[युष्मादृशा अपि मुनिवर !, प्रमादवशगा भवन्ति यदि पुरुषाः ।
तेनाऽन्यः कोऽस्माकमा-लम्बनं भविष्यति संसारे ? ॥ १९ ॥]

गाथार्थ-हे स्वामिन् ! हे गुरुदेव ! आपना जेवा पुरुष पण जो प्रमादवश थई जाय तो पछी आ अपार संसारसागरमा पडता मदभागी एवा अमने नौका समान आप सिवाय बीजा कोनो आधार ? अर्थात् अमने भवदु खमाथी कोण छोडावशे ?

विवेचन-आपणामा कहेवत प्रचलित छे के-" जेनो नायक आंधळो तेनु

कटक (सैन्य) बूडामा " आ उक्ति बराबर प्रमादी गुरुने लागु पडे छे जो उत्तम पुरुष-गच्छनायक पुरुष प्रमादवश थई जाय त्यारे तेमनो बोध कशु पण फळ निपजावी शके नहीं अने तेमना आचारविचार जोई केटलाक शिथिल बनना शिष्यो पण विशेष पतित थाय, माटे सारा शिष्यनी ए फरज छे के तेणे गुरुने प्रतिबोधवा-समजावी पुन शुद्ध मार्गमां स्थापित करवा समजाववाना प्रसगे शिष्य कहे के-" हे गुरुदेव ! सदा ता आ चार गतिरूप अगाध भवसागर माथी अमारो उद्धार करवामा जहाज समान छो जहाज ज समुद्रमा अवलम्बन रूप छे जो जहाज तूटे अगर डूबे तो तेना आश्रये रहेला पथिको पण पीडा पामे अगर तो डूबी जाय एवी रीते जो आप प्रमादवश बनशो तो पछी अमारे कोनु शरण स्वीकारवु ? " आ प्रमाणे विविध मिष्ट वचनथी गुरुने प्रतिबोधवा प्रयत्न करवो परन्तु कठिन के कडवु वचन न कहेवु स्तुति के प्रार्थनापूर्वक कहेवामा आवे तो तेनी गुरु प्रत्ये शीघ्र सारी असर थाय छे तेमनी स्तुति केवी रीते करवी अगर तो गुरुना केवी रीते गुण दर्शाववा ते सबधी वर्णन करता कहे छे के-

पुढवीविव सव्वसह, मेरुव्व अकंपिर ठिय धम्मे ।
चदुव्व सोमलेस, त आयरिय पससन्ति ॥ १ ॥

अप्परिसावि आलो-यणारिह हेउकारणविहिन्नुम् ।
गभीर दुद्धरिस, त आयरिय पससति ॥ २ ॥

कालन्नु देसन्नु, भावन्नु अतुरिअ असभतम् ।
अणुवत्तय अमाय, त आयरिय पससति ॥ ३ ॥

लोइयमामइएसु, सत्थेसु जस्स नत्थि सकरेवो ।
ससमयपरसमयम्मि अ, त आयरिय पसमंति ॥ ४ ॥

बारसहि वि अगेहि, सामाइयमाइपुव्वनिबद्धे ।
लद्धट्ठ गहियट्ठ, त आयरिय पससति ॥ ५ ॥

आयरियसहस्साइ, लहइ अ जीवो भवेहि बहुएहिं ।
कम्मेसु य सिप्पेसु य, धम्मायरणेसु नो कहवि ॥ ६ ॥

जे पुण जिणोवइट्ठे, निग्गथे पवयणमि आयरिया ।
ससारसुक्खमग्गस्स, देसगा ते हु आयरिया ॥ ७ ॥

देवा वि देवलोए, निग्गथ पवयण अणुसरता ।
अच्छरगणमज्झगया, आयरिए वदया इति ॥ ८ ॥

जह दीवो दीवसय, पइप्पए दिप्पई य सो दीवो ।
दीवसमा आयरिया, अप्प च पर च दीवन्ति ॥ ९ ॥
देवा वि देवलोए, निच दिव्वोहिणा वियाणता ।
आयरियमणुसरता, आसणसयणाणि मुञ्चन्ति ॥ १० ॥

अर्थात् पृथ्वीनी पेठे सर्व प्रकारना मानापमान सहन करे, धर्मने विषे मेरुपर्वतनी माफक अकंपित-अडग-दृढ रहे, चन्द्रनी सरखी सौम्यता-शीतळता आपे, कोईनी पण रहस्यमय वात अन्यने न करे, आलोयण देवा योग्य श्रीजैन शासनना सूत्रने विषे दर्शावेला हेतु तथा कारणो जाणे अगर तो संयम आराधननी विधि जाणे, सागरनी समान गांभीर्य गुणधारक होय, पाखंडी-मिथ्यात्वीओने दुर्धर एटले के परवादी जो वाद करवा आवे तो जीती शके नहीं, पूर्वे वर्णवेल सुकाळ अगर तो दुष्काळ विगेरेने जाणनार होय, विविध देशोने जाणे, मनुष्यना भावो जाणे, वगर विचार्युं कार्य न करे, भ्रान्ति रहित होय, श्रीतीर्थंकरपरमात्माना आज्ञामां पोते वर्तता होय अने पारकाने वर्तवा प्रेरणा करता होय, माया-कपट रहित होय, लौकिक सर्व व्यवहार तेमज स्वशास्त्र अने परदर्शनना जाणनार होय, सामायिकादि चौदपूर्व सयुक्त द्वादशांगीश्रुतना ज्ञाता होय अने तेना अर्थने जाणनार तेमज परंपरा प्रमाणे पृच्छा कराने अथवा निर्णय करनार होय-आवा प्रकारना गुणवाळा आचार्यनी श्रीतीर्थंकर परमात्मा पण प्रशंसा करे छे अन्य प्रकारना आचार्य लेपक शिल्पाचार्य, कर्माचार्य एम चीतर कला शिखवाडनारा तथा लुहारीकाम, सुतारीकाम विगेरे हुन्नर शिखवाडवावाळा आचार्यो तो हजारो भवोमां भमे छे परन्तु धर्माचार्य एटला बधा भवोमां भ्रमण न करे श्रीजिनेश्वरप्ररूपित निर्ग्रंथ मार्गनुं प्ररूपण करनार होय एटले के एवो उपदेश आपनारा होय, जेम के-कोई हिंसादि पांच आश्रवोमां रक्त रहेशे ते संसाराब्धिमां डूबशे अने पांचे आश्रवोना जे त्याग करशे तेमज भगवंतना फरमान मुजब तप अने धर्मानुष्ठान करशे ते मोक्षमार्गनी प्राप्ति करी शकशे वळी अप्सराओनी मध्यमां सुखविलास भोगवता देवो पण निर्ग्रंथ प्रवचननी प्रशंसा करे छे के-आ वीतरागभाषित धर्मना अनुसरणथी अमे आवी दिव्य देव-ऋद्धि पाम्या आ उपरांत आचार्यनो पोता प्रत्ये थयेल उपकार जाणी ज्यां आचार्य विचरता होय त्यां सपरिवार आवीने तेमने ते देव वांदे छे अने ए रीते शासनप्रभावना करे छे आवा गुणशाळी आप आचार्य छो वळी आप जळहळता दीपक समान छो जेम एक दीपक अन्य सेंकडो दीवाने प्रकाशित करे तेम आप पोते दीपो छो अने शिष्य समुदायने दिपावो छो अर्थात् आ लोकमां जैनधर्मने प्रकाशीने दीपो छो अने परलोकमां देवगति प्राप्त करो छो तेवी रीते अन्य भव्य प्राणिओना उद्धार करी परलोकमां तेमने देवगतिना भाजन बनावो छो वळी देव अवधिज्ञान युक्त होय छे अने ज्यारे तेना विचारवामां अगर तो देखवामां

उपकारी आचार्य आवे त्यारे ते पोताना सिंहासनादिनो त्याग करी, सात-आठ डगला आगळ चाली वंदन करे छे तेवा समर्थ शक्तिशाळी आचार्यपदमां आप बिराजो छो माटे आप जेवा स्वपरउपकारीए प्रमादवश बनवु उचित ज नथी हे प्रभो ! जो आप प्रमादाचरण करशो तो अमारो उद्धार कोण करशे ? (१-१०) आ दश गाथा चन्द्रवेध्यक प्रकीर्णकनी छे आ प्रमाणे मधुर वाणीथी शिष्य प्रमादी बनता आचार्यनु शिथिलपणु दूर करावनु

हवे उत्तम आचार्य अने अधम आचार्य वगेरेना स्वरूपनु वर्णन चार गाथाओ द्वारा दर्शाववामां आवे छे-

नाणम्मि दंसणम्मि य, चरणम्मि य तिसु वि समयसारेसु ।
चोएइ जो ठवेउ, गणमप्पाणं च सो अ गणी ॥ २० ॥

[ज्ञाने दर्शने चरणे च, त्रिष्वपि समयसारेषु ।
नोदयति यः स्थापयितुं, गणमात्मानं च स च गणी ॥ २० ॥]

गाथार्थ–श्रीजिनशासनमां प्रधान–श्रेष्ठ स्वरूप ज्ञानाचार, दर्शनाचार तथा चारित्राचार तेमज तपाचार अने वीर्याचारने विषे पोताना साधुसमूहने, पोताने तेमज श्रोतासमूहने स्थिर करवा जे सतत भरी प्रेरणा करे तेने ज श्री तीर्थंकर तथा गणधर प्रमुख आप्तजनोए आचार्य कहेल छे.

विवेचन–आठ प्रकारनो ज्ञानाचार छे, दर्शनाचार पण आठ प्रकारनो छे, 'च'कार शब्दथी बार प्रकारनो तपाचार पण समजवो, आठ प्रकारना चारित्राचार छे अने बीजा 'च'कार शब्दथी छत्रीश प्रकारनो वीर्याचार जाणवो आ प्रमाणे आचार तो पांच थया अने मूळ गाथामां तो 'तिसु वि' शब्दथी त्रणनी ज संख्या दर्शावी छे तो कोइने शंका उद्भवे के त्रणने बदले पांचनी संख्यानु ग्रहण केम कर्युं ? आ शंकानो उत्तर ए छे के-ग्रंथकारे त्रणनी अंतर्गत ज तपाचार अने वीर्याचारने जणाव्या छे अलग पाड्या नथी माटे मूळ गाथामां जणावेल शब्द 'तिसु' त्रणवाचक बराबर घटित ज छे आवा त्रण प्रकारना सिद्धांतना सारभूत एटले जैनदर्शनमां जेना करतां विशेष काइ नथी तथा ते त्रणे प्रकारोमां जे पोताना आत्माने, पोताना साधुसमुदायने तेमज 'च' शब्दथी श्रोतासमूहने पण प्रवर्ताव-प्रेरणा करी आचरणमां उत्साहवंत बनावे तेवा आचार्यने तीर्थंकरभगवंतोए उत्तम आचार्य जणावेल छे

हवे प्रथम ज्ञानाचारनु स्वरूप दर्शावता कहे छे के-" काले १ विणए २

बहुमाणे ३, उवहाणे ४ तहा अनिह्नवणे ५। वजण ६ अत्थ ७ तदुभए ८, अट्ठविहो नाणमायारो ॥ १ ॥" १. काळे—अगप्रविष्ट अने अनंगप्रविष्ट एम बे प्रकारनु जे सूत्र छे तेनी सज्झाय माटे जे काळ जणाव्यो होय ते समये ज स्वाध्याय करवो परंतु अकाळे सज्झाय न करवी जो अकाळे स्वाध्याय करवामा आवे तो प्रायश्चित्त लागे आ सबधमा शका करता कोई कहे के-" ज्ञाननु पठन-पाठन करवामा काळ-अकाळनो विचार शा माटे करवो? ए तो प्रतिदिन पठन करवायोग्य ज छे एटले तेने माटे काळ-अकाळनो प्रतिबध न होई शके " आना जवाबमा जणाववामा आवे छे के-अकाळे करेल स्वाध्याय निष्फळ नीवडे छे वर्षाऋतुमा क्षेत्र खेड्यु होय तो ते क्षेत्र सारो पाक निष्पन्न करी शके परन्तु वर्षाऋतुमा प्रमादी बनी, खेडूत कार्तिक मासमा क्षेत्र खेडवा माडे तो तेने कशो लाभ न थाय तेम अकाळे करेल सज्झाय पण निष्फळ ज नीवडे आ उपरात अकाळे स्वाध्याय करवाथी मिथ्यात्वी देव छळ करे, बुद्धिबळ घटे, विद्या फळ न आपे, आयुष्य ओछु थाय, तीर्थंकर भगवतनी आज्ञानो भग थाय इत्यादि दोषापत्ति आवे आ सबधमा एक सक्षिप्त दृष्टात जणावता ग्रथकार कहे छे के-एक साधु हता तेमणे शास्त्राभ्यास ठीक कर्यो हतो परतु तेओ हमेशा अकाळे ज स्वाध्याय करता एकदा नगरनी देवीने आ हकीकतनी जाण थता तेणे विचार्यु के-कोई मिथ्यात्वी देव आवी जशे तो साधुने पीडा करशे माटे तेमने समजाववा जोइए, परतु साधु स्पष्ट कहेवाथी मानशे नहीं एम विचारी नगरदेवीए एक भरवाडणनु रूप धारण कर्यु अने संध्यासमये छाशनु वासण मस्तक पर लई ज्या आगळ पेला साधु सज्झाय करी रह्या हता ते स्थाननी आसपास " कोई छाश ल्यो, कोई छाश ल्यो " ए प्रमाणे ऊच स्वर बोली परिभ्रमण करवा लागी आ प्रमाणे वारवारना शब्दोच्चारथी साधुना स्वाध्यायध्यानमा व्याघात थवा लाग्यो एटले तेमने स्वाभाविक क्रोध उद्भव्यो तेमणे आक्रोशपूर्वक पेली भरवाडणने कह्यु के-"हमणा तारी कोण छाश लेशे? शु आ सध्यासमय छाश वेचवानो काळ छे? छाश क्यारे वचाय तेनु पण तने भान नथी? अत्यारे तने कोण ग्राहक मळशे? तारी महेनत वृथा जशे." आ प्रमाणे साभळी देवीस्वरूप भरवाडणे कह्यु के-" हमणा तमे अध्ययन करवा माड्यु छे ते शु ते योग्य छे? अध्ययन करवानो आ समय होई शके? शुं आ अकाळे करातो सज्झायनु फळ मळशे?" साधुने पोतानी भूल समजाई देवीए तरत ज प्रत्यक्ष थईने साधुने समजावता कह्यु के-" हु नगरदेवी छु तमने समजाववा माटे मारे आ रूपातर करवु पड्यु अकाळे स्वाध्याय करवाथी मिथ्यात्वी देवना उपद्रवनो भय रहे छे, अकाळे मरण पण थाय छे, माटे हवेथी अकाळे सज्झाय न करशो " साधु देवी-वचनथी समज्या अने त्यारबाद काळे ज स्वाध्याय ध्यान शरू

रहवुं २. विनय—जे श्रुत-सिद्धांतनु अध्ययन करावे ते गुरुनो विनय करवो; ते आवे त्यारे ऊभा थवु, तेओनु पाद-प्रक्षालन करवु, तेमनी आज्ञानो तरत ज अमल करवो इत्यादि ३. बहुमान—जे सूत्र भणावे तेने पोताना हृदय गत भाव जणावी, तेमने उच्च आसने बेसारी शास्त्राभ्यास शीखवो ते प्रमाणे करवाथी विद्या तथा विद्यादाता गुरनु पण बहुमान थाय छे अने तेने परि णामे सुखपूर्वक विद्या प्राप्त थाय छे ४. उपधान—उपधान तप करवो सूत्रो भणवा माटे जे जे प्रकारनो तप शास्त्रमा जणावेल होय ते तप करीने भणवुं तेनु बीजु नाम जोग पण कहेवाय छे जे जे शास्त्राध्ययनोने माटे आगाढजोग अने अनागाढजोग कह्या होय ते ते अध्ययनोना पठन निमित्ते जोग करीने पछी सूत्र भणे-शीखे तो तेनु ज्ञान जल्दी प्राप्त थाय छे उपधान कर्या विना अभ्यास करे तो विराधक थाय ५. अनिह्नव—गुरुने ओळवधा नहीं जेमनी पासे शास्त्रा भ्यास कर्यो होय तेनु ज नाम ग्रहण करवु परन्तु भण्या होइए कोईकनी पासे अने नाम लईए अन्य कोईनु तो दोष लागे, माटे गुरुनु सत्य नाम जाहेर करवु ६. व्यंजन—शास्त्राभ्यासमा अगर तो श्रुतमा जे अक्षरो होय तेनो भेद-फेरफार न करवो जे प्रमाणे भाषाबद्ध होय ते प्रमाणे ज उच्चार करवो परन्तु तेमां परिवर्तन न करवुं दृष्टांत तरीके 'धम्मो मंगलमुक्किट्ठ' एवो पाठ छे तेने बदले तेवा ज भाववाळो पाठ फेरवीने बोले के 'पुण्ण कल्लाणमुक्कोसं' तो दोष लागे एटला माटे आवो व्यंजनोनो फेरफार कदापि न करवो ७. अर्थ—अर्थभेद न करवो एटले सूत्रनो जे अर्थ थाय तेथी विपरीत-ऊलटो अर्थ न करवो दृष्टान्त स्वरूप श्रीआचारांगसूत्रमा पाठ छे के-"आवंती (यावती) लोगंसि विप्परामुसन्तीति"—अर्थात् एटलापक पाखंडी लोको छ कायना जीवोने अनेक प्रकारे हणी रह्या छे, एटले के जेटला पाखंडी मिथ्या त्वी लोको छे ते ज छकायना हणनारा छे आ प्रमाणे आ सूत्रनो अर्थ होवा छतां तेनो विपरीत अर्थ करता कहे के-अवंतीदेशमां जे लोको छे ते एक-बीजाथी दूर रहे छे आ प्रमाणे ऊलटो अर्थ करे तो दोष लागे ८. तदुभय—सूत्र अने अर्थ बन्नेनो विपरीत अर्थ करे दा त धर्मो मंगलमुत्कृष्ट, अहिं सापर्वतमस्तकं-एटले धर्म ए उत्कृष्ट मंगल छे अने अहिंसा ते पर्वतमस्तक (शिखर) छे आमां बन्नेनो भेद (फेरफार) कई रीते थया ते आपणे तपासीए प्रथम तो पाद प्राकृत होवा छता तेने फेरवीने संस्कृतमां कह्यु अने अर्थ पण शुद्ध संस्कृत कहेवाथी पाठभेद थयो बीजा पादमा पाठभेद अने अर्थ भेद बने छे माटे कदापि आ प्रमाणे फेरफार न करवो; कारण के व्यंजननो

फेरफार थाय पटले अक्षर फरी जाय, अक्षर फरी जाय पटले अर्थ फरी जाय अने आ प्रमाणे अर्थभेद थाय तो क्रियाभेद पण थाय, क्रियामा परिवर्तन थता मोक्षनो अभाव थाय, मोक्षना अभाव थतां संयम-ग्रहण निष्फळ नीवडे आ प्रमाणे परंपराए आचारहीन थनी जवाय, केवलिभगवतभाषित मार्गना लोपक थई जवाय अने महापातक लागे माटे कदापि अर्थ तथा सूत्रनो भेद न करवो

दर्शनाचार पण आठ प्रकारनो कह्यो छे-" निस्संकिय १ निक्कंखिय २- निव्वितिगिच्छा ३ अमूढदिट्ठी अ ४। उववूह ५ थिरीकरणे ६, वच्छल्ल ७ पभावणे ८ अट्ठ ॥ २ ॥ " १. निःशंकित–देशशंका अने सर्वशंका रहित देशशंका पटले जीव तो बधा सरखा ज छे, तो सूत्रमा भव्य अने अभव्य एम बे प्रकारना जीवो केम कह्या ? सरखा स्वरूपमा भेद न होवो घटे-आ प्रमाणेनी जे शंका ते देशशंका कहेवाय शास्त्रकार कहे छे के-आ देशशंका न करवी, कारण के जीवनुं लक्षण तो एक ज छे परन्तु स्वभावनु विचित्रपणु होवाथी भव्य अने अभव्य बने प्रकार घटी शके छे स्त्रीओ घणी होय परन्तु केटलीक वांझणी होय छे ज्यारे केटलीक संतानवाळी होय छे सर्वशंका पटले शु ? ते दर्शावता कहे छे के-जैनसूत्रो तो बधा प्राकृत भाषामा छे माटे कोण जाणे कोणे ते बनाव्या हशे ? टदा प्रकारना गपाटा लागे छे शास्त्रमा जणावल अंगुलना असंख्यातमा भागनु शरीर, समयनु प्रमाण इत्यादिक बुद्धिमां न उतरे तेवी हकीकत छे-आवी शंका ते सर्वशंका कहेवाय आवी शंका कदापि न करवी, केम के तेम करवाथी जैनशासन परत्वेनो प्रेम अलोप थई जाय छे वळी विचारवु के-गणधरमहाराजाओ परोपकारी अने एक मात्र परहित साधवामा तत्पर हता तेमने अंशमात्र पण स्वार्थ न हतो तेमणे जाण्युं के संस्कृत भाषा बालजनोने, स्त्रीवर्गने, मंदबुद्धिवाळा तेमज अल्पबुद्धिवाळा प्राणिओने समजवामा कठिन पडशे-आवडशे नहीं माटे सुगम पवी प्राकृत भाषामा ज सूत्रग्रथोने गुंफित कर्या संस्कृतभाषाना तो तेओ पारगत हता परंतु आ उपकारक बुद्धि लक्षमा राखीने ज तेओए प्राकृतभाषामा ज सूत्ररचना करी छे वळी देशशंका अने सर्वशंका बीजी रीते पण जणावता कहे छे के-पाणीमां असंख्याता जीव कह्या छे ते हशे के नहीं ? एवी शंका ते देशशंका अने जैन धर्म आ ज छे के बीजो पण हशे ? एवी शंका ते सर्वशंका जाणवी आ बने प्रकारनी शंकाओ रहित जीव अरिहंत परमात्मानु शासन पामीने दर्शनाचारनुं शुद्ध रीते आचरण करी शके छे-आ प्रमाणे समकिती अने सम्यक्त्वनो अभेद दर्शाव्यो २ निष्कांक्षित–अन्य मतनी वांछा रहित वांछा-कांक्षा बे प्रकारनी छे-(१) देशकांक्षा अने (२) सर्वकांक्षा देशकांक्षा पटले बुद्धधर्म पण सारो जणाय छे, कारण के तेमा पण दयाधर्मनु प्ररूपण करवामा आव्यु छे-आ प्रमा

जेनी इच्छा ते देशकांक्षा सर्वकांक्षा एटले वेदधर्म, शिवधर्म, बुद्धधर्म इत्यादि सर्व धर्मो सारा छे कारण के बधा धर्ममां मोक्षमार्ग कह्यो छे-आ सर्वकांक्षा जाणवी आ बन्ने प्रकारनी कांक्षा रहित धर्मनुं सेवन करवुं वळी विचारवुं के-केवली भगवंतना मार्ग (जैनधर्म) सिवाय कोई बीजा मतमां मोक्ष नथी ज

पंदर प्रकारे जे सिद्ध थया छे ते सर्व समभावभावित आत्मा थईने मुक्ति स्थानमां विराज्या छे अने तेवा समभावभावित आत्माए उपदेशेलो धर्म ते फक्त जैनधर्म ज छे माटे ते सिवायना अन्य सर्वकोई धर्मो मिथ्यात्वी मार्ग छे

३. निर्विचिकित्सा—धर्मफळना संदेह रहित, तथा साधु-साध्वीना मलिन गात्रनी दुगंछा न करनार प्रतिक्रमण, पडिलेहणादिक धार्मिक अनुष्ठान करुं छुं परन्तु ते क्रिया कठिन छे अने तेनुं शुं फळ प्राप्त थशे? फळ प्राप्त थशे के नहीं? कारण के परलोकथी आवीने कोई एम कहेतुं नथी के अमुक क्रियाना फळथी मने आवी शुभ गति प्राप्त थई बीजा धर्ममां पण पाप करनारा लोको सुखी जणाय छे अने आपणे तो आवी कष्ट क्रिया करीए छीए छतां सुख भासतुं नथी वळी आटला वर्षो सुधी आ पडिलेहण, प्रतिक्रमणादिक क्रियाओ करी छतां तेनुं कशुं फल प्राप्त थतुं जणातुं नथी-आ प्रमाणे फळनो संदेह कदापि न करवो तेमज साधु या साध्वीनी 'आ तो स्नानादिक करता नथी तेथी मलिन गात्रवाळा छे, दंतधावन पण करता नथी तेथी तेमनुं मुख दुर्गंधवाळुं होय छे' आ प्रमाणे तेमनी दुगंछा पण कदापि न करवी ते निर्विचिकित्सा

४. अमूढदृष्टि—मिथ्यात्वीना अज्ञान तपस्यादिक कष्ट तथा चमत्कार देखी व्यामोहित न थनार अन्य मतना कोई बाल तपस्वीने उग्र तपश्चर्या (अज्ञान कष्ट) करतो निहाळी तेना प्रत्ये आदरभाव न लाववो तेमज तेवा कोई सन्यासी बावा इत्यादिकना मंत्र-तंत्रना चमत्कार देखी व्यामोहित न थाय एटले के स्वधर्ममां ज स्थिर रहे 'आ इतर धर्म पण सारो छे माटे आपणे तेनुं पण अनुकरण करीए आ इतर धर्म प्रभाववाळो जणाय छे तो तात्कालिक फळनी अपेक्षाए ते धर्मनुं सेवन करवुं सारुं छे' एम पण न विचारे आ ते प्रमाणे स्वधर्ममां स्थिर न रहे तो समकित चाल्युं जाय अन्यधर्मी तपस्वीओनी तपस्या के खरेखर समजणपूर्वकनी तपश्चर्या नथी, ते तो अज्ञान तप मात्र छे तथाप्रकारना देहदमनपूर्वक जो वीतरागमार्गनुं अनुकरण करे तो अज्ञान तपद्वारा थती सिद्धि करता अनेकगणुं पुण्य उपार्जन करे अज्ञान तप अने जयणापूर्वकना तप वच्चे मेरु अने सरसव जेटलुं अंतर छे

५ उपबृंहक—सरखा धर्म पाळनारा साधर्मिक बंधुना गुणनी प्रशंसा करवी कोई पण साधर्मिक बंधुए अष्टाह्निक महोत्सव कर्यो होय, सारी तपश्चर्या करी होय, प्रतिष्ठादि महोत्सव आरंभ्यो होय, साधर्मिक वात्सल्य कर्युं होय, दीक्षामहोत्सव

योज्यो होय-आवा आवा धार्मिक शुभ प्रसंगोमां ते ते कृत्य करनारनी प्रशंसापूर्वक कहेवुं के-" धन्य छे तमने तमे तमारी संपत्तिनो आवा पुण्यकार्यमां सदुपयोग कर्यो तमारा जेवा महानुभावथी ज शासनशोभा वधे छे ' आ प्रमाणे गुणानुवाद करवाथी ते ते कृत्य करनारनी भावना वृद्धि पामे छे तथा हृदय प्रफुल्लित बने छे ६. स्थिरीकरण-साधर्मीबंधुने धर्ममां स्थिर करवो कोई दीन माणस आजिविका चलावी शकतो न होय अने दुःखने कारणे 'बीजो धर्म पालु तो सुखी थईश-मने मदद मळशे ' एवी आशाथी स्वधर्म त्यागतो होय तो तेने धंधो-रोजगार आपी, सहाय आपी स्वधर्ममां स्थिर करवो आधुनिक जमानामां घणा लोको स्वधर्मनो त्याग करी मुस्लीम अगर तो ख्रिश्चियन धर्म स्वीकारे छे तेमने तेम करता अटकावी स्वधर्ममां स्थिर करवा अथवा तो कांई शंका करीने धर्मनो त्याग करवा इच्छतो होय तो तेने पण उपदेश आपीने सम्यक्त्वमां दृढ बनाववो ७. साधर्मिक वात्सल्य-साधर्मी बंधु प्रत्येनी प्रीतिथी पोतानी शक्ति प्रमाणे तेना पर उपकार करे, भोजन करावे, पहेरामणी आपे, बक्षीस आपे, सहाय आपे ८. प्रभावना-धर्मना उपदेशद्वारा, धर्मकथाद्वारा धर्मनो प्रचार करे, लोकोने सत्य धर्म समजावे, रथयात्रादि महोत्सवो योजे, तीर्थनी स्थापना करे इत्यादिक प्रकारोथी सम्यक्त्वने दिपावे आ जणावेल आठ प्रकारो पैकी प्रथम चार अभ्यंतर दर्शनाचार छे ज्यारे छेल्ला चार बाह्य दर्शनाचार छे

चारित्राचार पण आठ प्रकारनो दर्शाव्यो छे-"पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तिहिं । एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥ ३ ॥" प्रणिधान एटले चित्तनी चंचळता रहित अने जोग एटले आहारादिक व्यापार अर्थात् आहारादिक कार्य करवामां चंचळता रहित व्यापारवाळो आ बाबतमां शंका दर्शावता कहे छे के-आवी व्यक्ति तो अविरतसम्यग्दृष्टि पण होय आ दोषापत्ति टाळवा माटे कहे छे के १-५. पांच समिति अने ६-८ त्रण गुप्ति युक्त होय. १. ईर्यासमिति-मार्गमां जता-आवता जीवोनी रक्षा अर्थे साडात्रण हस्तप्रमाण आगळ नजर राखीने उपयोगपूर्वक चाले २ भाषा-समिति-निरवद्य-पापरहित, कोई पण जीवने दुःख न थाय तेम विचारपूर्वक बोले, जेमतेम अव्यवस्थित न बोले तेमज उघाडे मुखे न बोले ३ एषणासमिति-बेंतालीश दोष रहित गोचरी ले, वस्त्र, पात्र पण विधिपूर्वक ग्रहण करे ४. आदानभंडमत्तनिक्षेपणासमिति-वस्त्र-पात्रादिक जग्या जोई, प्रमार्जी ले-मूके ५. पारिष्ठापनिकासमिति-लघुनीति तथा वडीनीति तेमज श्लेष्मादिक शुद्ध

जग्या जोईने परठवे ६. मनोगुप्ति–मनने अशुभमा रास्तवु पापकार्यना विचार थी मनने गोपववु ७. वचनगुप्ति–विना कारणे निरवद्य वचन पण न बोलवु ८ कायगुप्ति–कायाने गोपववी अर्थात् यतनापूर्वक जग्या पूंजी-प्रमार्जी ऊठवु, बेसवुं, जवु, आयवु इत्यादि

चार प्रकारनो तपाचार कहेल छे–"बारसविहम्मि वि तवे, सब्भितरबाहिरे कुसलदिट्ठे। अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वो सो तवायारो ॥ ४ ॥ अणसण १ मूणोअरिया २, वित्तीसंखेवण ३ रसच्चाओ ४। कायकिलेसो ५ संलीणया य ६, बज्झो तवो होइ ॥ ५ ॥" श्रीतीर्थंकर परमात्माओए छ प्रकारनो बाह्य अने छ प्रकारनो अभ्यंतर एम बार प्रकारनो तप उपदेशेलो छे ते तप ग्लानि रहित अने आजीविकाना दोष रहित करवो बाह्य तपना छ प्रकार आ प्रमाणे जाणवा १. अणशण–चारे प्रकारना आहारनो त्याग अणशण बे प्रकारनु छे-१ इत्वर अने २ यावत्कथिक इत्वर अणशण एटले केटलोक काळ आहार नो त्याग कर्या पछी आहार करे ते श्रीउत्तराध्ययनसूत्रमा कह्यु छे के– "इत्तरियमरणकाला य, अणसणा दुविहे भवे। इत्तरिया सावकखा, निरवकखा निविज्जिया ॥ १ ॥" अर्थात् बे प्रकारना अणशण कहेल छे-१ इत्वर अने २ यावत्कथिक इत्वर ते सावकाश छे अने बीजु निरवकाश छे इत्वर अणशण नवकारशीथी प्रारंभीने (श्रीऋषभदेवस्वामीना समयमा) एक वर्ष पर्यंतना उपवासवडे थाय छे छेल्ला श्रीमहावीरस्वामीना शासनमा तो छ महिना पर्यंतना उपवासद्वारा थाय छे यावत्कथिक एटले जिंदगी पर्यंतनु अणशण ते त्रण प्रकारनु दर्शाव्यु छे (१) पादपोपगमन, (२) इंगितमरण अने (३) भक्त परिज्ञा (१) पादपोपगमन चारे प्रकारना आहारना त्याग करवापूर्वक, हाथ-पग इत्यादिक हलाववानी चेष्टा रहित, आखवु मटकु पण मार्या वगर अने शरीरना प्रतीकार सिवाय एटले के कोइ पासे शरीर मसळाववु इत्यादिक वैयावचनी क्रिया रहित, जेवी रीते वृक्षनी शाखा भूमि पर पडी होय तेनी माफक चेष्टा रहित पडया रहेवुं ते पादपोपगमन अणशण कहेवाय तेना बे भेद छे-[१] सव्याघात अने [२] निर्व्याघात सिंह, व्याघ्र, सर्प इत्यादिक हिंसक प्राणिओनो उपद्रव थये छते पादपोपगमन अणशण ग्रहण करवु ते सव्याघात जाणवु सूत्र अने अर्थना ज्ञाता, जेणे घणा शिष्योने सलेखना करावी होय तेवा मुनिराज पोते सलेखनापूर्वक चारे आहारनो त्याग करीने जे पादपोपगमन अणशण स्वीकारे ते निर्व्याघात समजवु आ समयमा ए हकीकत ध्यानमा राखवी के सलेखना विना आ अणशण न करवु कदाच करे तो आर्त्तध्यान

थवानो भय रहे (२) इंगितमरण-भूमिप्रदेशनुं प्रमाण बांधीने जे अणशण करवु ते 'आटली भूमिमां मारे रहेवु,' ए प्रमाणे निरधार करीने संहनननो अपे क्षाए रहेवु पादपोपगमन अणशण करवाने जे अशक्त होय ते आ अणशण स्वीकारे छे, कारण के प्रथम पादपोपगमन अणशणमां शरीरप्रतिक्रिया न करी शकाय, ज्यारे आ बीजा अणशणमां तो जो पोताना शरीरे कंइपण बाधा-उपद्रव थाय तो स्वहस्ते तेलमर्दनादि थाय, परन्तु बीजा पासे तेवी क्रिया न कराघाय आ अणशणमां पण चारे आहारनो त्याग करवामां आवे छे (३) भक्तपरिज्ञा-इंगितमरण स्वीकारवाने असमर्थ अने श्रेष्ठ संहननहीन तिवि हार अथवा चोविहारवडे आ अणशण करे आ अणशण करनार सप्रतिकर्मा होय छे एटले शरीरने विषे व्यथा थती होय तो बीजा पासे वेयावच्च करावे, तेलमर्दनादि कराय आने भक्तपरिज्ञा कहो के भक्तपच्चक्खाण कहो-बन्नेनो अर्थ एक ज छे आ त्रणे प्रकारना अणशणो निहारिम अने अनिहारिम एम बे प्रकारना होय छे कालधर्म पाम्या पछी जे देहने उपाडीने जगलमां वोसरावषु पडे ते निहारिम अने जे शरीरने न वोसरावषु पडे ते अनिहारिम जाणवुं जे अणशण करवाने अशक्त होय तेने माटे २. ऊणोद-रिका कहे छे ऊणोदरिका त्रण प्रकारनी छे श्रीस्थानांगसूत्रमां कह्यु छे के-' तिविहा ओमोयरिया प० त०-उवगरणोमोयरिया १, भत्तपाणगोमोयरिया २, भावोमोयरिया ३ ।' अर्थात् त्रण प्रकारनी ऊणोदरिका कहेली छे (१) उपक रण-ऊणोदरिका, (२) भक्तपाण(आहार)ऊणोदरिका अने (३) भाव-ऊणोदरिका टीकाकार आ संबधमां जणावे छे के-(१) पहेली उपकरण-ऊणोदरिका जिनकल्पी साधुओने न होय, कारण के ९/१२ अगर तो मात्र बे ज उपकरण राखे तो तेमने चाले परन्तु स्थविरकल्पीने आ ऊणोदरिका न होय जो स्थविरकल्पी शास्त्रो क्त उपधि न राखे तो तेनाथी चारित्रपालन कठिन बने, एटले तेमने चौद उप करणो राखवा पडे, परन्तु तथी विशेष न राखवा ते उपकरण-ऊणोदरिका (२) बीजी ऊणोदरिका भक्तपाणऊणोदरिका-आहारपानीमां कमी करवो त तना पाच प्रकार छे-" अप्पाहारउवड्ढा, दुभागपत्ता तहेव किंचूणा । अट्ठ दुवालस सोलस, चउवीस तहिक्कतीसा य ॥ १ ॥ " [१] अल्पाहार-एक कवळथी प्रारंभीने आठ कवळ सुधी आहार करे ते अल्पोणादरी एक कवळनो जघन्य अल्पोणादरी, बे कवळथी सात कवळ सुधीनी मध्यमोणादरी अने आठ कवळनी उत्कृष्णो दरी [२] अपार्द्धऊणोदरी नवथी बार कवळ सुधी आहार करवो ते [३] द्विभा गऊणोदरी-तेरथी सोळ कवल सुधी आहार करवो ते [४] प्राप्तऊणोदरी-सत्तर कवळथी चोवीश सुधी आहार करवा ते [५] किंचिन्यूनादरी-पचवीश कवळथी एकत्रीश कवळ सुधी आहार करवो ते आ बधा प्रकारोमां जघन्य तथा मध्यम

भेदो स्वमतिअनुसार समजी लेवा बत्रीश कोळिया ल्या ते प्रमाणोपेत भोजन कहेवाय, तेथी वधारे एक पण कवळ ले ता ते अतिमात्राहारी कहे वाय बत्रीश कवळ सुधी ज ऊणोदरिका जाणवी आवी ज रीते पाणी पीवामा पण ओछु पीवु ते पाणऊणोदरिका (३) भावऊणोदरिका-क्रोध, मान, माया अने लोभ विगरेना उदय समये तेने वश न थता तेनो त्याग करवो ३. वृत्तिसंक्षेप-वृत्तिना संक्षेप करवा जे द्रव्यादिक राखवा होय तेमा घटाडो करवो, चौद नियमादिक धारवा-आ श्रावकने माटे समजवुं साधुने माटे तो गौचरीनी वृत्ति छे तेथी तेनो ज संक्षेप करवो श्रीउववाइसूत्रमा कह्यु छे के-' भिक्खा यरिया अणेगविहा प० तं०-दव्वाभिग्गहचरए, खेत्ताभिग्गहचरए, कालाभिग्ग हचरए, भावाभिग्गहचरए । ' भिक्षाचर्या अनेक प्रकारनी कहेली छे-(१) द्रव्या भिग्रह, (२) क्षेत्राभिग्रह, (३) कालाभिग्रह अने (४) भावाभिग्रह (१) द्रव्याभिग्रह-द्रव्यनो अभिग्रह करवो ते-लेपकृत द्रव्यनु प्रमाण करवु पहेले लेप लागेला भाजन वडे आप ता ल्यु, घी आदिथी खरटित (लेप लागल) लेवु बीजु न लेवुं तेमज अखरटित लेवु इत्यादिक अभिग्रह ते द्रव्याभिग्रह (२) क्षेत्राभिग्रह क्षेत्रना अभिग्रह पूर्वक गोचरी करवी, अमुक सख्याना घरे ज वहोरवा माटे जवुं, तेथी विशेष सख्यावाळा घरे भिक्षार्थे न जवुं इत्यादिक विविध प्रकार क्षेत्रना अभिग्रहपूर्वक गोचरी ग्रहण करवी ते (३) कालाभिग्रह-काळनो अभिग्रह करवो के बीजा पहोर पहेला मळे तो आहार लेवो तथा त्रीजा पहोरे मळे तो न आहार लेवो ए रीते मनमा चितवेला समये आहार मळे तो ग्रहण करवो, परन्तु ते समय व्यतीत थइ गया बाद आहार न ग्रहण करवो ते कालाभिग्रह (४) भावाभिग्रह भावो अभिग्रह करवो के संगीत करतो थको, अगर ता हसता थको, अगर तो रुदन करतो छतो कोइ पण मनुष्य अगर तो तथाप्रकारनी स्त्री आहार वहो रावे तो ज ग्रहण करवा अथवा ता कोइ सौभाग्यवती स्त्री, आभूषण पहेरेली स्त्री अगर ता तिलकवाळी स्त्री आहार वहोराव तो ज ग्रहण करवो इत्यादि विविध प्रकारे अभिग्रह धारण करी तेनी पूर्ति थाय त्यारे ज आहार ग्रहण करवो ते भावाभिग्रह आ भावाभिग्रह चरमजिनपति श्रीमहावीर परमात्माए कर्यो हतो के राजकुमारी होय, हाथपगमा बेडी होय, रुदन करती होय, त्रण दिवसनी भूखी होय, मस्तक मुडन करेल होय तेवी स्त्री अडदना बाकळा वहोरावे तो ज आहार ग्रहण करवा अने आपणे जाणीए छीए तेम वदन वाळाए परमात्माना त भावाभिग्रह पूण कर्या हतो ४ रसत्याग-विगयादि रस ना त्याग करवा आ रसत्याग अनेक प्रकारनो छे श्रीऔपपातिक-सूत्रमा कह्युं छे के-" णिव्विविए पणीयरसपरिचाई आयंबिलिए आयामसित्थभोई अरसा-हारे विरसाहारे अंताहारे पंताहारे लुहाहारे । " निवि, आयंबिल, अरसाहार,

विरसाहार, अताहार, पताहार, लूखाहार इत्यादि चीकणा रसनो त्याग करवा ते निवि, आयंबिलमा जळमा बोळीने आहार करवो ते आयंबिलआयाम सित्थभोजन, रसरहित ते अरसाहार, जेनो रस सगळो गयो होय ते विरसाहार, छेल्लु थळ्यु-जळ्यु तथा खरडायेलु भोजन करवु ते अताहार, तुच्छ आहार लेवो ते लूखाहार ५. कायक्लेश–कायाने कष्ट उपजे तेवी क्रिया, वीरासने तथा उभडक बेसवु, एक ज आसन पर स्थिर, कायोत्सर्गमा, तडकामा, ठंडीमा अने वस्त्रविहीन रहेवु, खरज आव्या छता खणवु तथा थूकवु नहीं, लोच करवो, शरीरनी कोई पण प्रकारनी शुश्रूषा न करवी इत्यादिक कायक्लेश जाणवो ६. सलीनता–इन्द्रियादिकने गोपववी तेना चार प्रकार छे १ इन्द्रिय सलीनता-पाचे इन्द्रियोना त्रेवीश विषयोमा राग-द्वेष न करे प्रशसात्मक निंदात्मक शब्द साभळी, स्वरूपवान या बदरूपु रूप जोइने, कडवो या मीठो रस चाखीने, सुगध दुर्गंध सुघीने, शीत तथा उष्ण स्पर्श करीने तेने सारा नठारा न कहे तेमज खराब पण न कहे, तेने विषे हर्ष या तो शोक धारण न करे २ कषायसलीनता-क्रोध, मान, माया अने लोभादिना प्रसग-उदयसमये तेने उपशमावे ३ जोगसलीनता-अशुभ कार्यमा मन, वचन तथा कायाना योगने रोके परन्तु शुभ कार्यमा वाळीने प्रवर्तावे ४ विविक्तचर्यासलीनता-आराम, उद्यान, उपवन, चैत्य प्रमुख ज्या स्त्री, पशु के नपुसक न होय तेवा एकात स्थानमा रहे तेमज शय्या-सथारादिकना दोषो दूर करे

आ प्रमाणे छ प्रकारनो बाह्य तप जाणवो आ तप करनारने अन्य लोको जाणी शके छे माटे तेने बाह्य तप जाणवो आ तप अन्यतीर्थिक पण करे छे, पण विपरीतपणे करे छे-विधिपूर्वक करता नथी

हवे छ प्रकारनो अभ्यतर तप कहे छे के-"पायच्छित्त १ विणओ २, वेयावच्च ३ तहेव सज्झाओ ४। झाण ५ उस्सग्गो ६ वि य, अभिंतरओ तवो होइ ॥ ६ ॥" १. प्रायश्चित्त–जे अतिचार लाग्या होय ते दूर करवा माटे गुरुए कहेल तप करवो ते २. विनय–गुरुने वादणादिक देवारूप विनय तप, तेथी कर्म-मळ दूर थाय छे ३ वैयावच्च–विनयशाली होय ते ज वेयावच्च करे भात-पाणी लावी आपवा, पगचपी करवी, गुरुप्रमुख वडील जनना काय करवा ४. सज्झाय–शुभ मनथी शास्त्रपाठोनो स्वाध्याय करवा ५. ध्यान–धर्म तथा शुक्लध्यान ध्याववा ध्यान ध्यावबाथी त्यागबुद्धि थाय छे ६. कायोत्सर्ग–कायाने थामरावबी अर्थात् काया परत्वे ममत्वभाव दूर करवो

आ छ प्रकारनो शब्दार्थ जणाव्या पछी हवे तेनुं विवेचन करता टीकाकार जणावे छे के-१. प्रायश्चित्त-प्रायश्चित्त दश प्रकारना छे " आलोयणारिहे १ पडिकमणारिहे २ तदुभयारिहे ३ विवेगारिहे ४ विउस्सग्गारिहे ५ तवारिहे ६ छेदारिहे ७ मूलारिहे ८ अणवट्ठप्पारिहे ९ पारंचियारिहे १०।" १ आलोचना-प्रायश्चित्त-गोचरी आदिमा जे दोषो लाग्या होय ते मननी शुद्धिपूर्वक गुरुमहाराज समक्ष जाहेर करवा अने गुरु जे आलोचना फरमावे ते करवी २ प्रतिक्रमणप्रायश्चित्त-जे अतिचारादिक दोषो लाग्या होय ते शुद्ध मनथी गुरु समक्ष प्रकाशवा अने गुरु कहे के 'मिच्छामि दुक्कड' आपो त्यारे शुद्ध हृदयथी मिथ्या दुष्कृत आपवो ३ तदुभयप्रायश्चित्त-आलोचना पण करवी अने प्रतिक्रमण पण करवु ते ४ विवेकप्रायश्चित्त-अशुद्ध भात-पाणी प्रमुखनो त्याग करवो ५ कायोत्सर्गप्रायश्चित्त-कायोत्सर्ग करवो ते ६ तपप्रायश्चित्त-ऊपर जणावेला पांचे प्रकारोथी जे दोषोनी शुद्धि न थाय ते माटे गुरुमहाराज तपप्रायश्चित्त आपे छे ते प्रमाणे तप करे तो लागेला दोषो दूर थाय तपमा निवि अगर आयंबिल करवाना होय छे ७ छेद प्रायश्चित्त-तपश्चर्याद्वारा पण जो दोषोनी शुद्धि न थाय तो तेने माटे पांच दिवसनो छेद आपे पटले दीक्षापर्यायमा पटला दिवस ओछा करे ८ मूलप्रायश्चित्त-छेद प्रायश्चित्तथी पण ज्यारे दोषोनु निरसन न थाय त्यारे नवी ज दीक्षा आपे अने नवदीक्षितनी माफक तेनो चारित्रपर्याय गणाय पटले के पूर्वे गमे तेटलो दीक्षापर्याय पाळ्यो होय ते सर्व निष्फळ बने ९ अनवस्थाप्य प्रायश्चित्त-ज्यां सुधी आपेल आलोयणनो तप पूरो न करे त्यां सुधी व्रतपालन न गणाय ते १० पारांचिकप्रायश्चित्त-पूर्वे कहेला प्रायश्चित्तोथी पण शुद्धि न थाय तो छेल्लु पारांचिकप्रायश्चित्त आपवामा आवे छे आ प्रायश्चित्तमा बार वर्ष सुधी गुप्त वेषे रही शासनप्रभावनानु महाकार्य करवानु अगर तो राजाने प्रतिबोधवानुं होय छे कोई आचार्यना घातकने, राजाने हणनारने अगर तो उत्सूत्रप्ररूपकने आ जातनुं प्रायश्चित्त आपवामा आवे छे २ विनय-पूज्य व्यक्ति तरफ मन, वचन अने शरीरथी नम्रभाव दर्शाववो विनय सात प्रकारनो छे " णाणविणए १ दसण २ चरित्ते ३ मण ४ वय ५ काय ६ लोगोवयारविणए ७।" १ ज्ञानविनय, २ दर्शनविनय, ३ चारित्रविनय, ४ मनविनय, ५ वचनविनय, ६ कायविनय अने ७ लोकोपचारविनय [१] ज्ञानविनय पांच प्रकारनो छे-१ मतिज्ञाननो, २ श्रुतज्ञाननो, ३ अवधिज्ञाननो, ४ मन पर्यवज्ञाननो अने ५ केवळज्ञानना विनय-आ पांचे प्रकारना ज्ञाननुं विपरीत वर्णन न करवु ते ज्ञानविनय [२] दर्शनविनय बे प्रकारनो छे-१ शुश्रूषाविनय पटले के समकिती जीवनी शुश्रूषा करवी, समकितीनो सामे जइने आदर अने सन्मान आपवु, हाथ जोडी

प्रणाम करवा, उठीने जाय त्यारे सात-आठ डगला वळाववा जवुं इत्यादि अनेक प्रकारे जाणवुं २ अनाशातनाविनय-ते पिस्तालीश प्रकारनो छे, ते आ प्रमाणे-१ अरिहंतनी आशातना करवी, २ अरिहंते कहेल धर्मनी, ३ आचार्यनी, ४ उपाध्यायनी, ५ स्थविरनी, ६ कुलनी, ७ गणनी, ८ साधुनी, ९ क्रिया वादीनी, १० संभोगी एक सामाचारीनी, ११ मतिज्ञाननी, १२ श्रुतज्ञाननी, १३ अवधिज्ञाननी, १४ मन पर्यवज्ञाननी अने १५ केवळज्ञाननी-आ पदरेनी आशातना टाळवी अने भक्ति करवी भक्ति एटले बाह्यप्रतिपत्ति अर्थात् ऊभा थवादिक विनय साचववो, ए ज प्रमाणे ए पदरेनु बहुमान करवु एटले के निर्जराने अर्थे प्रीतिपूर्वक क्रिया करवी, तेवी ज रीते ए पदरेनो वण वाद-तेनी प्रशसा करवी, कीर्ति फेलाववी आ प्रमाणे पीस्तालीश प्रकारे बीजो भेद जाणवो [३] चारित्रविनय पाच प्रकारनो छे, ते आ प्रमाणे—१ सामायिक, २ छेदोपस्थापनीय, ३ परिहारविशुद्धि, ४ सूक्ष्मसपराय अने ५ यथा ख्यात चारित्रनो विनय करवो आ पाचे चारित्रनी विपरीत प्ररूपणा न करवी ते तेनो विनय कर्यो कहेवाय छे [४] मनविनय बे प्रकारनो छे-१ अप्रशस्तमन-विनय अने २ प्रशस्तमनविनय अप्रशस्तमनविनय बार प्रकारनो कहेल छे- "जे य मणे सावज्जे १ सकिरिए २ सकक्कसे ३ कडुए ४ निट्ठुरे ५ फरुसे ६ अण्हयकरे ७ छेयकरे ८ भेयकरे ९ परितावणकरे १० उद्दवणकरे ११ भूतोव-घाइए १२ तहप्पगार मण नोपधारेज्जा, से त अप्पसत्थमणविणए॥" १ सावद्य हिंसादिकमा मन वर्ते ते, २ सक्रिय-कायिकादिक पाच क्रियामा मन वर्ते ते, ३ कर्कश-कठोर, ४ कटुक-बीजाने तथा पोताने कडवु लागे, ५ निष्ठुर-कोमळ नहीं तेवु, ६ परुष-स्नेह विनानु, ७ अशुभ कर्माश्रयमा रक्त, ८ छेदक-हस्ता दिक छेदन करवानु मन, ९ भेदक-नासिकादिनु भेदन करवानु मन, १० परि तापकारक-जीवोने सताप-संकट उपजाववानु मन, ११ उपद्रवकारी-कोईने मारणांतिक कष्ट उपजाववु अगर तो धन हरण करी उपद्रव करवानुं चित्त अने १२ भूतोपघात-प्राणिओना वधनी इच्छा आवी रीते असयतनी माफक जे मन ते अप्रशस्तमनविनय कहेवाय अने आ बार प्रकार रहित जेनु मन होय ते बीजो प्रशस्तमनविनय जाणवो [५] वचनविनय-उपर मन संबंधे जे बार प्रकारो दर्शाव्या ते यथालिखित वचनविनय सबधी पण जाणी लेवा [६] कायविनय बे प्रकारे छे-१ अप्रशस्तकायविनय अने २ प्रशस्तकायविनय अप्रशस्तकायविनय सात प्रकारनो छे—" अणाउत्त गमणे १, अणाउत्त ठाणे २, अणाउत्त निसीदणे ३, अणाउत्त तुयट्टणे ४, अणाउत्त उल्लघणे ५, अणा-उत्त पल्लघणे ६, अणाउत्त सव्विंदियकायजोगजुजणता ७, से त अप्पसत्थकाय

विणए।" १ उपयोग विना जेमतेम चाले, २ ज्या त्या ऊभा रहे, ३ बेसवानी जग्याए पुञ्ज्या-प्रमार्ज्या विना बेसे, ४ पुञ्ज्या विना शयन करे, ५ उपयोग रहित उलघन करे या फाळ मारीने जाय, ६ वारवार आ प्रमाणे उलघन करे अने ७ इन्द्रियोने विषयादिकमा प्रवर्तावे-आ प्रमाणे अप्रशस्तकायविनय कहेवाय आ ज सात प्रकारनो बराबर उपयोग राखी प्रवृत्ति करे ते प्रशस्तकायविनय कहेवाय [७] लोकोपचारविनय सात प्रकारनो छे-" अब्भासवत्तिय १, परछदाणुवत्तिय २, कज्जहेउ ३, कयपडिकिरिया ४, अत्तगवेसणया ५, देसकालण्णुया ६, सव्वत्थेसु अप्पडिलोमया ७ ॥ " १ अभ्यासवर्तिता-समीप रहेवुं ते, २ पराभिप्रायवर्तन-बीजा साधुनो जे प्रमाणे अभिप्राय होय ते प्रमाणे वर्तवु (एवी ज रीते गृहस्थ सबधी पण समजी लेवुं) ३ कार्यहेतु-ज्ञानाध्ययनादि कार्य निमित्ते आहार-पाणी वहोराववा ते ४ कृतप्रतिक्रिया-आमणे मने ज्ञान दान आप्यु छे एवी बुद्धिथी आहार-पाणी वहोराववा ते ५ आर्त्तगवेषणा-दु खी जाणीने वार्ता सभारे ६ देशकालज्ञ-जेवो देश होय तेने अवसरोचित वर्तन राखे ७ सर्व अवसरे सर्व प्रयोजनोने विषे सबधीओने अनुकूळपणे वर्तीने रहे ३. वेयावच्च-आहार-पाणी विगेरे लावी आपवा, व्याधिप्रसगे शरीर चापवु, चोळवु वि० दश प्रकारे कहेल छे " आयरियवेयावच्चे १, उवज्झाय २, सेह ३, गिलाण ४, तवस्सि ५, थेर ६, साहम्मिय ७, कुल ८, गण ९, सघवेयावच्चे १० ।" १ आयरियवेयावच्च-आचार्यनी, २ उपाध्यायनी, ३ नूतन दीक्षा लेनार शिष्यनी, ४ ग्लान, रोगी, निर्बळ तेमज अपग साधुनी, ५ अट्ठमादिक तपस्वीनी अने ६ स्थविरनी वेयावच्च स्थविर त्रण प्रकारना छे-(अ) वयस्थविर-वृद्ध, (ब) चारित्रस्थविर एटले वीश वर्ष जेटला चारित्रपर्यायवाळा अने (क) श्रुतस्थविर एटले श्रीस्थानागसूत्रना ज्ञाता ७ साधर्मिक-एक सामाचारी पाळता साधु-साध्वीनी वेयावच्च कारण प्रसगे बीजा सामाचारीवाळा साधु-साध्वीनी पण वेयावच्च करवी ८ एक आचार्यना समुदायनी, ९ अनेक आचार्योनो समुदाय एटले बे गण तनी अने १० घणा गणोनो समुदाय ते सघ तेनी वेयावच्च करवो आ दश प्रकारे वेयावच्च जाणवी आ प्रमाणे वेयावच्च करवाथी कर्मनी सारी रीते निर्जरा थाय छे कोई स्थळे चैत्यवेयावच्च पण जणावेल छे एटले के जिनप्रतिमानी वेयावच्च करवी ४ सज्झाय-पाच प्रकारे कहेल छे-वायणा १, पडिपुच्छणा २, परियट्टणा ३, अणुप्पेहा ४, धम्मकहा ५।" १ वाचना-नवीन नवीन शास्त्रपाठ करे, २ पृच्छना-तेमा उद्भवेली शका पूछे, ३ परावर्तन-करेल अभ्यासनु वार वार पुनरावर्तन करे, ४ अनुप्रेक्षा-पोते जे शास्त्राभ्यास कर्यो होय तेनो

अर्थ (रहस्य) विचारे अने ५ धर्मकथा-पोते समजेल शास्त्र बीजाने सम जावे-व्याख्यानादिक वाचे अने प्रतिबोध पमाडे ५ ध्यान-चार प्रकारे छे " अट्टज्झाणे १, रुद्दज्झाणे २, धम्मज्झाणे ३, सुक्कज्झाणे ४ ॥ " १ आर्त्त ध्यान-शोक, दुःख, आक्रंद अने विलाप करवो ते आर्त्तध्यानना चार प्रकार छे १ अनिष्टसयोगार्त्तध्यान-पोताने गमे नहीं तेवानो सयोग थाय त्यारे तेने दूर करवानो विचार कर्या करवो स्त्री कुभार्या मळी होय, पुत्र कुपुत्र नीव ड्यो होय, ते प्रतिदिन दुःख आपतो होय त्यारे विचारीए के 'आ दुःख माथी हु क्यारे छूटीश ? ' अथवा तो खराब गाममा वसवाट थयो होय अगर तो शब्दादि पाच विषयानो अशुभ सबध मळ्यो होय त्यारे तेओना वियोग नो विचार करे ते २ इष्टवियोगार्त्तध्यान-स्त्री, पुत्र, ग्राम तेमज शब्दादि विषयो सारा प्राप्त थया होय त्यारे विचारवु के 'आ सबना वियोग न थाय तो सारु' अने भाग्ययोगे वियोग थई गयो तो तेनु स्मरण कर्या करवु पटले के 'मारी भार्या सुलक्षणी हती, पुत्र विचक्षण ने कमाउ हतो' ते प्रमाणे याद कर्या करवु ते आर्त्तध्याननो बीजो प्रकार छे ३ रोगचिन्तार्त्तध्यान-वात, पित्त अने श्लेष्मना सनिपातरूप निमित्तथी उत्पन्न थतो शूळ, मस्तकपीडा, ज्वर, अतिसार, सग्रहणी इत्यादि अनेक प्रकारना रोगो थया होय त्यारे 'आ रोगो क्यारे शमी जशे ? कया कया औषधोपचारथी आ व्याधिओ नाश पामशे ? आ रोगो मने क्याथी थया ? ' इत्यादि प्रकारे चिंता कर्या करे ते त्रीजो प्रकार ४ अग्रशोचार्त्तध्यान-कामादिकथी व्याकुळ बनेला प्राणिओ देवेन्द्र, चक्रवर्त्ती विगेरेनी ऋद्धि भवातरमा प्राप्त करवाना हेतुपुरस्सर नियाणु बाधे, भविष्यमा पौद्गलिक सुख मळे ते माटे निदान करे ते चोथो प्रकार आर्त्त ध्यानना चार लक्षण छे-१ कदणया-मोटो पोकार करे, २ सोयणया-दीन वदन थेसी रहे, ३ तिप्पणया-रुदन कर्या करे अने ४ विलवणया-विलाप कर्या करे, क्लिष्ट भाषण करे, अट्टहास्य करे इत्यादि रौद्रध्यान-महाअशुभ परिणाम तेना पण चार प्रकार छे १-हिंसानुबधीरौद्रध्यान-प्राणिओना वध, बंधन, परिताप-कष्ट सबधी अथवा अमुक प्राणीने मारी नाखु तो मारी कार्यसिद्धि थाय तेम विचार कर्या करवा २ मृषानुबधी रौद्रध्यान-असत्य बोलीने बीजाने फासा मा फसाववानो,पारकानुं धन हरी लेवाना विचार कर्या करवो ३ अदत्तानुबधी रौद्र ध्यान-द्रव्यनी या अन्य पदार्थनी चोरी करवानो सतत विचार कर्या करवा लोभ कषायना उदयने कारणे व्यग्र चित्तथी धन-प्राप्तिना विचारो कर्या करवा ४ रक्ष णानुबधी रौद्रध्यान-प्राप्त थयेल द्रव्यादिक वस्तुओना सरक्षणनो विचार कर्या करवो 'चोर जो मारु धन चोरी जशे तो मारी नाखीश, बीजा कोई लूटी जशे तो फरियाद करीश' इत्यादि विचार कर्या करवो आ रौद्रध्यान चार प्रकार आ प्रमाणे छे-" ओसन्नदोसे १ बहुदोसे २ अन्नाणदोसे ३ आमरणतदोसे ४ । "

१ आसन्नदोष-घणु करीने हिंसा, असत्य, स्तेय विगेरेमा रक्त रह्या करे, २ बहुदोष-घणा हिंसादिक कार्यमा वततो रहे, ३ अज्ञानदोष-कुशास्त्रना सामळ वाथी, शीखवाथी हिंसादिक अधर्म पण धर्मबुद्धिथी करे दाखला तरीके अश्व मेधादि यज्ञोमा हिंसानुं साम्राज्य होवा छता तेने धर्म जाणीने करे ४ आमरणान्तदोष-कालकसूरिया कसाईनी मापक जिंदगी पर्यन्त जे हिंसा दिक कार्यमा ज लयलीन रहे, मनमा लेशमात्र पण दया न राखे आ बने प्रकारना (आर्त्त अने रौद्र) ध्याननो त्याग करवो, कारण के ते बने अगाध ससार-सागरमा प्राणीने परिभ्रमण करावे छे आ ध्याननो त्याग करी साधुए तो धर्म अने शुक्लध्याननु ज अवलबन लेवु आ सबधमा शका करतां प्रतिवादी कहे छे के-' तमे आर्त्त अने रौद्रने ध्यान शामाटे कहो छो ? तेने ध्यानना भेदमा शा माटे गणाव्या ? अभ्यतर तपमा तो ध्यान करवानु जणावे छे तो आर्त्त अने रौद्रनो तो त्याग करवानो होवाथी तेनो समावेश अहीं शा माटे कर्यो ?' आनो जवाब आपता शास्त्रकार जणावे छे के-ध्यान एटले चित्तनी एकाग्रता आर्त्त, रौद्र तेमज धर्म, शुक्ल ए चारेमा चित्तनी एका ग्रता थाय छे माटे ध्यान शब्दनी व्याख्यानुसारे तेने गणवा तो जोईए, पण प्रथमना बे अशुभ होवाथी ते त्याज्य छे वळी केटलाक मदबुद्धिवाळा प्राणिओ ध्यानने विषे रहेल तफावत जाणी शकता नथी वळी अन्यमति आवा ध्यानवाळा प्र णिओमा धर्म जाणी तेमनी सेवा करे छे तेमना बोधने माटे पण विवेचन करवु पड्यु छे हवे धर्मध्याननु स्वरूप दर्शावता कहे छे के-धर्मध्यानना चार प्रकार छे "आणाविजए १,अवायविजए २,विवागविजए ३,सठाणविजए ४।" १ आज्ञाविचय जिनराजनी आज्ञानु रहस्य विचारवु तेना गुणानो प्रशसा चिंतववी हा त खरेखर जिनेश्वर परमात्माए असावद्य निवृत्ति घणी ज रुडी रीते दर्शावी, जैनधर्म जेवा उत्कृष्ट कोई धर्म नथी, तेना आगमग्रथो खरेखर श्रेष्ठ अने सम्य तत्त्वोथी भरपूर छे, इत्यादि अगर तो वीतराग परमात्मानी आज्ञा ते ज धर्म छे एवी भावनापूर्वक तेमनी आज्ञाओनो विचार करवो २ अपायविचय-गारव, विकथा, प्रमाद, परीषह इत्यादिकथी पतित न थवाय ते माटे चिंतन कर्या करवु अथवा मिथ्यात्वथी आवृत्त थयेला प्राणिओ तेवा उन्मार्गथी केवी रीते दूर रहे तेनो विचार करवो ते ३ विपाकविचय-शुभाशुभ कमनु फळ भोगव्या सिवाय छूटको नथी ते सबधी विचार करवो ते अने ४ सस्थान विचय-चौद राजलोकनो आकार तेमज द्वीप समुद्रोनु स्वरूप चिंतववु ते धर्म ध्यानने ओळखावनारा चार लक्षणो छे, ते आ प्रमाणे-" आणारुई १ निस ग्गरुई २ उवदेसरुई ३ सुत्तरुई ४ ॥ " १ आज्ञारुचि-सूत्र, निर्युक्ति, भाष्य इत्यादि पचागीमा कहेल तत्त्वनी श्रद्धा, २ निसर्गरुचि-जेने स्वभावथी ज तत्त्वनी श्रद्धा प्रगटी एटले के उपदेश विना ज तत्त्वज्ञान थयु, ३ उपदेशरुचि-

मुनिराज समीपे धर्मोपदेश साभळीने तत्त्वना श्रद्धा थइ ते अने ४ श्रुतरुचि-सूत्रो वाचवानी, तत्त्वना प्रतीति थइ ते हवे धर्मध्याननना चार आलबन दर्शावता कहे छे के-" वायणा १, पिच्छणा २, परियट्टणा ३, धम्मकहा ४ । " आनुं वर्णन अगाउ आवी गयु छे जेम महेल पर चढवा माटे आलबननी जरूर पडे तेम मुक्तिरूपी महेलमा जवा माटे आ चारे आलबनो छे हवे धर्म ध्याननी चार अनुप्रेक्षा एटले विचारणा जणावे छे-" अणिचाणुप्पेहा १ असरणाणुप्पेहा २ एकत्ताणुप्पेहा ३ ससाराणुप्पेहा ४ । " १ अनित्यानुप्रेक्षा-धर्म विना सर्व अनित्य छे, २ अशरणानुप्रेक्षा-ससारमा जैनधर्म सिवाय बीजा कोइनु शरण साचु नथी ३ एकत्वानुप्रेक्षा-आ जीव एकलो ज छे, संसारमा एनुं बीजुं कोई नथी ४ ससारानुप्रेक्षा-आ जीव ससारमा अनादिकाळथी परिभ्रमण करे छे अथवा आ ससार चार गतिरूप छे हवे कर्म रहित जीव जे शुक्लध्यान करे छे तेनु वर्णन करता कहे छे के-ते शुक्लध्यान पण चार प्रकारे छे " पहुत्तवियक्के सवियारी १, एगत्तवियक्के अवियारी २, सुहुमकिरिए अप्पडिवाई ३, समुच्छिन्नकिरिए अनियट्टी ४ । " १ पृथक्त्ववितर्कसप्रविचार शुक्लध्यान-चौद पूर्वना श्रुत सबधी अर्थ, व्यजन अने योगना परस्पर सक्रमण करवे विचार करवापूर्वक द्रव्य, पर्याय अने गुणोना सचार सबधी विचार अर्थात् करनो आश्रय लीधा सिवाय निर्मळ अने शुद्ध आत्मस्वरूपनु सतत चितन अथवा जीव अने अजीवना स्वभाव तेमज विभावने पृथक् पृथक् करवापूर्वक द्रव्य अने पर्यायनो भिन्न भिन्न विचार करता पर्यायनो गुणमा अने गुणनो पर्यायमा सक्रमण करवारूप सतत विचार टूंकमा कहीए तो द्रव्यानुयोगमा ज जेमना मन प्रमुख रक्त रहे ते २ एकत्ववितर्कअप्रविचार-अर्थथी व्यजनमा अने व्यजनमांथी अर्थमा अथवा मन, वचन अने कायाना योगमाथी एक-बीजामा नहीं जवारूप ध्यान अर्थात् पवन न लागता दीपकनी पेठे स्थिर थवारूप ध्यान ३ सूक्ष्मक्रियाअप्रतिपाती-मन अने वचननो सपूर्ण रोध करी फक्त कायव्यापारनु जे ध्यान ते वगथी चालता चक्रने काइ अटकावे तो जेम किंचित् चलनस्वभाव रहे छे तेम किंचित् काययोग रहे छे अप्रतिपाती शब्द लगाडवानो हेतु ए छे के-पाछा पडवानो स्वभाव नथी आ ध्यान मोक्षे जवाना अवसरे ज प्राप्त थाय छे ४ समुच्छिन्नक्रियाअनिवृत्ति-कायानो जे सूक्ष्म श्वासोश्वासरूप क्रिया हती ते रुधीने, जेम पर्वत निष्प्रकप रहे छे तेम त्रणे योग रुधीने शैलेशी अवस्थाने प्राप्त थइने अ, इ, उ, ऋ अने ऌ ए पाच ह्रस्व स्वरो बोलता जेटलो समय लाग तेटला काळ पर्यंतनु ध्यान शुक्लध्यानना चार लक्षणो छे-विवेगे १, विउस्सग्गे २, अव्वहे ३, असम्मोहे ४ । " १ विवेक-आत्माने

शरीरथी भिन्न जाणवो अने सर्व संयोगथी विमुक्त मानवो २ व्युत्सर्ग- आत्माने कोईनो संग नथी एम विचारीने देहरूपी उपाधिनो त्याग ३ अव्यथा- देवादिकनो उपसर्ग थाय तो पण चळायमान न थाय अने ४ असमोह- देवादिकना माया-प्रपंचथी सूक्ष्म पदार्थना विषयमां शंका लावीने मूढ न थई जाय हवे शुक्लध्यानना चार आलंबन जणावता कहे छे के-" खंती १, मुत्ती २, अज्जवे ३, मद्दवे ४।" १ क्षमा, २ निर्लोभता, ३ सरलता-माया रहित पणु अने ४ मान रहित होय एज रीते चार अनुप्रेक्षा जणावे छे के-" अवायाणुप्पेहा १, असुभाणुप्पेहा २, अणंतवत्तियाणुप्पेहा ३, विपरिणामाणुप्पेहा ४।" १ अपायानुप्रेक्षा-हिंसादिक पापकृत्यथी कर्मबंध थाय, तेथी जीवने कष्ट थाय छे, २ अशुभानुप्रेक्षा-संसार मिथ्या छे, ३ अनंतवृत्तितानुप्रेक्षा-संसारनी परंपरानो पार नथी अर्थात् जीव आ संसाररूपी उदधिमां अनंता भव करे छे अने ४ परीणामानुप्रेक्षा-जे विपदार्थो छे ते क्षण क्षण पलटन-स्वभाववाळा छे एवा सदा विचार करवो ते ६. कायोत्सर्ग-कर्मक्षयार्थे शरीरनो त्याग अर्थात् देह परथी ममत्वभाव त्याग करवो ते बे प्रकारना छे-१ द्रव्यव्युत्सर्ग अने २ भाव व्युत्सर्ग द्रव्यव्युत्सर्ग चार प्रकारे कहेल छे "सरीरविउस्सग्गे १, गणविउस्सग्गे २, उवहिविउस्सग्गे ३, भत्तपाणविउस्सग्गे ।" १ शरीरनो अने २ गच्छनो त्याग करवो एटले स्थविरकल्पीपणानो त्याग करी जिनकल्पीपणुं ग्रहण करवुं, ३ उपधिनो त्याग करे एटले जिनकल्पीपणु स्वीकारे अने अभिग्रह पण करे अने ४ भात-पाणीनो त्याग करे भावव्युत्सर्ग त्रण प्रकारनो छे " कसायविउस्सग्गे १, संसारविउस्सग्गे २, कम्मविउस्सग्गे ३।" १ चार प्रकारना क्रोधादि कषायोनो त्याग, २ चारे गतिनो त्याग एटले नारक गतिना हेतुरूप मिथ्यात्वादिकनो त्याग करवो, तिर्यंचगतिना हेतुरूप कारणनो त्याग, मनुष्य पणु प्राप्त थाय तेवा निमित्तोनो त्याग तेमज जेनाथी स्वर्गति प्राप्त थाय तेवा पुण्यकर्मनो पण त्याग ते संसारव्युत्सर्ग जाणवो ३ ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र अने अंतराय-ए आठ प्रकारना कर्मो बांधवाना हेतुरूप कारणोनो त्याग भावव्युत्सर्गना आ त्रण भेद पैकी कोइ शंका करता पूछे छे के-बीजो संसारव्युत्सर्ग अने त्रीजो कर्मव्युत्सर्ग शा माटे जुदा जुदा दर्शाव्या? संसारनो व्युत्सर्ग करवाथी आपोआप कर्मव्युत्सर्ग थइ जाय छे अथवा कर्मव्युत्सर्ग थवाथी स्वयमेव संसारव्युत्सर्ग थइ जाय छे आ शंकाना समाधान माटे शास्त्रकारभगवंत जणावे छे के-ते बन्ने भेदो अलग दर्शावीने कार्य तथा कारणनु भिन्नपणु दर्शाव्यु छे

आ प्रमाणे अभ्यतर तप छ प्रकारनो दर्शाव्यो लोकोना जाणवामा आ तप आवतो नथी, मिथ्यात्वो—अन्यतीर्थिको आवा प्रकारना तपनु सेवन करी शकता नथी तेमज मोक्षप्राप्तिना अतरग कारणभूत होवाथी तेने अभ्यतर तप कहेवामा आवे छे

हवे वीर्याचारना त्रण भेदो कहे छे—"अणिगूहियबलवीरिओ, परक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो। जुजइ य जहाथाम, नायव्वो सो वीरियायारो ॥७॥" पोतानु बल एटले शरीरनु सामर्थ्य अने वीर्य एटले मनना उत्साह या ता बाह्य सामर्थ्य अने अभ्यतर सामर्थ्यने गोपव्या विना तीर्थंकर परमात्माए उपदेशेल छत्रीश प्रकारना आचारमा (ज्ञानाचार ८, दर्शनाचार ८, चारित्राचार ८ अने तपाचार १२=३६) पोतानी शक्ति प्रमाणे प्रयत, उद्यमशील रहे, उपयोगवत रहे, चेतनने आघो-पाछो न थवा दे ते वीर्याचार जाणवो आ प्रमाणे छत्रीश प्रकारना आचारमा पोतानु (१) बल अने (२) वीर्य गोपव्या विना (३) यथाशक्ति वर्तन ए त्रण प्रकारो थया आ पाच प्रकारना आचारने पोते पाळे अने बीजाने पळाव ते सुआचाय जाणवा आ पाच प्रकारना आचारमा ज चारित्राचार कह्यो ते शुद्ध पिंडादिकना ग्रहणथी थाय छे, माटे तेनु स्वरूप दर्शावता कहे छे के—

पिण्ड उवहिं सिज्ज, उग्गमउप्पायणेसणासुद्धम् ।
चारित्तरक्खणट्ठा, सोहिंतो होइ स चरित्ती ॥ २१ ॥

[पिण्डमुपधिं शय्या, उद्गमोत्पादनैषणाशुद्धम् ।
चारित्ररक्षणार्थं, शोधयन् भवति स चारित्री ॥ २१ ॥]

गाथार्थ—चार प्रकारनो पिंड, उपधि (सयम—चारित्र पाळवामा उपयोगी उपकरणो) अने शय्या (वसति)—आ त्रणे वस्तुने उद्गम, उत्पादन अने एषणावडे शुद्ध, चारित्रनी रक्षा माटे ग्रहण करे ते ज साचो चारित्रवान छे.

विवेचन—१ अशन, २ पान, ३ खादिम अने ४ स्वादिम—ए चार प्रकार ना पिंड छे उपधिना बे प्रकार छे-(१) औघिक अने (२) औपग्रहिक औघिक उपधि त्रण प्रकारे छे-१ जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट १ मुहपत्ति, २ पात्रानी पूजणी ते पात्रकेसरिका, ३ गुच्छक एटले पात्र ऊपर बाधवानो वस्त्रखड अने ४ पात्रने मूकवानो वस्त्रखड—आ प्रमाणे जघन्य उपधि जाणवी मध्यम उपधि छ प्रकारे छे, ते आ प्रमाणे-१ पटल, २ रजस्राण—पात्रा राखवानी झोळी, ३ पात्राने बाधवानी झोळी, ४ चोलपट्टो, ५ मात्रक एटले नंदिपात्र अने ६ रजोहरण—

आघा उत्कृष्ट उपधि चार प्रकारे छे-१ पात्रा अने २-४ त्रण वस्त्रो (बे सुतरना अने एक ऊननु) आ प्रकारनी औधिक उपधि स्थविरकल्पी मुनिने होय बीजी औपग्रहिक उपधि पण जघ य, मध्यम अने उत्कृष्ट ए प्रमाणे त्रण प्रकारनी छे १ पीठ-पाछल राखवानु पाटियु, २ पादप्रोञ्छन, ३ दडक-प्रमार्जन, ४ डगल (माटीनु), ५ सोय, ६ नखहरणी (नख कापवानी नरणी) अने ७ कर्ण शोधनी-कानमाथी मेल काढवानी कानखोतरणी-आ सात प्रकारनी जघ य जाणवी मध्यम नव प्रकारनी छे, ते आ प्रमाण-१ सथारो, २ सथारा ऊपर पाथरवानो उत्तरपट्ट, ३ दाडो, ४ मातर करवानु भाजन, ५ स्थडिलनु भाजन, ६ मल-श्लेष्मनु भाजन, ७ वागपट्ट-उपधि ऊपर बाधवानु वस्त्र, ८ मनाहपट्ट-शरीरे बाधवानु वस्त्र अने ९ चिलिमिली—मच्छरादिथी रक्षा करवाना पडदो उत्कृष्ट औपग्रहिक उपधि बे प्रकारनो छे-१ स्थापनाचाय अने २ पाच प्रकारना पुस्तको आने लगतु विशेष वर्णन बृहत्कल्प तेमज यतिजीतकल्पनी टीकाद्वारा जाणवुं जे उपधि पासे ज रहे, गृहस्थनी मागली लेवी-देवी न कल्पे ते औधिक उपधि अने जरूर पडये गृहस्थ पासेथी मागी ले अने पछी पाछी पण आपे ते औपग्रहिक उपधि जाणवी शय्या-वसति-रहेवानु स्थानक आ १ पिंड, २ उपधि अने ३ शय्या उद्गम, उत्पादन अने एषणाना दोष रहित स्वीकारवा उद्गमना साळ दोष छे अने ते गृहस्थथी उत्पन्न थाय छे, उत्पादनना पण सोळ दोष छे अने ते साधुथी ज उत्पन्न थाय छे अने एषणाना दश दोष तो साधु अन गृहस्थ बनेथी थाय छे आ दश दाप पैकी बे शकित अने अपरिणत साधुथी लागे छे अने बाकीना आठ गृहस्थथी लाग छे आ प्रमाणे बेतालीश दोष रहित पिड, उपधि अने वसति ग्रहण करे ते आचार्य चारित्रवत जाणवा हवे बेतालीस दाप कया कया त जणाव छे—

सोळ उद्गम दोष–"आहाकम्मु१द्देसिय २, पूइकम्मे ३ य मीस जाए य ४ । ठवणा ५ पाहुडियाए ६, पाओयर७कीय८पामिच्चे ९ ॥ १ ॥ परियट्टिए १० अभिहडु ११–ब्भिन्ने १२ मालोहडे य १३ अच्छिज्जे १४ । अणिसिट्ठ१५ज्झोयरए १६, सोलस पिंडुग्गमे दोसा ॥ २ ॥" १ आधाकम-केवळ साधुने माटे ज छकाय जीवनी विराधनावडे अशनादिक आहार तैयार करवानी क्रिया आ प्रमाणेनी पापक्रियाथी तैयार थयेल आहार दोष अने दोषवाननी अभेद विवक्षाए दूषित गणाय ए ज प्रमाणे आगळना दरेक दोषोमा पण समजी लेवु २ औद्देशिक सर्व साधुओने उद्देशीने करवामा आवेल ३ पूतिकर्म-शुद्ध आहारमा अशुद्ध आहारनो सयोग, शुद्ध आहारमा आधाकर्मिक आहारनो एक पण कण मिश्र थाय तो ते पूतिकर्म थइ जाय ४ मिश्रजात-शरूआतथी ज गृहस्थ अने साधु बन्नेने माटे भेगो बनावेल ५ स्थापना-केटलोक समय

साधुने अर्थे आहारादि राखी मूकवा ६ प्राभृतिका-साधुनो लाभ लेवा माटे विवाहादिनो काळ आगळ-पाछळ राखवो ७ प्रादुष्करण-साधुने वहोराववाना स्थानमां वस्तुने प्रगट करवा माटे दीपक करे, बारी-बारणां होय तो उघाडे ८ क्रीत-साधुने वहोराववा निमित्ते द्रव्यादिथी वस्तुओ खरीदवी ९ प्रामित्य-वहोराववा माटे वस्तु उधार लावे १० परिवर्तित-साधुने वहोराववा निमित्ते वस्तुना अदला-बदलो करे ११ अभ्याहृत-साधुने वहोराववा निमित्ते ज्यां साधु वसता होय त्यां सामो आहार लई जाय अथवा बीजा गामथी मगावे, एक स्थानथी बीजे स्थाने लई जाय १२ उद्भिन्न-माटी विगेरेथी छांदेल घडाने खोलीने आहार आपे १३ मालाहृत-भोंयरामांथी, कोठारमांथी अगर तो माळ उपरथी लावीने आपे १४ आच्छेद्य-पोताना पुत्रादिकनी साधुने वहोराववानी अनिच्छा छतां तेना पासेथी बळजबरीथी ग्रहण करीने आपे १५ अनिसृष्ट कोईपण पदार्थनी मालीकी घणाओनी होय छतां तेओनी अनुमति विना आपे अने १६ अध्यवपूरक-गृहस्थे पोतानी रसोईनी शरूआत कर्या पछी 'साधु आवशे' एम विचारी साधुने निमित्ते विशेष रसोई रांधवी

उत्पादनना सोळ दोष-" धाई१दूई२निमित्ते३, आजीव४वणीमगे५ तिगिच्छा ६ य । कोहे ७ माणे ८ माया ९, लोभे १० य हवन्ति दस एए ॥१॥ पुव्विंपच्छासंथव ११, विज्जा १२ मंते य १३ चुन्न१४जोगे १५ य । उप्पायणाइदोसा, सोलसमे मूलकम्मे १६ य ॥२॥" १ धात्री-बाळकने रमाडीने आहार लेवो २ दूती-एक बीजाना संदेशा परस्पर कहीने आहार लेवो ३ निमित्त-भूतकाळ तथा भविष्यकाळ संबंधी निमित्त कहेवुं ४ आजीविका-दातार पुरुषनी पासे पोतानी जात्यादिकनो प्रकाश करवो ५ वनीपक-अन्य भिक्षुकनी माफक लोकने गमती प्रशंसा करे या दातार व्यक्तिने जे साधुपुरुष पूज्य होय तेनो पोते भक्त छे तेम दर्शावे ६ चिकित्सा-कोई पण प्रकारनी व्याधि दूर करीने अशनादि स्वीकार ७ क्रोध-करवीया* साधुनी माफक

* हस्तीकल्प नगरमां एक मुनि मासक्षमणने पारणे गोचरी माटे नीकळ्यां फरतां फरतां एक ब्राह्मणने त्यां मृत्युभोजन हतुं त्यां जई चढ्या मृत्युभोजनमां घेबर करवामां आव्या हतां मुनिए त्यां जई 'धर्मलाभ' आप्यो परंतु जैनमुनि प्रत्येना द्वेषथी द्विजे तेमने आहार वहोराव्यो नहीं एटले मुनि क्रोधपूर्वक बोल्या के-" कांई नहीं, बीजी वारना मृत्युभोजन समये वहोरावजे " आ प्रमाणे रोषपूर्वक कहीने मुनि चाल्या गया. थोडा दिवसोने आंतरे ते ज ब्राह्मणने त्यां बीजुं मरण थयुं अने तेना मृत्युभोजन समये दैवयोगे ते ज मुनि आवी चढ्या, परंतु ते समये पण ते द्विजे तेमने आहार वहोराव्यो नहीं एटले विशेष क्रुद्ध थई तेमणे कह्युं के-" कांई नहीं, त्रीजा मृत्युभोजन समये वहोरावजे " भाग्यवशात् बन्युं एवुं के ते द्विजने त्यां त्रीजुं मरण पण थयुं अने तेना मृत्युभोजन समये पुनः ते ज मुनि अचानक त्यां

क्रोध करीने आहार ग्रहण करे ८ मान-सेवियाx क्षुल्लक साधुनी माफक मान-

आवी चल्या ते समये पण ते द्विज तेमने आहार वहोराव्यो नहीं एटले रोषपूर्वक मुनि पाछा जता हता एवामां द्वारपाळनी तेमनी पर नजर पडी तेणे बराबर मुनिने ओळखी लीधा तरत ज तेणे पोताना मालीक पासे जई कह्यु के-" आ साधु ते ज मुनि छे, जमना कथन प्रमाणे बराबर मृत्यु थया करे छे माटे तमे तेमने घेवर आपी संतोषो ' द्विजे द्वारपालनुं कथन मान्यु अने बहुमानपूर्वक मुनिने पात्रा वाळी घेबर वहोराव्या आ प्रकारे क्रोध करीने पिंड ग्रहण करवो ते दूषित छे घेबर वहोरवाने अंगे ते मुनि ' घवरीया मुनि तरीके प्रसिद्ध थया

x कोशलदेशना गिरिपुष्पित नगरमां काइएक उत्सव निमित्ते गृहे-गृहे सेवनु भोजन थयुं हतु ते समय ते नगरमां रहेला साधुओए विचार्यु के-" आजे गोचरीमां सेव मळशे, पण कोई साधु पोताना शक्तिथी घी, साकर विगेरेथी युक्त सेव मेळवीने लावीने आहार करावे तो ते श्रेष्ठ गणाय ' आ वात सांभळी एक क्षुल्लक साधुए अभिमानपूर्वक प्रतिज्ञा करी के-" हु घृत-साकरथी मिश्रित सेवनो आहार लावी हमणां ज तमने भोजन करावुं छु " बाद ते फरता फरता इन्द्रदत्त नामना शेठने घेर गया त्यां तेनी प्रियगुमती नामनी स्त्रीए कर्युं वहोराव्यु नहीं त्यारे साधुए तेने मानपूर्वक कह्यु के-" तारे घेरथी आहार ग्रहण कर्ये ज छूटको " प्रियगुमतीए क्रोधपूर्वक कह्यु के-" आहार न वहोरावु तो ज हु स्त्रीजाति खरी ' आ प्रमाणे वात वधी पडतां क्षुल्लक साधुए कह्यु के-' हु खरो साधु होईश तो तारे त्यांथी ज घी-साकरयुक्त सेवनुं यथेच्छ भोजन ग्रहण करीश " आ प्रमाणे कहीने ते साधु घर बहार चाल्यो गयो तपास करतां इन्द्रदत्त सभामां छे तेवा समाचार मळ्या सभामां जईने साधुए पूछ्यु के-" अहीं कोई इन्द्रदत्त श्रेष्ठी छे ? ' त्यां हाजर रहेल अन्य व्यक्तिओए कह्यु के-" ते कृपणनुं शु काम छे ? कृपण शब्द सांभळी बाळमुनि चमक्या परन्तु प्रतिज्ञानु पालन तो करवुं ज हतु, एटले पुन कह्युके -' मारे तेमनु काम छे परन्तु ते आघातजनक छे अधम पुरुष जेवो न होय तो तेनी पासे मांगणी करु " बाजाओए कह्यु के-" ते तेवो ज छे ' आ प्रमाणे पोतानी प्रतिष्ठानुं लीलाम थतु नीहाळी इन्द्रदत्तने चानक चडी एटले एकदम मुनि समीप आवी कह्युं के-' हु तमे कहो ते करीश, परन्तु प्रथम तमे मने छ प्रकारना अधम पुरुषोनी वात करो ' क्षुल्लक मुनिए १ श्वेतांगुली, २ बकोड्डायी ३ तीर्थस्नातक, ४ किंकर, ५ हदनक अने ६ गृध्रावरिंखी-ए छ प्रकारना दृष्टांत कह्या एटले इन्द्रदत्तने पोतानी श्रेष्ठता साबित करवा इच्छा जागृत थई अने ते मुनि साथ गृह प्रति चाली नीकळ्यो मार्गमां क्षुल्लक मुनिए तेनी स्त्री साथे थयेल सब वृत्तांत कही संभळाव्यो इन्द्रदत्ते तेनो योग्य रस्तो शोधी काढ्यो गृह पासे आवी पहोंचतां मुनिने बहार राखी, घरमां दाखल थई पोतानी स्त्रीने कह्यु के- जल्दीथी घी, साकर विगेरे मेडा परथी लाव ' स्त्री जेवी नीसरणी मूकी मेडा पर चढी के तरत ज इन्द्रदत्ते नीसरणी लइ लीधी आ बाजु मुनिए प्रवेश करी घी-साकर युक्त सेवनो आहार ग्रहण कर्यो एवामां स्त्री जुए छे तो जे मुनिने पोते निषेध कर्यो हतो ते ज मुनिने आहार वहोरावतां देखी तेणे इन्द्रदत्तने न वहोराववा आग्रह कर्यो एटले बाळमुनिए पोताना नासिका पर आंगळी मूकी चूप रहेवा सूचव्यु अने साथोसाथ गर्भित रीते सूचन पण कर्यु के-में तारु नाक काप्यु छे आ प्रमाणे मानपूर्वक आहार ग्रहण करवो ते दूषित छे सेव वहोरी लाववाथी ते मुनि त्यारथी 'सविया मुनि' तरीके प्रसिद्धि पाम्या

अभिमान करीने आहार स्वीकारे ९ माया-आषाढाभूतिनी+ माफक कपट करीने आहार ले १० लाभ-§ सिंहकेसरिया मुनिनी माफक सारा आहारनी

+ राजगृहीमा कोई आचार्यना परिवारनी साथे आषाढाभूति मुनि पण विहार करता करता आवी चड्या एकदा गोचरीमध्ये आषाढाभूति विश्वकर्मा नामना नटना घरमा दाखल थया अने 'धर्मलाभ' कही ऊभा रह्या गोचरीमा मोदक मळ्यो ते लइ बहार गया पछी तेमने विचार थयो के-'आ मोदक तो आचार्य ग्रहण करशे' एटले बीजा मोदकनी इच्छाथी रूप परिवर्तन करी, एक आंखे जाणे काणा होय तेवो देखाव धारण करी पुन आव्या अने बीजो मोदक ग्रहण कर्यो बहार निकळी विचार्यु के 'आ तो उपाध्याय ग्रहण करशे' एटले त्रीजा मोदकनी इच्छाथी कुबडानु रूप धारण करी आव्या अने त्रीजा मोदक वहोर्यो वळी 'आ तो संघाटक ग्रहण करशे' एम विचारी रूप परिवर्तन करी चोथी वार आव्या अने मोदक वहोर्यो आ बधु दृश्य गोखमा बेठेला विश्वकर्मा नटे नीहाळ्यु तने विचार आव्यो के-आवो माणस जो नट थाय तो मने सारी द्रव्यप्राप्ति थाय, एटले तमने फसाववानी इच्छाथी ते एकदम नीचे आव्यो, पुन आग्रह करीने बधा मोदक वहोरावी दीधा अने वारंवार पोताना घरे लाभ देवानो आग्रह कर्यो मुनिराजना जवा बाद नटे तेमनी कुशलतानां वखाण करी पोतानी पत्नी तथा बे पुत्रीओने कह्युं के-" कोइपण उपाये तमे तेने वश करजो " वारंवारना आषाढाभूतिना आवागमनथी अने पुत्रीओना आदरसत्कारथी छेवटे आषाढाभूति साधु-मार्ग चूक्या अने नट-पुत्रीओ साथे संसार-व्यवहार शरू कर्यो तेमनी कुशळताथी विश्वकर्माने सारा द्रव्यनी प्राप्ति पण थई राजा पासे पण आषाढाभूतिनु मान अत्यन्त वध्यो गयु विश्वकर्माए पोतानी पुत्रीओने चेतवणी आपी हती के-"तमे कदि मदिरापान करशो नहीं, नहीं तो आषाढाभूति तमारो त्याग करशे " एकदा बन्यु एवु के-आषाढाभूतिने राजसभामा नाटक करवानु आमन्त्रण मल्यु ते प्रसंगनो लाभ लइ बने नट पुत्रीओए यथेच्छ सुरापान कर्यु तेना घेनमा वस्त्रविहीन बनीने माळ ऊपर जइने सूई गइ आ बाजु राजसभामा परराष्ट्रनो दूत आववाथी विघ्न पड्यो अने नाटक-समारंभ मुलतवी रह्यो आषाढाभूति घरे आवता पोतानी पत्नीओनी स्थिति जोइ आश्चर्यमा गरकाव थइ गयो तेने पोताना मुनि अवस्था याद आवी, पोतानी भूल समजाई अने पोते चाली नीकळ्या विश्वकर्माने आ हकीकतनी खबर पडता ज तेण पोतानी पुत्रीओने ठपको आपता कह्यु के-" जाव, अने आषाढाभूति पासे जीवननिर्वाह माटे द्रव्यनी याचना करो आषाढाभूति पासे काई हतु नहीं परंतु पत्नीओनी मागणी स्वीकार्या सिवाय छूटको न हतो छेल्ले एक नाटक भजवी तेनी उपज स्त्रीओने आपवानो विचार करी तमणे भरत चक्रवर्तीनु नाटक भजववा निर्णय कर्यो राजा पासे पांच सो राजपुत्रोनी मागणी करी नाटकनो शरूआत सुंदर करी अने प्रेक्षको हेरत पामी गया छेवट भरत महाराजाना आरिसाभुवनमा आवता आंगळीमाथी मुद्रिका नीकळी पडता जे भावना भावी हती तेवी ज भावना भावता आषाढाभूतिने तत्क्षणे केवळज्ञान उत्पन्न थयु पांचसो राजपुत्रोने पण केवळज्ञान उपज्युं देवोए आषाढाभूतिनो केवळज्ञान-महोत्सव कर्यो आवी रीते मायाथी आहार ग्रहण करवो ते पण दूषित छे

§ चंपानगरीमां आवेला कोई एक मुनिए एकदा गोचरीसमये मनमां अभिग्रह कर्यो के

इच्छाथी गृहस्थ श्रीमंत लोकोना घरे गोचरीए जाय ११ पूर्वपश्चात्संस्तव-आहार ग्रहण कर्या पूर्वे अने आहार ग्रहण कर्या पछी पण दातार पुरुषनी प्रशंसा करे के-"तमने धन्य छे तमे साधुओनी रूडी भक्ति करनारा छो इत्यादि" १२ विज्जा-विद्या शीखवा माटे साधना बतावे १३ मंत्र-देवाधिष्ठित मंत्र शीखवे १४ चूर्ण-नेत्रांजनादिक चूर्ण दई आहार स्वीकारे १५ योग-अभ्युदय करनार, सुख अर्पनार पर्वो द्रव्यसमूह प्राप्त करवा माटेनो योग दर्शावे अने १६ मूलकर्म-दश प्रकारना प्रायश्चित्त पैकी आठमुं मूळ नामनुं प्रायश्चित्त जेथी प्राप्त थाय ते गर्भपात कराववा माटे औषध करे अथवा वनस्पतिनुं छेदन करी लोकोने आपे अने 'आ मूळियाना जळथी स्नान करवाथी संतानप्राप्ति थाय' तथा उपदेश आपे तेने आ प्रायश्चित्त प्राप्त थाय छे.

एषणाना दश दोष-"संकिय१मक्खिय२निक्खित्त३-पिहिय४साहरिय५दायगु६म्मीसे७। अपरिणय८लित्त९छड्डिय१०, एसणदोसा दस हवंति ॥१॥" १ शंकित-आधाकर्मादिक दोषनी शंकावाळा अशनादि स्वीकारे २ म्रक्षित-सचित्तादिथी खरडित (लींपायल) ३ निक्षिप्त-सचित्त पदार्थ पर स्थापन करेल ४ पिहित-सचित्तादिकथी ढांकेल ५ संहृत-सचित्तवस्तुवाळा भाजनमांथी ते सचित्त पदार्थ बीजा भाजनमां काढी नाखी प्रथमना भाजनद्वारा आहार वहोराय ते ६ दायक-शास्त्रमां दान आपवा माटे निषिद्ध करायेल बाळक, गर्भवती स्त्री, सचित्त पदार्थवाळी, खांडती, दळती, कांतती वगेरे स्त्री उठी दान आपे ते अथवा तो आंधळो, कंपती स्त्री उठी दान आपे ते ७ उन्मिश्र-सचित्त वस्तुओ युक्त ८ अपरिणत-अचित्त नहीं बनेल भावथी तो स्वमतादि दोष

जो आजे सिंहकेसरिया मोदक मळे तो ज ग्रहण करवा आ प्रमाणे निर्णय करी एक गृहथी बाजे गृहे परिभ्रमण करवा लाग्या परन्तु वांछित भिक्षा मळी नहीं सिंहकेसरीया मोदक मेळववानी एक मात्र तल्लीनताने कारणे केटलो समय पसार थई गयो छे तेनुं पण तेमने भान न रह्युं संध्यासमय थई जवा आव्यो छतां तेमने मनोवांछित गोचरी प्राप्त न थई कोईएक सुज्ञ श्रावके तेमनी आवी स्थिति नीहाळी मनमां निर्णय कर्यो के-मुनिए मोदकनो अभिग्रह कर्यो जणाय छे अने ते प्राप्त न थवाथी समयना पण भान वगर तेओ एक घरथी बीजे घेर भमी रह्या छे श्रावके तरत ज सिंहकेसरीया मोदक तैयार कराव्या मुनिने पोताने गृहे आमंत्रण आप्युं मुनि पण उत्तरे मोदक मळवाथी हर्षित थया विचक्षण श्रावके तेमने समयनुं भान कराववा माटे कह्युं के "मुनिराज, पुरिमड्ढना पच्चक्खाणने केटलो समय छे?" आ शब्द सांभळतां ज मुनिए आकाश प्रत्ये दृष्टि करी तो चंद्र अने तारा गगनपटमां प्रकाशित थई गया हता रात्रि पडी गई हती हवे ज तेमने पोतानी विह्वळ स्थितिनुं साचुं भान थयुं गोचरीसमय वीती जतां मोदक परठववा ज रह्या तरत ज ते मोदक लई परठववा गया अने परठवतां परठवतां आत्मनिंदा करतां केवळज्ञान प्राप्त कर्युं आ प्रमाणे लोभथी पण भिक्षा ग्रहण करवी ते पण दूषित छे

अगर तो दातार पोताना भाव विना आपे ते पण अपरिणत जाणवु ९ लिप्त-लेपद्रव्यथी खरडायेल भाजन अगर हस्तद्वारा अपाय ते अने १० छर्दित-आहार वहोरावती वखते दातारना हाथमाथी छाटो भूमि उपर पडवा छता स्वीकारे तो आ दोष लागे

हवे प्रसंगथी ग्रासैषणाना पण पाच दोषो बतावे छे-"संजोयणा १ पमाणे २, इंगाले ३ धूम ४ कारणे ५ पढमा। वसहिबहिरतरे वा, रसहेउ दव्वसंजोगा ॥ १ ॥" १ संयोजना-रसनी लोलुपताथी एक द्रव्यमा रस वधारवा माटे बीजु द्रव्य नाखे दा त दूधनो रस वधारवा तेमा साकर नाखे २ प्रमाण-बत्रीश कवळथी विशेष खाय ३ इंगाल-रागपूर्वक आहार करे ४ धूम-आहार द्वेषपूर्वक खाय अने ५ कारणिक-कारण विना पण्ण क वयावच्च प्रमुख छ कारण सिवाय भोजन करे प्रथम भेद संयोजना बे प्रकारनी छे १ अतरसयोजना अने २ बहिरसंयोजना उपाश्रय आवीन संयोजना करे ते अतरसयोजना अने वस्ति बहार दूध मळ्या पछी साकरनी इच्छाथी परिभ्रमण करे ते बहिरसंयोजना आ प्रमाणे सुडतालीश दोषानु विशेष विवरण पिंडनिर्युक्ति टीका विगेरेथी जाणवु जेवी रीते आ दोषो पिंडने आश्रयीन [illegible]

हित, निक्षिप्त, पिहित विगरे-आनु आयबिलथी पच्चक्खाण पर्यन्त प्रायश्चित्त जाणवु तेनाथी आछा दोषवाला-औद्देशिक उद्देशना चार भेद, उपकरणपूतिका, घणा काळनी स्थापनानु प्रकटकरण, लोकोत्तर परावर्तित, अप्रामित्य, परभावक्रीत, पोताना गामथी सामे लावेल आहार, दर्दरोद्भिन्न अधःयथाल्पाहृत, प्रथम अध्यवपूरक, सूक्ष्मचिकित्सा, गुणसंस्तवकरण, मिश्रकर्दम, लवण तथा खडीथी म्रक्षित, अल्प दायक दोष, प्रत्येक वनस्पतिमा परपर रहेल, मिश्रमा अतर रहेल—आनु प्रायश्चित्त पच्चक्खाणथी पुरिमड्ढ पर्यन्त जाणवु तेनाथी आछा दोष वाळा-चार प्रकारनी स्थापना सूक्ष्मप्राभृतिका, स्निग्ध सहजम्रक्षित, प्रत्येक मिश्रमा परपर रहेल-आनु प्रायश्चित्त पुरिमड्ढथी निवियना त्याग पर्यन्त जाणवु हजु पण आचार्यना गुणो दर्शावता कहे छे के—

अप्परिस्सावी सम्म, समपासी चेव होइ कज्जेसु ।
सो रक्खइ चक्खु पि व, सबालवुड्ढाउल गच्छम् ॥ २२ ॥

[अपरिश्रावी सम्यक्, समदर्शी चेव भवति कार्येषु ।
स रक्षति चक्षुरिव, सबालवृद्धाकुल गच्छम् ॥२२॥]

गाथार्थ-अन्यनी गुह्य वातने प्रकाशित न करनार तेमज आगम व्याख्यानादिक सर्व कार्योमा समदृष्टि राखनार आचार्यमहाराज, जेम चक्षु खाडादिकमा पडता जीवोने बचावी शके छे तेम बाळ तथा वृद्ध साधुओथी युक्त गच्छने दुर्गतिरूपी खाडामा पडतां राखी शके छे

विवेचन-जेवी रीत पोतानु गुह्य कोईने कहे नहीं तेम बीजाए कहेल रहस्य प्रकाशित न करे जेवी रीत जलना द्रहनी चतुर्भगी श्रीआचाराग सूत्रमा कही छे तेना बीजा भग तुल्य आचार्यभगवत जाणवा ते चतुर्भगी आ प्रमाणे समजवी-१ शीता-शीतोदाना द्रह जेमा पाणी आवे छे अने पाणी बहार वहे पण छे, जेथी नदी नीकळे छे २ पद्मद्रह जेमा नवीन पाणी आवतु नथी पण बहार नीकळे छे ३ लवणसमुद्र के जेमा पाणी आवे छे परन्तु बहार नीकळतु नथी अने ४ मनुष्य लोकनी बहार रहेल समुद्रो के जेमा बहारथी पाणी आवतु पण नथी अने तेमा रहेल पाणी बहार जतु पण नथी आ चतुर्भगी आचार्य आश्रयीने आ रीते घटावी शकाय—१ सूत्र आश्रयीने प्रथम भग सरखा कारण के पोते श्रुत भणे अने बीजाने पण भणावे २ कषायनी अपेक्षाए बीजा भग तुल्य कारण के कषायनो उदय न होय त्यारे धर्मग्रहणनो अभाव होय ३ अने कायोत्सर्गादिक तपश्चर्याथी कर्मनो क्षय करे छे ३ आलोचनानी अपेक्षाए बीजा भागा सरखा कारण के पोते आलोचना जाणे छे परन्तु बीजाने सणावता

नथी तेमज ४ कुमार्गने आश्रयीने चोथा भंग सरखा पण छे तेमने कुमार्गमां जवाना अने निकळवानो अभाव ज छे केवळ सूत्रने आश्रयीने पण चार भागा घटावी शकाय १ स्थविरकल्पी २ तीर्थकरभगवंतो ३ यथालन्दिक (जेओने कोइ बाबतनो निर्णय न थयो होय तो आचार्यादिकने पूछीने निर्णय करे ते) अने ४ प्रत्येकबुद्ध-तेमने कोइने काइ कहेवु पण नथी (उपदेश आपवा नथी) अने कोईने काई पूछवापणु पण नथी वळी सारा आचार्य सर्व कार्यने विषे यथास्थित देखनारा हाय व्याख्यान, साधुओनी शरीर तपास इत्यादिक शास्त्रोक्त कार्योमा पोते प्रवर्ते अने अन्यने प्रवर्तावे जेम नेत्रविना पातानु तेमज परनु रक्षण न थइ शके तेम बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी इत्यादिक साधुओथी व्याप्त गच्छनु रक्षण करवामा सुआचार्य नेत्र सरखा छे आ प्रमाणे सारा आचार्यनु स्वरूप दर्शावी हवे अधम आचार्यनु स्वरूप वर्णवे छे, कारण के पीतळनी धातु ज जो न होत तो सुवर्णनी किंमत कइ रीते आकी शकाय ?

सीयावेइ विहारं, सुहसीलगुणेहिं जो अबुद्धीओ ।
सो नवरि लिंगधारी, संजमजोएण णिस्सारो ॥२३॥

[सीदयति विहार, सुखशीलगुणैर्योऽबुद्धिकः ।
स नवरि लिङ्गधारी, संयमयोगेन निस्सारः ॥ २३ ॥]

गाथार्थ-सुखशीलपणु तथा शिथिलपणु आदि गुणोवडे जे नवकल्पी तेमज गीतार्थरूप विहारने शिथिल करे छे ते आचार्य संयमयोगवडे निःसार अने केवळ द्रव्य लिंगधारी छे.

विवेचन--तत्वज्ञान रहित अने आचारनो अनभिज्ञ आचार्य साध्वाचारथी भ्रष्ट थाय छे अने पासत्थादिकना सुखशीलपणाथी नवकल्पी तेमज गीतार्थ प्रमुखना विहार करतो नथी श्रीबृहत्कल्पसूत्रमा विहारनु वर्णन जणावता कहु छे के-" से गामसि वा जाव पुडभेयणसि वा सपरिक्खेवसि अबाहिरियसि कप्पइ निग्गथाण हेमन्तगिम्हासु एक्क मास वत्थए ॥ " जे गाम, नगर यावत् शब्दथी पुर, पाटण इत्यादिक किल्लायुक्त होय अने किल्लानी बहार वसति न होय तेवा गाम-नगरादिकमा शियाळामा (मागशर, पोष माह अने फागण) तेमज उनाळामा (चैत्र, वैशाख, जेठ अने असाढ) फक्त एक मास पर्यंत ज स्थिरवास करवो कल्पे, तेथी विशेष समय रहेवु कल्पे नहीं " से गामसि वा जाव रायहाणिंसि वा सपरिक्खेवसि सबाहिरियसि कप्पइ निग्गथाण हेमंतगिम्हासु

दोमासे वत्थए, अतो एक मास वाहिं एक मास, अतोवसमाणाण अंतोभिक्खायरिया वाहिंवसमाणाण वाहिभिक्खायरिया।" जे गाम, नगर यावत् राजधानी प्रमुखने फरतो किल्लो होय अने ते किल्लानी बहार पण वसति होय तो ते गाम-नगरादिकमा शियाळो तेमज उनाळामा साधुओने बे मास पर्यंत रहेवु कल्पे एक मास किल्लानी अंदर अने एक मास किल्लानी बहार रहे पछी जे मासमा किल्लामा रह्या होय ते मासमा किल्ला अंदरनी वसतिमां गोचरी करे बहार न जाय, अने बहार रह्या होय त्यारे त्यां ज गोचरी करे, किल्लानी अंदर गोचरी लेवा न जाय परंतु एक मासमा किल्लानी अंदर तेमज बहार बन्ने स्थळे गोचरी करी होय तो ते गाम-नगरादिकमा एक मास ज रहेवु कल्पे विशेष नहीं साध्वी माटे पण शियाळो तेमज उनाळामा आ प्रमाणे जाणवु विशेष ए के-जेनी बहार वसति न होय तथा कोटवाळा नगरमा बे मास अने बहार पण वसति होय तो बे-बे मास एटले चार मास रहेवु कल्पे अने गोचरी पण बे मास कोटमा अने बे मास कोट बहारनी वसतिमा करे "कप्पइ निग्गथाण वा निग्गथीण वा पुरत्थिमे ण जाव अगमगहाओ एत्तए १, दक्खिणे ण कप्पइ निग्गथाण वा निग्गथीण वा जाव कोसंबीओ एत्तए २, पच्चत्थिमे ण जाव थूणाविसयाओ एत्तए ३, उत्तरे ण जाव कुणालाविसयाओ एत्तए ४, एत्तावता व कप्पइ एत्तावता व आयरियखेत्ते णो से कप्पइ एत्तो बाहिं, तेण परं जत्थ णाणदंसणचरित्ताइं उस्सप्पंति।" साधु या साध्वीने पूर्व दिशामां अंग तथा मगधदेश सुधी विचरवु कल्पे, दक्षिण दिशामा कौशाबी नगरी सुधी, पश्चिम दिशामा थुणानी सीम सुधी अने उत्तर दिशामा कुणालानी सीम पर्यंत विहार करवो कल्पे आटलु ज आर्यक्षेत्र होवाथी त्यां विचरवु, परन्तु तेथी विशेष क्षेत्रमा नहीं कारण के ते अनार्यक्षेत्र छे अपवादमार्गथी तो जणाव्यु छे के-ज्या ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी वृद्धि थता होय तो आर्यक्षेत्र उपरांत पण विहार करवो आ प्रमाण बृहत्कल्पसूत्रना पहेला उद्देशामा जणावेल छे आ बाबतमा शंका करता कोइ कहेशे के-आ मासकल्पी विहार तो चोथा आरामा हतो, हमणा तो नथी तेने जवाब आपता श्रीहरिभद्रसूरिजी महाराजा पोताना पंचवस्तुक ग्रथनी टीकामा निरंतरनी क्रिया नामना द्वारमा पडिलेहण तथा प्रमार्जनाना अधिकारमा जणाव छे के-" अवलंबिऊण कज्जं, ज किंचि समायरन्ति गीअत्था। थोवावराहबहुगुण, सव्वेसिं तं पमाणं तु ॥ १ ॥" आगमना ज्ञाता गीतार्थ आचार्य कोइ महाकार्यने अंगे अल्प दोष अने बहु गुणना संभव जाणीने जे आचरण करे ते सव जिनमतानुयायीओए प्रमाणभूत मानवु जोइए. कहेवाना आशय ए छे के-कोइ एक गच्छमा विद्वान् साधु भणवाना उद्यमवाळा

छे हवे जो ते मासकल्पी विहार करे तो तेना अध्ययनमा अंतराय पडे [illegible] गीतार्थ आचार्य तेने मास उपरांत रहेवानी अनुज्ञा आपे आ आचरण [illegible] अल्प छे अने गुण विशेष छे पटले तेने प्रमाणभूत मानवु कारण के [illegible] भगवंतनो मार्ग तो उत्सर्ग तेमज अपवादरूप छे पण तेनो अर्थ एवो [illegible] मासकल्पी विहार न करवो अपवाद तो कारणरूप छे अने तेने [illegible] वारंवार अंगीकार कर्या करे तो ते जोइने अन्य गीतार्थो पण [illegible] करे अने उत्सर्गमार्गनु उत्थापन थाय आ उपरथी मालुम थाय छे [illegible] भद्रसूरिजीना समयमा (स्वर्गवास वी स १०५५) पण मासकल्पी विहार [illegible]

हवे गीतार्थनिश्राए विहार करवा संबंधी वर्णन करता कहे छे के—
" गीअत्थो य विहारो, बीओ गीयत्थनिस्सिओ भणिओ । इत्तो [illegible] नाणुन्नाओ जिणवरेहिं ॥ १ ॥" १ गीतार्थ जेणे सूत्रनो अर्थ [illegible] छे ते जिनकल्पी मुनिनो पोतानी इच्छामा आवे ते प्रमाणे विहार, [illegible] निश्रित एटले आचार्य उपाध्याय आदिनो आज्ञामा रहीने, [illegible] करवाना विहार आ बन्ने प्रकारना विहार उपरांतना त्रीजा [illegible] चारी, अगीतार्थ, पासत्थादिकनी जेम विचरे ते विहारनो [illegible] निषेध करेल छे नियुक्तिनी गाथाद्वारा गीतार्थ विगेरेनु स्वरूप [illegible] छे—" गीअं मुणितेगढं, विदियत्थं खलु वयंति गीयत्थं । [illegible] गीयत्थो ना सुय गीय ॥ १ ॥ " गीत अने मुणित [illegible] एटले जे छेदसूत्रादिनो अर्थ सम्यक् प्रकारे जाणे ते गीतार्थ [illegible] गीत अने अर्थथी जे युक्त होय ते गीतार्थ [illegible] " गीएण होइ गीई, अत्थी अत्थेण नायव्वो । गीएण य [illegible] त वियाणाहि ॥ १ ॥ " आना रहस्यार्थ मध्यमा [illegible] सूत्रने जाणे छे पण अर्थने जाणतो नथी, २ अर्थने जाणे [illegible] नथी, ३ सूत्रने जाणे छे तेमज अर्थने पण जाणे छे [illegible] बन्नेने जाणतो नथी आ चार भागामा चोथो भागो [illegible] जे त्रीजा भागाने धारण करे छे ते ज गीतार्थ छे [illegible] कहेवाय, जे पहेला अर्थ जाणे ते अर्थिक कहेवाय [illegible] बन्ने जाणे ते गीतार्थ कहेवाय गीतार्थ अने गीतार्थ [illegible] छे के-" जिणकप्पिओ गीयत्थो, परिहारविसुद्धिओ [illegible] । [illegible] दुग, सेसा गीयत्थनीसाए ॥ १ ॥ " जिनकल्पी, [illegible] 'अपि' शब्दना ग्रहणथी पडिमाधारी तेमज [illegible] जघन्यथी नव पूर्वनी आचार नामनी त्रीजी वस्तु [illegible] गच्छमा ऋद्धिमत एटले आचार्य तथा उपाध्या, [illegible]

छे, बाकीना साधुओने गीतार्थनिश्रित विहार होय छे "आयरियगणी इड्ढी, सेसा गीया वि होन्ति तन्नीसा । गच्छगयनिग्गया वा, ठाणनिउत्ताऽनिउत्ता वा ॥ १ ॥" आचार्य अने उपाध्याय गच्छमां ऋद्धिमंत-श्रेष्ठ छे अने बाकीना साधुओ गीतार्थ होय तो पण तेमणे आचार्य-उपाध्यायनी आज्ञामां ज विचरवु. बाकीना साधुओ कोण ते संबंधी गाथाना त्रीजा तथा चोथा पादमां जणाय छे के-गच्छमां रहेल, कोई कारणे गच्छमांथी बहार नीकळी एकला विचरनारा, कोई कारणे प्रवर्तक, स्थविर, गणावच्छेदक इत्यादि पदवीधर साधुओने आचार्य उपाध्याय स्थानकमां राख्या होय ते तेमज पदवी विनाना साधुओ-आ सर्वे आचार्य-उपाध्यायनी आज्ञामां ज विचरे. तेओ कयी रीते विचरे ? ते संबंधमां जणावे छे के-"आयारपकप्पधरा, चोद्दसपुव्वी अ जे य तं मज्झा । तन्नीसाइ विहारो, सबालवुड्ढस्स गच्छस्स ॥ १ ॥" १ आचारप्रकल्पधर-निशीथ अध्ययनना जाणकार ते जघन्यगीतार्थ, २ चौदपूर्वी-चौद पूर्वना ज्ञाता ते उत्कृष्टगीतार्थ अने ३ आ जघन्य तथा उत्कृष्टगीतार्थनी मध्यना ते मध्यम गीतार्थ, तेओ व्यवहारसूत्र, दशाश्रुतस्कंधना ज्ञाता होय छे-आ त्रण प्रकारना गीतार्थोनी निश्रामां बाल तथा वृद्ध साधुवाळा गच्छे विहार करवो कल्पे. आ त्रण प्रकारना गीतार्थोने पण स्वच्छंदपणे विहार करवो योग्य नथी. आचार्यनी निश्राए ज विहार शामाटे करवो ? ते शंकाना समाधानमां जणाय छे के—"एगविहारी अज्जाय-कप्पिओ जो भवे चवणकप्पे । उवसपन्नो मंदो, होहिइ वोसट्ठतिट्ठाणो ॥ १ ॥" एकलविहारी अगीतार्थ जाणवो. तेमज तेने चारित्रथी भ्रष्ट थवाने अंगे ज्ञान, दर्शन तथा चारित्र ए रत्नत्रयीने त्यजी देवानो भाव थाय छे अने पासत्थादिकपणे विचरवाथी बुद्धिहीन पण बने छे. आ गाथा निर्युक्तिनी छे तेथी तेना पर विवरण करता कहे छे के-"मुत्तूण गच्छनिग्गय, गीयस्स वि एक्कगस्स मासो उ । अविगीए चउगुरुगा, चरणे लहुगा य भगट्ठा ॥ १ ॥" गच्छथी नीकळेला जिनकल्पी साधु सिवायना गीतार्थ जो एकला विचरे तो एक मास लघुदंड, अगीतार्थ एकलो विचरे तो चारमासी गुरुदंड अने जे मनमां पासत्थादिकपणे विचरवानी इच्छा मात्र करे तेने चारमासी लघुदंड आवे. अर्थात् आ गाथामां गच्छनी निश्रा सिवाय विचरवानो सदंतर निषेध कर्यो छे. आ संबंधमां बृहत्कल्पवृत्तिनी पीठिकानी गाथा 'गीअत्थो अ विहारो०' अने तेनो अर्थ ऊपर (पृ. १४७) जणावी गया छीए वळी ओघनिर्युक्तिमां पण तेनो ते ज गाथा जणावी विशेष जणाव्युं छे के-"संजमआयविराहण, नाणे तह दंसणे चरित्ते य । आणालोवु जिणाणं, कुव्वइ दीहं च संसारम् ॥ २ ॥"

एकला विचरवाथी संयम तेमज आत्मानी विराधना थाय, ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए रत्नत्रयीनु खंडन थाय, तीर्थंकरभगवतनी आज्ञानो लोप थाय तेमज दीर्घ काळ पर्यन्त संसारपरिभ्रमण वधे आ सर्व कई रीते थाय ? " संजमओ छक्काया, आया कठट्ठिजीरगेलम्मे । नाणे नाणायार, दसणचरणाइवुग्गाहे ॥ ३ ॥ " एकलविहारीने उपयोग सरखो न रहे तेथी छकायना आरंभ लागवाथी संयम विराधना, इंद्रियो बळवत्तर बनवाथी कोइ स्थळे मार खाय, लोभथी वधारे पडता आहार करवाथी अजीर्ण थाय, व्याधिग्रस्त थाय तो कोण उपचार करे ? वळी अनर्थ करता होय तो कोण अटकावे ? आ प्रकारे आत्मविराधना थाय, वळी आठ प्रकारनो ज्ञानाचार रूडी रीते न पाळे, चरक, परिव्राजकादि मिथ्यात्वीओ भ्रमित बनावीने समकितथी भ्रष्ट करे तेथी दर्शनाचार पण शुद्ध न रहे अने चारित्र तो शुद्ध पळे ज नहीं, माटे कदापि एकला न विचरवु सुखशीलियो साधु केवो होय ? तेना लक्षण संबधी उपदेशमालाना चोथा शतकमा विस्तारथी कह्यु छे के—

" बायालमेसणाओ, न रक्खई धाइसिज्जपिंड च । आहारेइ अभिक्ख, निग ईओ सन्निहिं खाइ ॥ १ ॥ सूरप्पमाणभोई, आहारेई अभिक्खमाहारम् । न य मडलीइ भुजइ, न य भिक्ख हिंडई अलसो ॥ २ ॥ कीवो न कुणइ लोय, लज्जइ पडिमाइ जल्लमवणेइ । सोवाहणो य हिंडइ, बधइ कडिपट्टयमकज्जे ॥ ३ ॥ गाम देस च कुल, ममायए पीढफलगपडिबद्धो । घरसरणेसु पम-ज्जइ, विहरइ सकिंचणो रिक्को ॥ ४ ॥ नहदंतकेसरोमे, जमेइ उच्छोलधोयणो अजओ । वाहेइ अ पलियकं, अइरेगपमाणमच्छरइ ॥ ५ ॥ सोवइ य सव्वराइ, नीसट्ठमचेयणो न वा सरइ । न पमज्जतो पविसइ, निसीहिआवस्सिय न करे ॥ ६ ॥ पाय पहे न पमज्जइ, जुगमायाए न सोहए इरियं । पुढविदगअगणिमा-रुय-वणस्सइतसेसु निरविक्खो ॥ ७ ॥ सव्व थोव उवहिं, न पेहए न य करेइ सज्झाय । सद्दकरो झझकरो, लहुओ गणभेयतत्तिल्लो ॥ ८ ॥ खित्ताईय भुजइ, कालाईय तहेव अविदिन्नम् । गिण्हइ अणुइयसूरे, असणाई अहव उवगरण ॥ ९ ॥ ठवणकुले न ठवेई, पासत्थेहिं च सगय कुणइ । निच्चमवज्झाणरओ, न य पेहपमज्जणासीलो ॥ १० ॥ रियई य दवदवाए, मूढो परिभवइ तह च राय णिए । परपरिवाय गिण्हइ, निट्ठुरभासी विगहसीलो ॥ ११ ॥ विज्ज मन्त जोग, तेगिच्छ कुणइ भूइकम्म च । अक्खरनिमित्तजीवी, आरंभपरिग्गहे रमइ ॥ १२ ॥ कज्जेण विणा उग्गह-मणुजाणावेइ दिवसओ सुयइ । अज्जियलाभ भुजइ, इत्थिनिसिज्जासु अभिरमइ ॥ १३ ॥ उच्चारे पासवणे, खेले सिंघाणए अणाउत्तो ।

संथारगउवहीणं, पडिक्कमइ वा सपाउरणो ॥ १४ ॥ न करेइ पहे जयणं, तलि याण तह करेइ परिभोगं । चरइ अणुबद्धवासे, सपक्खपरपक्खओमाणे ॥ १५ ॥"

एषणाना बेंतालीश दोष रहित आहार न ले साधुना सोळ दोष पैकी प्रथम जे धात्रीपिंड ते खाय, शय्यातरनो पिंड खाय, वारंवार विगयना आहार करे, रात्रिने विषे चार आहार राखीने खाय, सूर्योदयथी मांडी सूर्यास्त सुधी वारंवार आहार करे, साधुनी मंडलीमां आहार करवा बेसे नहीं, कारण के तेमां तो जेवो आहार आवे तेवो खावो पडे, आळसथी अंग गोचरीए न जाय, लोच करतां दुःख थशे एम जाणी लोच न करे, शरमथी कायोत्सर्ग न करे, मेल उतार्या करे, पगमां मोजडी मोजादिक पहेरे, विना कारण कटिसूत्र बांधे, देश, गाम कुल मारा छे एवी जातनो ममत्वभाव धरावे, शेष समयमां पण पाट-पाटलादिक सेवे, गृहस्थावस्थामां भोगवेल भोग याद करी प्रमत्त थाय, मातु-रूपु इत्यादिक परिग्रह राखे, नख, दांत, केश, शरीरना रोम तथा शरीरने बराबर साफसुफ राखे, क्षमादिक मसळे स्नान करे, गृहस्थनी माफक भोगविलास करे, संथारा उत्तरपट्टा उपरांत शय्या पाथरे अने शय्या पण प्रमाणथी मोटी पाथरे, समग्र रात्रि सुई रहे, प्रमादी बनीने निष्क्रम बेसी रहे, वसति माथी निकळतां 'आवस्सही' अने प्रवेश करतां 'निसीहि' न कहे, गाममां के वसतिमां पेसतां पग प्रमार्जे नहीं, इर्यासमितिपूर्वक (धुसरा प्रमाण आगळ दृष्टि राखीने) न चाले, पृथ्वी, अप तेउ, वाउ, वनस्पति अने त्रसकाय-ए छकायना जीवनी रक्षा न करे, उपधिनी थोडी पण पडिलेहण न करे, स्वाध्याय न करे त्रिकाले एटले रात्रिए अथवा अकाले उंचे स्वरे स्वाध्याय करे, कलह-कंकास करे जेथी अन्यने स्वाध्यायमां अंतराय थाय, गच्छने विषे भेद पडाववामां हुशियार, बे गाउथी विशेष दूर आहार लेवाना निषेध छे छतां जाय, पहेली पोर सीमां लावेला आहार चोथी पोरसीमां वापरे, अणदीठो आहार ले, सूर्योदय थया अगाउ आहार तेमज उपकरण वहोरे, स्थापनाघरमां रहे नहीं, पास थानो संग करे, निरंतर दुष्ट वृत्ति राखे, पुंजवा-प्रमार्जवामां प्रमादी रहे, उतावळो चाले मूर्ख होय, आचार्यादिकनो पराभव करे-तेमनी आज्ञामां न रहे पारकानी निंदा करे कंकास-क्लेश करे, कठोर भाषा बोले, विद्या मंत्र, तंत्र, चूर्ण तथा चिकित्सा करे, कामण-टुमण करे, चीठी-दोरा करे छोकरा भणावे, निमित्त जोई आपे आरंभ-परिग्रह करे कारण विना अवग्रह मागे, दिवसे पण शयन करे, साध्वीए लावी आपेल आहार करे, ज्यां स्त्री बेठी होय त्यां बे घडी थया अगाउ बेसे, स्थंडिल, मातरु, खडखो (कफ) तथा श्लेष्म विगेरे जयणा रहित परठवे, संथारा उपधि ऊपर बेठा बेठा क्रिया करे अगर शरीर ढांकी प्रतिक्रमण करे, मार्गमां चालतां जयणा न पाळे पगरखां पहेरी चाले वर्षाकाळमां पण विहार करे, एक ज गाममां वारंवार चोमासां करे, पोताना या पारका पक्ष पर ममत्व

स्व,-आ बधा लक्षणो पासत्थाना छे आवा प्रकारनी नवकल्पीनी तेमज गीतार्थनी विहारमर्यादाने जे आचार्य पाळता नथी ते यथाछंद वेषधारी साधु ज छे जेम घाणीमां नाखी दाबेल शेलडी निःसत्त्व बनी जाय छे तेम आवा आचार्य संयमभ्रष्ट होवाथी निःसार छे हजु पण तेवा आचार्यना विशेष लक्षणो दर्शावता कहे छे के—

कुलगामनगररज्जं, पयहिय जो तेसु कुणइ हु ममत्तं ।
सो नवरि लिंगधारी, सजमजोएण निस्सारो ॥ २४ ॥

[कुलग्रामनगरराज्य, प्रहाय यस्तेषु करोति हु ममत्वम् ।
स नवरि लिङ्गधारी, संयमयोगेन निस्सारः ॥ २४ ॥]

गाथार्थ–जे कुळ (घर), गाम, नगर अने राज्यमाहथी त्यजी दईने पुनः तेने विषे ज ममत्वभाव धरावे–'ते सर्व मारा ज छे' एम माने तो ते आचार्य संयमयोगवडे निःसार–शून्य छे, मात्र साधुवेषने ज धारण करनार छे.

विवेचन–कुळ एटले घर, रहेवानु स्थान, जमा कर आपवा पडे अथवा बुद्धिने हीन करे ते गाम, जेमा अढार प्रकारना कर न लेवाय ते नगर जेमा राजा रहे तेमज ज्या नमाग होय ते राज्य कहेवाय आ उपरांत टीकाकार बीजा पण जणावे छे के–धूळना किल्लावाळु ते खेटक साद्दु नगर ते कर्बट, जेनी चारे बाजु अढी गाउ सुधीमा बीजु गाम न होय ते मडब (कृत्रिम), जळमा थईने ज स्थळे जवातु होय ते जळपत्तन (द्वीप), स्थळमा थईने मार्ग जतो होय ते स्थळ-पत्तन, लोढा प्रमुख धातुओनी ज्या खाण होय ते आकर, जेमा स्थान तेमज जळमार्गे जवाय ते द्रोणमुख, ज्या विशेष वणिक वसता होय ते निगम,–आ सर्वना त्याग करीने साधु थया बाद तेना विषे ममत्वभाव–आसक्ति राखे तो तेवा आचार्यने पण द्रव्यलिंगी ज जाणवा हवे सारा आचार्यना लक्षणो दर्शावता कहे छे के—

विहिणा जो उ चोएइ, सुत्त अत्थ च गाहई ।
सो धन्नो सो अ पुण्णो अ, स बधू मुक्खदायगो ॥ २५ ॥

[विधिना यस्तु चोदयति, सूत्रमर्थं च ग्राहयति ।
स च धन्यः स च पुण्य एव, स बन्धुर्मोक्षदायक ॥ २५ ॥]

गाथार्थ––जे आचार्य शिष्यसमूहने करवालायक सारणा वारणादिकमा प्रेरणा करे छे तेमज सूत्र ने अर्थ भणावे छे ते ज आचार्य धन्य, पवित्र, बधु समान अने मुक्तिदायक छे.

विवेचन-सूत्रोक्त विधिवडे शिष्यादिकने प्रेरणा करवी ते विधि कई ? ते माटे कहे छे के-"धम्ममइएहिं अइसुदरेहिं, कारणगुणोवणीएहिं। पल्हायतो श्रमण, सीसं चोएइ आयरिओ ॥ १ ॥" धर्मबुद्धिथी मिष्ट भाषावडे शिष्यादिकना मनने हर्ष उपजावीने प्रेरणा करे-शुद्ध धर्मक्रिया करावा वळ सूत्र भणवानी विधि व्यवहारसूत्रना उद्देशामां आ प्रमाण जणावी छे-"णो कप्पति णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा खुड्डगस्स वा खुड्डियाए अवजणजायस्स आयारपकप्पे णाम अज्झयणे उद्दिसित्तए १, कप्पति णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा खुड्डगस्स वा खुड्डियाए वा वजणजायस्स आयारपकप्पे नाम अज्झयणे उद्दिसित्तए २ वीसवासपरियाए समणे निग्गथे सव्वसुआणुवादी भवतीत्यादि० ॥ जेने मूछ, दाढी व काखमां रोम नथी तेवा लघु शिष्यने तेमज जेने स्तन उपस्या नथी तेवी लघु साध्वीने आचारांग सूत्र न भणाववु. जेने त्रण वर्षना दीक्षापर्याय थया होय तेवा सुयोग्य शिष्यने आचारांग भणाववुं. चार वर्षनी दीक्षावाळाने सुयगडांग, पांच वर्षवाळाने दशाकल्प अने व्यवहारसूत्र, आठ वर्षवाळाने स्थानांग अने समवायांग, दश वर्षवाळाने भगवती, अगियार वर्षवाळाने खुड्डियाविमानप्रविभक्ति, महल्लियाविमानप्रविभक्ति, अंगचूलिया, वंगचूलिया अने विवाहचूलिया, बार वर्षवाळाने अरुणोपपात, वरुणोपपात, गरुडोपपात, धरणोपपात, वैश्रमणोपपात अने वेलंधरोपपात, तेर वर्षवाळाने उत्थानश्रुत, समुत्थानश्रुत, देवेन्द्रोपपात, नागपरियावणिका, चौद वर्षवाळाने महासुमिणभावना, पंदर वर्षवाळाने चारणभावना, सोळ वर्षवाळाने आशीविषभावना, सत्तर वर्षवाळाने दृष्टिविषभावना, ओगणीश वर्षवाळाने दृष्टिवाद अंग अने वीस वर्षना चारित्रपर्यायवाळाने सर्व सूत्र भणाववु. आ तो सूत्र भणाववानो समय कह्यो परंतु ते सूत्रनी उपधान-जोगनो जे विधि कहेलो छे ते प्रमाणे योग वहन करावीने सूत्र भणाववु. आ प्रमाणे सूत्राभ्यास कराव्या पछी अनुक्रमे निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णी, संग्रहणीवृत्ति अने टिप्पनिका—ए पंचांगी प्रमाणे अर्थ भणाय, परंतु पोतानी मतिकल्पनाथी न भणाय. जे पंचांगीने न माने ते मिथ्यादृष्टि गणाय. श्रीभगवतीजीना पचीशमा शतकना त्रीजा उद्देशामां कह्यु छे के—'सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निज्जुत्तिमीसिओ भणिओ। तइओ अ निरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥ १ ॥" प्रथम सूत्रनो अर्थ वचाय, बीजो निर्युक्तियुक्त वचाय अने त्रीजो बाकीना पटल भाष्य, चूर्णी अने टीका सहित भणाय. वळी श्रीनंदिसूत्र तेमज आवश्यकनिर्युक्तिमां जणावेल विधि प्रमाणे भणाय. आवा जे आचार्य होय ते ज धन्य, पुण्यवंत-पवित्र, कुमतिनु निवारण करी सुमतिमां जोडनार बंधु तेमज शिवसुखना कारणभूत ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी प्राप्ति

शास्त्रकार होवाथी मोक्षदाता पण छे हजु पण लक्षण-गुण मार्गथी विशेष वर्णन करता जणावे छे के—

स एव भव्वसत्ताण, चक्खूभूए विआहिए ।
दसेइ जो जिणुद्दिट्ठं, अणुट्ठाण जहट्ठिअ ॥ २६ ॥

[स एव भव्यसत्त्वाना, चक्षुर्भूतो व्याहृतः ।
दर्शयति यो जिनोद्दिष्ट-मनुष्ठान यथास्थितम् ॥ २६ ॥]

गाथार्थ—श्रीजिनेश्वर परमात्माए प्रकाशित रत्नत्रयी अनुष्ठान यथास्थित दर्शावे छे ते ज आचार्य भव्य प्राणिओने चक्षु समान कहेल छे

विवेचन-नेत्रहीनने सर्व विश्व अधकारमय भासे छे, तेने सत्पथ सूझतो नथी सव कार्योमा सर्वप्रथम नेत्रनी ज जरूर पडे छे एटले बधी इन्द्रियोमा तेने अग्रस्थान मळ्यु छे सुआचार्य तीर्थंकर परमात्माना सम्यग्दर्शन, ज्ञान अने चारित्ररूपी रत्नत्रयीना दर्शावनारा होवाथी तेमने चक्षुनी उपमा आपी छे हव नीचेना श्लोकमा बे पादवडे गुणी आचार्यने तीर्थंकर सदृश अने बाकीना बे पादमा आज्ञाभगी आचार्यने नीच पुरुष-कापुरुष सदृश दर्शावे छे—

तित्थयरसमो सूरी, सम्म जो जिणमय पयासेइ ।
आणं अइक्कमतो सो, काउरिसो न सप्पुरिसो ॥ २७ ॥

[तीर्थंकरसम सूरि , सम्यग् यो जिनमत प्रकाशयति ।
आज्ञामतिक्रामन् स, कापुरुष, न सत्पुरुष ॥ २७ ॥]

गाथार्थ—जे आचार्य जिनेश्वर मत–अनेकात दर्शन प्रकाशे छे ते तीर्थंकर समान छे अने जे (जमालीनी माफक) परमात्मानी आज्ञानु उल्लघन करे छे ते अधम पुरुषनी गणनामा आवे छे.

विवेचन—गुणो युक्त आचार्यने तीर्थंकर सदृश शा माटे कह्या ? तीर्थंकर परमात्माने तो चोत्रीश अतिशय होय छे तेमनी अतुल ऋद्धिनी काइ कल्पना पण थई शकती नथी तो आचार्यने तेमनी उपमा कइ रीते आपी शकाय ? आवी शका करनारने शास्त्रकार कहे छे के-जेम तीर्थंकर अर्थ प्रकाशे तेम ज आचार्य अर्थ कहे छे, वळी केवळज्ञान प्राप्त थया पछी जेम तीर्थंकर गोचरीए जता नथी तेम आचार्य पण भिक्षार्थे जता नथी इत्यादि अनेक प्रकारोनी साम्यताथी आचार्यने तीर्थंकर

तुल्य कही शकाय श्रीमहानिशीथ सूत्रना पांचमा अध्ययनमा भावाचार्यने तीर्थंकर सदृश कह्या छे—" से भयव ! किं तित्थयरसंतिअं आणं नाइक्कमिज्जा, उदाहु-आयरियसंतिअं ? गोयमा ! चउव्विहा आयरिया भवंति, तं०-नामायरिया ठवणायरिया दव्वायरिया भावायरिया, तत्थ णं जे ते भावायरिया ते तित्थयरसमा चेव दट्ठव्वा, तेसिं संतिअं आणं नाइक्कमेज्ज "त्ति० हे भगवन् ! तीर्थंकर सबधी आज्ञा न उल्लघवी के आचार्य सबधी ? हे गौतम ! नामाचार्य, स्थापनाचार्य, द्रव्याचार्य अने भावाचार्य एम चार प्रकारना आचार्य कह्या छे ते पैकी भावाचार्य तीर्थंकर सदृश होई तेमनी आज्ञानुं कदापि उल्लघन न करवुं, कारण के तेवा आचार्य सात नय, चार निक्षेप, उत्सर्ग अने अपवादमार्गना ज्ञाता तथा निश्चय अने व्यवहारना जाण होय छे

सावद्याचार्यनी कथा—

जे तीर्थंकरनी आज्ञानु उल्लघन करे ते आ लोकमा तो अधम पुरुष कहेवाय छे अने परलोकमा पण दु खदायक स्थिति भोगवधा उपरात तेने अनंत संसारमा परिभ्रमण करवु पडे छे आ सबधमा महानिशीथना पांचमा अध्ययनमा सावद्याचार्यनु वृत्तांत जणावेल छे, ते आ प्रमाणे-गौतमस्वामी श्रीमहावीर परमात्माने पूछे छे के-'हे भगवंत ! सावद्याचार्ये संसारमा अनता काळ सुधी शा माटे भम्यो ?' परमात्मा तेनो वृत्तांत जणावता कहे छे के-' हे गौतम ! श्रीऋषभदेवथी प्रारंभी जे वर्तमान चोवीशी छे तेनी पूर्वे अनंती चोवीशीओ थई गयेल छे तेथी कोई अनतमी चोवीशीमा धर्मश्री नामना चोवीशमा तीर्थंकर बराबर मारा जेवा थया तेमना तीर्थमा सात आश्चर्यो थया, तेमा असंयतिनी पूजा पण एक आश्चर्य थयु अस यतिओ श्रावकोने उपदेश आपी, द्रव्यव्यय करावी जिनचैत्य करावे अने पछी तेमा पोते वसवाट करे साधुओए जिनचैत्यमा वास करवो उचित नथी, कारण के तेथी महाआशातना थाय व्यवहार तथा कल्पभाष्यमा जणाव्यु छे के—साधुओए उत्कृष्ट चैत्यवदन करवा जेटलो समय ज चैत्यमा गाळवो, तेथी विशेष समय रोकावु नहीं तेमना समयमा घणा असयतिओ चैत्यवासी बनी गया 'आ बाजु ग्रामानुग्राम विहार करता करता घणा शिष्योना परिवारयुक्त कुवलयप्रभ नामना उग्र विहारी अने तपस्वी आचार्य त्या आवी चढ्या, पछी चैत्यवासी ओए तेमने वदन करीने विज्ञप्ति करी के-'आप अहीं चातुर्मास करो, तेथी अतीव उपकार थशे तमारा उपदेशथी घणा नूतन चैत्यो बधाशे ' आचार्ये कह्यु के-'आ सावद्य कार्य छे तेमां हु वचन मात्रथी पण समति न आपु तो उपदेश देवानी वात ज शी करवी ? ' हे गौतम ! आ प्रमाणे कहेवाथी ते कुवलयप्रभाचार्ये तीर्थंकरनाम कर्म उपार्जन कर्यु, अने एक भव जेटलो ज तेमनो ससार शेष रह्यो बधा चैत्य वासीओए आ कथन सांभळीने ते आचार्यनु नाम "सावद्याचार्य" राख्यु सावद्या

वायने तेथी लेश मात्र पण द्वेष न थयो अने त्यांथी विहार करी गया एकदा ते वेशधारी चैत्यवासीओमां सूत्राथ संबंधमां परस्पर विवाद उद्‌भव्यो पहेले एके कह्युं-' श्रावक न होय तो साधु चैत्यनी संभाळ राखे, समरावे तेमज चैत्यमां काइ करवा योग्य होय ते करवामां तेने दोष नथी ' बीजाए कह्यु-' आ प्रमाणे करवाथी मोक्षप्राप्ति नथी शुद्ध संयमना आराधनथी ज मोक्ष मळे छे ' त्रीजाए कह्यु-' पूजा, सत्कार, बलिविधान अने वेधादि विविरता करीने चैत्यनी उपन्न वधारवी अने तेथी ज मोक्षप्राप्ति थशे ' आ प्रमाणे विवादनो अत न आव्यो त्यारे सर्वेए नक्की कर्युं के-आपणे सावद्याचार्यने बोलाववा अने तेओ जे कहे ते प्रमाण मानवु सावद्याचार्य ते समये दूर देशमा हता छता तेओना आग्रहथी सात मास पर्यंत उग्र विहार करीने त्यां आवी पहोंच्या चैत्यवासीओ सामे गया अने बहुमानपूर्वक वदन कर्यु ए समये एक साध्वीए पण प्रदक्षिणा आपीने सावद्या चार्यने वदन कर्युं तेवामां तेनु मस्तक तेमने अडी गयुं चैत्यवासीओए आ संघट्टानो दोष नजरे निहाळ्यो

एकदा चैत्यवासीओनी पर्षदामा सूत्रार्थ करता ते सावद्याचार्ये महानिशीथ ना पांचमा अध्ययननी आ गाथानी व्याख्या-" जत्थित्थीकरफरिसं, अतरियं कारणे वि उप्पन्ने । अरिहा वि करिज्ज सयं, तं गच्छं मूलगुणमुक्कं ॥ १ ॥" करता पूर्वे विचार्युं के-मने वदन करता साध्वीनो संघट्टो थयो छे अने ते आ सर्व चैत्यवासीओए नजरे निहाळ्यो छे आ गाथानो जेवो अर्थ छे तेवो ज अर्थ कहीश तो पूर्वे तो मने सावद्याचार्यनु उपनाम आप्यु छे पण हवे तो बीजु ज कई उपनाम आपशे जो जेवो छे तेवो अर्थ कहीश नहीं तो अरिहतपरमात्मानी आज्ञाभगनो दोष लागशे, तो हवे मारे शु करवु? छेवटे तेणे निर्णय कर्यो के-जे थवानु होय ते थाय पण खोटो अर्थ तो न ज करवो बाद तेणे अर्थ करता कह्यु के-' महाकारण आवी पडये छते पण जे गच्छमां साधु स्त्रीना हस्तनो स्पर्श करे छे ते गच्छ मूलगुण रहित (भ्रष्ट) जाणवो ' आ कथन सांभळी चैत्यवासी ओए कह्यु के-' हे आचार्य ! तो तमो पण मूलगुण रहित ज छो, कारण के साध्वीए तमने वदन करता तेनो स्पर्श थई गयो छे ' आ सांभळी सावद्याचार्ये विचार्युं के-हवे शुं उत्तर आपवो ? आचार्यपणामा त्रण योग अने त्रण करण वडे कोई पण पापस्थानक सेववु घटे नहीं आ प्रमाणे तेमने विचारमा पडेला जोईने चैत्यवासीओए कह्यु के-'केम बोलता नथी ? शु विचारमा पडी गया छो ? ' त्यारे सावद्याचार्य मनमा विचारीने कह्यु के-' अयोग्यने सूत्रार्थ न समजाववो आमे घडे निहित्तं, जहा जलं तं घडं विणासेइ । इअ सिद्धन्तरहस्सं, अप्पाहारं विणासेइ ॥ १ ॥ जेम काचा घडामां नाखेलु जळ घडानो ज विनाश करे छे तेम अल्पबुद्धिवाळा प्राणीने कहेल सूत्रार्थ तेनो ज नाश करे छे अर्थात् जड प्राणियोने सूत्रार्थ न समजाववो ' आ सांभळीने चैत्यवासीओए

कह्यु के-' आवु अव्यवस्थित ने समज विनानु शु बालो छो ? सत्य हकीकत कहो, नहीं तो अहींथी चाल्या जाओ ' पोतानो आ प्रमाणे अपयशवाद थतो जाणीने सावद्याचार्ये अनंतसंसारना हेतुभूत वचन उच्चार्यु के-' एगंत मिच्छत्त, जिणाण आणा अणेगंतम् । उत्सर्ग अने अपवाद एम बे प्रकारनो जिनागम कह्यो छे एकांतवादमा मिथ्यात्व छे, जिनेश्वरनो आदेश तो अनेकांत छ माटे एकांत आग्रह न करवो ' सावद्याचार्यना आ कथनथी चैत्यवासीओए मान्यु के-खरेखर एम ज हशे अनेकांतधर्मवाळा जिनागममा साध्वी-संघट्टाने माटे एकांत निषेध नहीं होय तेओए सावद्याचार्यनी आगमज्ञाता तरीके घणी ज प्रशंसा पण करी परंतु आचार्ये तो एक मिथ्या वचन कहेवाथी अनन्तसंसार-परिभ्रमण वृद्धि पमाडयु तीर्थंकरनामकर्मने उपार्जन करनार आचार्य एक मात्र उत्सूत्र-प्ररूपणाथी अनंत संसार भमे छे, अहो ! उत्सूत्रीपणानी भयंकरता केवी ? बाद ते दोषने आलोच्या विना मृत्यु पामवाथी सावद्याचार्य मरीने व्यंतर निकायमा उपज्या त्याथी च्यवीने वासुदेवना पुरोहितनी विधवा पुत्रीनी कुक्षिमा उपज्या कलंकना भयथी पुरोहिते पुत्रीने घरमाथी काढी मूकी कोई पण स्थळे तेने आश्रय न मळ्यो पछी तेणी कल्पपाल(मद्य-मांस वेचनार)ना घरे दासी तरीके रही त्या तेने गर्भ-प्रभावथी मद्य, मांस, मदिरा पीवानो दोहलो उपज्यो मद्य-पान पीनारा घणा लोकोना परिचयमा आवतां मद्य-मांस ते खावा लागी छता तेनी तृप्ति न थई पछी शेठना घरमाथी वासण तथा वस्त्र चोरी-चोरीने तेना द्रव्यद्वारा मांसभोजन करवा लागी आ वातनी तेना मालिकने खबर पडतां तेणे राजाने फरियाद करी राजाए तेने गर्भवती जाणीने चांडालने सोंपी अने कह्यु के-' प्रसव थया बाद तने मारी नाखजे ' चांडाल लोकोनी पण ए मर्यादा छे के-गर्भवती स्त्रीने मारवी नहीं पुरोहितनी पुत्री पण पुत्रने जन्म आपीने त्याथी शीघ्र नाशी गई राजाए चांडालने पाचमी द्रव्य आपीने पुत्रने उछेराव्यो बालकमे ते चांडाल मृत्यु पामता आ बाळकने तेना स्थान पर नियुक्त कर्यो आ प्रमाणे चांडालनो बीजो भव थयो (२) त्याथी मृत्यु पामीने त्रीश सागरोपमना आयुष्यथी सातमी नारकमा उपज्यो (३) त्यांथी निकळी अंतर्द्वीपमा ' एकोरुक ' जातिमा उपज्यो (४) त्याथी मृत्यु पामी पाडो थयो (५) त्याथी छवीस वर्षना थया बाद मरण पामी मनुष्य थयो (६) त्याथी मरी वासुदेव थयो (७) मरीने सातमी नरके गयो (८) त्याथी निकळी मांसाहारी गजकर्ण मनुष्य थया (९) त्याथी सातमी नारकना प्रतिष्ठान नामना नरकावासमा उपज्या (१०) त्याथी मरी पाडो थयो (११) त्याथी बालविधवा ' रुधकी ' नामनी ब्राह्मणीनी कुक्षिमा उपज्यो त्या गर्भ पाडवा माटे अनेक औषधोपचार करवाथी अनेक रोगोथी व्याप्त अने कोढिया थयो शरीरमा कीडा पडी गया आ प्रमाणे महादुःखी थई, सातसो वर्ष, बे महिना अने चार दिवसनु आयु भोगवी मृत्यु पाम्या (१२) त्याथी व्यंतरदेव थयो (१३) त्याथी चांडालनो स्वामी मनुष्य

थयो (१४) बाद सातमी नरके गयो (१५) त्यांथी माछु पकडनाराने घरे बळद थयो (१६) गाडानो भार वहन करावता तेनी कांध सडी गइ तेथी मालिके तेने काढी मूक्यो कागडा तेने चुंटवा लाग्या, कीडाओ खावा लाग्या अने कूतराओ बचका भरवा लाग्या आवी दुःखद स्थितिमा ओगणत्रीश वर्षनुं आयु पुरु करीने एक श्रेष्ठीने घरे महारोगी पुत्र तरीके जन्म्यो (१७) त्यां अतिशय दाढा अने उल्टी आदिना दुःखने भोगवता मनुष्य भव पूरो कर्यो आ प्रमाणे चौद राजलोकमा अनंतो काळ परिभ्रमण कर्यो बाद पश्चिम महाविदेह क्षेत्रमा मनुष्य तरीके उपज्या त्या लोकोनी देखादेखीथी तीर्थंकरपरमात्माने वांदवा गयो प्रतिबोध पामी चारित्र स्वीकार्युं अने चालु चोवीशीना श्रीपार्श्वनाथ तीर्थंकरना समयमा ते सिद्ध थया' आ हकीकत सांभळी गौतमस्वामीए भगवंत महावीरने प्रश्न कर्यो के–" हे स्वामिन्! शामाटे सावद्याचार्ये आटलुं बधु दुःख भोगव्युं ?" "हे गौतम! तेणे उत्सर्ग अने अपवादथी आगममार्ग छे एम कह्यु तेथी जो के सिद्धांतमा अपवाद अने उत्सर्गमार्ग अनेकांत स्वरूप कहेल छे छता पण (१) सचित्त जळ, (२) अग्निकायनो परिभोग तथा (३) मैथुनसेवननो तो एकांत निषेध ज छे आ आज्ञाना भंगथी अनंत संसारी थयो" "हे भगवंत! शुं सावद्याचार्ये मैथुन सेव्युं हतुं ?' "हे गौतम! तेणे मैथुन सेव्यु नथी परंतु साध्वीनो संघट्टो थया त्यारे तेणे पोतानो पग खेंची लीधो नहीं, जेम हतो तेम ज राख्यो तेथी ते सेव्या सदृश ज गणाय" "हे भगवंत! सावद्याचार्ये तो तीर्थंकरनाम-कर्म उपार्ज्युं हतुं अने एक ज भव बाकी हतो तो शा माटे आटलो अनंत संसार भम्यो ?" "हे गौतम! पोताना प्रमादथी, कह्यु छे के– चोद्दसपुव्वी आहारगा वि, मणनाणिवीयरागा य। हुंति पमायपरवसा, तयणंतरमेव चउगइ-आ ॥ १ ॥ चौदपूर्वी, आहारक शरीरधारी, चार ज्ञानना धणी अने वीत राग एटले उपशांतकषायी पण प्रमादना परवशपणाथी चार गतिमां भम्या छे माटे आचार्ये तो सदा अप्रमत्तपणे ज रहेवु" वळी श्रीभगवतीसूत्रना अढारमा शतकना सातमा उद्देशामा मद्दुआ श्रावकने उद्देशीने कह्यु छे के–" जे णं मद्दुआ! अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा वागरणं वा अन्नायं वा अदिट्ठं वा अस्सुयं वा अपरिन्नायं वा बहुजणमज्झे आघवेइ पण्णवेइ परूवेइ दंसेइ निदंसेइ, उवदंसेइ, से णं अरिहंताणं आसायणाए वट्टइ, अरिहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स आसायणाए वट्टइ, केवलीणं आसायणाए वट्टइ, केवलिपण्णत्तस्स धम्मस्स आसायणाए वट्टइ। हे मद्दुआ श्रावक! जे कोइ अर्थ, हेतु, प्रश्न तथा प्रश्न-वचन जाण्या विना, जोया विना, सांभळ्या विना, तेना संपूर्ण ज्ञान विना बहु लोकोनी मध्यमां कहे, प्रज्ञापणे जणाय, प्ररूपे, 'आ अर्थ आम ज छे' तेम

देखाडे, साक्षात् देखाडे ते अरिहतनी, अरिहंतप्ररूपित धर्मनी, केवळीनी अने केवळीप्ररूपित धर्मनी आशातना करे छे " वळी श्रीनंदिसूत्रमा कह्यु छे के—
"इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग तीए काले अणता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरतससारकतार अणुपरियट्टिंसु १ । इच्चेइयं दुवालसग गणिपिडग पडुप्पन्नकाले परित्ता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरत ससारकतार अणुपरिअट्टति २ । इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग अणागए काले अणता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरत ससारकतार अणुपरियट्टिस्सति ३। इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग तीए काले अणता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरत ससारकतार वीइवइसु ४ । इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग पडुप्पन्नकाले परित्ता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरत ससारकतार वीइवइति ५ । इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग अणागए काले अणता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरत ससारकतार वीइवइस्सति ६ ॥ "
द्वादशांगीना भणनार छता पण आज्ञाना विराधक यथार्थी अनंत संसारमा भम्या १, वर्तमानकाळमा पण आज्ञा-विराधक चार गतिमा भमे छे वर्तमान काळमा सख्याता ज होय माटे मूळमा परित्ता शब्द कह्यो छे २, भविष्यकाळमा भमशे ए त्रीजो भेद ३, आज्ञापूर्वक बार अगनु अध्ययन करता केटलाय भव्य जीवो मोक्षे गया ४, वर्तमानकाळमा पण सख्याता जीव आणाने आराधीने मोक्षे जाय छे ५ अने भविष्यकाळमा पण अनता जीवो मोक्षे जशे ६ " अरिहतनी आज्ञा विराधवामां केटलु भयकर जोखम रहेलु छे तेनो आ श्लोकद्वारा विचार करी मोक्षाभिलाषी आचार्य, उपाध्याय तेमज प्रवर्तके आगमना अर्थ यथार्थ जणाववो पण पोतानी मतिकल्पनानो उपयोग न करवो केवा आचार्य भगवंतनी आज्ञानु उल्लघन करे ते जणावे छे—

भट्ठायारो सूरी १, भट्ठायाराणुविक्खओ सूरी २ ।
उम्मग्गठिओ सूरी ३, तिन्नि वि मग्ग पणासति ॥ २८ ॥

[भ्रष्टाचारः सूरिर्भ्रष्टाचारापेक्षक सूरि' ।
उन्मार्गस्थित' सूरिस्त्रयोऽपि मार्ग प्रणाशयन्ति ॥ २८ ॥]

गाथार्थ—ज्ञानाचारादिक आचार जेना शिथिल थई गया छे ते भ्रष्टाचारी अधमाचार्य, आचारभ्रष्ट थयेला साधु-साध्वीओनी उपेक्षा करनार मदाचार्य तेमन उन्मार्गमा रहेल-उत्सूत्र प्ररूपनार अधमाधम आचार्य-आ त्रणे प्रकारना आचार्य मोक्षमार्गनो विनाश करनारा छे

विवेचन–जेना नायकमा ज शिथिलपणु होय तेना आश्रित जनोमा स्वाभाविक रीते ज मदता आवी जाय छे आपणामा कहेवत प्रचलित छे के– ' जेनो नायक आधळो तेनु कटक कुवामा ' एटले के गच्छना अग्रणीए तो ज्ञानाचारादिक आचारोमा सतत प्रयत्नशील ज रहेवु जोईए तेमने क्रियायत जोईने कईक मद पडेला साधु-साध्वीओ पण फरीथी स्वधर्ममा स्थिर थई जाय छे आ गाथाना अर्थमा आपणने त्रण प्रकारना आचार्य जणाव्या हवे तेने सेवनारनी शी स्थिति थाय ते जणावता कहे छे के–

उम्मग्गठिए सम्मग्ग–नासए जो उ सेवए सूरी ।
निअमेण सो गोअम !, अप्प पाडेइ ससारे ॥ २९ ॥

[उन्मार्गस्थितान् सन्मार्ग–नाशकान् यस्तु सेवते सूरीन् ।
नियमेन स गौतम !, आत्मान पातयति ससारे ॥ २९ ॥]

गाथार्थ–उन्मार्गगामी अने सद्मार्गनो नाश करनार आचार्यने जे सेवे छे–तेमना कहेल अनुष्ठानोने जे करे छे ते हे गौतम ! पोताने आ ससारसागरमा रखडावे छे.

विवेचन–सन्मार्गना लोपक आचार्य पासेथी आत्मकल्याणनी कई वात समजाय ? ते पोते तो पतित थयेला ज छे अने पोतानी उपासना करनारा, पासे रहेनाराओने पण पतित बनाय छे, माटे पत्थरना जहाज तुल्य तेओ स्वय ससारसागरमा डूबे छे अने अन्यने पण डुबाडे छे ऊपरनी ज हकीकतनु दृष्टातद्वारा समर्थन करता कहे छे के–

उम्मग्गठिओ एक्को वि, नासए भव्वसत्तसघाए ।
त मग्गमणुसरत, जह कुत्तारो नरो होइ ॥ ३० ॥

[उन्मार्गस्थित एकोऽपि, नाशयति भव्यसत्त्वसङ्घातान् ।
तन्मार्गमनुसरन्त', यथा कुतारो नरो भवति ॥ ३० ॥]

गाथार्थ–जेम नबळो तरवावाळो पोताने तेमज पोताना आश्रित बनेला जनोने नदी विगेरे जळाशयमा डूबाडे छे तेम कुमत–कदाग्रहथी भरपूर आचार्य पोताने अनुसरनारा भव्य प्राणिओने ससारसागरमा रखडावे छे.

विवेचन–जे पूरेपूरु तरवानु जाणतो न होय ते पोतानी पाछळ लागला प्राणिओनो विनाश करे छे तेम उत्सूत्र भाषण करनार, कदाग्रही आचार्य पोताना आश्रित साधुओने तेमज भक्तवर्ग श्रावकजनोने अनता भवोमा रखडा

यथाना हेतुभूत थवाथी खरेखर तेना विनाशभूत थाय छे उन्मार्गे गमन कर नारनु शुं अहित थाय छे ? ते दर्शावता कहे छे—

उम्मग्गमग्गसंपट्ठिआण, साहूण गोअमा ! नूणम् ।
ससारो अ अणतो, होइ य सम्मग्गनासीण ॥ ३१ ॥
[उन्मार्गमार्गसम्प्रस्थिताना, साधूना गौतम ! नूनम् ।
समारश्चानन्तो, भवति सन्मार्गनाशिनाम् ॥ ३१ ॥]

गाथार्थ—उन्मार्गे वर्तनारा अने सन्मार्गनो नाश करनारा साधुओने हे गौतम ! जरूर ससारमा अनती वार परिभ्रमण करवु पडे छे.

विवेचन-गाथाल्लाप प्ररूपेलो मत, दिगंबरोय प्रवर्तावल मत ए उन्मार्ग कहे वाय तेवा उन्मार्गे चालनारा निह्नवोनो ससारमा भमता भमता पण पार आवे नहीं एकला परिभ्रमण मात्रथी ज बस नहीं परन्तु अनेक प्रकारना दुःखो-कष्टो सहन करवा पडे शुद्धमार्गना छेदनारा साधुओ पण अनतससारी थाय छे आ मयधमा श्रीमहानिशीथसूत्रमा कहेल मुनिचंद्र मुनिनु वृत्तात जाणवा योग्य छे भगवत श्रीमहावीर गौतमस्वामीने उद्देशीने कहे छे के- हे गौतम ! आवा साधु आचार्यो मात्र लिंगधारी-साधुवेशने धारण करनारा ज जाणवा ' कदाच काइ प्रमादपणाथी जिनेश्वरभाषित क्रिया न आचरी शके परन्तु जो भव्य जनोने यथाथ जिनमार्ग दर्शावे तो ते पोताने कया मार्गमा स्थापे ? ते जणावता कहे छे के—

सुद्ध सुसाहुमग्ग, कहमाणो ठवइ तइअपक्खम्मि ।
अप्पाण इयरो पुण, गिहत्थधम्माउ चुक्क त्ति ॥ ३२ ॥
[शुद्ध सुसाधुमार्ग, कथयन् स्थापयति तृतीयपक्षे ।
आत्मानमितरः पुनो, गृहस्थधर्माद् भ्रष्ट इति ॥ ३२ ॥]

गाथार्थ—शुद्ध साधुमार्गनी प्ररूपणा करनार पोताना आत्माने सविज्ञ-पाक्षिक नामना त्रीजा (साधु अने श्रावकनी अपेक्षाए) पक्षमा स्थापे छे अने तेथी विपरीत-उत्सूत्रभाषक गृहस्थ अने साधु उभय धर्मथी भ्रष्ट थाय छे.

विवेचन—एक साधु धर्म, बीजो गृहस्थ धर्म अने त्रीजो सविज्ञपाक्षिक नो धर्म छे पोते शरीरनी अशक्तिथी अथवा प्रमादशीलताथी शुद्ध अनुष्ठाननु आचरण न करी शकता होय परन्तु ते प्रत्येना अतरग भावथी शुद्ध धर्मनु प्ररूपण करता होय तो तेने त्रीजा पक्षमा गणवो तेथी विपरीत प्ररूपणा करनार

पासत्थो जाणवो प्रसगप्रशात् त्रणे पक्षनु वर्णन करता कहे छे के—" सुज्झइ जई सुचरणो, सुज्झइ सुस्सावओ वि गुणकलिओ। ओसन्नचरणकरणो, सुज्झइ सविग्गपक्खरुई ॥ १ ॥ सविग्गपक्खियाण, लक्खणमेय समासओ भणिय। ओसन्नचरणकरणा वि, जेण कम्म विसोहति ॥ २ ॥ सुद्ध सुसाहुधम्म, कहेइ निंदइ य निययमायारम्। सुतवस्सियाण पुरओ, होइ य सव्वोमराइणिओ ॥३॥ वदइ न य वदावइ, किइकम्म कुणइ कारवे नेव। अत्तट्ठा न वि दिक्खइ, देइ सुसाहूण बोहेउ ॥४॥ ओसण्णो अत्तट्ठा, परमप्पाण च हणइ दिक्खतो। त छुहइ दुग्गईए, अहिययर वुड्डइ सय च ॥५॥ सावज्जजोगपरिवज्जणाउ, सव्वुत्तमो जई धम्मो। बीओ सावगधम्मो, तइओ सविग्गपक्खमहो ॥ ६ ॥ सेसा मिच्छदिट्ठी, गिहिलिंगकुलिंगदव्वलिंगेहिं। जह तिन्नि उ मुक्खपहा, ससारपहा तहा तिन्नि ॥७॥" शुद्ध चारित्रना धारक साधु, गुणवान् श्रावक अने कर्मना उदयथी चरणसित्तरी के करणसित्तरी पाळवामा शिथिल थयेल परन्तु श्रद्धायुक्त शुद्ध प्ररूपणा करनार सविग्नपाक्षिक शोभे छे (१) सविग्नपाक्षिकनु लक्षण सक्षेपथी आ प्रमाणे कह्यु छे के—जे चरण अने करणसित्तरीथी पतित थया छता शुद्ध मार्गनो उपदेश करवाथी कर्मक्षय करी रह्या छे (२) शुद्ध धर्मनो उपदेश आपी पोतानी निंदा करता कहे के-' हु आचरु छु ते तो मिथ्या मार्ग छे, शुद्ध साधुधर्म माराथी पाळी शकातो नथी।' (३) वळी पोते न वदावे परतु शुद्ध साधुने पोते वादे तेमज स्वउपदेशथी कोइ प्रतिबोध पामी दीक्षानो अभिलाषी थाय तो स्वय दीक्षा न आपे पण शुद्ध साधुओने सोंपे (४) कारण के जो ते पोते पोताना स्वार्थने अर्थे अन्यने प्रतिबोध आपी दीक्षा आपे तो ते सविग्नपाक्षिक तेने ससाररूपी महागर्तामा नाखे छे अने स्वय पण ससारसागरमा अनेक वार बूडे छे (५) सर्व पापकारी कायना निषेधरूप १ यतिधर्म सौथी उत्तम छे २ गृहस्थनो धर्म अने ३ सवेगपक्षनो मार्ग ए त्रण मोक्षमार्ग जणायेल छे (६) आ त्रण मार्गथी विपरीत १ गृहस्थलिंगी, २ चरकादि कुलिंगी अने ३ पासत्थादिक द्रव्यलिंगी मिथ्यादृष्टि छे, ससारमा परिभ्रमण करावनारा छे (७) छेल्ला मातमा श्लोकना अर्थ सबधी शंका करता पूछे छे के-'गृहस्थलिंगी अने कुलिंगी तो ससारमा भमाडे ते तो ठीक परन्तु पासत्थो तो भगवतनो वेष धारण करनार छे ते केम ससार वधारे?' तेनो जवाब आपता कहे छे के-"ससारसागरमिण, परिब्भमतेहिं सव्वजीवेहिं। गहियाणि य मुक्काणि य, अणतसो दव्वलिंगाइ ॥८॥" ससारसागरमा परिभ्रमण करता सर्व जीवोए (मनुष्य भव पामेला जीवो, अव्यवहारी जीवो नहीं) अनती वार द्रव्यलिंगो धारण कर्या अने मूक्या

पण दीधा, परन्तु ज्या सुधी सम्यक्‌त्वरूपी जहाज प्राप्त न थयु त्या सुधी जीवोनो उद्धार थाय नहीं एटले पासत्थानो मार्ग ए ससारमार्ग छे, मोक्षनो मार्ग नथी

शंका—मोक्षना त्रण अने ससारना त्रण एम छ मार्ग तमे कह्या, परन्तु जे प्राणि साधु पणे घणा काळ सुधी विचर्या बाद कर्मना पराधीनपणाथी शिथिल थईने पासत्थापणे रहे छे तेने कया पक्षमा गणवा? उत्तर—"सारणचइया जे गच्छ-निग्गया य विहरति पासत्था। जिणवयणबाहिरा वि य, ते उ पमाण न कायव्वा ॥ ९ ॥" मार्गनु उल्लंघन करीने जे पासत्थापणे विचरे छे ते जिनमार्गथी भ्रष्ट थयेला जाणवा, तेमनु काइ पण वचन प्रमाणभूत न मानवु आ सबधमा दृष्टान्त आपता कहे छे क-किल्ला, मदिर विगेरे अनेक रमणीय स्थानोथी शोभित तुगिया नगरीमा क्षमावत, दयावत, इन्द्रियोने जीतनार, पाच समिति तथा त्रण गुप्तिना धारक, अढार हजार शीलागना धरनार-ब्रह्मचर्य पाळनार, ममता अने कचन रहित, एकात रहेनार, मिथ्यात्वग्रथीने छेदनार, आश्रवनो रोध करनार, पापरूप लेप रहित, शखनी माफक निरंजन-राग रहित, जीव जेम काइ स्थळे न रोकाय तेम अप्रमत्त विहार करनार-आ प्रमाणे अनेक गुणावाळा एक साधु मध्याह्नसमये गोचरी अर्थे भमता भमता एक श्रावकने घेर गया मुनिने आवता जोई श्राविका घणो हर्ष पामी अने वहोरावबा अर्थे आहार लेवा रसोडामा गइ तेवामा नजर करता द्वार नीचु जोइने मुनिवर्य आहार ग्रहण कर्या विना ज चाल्या गया श्राविका बहार आवी जुए छे तो साधु न मळे; तेथी ते घणो ज अफसोस करवा लागी तेवामा एक बीजा साधु आवी चढ्या तेमने आहार वहोरावीने श्राविकाए तेमने पहेला साधुनो समग्र वृत्तात कही 'तेमणे न वहोरयानु अने तमे वहोरयानुं' कारण पूछ्यु जवाबमा ते बीजा साधुए कह्यु के-'जगतमा दभी लोको घणा छे तेओ भोळा लोकोने ठग छे आ प्रमाणे एक घरे वहोरे अने एक घरे न वहोरे एटले जगतमा जश प्रसरे के 'अमुक साधु तो घणा ज शुद्ध चारित्रपात्र छ, परन्तु हु तो ढोंगने तिरस्कार छु एटले जे स्थळे जेवी गोचरी मळे तेवी ग्रहण करी लउ छु' बीजा मुनिनी आवी वात साभळी श्राविका घणी दु खी थइ विचारवा लागी के-'साधु-साधु वच्चे पण सप नथी एक-बीजानी निंदा करे छे' आ प्रमाणे विचारे छे तवामा त्रीजा साधु आवी चढ्या तमने पण गोचरी वहोरावीने श्राविकाए उपर्युक्त बने साधुओनी हकीकत कही कारण पूछ्यु जवाबमा त्रीजा मुनिए कह्यु के-' हे श्राविका! तमारा रसोडानु द्वार नीचुं छे अने प्रकाश आवतो नथी तेथी प्रथम साधुए आहार वहोर्यो नथी, कारण के कह्यु छे के-" नीयदुवार तमस, कोट्ठग परिवज्जए। अचक्खुविसओ जत्थ, पाणा दुप्पडिलेहगा ॥१॥" जे घरमा द्वार नीचु होय, अधकार होय, कोठार होय ते घरमा साधुए गोचरी माटे न जवु, कारण

के तेथी गृहमा आवथी बरावर देखातु न होवाथी जीवोनी जयणा थती नथी ' श्राविकाए तेमने पुन पूछयु के-' तो पछी तमोए शामाटे आहार ग्रहण कर्या ! ' मुनिए उत्तर आप्यो के-'हु तो मात्र वेशधारी छुं, माराथी साध्वाचार पळातो नथी मारु जीवितव्य निष्फळ छे प्रथम मुनिने धन्य छे ! ते मुनिना आचार पाळे छे अने महातपस्वी पण छे ' आ प्रमाणे कहीने ते त्रीजा साधु पण गया आ ज दृष्टांत धन्यकुमार चरित्रमा पण आपेल छे परन्तु तेमा फेर पडलो ज छे के-ऊपर जे बीजा साधु छे ते त्या त्रीजा तरीके गणव्या छे आ कथानो उपनय ए छे के-प्रथम साधु शुक्लपाक्षिक हस जेवा छे हसनी पाखो बने बाजु श्वेत होय छे तेम शुक्लपाक्षिक साधु बाह्य अने अभ्यतर निर्मळ होय छे बीजा साधु कृष्णपाक्षिक कागडा जेवा छे कागडानी पांख बने बाजु श्याम होय छे तेम कृष्णपाक्षिक साधु बाह्य अने अभ्यतर मलिन होय छे त्रीजा सविज्ञपाक्षिक साधु चक्रवाक पक्षी जेवा होय छे तेनी पाख ऊपरथी मलिन होय छे पण अदर श्वेत होय छे तेनी जेम साधु बाह्यथी शुद्धा चारहीन होय छे पण तेनु अत करण निर्मळ होय छे पन्ले ज प्रथकारे आ गाथाना अर्थमा तने त्रीजी कोटिमा जणावेल छे, कोइथी शुद्ध चारित्र न पाळी शकाय तो तेणे शु करवु ? ते नथधी हकीकत दर्शावता कहे छ क—

जइ नवि सक्क काउ, सम्म जिणभासिअ अणुट्ठाणम् ।
तो सम्मं भासिज्जा, जह भणिअ खीणरागेहिं ॥ ३३ ॥

[यदि नापि शक्यं कर्तुं, सम्यग जिनभाषितमनुष्ठानम् ।
ततः सम्यग् भाषते, यथा भणित क्षीणरागैः ॥ ३३ ॥]

गाथार्थ-कदाच कोई साधु पोतानी दुर्बलताने अगे त्रिकरण शुद्धिपूर्वक सर्वज्ञभाषित क्रियाकलापने आचरी न शके तो पण वीतराग परमात्माए जे सत्य कथन कर्यु छे ते प्रमाणे सम्यक् प्रकारे तत्त्वनु निरूपण करे

विवेचन—कर्मोदयने कारणे शारीरमपत्तिना अभावथी पोते चारित्रनु त्रिकरण शुद्धिपूर्वक पालन न करी शकता होय छता पण केवळी भगवतोए प्ररूपेल तत्त्वस्वरूपने कूडकपट रहित-मायाभाव विना उपदेशे तो पण ते स्वात्मकल्याण साधी शके छ परन्तु पोताथी पालन न थतु हाय तेथी पोतानी मानहानि थवाना भयथी पोताने अनुकूळ ज उपदेश आपे तो अनतससारनी वृद्धि थाय पोते प्रमादी हाय छता शुद्ध मार्गनो उपदेश आपता हाय तो ते साधुने शु फलप्राप्ति थाय ? ते जणावता कहे छ के—

ओसन्नो वि विहारे, कम्मं सोहेइ सुलभवोही य ।
चरणकरण विसुद्ध, उववूहिंतो परूविंतो ॥ ३४ ॥

[अवसन्नोऽपि विहारे कर्म शोधयति सुलभबोधिश्च ।
चरणकरण विशुद्ध, उपबृंहयन् प्ररूपयन् ॥ ३४ ॥]

गाथार्थ—साधु योग्य क्रियाकलाप करवामा पोते शिथिल होय छतां निर्दोष चरणसित्तरी अने करणसित्तरीनी प्रशसा करनार तेमज अशमात्र वाछा रहित तेनी शुद्ध प्ररूपणा करनार ज्ञानावरणीयादि कर्मने पातळा करे छे-क्षय करे छे अर्थात् सुलभबोधि थाय छे.

विवेचन—चरणसित्तरी अने करणसित्तरीना भेदोनी क्रमपूर्वक वे गाथा- "वय ५ समणधम्म १० सजम १७, वेयावच्च १० च बभगुत्तीओ ९। णाणाइतिय ३ तव १२ कोह-निग्गहाइ ४ य चरणमेयम् ॥ १ ॥ पिंडविसोही ४ समिई ५, भावण १२ पडिमा १२ य इदियनिरोहो ५। पडिलेहण २५ गुत्तीओ ३, अभिग्गहा ४ चेव करण तु ॥२॥" ५ व्रत, १० यतिधर्म, १७ प्रकारनो सयम, १० प्रकारनी वैयावच्च, ९ ब्रह्मचर्यनी गुप्ति, ३ ज्ञान, दर्शन अने चारित्र, १२ प्रकारनो तप, ४ क्रोधादि निग्रह-आ प्रमाणे चरणसित्तरीना ७० भेद थाय छे ४ प्रकारनी पिंडविशुद्धि, ५ समिति, १२ भावना, १२ प्रतिमा, ५ इन्द्रियोनो निरोध, २५ प्रकारनी पडिलेहण, ३ गुप्ति ४ अभिग्रह-आ प्रमाणे करणसित्तरीना ७० भेद थाय छे हवे क्रमपूर्वक तेनु सक्षिप्त स्वरूप कहे छे-पाच व्रत-१ मन, वचन अने कायाथी हिंसानो त्याग एटले पोते न करे न करावे तेमज करनारने सारो न कहे ते सर्वथी प्राणातिपातविरमण, २ एवी ज रीते मृषावाद विरमण-जूठु न बोलवु, ३ अदत्तादानविरमण-चोरी न करवी, ४ मैथुन विरमण-स्त्रीससर्गनो त्याग अने ५. परिग्रहविरमण-धन, धान्यादिकनो त्याग दश यतिधर्म-१ क्षमा-क्रोधने जीते, २ मुक्ति-लोभ न राखे ३ आर्जव-कपट न राखे, ४ मार्दव अहकारनो त्याग, ५. लाघव-परिग्रह(अधिक उपकरण)ना त्याग, ६ सत्य बोले, ७ सयम-जयणापूर्वक वर्ते, ८ तपश्चर्या करे, ९. सुविहित साधुओने पोताना वस्त्रादिक वहोरावे अने १० ब्रह्मचर्य पाळे सत्तर प्रकारनो सयम-१ पृथ्वीकायनी रक्षा करे ते पृथ्वीकायसयम, २-५, एवी रीत अप्काय(जळ), तेउकाय(अग्नि) वाउकाय (पवन) अने वनस्पतिकाय (लीलोतरी)नी जयणा, ६-९. बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय तमज पचेंद्रियनी जयणा, १० अजीवसयम-पचपुस्तक तथा पचचर्मनो उपभोग न करे, कदाच करे तो जय

णापूर्वक करे अथवा सुवर्णादिकनो त्याग, ११ प्रेक्षा-ऊभा रहेला, बेसता, शयन करता नेत्रद्वारा तपासवु-जोवु, १२ उपेक्षा-ते बे प्रकारनी छे [१] कोई साधुने चारित्रमा शिथिल देखे तो तेने प्रेरणा करे पण तेने अशुद्ध क्रिया करतो जोई उपेक्षा न करे तेमज कोइ गृहस्थ आरंभनु काय करे तो तेने प्रेरणा न करे, १३ प्रमार्जना-भूमिनी, पोताना चरणनी तथा वसतिनी प्रमार्जना, १४ परिष्ठापना-अशुद्ध गोचरी आवी गइ होय तो तेने तेमज लघुनीति अने वडीनीतिने विधिपूर्वक परठवे, १५-१७ मन, वचन अने कायानो संयम-मिथ्या कार्यमा मन न परोवे, पापकारी वचन न बोले तेमज आरंभना कार्यमा सहयोग न दे वाचकवर्य उमास्वातिवाचके श्रीप्रशमरति ग्रंथमा कह्यु छे के—" पञ्चाश्रवाद्विरमण, पञ्चेन्द्रियनिग्रह कषायजयः। दण्डत्रयविरतिश्चे-ति सयम' सप्तदशभेद' ॥ १ ॥ " पाच आश्रवनो त्याग, पाच इन्द्रियोनो निग्रह, चार कषायनो जय, मनदंड, वचनदंड अने कायदंड-ए त्रण दंडनो त्याग-ए सत्तर प्रकारनो सयम छे परमार्थथी तो बने प्रकारो सरखा छे दश प्रकारनी वैयावच्च-१ आचार्यनी, २ उपाध्यायनी ३ स्थविरनी, ४ तपस्वीनी, ५ ग्लान साधुनी, ६ लघु अथवा तो नूतन दीक्षितनी, ७ कुलनी, ८ गणनी, ९ सघनी अने १० साधर्मिकबन्धुनी नव प्रकारनी ब्रह्मचर्यनी गुप्ति-१ स्त्री पशु अने नपुसक रहित स्थानमा वसवु, २ स्त्री साथे कथा न करवी, एकली स्त्रीओनी ज सभा होय तो तेवी सभामा धर्मकथा पण न करवी, ३ जे स्थाने स्त्री बेठी होय ते ते स्थळे बे घडी पूर्वे न बेसवु, ४ स्त्रीओनी इन्द्रिया जोवी नहीं, ५ भींतने आतरे स्त्री-पुरुष कामक्रीडा करी रह्या होय त्या न रहेवु, न सांभळवु, ६ गृहस्थपणामा पूर्वे भोगवेला भोगो याद न करवा, ७ सदा छ विगयादिक स्निग्ध आहार न करवा, ८ घणा पटले बत्रीश कोळिया उपरांत आहार न करवो, ९ शरीरनी विभूषा-टापटीप न करवी त्रण ज्ञानादिक-ज्ञान, दर्शन अने चारित्र चार प्रकारे तपनु वर्णन अगाउ पृष्ठ (१२६) पर आपी गयेल छे क्रोध, मान, माया अने लोभ-ए चार कषायोना निग्रह-आ प्रमाण चरणसित्तरीना सित्तेर भेद हवे करणसित्तरीना भेदो कहे छे ४ पिंड विशुद्धि-१ वस्त्र, २ पात्र, ३ वसति अने ४ चार प्रकारनो (अशन, पान, खादिम अने स्वादिम) आहार दोष रहित ग्रहण करे पाच समिति (इर्या, भाषा, एषणा, आदानभंडमत्तनिक्षेपणा अने पारिष्ठापनिका) रूडी रीते पाळे, बार प्रकारनी भावना भावे-१ अनित्य-ससारने अनित्य विचारे, २ अशरण-ससारमा कोइ कोईनु नथी, ३ ससार-अनता भव कर्या अने अशुभ कर्मसंचयथी करवा पडशे, ४ एकत्व-हु एकलो आव्यो छु अने एकलो जवानु छे, ५ अन्यत्व-आ बधी देखाती वस्तुओ अन्य छ, मारी नथी, ६ अशुचि-ससारमा कोई शुचि-पवित्र स्थान नथी, ७ आश्रव-पापथी जीवने कर्मबध थाय छ, ८ सवर-पापने

अदृष्टावधाना मार्गनी विचारणा, ९ निर्जरा-कर्मोनी क्षय करवानी भावना, १० धर्म स्वाख्यातता-केवलिभाषित धर्मनु स्वरूप, ११ लोकभावना-चौद राजलोकनु स्वरूप अने १२ बोधिभावना-समकित संबधी भावना भिक्षुनी बार प्रतिमा-१ एकमासिकी-एक दात आहार अने एक दात पाणी लेवु, २ बे मासनी तेमा बे बे दात, ३ त्रण मासनी तेमा त्रण त्रण दात, ४ चार मासनी ५ पाच मासनी, ६ छ मासनी, ७ सात मासनी ८ पहेली सात रात्रिदिवसनी, ९ बीजी सात रात्रिदिवसनी, १० त्रीजी सात रात्रिदिवसनी, ११ एक अहोरात्रिनी अने १२ एक रात्रिनी पाचे इन्द्रियोने दमे-वश करे अने तेना विषयो पर राग-द्वेष न करे पचीश प्रकारनी पडिलेहणा-" दिट्ठिपडिलेह एगा, छउड्डपक्खोडतिगतिगंतरिआ । अक्खोडपमज्जणया, नव नव मुहपुत्तिपणवीसा ॥ १ ॥" १ दृष्टिपडिलेहणा-मुहपत्ति खोलीने देखवु २-७ तें मुहपत्तिने ऊंच पकडी राखीने त्रण वार आ बाजु अने त्रण वार पेली बाजु खखेरवी-झाटकवी, ८-२५ पछी हाथे लीने अडे नहीं तेवी रीते नव अक्खोडा करवा अने पछी हथेलीने स्पर्शीने प्रमार्जना करता नव पक्खोडा करवा-ए प्रमाणे मुहपत्तिनी पचीश प्रतिलेखना जाणवी शरीरनी पचीश प्रतिलेखना आ प्रमाणे-"पायाहिणेण तिअतिअ, वामेयरबाहुसीसमुहहिअए । असुड्ढाहोपिट्ठी, चउछप्पयदेहपणवीसा ॥ २ ॥" डावी भुजानी त्रण, जमणी भुजाना त्रण, मस्तकनी त्रण, मुखनी तथा हृदयनी त्रण-त्रण, डाबा तथा जमणा पडखानी बब्बे, डाबा तथा जमणा पगनी त्रण त्रण कुल २५ त्रण गुप्ति-१ मनगुप्ति, २ वचनगुप्ति अने ३ कायगुप्ति चार अभिग्रह १ द्रव्याभिग्रह-द्रव्यनो नियम, २ क्षेत्राभिग्रह-क्षेत्रनुं प्रमाण, ३ कालाभिग्रह-कालनु प्रमाण अने ४ भावाभिग्रह-अन्य व्यक्तिना भाव (परिणाम)नो विचार करवो ए प्रकारे करणसित्तरीना सर्व भेदो ७० थया हवे संविज्ञपक्षीनु कर्त्तव्य दर्शावता जणावे छे के—

सम्मग्गमग्गसंपट्ठिआण, साहूण कुणइ वच्छल्लम् ।
ओसहभेसज्जेहि य, सयमन्नेण तु कारेइ ॥ ३५ ॥

[सन्मार्गमार्गसंप्रस्थितानां, साधूनां करोति वात्सल्यम् ।
औषधभेषज्यैश्च, स्वयं अन्येन तु कारयति ॥ ३५ ॥]

गाथार्थ-संयममार्गनु सावधानपणे सेवन करता साधुजनोनुं संविज्ञपाक्षिक मुनि औषध-भेषजवडे वात्सल्य पोते करे अने बीजा पासे पण करावे.

विवेचन-भवभीरु महात्मा पुरुषोए सेवेला अने प्रकाशित करेला संयम धर्मने विषे जे साधुओ प्रवर्तमान होय तेवा साधुने कर्मवशात् घोर पण प्रकारनो व्याधि थयो होय तो तेमनी समाधिने माटे तथा 'शरीर धर्मायतन छे'

प हेतुने लगमा रालीने औषध अथवा भेषज आपीने शाता पमाडे पक द्रव्य वालु औषध कहेवाय अने जेमा अनेक द्रव्यो मिश्रित थया होय ते भेषज कहेवाय अथवा बहारना उपयोगमा आय ते औषध अने अतरमा भोज्य वस्तु तरीके वपराय ते भेषज कहेवाय प बे तो मुख्य गणाव्या, परन्तु तदुपरात अनेक प्रकारे साधुओने साता उपजे तेवा कार्य करे पछी ' महामुनिनी भक्ति करवाथी कर्मनी निजरा थशे ' प प्रमाणे अन्यने पण उपदेशो बीजा पासे पण ओषधादि करावे अने पाते अनुमोदना करे आवा प्रकारनु अतरग भक्तिभावथी वात्सल्य करनार सविज्ञपक्षी जाणवो, परतु आवी रीते पारकानु वात्सल्य करनार थोडा ज होय छे त दर्शावे छे—

भूए अत्थि भविस्सति, केइ तेलुक्कनमिअकमजुअला ।
जेसिं परहिअकरणिक्क–बद्धलक्खाण वोलिही कालो ॥३६॥

[भूताः सन्ति भविष्यन्ति, केचित् त्रैल्योक्यनतक्रमयुगला ।
येषा परहितकरणैक–बद्धलक्षाणा व्यतिचक्राम कालः ॥ ३६ ॥]

गाथार्थ–स्वर्ग, मृत्यु अने पाताळवासी लोकोए जेमना चरणकमळने नमस्कार करेल छे एवा केटलाक श्रेष्ठ जीवो भूतकाळमा थई गया, वर्तमान काळे विद्यमान छे अने भविष्यकाळमा थशे के जेओनो काळ(समय)मात्र अन्यनु हित करवा मात्रना लक्षपूर्वक व्यतीत थाय छे

विवेचन–राधावेध साधवानी इच्छावाळानुं पकमात्र लक्ष जेम ऊचे फरती पूतळीना हलन-चलनमा ज मग्न होय छे, पातानी आसपास पकत्र थयेल विशाळ सभासमूह प्रत्ये तेनु दुर्लक्ष होय छे तेवी रीते अन्य प्राणिओना हितमा रक्त बनेला श्रेष्ठ साधुपुरुषोनु मनमात्र परमार्थमा ज लयलीन हाय छे पोते दीक्षापर्यायमा मोटा हाय छता पण रत्नत्रयीनु आराधन करवा उजमाळ बनेला अल्पपर्यायवाळा मुनिनी पण वैयावच्च निरभिमानपणे उत्साहपूर्वक करे छे, परन्तु आवा नि स्वार्थ भाववाळी अने परहिताभिलाषी व्यक्तिआ अल्प सख्यामा ज होय छे, केटलाक तो पवा साधुओ होय छे के जेना नामस्मरणथी पण प्राणी दु खने अनुभव छे.

तीआणागयकाले, केई होहिंति गोयमा ! सूरी ।
जेसिं नामग्गहणे वि, होइ नियमेण पच्छित्तम् ॥३७॥

[अतीतानागतकाले, केचिद् भविष्यन्ति गौतम ! सूरयः ।
येषा नामग्रहणेऽपि, भवति नियमेन प्रायश्चित्तम् ॥ ३७ ॥]

गाथार्थ–हे गौतम ! भूत, भविष्य अने वर्तमानकाळमां एवा केटलाक आचार्यपद नामधारक साधुओ होय छे के जेमना नामस्मरण मात्रथी प्रायश्चित्त लागे अर्थात् तेमनो परिचय करवाथी तो प्राप्त थती दुःखपरंपरानु वर्णन शु करवु ?

विवेचन–श्रीमहानिशीथसूत्रना पांचमा अध्ययनमां कह्यु छे के–" इत्थ चायरियाण, पणपण्ण होंति कोडिलक्खाओ । कोडिसहस्से कोडी–सए य तह एत्तिए चेव ॥ १ ॥ एतेसिं मज्झाओ, एगे निव्वुडइ गुणगणाइण्णे । सव्वुत्तम भंगेण, तित्थयरस्साणुसारिगुरू ॥२॥" पचावन लाख क्रोड, पचावन हजार क्रोड, पांच सो क्रोड अने पचावन क्रोड एटला आचार्यो पैकी केटलाय आचार्यो आ संसाररूपी समुद्रमां डूबशे अने सर्व रीते उत्तम एवा तीर्थंकरभगवंतना मार्गने जेओ अनुसरशे तेओ तरी जशे एवा तरी जनारा आचार्योने ज खरेखरा गुरु जाणवा बीजा आचार्यो तो पोते डूबनारा अने बीजाने डूबाडनारा होवाथी तेनु नामस्मरण पण पापकारी छे तो तेवा आचार्योनो परिचय कराय ज केम ?

जओ–सयरी भवन्ति अणविक्खयाइ, जह भिच्चवाहणा लोए ।
पडिपुच्छाहिं चोयण, तम्हा उ गुरू सया भयइ ॥ ३८ ॥

[यतः–स्वेच्छाचारीणि भवन्ति अनपेक्षया, यथा भृत्यवाहनानि लोके ।
प्रतिपृच्छाभिश्चोदनाभिः, तस्मात्तु गुरु सदा भजते ॥ ३८ ॥]

गाथार्थ–जेम नोकर–चाकर तथा हाथी, घोडा अने वृषभादिक शिक्षा विना स्वेच्छाचारी बनी जाय छे तेम शिष्य पण स्वच्छंदाचारी बनी जाय छे माटे गुरुए प्रतिपृच्छादिद्वारा शिखामण आपी तेमने हमेशा काबूमां राखवा.

विवेचन–हस्तीने पण अंकुशनी जरूर छे प्राणीनो स्वभाव ज एवो छे के तेने स्वच्छंदता प्रिय थई पडे छे, परन्तु तेने सन्मार्गे चालवामां आवे, केळववामां आवे तो ते सुंदर परिणाम निपजावी शके छे आपणे जाणीए छीए के अश्व, वृषभ विगरेने प्रथम पलोटवा पछी ज वाहनमां जोडे छे, परन्तु तद्दन नवीन ज बळद के अश्वने जोडयो होय तो ते गाडाने के घोडागाडीने अवळे मार्गे लई जई भांगी नाखे छे तेनी माफक शिष्यने पण स्वच्छाचारी विचरवा न देवा तेमने पण पृच्छा, प्रतिपृच्छादिकथी पोताना अंकुशमां राखवा अने हितशिखामण आपवी जो आ प्रमाणे आचार्य न करे तो शिष्य उन्मार्गे चढी जई दुर्गतिमां जाय अने तेना पापना भागीदार आचार्य पण बने आवा प्रकारनी

प्रेरणा आचार्य न करे तो तेवा आचार्यने शुं फळ प्राप्त थाय ? ते जणावे छे—

जो उ पमायदोसेण, आलस्सेण तहेव य ।
सीसवग्गं न चोएइ, तेण आणा विराहिया ॥ ३९ ॥

[यस्तु प्रमाददोषेणा-लस्येन तथैव च ।
शिष्यवर्गं न प्रेरयति, तेनाज्ञा विराधिता ॥ ३९ ॥]

गाथार्थ–जे आचार्य, उपाध्याय अने गणावच्छेदकादिक प्रमाद अथवा आळसथी शिष्यवर्गने संयमानुष्ठान माटे प्रेरणा करता नथी ते जिनाज्ञाना विराधक जाणवा.

विवेचन—वडीलवर्गनुं काम हमेशां सत्कार्यनी प्रेरणा करवानुं छे आचार्य, उपाध्याय विगेरे गच्छनी मुख्य व्यक्तिए पोतानी निश्रामां रहेल शिष्य-समूहने सारणा, वारणा, चोयणा, पडिचोयणादिक प्रेरणा कर्या ज करवी जेथी शिष्यवर्ग प्रमादी के शिथिल न बने परंतु आचार्य प्रमुख प्रमाद, आळस, भय, शोक, कुतुहल विगेरे तेर काठियाना पाशमां फसाइने प्रेरणा न करे, बेदरकारी बतावे तो तेवा आचार्य प्रमुख जिनाज्ञाना विराधक होइने अनंतसंसारी थाय छे आ प्रमाणे गुरुना लक्षणो दर्शाव्या बाद तेनो उपसंहार करी, हवे गच्छना लक्षण वर्णवता कहे छे—

संखेवेण मए सोम !, वन्नियं गुरुलक्खणम् ।
गच्छस्स लक्खणं धीर !, संखेवेण निसामय ॥ ४० ॥

[संक्षेपेण मया सौम्य !, वर्णितं गुरुलक्षणम् ।
गच्छस्य लक्षणं धीर !, संक्षेपेण निशामय ॥ ४० ॥]

गाथार्थ–हे सौम्य गौतम ! आ प्रमाणे संक्षेपथी में गुरुना लक्षणो कह्या हे धीर ! हवे हुं गच्छनुं लक्षण कहीश ते तुं एकाग्रपणे सांभळ

आचार्यस्वरूपनिरूपण नामनो
प्रथम अधिकार समाप्त

॥ यतिस्वरूपनामा द्वितीयोऽधिकारः ॥

गीअत्थे जे सुसंविग्गे, अणालस्सी दढव्वए ।
अक्खलियचरित्ते सययं, रागद्दोसविवज्जिए ॥ ४१ ॥
निट्ठविअअट्ठमयट्ठाणे, सोसिअकसाए जिइंदिए ।
विहरिज्जा तेण सद्धिं तु, छउमत्थेण वि केवली ॥ ४२ ॥

[गीतार्थो यः सुसंविग्नः, अनालस्यी दृढव्रतः ।
अस्खलितचारित्रः सततं, रागद्वेषविवर्जितः ॥ ४१ ॥
निष्ठापिताष्टमदस्थानः, शोषितकषायो जितेन्द्रियः ।
विहरेत्तेन सार्धं तु, छद्मस्थेनापि केवली ॥ ४२ ॥]

गाथार्थ—जे गीतार्थ संवेगवान, वैयावच्च करवामां आळस रहित-उद्यमी, दृढव्रती, निर्दोष चारित्रवाळो, निरंतर राग-द्वेष रहित, आठमद रहित, पातळा पडी गयेल कषायवाळो अने जितेन्द्रिय होय तेवा छद्मस्थ गुणशाळी साधुनी साथे केवळी भगवंत विचरे छे.

विवेचन—पहेला अधिकारमां आचार्यना लक्षणो दर्शाव्यां परंतु आचार्य होय तो ज गच्छ कहेवाय माटे हवे गच्छ यतिओना समुदायनुं वर्णन करे छे. जे छेदसूत्रना अर्थने बराबर जाणे अथवा सूत्र तेमज अर्थ उभयना सारी रीते ज्ञाता होय ते गीतार्थ कहेवाय. गीतार्थनी विशेष समजण माटे श्री बृहत्कल्पभाष्यपीठिकानी बे गाथा "गीअं मुणितेगट्ठं, विदिअत्थं खलु वयंति गीयत्थम् । गीएण य अत्थेण य, गीअत्थो वा सुअं गीअं ॥ १ ॥ गीएण होइ गीई, अत्थी अत्थेण होई नायव्वो । गीएण य अत्थेण य, गीअत्थं त विआणाहि ॥ २ ॥ पृ. १४७ ऊपर दर्शावाइ गइ छे. आवा गीतार्थ ज्ञा अतिशय संवेगवाळो, वैयावच्चादिकमां अप्रमादी, विशुद्ध उत्तरगुणवाळो, अति

चार रहित चारित्रवाळो अर्थात शुद्ध मूळगुणवाळो, आठ*मद रहित, चार कषाय–क्रोध, मान, माया अने लोभ तथा नव नोकषाय–हास्य, रति, अरति, भय, शोक, दुगछा, स्त्री, पुरुष अने नपुंसक वेद जेमणे पातळा–क्षीण करी नाख्या होय, तेमज पांचे इन्द्रियोना केवीश विषयाने जेणे जीत्या होय तेवा प्रकारना गीतार्थ साधु छद्मस्थ होय पहले केवळज्ञान प्राप्त न कर्युं होय छता पण तेमनी साथे केवळज्ञानी मुनि विचरे तेमज काम करे छद्मस्थ साधु तो केवळी साथे विचरे तेमा विशेषता नथी पण जे त्रण जगतना भावोने पोतानी हथेलीमा रहेला जळबिंदुनी जेम समये समये जाणे छे तेवा केवळी भगवत पण उपर्युक्त गुणवाळी गीतार्थ मुनि साथे विचरे ते ज खरेखर आश्चर्य कारक घटना छे हवे केवा साधुओ साथे विहार न करवो ते जणावे छे—

जे अणहीअपरमत्थे, गोअमा ! संजए भवे ।
तम्हा ते वि विवजिज्जा, दुग्गइपंथदायगे ॥ ४३ ॥

[येऽनधीतपरमार्था, गौतम ! सयता भवन्ति ।
तस्मात्तानपि विवर्जयेत्, दुर्गतिपथदायकान् ॥ ४३ ॥]

गाथार्थ—हे गौतम ! सयममा वर्तता छता जेणे शास्त्रनो परमार्थ जाण्यो नथी अने तेने परिणामे जे प्राणिओने दुर्गतिना मार्गे दोरी जाय छे तेवा अगीतार्थ साधुथी सदतर वेगळा ज रहेवु.

विवेचन—आगमना रहस्य केटला प्रकारना छे ते मयथी श्रीआचारांग सूत्रना चोथा अध्ययनमा कह्यु छे के–" जे आसवा ते परिस्सवा १, जे परिस्सवा ते आसवा २, जे अणासवा ते अपरिस्सवा ३, जे अपरिस्सवा ते अणासवा ४ ॥ " जेनाथी आठ प्रकारना कर्मो बधाय ते आश्रव कहेवाय, अने काणा घडामाथी जेम पाणी झरे तेम कर्म झरे तेने परिश्रव कहीए जे आश्रव छे ते परिश्रव छे, १, जे परिश्रव छे ते आश्रव छे २, जे अनाश्रव छे ते अपरिश्रव छे ३ अने जे अपरिश्रव छे ते अनाश्रव छे ४ तेनो परमार्थ ए छे के–(१) गृहस्थ जेम माळा, पुष्प, चन्दन, विलेपन, स्त्री तेमज भोगोपभोगना पदार्थोने सुखनु कारण जाणी तेमा ज रक्त रहे तो ते आश्रव छे, ज्यारे तत्त्वना जाणनाराने

* १ जाति–हु ऊंची जातिनो छु २ कुल–हु श्रेष्ठ कुळमा जन्म्यो छु, ३ रूप–मारु सौन्दर्य अतिशय रूडु छे, ४ बळ–हु अतिशय बळवत छु ५ लाभ–मारे घणो लाभ छे, ६ श्रुत–हु सर्व शास्त्रमां पारगामी बनी गयो छु, ७ तप–मारा जेवो कोइ तपस्वी नथी अने ८ ऐश्वर्य–मारी जेटली कोईने ऋद्धिसिद्धि नथी–आ प्रमाणे अभिमानना आठ स्थानक छे

कर्मबंधना ते ज कारणो असारभूत जणाय छे अने विरति पामे छे पटले निर्जराना स्थानक थाय छे (२) जैन मुनिनो तप, चारित्र तथा दशविध चक्रवाल सामाचारी इत्यादिक निर्जराना कारण छे परंतु कोइक अशुभ अध्यवसायवाळाने अशुभ कर्मना उदयथी मिथ्या परिणाम थाय तो ते संवर घणो कर छे तो पण मन व्याकुळ होवाथी आश्रव कर छे (३) जेमां अनाश्रव थाय-कर्मबंध न थाय तेवा महाव्रतादिकने विषे पण अशुभ कर्मोदयथी अध्यवसाय बदलाय त्यारे ते तेने कर्मबंधनु कारण थाय दृष्टांत तरीके-प्रसन्नचंद्र राजर्षि प्रसन्नचंद्र राजर्षि काउस्सग्ग ध्यानमां स्थित रह्या छे तेवामां दुर्मुख नामनो दूत त्यांथी निकळ्यो अने बोल्यो के-" तमारा बाळपुत्रनु राज्य झूटवी लेवामां आव्यु छे ' आ वचन सांभळता ज पोतानी मुनि अवस्थानु विस्मरण थई जवाथी तेने ते ज स्थितिमां शत्रुराजा साथे मानसिक युद्ध करवा लाग्या आ प्रमाणे पंचमहाव्रतधारी होवा छतां अशुभ अध्यवसायथी तेमने कर्मबंध थयो (छेवटे ता पाछी विचारधारा बदलाइ अने क्षण मात्रमा सकल कर्मनो क्षय करी केवळज्ञान प्राप्त कर्यु) (४) कर्मबंधना कारण होवा छतां कर्मबंध न थाय दा त शासननी हीलना अटकाववा माटे वर्णेरनी कामळी फेरवनार लघु शिष्य अथवा शासननी उन्नति करवा माटे करातो प्रयास. परंतु तेमां पोतानी पूज्यता क महत्तानो अंश मात्र रह्यो होय तो अवश्य पापबन्ध थाय आवा प्रकारना आगमना रहस्यने जे जाणे नहीं तेने अगीतार्थ जाणवो वळी उप्पन्ने इ वा १ विगमे इ वा २ धुवे इ वा ३। आ त्रिपदीना अर्थ बराबर जाणे उत्पत्ति चार प्रकारनी छे-१ जीवथी जीवनी उत्पत्ति, जेम मातापिताथी पुत्रनी उत्पत्ति, २ जीवथी अजीवनी उत्पत्ति, जीवता माणसना शरीरथी नख, केशनी उत्पत्ति, ३ अजीवथी जीवनी उत्पत्ति, काष्ठ(लाकडा)थी घुणानी उत्पत्ति अथवा छाणथी इयळनी उत्पत्ति तेमज ४ अजीवथी अजीवनी उत्पत्ति, प्रयोग वडे आवामांथी सोनानी उत्पत्ति विनाश पण चार प्रकारनो छे १ जीवथी जीवनो विनाश, सर्पडंसथी माणसनु मृत्यु, २ जीवथी अजीवनो विनाश-नोळिया ना संचारथी दूध अथवा चीभडाना योगथी पेटनु विणसी जवु, ३ अजीव थी जीवनो विनाश, झेरथी प्राणी मृत्यु पामे अने ४ अजीवथी अजीवनो नाश, छाशथी दूधनो नाश ध्रुवपणु पण आ प्रमाणे जाणवु-सोनाना कंकण भांगीने केयूर बनाववाथी तेमां कंकणनो विनाश थयो, केयूरनी उत्पत्ति थइ परंतु सोनु तो ध्रुवपणे रह्यु ज छाशना योगथी दूधनु दही थयु तेमां दूधनो विनाश ने दहीनी उत्पत्ति थइ परंतु जे स्निग्धपणाना पुद्गलो हता ते तो ध्रुवपणे रह्या ज अथवा जीव, मेरुपर्वत, देवलोकना विमानो विगेरेथी द्रव्यास्तिक नयना मतथी ध्रुवपणु साबित ज छे आ प्रमाणे त्रिपदीनो गंभीरार्थ छे हवे उत्सर्ग अने अपवाद संबंधी वर्णन करता कहे छे के—' उस्सग्गसुअ किंची, किंची अववाइअ

भवे सुत्त। किंची तदुभयसुत्त, सुत्तस्स गमा मुणेयव्वा ॥१॥" उत्सर्ग, अपवाद अने तदुभय पहले उत्सर्ग अपवाद अने अपवाद उत्सर्ग-ए प्रमाणे आगमना चार प्रकार छे वळी आगमना केटलाक पदो बे चार न बोलाय ते माटे उत्सर्ग उत्सर्ग अने अपवादापवादिक ए बे भेद मेळवता कुल छ भेद दर्शाव्या छे १ गोचरी करवा निकळेला साधुने बे घरनी वचमा बेसवु न कल्पे ते उत्सर्ग, २ त्रण साधुओने बेसवु कल्पे ते अपवाद, ३ रात्रिने विषे अथवा विकाले साधु साध्वीने शय्या-संथारो ग्रहण करवो न कल्पे परन्तु एक दिवस पूर्वे जो ते पडिलेहीने राख्यो होय तो ग्रहण करवो कल्पे ते उत्सर्गअपवाद, ४ केळा प्रमुख लावा फल पाका ने विधिपूर्वक छेदन-भेदन करायेल होय ते कल्पे पण अविधिए छेदन-भेदन करायेला न लेवा ते अपवादउत्सर्ग, ५ प्रथम पोरसीमां ग्रहण करेल गोचरी चोथी पोरसी पर्यन्त न राखवी, कदाच रही गई होय तो तेने पोते खाय नहीं, बीजाने खवरावे नहीं अने खानारनी अनुमोदना करे नहीं करे तो चारमासी प्रायश्चित्त लागे ते उत्सर्गउत्सर्गिक ६ जे सूत्रमा अपवाद दर्शावीने तेओने विषे वळी अर्थथी आज्ञा थाय ते अपवादापवादिक आ हकीकतने लगतु विशेष वर्णन श्रीबृहत्कल्पनी वृत्तिमा जणावेल छे वळी आ सूत्रनी छ भंगी निशीथचूर्णीना सोळमा उद्देशामा पण वर्णवेल छे आ प्रमाणे गीतार्थ शास्त्र-रहस्यना ज्ञाण होय वळी सात नयना गंभीरार्थने पण जाणवावाळा होय- "नेगम १ संगह २ ववहारु ३-ज्जुसुए ४ चेव होइ बोधव्वे। सद्दे५ अ समभिरूढे ६,एवंभूए ७ अ मूलनया ॥१॥" १ नैगम-सामान्य विशेषनो भेद पाडीने न बाले २ संग्रह-सर्व वस्तुओने सामान्य रूपे कहे ३ व्यवहार सर्व द्रव्योनो भेद पाडीने कहे ४ ऋजुसूत्र वर्तमान काळमा जेवु छे तेवु कहे ५ शब्द-वर्तमानमा जे वर्ते छे तेने ज प्रमाण माने ६ समभिरूढ-वस्तुनु बीजी वस्तुमा संक्रमण थाय ७ एवभूत-शब्दने अर्थघटे विशेष प्रकारे दर्शावे अने अर्थने शब्दघटे विशेष वर्णवे-आ प्रमाणे मूळ सात नय छे तेना दरेकना १००-१०० भेदो पडले सात सो भेदो थाय छे बीजा मत प्रमाणे पाच सो भेद जणाव्या छे-नैगम, संग्रह, व्यवहार अने ऋजुसूत्र-आ चारना चार सो भेद तथा शब्द, समभिरूढ अने एवंभूत ए त्रण एक होवाथी तेना सो गणता पांचसो वळी छ सो,चार सो अने बसो भेद पण दर्शाव्या छे, ते आ प्रमाणे-संग्रह अने व्यवहारने एक गणवाथी छ सो, संग्रह,व्यवहार, ऋजुसूत्र अने शब्द ए चार एक होवाथी १०० अने बाकीना त्रणना त्रण सो-कुल ४०० नैगम, संग्रह, व्यवहार अने ऋजुसूत्र ए चार द्रव्यास्तिक नयना १०० अने शब्द, समभिरूढ अनेएवंभूत पर्यायास्तिक नयना १०० कुल २०० ज्यारे चरण, धर्म, संख्या अने द्रव्य-आ चारे अनुयोग संयुक्त हता त्यारे परस्पर विसंवाद दूर करवा माटे आ प्रमाण गणत्री थइ शकती परन्तु ज्यारथी

श्रीआर्यरक्षितसूरि(वृत्तांत माटे जुओ पृ १०६) ए अनुयोग विभाग कर्या त्यारथी श्रोता आश्रयी नय-कथन परंतु सर्व नयोनो समावेश जेमा थाय छे-व्यवहारनय ने निश्चयनय अथवा द्रव्यनय अने भावनय या ज्ञान अने चारित्र आ सर्वनयोना प्रश्न रनो सार शुं ? ते जणावता कहे छे के-" सव्वेसिं पि नयाणं, बहुविहवत्तव्वय निसामित्ता । त सव्वनयविसुद्ध, ज चरणगुणट्ठिओ साहू ॥ १ ॥ " सर्व प्रकारना नयो घणा प्रकारना छे ते सांभळीने अवधारीने जे चारित्रपात्र साधु होय तेने ज सर्व नयविशुद्ध जाणवो, अर्थात् चारित्रनय अने ज्ञाननयमा ज सर्वे नयोनो समावेश थई जाय छे श्रीआवश्यकनियुक्तिमा आ सात नयने समजाववा एक दृष्टांत आप्यु छे ते आ प्रमाणे-देवदत्त नामनो कोई पुरुष कुहाडी लईने जतो हतो तेवामा तेने कोई अन्य पुरुष मळयो तेणे पूछयु-' क्या जाओ छो ? ' देवदत्ते जवाब आप्यो-' पायला (एक जातनु लाकडानु माप) माटे जाउं छु ' आ जवाब ते अविशुद्ध नैगमनय जाणवो बाद अटवीमां लाकडु कापता बीजो कोई पुछे छ-' शु करो छो ? शु छेदो छो ? ' ते बोल्यो-' पायलो कापु छुं ' आ विशुद्धनैगम बाद ते लाकडाने छोली रह्यो ने तेवामा कोईक बीजाए पूछयुं-' शु छोलो छो ? ' तेणे जवाब आप्यो-' पायलो छोलुं छु ' आ विशुद्धतर नैगम वळी कोईक बीजाए तने पायलो कोरता जोईने पूछयु-' शु कोरो छो ? ' तेणे जवाब आप्यो-' पायलो कोरु छु ' आ विशुद्धतर नैगम पछी तेने समारता देखीने कोईके पूछयु-' शु समारो छो ? ' त्यारे जवाब आपता कह्यु के-' पायलो समारु छु, ' आ विशुद्धतर नैगम आ प्रमाणे पायलो तैयार करीने ते बेठा छे तेवामा कोईके पूछयुं-' शु लईने बेठा छो ? तेणे कह्यु-' पायलो लईने बेठा छु ' आ प्रमाणे नामनिर्देशपूर्वक कहेवु ते विशुद्धतर नैगम छे छेल्ला प्रकार विशुद्ध छे अने ते प्रथम नय कहवाय आ प्रमाणे पायलाने पायलो जणावयो ते बीजा व्यवहार नय छे, पहले के ज्यासुधी पायलो न थयो होय त्यासुधी तेने पायलो न माने परंतु पायलो थया पछी ज माने ते बीजो नय ते पायलो धान्यथी भरेल होय अगर तो माप माप वाना काममा आव्यो होय त्यारे समहनय पहेला बे नयमा तो पायलो थयो पहेले पायलो कह्या परंतु संग्रहनय तो ज्यारे ते पायलानु कार्य करता थया पहेले के धान्यादिकनु मान कर्यु त्यारे पायलो कहे छे ऋजुसूत्र तो जे पायलो छे तेने अने तेना द्वारा अपाता धान्यादिकने पण पायलो माने छे छल्ला त्रण शब्द, समभिरूढ अने एवंभूत-ए त्रण नय तो पायलानो अधिकार जाणवावाळाने पण पायलो जणावे छे, आ भावनय छे वळी श्रीअनुयोगद्वार सूत्रमा जणावेल बीजा दृष्टांतद्वारा आ ज विषय जणावे छ-देवदत्त नामना पुरुषने कोईए पूछयु के- तमे क्या रहो छो ? ' तेणे जवाब आप्यो-' लोकमा रहु छु ' आ अविशुद्धनैगम प्रश्नकारे पुन पूछयु-' अधोलोक, तिर्च्छालोक अने

ऊर्ध्वलोक-एम त्रण लोक छे ते त्रणमा तु वसे छे ?' त्यारे तेणे कह्यु-'तिर्च्छा लोकमां रहुं छु ' आ विशुद्धतर नैगम तेणे फरी पूछयु-' तिर्च्छालोकमां तो जबूद्वीपथी प्रारभीने स्वयभूरमण समुद्र सुधी असख्याता द्वीप समुद्र छे त मर्वमा तु रहे छे?' देवदत्ते कह्यु-' हु जबूद्वीपमा रहु छु ' आ विशुद्धतर नैगम 'जबूद्वीपमा तो भरत, ऐरवत, महाविदेहादि क्षेत्रो छे त सवमा तु वसे छ?' जवाबमा तेणे कह्यु क-' हु भरतक्षेत्रमा रहु छु ' विशुद्धतर नैगम तणे वळी पूछयुं-' भरत तो बे छे दक्षिणार्द्ध अने उत्तरार्ध तो ते बनेमा तु रहे छ?' तण कह्यु-' दक्षिणार्द्ध भरतमा रहु छु ' विशुद्धतर नैगम तणे फरी पूछयु- दक्षिणार्द्ध भरतमा तो अनेक नगर, ग्राम तथा सनिवेशादि छ त सर्वमा तु रह छे?' तणे जवाब आप्यो-' हु पाटलीपुत्र नगरमा रहु छु ' विशुद्धतर नगम तणे पुन पूछयु-' पाटलीपुत्र नगरमा तो सेंकडो घर छे ते सर्वमा तु रहे छ?' देवदत्ते जवाब आप्यो-' देवदत्तने घरे वसु छु ' विशुद्धतर नगम प्रभकार वळी पूछयु-' देवदत्तना घरमा तो अनेक कोठा (ओरडा) छे ते सर्वमा तु रहे छे?' देवदत्ते जवाब आप्यो-' हु मध्यगर्भमा रहु छु ' आ विशुद्धतर नैगम नय आवुश जेवा घरमा वसे ते तेनु ज घर हाय ते व्यवहार, पूर्वे पूछया तेम सव प्रश्नो पूछीने छेवट पूछे के तारा घरमा तु सर्वत्र वसे छ? त्यारे जवाबमा त जणावे क गादीतकिया पर के ढोलिया पर बेसु छु-आ सग्रहनय ऋजु सूत्रद्वारा तो जेटला आकाशप्रदेशने अवगाहीने रह्या हाय तेटला मात्रमा ज वसतो कहे अन पोताना आत्मभावमा वसतो कहे त भावनय पछी शब्द, समभिरूढ अने एवभूत जाणवा ए ज प्रमाणे सप्तभगीनु स्वरूप जाणे, त आ प्रमाणे-१ स्याद्स्ति-द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भाव ए चार पोतानी अपेक्षाए स्याद्स्ति, २ स्यान्नास्ति-परवानी अपेक्षाए स्यान्नास्ति, ३, स्याद्स्तिनास्ति-बनेनी अपेक्षाए, ४ स्याद्वक्तव्य-बनेना एक काळनी अपेक्षाए, ५, स्याद्स्ति-अवक्तव्य-एक पक्षमा अस्ति छे पण कहेवामा न आवे, ६ स्यान्नास्तिअव क्तव्य-एम ज नास्ति छे पण कही न शकाय अने ७ स्याद्स्तिनास्तिअवक्तव्य आ प्रमाणे सात नय, सप्तभंगी, चार निक्षेपा इत्यादिकना रहस्यने जाणे त गीतार्थ कहवाय हवे गीतार्थना उपदेश सवने हितकारक थाय छ त सबधे बे गाथा दर्शावे छ—

गीअत्थस्स वयणेण, विस हालाहल पिवे ।
निव्विकप्पो य भक्खिज्जा, तक्खणे ज समुद्दवे ॥ ४४ ॥

परमत्थओ विस तो त, अमयरसायण खु त ।
निव्विग्घ ज न त मारे, मओऽवि अमयस्समो ॥ ४५ ॥

[गीतार्थस्य वचनेन, विष हालाहल पिबेत् ।
निर्विकल्पश्च भक्षयेत्, तत्क्षणे यत् समुद्रावयेत् ॥४४॥

परमार्थतो विष न तद्-मृतरसायन खलु तद्विष ।
निर्विघ्न यद् न तद् मारयति, मृतोऽपि अमृतसमः ॥४५॥]

गाथार्थ—गीतार्थ पुरुषना वचनथी बुद्धिमान तरत मरण निपजावनारु हळाहळ झेर पण नि शकपणे पी जाय अने तेवो पदार्थ पण खाई जाय कारण के परमार्थथी तो ते झेर झेर नथी परन्तु निर्विघ्नकारी अमृत समान रसायण ज होय छे कारण के ते विष खानारने मारतु नथी, अने कदाच मरण निपजे तो पण ते अमर ज मनाय छ.

विवेचन—गीतार्थ साधुपुरुष हलाहल तालपुट विष विगरे पीवानु कहे तो पण शकारहितपणे पी जवु ते झेर न जाणवु पण अमृत जाणवु कारण के गीतार्थ तो महाउपकारी छ अने तेना उपदेशद्वारा कराती क्रिया अजरामर-स्थानने-शाश्वतसुखने आपनार छ, माटे तेना वचनमा कदापि शका न करवी आवा गीतार्थ साधु अने सवगी केवा होय ? कया लक्षणवाळाने तेवा जाणी शकाय ? तने माटे चोभगी दर्शावे छ—"सविग्गा नाम एगे नो गीअत्था १, नो सविग्गा नाम एगे गीयत्था २, सविग्गा णाम एगे गीयत्थावि ३, नो सविग्गा णाम एगे नो गीयत्थावि ४ ॥१॥ १ चारित्रवान छ पण गीतार्थ नथी, २ गीतार्थ छ पण चारित्रपात्र नथी, ३ चारित्रपात्र छे अने गीतार्थ पण छे, ४ गीतार्थ पण नथी अने चारित्रपात्र पण नथी पहेलो भांगो कामनो नथी, कारण के कह्यु छ के—"पढम नाण तओ दया, एव चिट्ठइ सव्वसजए। अन्नाणी किं काही, किंवा णाही सेयपावग ॥१॥" पहेलु ज्ञान अने पछी दया ए प्रमाणे सयममा वर्ते साधुमार्गना अजाण शु हित साधी शकशे ? ज्ञान कया विना जीवदया कवी रीते पाळी शकाय ? ज्ञान होय तो ज सयममार्गमा यथेच्छ रीते प्रवृत्ति करी शकाय माटे ज प्रथम ज्ञान अने पछी चारित्र कहेल छे वळी 'जो हेउवाय सिद्धतविराहगो अन्नो ॥१॥" जे हेतु तेमज परपक्षने जाणे तने आगमिक-आगमज्ञाता कहीए परतु जे पोताना सूत्रनी प्ररूपणा करे अने बीजो उपाय न जाणे तेने सिद्धातनो विराधक कह्यो छे, एटले के जाण्या विना क्रिया करे, तेनी प्ररूपणा करे पण ते सबधी ज्ञान न होय तो विराधक गणाय

वळी पूर्वे वर्णवेला छ प्रकारना अपवादादिक सुधी न जाणतो होय तो ते केवी रीत चारित्रनु पालन करी शके? वळी "सावज्जण देसण काउ ॥ १ ॥" जे 'आ वचन सावद्यकारक छे अने आ निरवद्य छे' ते जाणी शकता नथी तो तेओ उपदेश देवाने-व्याख्यान वाचवाने कई रीते अधिकारी थई शके? माटे ज्ञान-प्राप्ति विना बोलवु उपदेश देवो ते साधुने माटे वर्ज्य छे आगमना रहस्यथी अज्ञात गच्छनो त्याग करीने विचरे ते पोते संसारमा डूबे छे अने बीजा मन्द प्राणिओने पण डूबाडे छे भवरूपी अंधारा कूवामाथी पोते बहार निकळता नथी अने बीजाने निकळवा देता नथी विशेष शु कहीए? छ-छ मासनी अति दुष्कर तपश्चर्या करवा छता पण जो ते अगीतार्थ होय तो, विषनो जेम त्याग करीए तेम तेनो त्याग करवो, सर्पथी जेम दूर नासीए तेम तेनाथी दूर भागवु, लुच्चा पुरुषनो ससर्ग न करीए तेम तेनो सग न करवो वळी अकुलीन बधु भयकर रनदार, महादुष्ट पिशाच तथा बळता अरण्यनी माफक तेनो त्याग ज करवो इ० छ [illegible] प्रथम भागो अशुद्ध छे-अस्वीकार्य छ बीजा भागो पण निष्फळ छे, कारण के [illegible] भणे, अर्थ जाणे, नूतन अध्ययन कर्या करे परन्तु चारित्र-पालन विनानु ते सर्व निष्फळ छे कारण के तेथी तो फक्त कठशोष ज थाय छ [illegible] अन्नपाणी तो मळे छ ने? तो शास्त्रकार कहे छ के-धर्मना नामे जेना [illegible] आहार-पाणी वापरे छे तेने त्या ऊट, पाडा विगेरे थईने भार वहन [illegible] पडे छे माटे चारित्र विना ज्ञान कई पण कामनु नथी आ सबधमा कह्यु छे के-

"जहा खरो चदणभारवाही, भारस्स भागी न हु चदणस्स। एव खु [illegible] चरणेण हीणो, नाणस्स भागी न हु सुग्गईए ॥१॥" गधेडा पोताने [illegible] चदननो भार वहन करे छे पण चदननी शीतळताना-सुगधना [illegible] मळता नथी तेम घणु भणेल होवा छता ज्या सुधी चारित्र [illegible] नथी त्या सुधी ते सद्गतिरूपी शीतळतानो लाभ मेळवी [illegible]

वळी "आउज्जनट्ट चरणहीणो ॥" नाच-तानमा प्रवीण [illegible] जाणार लोकोने हर्ष न पमाडी शके पोताना अवयवोना [illegible] अने नृत्य तथा सगीत न करे तो ते लोकोने रीझव [illegible] करावे? तेवी ज रीते साधु पण नटीनी माफक [illegible] आवश्यक क्रिया न करे सरल चारित्र न पाळे तो [illegible] पण उलटी पोतानो, पोताना गच्छनी निंदा कराव अने [illegible] वळी तरिया जाण छ के हाथ-पग हलाववाथी ज नदीना [illegible] परन्तु नदीमा पड्या पछी हाथ-पग न हलावे तो जेम बूडी [illegible] नदीना प्रवाहमा पड्या पछी चारित्रपालनरूपी क्रिया [illegible] न करे तो ते गीतार्थ पण ससार-नदीमा डूबी जाय, परन्तु [illegible] आवे

साथोसाथ क्रिया पण आदरे जेम महाकष्टपूर्वक शालि निपजाव्या होय, तेने कोठारमां भरी मूक्या होय, ओ तेनो उपभोग न करे तो ते सर्व निष्फळ नीवडे तेम ज्ञानवडे हेय, उपादेय अने ज्ञेयने जाणीने ते प्रमाणे आचरे नहीं तो ज्ञान पण शालिभद्रनी माफक निष्फळ छे आवो मतिज्ञपक्षी पोते तो अन्य साधुने वंदाय नहीं पण पोते याद तो भविष्यमां ते सुलभबोधि थाय त्रीजो भांगो श्रेष्ठ छे गणधर भगवंत अने चौदपूर्वधारीओ आ भांगामां समावेशित थाय छे वर्तमानकाळे तो जेटलुं ज्ञान छे तेनो सूत्रार्थ जाण्यो होय, तेनुं ग्रहण कर्युं होय, परमार्थ जाण्यो होय तेने गीतार्थ कहीए 'पांचमो आरो तो दुसम छे, छेवट्ठुं संघयण छे माटे केम करीए?' एम शिथिल बनी जीवन गोपवे नहीं, पण चारित्रमां छतुं बल-वीर्य फोरवे तेने संविग्न कहीए. कह्युं छे के-
“को, या जईण सया ॥२॥” तीर्थंकर परमात्माए कह्या प्रमाणे सर्व करवाने अशक्तिमान होय पण यथाशक्ति (पोतानां सामर्थ्य प्रमाणे) चारित्र-पालन करे एटले के आहारपाणी लेवामां अने आरोगवामां शूरा, शरीरे पुष्ट बनवामां प्रवीण अने प्रतिक्रमण-पडिलेहणादि क्रियाओ करवामां शिथिल न होय परन्तु चारित्र पालन करवामां दृढ प्रतिज्ञावाळा होय, काळ प्रमाणे जयणापूर्वक वर्ते, ईर्ष्यारहितपणे उद्यमवंत होय अने लोकदेखाव माटे क्रिया न करे ते ज साचा यति-साधु छे जयणा करता छतां पण कथंचित् प्रमादना योगथी, दुसमकाळ, हीनबुद्धि अने छेवट्ठा संघयणना कारणथी दोष लागी जाय तो पण तेने चारित्रपात्र समजवा, पण विराधक न समजवा, कारण के पोताना बळ-वीर्य प्रमाणे चारित्र पाळे छे, दोष लगाडवानो इरादो नथी, सूत्रोक्त अपवाद सेवे छे तेने आलोवे छे आ संबंधमां दृष्टांत बतावता कहे छे के-कांटावाळा मार्गमां चालतां घणी ज सावचेती राखे तो पण चूकी जाय तेम चारित्र-मार्ग कष्टकव्याप्त छे कोईक अपवादमार्गनुं पण सेवन करी जाय छे, कारण के काउस्सग्ग ऊभा ऊभा करवानुं कथन छे छतां असमर्थ होय तो बेसीने करे अने तेम पण करवाने अशक्तिमान होय तो सूता सूता पण करे आ प्रमाणे करवाथी ते चारित्रना विराधक गणाता नथी आ संबंधमां विशेष वर्णन श्राद्धप्रतिक्रमण चूर्णीमां करेल छे चोथो भांगो लिंगधारीने ज होय छे, जे वेषमात्र धारण करीने पेट भरे छे तेवा लिंगियाने शुद्ध मानवाथी तो मिथ्यात्व लागे आ चार भांगा पैकी त्रीजा भांगावाळा ज साधु खरेखर गीतार्थ छे अने तेमना वचननुं मरणांत कष्ट आवे तो पण पालन करवुं ज आ प्रमाणे गीतार्थनी महत्ता जणावी, हवे अगीतार्थनो उपदेश केवो दुःखदायक थाय छे ते जणावे छे—

अगीयत्थस्स वयणेण, अमियपि न घुंटए।
जेण नो त भवे अमयं, जं अगीयत्थदेसियं ॥ ५६ ॥

परमत्थओ न तं अमयं, विसं हालाहलं खु तं।
न तेण अजरामरो हुज्जा, तक्खणा निहणं वए ॥ ४७ ॥

[अगीतार्थस्य वचनेना-मृतमपि न पिबेत् ।
येन न तद् भवेदमृतं, यदगीतार्थदेशितम् ॥ ४६ ॥

परमार्थतो न तदमृत, विष हालाहल खलु तत् ।
न तेनाजरामरो भवेत्, तत्क्षणात् निधन व्रजेत् ॥ ४७ ॥]

गाथार्थ—अगीतार्थना वचनवडे कोई अमृत पण न पीवे कारण के ते पोते ज दोषित होवाथी ते अमृत वास्तविक अमृत होतु नथी. परमार्थथी तो ते अमृत पण हलाहल विष जेवु होय छे, जेथी अजरामर थवातु नथी तेमज मृत्युने पण दूर हटावी शकातु नथी—तत्काळ मृत्यु ज निपजे छे.

विवेचन—ऊपरनी गाथामा दर्शावला चार भागा पैकी चोथा भागावाळा साधु अगीतार्थ जाणवो तेना द्वारा उपदेशातो तपश्चर्यादि क्रिया पण, खरेखर तो ते अमृतस्वरूप छे तो पण, झेर सदृश ज बने छे तेना द्वारा तपनु पचक्खाण पण न लेवु तो पछी तेनी पासे व्रतादि उच्चरवानी तो वात ज क्याथी संभवे? दूधना गुण तो तेना ते ज होय छे, परन्तु ज्यारे ते सपना उदरमा जाय छे त्यारे झेररूपे परिणमे छे तेम तपस्या, व्रत इत्यादिक धार्मिक अनुष्ठानो ता अमृतस्वरूप छे परन्तु ज्यारे ते अगीतार्थद्वारा उपदेशाय छे त्यारे झेर सदृश बनी जाय छे तेनाथी अजरामर पद-मोक्षनी प्राप्ति थती नथी परतु अनत ससारमा भ्रमणरूप मृत्यु ज थाय छे श्रीउपदेशमालामा कह्यु छे के-" ज जयइ अगीयत्थो, ज च अगीयत्थनिस्सिओ होइ । वट्टावेइ य गच्छ, अणतससारिओ होइ ॥ १ ॥ कह उ जयतो साहू, वट्टावेइ य जो उ गच्छं तु । सजमजुत्तो होउ, अणतससारिओ भणिओ ॥ २ ॥ दव्व खित्त काल, भाव पुरिसपडिसेवणाओ य । न वि जाणइ अगीओ, उस्सग्गववाइय चेव ॥ ३ ॥ जहट्ठियदव्व न याणइ, सचित्ताचित्तमीसिय चेव । कप्पाकप्प च तहा, जोग वा जस्स ज होइ ॥ ४ ॥" जे अगीतार्थ होय अने पोतानो गच्छ चलावे ते तेमज अगीतार्थनी निश्राए पण जे रहे ते अनतससारी थाय छे गच्छने चलावतो उद्यमवत अगीतार्थ अनत ससारी केम थाय? ते प्रश्नना जवाबमा कहे छे के—द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भाव, पुरिस, प्रतिसेवणा (कारणे दोष लगाडवो)-आ छ प्रकार अगीतार्थ न जाणे,

तेमज अपवाद अने उत्सर्ग मार्ग न जाणे, जेवा द्रव्य होय तेवा यथास्थित न जाणे, सचित्त, अचित्त अने मिश्र न जाणे, 'आ कल्पे अने आ न कल्पे' ते पण न जाणे, ज्ञान पण न जाणे-आ प्रमाणे ते पोते ज अज्ञानी होवाथी स्वयं अनंत संसारमा परिभ्रमण करे छे अने पोताना आश्रितने पण परिभ्रमण करावे छे आवा अगीतार्थनो संग न करवा ते जणावता कहे छे—

अगीयत्थकुसीलेहिं, सग तिविहेण वोसिरे।
मुक्खमग्गस्सिमे विग्घे, पहम्मि तेणगे जहा ॥ ४८ ॥

[अगीतार्थकुशलैः, सङ्ग त्रिविधेन व्युत्सृजेत्।
मोक्षमार्गस्येमे विघ्नाः, पथि स्तेना यथा ॥ ४८ ॥]

गाथार्थ—मन, वचन अने कायाथी अगीतार्थ तथा कुशीलियानो सग सदा त्यजी ज देवो, कारण के चोर अथवा डाकुओ जेम मुसाफरीमा विघ्नकारक छे तेम ते पण मोक्षमार्गमा हानिकारक छे.

विवेचन—पाच प्रकारना अगीतार्थ छ पासत्थो, आसन्ना, कुशीलियो, ससक्त अने यथाच्छदनक जेम राजरानी मध्य दाढी ऊघी करता आपोआप बन्ने बाजुना वाळवा ऊचा नीचा थाय ज छे तेम अहीं मूळगाथामा अगीतार्थ कुशील मध्यमा मुकवाथी स्वयमेव पूर्व अने पश्चिमना बे-बे अगीतार्थो ग्रहण कराइ ज जाय छे आ पाचे प्रकारना अगीतार्थोनो सग त्रिविधे त्रिविधे (मन, वचन, कायाथी करवु, कराववु अने अनुमोदवु) कदापि करवो नहीं श्रीमहानिशीथसूत्रना छठ्ठा अध्ययनमा कह्यु छे के-आवा जेनी फूटी गइ छ तेवी स्थितिमा लाख वर्ष रहेवु सारु परतु अगीतार्थनी पासे एक क्षण (दश सेकड) के अडधी क्षण पण न रहेवु काई शका करवापूर्वक पूछे के-पोताना गुरु पाछळथी पासत्था थइ गया होय तो शिष्ये शु करवु ? आ सबधमा श्रीउपदेशमालानी ३७६मी गाथानी हेयोपादेय नामनी टीकामा कह्यु छे के— " गीयत्थ सविग्ग, आयरिय मुयइ वलइ गच्छस्स। गुरुणो य अणापुच्छा, ज किंचि वि देइ गिण्हइ वा ॥ १ ॥" मोक्षना अभिलाषी सविग्नगीतार्थ आचार्यने विना कारण छोडे, गच्छनो त्याग करे तेमज आज्ञा विना कइ पण दे अगर तो ले तो दोषभागी थाय परतु आ अगीतार्थनो त्याग करवामा दोषनो लेशमात्र सभव नथी श्री स्थानागजीना त्रीजा स्थानकमा पण कह्यु छे के—प्रमादी आचार्यनो त्याग करवो आवा अगीतार्थ साधुओने चोर, लूटारा सरखा जणाव्या छे एक नगरथी बीजा नगरे जता रस्तामा डाकुओ मळे तो ते विघ्न करे अने सपत्ति होय तो

लूंटी ले तेम आ अगीतार्थ साधुरूपी चोरो मोक्षमार्गरूपी नगरमा पहोंचता उपद्रव करे छे अने शुद्ध धर्मरूपी आत्मिक संपत्ति लूंटी लई अगाध संसार सागरमा रखडावे छे माटे आवा विघ्नकारक अगीतार्थनो संग सदा वर्जवो

पज्जलियं हुयवहं दट्ठुं, निस्संको तत्थ पविसिउं ।
अत्ताणं निद्दहिज्जाहि, नो कुसीलस्स अल्लिए ॥ ४९ ॥

[प्रज्वलितं हुतवहं दृष्ट्वा, निःशङ्कः तत्र प्रविश्य ।
आत्मानं निर्दहेत्, नैव कुशीलमालीयेत् ॥ ४९ ॥]

गाथार्थ—धगधगती अग्नि-ज्वालामा निःशंकपणे प्रवेशीने पोताना देहने भस्मसात् करी नाखवो सारो परन्तु कुशील-अगीतार्थनो संग न ज करवो

विवेचन—अग्निमा पात करवाथी एक ज वखत मृत्यु प्राप्त थाय छे ज्यारे कुशीलिया पासत्थादिकना संसर्गथी अनंत संसारमा अनंत वार जन्म-मरण करवा पडे छे, अत्यंत दुःख-कष्टपरंपरा सहन करवी पडे माटे ज कह्यु छे के-एक वार मरण पमाडे तेवा अग्नि सारा श्रीमहानिशीथ सूत्रना चोथा अध्ययनमा कह्यु छे के—" जीने समग्गमाइण्णे, घोरं वीरं तवं चरे । अचयंतो इमे पञ्च, कुज्जा सव्वं निरत्थयं ॥ १ ॥ पासत्थोसन्नहाछंदे, कुसीले सबले तहा । दिट्ठीए वि इमे पंच, गोयमा न निरिक्खए ॥ २ । " हे गौतम ! कोई व्यक्ति संमार्गमा रहीने तीव्र तपश्चर्यादि धर्मकरणी करे परन्तु जो ते पासत्था, ओसन्नो, कुशीलिया, यथाच्छंदक अने ससत्तो—ए पांचनो संसर्ग करे तो तेनी धर्मकरणी निष्फळ छे ते पांच प्रकारना लिंगियो तो दृष्टिमात्रथी जोवा लायक नथी तो तेना परिचयनी तो वात ज शा माटे करवी ? कुशीलियाना संग संबंधमा श्री महानिशीथना चोथा अध्ययनमा भगवंत श्रीमहावीरस्वामीए गौतमस्वामीने सुमतिनु सभळावेल दृष्टान्त अतीव विचारणीय छे

अगीतार्थना संगथी महाविषम फल पामेल सुमतिनु वृत्तांत—

कुशस्थल नामना नगरमा नागिल अने सुमति नामना बे भाइओ रहेता हता तेओ जीवाजीवादि नव तत्त्वना ज्ञाता हता अनेक संपत्ति पण सारा प्रमाणमा मेळवी हती, परन्तु कोइक समये अंतरायकर्मना उदयथी तेमनु धन नाश पाम्यु आम छता पण तेओनी धर्मश्रद्धा अचल हती व्यापारमा कूड कपट करता नहीं, असत्य बोलता नहीं, दानादिक चार प्रकारना धर्मनु यथार्थ पालन करता, मत्सर, द्वेष, ईर्ष्यादि कई करता नहीं, स्वजन—संबंधीओमे धर्म

पदेश आपता—आ प्रमाणे यतन राखवा छता अशुभ कर्मना उदयथी तेमने धन प्राप्त न ज थयु आवी रीते केटलाक वर्षो व्यतीत थइ गया पछी स्त्री-पुत्रादि पण तेमनो अनादर करवा लाग्या तेमना प्रत्ये कुटुंबीजनोनो सत्कार पण ओछो थइ गयो एकदा एकातमा ते बने भाइओ विचारवा लाग्या के—" जा विहवो ता पुरिसस्स, होइ आणापडिच्छओ लोगो। गलिओदय घण, विज्जुला वि दूर परिचयइ ॥१॥" ज्या सुधी पुरुष पासे धन होय त्या सुधी तेनी आज्ञा पुत्र-परिवारादिक माने परन्तु धनविहीन स्थितिमा तो तेनी अवज्ञा थाय जेम जळयुक्त मेघ होय तो वीजळी तेनो सग करे छे परन्तु जळ रहित स्थितिमा ते पण तेना त्याग करी जाय छे वाद नागिले कह्यु- "पुरिसेण माणघणवज्जिएण, परिहीणभागधिज्जेण । ते देसा गतव्वा, जत्थ सवासी न दीसन्ति ॥ १ ॥" आदरभाव तथा धन रहित अने हीनभाग्यवाळा पुरुषे पोताना देशना त्याग करीने जे देशमा पोताना गामना वसनारो कोई न होय तेवा गाममा वसवाट करवो जोइए "आ कथन साभळी सुमतिए कह्यु-" जस्स घण तस्स जणो, जस्सत्थो तस्स बंधवा बहवे। धणरहिओ अ मणूसो, होइ समो दासपेसेहिं॥ १ ॥" जेनी पासे धन छे तेने घणो परिवार छे, धनवानना बधुओ पण घणा थाय छे परन्तु जे धन रहित छ तेने तो सेवाभाव स्वीकारवो पडे छे माटे आपणे देशातर जइए त्या सयोग सारा मळशे ता ठीक, नहीं तो चारित्र अगीकार करशु ' आ प्रमाणे परस्पर विचारीने बने भाइओ कुशस्थळनो त्याग करी चाली निकळया

मागमा चालता तेमणे पाच साधु अने एक श्रावकने चाल्या जता जोया पछी नागिले कह्यु-" भाइ! साधुनो साथ मळयो छे तो आपणे तेमनी साथे जइए " सुमतिए सम्मति दर्शावी आ प्रमाणे चालता हजी एक मुकाम पूर्ण थया नहीं तथामा नागिले सुमतिने कह्यु क-' हरिवशना तिलकसमा बावीशमा तीर्थकर श्रीअरिष्टनेमिए एकदा परमात्मु हतु ते मुजब आपणे जेनी साथे चाली रह्या छीए तेवा साधुओ कुशीलिया होय छे कुशीलिया साधुने दृष्टिमात्रथी निरखवा पण योग्य नथी तो तेमना सग तो केम ज कराय? आ साधुओ कुशीलिया जणाय छ माटे आपणाथी हमे क्षणमात्र पण तमनी साथे रहेवाशे नहीं " आ प्रमाणे कहीने, सुमतिनो हाथ खेंचीने नागिल तेने बीजो धाजु लइ गयो त्या आगळ शुद्ध भूमि तपासीन बन्ने बेठा त्यारे सुमतिए जणाव्यु के- हे भाई! गुरुने, माता, पिता, ज्येष्ठ भाइ अने मोटी भगिनीने उत्तर न आपवो (सामु न बोलवु) एवी आज्ञा छे तो हे वडील बधु! हु हव तमने शु कहु? ऊपर कहेला शास्त्रमा जे कहे तेने (महत्ति) प्रमाणभूत मानवु ते खरु छे के खोटु छे?

ते सबधी विचार न करवो आम कहीन सुमतिने नागिल प्रत्ये कइक कहेवु हतु छता बोली शक्या नहीं इगिताकार जाणवामा कुशळ नागिल विचार्यु के-सुमतिने कइक कहेवु छ, पण लज्जाथी कही शकतो नथी ने वृथा कषाय करे छ हमणा तेनो क्रोध शात थवा दो हमणा हु कई तेने हित-शिक्षामण आपीश ता त मानशे नहीं वळी विशेष विचार करता तेने जणाय्यु क-तेना मननी शका हमणा ज टाळवी सारी छे, कारण के ते माळा हृदयनो होवाथी पापकृत्यने जाणी शकता नथी आ प्रमाणे विचारी तेण सुमतिने फरी कह्यु क-" भाइ! हु तने दोष आपता नथी वमनो ज दोष छे कारण के सगाभाइने पण शिक्षा मण आपता विपरीत लाग छे अने बोध पण थतो नथी आ सर्व राग, द्वेष, अने मिथ्या आग्रह-मिथ्यात्वनो ज चेष्टा छे" नागिलनु आवु वचन साभळी सुमतिए कह्यु-' भाइ! तु सत्यवादी अने स्वप्नो साभळनार छे, पण तु ते साधुओना अवर्णवाद करे छे ते योग्य नथी ते साधुओ तो छट्ठ, अट्ठम तथा मासक्षमणादि तपक्रिया करे छे, वीरासन, उत्कटुकासन प्रमुख कष्टक्रिया करे छे वळी अनेक प्रकारना अभिग्रह करे छे आवा साधुओने तु कुशीलिया कहे छे तो तारु ज्ञान म्कु जाणु?" नागिल जवाबमा कह्यु-" भाइ! एवा बाह्य तपस्याथी तु ठगाइश नहीं बाल तप अने आ उत्सूत्रप्ररूपणमा शो फरक छ? मारे शु तेओना पर द्वेष छ क हु एमना अवर्णवाद बोलु? तीर्थंकर भगवतनी आज्ञा मुजब ज हु कहु छु क-आवा कुशीलिया जावा योग्य नथी " सुमतिए आ प्रमाणे साभळी क्रोध उश्केराइन कह्यु-" जेवो तु बुद्धिहीन छे तेम तने तत्त्व कहनारा तीर्थंकर पण बुद्धिहीन हशे " आ कथन साभळता ज नागिले सुमतिना मुख आगळ पोतानो हस्त आडो धरी बोलवाना निषेध कर्या अने कह्यु-" भाइ! आम न बोल तथी तो तीर्थंकर परमात्मानी आशातना थाय मने तारे जेम कहेवु होय तेम कह पण तीर्थंकरनी निंदा कदापि न करीश' आ साभळी सुमतिए नागिलने पूछ्यु- आ साधुओ कुशीलिया होता तो जगतमा काई सुशील साधु छ क नहीं?' आ प्रमाणे रोषित सुमतिने शात करता नागिले कह्यु-"भाइ! एम न बोल तीर्थंकर परमात्माना शासननी हीलना न कर जिनेश्वर भगवतनु वचन कदापि लघनीय नथी तमना शासनमा तो अनेक शुद्ध चारित्रपात्र मुनिपुगवो विद्यमान होय छ त साधुओ कुशीलिया होता तेना कारण तु साभळ—अधिक उपकरण राखवा ते परिग्रह छ साधुओए तो परिग्रहपरिमाण नामनु व्रत स्वीकारेलु होय छ, छता आ साधुओए बीजी मुहपत्ति राखी छ एक मुहपत्ति खोवाइ जाय अगर तो फाटी जाय तो बीजी उपयोगमा आवे तेवा विचारथी तओए राखी छ, परन्तु शुद्ध सयम-पालन करनार साधुने कदी पण उपकरणनी चिंता भोगववी पडती ज नथी आ तमनु उन्मार्ग आचरण छ वळी ते हमणा ज आवु क मोटा वखाणाता ते साधुए कोष

करवा निमित्ते वहोराव्या सिवायना सरस लोधो वळी पेला सघटित वानवाळा मुनिए सूर्य न ऊग्या छता 'सूर्योदय थइ गयो, चालो आपणे जईए' एम कहीने मृषावादनु सेवन कर्यु ते तो तु जाणे ज छे वळी पेला साधुए रात्रिसमये अग्निकायनी ज्योतमा कपडा सूक्व्या, प्रात कालमा लीला वनस्पति अने बीज खाव्या-आ बधी उपयोगशून्य क्रिया ज तमना चारित्रहीनता सूचवता माटे पर्याप्त छ सुविहित साधुए तो छकायना सूक्ष्म बादर जीवोनी जयणापूर्वक चालवु, सूबु विगेरे क्रिया करवी जोइए आ साधुओ पैकी एक पण तथा शुद्धाचारवाळा जणाता नथी छकायनु मर्दन करनार साधु करता फकाई पण सारो, माटे हे भाई सुमति ! आवा कुशीलिया साधुने जाणीने वदन करवानी वात पण केम घटी शके ? आवा साधुना ससर्ग करवाथी आपणु पण चारित्र भ्रष्ट थने अने अनत ससार भ्रमण थवे " आ प्रमाणे नागिले समजाव्या छता सुमति बोल्यो के—" मारे तो तमनी पासे दीक्षा लेवी छ तु जेवो धर्म कहे छे तेवो धर्म आजे कोण पाळी शके तेम छे ? माटे हवे मने रोक नहीं " आ प्रमाणे कहीने सुमति गयो अने दीक्षा लीधी दीक्षा लीधाने पाच मास व्यतीत थया तेवामा बार वर्षनो भयकर दुकाळ पडयो अने आलोयण, प्रतिक्रमण कर्या विना ते कुशीलिया साधुओ काळधर्म पामीने वाणव्यतरजातिना भूत, यक्ष, राक्षस अने पिशाचना वाहन तरीके उत्पन्न थया त्याथी च्यवीने म्लेच्छ थया त्या मासाहार करीने सातमी नरकमा उपज्या त्याथी निकळीने घणो काळ भमीने समकित पामशे समकित पाम्या पछी प्राज भव चार जणा मांधे जदा पण पाचमा जे ते कायमा अग्रेसर हतो ते पश्चात मिथ्यादृष्टि ने अभव्य होवाथी मोक्ष नहीं पामे

आ प्रमाणे सामळी गौतमस्वामीए पूछ्यु के-'हे भगवन्! सुमति मरीने क्या उपज्यो ?" भगवते कह्यु-'परमाधामी देव थयो " गौतमस्वामीए पुन पूछ्यु-'हे भगवत ! क्या कारणथी जीव परमाधामी देव तरीके उपजे ?' भगवंते कह्यु-'जे प्राणी तीव्र राग, द्वेष तमज महामिथ्यात्वनु सेवन करे छ तथा शास्त्रना गभीरार्थने समज्या विना उत्सूत्रापना कर छे ते परमाधामी देव थाय छे नागिले कुशीलिया सबधी कह्या छता सुमतिए कह्यु-'ते कुशीलिया नथी, जो तेओ कुशीलिया होय तो जगतमा सुशील कोण होइ शके ? मारे तो तेनी पासे दीक्षा लेवी छे -आ प्रमाणे कह्यु ते उत्थापना करी वळी तेणे नागिलने कह्यु के- तु जेवो निर्बुद्धि छे तेवा तीर्थंकर भगवत पण बुद्धिहीन हशे ' आ प्रमाणे आशातना करवाथी दीर्घ तपश्चर्या करवा छता पण तेना चीकणा कर्म छूटया नहीं अने परमाधामी देव थया बाद गौतमस्वामीए पूछ्यु के—हे स्वामिन् ! सुमति परमाधामी देवमाथी क्या उपजशे ? भगवते कह्यु—हे गौतम ! अनाचारनी प्रशसा करवाथी अने सन्मार्गनु उत्थापन करवाथी ते मदभागी सुमतिए अनंत ससार उपार्जन कर्यो तेना जन्म-मरणनो छेडो नथी तेना

केटला कष्टो तेने वर्णवुं ? अनंत पुद्गलपरावर्त सुधी ते चार गतिरूप संसारमां रखडशे, छतां पण तेने संक्षेपथी कहुं छुं ते तुं सांभळ-परमाधामी देवमांथी च्यवीने ते जलमनुष्य थशे आ जलमनुष्य क्यां थाय छे ? तेने क्यां संतापदायक कष्टो भोगववां पडे छे ते तुं ध्यानपूर्वक समजी ले आ जंबूद्वीपनी फरतो चार बाजु लवणसमुद्र वींटळायेलो छे ते लवणसमुद्रने जे स्थळे सिंधु तथा गंगा नदी मळे छे तेनी दक्षिणमां पंचावन योजन दूर वेदिकानी मध्यमां हाथीना कुम्भस्थळना आकारवाळुं साडाबार योजनप्रमाणवाळुं पडिसतापदायक नामनुं स्थान छे ते स्थानमां अत्यंत भयंकर, अंधकारवाळी अने घडियाळना जेवा आकारवाळी सुडतालीश गुफाओ छे ते गुफामां निरंतर बारबार जळचारी मनुष्य रहे छे ते मनुष्यो वज्रऋषभनाराचसंघयणवाळा, महाबलिष्ठ, पराक्रमी, साडाबार हस्तप्रमाण देहमानवाळा संख्याता वर्षना आयुष्यवाळा, मद्य, मदिरा अने मांसना अत्यंत लोलुपी, स्त्रीमां आसक्त, खराब वर्णवाळा, अस्निग्ध ऊंचा शरीरवाळा, हस्तीना जेवा मुखवाळा, सिंहनी जेवी भयंकर दृष्टिवाळा, यमराजना जेवा बोह्यामणा, मजबूत पीठवाळा तेमज अत्यंत अभिमानी होय छे तेओनी अंतरंडगोळी(अंडजनी गोळी)ने ग्रहण करीने, ते गोळीने चमरी गायना श्वेत वाळथी गुंथीने जे माणस पोताना कर्णमां पहेरी राखे ते समुद्रना अगाध जळमां जाय तो पण कोइ पण मगरमच्छ, महामत्स्य, जळघोडा विगेरे शिकारी प्राणियो लेशमात्र उपद्रव करी शके नहीं ते अंडगोळकना प्रभावथी ते हिंसक प्राणियो नजीक आवी शकता नथी अने तेथी ते अंडगोळकने धारण करनार मानवी इच्छा प्रमाणे जळमां विचरी जातिवंत-रत्न ग्रहण करी शके छे आ अंतरगोळकना कारण ज जळमनुष्यने अतीव कष्ट भोगववुं पडे छे तेओ एटला बधा पराक्रमी होय छे के तेनी पासेथी अंडगोळक सहेलाइथी मेळवी शकातुं नथी एटले तेने अतीव कष्टमां पाडीने, तेने शक्तिहीन करीने पछी तेना पासेथी अंडगोळक मेळवी शकाय छे ते समये ते जळचर मनुष्यने नारकीना जेवुं घोर कष्ट भोगववुं पडे छे हे गौतम ! अंडगोळकने कोण ग्रहण करे ते हवे तने जणावुं छुं लवणसमुद्रने विषे ते पडिसतापदायक स्थानथी एक सो एकत्रीश योजन दूर रत्नद्वीप नामनो द्वीप छे तेमां वीस, ओगणीस, अढार, आठ अने सात धनुष्यना प्रमाणवाळा, घंटीना आकारवाळी यंत्रयुक्त वज्रशिलाओ छे ते शिलाओने उघाडीने, पूर्वसिद्ध क्षेत्रना स्वभावथी तेने सिद्ध करीने, ते शिलाओने मांस-मदिरा अने मधुथी लिप्त करे छे आ जळचर मनुष्यो मांस-मदिरामां अत्यंत आसक्त होय छे तेने कब्जे करवा माटे रत्नद्वीपवासी लोको मांस अने मदिराना कुंडा भरीने पडिसतापदायक स्थानमां जाय छे जेथी जळचर मनुष्यो रत्नद्वीपवासी मानवीओने जुवे छे के तरत ज तेने मारवा दोडे छे रत्नद्वीपना लोको मांस-मदिराना कुंडा त्यां मूकी दइने

रत्नद्वीप तरफ पाछा वळी जाय छे जळचर मनुष्यो ते गुफाने जोईने त्या घसी जाय छे अने तेमाना पदार्थ खाई जाय छे खाई लीधा पछी पण तरत ज रत्नद्वीपवासी प्राणियोनी पाछळ दोडे छे मतले तेओ पाछा मास-मदिराना गुफा मूकी दूर नासी जाय छे आ प्रमाणे करता करता तेओ रत्नद्वीप समीप जळचर मनुष्याने लेवी जाय छे ते लोकोए वज्रशिलाआमा पण मासना लोचा चोंटाडेला होय छे, माछ लिआ राखी मूकी होय छे मधनु चारे बाजु लेपन करेल हाय छे रत्नद्वीप पासे आवता ज आ शिलाओ जळचर मनुष्यनी नजरे पडे छे पटले तेओ मास-मदिरानी आसक्तियी ते शिलामा दाखल थाय छ आ शिलाओनो आकार फाडेला मुख जेवा होय छे जळमनुष्यो त मास-मदिराने जोईने अत्यत प्रमत्तपणे सुखपूर्वक तेमा रही आरोगछ आ प्रमाणे दश-पदर दिवस व्यतीत थाय छे तेवामा रत्नद्वीपना मनुष्यो बाण, खड्ग, भाला प्रमुख शस्त्रास्त्राथी सज्ज थईने त शिलाओ फरता सात-आठ घखत वीटणा वळे छ वीजा फरताफ त शिलाआमा रहेला जळचर मनुष्योन पकड करान छ जो जळचर मनुष्य पैकी एक पण वज्रशिलाना घंटीमाथी छटकी जाय तो ते रत्नद्वीपवासी समग्र प्राणियानो सहार करी नाखे बाद यत्रद्वारा वज्र शिलामय घटीना पड एकठा करीन त जळचर मनुष्याने दळवा लाग तेओना हाड पटला मजबूत होय छ क-आ प्रमाण एक वष पर्यत सतत पीसावा छता हाड फाटी जाय नहीं क पीसाय पण नहीं शरीरना बधा साधाओ शिथिल थइ जाय त्यारे घंटीनी पाछळ आगळीलु हाडकु जोईने रत्नद्वीपवासी मनुष्यो अत्यत आनद पाम पछी दळवानो परिश्रम छोडी दई, घंटीनी शिलाओं अळगी करी ते जळचर मनुष्योना अडगालक लइ ले पछी ते अडगालक पुष्कळ द्रव्यवडे वची नाखे वज्रशिलानी मध्यमा एक वर्ष पर्यंत पीसाता ते जळमनुष्योने नारकीय भयकर यातनानो अनुभव थाय छे ''

आ प्रमाणे हृदय-विदारक वर्णन साभळी गौतमस्वामी पुन भगवतने पूछ छे क-"हे भगवत ! आ प्रमाण एक वर्ष पर्यंत वज्रशिलानी घटीमा पीसावा छता आहार-पाणी विना ते जळचर मनुष्यो केम जीवी शके ?" भगवत जवाब आप्यो क-'हे गौतम ! करेला कर्मना स्वभावथी तओने आवु कष्ट सहन करवु पडे छे, अर्थात् करेला कर्मो भोगववा माटे तओ एक वष पर्यंत जीवत रहे छे' आ सबधी विशेष अधिकार प्रश्नव्याकरणनी टीकामाथी जाणी वळी गौतमस्वामीए पूछ्यु के-"हे भगवत ! सुमतिनो जीव जळचर मनुष्यमाथी मरीने क्या क्या उपजशे ?" भगवते कह्यु क-"जळमनुष्यपणामा उपार्जेला कर्मोने कारणे तेना ज सात भवो कर्या बाद तेनो जीव १ शिकारी श्वान थशे, पछी २ कागडाना भव करशे, पछी ३ वाणव्यतर ४ लींबडाना वृक्षमा, ५ मनुष्यनी स्त्री, ६ छठ्ठी नारकीमा, ७ कोढियो मनुष्य, ८ यूथाधिपति हस्ती, ९ त्या मैथुनमा आसक्त थइन अनतकाय (साधारण वनस्पति), १० बाद अनतकाळ परिभ्रमण

करीने नैमित्तिक, ११ सातमी नरक, १२ महामत्स्य, १३ सातमी नरक, १४ बळद, १५ मनुष्य, १६ वृक्ष कोकिल, १७ जलोग १८ तंदुल मत्स्य, १९ सातमी नरक, २० गधेडा, २१ श्वान, २२ कीडा, २३ उदर, २४ अग्निकाय, २५ कुंथुओ, २६ मधुकार, २७ चकलो, २८ उधइ, २९ वनस्पतिकाय, ३० स्त्रीरत्न, ३१ छट्ठी नरक, ३१ हस्ती, ३३ वेसामडिय नामना नगरमा उपाध्यायना घर पासे लींबडाना वृक्षरूपे वनस्पतिकायमा उपजशे, ३४ कुब्जा स्त्री, ३५ नपुंसक मनुष्य, ३६-३७ दरिद्री मानवी, ३८ पृथ्वीकाय, ३९ मनुष्य, ४० मनुष्यभवमा बाळतपस्वी, ४१ वाणव्यंतर, ४२ पुरोहित, ४३ सातमी नरक, ४४ मत्स्य, ४५ सातमी नरक, ४६ बळद, ४७ मनुष्य तरीके महासमकिती अविरति चक्रवर्ती ४८ पहेली नरक, ४९ श्रेष्ठी, ५० साधु, ५१ अनुत्तर विमानमा देव, ५२ चक्रवर्ती थइ, कामभोगोने त्याग करी दीक्षा अंगीकार करशे अने तीर्थंकर भगवंते उपदेशेला चारित्र प्रमाणे तेनु यथार्थ पालन करी मोक्षे जशे हे गौतम ! आ प्रमाणे जे साधु-साध्वीओ तथा श्रावक-श्राविका पाखंडीनी प्रशंसा करे, निह्नव अथवा तो उत्सूत्रप्ररूपकनी पुष्टि करे, तेवानी साथे बोले-चाले, तेवाने भणावे तेओने वसति आपे, तेवाए रचेला शास्त्रने प्ररूपे, तेमना कायक्लेश, तप, संयम, ज्ञान अने विद्वत्ताना वखाण करे ते पण सुमतिनी माफक परमाधामी थाय" विशेष वृत्तांत महा निशीथना चोथा अध्ययनथी जाणवु

आ प्रमाणे सुमतिनी भवपरंपरा सांभळी गौतमस्वामीए नागिलनी गति संबंधी पृच्छा करी एटले भगवंते जणाव्यु के-' कुशीलियानो संग त्यजी दइने ते नागिल सिंह तथा विशाळ क्षुधार्थी व्याप्त ते भयंकर अटवीमा परमात्माना वचनने परम हितकारी समजी जीव रहित पृथ्वीपीठ पर पादपोपगमन अनशन स्वीकारीने रह्यो तेनी तेवी स्थिति जाणीने तेने भव्य जीव जाणीने बावीशमा तीर्थंकर श्रीअरिष्टनेमि तेना पर उपकार करनारी बुद्धिथी आकर्षाइ त्यां पधार्या अने मेघ जेवी गंभीर गिराथी उपदेश आप्यो ते उपदेशने सद्दहतो, शुभ अध्यवसायपूर्वक क्षपकश्रेणीए चढीने नागिल अंतकृत्केवली थयो अने मोक्षे गयो हे गौतम ! कुशीलिया अगर तो पासत्थानो संग केवु भवभ्रमण करावे छे ते सुमति अने नागिलना दृष्टांत परथी सारी रीते समजी शकाय छे, माटे अग्निमा झंपापात करवो सारो परन्तु कदापि पासत्थानो परिचय न करवो" हवे कया गच्छने सारा गच्छ न जाणवो ते सूचवे छे—

पजलंति जत्थ धगधग—स्स गुरुणा वि चोइए सीसा ।
रागदोसेण वि अणु—सएण त गोयम ! न गच्छम् ॥ ५० ॥

[प्रज्वलन्ति यत्र धगधगायमान, गुरुणापि नोदिति शिष्याः ।
रागद्वेषेणापि अनुशयेन, स गौतम ! न गच्छः ॥ ५० ॥]

गाथार्थ-हे गौतम ! 'तमारा जेवाने आम करवु उचित नथी' ए प्रमाणे गुरुए प्रेरणा-सूचना कर्या छता पण जे गच्छमा शिष्य रागी, द्वेषी अने जाज्वल्यमान अग्निनी माफक क्रोधी होय तेमज दीक्षा लीधा सबधी पश्चात्ताप करे ते गच्छ वास्तविक नथी.

विवेचन-आचार्यनी फरज छे के-शिष्य उन्मार्गे चालतो होय, चारित्रनी शुद्धि न जाळवतो होय तो तेने सूचना करवी-हितशिखामण आपवी परन्तु शिष्य शिखामण अगीकार न करता गुरु प्रत्ये द्वेष करे, उलटा क्रोधी बने अने मनमा विचारे के-साधुपणु तो पळातु नथी, मायु न मुंडाव्यु होत तो सारु हतु, सुखपूर्वक भोजन करत अने आ प्रतिक्रमण, पडिलेहण तथा वैयावच्चादिक फडाकूट मटी जात आवा अविचारी शिष्योवाळो गच्छ सुगच्छ न कहेवाय पोतानी भूल होय अने गुरु शिखामण आपे तो पोतानी भूल कबूल करी गुरुनो उपकार मानवो ते ज सुविहित शिष्यनी फरज छ पश्चात्ताप न करता 'पोते क्या दीक्षा लीधी ?' एवो कुविचार मनमा लाववो ए पोतानी अधमगतिनी निशानी छे आवा रोषी अने अविनीत शिष्यो स्वपरनु हित साधी शकता नथी, माटे तेवा शिष्योवाळा गच्छने सारो गच्छ न समजवो आ सबधमा कोईक कहे के-गच्छमां वसवु ज नहीं, कारण के क्रोधादिकना प्रसगथी कर्मबध थाय माटे एकलविहारी थवु शु खोटु छे ? तो तेना जवाब ए छे के-कदाच एकजडना कारणथी राग-द्वेष या तो क्रोध उद्भवे तो पण गच्छनो त्याग करवो उचित ज नथी, कारण के एकला विचरवाथी स्वच्छदता आवी जाय छ, द्रव्य चारित्र पण जतु रहे अने महाअनर्थनु कारण प्रगटे माटे जो गच्छमा रहे तो आलोयणादिकथी अगर तो हितशिखामणथी शुद्धि थाय तेथी गच्छनो तो कदापि त्याग न करवो पण सारा गच्छमा ज निवास करवो गच्छमा रहेवाथी शु फायदो थाय छे ते जणावता कहे छे के-

गच्छो महाणुभावो, तत्थ वसंताण निज्जरा विउला।
सारणवारणचोअण-माईहिं न दोसपडिवत्ती ॥ ५१ ॥

[गच्छो महानुभाव-स्तत्र वसता निर्जरा विपुला।
स्मारणावारणाचोदना-दिभिर्न दोषप्रतिपत्तिः ॥ ५१ ॥]

गाथार्थ-गच्छ महाप्रभावशाळी छे कारण के तेमा निवास करवाथी महा निर्जरा थाय छे तेमज सारणा, वारणा अने प्रेरणादिकवडे नवा दोषोनी उत्पत्ति थती नथी.

विवेचन-सुविहित साधुओनो समुदाय ते गच्छ कहेवाय परस्परना आलंबनथी शुद्ध संयम-क्रियामां चित्त संलग्न रहे एटले बहु निर्जरा-कर्मक्षय थाय वळी निरंतर सारणादिकथी पण जागृति रहे एटले नवीन कर्मबंध न थाय सारणा एटले स्मरण कराववु-स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, पडिलेहण, चैत्यवंदन, ध्यान इत्यादिक न कर्यां होय तो याद करी आपवा वारणा-संयमक्रियामां स्खलना करता होय तेने उद्देशीने कहे के-आ काम करवु तमने घटतु नथी, मातर प्रमुख बराबर परठवजो-आ प्रमाणे कहेवु ते वारणा चोयणा-चारित्र अंगीकार कर्या छतां न करवा योग्य कार्य करे तो तेने उपदेश आपे, कठोर तेमज मिष्ट वचनथी समजावे अने पडिचोयणा-वारंवार समजावे अने विशेषमां कहे के-आ प्रमाणे आ तमारु अनुचित वर्तन रहेशे तो प्रायश्चित्त आवशे, माटे महामूल्यवंत चारित्रधर्म बराबर शुद्धिपूर्वक पाळो आ प्रमाणे गुरु आदिकना सारणा-वारणादिकथी संयम-पालनमां जागृति रहे अने कर्मबंध न थतां कर्म निर्जरा थाय ते निर्जरा केवा साधुओने थाय ते संबंधी चार गाथा दर्शावता कहे छे के—

गुरुणो छंदणुवत्ती, सुविणीए जिअपरीसहे धीरे ।
नवि थद्धे नवि लुद्धे, नवि गारविए विगहसीले ॥ ५२ ॥
खंते दंते गुत्ते, मुत्ते वेरग्गमग्गमल्लीणे ।
दसविहसामायारी, आवस्सगसंजमुज्जुत्ते ॥ ५३ ॥
खरफरुसकक्कसाए, अणिट्ठदुट्ठाइ निट्ठुरगिराए ।
निब्भच्छणनिद्धाडण-माईहिं न जे पउस्संति ॥ ५४ ॥
जे अ न अकित्तिजणए, नाजसजणए नाकज्जकारी अ ।
न पवयणुड्डाहकरे, कंठग्गयपाणसेसे वि ॥ ५५ ॥

[गुरोः छंदानुवर्तिनः, सुविनीता जितपरीषहा धीराः ।
नापि स्तब्धा नापि लुब्धा, नापि गौरविला विकथाशीलाः ॥ ५२ ॥
क्षान्ता दान्ता गुप्ता, मुक्ता वैराग्यमार्गमालीनाः ।
दशविधसामाचारी-आवश्यकसंयमोद्यताः ॥ ५३ ॥
खरपरुषकर्कशया, अनिष्टदुष्टया निष्ठुरगिरा ।
निर्भर्त्सननिर्धाटना-दिभिः न ये प्रद्विषन्ति ॥ ५४ ॥

ये च नाकीर्तिजनका, नापशोजनका नाकार्यकारिणश्च ।
न प्रवचनोड्डाहकरा:, कण्ठगतप्राणशेषेऽपि ॥ ५५ ॥]

गाथार्थ–आचार्यना आशयने अनुसरनार, विनयी, परीषहने जीतनार, धैर्यशाली, निरभिमानी, लोलुपता रहित, गारव रहित, विकथानो त्याग करनार, क्षमावान, जितेन्द्रिय, गुप्तिवत (ब्रह्मचारी,) निर्लोभी–संतोषी, वैराग्यवासित, दशविध समाचारी तथा आवश्यक करणी तेमज संयमयोगोमां सावधान, खर (आकरी), परुष (कठोर), कर्कश (करवत जेवी असह्य), अनिष्ट तेमज दुष्ट वाणी द्वारा अगर तो तिरस्कार के गच्छबाह्य करवा छता जे लेशमात्र द्वेष न करे, अपकीर्ति न करे, अकार्य न करे तेमज प्राणनो संशय आवी पडे तो पण शासननी हीलना थाय तेवु कार्य न करे तेवा शिष्यो–साधुओ निर्जरा करे छे.

विवेचन–बावीश प्रकारना परिषहो छे, तेना बे विभाग छे १ शीतपरीषह अने २ उष्ण परीषह आचारांगसूत्रनी निर्युक्तिमा कह्यु छे के–" इत्थीसक्कार-परीसहा य,दो भावसीयला एए । सेसा वीस उण्हा,परीसहा होन्ति णायव्वा ॥१॥" स्त्रीपरीषह अने सत्कारपरीषह ए बने परीषह शीत–ठंडा छे एटले ते शरीरादिकने कष्ट उपजावता नथी परंतु चारित्रमा स्खलना पमाडे छे ज्यारे बाकीना वीश परीषहो उष्ण छे एटले ते चारित्र तथा शरीरने दुःख उपजावे छे जो चारित्रथी चलायमान थाय तो दुःख अने न चलायमान थाय तो दुःख नथी परन्तु शरीरने तो दुःख छे ज वळी आ संबंधी त्रीजी गाथा दर्शावे छे के–
"जे तिव्वपरिणामा, परीसहा ते भवन्ति उण्हाओ । जे मंदपरिणामा, परीसहा ते भवे सीया ॥ २ ॥" जेनाथी राग–द्वेषादिक अधिक थाय ते उष्णपरीषह अने जेनाथी मंदकषाय थाय ते शीतपरीषह आवा परीषहने जीतनार शिष्य कर्म निर्जरा करी शके छे गारव त्रण जातना छे–१ रस, २ ऋद्धि अने ३ साता 'मारा प्रभावथी सरस आहार मळे छे' तेवु गौरव करवु ते रस–गारव, 'मारा उपदेशथी श्रावको बोध पाम्या, साधुओनी संख्या वधी' आ प्रमाणे कहेवु ते ऋद्धिगारव अने 'मारा प्रभावथी शय्या वसति संबंधी सुख प्राप्त थाय छे' तेवु गौरव लेवु ते सातागारव आ त्रण प्रकारना गारव रहित मुनि कर्मक्षय करी शके छे वळी [1]स्कंदकाचार्यना पांच सो शिष्य अगर तो [1]स्कंदक मुनिनी जेम क्षमाशील

१ वीसमा तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रतस्वामी पासे स्कंदक नामना राजपुत्रे दीक्षा लीधी अल्पकाळमां सतत शास्त्राध्ययनथी तेओ आगमज्ञ थया तेमने पांच सो शिष्योना आचार्य बनाववामां आव्या एकदा पोताना बनेवीने प्रतिबोधवा माटे कुमारकटनगरे जवानी गुरु समक्ष आज्ञा मागी गुरुए ज्ञान–

बरथी जोइ कह्यु के-त्यां जवाथी तमारा सवनो नाश थशे स्कदकमुनिए पुन प्रश्न कर्यो–"अम थशे के हानि ? गुरुए कह्यु के-तमारा सिवाय सवने लाभ थशे स्वशिष्योने लाभ जाणी तेओ विहार करी कुमारकटनगरे आव्या त्यांना राजा दडकनो प्रधान पालक पूर्वे ज्यारे स्कदक राजपुत्रनी राजधानामा गयेल त्यारे कुमारे तेने वादमां पराभव पमाड्यो हतो त्यारथी ते तेमना प्रत्ये रोषे भरायेलो हतो स्कदकने सपरिवार आवेला जाणी वेरनो बदलो लेवानो तेणे मनसूबो कर्यो जे उद्यानमा ते उतरवाना हता ते उद्यानमां पोताना गुप्त माणसोद्वारा रात्रिमां ने रात्रिमां ज शस्त्रा भूमिमां दटाव्या बीजे दिवसे राजवीने उलटु समजाव्यु के-हे राजन् ! आ साधुओ नथी पण ते साधुओना छुपा लेबाशनी नीचे महासुभटो छे तेओ प्रसग जोई तमारु राज्य ग्रहण करवा इच्छे छे जो ते हकीकतनी खात्री करवी होय तो तेओ ज्यां उतर्या छे त्यां तपास करावो आपने सतावेला शस्त्रो मळी आवशे राजाए ते प्रमाणे तपास करावी अने साधुओनु आ कारस्थान छे एम समजी प्रधानने उचित शिक्षा करवानो हुकम आप्यो पालकने जोईतु हतु ते मळी गयु तेणे तरत ज घाणी मगावीने साधुओने तेमा पीली नाखवाना आदेश आप्यो खधक मुनिने आ समय गुरुना वचनो याद आव्या खधक मुनिए पालकने कह्यु के-सौथी प्रथम मने पीला नाख केथी मारे मारा शिष्योनु दु ख जोवु न पडे प्रधानने तो तेमने ज विशेष कष्ट आपवु हतु एटले शिष्योने एक पछी एक तेमनी नजर समक्ष पीलवा माड्या दरेक शिष्यो अजब क्षमा धारण करी राजदुष्टमने मा आपता रह्या ४९९ तो पीलाई गया, छेल्ला एक बाळसाधु बाकी रह्या त्यारे खधकमुनिए पुन विज्ञप्ति करी के–आ बाळसाधु पहेलां मने पीला नाख, तेमनु दु ख मारी नजरे नहीं जोवाय प्रधाने आवा मजीवी मांगणी पण नामजुर करता खधकमुनिनो अत्यारे सुधी शात रहेलो क्रोध ऊछळी आव्यो तेणे त्या ने त्यां ज नियाणु कर्यु प्रधाने बाळसाधुने अने छेवटे खंधकमुनिने पीली नाख्या नियाण ना प्रभावे खधकमुनि अग्निकुमार निकायमा देव थया पूर्वभवना द्वेषथी तेमणे ते समस्त नगरी बाळी दीधी आजे ते दडकारण्यना नामे ओळखाय छे जीवनना प्रातभागे खधकमुनिना राष शात न रही शक्यो, परन्तु तेमना ५०० शिष्योए तो अजब शांति अने क्षमा धारण करी स्वहित साध्यु

२ श्रावस्ती नगरीना कनककेतु राजाना तेओ पुत्र हता वैराग्यभीना बनी तेओए सयम स्वीकार्यु दीक्षा स्वीकार्या बाद स्कधक राजकुमारे पृथ्वी–पर्यटन शरु कर्यु विहार करतां करता तेओ पोताना बहेन–बनेवीना राजनगर नजीक आवी पहोंच्या राजा–राणी आ समये राजमहेलनी अगासीमां बेसी वार्ता–विनोद करी रह्या हता अचानक राणीनी नजर पोताना भाई ऊपर पडी साधुवेषमा रहेला पोताना बाळाने राजा ओळखी शक्यो नहीं भाई प्रत्येना वात्सल्यथी राणीना नेत्रमाथी आसुना बे–चार बिन्दु सरकी पड्या राजाए ते जोतां ज तेना मनमा शकाए स्थान लीधु राजाए वातनो खुलासो कर्या सिवाय ज मानसिक निर्णय करी लीधो के–साधुना वेषमा आवेल आ नवीन आगतुक राणीनो पूर्वना प्रेमी हशे सर्व वेर करता प्रेमनु वेर विशेष कातील होय छे आवेशमां ने आवेशमां तत्काळ त्यांथी ऊभा थई राजाए चाडालने बोलाव्या अने स्कदक मुनिनी जीवता ज चामडी उतारी लेवानो आदेश आप्यो चांडालो मुनिराज पासे गया अने राजानो आदेश समजाव्यो क्षमाशील मुनिराज आ हकीकत सांभळीने लशमात्र खचकाट सिवाय बोल्या–"तमे तमारु कार्य खुशीथी बजावो कहो हु केवी रीते

होय, [3]धन्नाअणगारनी माफक इन्द्रियने जीतनार होय, ज्ञातासूत्रमा वर्णवेल कूर्मना दृष्टांतनी माफक इन्द्रियने गोपववावाळा होय, [4]जंबूस्वामी अगर तो वज्रस्वामी (जुओ आ ज ग्रंथनु पृ ९६)नी माफक निर्लोभी होय, तेमज [5]गजसुकुमाल अथवा

ऊभो रहु तो तमने ओछी महेनत थाय ' चांडालो तो मुनिनी अमृत झरती वाणी अने क्षमाशीलता जाइ आश्चर्यमां गरकाव थइ गया तेमना शब्दो पण स्थमाइ गया होय तेम जडवत स्थिर थइ गया परन्तु राजानो हुकम अलघनीय हतो तेमणे पोतानु काय पूर्ण कर्यु मुनिराजने वेदनानी सीमा नहोती परन्तु पूर्वकर्मनु प्राबल्य विचारी तेओए समभावपूर्वक सर्व वेदना सही लीधी शुभ ध्यानारूढ थता तेमने केवळज्ञान थयु अने तेमनो आत्मा शाश्वतस्थानमा चाल्यो गयो राणी आ सर्व घटनाथी बीनवाकेफ हती परन्तु ज्यारे एक समळीए आ प्रकरण परनो पडदो ऊचक्यो त्यारे राजा तेमज राणी उभयना पश्चात्तापनो पार न रह्यो वात एम बनी के–चांडालो पोतानु कार्य करीने चाल्या गया बाद एक समळीए लोहीथी भींजायेला ओघाने मांसना लोचो समजी पोतानी चांचमां पकड्यो, परन्तु वजन विशेष होवाथी ते लांबा समय पकडी शकी नहीं अने बराबर राजमहेलनी अगाशी नजीक आवतां ज ते तेनी चांचमांथी सरकीने ते अगाशीमा पड्यो राणी आ दृश्य जोतां ज व्याकुल बनी गइ नगरमा बीजा कोई मुनिराज आव्या ज नहोता पोताना भाईनो ज आ ओघो छे एम निर्णय करी, आ अधम कार्य करनारने शिक्षा करवा माटे तेणे राजवी पासे फरियाद करी राजा आ सर्व घटना सांभळतां ज शोकना सागरमा डूबी गयो राणी आगळ पोतानो बचाव चाले तेम न हतो तेणे पोतानु सर्व कृत्य तेने कही सभळाव्यु बनेने अतिशय खेद थयो पण हवे तो नदीनु पूर वही गया पछी बंध बांधवा जेवु निरर्थक हतु स्कंधक मुनिए अजब क्षमा धारण करी पोतानु स्वहित साध्यु

३ काकंदी नगरीना तेओ रहीश हता धन्यश्रेष्ठी तेमनु नाम भगवान महावीर पासे तेमणे चारित्र लीधा बाद उग्र तपश्चर्या शरू करी कठोर तपश्चर्याने कारणे तेमनु शरीर कृश बनी गयु एकदा भगवंत महावीरने श्रेणिक राजाए प्रश्न कर्यो के–हे भगवंत ! आपना आटला विशाळ साधुसमूहमा सौथी श्रेष्ठ कोण छे ? भगवंत धन्ना अणगारनु नाम सूचव्यु श्रेणिक तेमने वदन करवा गया अने जोयु तो मात्र हाडकानु हाडपिंजर होय तेवो तेमनो देह हतो, छतां अजब उत्साह अने श्रद्धाथी तेओ पोतानी इन्द्रियोनु दमन करी रह्या हता आ धन्ना काकंदी कहेवाय छे, जेनी परमात्माए पोते स्वमुखे प्रशंसा करी हती शालिभद्रना बनेवी धन्यकुमार अन्य जाणवा

४ चरमकेवळी जंबूस्वामीनु वृत्तांत तो प्रसिद्ध ज छे एटले तेमना विशेष वर्णननी जरूर नथी नवाणु क्रोड सोनैयाना दायजा साथ पत्नीओ आववा छतां ते सघना प्रत्ये निःस्पृहभाव दर्शावी, स्त्रीओने समजावी तेमणे गणधर श्रीसुधर्मास्वामी पासे प्रव्रज्या अंगीकार करी हती श्रीवज्रस्वामीनु वृत्तांत आ ज ग्रंथमा पृष्ठ ९६ पर आलेखेल छे श्रेष्ठीए एक क्रोड सुवर्ण अने पोतानी कन्या आपवानी इच्छा दर्शाववा छतां धर्मसाहेलीमा रक्त बनेला श्रीवज्रस्वामीए तेनो अनादर कर्यो, ते ज तेमनी निर्लोभताना पुरावो छे

५ गजसुकुमाल राजवी कृष्णना लघु बंधु हता सोमिल विप्रनी कन्या साथे तेमनु सगपण कर्यु हतु. एवामां भगवान श्रीअरिष्टनेमिनी देशना सांभळी गजसुकुमालने वैराग्य उद्भव्यो

करावे त्यारे मिथ्या दुष्कृत देवो अने मनमा 'मने धिक्कार हो!' एम चित
वबु ८ तथाकार-गुरुमहाराज जे कहे तने 'तहत्ति' कही स्वीकारवु ९ अभ्यु
त्थान-गुरुमहाराज आवे त्यारे ऊभा थइने आदर आपवो, तेमज बहुमान करवु
तेमज ग्लानादिक साधुनी वैयावच्च करवी, तने आहार-पाणी लावी आपवा १०
उपसंपत्-पोताना आचार्य पासेथी बीजा आचार्य अगर तो उपाध्याय पासे रहेवु
होय तो कहे-'हु आटला समय पर्यंत आपनी पासे रहीश' श्री उत्तराध्ययनसूत्रमा
ऊपर प्रमाणे दश प्रकारनी सामाचारी जणावी छे परन्तु पंचवस्तुक तथा प्रव
चनसारोद्धार प्रमुख ग्रंथोमा बीजी रीते पण दर्शावी छे ते आ प्रमाणे—

"पडिलेहणा १ पमज्जण २-भिक्खि ३ इरिया ४ लोय ५ भुंजणा ६ चेव।
पत्तगधुवण ७ वियारा ८, थंडिल ९ आवस्सयाइया १० ॥१॥" १ पडिलेहणा
विधिपूर्वक उपधिनी पडिलेहणा करवी पडिलेहणा संबंधी विशेष वर्णन करता
जणाव छे के-प्रात:कालमा तेमज चोथा प्रहरमा इरियावहो कहीने मुहपत्ति
पडिलेहवी पछी काया पडिलेहवी बाद रजोहरण तथा गुरुना उपकरण पडिलेहवा
बाद ग्लानसाधु तथा नवीन लघुशिष्यना उपकरण, पोताना वस्त्रो, उत्तरपट्टो,
संथारो, पछी गुरुना संथारा-एम अनुक्रमे पडिलेहवा आ संबंधमा चार प्रकार कहे
छे-(१) ऊर्ध्व-उत्कट आसने बेसी, नीचला छेडा पर्यंत वस्त्र ऊचा करीने पडिलेहवु
पण वस्त्रने भूमि पर स्पर्श करवा देवु नहीं (२) स्थिर-वस्त्रना त्रण भाग करीने स्थिर
दृष्टिथी जोवु (३) त्वरित-वस्त्रने एक बाजु तपासी बीजी बाजु तपासता उतावळ
न करवी, कम के तेम करवाथी वायुकायनी जयणा न सचवाय (४) स्पर्श-वस्त्रने
सर्व बाजु स्पर्श करीने बराबर एक ध्यानथी तपासवु आ प्रमाणे सारी रीते
वस्त्र न तपासे तो कीडा, कुंथुआ प्रमुख त्रसजीवनो नाश थाय आ
जीवजंतु मालूम पडे तो विधिपूर्वक पूजी तेने एकांत स्थानमा मूके. आ
पछी पप्फोडा करवा तमा नीचेना चार दोषोनो त्याग करवो (१) अणच्चाविअ-
वस्त्रने चाळवु नहीं तेमज शरीरने हलाववु नहीं (२) अवलिअ-वस्त्रने वाळवु
नहीं. (३) अननुबंधि-निरंतर एक बाजु ज जोवु नहीं (४) मोसलि-तिर्च्छो अगर
तो ऊभो संघट्टो करवा नहीं बाद छ पुरिमा करे-बने बाजु त्रण त्रण वार
जुवे बाद नव पप्फोडा करे ते त्रण त्रणने आंतरे हाथ ऊपर झटका आपे-
आ प्रमाणे हस्तनु प्रमार्जन करवाथी जीवना रक्षा थाय आ संबंधमा छ दोष
जणावे छे-(१) आरभट-ऊपर कहेल विधि करता विपरीत करे अथवा पप्फोडा
दिक आघा-पाछा करे, एटले के पहेला आघा पडिलेहे, पच्छे बीजु पडि
लेहे अने पाछु अन्य काय करे (२) संमर्दना-पडिलेहण करेल वस्त्र अणपडि
लेहेला वस्त्र साथे मूके तनी ऊपर बेसे अने मर्दन करे (३) अस्थान-
स्थापना-पडिलेहेल उपधि गुरुना अवग्रहमा मूके (४) प्रस्फोटना-धूळ विगेरेथी
मिश्रित वस्त्रने झाटके (५) विक्षिप्त-पडिलेहीने ज्या त्या नाखी मूके (६)वेदिका

दोष-तेना पांच भेद छे, ते आ प्रमाणे-(१) ऊर्ध्ववेदिका-ढींचण ऊपर हाथ राखी पडिलेहे, (२) अधोवेदिका-ढींचण नीचे हाथ राखी पडिलेहे (३) पश्चवेदिका-पग हाथ ढींचणनी मध्यमां अने पग बहार राखी पडिलेहे (४) दुहउ(उभउ)वेदिका-बन्ने ढींचण वच्चे हाथ राखी पडिलेहे (५) अताइया (अतर्वेदिका)-बन्ने ढींचणने मध्यमां राखीने पडिलेहे पडिलेहण संबंधी बीजा पण दोष दर्शावता कहे छे के-(१) प्रशिथिल-पडिलेहण वस्त्र किनारथी ग्रहण न करे, (२) प्रलंब-पछवाडेथी ग्रहण करे (३) लोला-भूमिए अडाडे, भूमि पर मूके अगर तो हस्त ऊपर मूके, (४) एगा मोसा खेंचवा-मूका थामां, सामान्य वस्त्रने चोंटवामां बन्ने आंगळीथी पकडवाने बदले एक आंगळीथी पकडे, (५) अनेकधुणा-पप्फोडा करता वस्त्र धुणावे, घणा वस्त्रने धुणावे अगर तो एक ज वखते घणा वस्त्राने धुणाय (६) प्रमाणाप्रमाण-पप्फोडा करवा [illegible] करे के-में एक वार कया के बे वार-आ प्रमाणेना प्रमादथी शंका [illegible] अने गणत्री करे आ बधा प्रकारना दोष रहित पडिलेहण करे तो ज ते [illegible]-वतो थाय नियुक्तिकार कहे छे के-१ अन्यून, २ अनतिरिक्त अने ३ [illegible]-पेय-आ त्रिपदीना आठ भागा थाय छे, ते पैकी प्रथम भागो शुद्ध अने [illegible] बीजा अशुद्ध जाणवा तेनी स्थापना नीचे प्रमाणे छे

स्थापना

—	—	—
।	—	—
—	।	—
।	।	—
—	—	।
।	—	।
—	।	।
।	।	।

— आवी लीटी शुद्ध अने । आवी लीटी अशुद्ध [illegible]-जवी पडिलेहण क्यारे करवी ते संबंधी [illegible] [illegible] मतो छे एक कहे छे-प्रतिक्रमण करीने बीजा [illegible] थाय त्यारे, बीजा कहे-प्रकाश थाय त्यारे, चोथा [illegible] [illegible] रवा देखाय त्यारे आ मतोमां वृद्धसंप्रदाय [illegible] [illegible]-श्रय देखाय, हस्तनी रेखा देखाय विगेरे [illegible] [illegible] रवी आवश्यक कर्या पछी जे थाया [illegible] [illegible] [illegible]

पडिलेहणनो समय आवे तेवी रीते आवश्यक करवा [illegible] [illegible] पडिलेहवी अने ते पडिलेहण पूर्ण करे त्यारे सूर्योदय [illegible] [illegible] प्रमाणे समजवी-१ मुहपत्ति, २ आघो ३-४ बने निशीथिया ५ [illegible] ६ संथारियुं, ७ उत्तरपट्टो, ८-१० त्रण कपडा [illegible] [illegible] [illegible] जणाय छे आ समय करता वहेली-मोडी प्रतिलेखना करे [illegible] [illegible] लागे पुन्यविषयक पण न करवा, तेनो क्रम नीचे [illegible] १ प्रथम [illegible] उपकरण पडिलेहे, २ तपस्वीना, ३ ग्लान साधुना ४ [illegible] [illegible] आ पडिलेहण-सामाचारीमां विराधना करे तो [illegible] [illegible] [illegible] थईयाय माटे प्रथम पडिलेहण-सामाचारी [illegible] २ [illegible] पडिलेहण करीने प्रभात वसति पूजवी अने [illegible] [illegible] [illegible]

न करवी पछी काजो बराबर तपासवो जो आ प्रमाणे प्रमार्जना न करे तो लोकमा निंदा थाय, जीवघात थाय, धूळना वृद्धि थवाथी कपडा मेला थाय अने प्रक्षालननो आरंभ वधे वि० आत्मविराधना थाय ३ भिक्षा-विधिपूर्वक पात्रा पडिलेहीने गोचरी अर्थे जाय आ विधि पंचवस्तुक ग्रंथमा आपी छे पछी ते स्थळेथी जाणी लेवी ४ इर्यापथिकी-सूत्रना उच्चारपूर्वक कायोत्सर्ग करे आ संबंधी पण विशेष विधि पंचवस्तुक ग्रंथमां जणावल छे ५ आलोचन-गोचरी लाव्या बाद 'अमुक अमुक स्थळेथी आ भिक्षा मळी छे' ते प्रमाणे गुरुमहाराजने जणाववु ६ भोजन-आ विषय तो प्रसिद्ध ज छे ७ पात्रकधावन-पात्र विगेरे साफ करवा ८ विचार-स्थंडिल विधिपूर्वक जाय ९. स्थंडिल-स्थंडिल जवा माटे जीवरहित तेमज ज्यां बीजानु अनागमन संभवे तेवी भूमि पसंद करवी १० आवश्यक-प्रतिक्रमण विगेरे आवश्यक अवश्य करवो आवश्यक संबंधी सविस्तर वर्णन पंचवस्तुक ग्रंथना बीजा द्वारमा जणावल छे आवश्यक एटले अवश्य करवा योग्य कार्य, अथवा आत्माने गुणथी वासित करे आवश्यक संबंधी श्रीअनुयोगद्वार सूत्रमा स्वरूप वर्णव्यु छे, ते आ प्रमाणे-१ नाम आवश्यक, २ स्थापना आवश्यक, ३ द्रव्य आवश्यक अने ४ भाव आवश्यक "१ नाम आवश्यक-कोई पण जीव अथवा अजीवनु, घणा जीवोनु अथवा अजीवोनु, आवश्यक एवु नाम २ स्थापना आवश्यकना दश भेदो छे (१) काष्ठ(लाकडा)ने कोरीने साधु प्रमुखनु स्वरूप दर्शाय, २ चित्रकर्म-साधु प्रमुखनु चित्र आलेखे, (३) पोतकर्म-वस्त्रना टुकडा प्रमुख वाळीने ढींगली प्रमुखना आकार दर्शाय, (४) लेपकर्म लेप करीने मूर्ति विगेरेनो आकार दर्शाय, (५) ग्रंथिम-चतुराईथी गंथीने आकार दर्शाव दोरानो तथा वे पुष्पनी ज माळा (६) वेष्टिम-पुष्प वींटीने अगर तो एक बे या त्रण वस्त्रो वींटाळ ने कोई स्वरूप दर्शाव (७) पूरिम-भरतचक्रवर्ती विगेरेनी भरावेली पीतळनी मूर्ति विगेरेनी स्थापना (८) संघातिम-घणा वस्त्रना टुकडा एकठा करीने बनावायेल कंचुक(चोळी)नी जेम, (९) अक्ष चंदनकनु अक्ष एवु नाम स्थापवुं अने (१०) वराटक-कोडियानी स्थापना आ प्रमाणे बीजा स्थापना आवश्यकना दश प्रकार दर्शावेल छे मता-तरे दंतकर्म विगेरे स्थापना पण जणावेल छे आ काष्ठकर्म विगेरे भेदोनी सन्मुख स्थापना स्थापीने जे क्रिया करे ते प्रथमा स्थापना बे प्रकारनी समजवी १ सद्भावस्थापना अने २ असद्भावस्थापना, ते आ प्रमाणे समजवु-काष्ठ प्रमुखमा साधुना आबेहुब-साक्षात् आकार कोतरे ते सद्भावस्थापना कहेवाय अने अक्षमा साधुना अवयवोनो आकार नथी तथी ते असद्भावनास्थापना कहेवाय हव प्रतिप्रश्न पूछे छे के-नामआवश्यक अने स्थापनाआवश्यकमा विशेष तफावत शो छे ? तेनो उत्तर ए छे के नाम तो यावत्कथिक एटले सर्वकाळ रहेनार छे अने स्थापना तो अल्प समयनी पण होय अने सर्व काळनी पण होय दाखला तरीके-शाश्वती प्रतिमा यावत्कथिक कहेवाय, अने चैत्यमां

रहेली जिनप्रतिमानो तो काळांतरे विलय थइ जाय बीजु दृष्टांत-श्रावकादिक स्थापना स्थापे ते इत्वरिक (अल्प काळनी) अने साधु पोताना गुरुनी स्थापना स्थापे ते यावत्कथिक कहेवाय हवे त्रीजु द्रव्यआवश्यक जणावे छे-द्रव्यआवश्यक बे प्रकारनु छे-(१) आगम अने (२) नोआगम आगमद्रव्यावश्यक-आवश्यक सूत्रथी प्रारंभीने क्रिया सुधी सर्व शीख्या होय, तेने भूले नहीं, हृदयमां स्थिर थइ गयेल होय, अन्य कोइ पूछे तो तरत कही दे, श्लोक, पद तथा अक्षरनी संख्या पण जाणे आदिथी अंत पर्यंत अने अंतथी आदि पर्यंत पाठ करी शके एटले क्रमोत्क्रम भणी शके, पोताना नामथी कोइ बोलावे तो ऊंघमां पण जाणे के मारु नाम कोइए लीधु तेम शास्त्र-पाठ तेना हृदयमां जामी गयो होय ज्यारे पूछे त्यारे जवाब मळे जेवी रीते गुरु शीखवे तेवी रीते ज बराबर ग्रहण करी ले, एक पण अक्षर रही न जाय तेमज अधिक पण न बोले, एकबीजामां एकबीजा अक्षर मळी जाय तेम न बोले, अस्खलित-धारावद्ध रीते बोले, सूत्र बोलता पद भिन्न भिन्न बोले तेमज स्थान अने विरामनो बराबर ख्याल राखीने बोले, बिंदु के मात्रा पण न्यून न थाय तेमज अर्थ अध्याहार न रहे, घोषपूर्वक पूर्ण बोले, स्पष्ट रीते बोले अर्थात् मुंगो के बाळक बोले तेम न बोले, गुरु पासे वाचना लइने भणेल होय एटले के कोइनु सांभळीने अगर तो पोतानी मेळे भणेल न होय, अर्थात् वाचना, पृच्छना, प्रतिपृच्छना, धर्मकथा अने अनुप्रेक्षा-ए पांच प्रकारद्वारा शास्त्राध्ययन कर्यु होय अहीं अनुप्रेक्षानो अर्थ उपयोगपूर्वक भणवु ते थाय छे अने उपयोगपूर्वक पठन करवु ते द्रव्यआवश्यक तथा भावआवश्यक छे तो विरोध नहीं आवे ? आ शंकानो उत्तर आपता जणावे छे के-उपयोग विना पूर्वे वर्णव्या ते बधा गुणयुक्त बोले छे पण उपयोग नथी माटे तेने द्रव्यआवश्यक जाणवु आ संबंधमां सात नयनो प्रसंग घटावी ते कथननी पुष्टि पण करे छे १ नैगमनयना मते तो एक अनुपयोगी ते एक आगमद्रव्यावश्यक, तेवी रीते बे, त्रण अनुपयोगी ते बे त्रण आगमद्रव्यावश्यक एवी ज रीते जेटला अनुपयोगी तेटला आगमद्रव्यावश्यक जाणवा २ एवी ज रीते व्यवहारनयनो पण मत जाणवो ३ संग्रहनयनो मत एवो छे के-एक होय अथवा घणा अनुपयोगी होय तो पण एक ज द्रव्यावश्यक माने ४ ऋजुसूत्र पण एक ज कहे, तेथी विशेष न माने ५-७ शब्द, समभिरूढ अने एवंभूत ए त्रण नयो तो आगमद्रव्यावश्यक मानता ज नथी, कारण के तेनु कथन एवु छे के-जे जाणे छे ते अनुपयोगी होय ज नहीं आ प्रमाणे आगमद्रव्यआवश्यकनु स्वरूप संक्षिप्तमां जाणवु हवे नोआगम-द्रव्यावश्यकनु स्वरूप दर्शावे छे तेना त्रण भेद छे-(१) ज्ञाणगशरीरद्रव्यावश्यक, (२) भव्यशरीरद्रव्यावश्यक अने (३) ज्ञाणगशरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्त (भिन्न) १ ज्ञाणगशरीरद्रव्यावश्यक-आवश्यक सूत्रनु सुन्दर अध्ययन कर्यु

होय तेवु शरीर, आ शरीर केवु छे ? अचेतन-जीव विनानु, श्वासोच्छ्वास रहित, अहो हाथनी शय्या प्रमाणवाळु अणशण स्वीकारीने मोक्षे पहोंचल-आवा शरीरने जोइने कोइ विचारे के-पौद्गलिक देहद्वारा आत्महित साधी, कर्मनिर्जरा करी भूतकाळमा आ शरीरमां रहेला जीवे आवश्यकसूत्रनु अध्ययन कर्युं, शिष्यने ते सूत्रो शीखवाडया पडिलेहणादिक क्रिया करी स्व शिष्योने दर्शाव्यु शिष्य कोई अर्थ न समजी शक ता तेना प्रत्ये अनुकंपा लावी वारंवार तेने समजाव्यु-आवा प्रकारनो गुणी आ शरीरना स्वामी आवश्यकनो ज्ञाण हतो तेम कथन करवु त आगमशरीरद्रव्यावश्यक जाणवु आ मधघनो दृष्टान्त आपे छे के-मध के घी भरीने लावेला घडामाथी मध के घी खाली कर्या पछी पण जेम ते मधनो के घीनो घडो कहेवाय छे तेम जीव रहित शरीर होवा छता आवश्यकना ज्ञाता आ देहमा हतो तेम निरूपो शकाय छ २ भव्यशरीरद्रव्यावश्यक- आ घीनो अने आ मधना घडो थशे ' एम घडाने जोइने भविष्यकाळनी कल्पना करवामा आवे छ तेम आ शरीर पण आवश्यक जाणनार थशे तेथी उपचार करवो ३ आगमशरीरभव्य शरीरव्यतिरिक्तना त्रण प्रकार दर्शाव्या छे (१) लौकिक-राजा, कोटवाळ, मांडलिक राजा, नगरशेठ, सेनापति, सार्थवाहक विगेरे सुंदर अने रम्य प्रभातकाळ थये छते मुखप्रक्षालन करे, दतधावन करे, केश समारे, धूप करे, पुष्पमाळ पहेरे, सुन्दर वस्त्रो धारण करे, विगेर क्रियाओ करी राजसभामा, देवभुवनमा अगर तो उपवनमा जाय-आ लौकिक (२) कुप्रावचनिक-१ भ्रमता भ्रमता चाले ते चरक, २ मार्गमा पडेला वस्त्रना कटकाओनी कथा पहेरीने चाले त चारिका, ३ चामडाना वस्त्र राखे त चमखंडिका, ४ भिक्षा मळे त खाय तेमज गाय प्रमुखनु दूध ग्रहण करे ते भिक्षोंडा, ५ शरीरे भस्म चोळे ते पाण्डुरागा ६ नानकडा बळदने पगे लगाडवु विगेरे कळा शीखवीने लोकोना चित्त वश करी भिक्षा मागे ते गौतमा, ७ गाय चाले तम चाले, तेने अनुसरे, गाय ऊभी रहे तो ऊभा रहे, बेसे तो बेसी जाय गाय तृण, पत्र-पत्रादिक खाय तो त पण तृणादिक खाय ते गात्रतिका, ८ 'गृहस्थ धर्म ज सारो छे' एम कहीने तेनी प्ररूपणा करे त गृहस्थधर्मी ९ याज्ञवल्क्यादिक ऋषिओए बना वेल धर्मसंहिता प्रमाण व्यवहार चलावे त धर्मचिंतका, १० देव, राजा, माता, पिता विगेरेनो विनय साचवे, ते वैनयिका, ११ पुण्य पाप परलोकादिक नहीं माननारा नास्तिक १२ तापस इत्यादिक बीजा पण पाखंडीओ पूर्वे कह्या तथो सुंदर अने रम्य प्रभातकाळ थये छते इन्द्र, रुद्र, शंकर, वैश्रमण नाग, व्यन्तर, विष्णु विगरे देवो तमज दुर्गा विगरे देवीओनो मूर्ति समीपे जईने गंधोदक छांट, धूप करे, पुष्पमाळा चढावे विगेरे क्रिया करे ते कुप्रावचनिक (३) लोकोत्तर-प्रव्रज्या अंगीकार कर्या छता साधुना गुण रहित (पासत्था) छकाय

नी अनुकंपा रहित, लगाम विनाना अश्वनी माफक उन्मार्गगामी, निरंकुश हस्ती नी माफक स्वच्छंदाचारी, पगने तेल तथा पाणीथी मिश्रित करनारा, शीतकाळमा फाटी गयेल ओष्ठप्रमुखने माखण लगावनारा-आवा साधुओ लोकोने देखाडवा माट ज उभय टंक आवश्यक क्रिया करे परंतु तेमने खरेखरी रीते तो आलोचनानु ज्ञान नथी केम के जिनाज्ञाने माननारने आलोचना करवानी होय परंतु आ पट भराओने तो लोकोने देखाडवा पूरतो ज क्रिया करवी छे-आवी क्रिया ते लोकोत्तरद्रव्यावश्यक कहेवाथी भावावश्यक जणावे छ, तेना पण बे प्रकार छे-(१) आगम अने २ नोआगम प्रथम आगमभावावश्यक आगम द्रव्यावश्यकनी जेम जाणी लेवा पहेले आवश्यक सूत्रार्थने जाणवाथी वैराग्य, संवेग, विशुद्ध परिणामवाळो बने छे अने २ नोआगमभावावश्यकना पण द्रव्यआवश्यकनी माफक ज त्रण भेद छे (१) लौकिक-मध्याह्न पहेला महाभारत वाचे अने मध्याह्न पछी रामायण कहे, (२) कुप्रावचनिक-पूर्व कह्या ते चरकादिक पाखंडियो पूजा करे, होम करे, जाप करे, गायत्रीना पाठ करे, वरुद जेम गाजे, तेम महादेवनी मूर्ति समक्ष गान-तान इत्यादिक क्रिया करे (३) लोकोत्तर चारित्रपात्र, तपस्या करनार साधु तथा साध्वी, अने श्रीजिनराजे प्ररुपल पचांगो मा कहेल शुद्ध सामाचारी साधु पास सांभळे ते श्रावक अने श्राविका आ प्रमाणे चतुर्विध संघ आवश्यक क्रियामा एकचित्त बन, शुभ लेश्या-परिणाम वाळो बने, क्रिया करता वखते क्षणे क्षण आनंदित थाय शरीरना जिनमुद्रा विगेरे साचवे, रजोहरण(ओघव चरपला)थी प्रमार्जना करे, मुहपत्ति मोढे राखीने बोले विगेरे उभय टंक आवश्यक कर आ सत्रथमा प्रतिवादी शंका करता कहे छे के-आवी हकीकत तो आगमद्रव्यावश्यकमा जणावी छ तो आ नोआगमना प्रकारमा पुन केम जणावी छो? तेनो जवाब ए छे के-मुखवस्त्रिका पडिलेहवी, रजोहरणथी सहासो करवा इत्यादिक क्रिया करवानो जे देश छ ते नोआगमपणु छे तेथी नोआगमभावश्यकमा आ हकीकतनो समावेश थाय छे आने लगती विशेष हकीकत आवश्यकचूर्णी तथा तेनी टीकामा विस्तार थी जणावी छे, पण ग्रंथविस्तारना भयथी अहीं जता करी छ

आ प्रमाणे सामाचारीनु स्वरूप दर्शावी संयमनु वर्णन करता जणावे छ-पंचासववेरमण, पंचिदियनिग्गहो कसायजओ। तिण्दडविरमणाओ, सत्तरसहा संजमो होइ ॥१॥"सत्तर प्रकारना संयम छ-पांच आस्रवना त्याग करे, पांच इन्द्रियोनो निग्रह करे-तेम चार कषायोने जीते अने त्रण दंड (मनदंड, वचन दंड अने कायदंड)थी विरम आवा प्रकारना गच्छमा रहेल साधु निर्जरा करे

वळी गुरुमहाराज (१) साथ लागी जता जेवी वेदना थाय तेवी वेदना उपजावनारी खर वाणी कहे (२) वाण लागवा जेवी चपळ वाणी (३) भालाना प्रहार जेवी कर्कश वाणी (४) कागडानो शब्द न गमे तेवी रीते जे वाणी

सांभळवी न गमे तेवी अनिष्ट वाणी (५) व्याधित थयेल वाघ जेवो भयंकर शब्द करे तेवी भय उपजावनारी दुष्ट वाणी (६) पत्थर लाग्या जेवी निष्ठुर वाणी- आवा प्रकारनी वाणीवडे निर्भत्सना करे, तिरस्कार करे अगर तो गच्छमांथी बहार काढी मूके तो पण नाराज थाय नहीं अने मनमां विचारे के-'मारा आत्महित खातर ज गुरु शिक्षावचन कहे छे' परंतु एम विपरीत न विचारे के-'आ गच्छ ऊपर दया देतुं कर्युं छे, मने पण बीजे स्थाने रोटला मळी रहेशे' एम मनमां न लावे वळी अवर्णवाद न बोले, मरणांत कष्ट आवे तो पण शासनद्रोहना कार्य तेवुं कार्य न करे ते ज सुशिष्य कर्मनी निर्जरा करी शके छे आ प्रमाणे सुशिष्यनुं स्वरूप दर्शावी हवे गच्छनुं स्वरूप दर्शावे छे—

गुरुणा कज्जमकज्जे, खरकक्कसदुट्ठनिट्ठुरगिराए।
भणिए तहत्ति सीसा, भणंति तं गोयमा गच्छम् ॥५६॥
[गुरुणा कार्याकार्ये, खरकर्कशदुष्टनिष्ठुरगिरा ।
भणिते तथेति शिष्याः, भणन्ति स गौतम ! गच्छः ॥५६॥]

गाथार्थ-करवा लायक अगर न करवा लायक कार्यमां कठोर, कर्कश, दुष्ट अने निष्ठुर भाषाद्वारा गुरुमहाराज जो कंई पण कहे तो "हे प्रभो ! आप कहो छो ते वास्तविक ज छे" ए प्रमाणे ज्यां शिष्यो विनयपूर्वक वर्ते छे ते गच्छ ज हे गौतम ! खरेखर गच्छ छे.

विवेचन-आ गाथा स्पष्टार्थवाळी होवाथी तेना विवेचननी विशेष जरूर नथी छतां, करुश विगेरे वाणीना प्रकारनो अर्थ उपर्युक्त गाथामां आवी गया छे आचार्यना आदेश सामे क्रोधायमान न थाय, रोष न लावे अने सिद्ध सूरिना शिष्योनी माफक गुरुवचन 'तहत्ति' कहीने अंगीकार करे-एवा शिष्यो जे गच्छमां होय ते गच्छने तीर्थंकर भगवंतो तथा गणधरादिको सुगच्छ कहे छे गच्छनुं विशेष स्वरूप दर्शावता कहे छे के—

दूरुज्झियपत्ताइसु ममत्तए निप्पिहे सरीरे वि ।
जायमजायाहारे बायालीसेसणाकुसले ॥ ५७ ॥
[दूरोज्झितपात्रादिममत्वो निःस्पृहः शरीरेऽपि ।
जाताजाताहारः द्विचत्वारिंशदेषणाकुशलः ॥ ५७ ॥]

गाथार्थ-वस्त्र-पात्रादिकने विषे ममत्व रहित, शरीरने विषे पण स्पृहा विनाना, एषणाना बेंतालीस दोष रहित शुद्ध आहार मळे तो ज ग्रहण करनारा अने तेना अभावमां तपस्या करनार होय ते ज कुशळ मुनि कहेवाय छे.

विवेचन–चारित्रपालन करवामा कुशळ मुनि तो शरीर प्रत्ये पण निर्मोही होय आहार तो फक्त 'धर्मायतन शरीरम्' ए वाक्य विचारीने तेना पालनार्थे ग्रहण करे अने ते पण शुद्ध मळे तो ज "अलब्धे तपसो वृद्धि–र्लब्धे देहस्य धारणे।" शुद्ध गोचरी न मळे तो विचारे के–आजे तपमा वृद्धि थई, अने मळे तो माने के देह टकशे तो संयम घणा काळ पर्यंत पाळी शकाशे, स्वाध्याय पण सुखे थई शकशे साधुपुरुषने ३२ कवल, साध्वीने २८ अने नपुंसक साधुने २४ कवलनो आहार होय आटलो आहार करवाथी ते भूख्या न रहे माटे अधिक आहार लेवानो निषेध छे हवे कवल कोने कहेवा? ते संबंधी कथन करता कहे छे के कुकडीना इंडा प्रमाणनो एक कवल कहेल छे कुक्कुटीना बे भेद छे—(१) द्रव्यकुक्कुटी अने (२) भावकुक्कुटी द्रव्यकुक्कुटीना पण बे भेद छे—(१) उदरकुक्कुटी अने (२) गलकुक्कुटी उदरकुक्कुटी एटले जे आहार करवाथी साधुनु उदर न न्यून रहे के न वृद्धि पामे अर्थात् साधुना स्वादरूपे [illegible] आहार होय गलकुक्कुटी एटले कवल लेता सरलताथी [illegible] करी जाय ते, अथवा बहु मुख फाडीने नहीं तेमज आंख, भृकुटी के मुखनी विकृति धारण न करे ते कवळने गलकुक्कुटी कहेवाय भावकुक्कुटी एटले के आहार करवाथी न भूख्यो रहे के न तो प्रमाद थवे परन्तु उदरने शांति थाय, देहमा निर्बलता न देखाय तेमज ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी आराधना उमंग रहे–तेटला प्रमाणवाळो जे आहार लेवाय तेने भावकुक्कुटी कहेवाय आ आहारनो बत्रीशमो भाग ते अंडक (कवल) कहेवाय श्रीपिंडनिर्युक्तिनी श्रीमलयगिरिजीकृत टीकामा तेमज श्रीभगवतीसूत्रना सातमा शतकना प्रथम उद्देशानी वृत्तिमा पण कह्यु छे के–"कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ताण" कुकडीना इंडाना प्रमाण जेटलो आहार ते कुक्कुडीअंडगप्रमाण कहेवाय एनो बीजो अर्थ करता ए पण सूचवे छे के–कुटी एटले नानी झूंपडी झूंपडा जेम रहेवाना कामना आवे छे तेम जीवने रहेवाने माटे आ शरीररूपी झूंपडी 'कु' शब्द कुत्सित अर्थ सूचवे छे के–आ देहरूपी झूंपडा मळ, मूत्र तथा अशुचिथी युक्त छे, आ शरीरने इंडाना प्रमाण जेटला आहारथी पोषवु ते कुक्कुटीअंडक कहेवाय छे

वळी एक अभिप्राय एवो पण छे के–जे पुरुषनो जेटलो आहार होय तेनो बत्रीशमो भाग अंडक कहेवाय कोई पुरुष विशेष आहार करता होय तो तेने तेटलो आहार विना तृप्ति न थाय परन्तु तेना आहारना बत्रीशमा भागने कवळ कहेवा वळी कोई पुरुष अल्प खाता होय, [illegible] होय अने मंद पाचनशक्तिथी अधिक भोजन लई शकता न होय तेने तेना आहारना प्रमाणमा बत्रीशमा भाग कवल समजवो अगाउ [illegible] गळामा सरल रीते उतरे तेने ज कवल कहेवा' ए कथन प्रसिद्ध समजवु

जायमजायाहारे(जातमजाताहार')आनु विशेष स्वरूप दर्शावता कहे छे के- साधु ज्ञातापारिष्ठापनिका अने अज्ञातापारिष्ठापनिकाना आण होय श्रीआवश्यक निर्युक्तिमा कह्यु छे के-"आहारम्मि उ जा सा, सा दुविहा होइ आणुपुव्वीए। जाया चेव सुविहिआ, नायव्वा तह अजाया य ॥ १ ॥" आहारने विषे पारिष्ठापनिका बे प्रकारनी छे (१) सदोष आहारने विधिपूर्वक परठववानी क्रिया ते ज्ञाता पारिष्ठापनिका अने (२) निरवद्य आहार परठववानी विधि ते अज्ञातापारिष्ठा पनिका ज्ञातापारिष्ठापनिकानी विधि जणावे छे के-" आहाकम्मे अ तहा, लोहविसे आभिओगिए गहिए। एएण होइ जाया, वोच्छं से विहीइ वोसिरण ॥२॥" आधाकर्मिक, लोभथी अधिक ग्रहण करेलो, विषमिश्रित, मक्षिकादि पडेल होय तेवा, कामणटूमणवाळो अथवा अन्य रीते दूषित आहार होय तो तेने परठव वानी विधि नीचे प्रमाणे करवी " एगंतमणावाए, अचित्ते थंडिले गुरुवइट्ठे। छारेण अक्कमित्ता, तिट्ठाण सावण कुज्जा ॥ ३ ॥ " ज्या स्त्री, पुरुषनु आगमन न होय तथा एकात स्थानमा गुरुमहाराजनी बतावेल अचित्त भूमिमा राखथी अशन मिश्रित करे अने पछी ' आहार अमुक दोषवाळो छे, माटे हु तेने वोसराबु छु ' आ प्रमाण त्रण वार उच्चार करे आ विधि खास करीने विषमिश्रित अने कामणटूमणवाळा आहार माटे कराय छे आधाकर्मादिक आहार माटेनु वर्णन ७८ मी गाथामा दर्शाव्यु आ प्रमाण ज्ञातापारिष्ठापनिका जाणवी हवे अज्ञातापारिष्ठापनिका जणावता कहे छे के-"आयरिए अ गिलाणे, पाहुणए दुल्लहे सहसलाभे। एसा उ खलु अज्जाया, वोच्छं से विहीइ वोसिरण॥ ४ ॥" आचार्यने अर्थे, ग्लान साधुने निमित्ते अथवा अतिथि साधुना निमित्ते विशेष आहार ग्रहण कर्या होय, दुर्लभ पदार्थ मळी जता वधारे लीधो होय, विशिष्ट द्रव्य विशेष लीधु होय तो ते अधिक आहार स्त्री-पुरुष रहित एकात स्थानमा त्रस-स्थावरादिक जीव रहित भूमि शोधी त्या शुद्ध आहार होय तो तेना त्रण पुंज करवा मूळगुणदूषित आधाकर्मादिक आहार होय तो एक पुंज करवो अने उत्तरगुणदूषित होय तो बे पुंज करवा पछी 'दोष रहित आहार अगर तो आधा कर्मादिक दोषवाळो आहार हु वोसरावु छु एम त्रण वार बोलवु हालमा तो भस्ममा मिश्रित करीने आहार परठववानी प्रणालिका प्रचलित छे आ ज प्रमाणे वस्त्र तथा पात्र परठववानी ज्ञाता-अज्ञातापारिष्ठापनिका जाणवी

एषणाना बेंतालीश तथा ग्रासैषणाना पाच-एम सुडतालीश प्रकारना दोष रहित आहार ग्रहण करवामा साधु चतुर होय एषणा चार प्रकारनी छे १ नामैषणा-स्त्री आदिक वस्तुनु नाम, २ ठवणैषणा-एषणानो आकार साधु प्रमुख

स्थापे के-' आ मपणा छे ' ते स्थापनैषणा, ३ द्रव्यैषणा-सचित्त, अचित्त अने मिश्र एम त्रण प्रकारे छे, ४ भावैषणा-गवेषणा, ग्रहण अने ग्रास-एम त्रण प्रकारनी छे गवेषणा एषणाना ३२ भेद छे-१६ दाताराना अने १६ लेनारना आ ३२ दोषानु वर्णन आ ज ग्रथमा अगाऊ पृष्ठ १३८ पर आवी गयु छे ग्रहणैषणाना शकित, म्रक्षित भेदो पण पूर्वे पृष्ठ १४१ पर वर्णव्या त्या छे ग्रासैषणाना सयोजनादि पाच दोषो छे

हवे प्रसगोपात्त देनार सबधी दोषोनु वर्णन करतां कहे छे के-बालादिक चालीश अगना हाथथी आहार लेवो कल्पे नहीं अपवादथी २८ ना हाथथी लेवा परन्तु पदरना हाथथी तो लेवो ज नहीं, अपवादथी पचीशना हाथथी लेवानु कहयु तेमा पण भजना जाणवी, ते भजना आ प्रमाणे-१ बालक पासेथी आहार न वहोरवा परन्तु बालक चतुर होय, तेनी माताजी गरहाजरी होय अथवा नजीकमा पाछळ बेठी होय अने पोते मुनिने वहोराववो होय, वळी आहार थोडो होय अने बीजाने खावानो छे तेना विचार वगर वहोरावे त्यारे मपु मने वहे तु आपलो बधा आहार वहोरावे नहीं, बीजाने आहार राखवा इत्यादि ते समये तेनी माता अनुकूळ वचन बोले के-तमो आहार वहोरो, आहार घणो छ आ प्रमाणे बधो अनुकूळता देखाय तो ते बाळकनी पासेथी कल्पे नहीं तो न लेवो २ वृद्धना हाथथी आहार न लेवो, परन्तु ते शक्तिवाळो होय अथवा न धूजता होय अने तेना हाथ बीजाए पकड्या होय तो लेवो ३ ज मत्त होय परन्तु अविह्वळ (मन आघुपाछु न होय तो) लेवो अने बीजु कोइ गृहस्थ आतो न होय तो कल्पे ४ उन्मत्त मन वाळाथी पण न लेवो परन्तु जो ते शुद्ध अने भद्रिकपरिणामी होय तो लेवो ५ शरीर कपतावाळाथी न लेवो परन्तु जो दृढ हस्तथी आपे तो लेवो ६ ताववाळा रोगीथी न लेवो परन्तु ताव उतरी गयो होय तो लेवो ७ अध रोगीथी न लेवो परन्तु बीजाए तेने पकडयो होय अने ते अनुकूळ होय तो लेवो ८ कुष्ठ रोगीथी न लेवा, परन्तु सामान्य रोगी पासथी लेवो ९ हाथे पगे बेडी होय त्यारे न लेवो परन्तु बेडी सहीत आपे तो कल्पे १० पगे पण बेडी होय अने ते गृहस्थ व्यवहार करता होय परन्तु आमतेम फरवामां समर्थ होय तो लेवो नहीं तो न लेवो जे छेदायेलो हाथ होय ते न लेवो कदाच आपवामां अशक्त होय परन्तु ते बीजो आपे तो पण कल्पे, पण त्यां कोइ बीजो गृहस्थ न होय अने बीजो होय तो आहार वहोराववो कल्पे नहीं, तेमां प्रतिबध छे-माटे न लेवी ११ हाथ कापेला होय परन्तु त्यां बीजो गृहस्थ न होय तो कल्पे १२ पग कापेला होय तेना आहार लेवा न कल्पे, जो ते पग विना आपे अने अन्य गृहस्थ हाजर न होय तो कल्पे १३ नपुंसकथी न कल्पे परन्तु जो ते लिंग सबधी सेवन करनार न होय तो कल्पे १४ गर्भवती स्त्रीने नव मास पूरा थवा आव्या होय

तो न कल्पे परन्तु सात-आठ मासनो गर्भ होय अने ते सुखपूर्वक आपी शके तेम होय तो स्थविरकल्पी साधुआने कल्पे १५ जेनु बाळक स्तनपान करतो होय तेना हस्तथी आहार न कल्पे परन्तु जो ते बाळक आहार पण करता शीखी गयो होय तो कल्पे जो धावता बाळकने त्यजीने वहोरावे तो न कल्पे जिनकल्पी साधुओनो तो चौदमा तथा पदरमा बन्ने प्रकारनो आहार लेवो कल्पे नहीं १६ स्त्री जमवा बेठी होय परन्तु मुखमा कोळियो न नाख्यो होय तो तेना हाथनु कल्पे १७ कोई स्त्री घउ, चणा आदिक शेकती होय अने शेकीने उतारी नाख्या होय अने नवा बीजा घउ, चणादिक लीधा न होय तवामा साधु आवी पहोंचे तो तेना हाथनो आहार लेवो कल्पे १८ सचित्त मग प्रमुख दळता दळता घंटी छोडी दीधी हाय अने ते समये साधु आवी पहोच्या होय तो तेने आहार लेवो कल्पे अगर ता अचित्त पहले भोंजेला अथवा शेकेला मग प्रमुख दळती होय अने ऊभी थईने आहार वहारावे ता पण कल्पे १९ खाडवा माटे तैयारी करीने सावेलु उपाडयु हाय अन ते सावेलाने पक पण कण लागेलो न होय ते वखते ते स्त्री जीव रहित प्रदेशमा सावेलाने मूकी आहार आपे तो कल्पे २० दळणु पूर्ण थई रह्यु हाय अगर ता अचित्त दळणु करती होय तो पण कल्पे २१ साळ पहोरनी अदरनु दही वलोवती होय तेवी स्त्रीना हस्तनु कल्पे २२ कातती वखते तारने श्वेत करवाने माटे शालनु चूर्ण हाथे लगाडयु न होय अने लगाडयु हाय तो पण तेने अशुद्ध मा या विना हाथ धोया विना वहोरावे तो कल्पे २३ कपास लोढती, २४ कपासने छूटो पाडती अने २५ कपासने पींजती ऊभी रही हाय, तेवामा साधु आय अने हस्त धोया विना वहोरावे तो पण कल्पे बाकीना पदरमा छकायथी व्याप्त हस्तवाळीनो आहार कदापि-खास अपवाद मार्ग सिवाय-वहोरवो ज नहीं आ प्रमाणे ग्रहण एषणानु वर्णन करी हवे ग्रासैषणा मध्यी कह छे—

बेतालीस दोष रहित आहार लाव्या पछी तेनु भोजन करता ग्रासैषणाना पाच दोष वजवा १ सयोजना, २ अप्रमाण, ३ इगाल, ४ धूम अने ५ अकारण भोजन आ पाच पको सयाजना तथा अप्रमाण-ए बन्नेनु वणन करे छे १ सयोजना अतिशय स्वादने माटे दूध, दही, भातमा खाड, मसालो विगेरेनु मिश्रण करवु तेना बे विभाग छे-(१) वसतिमा करे त अत सयोजना अने (२) वसति बहार करे ते बहिर्सयोजना अत सयोजना त्रण प्रकारे जाणवी (१) पात्र-पात्रमा रोटली, घी विगेरे मेळवीने खाय, (२) कवल-ऊपर कहेल वस्तुने हाथमा मेळवीने खाय, (३) वदन-मुखमा कोळिया मूकया पछी स्वाद माटे शाक, दाळ वापरे अथवा मुखमा रोटली प्रमुख मूकया पछी गोळ, साकरनु मिश्रण करीने खाय (२) बहिर्सयोजना दूध मळ्या पछी खाडनी प्राप्ति माटे फर्या करे उपकरण सयोजना आवी रीते जाणवी-उपकरणने माटे

परिभ्रमण करता साधुने चोलपट्टादिक मळ्या बाद शोभाने अर्थे अन्तरवपट्ट मागीने भोगवे तो ते बहिर्उपकरणसंयोजना अने ए प्रमाणे वसतिमां आवीने ते प्रमाणे भोगवटो करे तो अन्तरउपकरणसंयोजना जाणवी आ प्रमाणे संयोजनानुं स्वरूप दर्शाव्युं छता टीकाकार कहे छे के-प्रसंगे तो संयोजना पण स्वीकारवी पडे ते कहु छे के-" रसहेउ सजोगो, पडिसिद्धो कप्पए गिलाणट्ठा। जस्स व अभत्तछदो, सुहोचिओऽभाविओ जो य ॥ १ ॥ " रसगृद्धिना कारणथी संयोजनानो निषेध छे, परन्तु ग्लान साधुने आहारनी रुचि माटे करवी कल्पे जेने भात खावानी टेव छे तेने तेना विना रुचि न थाय वळी कोई राजपुत्रे दीक्षा लीधी होय अने ते सुखमा उछरेल होवाथी तेने भोजननी रुचि न थती होय तो ते संयोजना करे वली कोइ नवीन दीक्षित साधुनी रुचिने अर्थे संयोजना करवी कल्पे परन्तु रसगृद्धिथी आ तेम करे तो कर्मबंध थाय हवे चोथो अप्रमाण दोष दर्शावे छे-उदरना छ भाग कल्पवा तेमा त्रण भाग जेटलो आहार करवो, बे भाग जेटलुं पाणी पीवुं अने एक भाग वायुना संचालन माटे खाली राखवो कालनी अपेक्षाए तेमा पण फेरफार करवो अत्यंत शीतकाळमा पाणीनो एक भाग, आहारना चार भाग अने एक भाग खाली, मध्यम शीत कालमां बे भाग पाणी त्रण भाग आहार अने एक भाग खाली अत्यंत उष्ण कालमां त्रण भाग जळ, बे भाग आहार अने एक भाग खाली अने मध्यम उष्णकालमा बे भाग जळ, त्रण भाग आहार अने एक भाग खाली राखवो आ प्रमाणे आ सत्तावनमी गाथामां कुशळ मुनि निर्दोष आहार स्वीकारे तेम दर्शाव्युं पण आहार रूप, रस विगेरेनी वृद्धि माटे करवानो नथी ते माटे जणावे छे के-

तं पि न रूवरसत्थं, न य वण्णत्थं न चेव दप्पत्थं ।
संजमभरवहणत्थं, अक्खोवंगं व वहणत्थम् ॥ ५८ ॥

[तमपि न रूपरसार्थं, न च वर्णार्थं न चैव दर्पार्थम् ।
संयमभरवहनार्थं, अक्षोपाङ्गमिव वहनार्थम् ॥ ५८ ॥]

गाथार्थ-ऊपर कह्यो निर्दोष आहार पण रूप तथा रसने माटे नहीं, शरीरनी कान्ति वधारवा माटे नहीं, काम-विषयवासनानी वृद्धि माटे नहीं परन्तु अक्षोपांगनी माफक चारित्रनो भार वहन करवा निमित्ते शरीरनु धारण करवा माटे ग्रहण करे

विवेचन-आहार करवाथी शरीरनी कान्ति वधशे, इन्द्रियो सशक्त थशे तथी इच्छाथी पण निर्दोष आहार न करे परन्तु शरीर-शक्ति हशे तो ईर्या समिति आदि पाळी शकाशे, संयमनुं आराधन करी शकाशे एवी इच्छामात्र

यो आहार करे गाडाना पैडानी मध्यमा नाभिनी धरीमां मायण अगर तो जे तेल मुकवामा आवे छे तेथी गाडु सुखपूर्वक चाली शके छे अने भार वहन थाय छे तेम आ शरीररूप शकटमा सयम-भार वहन करवाने माटे मायण अगर तेलरूप आहार स्वीकार्या विना चाले नहीं जो देहने आधाररूप आहार न लेवाय तो दशविध सामाचारी न पळाय, स्वाध्याय ध्यान न थाय. आ प्रमाण सयमना निर्वाहार्थे आहार लेवो उचित छे परन्तु रूप, रसनी वृद्धि माटे लेवो नहीं हवे कया छ कारणथी साधु आहार स्वीकारे ते कहे छे-

वेअण १ वेयावच्चे २, इरिअट्ठाए य ३ सजमट्ठाए ४ ।
तह पाणवत्तिआए ५, छट्ठ पुण धम्मचिंताए ॥ ५९ ॥
[वेदनावैयावृत्त्ये-र्यार्थं च सयमार्थम् ।
तथा प्राणप्रत्ययार्थम्, षष्ठ पुनो धर्मचिन्तार्थम् ॥ ५९ ॥]

गाथार्थ-क्षुधावेदना शमाववा, गुरु, बाळ, ग्लान, वृद्ध तथा तपस्वी साधुनी वैयावच्च करवा, ईर्यासमिति जाळववा, सयम निर्वहवा, जीवितने राखवा तथा धर्मचिन्तन करवा माटे साधु-आहार ग्रहण करे

विवेचन-' नास्ति क्षुत्सदृशी वेदना ' जगतमा भूखनी वेदना जेवी बीजी एक पण पीडा नथी कह्यु छ के-" पथसमा नत्थि जरा, दारिद्दसमो अ परिभवो नत्थि । मरणसम नत्थि भय, छुहासमा वेयणा नत्थि ॥ १ ॥ त नत्थि ज न वाहइ, तिलतुसमित्तंपि एत्थ कायस्स । सन्निज्झ सव्वदुहाइ, दिंति आहाररहिअस्स ॥२॥ " चाल्वु-परिभ्रमण करवु ते समान वृद्धावस्था नथी, दारिद्र्य समान पराभव नथी, मृत्यु समान कोइ भय नथी अने भूख समान बीजु कोइ दु ख नथी, आहार रहित शरीरने तिल-तुस मात्र पण कइ नथी जे पीडा न उपजाय अर्थात् भूख्याने सर्व प्रकारना दु ख थाय छ आवा प्रकारनी क्षुधाने निवारवा अर्थे ज साधु आहार करे, आहार करे तो ज वृद्धगुरु, बाळ साधु, ग्लान तेमज तपस्वी मुनिराज विगरेनी वैयावच्च करी शके वळी तो ज इर्यासमिति पाळवापूर्वक सत्तर प्रकारे सयम आराधी शके आहार लेवाय तो ज प्राणो टकी शके अने स्वाध्यायादिकमा मन रक्त रहे भूख्या-भूख्या स्मरणशक्ति मद पडी जाय, धर्मचिंतनमा पण मन आसक्त न बने, आ प्रमाणे छ कारणो माटे साधु निर्दोष आहार करे हवे प्रसगोपात्त कया छ कारणथी साधु आहार न स्वीकारे ते पण जणावे छे-" आयके १ उवसग्गे, तितिक्खया २ बभचेरगुत्तीसु ३ । पाणिदया ४ तवहेउ ५, सरीरवोच्छेअणट्ठाए

६ ॥ १ ॥" १ आतङ्क-ज्वरादिक रोगो आव्या होय तो न खाय, २ उपसर्ग-पोताना कुटुम्बीजनो, राजा अथवा देव, तिर्यंचादिक सिंहथी उपद्रव थये छते ते सहन करवा माटे आहारादिकनो त्याग करे ३ ब्रह्मचर्यगुप्ति-ब्रह्मचर्यनी नव वाड पाळवा माटे आहार न वापरे ४ प्राणिदया-वर्षाद बहु वरसतो होय, शाकळ-धुहरी पडती होय, सूक्ष्म डेडकीओ उपजी होय, कुंथुआदिकनी घणी उत्पत्ति थई गई होय तो तेनी विराधना टाळवा आहार न करे, ५ तप-तपश्चर्याने निमित्ते आहार न वापरे अने ६ शरीरने वोसराववा अर्थे पटले के आयुनो संबंध जाणी अनशन स्वीकार हवे गच्छनुं ज विशेष स्वरूप देखाडता कहे छे के—

जत्थ य जिट्ठकणिट्ठो, जाणिज्जइ जिट्ठवयणबहुमाणो ।
दिवसेण वि जो जिट्ठो, न य हीलिज्जइ स गोअमा ! गच्छो ॥६०॥

[यत्र च ज्येष्ठ' कनिष्ठो, ज्ञायते ज्येष्ठवचनबहुमान ॥
दिवसेनापि यो ज्येष्ठो, न च हील्यते स गौतम ! गच्छः ॥६०॥]

गाथार्थ—जे गच्छमां नाना-मोटानो तफावत जाणी शकाय, मोटाना वचननुं बहुमान थाय तेमज एक दिवसे पण दीक्षापर्यायथी मोटो होय अने लघुतर छतां गुणवृद्ध होय तेनी हीलना न थती होय तेने गच्छ हे गौतम ! वास्तविक गच्छ समजजो

विवेचन—नाना मोटा एटले वयमां नाना-मोटा नहीं परंतु दीक्षापर्याये गुरु-लघु जाणवा बे जणा साथे दीक्षा लेता होय तेमां प्रथम ले ते मोटो अने पछी ले ते नानो समजवा आ प्रमाणे विनय-विवेकादिवडे नाना-मोटानो तफावत जणातो होय तेमज ज्येष्ठ स्थविर प्रत्ये बहुमानादिक ज्यां करवामां आवतुं होय ते गच्छ सुगच्छ जाणवो वळी जेम सिंहगिरिना शिष्यो दीक्षापर्यायमां वृद्ध होवा छतां अल्प दीक्षापर्यायी श्रीवज्रस्वामीनुं बहुमान* कर्यु-तेमनी हीलना न करी तेम गुणवान छतां लघुपर्यायी साधु प्रत्ये आदरभाव दर्शावातो होय ते गच्छ ज वास्तविक कहेवाय हवे साध्वीना परिचय न करे ते गच्छ ए हकीकत दर्शाववा माटे क्रमशः दश गाथा कहे छे

जत्थ य अज्जाकप्पो, पाणच्चाएवि रोरदुब्भिक्खे ।
न य परिभुज्जइ सहसा, गोयम ! गच्छ तयं भणियम् ॥६१॥

* श्रीवज्रस्वामीना वृत्तान्त माटे जुओ पृष्ठ ९६

[यत्र चार्याकल्पः, प्राणत्यागेऽपि रौरदुर्भिक्षे ।
न च परिभुज्यते सहसा, गौतम ! गच्छः सको भणित' ॥६१॥]

गाथार्थ—भयकर दुष्काळ होय तेवा समयमां प्राणत्याग जेवु सकट आवी पडे तो पण साध्वीओए आणी आपेल आहार साधु वगरविचार्ये न वापरे, तेवा गच्छने हे गौतम ! में वास्तविक गच्छ कहेल छे,

विवेचन—महाभयकर दुष्काळ प्रवर्ततो होय, गोचरी मळती न होय, क्षुधा-वेदनाथी प्राण कठे आवी जता होय तो पण साधु वगरविचार्ये साध्वीओए आणी आपेल आहार न स्वीकारे सर्व प्रकारे सयमनी ज रक्षा करवी कही छे आ सबधमा आघनियुक्तिमा कह्यु छे के-सयममा भग पडवा छता पण जो आत्मा रक्षातो होय तो रक्षवा–"सव्वत्थ सजम सजमा उ, अप्पाणमेव रक्खेज्जा। मुच्चइ अइवायाओ, पुणो वि सोही न याविरई । १॥" सर्व प्रकारे सयमनी रक्षा करवी परन्तु काई कष्ट आवी पडये सयम तथा आत्मा उभयनी हानि थती होय तो सयममा दूषण लगाडीने पण आत्मानी रक्षा करवी सयमहानिथी जे दोष लाग त प्रायश्चित्त लेवाथी दूर करी शकाय, परन्तु एम न विचारवु के-हुं अविरति थयो मनमा तो सर्वविरतिना भाव होवाथी भावचारित्र तो छे ज अने द्रव्यचारित्रमा जे दोष लाग त आलोयणद्वारा दूर थाय अर्णिकापुत्र आचार्यनी माफक निरुपाये साध्वीनो लावलो आहार खाय परन्तु वगर कारणे, पोताथी बनतु होय त्या सुधीमा आ साध्वीना लावेलो आहार वापरे तो तेने पासत्था जाणवो वळी पोताना बचावमा अर्णिकापुत्रनु दृष्टात रजू करे तेने पण पासत्थो जाणवो अर्णिकापुत्रनु वृत्तात नीचे प्रमाणे छे—

अर्णिकापुत्र आचार्यनु वृत्तात–

उत्तरमथुरामा देवदत्त नामनो वणिक रहेतो हतो ते वाणिज्यार्थे एकदा दक्षिणमथुरामा गया त्या तने जयसिंह नामना वणिकपुत्र साथे मित्रता थ. जयसिंहे एक दिवसे तेने भोजन माटे आमत्रण आप्यु जमती वखते जयसिंहनी बहेन अग्निका पीरसवा आवी, जेनु रूप-लावण्य जोता ज देवदत्त तेना प्रत्य अनुरागी थयो बळते दिवसे देवदत्ते जयसिंह पासे तेनी भगिनीनी मागणी करी जयसिंहे त कबूलता पहेला एक शरत मूकी के-अग्निका मने प्राण करता पण अधिक प्रिय छे जे परणीने मारा घरने विषे रहे तेने हु परणाववा इच्छु छु देवदत्ते ते शरत कबूल करी अने शुभ दिवसे तआ बन्ने लग्नग्रथीथी जोडाया

सासारिक सुख भोगवता त दपतीना दिवसा सुखपूर्वक व्यतीत थइ रह्या छे तेवामा देवदत्तना वृद्ध पिताना तेने तेडाववा सबधी पत्र आव्यो पत्र वाचता ज अने साथेसाथ पोतानी प्रतिज्ञा सभारता तेना नेत्रमाथी अश्रुधारा

यही निकळी अग्निकाए कारण पूछयुं पण जयसिंह जवाब न आपी शक्यो त्यारे स्वय पत्र वाच्यो अने पोताना भाइने समजाववानुं बीडु झडपी पतिने आश्वासन आप्युं अग्निकाए पोताना भाईने समजावी श्वसुरगृहे जवानी अनुमति मेळवी लीधी अने शुभ दिवसे सपरिवार प्रयाण पण कर्युं

अग्निका गर्भवती हती रस्तामा ज तेने पुत्रप्रसूति थई अग्निकाए कह्यु क-पुत्रनु नाम मारा सासु-ससरा पाडशे परन्तु साथेनो स्वजनवग तो तेने 'अर्णिकापुत्र' एवा नामथी सबोधवा लाग्यो श्वसुरगृहे आवी पहोंच्या बाद तेओ आनदथी जीवन व्यतीत करवा लाग्या पुत्रनु सधीरण एवु नाम राख्यु पण लोकोमां तो ते 'अर्णिकापुत्र'ना नामथी विशेष प्रसिद्धि पाम्यो अनु क्रमे ते यौवनवय पाम्यो सद्गुरुसयोग तेनी धर्मभावना विशेष वृद्धि पामी अने छेवटे भोग विलासा दिनी तृष्णाने तुच्छ मानी सधीरणे जयसिंह नामना सूरिवर्य पासे सयम स्वीकार्यु एक चित्ते सतत शास्त्राभ्यासथी तेओ आगमज्ञान मा पारगत थया गुरुए तेमने आचार्यपदवी आपी तेमनो शिष्यसमुदाय पण वृद्धि पाम्यो पृथ्वीपीठ पर परिभ्रमण करी तेओ जनसमाज ऊपर उपकार करवा लाग्या हवे ता तेमनी वृद्धवय पण थइ गई हती तेथामा तेओ विहार करता करता गगानदीना तट पर आवेल पुष्पभद्र नगरमा आवी पहोंच्या अने त्या ज रह्या

आ नगरनो राजा पुष्पकेतु हता अने तेनी राणीनुं नाम पुष्पवती हतु पुष्पवतीए पुत्र-पुत्रीना एक युगलना जन्म आप्यो पुत्रनु पुष्पचूल अने पुत्रीनु पुष्पचूला एवु नाम राखवामा आव्यु बने साथे क्रीडा करता अने वयमा वृद्धि पामता रूपमा पण तेओ बने एक एकथी चढियाता हता तेओ परस्परनो एक क्षणमा बनो वियोग सहन करी शकता नहीं आवी स्थिति निहाळी राजाए विचार्यु क-जो पुष्पचूलाने बीजे परणावीश तो तेओ बने एक-बीजानो वियोग सहन करी शकशे नहीं माटे ते बनेना परस्पर विवाह कर्या होय तो सारु आ प्रमाणे विचारी राजाए बीजे दिवसे राजसभामा पडितोने पूछ्यु के-" आ पुरमा जे रत्न उत्पन्न थाय तेना स्वामी कोण ?" राजाना गूढाशयने नहीं समजनारा तेओए जवाब आप्यो क-" स्वामिन् ! समग्र देशना रत्नाना आप स्वामी छो ता आ पुरना रत्ना माटे तो पूछवु ज शु ?" राजाए तरत ज पोताना पुत्र-पुत्रीना विवाहनो निश्चय जाहेर कर्यो पडितो दिग्मूढ जेवा बनी गया राणीए सकल विराध जाहेर कर्या परन्तु राजवी पासे तेनु कशु चाल्यु नहीं राजाना तिर स्कारथी राणीए वैराग्य पामी दीक्षा स्वीकारी उग्र तपश्चर्या करी पुष्पवती राणीनो जीव स्वगने विषे देवपणे उपज्यो कालक्रमे पुष्पकेतु राजा मरण पाम्यो पटले पुष्पचूळ राजा थयो

पुष्पवतीना जीव जे देव थयो हतो तेणे अवधिज्ञानद्वारा पोताना सतानोनु

अकृत्य जोइ तने प्रतिबोधवा मारे पुष्पचूलाने स्वप्नमा नरकनुं नीचे प्रमाणेनुं स्वरूप दर्शाव्युं साकडा मुखवाळा कुंभीमाथी परमाधामी देवो, जेम लोढाना तारने यंत्रमाथी खेंचे तेम, नारकजीवोने खेंचता हता, केटलाक नारकीओने कूटता हता, केटलाकनी छाती पर शिला मूकता हता, केटलाकने वस्त्र सरखा काटा भोंकता हता, केटलाकना पग पकडी, धोबी जेम शिला पर वस्त्र पछाडे तेम पछाडता हता, जेम तेलडी पीले अने घाणीमा तल पीले तेम केटलाकने पीलता हता,करवतथी कापीने वेरे तेम केटलाकने विदारता हता, केटलाकने तपावेला लोढा नी स्त्री साथे आलिंगन करावता हता, केटलाकना देहने पूतरा पासे करडावता हता, केटलाक भूख्या थयेला नारकोने धगधगता अंगारा खवरावता हता, केटलाकने तपावेला तलनी कडाईमा भजिया पुडीनी माफक तळी रह्या हता, जेम पापड भाग तेम केटलाकने मागरना मारथी भागी रह्या हता, केटलाकने वैतरणी नदीमा डुबाडी रह्या हता, ते वैतरणी नदी तपावेल ताबु तथा सीसाना उष्ण रस जेवी पाणीवाळी हती—आवा आवा प्रकारनी घोर कष्टदायक यातनाओ अंब विगेरे पदर प्रकारना परमाधामी देवोने अलग अलग काय करवानु होय छे १ अंब-केटलाक नारक आवाने दोडाय, लाकडी मुठ्ठी वडे प्रहार करे, दडानी पेठ आकाशमा उछाळे २ अंबर्षी-नारकीना हाड, चामडी विगेरे कातरथी कापे, वेसारीने विदारे ३ श्याम-नारकीओने ऊंचेथी नीचे पछाडे, तेमना हाथ-पग भालादिकथी वींधे ४ सबल-आतरडाओ काढे, काळजु तलवारथी कापे, गदा, भाला प्रमुखथी हणे ५. रुद्र-तरवारथी माथु कापे, गदाथी मारे, त्रिशूलथी कापी मांसना कणामा प्रवेश करावे ६ उपरुद्र-नारकीना हाथ, पग, प्रमुख अंगोपाग भांगे, कातरथी कापे ७ काळ-कुम्भीमा पकावे ८ महाकाळ-सिंहादिकनु रूप धरीने खाय ९ असि-हाथ, पग, जांघ, बाहु, शिर तेमज अगोपागने छेदे १० असिपत्र धनु-कान, नाक, होठ, पग विगेरे कापे, दांत पाडे, हाथ छेदे. ११ कुंभ-कुंभीमा नारकीओने पकावे लोढीमां पकावीने पछी घात करे-कापे वळी अग्निमा पण पकावे १२ वालु-नारकीओने अत्यंत उष्ण रेतीमा फेंकी चणानी जेम शेके वळी आकाशमा उछाळीने पछाडे १३ वैतरणी-जेमा मांस, रक्त, केश, हाडका छे अने तपावेला सीसाना उष्ण रस जेवु पाणी छे तेवी वैतरणी नदीमा डुबाडे, तेमा स्नान करावे १४ खरस्वर-करवतथी कापे, शाल्मली नामना वृक्ष ऊपर चढावी तेना महाकंटकद्वारा वेदना पमाडे अने पद रमो १५ महाघोष-भय पामीने नासी जता नारकीओने घेरो घालीने रोके, तने तर्जना करी बहु कष्ट पमाडे

आवा प्रकारनु रौद्र स्वप्न निहाळी पुष्पचूला राणी भय पामती जागी उठी तेणे तरत ज पुष्पचूलने स्वप्ननी वात करी पुष्पचूले शांति निमित्ते धार्मिक कार्यो

कराव्या देवे तो निरतर तेने नारकीना भयकर दुख देखाडया [illegible] पर्षदा राजाए सर्व धर्मना आचार्याने बालावीने नरकोनुं स्वरूप पूछ्युं कोईए कह्युं-गर्भावास जेवु नारकीनुं दु ख छे, कोईए दारिद्रय जेवुं तो कोईए परतत्रता जेवु कह्यु आ प्रमाणे विधविध अभिप्रायो दर्शाव्या परतु [illegible] हकीकत साभळी पोतानु मुख मचकोडयु-पोतानो असतोष [illegible] बाद अर्णिकापुत्र आचार्यने नारकीनु स्वरूप पूछता तमणे [illegible] नरकने विषे क्षेत्रवेदना तेमज प्रहरण वेदना विना शरीरथी [illegible] वेदना छे प्रहरणकृत वेदना तो पहेली पाच नरकमा ज [illegible] विषे परधामीकृत,प्रहरणकृत,अन्योन्यकृत अने क्षेत्रकृत वेदना [illegible] नरकने विषे प्रहरणकृत,अन्योन्यकृत अने क्षेत्रकृत वेदना छे [illegible] नरकमा अन्योन्यकृत अने क्षेत्रकृत वेदना छे पहेली नरके [illegible] वर्षनी अने उत्कृष्टी एक सागरोपमनी, बीजीमा जघन्य [illegible] उत्कृष्टी त्रण सागरोपमनी, त्रीजीमा जघन्य त्रण सागरोपमनी [illegible] सागरोपमनी, चोथीमा जघन्य सात सागरोपमनी अने उत्कृष्टी [illegible] पांचमीमा जघन्य दस सागरोपमनी अने उत्कृष्टी सत्तर [illegible] जघन्य सत्तर सागरोपमनी अने उत्कृष्टी बावीस [illegible] नरके बावीस सागरोपमनी अने उत्कृष्टी तत्रीस [illegible] छे आ उपरात परमाधामी विगेरेनु वर्णन पण यथास्थित [illegible]

गुरुनु नरक सबधी आवु सुदर ने यथास्थित [illegible] ले—" शु आपे पण स्वप्नमा नरक जोई छे ?" आचार्ये [illegible] नहो, श्रीजिनेश्वर भगवतना आगमभाषित ज्ञानथी नरकादि [illegible]" बाद पुष्पचूलाए पूछ्युं-"हे भगवन्! क्या कर्मथी [illegible] अर्णिका पुत्र आचार्ये कह्यु—"महारभथी, महापरिग्रहथी, गुरुनी [illegible] पचेंद्रिय जीवना घातथी,मासनो आहार तमज रौद्र ध्यान [illegible] छे"

हवे देवे पुष्पचूलाने देवलोकनु स्वरूप देखाडया [illegible] विमानोनी शोभायमान श्रेणियो, शय्या, कल्पवृक्षोनो समूह [illegible] कानमा रत्नना कुडलवाळा, मस्तक पर मुकुटवाळा [illegible], अतिशय कातिवाळा सर्व दिशाओने प्रकाशित करता, [illegible], निर्निमेष नेत्रवाळा, न करमाय तेवी पुष्पोनी माळा पहेरनारा [illegible] परिवार साथे विधविध प्रकारनी लीला-क्रीडा करता, विधविध [illegible] क्रीडा करनारा-आ प्रमाणे विविध विषयसुख [illegible] स्वप्नमा दश्यमान कर्या आवु स्वप्न जोई पुष्पचूला [illegible] पूर्वनी [illegible] राजाने जणावता तेणे सर्व दर्शनना पडितान [illegible] त्यारे केटलाक कह्यु के-मिष्टान्न आहार [illegible] उत्तम पटकुलादिनु परिधान, केटलाके उत्तम [illegible] देवतुं

सांसारिक सुखोने स्वर्गसुखनी उपमा आपी आ सांभळी राणीए कह्यु-के "आ सर्व पंडितो मिथ्या छे." बाद अर्णिकापुत्र आचार्यने पूछतां तेओए राणीए स्वप्नमां जे प्रमाणे जोयु हतु ते ज प्रमाणे सव हकीकत जणावी एटले राणी अतीव प्रसन्न थई बाद राणीए देवलोकनी ऋद्धि अने तेनी प्राप्ति संबंधी प्रश्न करतां अर्णिकापुत्रे कह्यु के-"पहेला सौधर्म देवलोकमां बत्रीश लाख विमान छे,बीजा इशानमां अट्ठावीस लाख, त्रीजा सनत्कुमारमां बार लाख, चोथा माहेंद्रमां आठ लाख, पांचमा ब्रह्म देवलोकमां चार लाख, छट्ठा लांतकमां पचास हजार, सातमा महाशुक्रमां चालीश हजार, आठमा सहस्रारमां छ हजार, नवमा आनत अने दशमा प्राणत बन्नेमां चारसो अगियारमां आरण अने बारमा अच्युत ए बन्नेमां त्रणसो विमान छे सम्यक् प्रकारे आराधेला बार व्रतरूप श्रावकधर्म अने पांच महाव्रतरूप साधुधर्मना पालनथी स्वर्गसुखनी प्राप्ति थाय छे

आ प्रमाणे वृत्तांत सांभळी राणी पुष्पचूला प्रतिबोध पामी एटले तेणे स्व-स्वामी पुष्पचूल पासे दीक्षा अपाववा माटे विज्ञप्ति करी त्यारे तेणे कह्यु के-"जो तु दीक्षा लइश तो तारो वियोग हु क्षणमात्र पण सहन करी शकीश नहीं जो तुं दीक्षा स्वीकारीने आ ज नगरमां रहे तो हु तने आज्ञा आपु" राजानु आ वचन अंगीकार करी तेणे दीक्षा लीधी अने बेंतालीश दोष रहित आहार ग्रहण करवा लागी तेमज शुद्ध त्रण योगथी निर्दोष संयम पालवा लागी

अर्णिकापुत्र आचार्य हवे वृद्धावस्थाना शिखरे पहोंची गया हता एवामां तेमणे ज्ञानद्वारा जाण्यु के "महाभयंकर दुकाळ पडशे" तरत ज तेमणे पोतानी अशक्ति छतां समग्र शिष्यसमूहने देशांतर मोकलावी दीधो पुष्पचूला तेमने निरंतर शुद्ध आहार आणी आपती गुरुनी उत्तम प्रकारनी निरंतरनी वैयावच्चने कारणे तेने केवळज्ञान उत्पन्न थयु छतां पण तेणे गुरुनी सेवा त्यजी नहीं केवळज्ञान उत्पन्न थयु छे एम छद्मस्थ न जाणे त्यां सुधी केवलीए शुद्ध-आहार-पाणी लावी आपी विनयादि करवु एवी आगमाज्ञा छे साध्वी पुष्पचूला पण आ आज्ञाने अनुसरी आहारादि लावी आपती

एकदा मुशळधार वरसाद वर्षतो हतो छतां पण पुष्पचूला साध्वीए आहार आणी आप्यो त्यारे अर्णिकापुत्रे तेमने कह्यु के-"हे श्रुतज्ञाने! वरसाद वरसवा छतां तमे केम आहार आण्यो?" तेणीए कह्यु-"ज्यां ज्यां अचित्त अप्काय (पाणी) हतु त्यांथी यत्नपूर्वक हु आवी छुं' गुरुए पुन पूछ्यु-"तें अचित्त प्रदेश क्याथी जाण्यो?"जवाबमां तेणीए कह्यु-"आपना प्रसादथी' गुरुए वळी पूछ्यु-"शु तमने ज्ञान थयु छे?" साध्वीए कह्यु-"हा, अप्रतिपाती (केवळज्ञान) थयु छे" आ कथन सांभळी गुरुए शीघ्र ऊभा थई, मिथ्यादुष्कृत आप्यु अने आत्मनिंदा करता कहेवा लाग्या के-"में केवळीनी आशातना करी" बाद साध्वीने तेमणे पूछ्युं के-"हु सिद्धि पामीश के नहीं?' साध्वीए कह्यु-"धीरज राखो,आपने गंगा नदी

उतरता ज ज्ञान-प्राप्ति थशे" बाद आचार्य घणा लोकोनी साथे [illegible] पार करवा नावमां बेठा जे जे स्थळे तेओ बेसवा जाय छे त्यां नाव [illegible] बेसी जवा लाग्युं. लोको डुबवा लाग्या एटले लोकोए तेमने उचकीने [illegible] नाखी दीधा तेमनी दुभागी पूर्वभवनी स्त्री जे मृत्यु पामीने व्यंतरी [illegible] तेणे ज आ संकट ऊभु कर्युं हतुं पाणीमा पडता ज ते व्यंतरीए तेमने [illegible] परोवी लीधा तेमना शरीरमाथी रुधिरनी धारा वहेवा लागी पोताने [illegible] वेदना थती हती तेने लक्षमा न लेता तेओ विचारवा लाग्या के-"अहो ! मारा रुधिरथी अप्कायना जीवोनी विराधना थशे हुं केवो मंदभागी छुं" [illegible] पश्चात्ताप ने आत्मनिंदा करवापूर्वक तेओ क्षपकश्रेणी पर आरूढ थया [illegible] सर्व कर्म क्षय पामता केवळज्ञान थयु आयुष पूर्ण थता तेओ तरत [illegible] केवळी थइ मोक्षे गया देवोए आवी तेमनो केवळज्ञान महोत्सव कर्यो

आ कथानो सारांश ए थयो के-कारणे-अपवादमार्गे [illegible] आपेल आहार करवो उचित छे, परन्तु पोतानी सगवडनी खातर [illegible] साध्वीए लावी आपेल आहार ले तो तेने पासत्थो जाणवो वळी साधु [illegible] संभाषण न करे तेने ज गच्छ जाणवो, ते संबधी गाथा कहे छे के-

जत्थ य अज्जाहि समं, थेरा वि न उल्लवंति गयदसणा।
न य झायन्ति त्थीण, अंगोवगाइं तं गच्छम् ॥ ६२ ॥

[यत्र चार्याभिः समं, स्थविरा अपि नोल्लपन्ति गतदशनाः।
न च ध्यायन्ति स्त्रीणा-मङ्गोपाङ्गानि स गच्छः ॥ ६२ ॥]

गाथार्थ-वळी जे गच्छमा युवान तो शु पण जेमना [illegible] छे एवा वृद्ध मुनिजनो पण साध्वीओनी साथे निष्कारण [illegible] तेमज स्त्रीओना अंगोपांगने सराग दृष्टिथी जोता नथी ते [illegible]

विवेचन-गाथार्थ स्पष्ट छे अंगो आठ छे-बे [illegible] पीठ, एक मस्तक, एक हृदय अने एक उदर (पेट) [illegible] आगळीओ प्रमुख उपांगो कहेवाय छे सुगच्छवासी साधु [illegible] संभाषण न करे तेम तेना अंगोपांगनु स्मरण पण [illegible] चित्त व्याकुळ बने छे अने स्वधर्म के स्वाध्यायमां [illegible] नथी. आ ज संबधमा विशेष सावचेती राखवा शास्त्रकार [illegible]-

वज्जेह अप्पमत्ता !, अज्जासंसग्गि अग्गिविसरिसी ।
अज्जाणुचरो साहू, लहइ अकित्तिं खु अचिरेण ॥ ६३ ॥

[वर्जयतामप्रमत्ता !, आर्यासंसर्गीः अग्निविषसदृशीः ।
आर्यानुचरः साधु-र्लभतेऽकीर्तिं खु अचिरेण ॥ ६३ ॥]

गाथार्थ—अरे अप्रमादी मुनिवरो ! तमे अग्नि अने विष(झेर)नी जेवी अनर्थकारी साध्वीओनो संसर्ग त्यजी द्यो, कारण के साध्वीने अनुसरनारो साधु थोडा ज समयमा अवश्य सर्वत्र अपकीर्ति पामे छे.

विवेचन-अप्रमादी मुनिओने पण साध्वी-संगनो निषेध कर्यो छे तो प्रमादी साधुओनी तो वात ज शा माटे करवी ? तेने पण संपूर्णतया निषेध समजी ज लेवो जोइए जेम अग्नि पोताने अने पासे रहेनारने बाळे छे तेम साध्वी-संसर्ग उभयना चारित्रने दग्ध करे छे झेरनु कदापि पारखु करवामा आवतुं नथी, कारण के तेनो स्वभाव ज मृत्यु पमाडवानो छे तेम स्त्री-संसर्गनो दीर्घ दृष्टिथी विचार करीने ज शास्त्रकाराए निषेध कर्यो छे वळी स्त्रीने वाघ अने सर्पनी पण उपमा आपवामा आवी छे 'तंदुलवैचारिक प्रकीर्णकमा कह्यु छे के-" जाओ चिय इमाओ इत्थियाओ अणेगेहिं कइवरसहस्सेहिं विविहपास पडिबद्धेहिं कामरागमोहेहिं वन्नियाओ नि एरिसाओ त जहा-पगइ विसमाओ, पियरूसणाओ, पियवयणवल्लरीओ, कइअवपेमगिरितडीओ, अवराहसहस्सघरणीओ, पभवो रोगस्स असलिलप्पलावो समुद्दओ ॥" आ पाठथी स्त्रीने घणु विशेषणो आपवामा आव्या छे—१ विषम-कोईने खबर न पडे तेवा स्वभाववाळी, २ मनोहर रूसणावाळी-रोष, क्रोध करता पण भली लागे तेवी, ३ मिष्ट वचननी वेल, ४ कृत्रिम प्रेमनी नदी, ५ हजारो अपराधोनी भूमि, ६ रोगोना कारणभूत, ७ बळनो नाश करनारी, ८ पुरुषोना विनाश करनारी हीयाथी खाटकी सदृश, ९ लज्जानो नाश करनार, १० अविनयनो आवास, ११ कपटनी खाण, १२ वेरनु निमित्त, १३ शोकनु स्थान, १४ अमर्यादानो आश्रम, १५ रोगनु घर, १६ दुष्ट चारित्री, १७ मोहादिकनी माता, १८ ज्ञानथी चळावनारी, १९ शीलना नाश करनारी, २० धर्ममा विघ्नकारी, २१ साधुओनो शत्रु, २२ आचारशील प्राणिओने दूषित करनार, २३ कर्मरूपी रजना बगीचा समान, २४ मोक्षमार्गमा जनारने रोकवा माटे पाटिया समान, २५ दारिद्र्यनु स्थान, २६ सर्प समान अत्यन्त झेरवाळी, २७ कामदेवने परवश, २८ सिंह जेवी दुष्ट हृदयवाळी, २९ घासथी आच्छादित कूवो जेम मालूम न पडे तेम अप्रगट आशयवाळी, ३० कपटीना माफक सैंकडो वचनामा बाधनारी, ३१ काचमा पडेल प्रतिबिंब ग्रहण न थइ शके तेम अग्राह्य मानसिक विचारवाळी, ३२ चंचळतरीया स्वभाववाळी, ३३ पर्वतना मार्गनी पेठ अनेक स्थळे विचरनारी

चित्तवाळी, ३४ खोटा हृदयवाळी, ३५ कृष्ण सपनी माफक अविश्वसनीय, ३६ सध्याना रग जेवी क्षणजीवी प्रीतिवाळी, ३७ समुद्रना तरग जेवी चचळ स्वभाववाळी, ३८ मत्स्यनी माफक गुप्त छळवाळी, ३९ वानरनी माफक चपळ चित्तवाळी, ४० मृत्युनी माफक विशेषता रहित, ४१ यमराजनी माफक निष्करुण, ४२ वरुणदेवनी जेम घने हस्तमा पाशवाळी, ४३ नदीनी माफक अधोगमन करनारी, ४४ कृपण जेवी, ४५ नरकनी जेवी त्रासदायक, ४६ गधेडानी जेम दुष्ट आचारवाळी, ४७ दुष्ट अश्वनी पेठ दमनीय, ४८ दुष्ट सर्पनी माफक अस्थिर अत करणवाळी, ४९ अधकारमा जेम प्रवेशी न शकाय तेम न प्रवेश करी शकाय-जाणी न शकाय तेवा विचारवाळी, ५० विषवेलीनी माफक अस्पाद्नीय, ५१ ग्राह नामना मत्स्यवाळी वावमा प्रवेश न करी शकाय तेम अग्राह्य विचारवाळी, ५२ स्थानभ्रष्ट राजानी जेम अप्रशसनीय, ५३ किंपाकना फळनी जेम मधुर पण परिणामे दु ख दायक, ५४ जेम खाली मुठी बाळकने मोहित करे तेम लोभ पमाडनारी, ५५ मासनी पेशीनी माफक उपद्रव करनारी, ५६ सळगता मसालनी माफक उग्र स्वभाववाळी, ५७ दुष्कर रीत रक्षणीय, ५८ घणो विखवाद करनारी, ५९ दुगच्छा उपजावनारी, ६० व्याटु चालनारी, ६१ अगभीर, ६२ अश्रद्धनीय, ६३ अस्थिर, ६४-६५ दु खपूर्वक रखाय तथी तमज रक्षण कराय तथी, ६६ असाता कारक, ६७ महाकक्रा-कठोर, ६८ वृद्ध वेर राखनारी, ६९ रूप तथा सौभाग्यने अग उन्मत्त, ७० सर्पनी माफक वक्रगतिवाळी, ७१ अटवीना माफक विषम मागवाळी, ७२ सज्जन तथा मित्रमा भेद पडावनारा, ७३ परदोषप्रकाशक, ७४ कृतघ्नी, ७५ बळने शाधनारी तथा छळने जोनारा, ७६ पकातमा यमराज सरखा, ७७ चचळ, ७८ ज्ञातिभ्रष्ट करावनार, ७९ क्षणमा रागी ने क्षणमा रांपित, ८० विपत्तिनु स्थान, ८१ पुरुषने माटे द्वारदा विनानो गळाफासो, ८२ वाघ विनानी अटवी जेवी, ८३ वतरणी नदी जेवा, ८४ अपूर्व व्याधि, ८५ नित्यनु रुदन, ८६ अदृश्य उपसर्ग, ८७ क्षणमात्र रति-आनदने उपजावनारी, ८८ चित्तना भ्रम करावनारी, ८९ सर्व प्रकारना दाह स्वरूप, ९० कामने उत्पन्न करावनारा, ९१ वज्र जेवा तीक्ष्ण अग्नि सदृश, ९२ जळ रहित समुद्रना चाप जेवा भयप्रद विगेरे विगेरे

केटलाक स्त्रीवाचक शब्दाना अथ पण जाणवा जवा होई अत्रे निर्देश्यो छे-
१ नारी=न+अरि-काम, भोग अने स्नेहरागी पुरुषने वध, बधन विगेरे कष्ट पमाडे तेथी तेवो स्त्री पुरुषने माटे अरि एटले शत्रु सदृश छ २ महिला=शिल्प विगेरे अनेक प्रकारनी कलाओद्वारा पुरुषोने मोह उपजावे ३ प्रमदा=पुरुषने मदोन्मत्त करे ४ महिलिया-अत्यत कलह उत्पन्न करे ५ रामा=हावभावद्वारा पुरुषोने रमकडानी माफक यथेष्ट रमाडे ६ अगना=प्राणियान पोतानु अग देखाडी अनुराग उपजावे, ७ ललना=स्त्रीने अर्थे युद्ध करे, भूखे मरे, तडक

दाझे इत्यादिक कष्टसहन करवा छता राजी न थाय ८ योषित=पुरुषोने भोगवीने वमे-त्यजे ९ वनिता-नाना प्रकारना भावोद्वारा पुरुषाने यचे-ठग आ प्रमाणे स्त्रीवाळा शब्दाना अर्थ विविध रीते थाय छ श्रीदशवैकालिक सूत्रमा कह्यु छे के-
"विभूसा. इत्थिससग्गी, पणीअ रसभोअण । नरस्सत्तगवेसिस्स, विस तालउड जहा ॥ १ ॥" विभूषा-शरीर तथा वस्त्रोनी शोभा करवी, स्त्रीससर्ग-स्त्रीनो परिचय करवो, तेनी साथे हळवुमळवु, रसभोजन-घृत आदि विगयोनो आहार करवो—आ बधी क्रिया जेने आत्मानी गवेषणा करवी छे-आत्महित साधवु छे तेवा प्राणीने माटे तालपुट झेर जेवी छे अर्थात् स्त्रीपरिचय कोइ पण रीते हितकारक नथी ज बीजा शास्त्रकारा पण कहे छे के-

आवर्त' सशयानामविनयभवन पत्तन साहसानां, दोषाणा सन्निधान कपटशतगृह क्षेत्रमप्रत्ययानाम् । स्वर्गद्वारस्य विघ्नो नरकपुरमुख सर्वमायाकरण्डः, स्त्रीयन्त्र केन सृष्ट विषममिषमय सर्वलोकस्य पाशः ॥ १ ॥ नो सत्येन मृगाङ्क एव वदनीभूतो न चेन्दीवर-द्वन्द्व लोचनता गत न कनकैरप्यङ्गयष्टिः कृता । किंत्वेव कविभिः प्रतारितमनास्तत्त्व विजानन्नपि, त्वड्मासास्थिमय वपुर्मृगदृशां मत्वा जनः सेवते ॥ २ ॥ यदेतत्पूर्णेन्दुद्युतिहरमुदाराकृतिवर, मुखाब्ज तन्वङ्ग्याः किल वसति यत्राधरमधु । इद तत्किम्पाकद्रुमफलमिवातीव विरस, व्यतीतेऽस्मिन्काले विषमिव भविष्यत्यसुखदम् ॥ ३ ॥ व्यादीर्घेण चलेन वक्रगतिना तेजस्विना भोगिना, नीलाब्जद्युतिनाऽहिना वरमह दष्टो न तच्चक्षुषा । दष्टे सन्ति चिकित्सका दिशि दिशि प्रायेण पुण्यार्थिनो, मुग्धाक्षीक्षणवीक्षितस्य न हि मे वैद्यो न चाऽप्यौषधम् ॥ ४ ॥ ससार ! तव निस्तार-पदवी न दवीयसी । अन्तरा दुस्तरा न स्यु-र्यदि रे मदिरेक्षणाः ॥ ५ ॥ नून हि रे कविवरा विपरीतबोधा, ये नित्यमाहुरबला इति कामिनीनाम् । याभिर्विलोलतरतारकदृष्टिपातैः, शक्रादयोऽपि विजितास्त्वबलाः कथ ता ॥ ६ ॥ जल्पन्ति सार्धमन्येन, पश्यन्त्यन्य सविभ्रमाः । हृदये चिन्तयन्त्यन्य, प्रियः को नाम योषिताम् ? ॥ ७ ॥ स्मितेन भावेन च लज्जया भिया । पराङ्मुखैरर्द्धकटाक्षवीक्षितैः । वचोभिरीर्ष्याकलहेन लीलया, समस्तभावैः खलु बन्धन स्त्रियः ॥ ८ ॥ सशयरूपी आवर्तवाळु (जळमा जेम आवत-भमर-चमळ पडे छ अने तेमा कोइ प्राणी आवी जाय तो चक्कर खाईने डूबी जाय), अविनयनु स्थान, महासाहसनु निवास, दोषोना निधानरूप, सेंकडो कपटना घररूप, अविश्वासना क्षेत्ररूप, स्वर्गलोकमा जता विघ्नभूत, नरकना दरवाजारूप,

कपटना करंडियारूप स्त्रीरूपी यंत्र के जे सर्व जीवोने माटे पाश-फांसा समान अने अमृतमय झेर (देखाये अमृत सदृश लागे परन्तु परिणामे विष जेवु मृत्यु जनक) जेवु छे ते कोणे सर्ज्यु ? अर्थात् स्त्री ऊपरना नव प्रकारोद्वारा दु:खकारक छे (१) स्त्रीनु मुख कांइ चन्द्र जेवु नथी, तेना बन्ने नेत्रो कमळ समान नथी तेमज तेनु शरीर सुवर्ण सदृश पण नथी-आ तो कविनी कल्पना मात्र छे ते जाणवा छता पण मूढ माणसो चामडी, मांस अने हाडकावाळा आ स्त्री-शरीरने सेवी रह्या छे ते तेओनो खरेखर भ्रम छे (२) पूर्णिमाना चन्द्रनी कांतिने हरी लेनार स्त्रीना मुखकमळने विषे जे अधर(ओष्ठ)रूपी मध छे ते किंपाकना फळनी जेम अत्यन्त विरस छे अने यौवनकाळ अथवा मनुष्यभवरूपी काळ व्यतीत थई गये छते झेरनी माफक अत्यन्त दु:खदाता छे विषमिश्रित मिष्टान्न प्रथम स्वादिष्ट लागे परन्तु परिणामे प्राणघातक निवडे तेम स्त्रीनु मुखकमळ इत्यादि परिणामे नरकदायक छे (३) अतिशय लांबा, चपळ नेत्रवाळो, वांकी गतिवाळो, तेजस्वी अने नील कांतिवाळो सर्प डसे तो सारो परन्तु स्त्रीना चक्षुथी डसावु सारु नहीं सर्प डसे तो कोइ पण स्थळेथी वैद्य मेळवी उपचार करी शकाय परन्तु आ स्त्री-नेत्रथी वींधायेलाने माटे कांई पण वैद्य के औषध नथी (४) आ संसाररूपी समुद्रने तरी जवो ए कंई मुश्केल नथी-जो वचमां आ स्त्रीरूपी दुस्तर विघ्न न होय तो (५) जे कविओ स्त्रीओने अबला (बळ विनानी) कहे छे ते बुद्धि विनाना जणाय छे कारण के स्त्रीओए पोताना चपळ नेत्र-कटाक्षथी इन्द्र जेवान पण महात कर्या छे तो तेवी स्त्रीओने अबला केम कहेवाय ? (६) वळी ते कोइनी साथे वात करी रही छे, कोईनी साथे विभ्रम विलासपूर्वक देखी रही होय छे अने अंत:करणमां कांई अन्य पुरुषनु ज चिंतन चाली रह्यु होय छे-आवी स्त्रीने पोतानो वल्लभ कोण होइ शके ? (७) अल्प हास्यथी, हावभावथी, शरमथी, भयथी, पराङ्गमुख वचनथी, नेत्रकटाक्षथी, वचनथी, इर्ष्याथी, कजियाथी, क्रीडाथी अगर समस्त प्रकारना भावोथी स्त्री बंधनरूप निवडे छे (८) आवी रीते स्त्रीओना अनेक प्रकारना दुर्गुणो विचारी साधु पुरुषे तो तेने नव गजना नमस्कार ज करवा स्त्रीना परिचय मात्रथी * कुलवालुक

* कोइएक आचार्यने अविनयी शिष्य हतो आचार्य तेने तेना वर्तन संबंधी शिखामण आपे तो ते उल्टो रोषे भरातो गुरु एकदा रैवताचळनी (उत्तराध्ययनसूत्रमां श्रीसिद्धाचल कहेल छे) यात्राए गया त्यां पण आ शिष्य यात्राळु स्त्रीओ ऊपर कुदृष्टि करवा लाग्यो गुरुए तेने निवार्यो एटले ते क्रोधित थयो पोताने हितशिखामण आपनार गुरु ऊपर हवे तेने पूरो कंटाळो आव्यो एटले तेमने यमराज-सदनमां मोकली आपवानो निरधार करी तेणे यात्रा कर्या बाद पाछा वळता गुरुमहाराज पर पाछळ रहीने एक पत्थरनो मोटो गोळो गबडाव्यो परन्तु भाग्ययोगथी ते पत्थरनो गोळो आचार्यना बंने पग वच्चे थईने निकळी गयो गुरुए तेने उपालंभ आपतां कह्यु के-हे दुरात्मन् ! आ स्त्रीजातिथी ज तारो विनाश थशे

त्यागे इत्यादिक कष्टसहन करवा छता राजी न थाय ८ योषित=पुरुषोने भागवीने वशे-त्यजे ९ वनिता-नाना प्रकारना भावोद्वारा पुरुषोने वशे-ठग आ प्रमाणे स्त्रीवाच्य शब्दोना अर्थ विविध रीते थाय छे श्रीदशवैकालिक सूत्रमा कह्यु छे के-"विभूसा इत्थिससग्गी, पणीअ रसभोअण । नरस्सत्तगवेसिस्स, विस तालउड जहा ॥ १ ॥" विभूषा-शरीर तथा वस्त्रोनी शोभा करवी, स्त्रीससर्ग-स्त्रीनो परिचय करवो, तेनी साथे हळवुमळवु, रसभोजन-घृत आदि विगयोनो आहार करवो—आ बधा क्रिया जेने आत्मानी गवेषणा करवी छे-आत्महित साधवु छे तेवा प्राणीने माटे तालपुट झेर जेवी छे अर्थात् स्त्रीपरिचय कोई पण रीते हितकारक नथी ज बीजा शास्त्रकारो पण कहे छे के-

आवर्तः सशयानामविनयभवन पत्तन साहसाना, दोषाणा सन्निधान कपटशतगृह क्षेत्रमप्रत्ययानाम् । स्वर्गद्वारस्य विघ्नो नरकपुरमुख सर्वमायाकरण्डः, स्त्रीयन्त्र केन सृष्ट विषमविषमय सर्वलोकस्य पाशः ॥ १ ॥ नो सत्येन मृगाङ्क एव वदनीभूतो न चेन्दीवर-द्वन्द्व लोचनता गत न कनकैरप्यङ्गयष्टिः कृता । किंत्वेव कविभिः प्रतारितमनास्तत्त्व विजानन्नपि, त्वङ्मासास्थिमय वपुर्मृगदृशा मत्वा जनः सेवते ॥ २ ॥ यदेतत्पूर्णेन्दुद्युतिहरमुदाराकृतिधर, मुखाब्ज तन्वङ्ग्याः किल वसति यत्राधरमधुः । इद तत्किम्पाकद्रुमफलमिवातीव विरस, व्यतीतेऽस्मिन्काले विषमिव भविष्यत्यसुखदम् ॥ ३ ॥ व्यादीर्घेण चलेन वक्रगतिना तेजस्विना भोगिना, नीलाब्जद्युतिनाऽहिना परमह दष्टो न तच्चक्षुषा । दष्टे सन्ति चिकित्सका दिशि दिशि प्रायेण पुण्यार्थिनो, मुग्धाक्षीक्षणवीक्षितस्य न हि मे वैद्यो न चाप्यौषधम् ॥ ४ ॥ ससार ! तव निस्तार-पदवी न दवीयसी । अन्तरा दुस्तरा न स्युर्यदि रे मदिरेक्षणाः ॥ ५ ॥ नून हि रे कविवरा विपरीतबोधा, ये नित्यमाहुरबला इति कामिनीनाम् । याभिर्विलोलतरतारकदृष्टिपातै, शक्रादयोऽपि विजितास्त्वबलाः कथ ताः ॥ ६ ॥ जल्पन्ति सार्धमन्येन, पश्यन्त्यन्य सविभ्रमाः। हृदये चिन्तयन्त्यन्य, प्रियः को नाम योषिताम् ? ॥ ७ ॥ स्मितेन भावेन च लज्जया भिया । पराङ्मुखैरर्द्धकटाक्षवीक्षितै । वचोभिरीर्ष्याकलहेन लीलया, समस्तभावैः खलु बन्धन स्त्रियः ॥ ८ ॥ शकारूपी आवर्तधातु (जळमा जेम आवर्त-भमर-वमळ पडे छे अने तेमा कोई प्राणी आवी जाय तो चक्कर खाईने डूबी जाय), अविनयनु स्थान, महासाहसनु निवास, दोषोना निधानरूप, सेंकडो कपटना घररूप, अविश्वासना क्षेत्ररूप, स्वर्गलोकमा जतां विघ्नभूत, नरकना दरवाजारूप,

मुनि पतित थया केटलाक पुरुष पण दुर्गुणी होय छे, तेथी साध्वीए पण तेथाथी सावचेत रहेवु आ सबधमा +मणिरथनुं दृष्टांत जाणवा योग्य छे आ

करी कह्युं के-हे मुनिवर्य ! स्थाने स्थाने चैत्यो तथा मुनिओने वदन करीने मारे भोजन लेवानो नियम छे तो आप कृपा करी, निर्दोष आहार-पाणी स्वीकारी मने कृतार्थ करो कुलवालुक मुनिए तेनी विनति मान्य राखी आहार ग्रहण कर्यो चतुराईथी मागधिकाए मोदकना आहारमां नेपाळाना चूर्णनी नानी नानी गोळीओ मिश्रित करी दीधी हती तेथी मुनिने ते आरोगतां अतिसार(झाडा)नो व्याधि उत्पन्न थयो

मागधिकानी युक्ति बराबर सफल थई तेणे अन्य गणिकाओद्वारा कुलवालुक मुनिनी सेवा-शुश्रूषा शरु करावी मुनि पण झाडाना व्याधिथी अत्यंत पीडाता हता ते आ गणिकाओना उपचारथी प्रमोद अनुभववा लाग्या प्रतिदिनना आ व्यवसायथी कुलवालुक मुनि चारित्रथी भ्रष्ट थया पछी तो ते कुणिक पासे गया अने विशालामा कपटथी स्तूप पण खोदावी नखाव्यो विशालानु पतन थयुं.कुलवालुक मुनि पण दुर्गतिगामी बन्या आ संबंधे विशेष वृत्तांत जाणवानी इच्छा वाळाए उपदेशप्रासाद ग्रथना प्रथम स्थंभनु चौदमु व्याख्यान वांचवु

+ सुदर्शनपुर नामना नगरमां मणिरथ राजवी हतो तेने युगबाहु नामनो लघु बधु हतो ते युवराजने रूपमां रंभा सरखी सौन्दर्यवती मदनरेखा नामनी स्त्री हती तेना अत्यंत रूपराशिथी मोहित थयेल राजाए मनमां विचार्युं के-"आ मदनरेखाने मारे कोई पण प्रकारे ग्रहण करवी तेना सिवायनो मारो जन्म अने राज्यप्राप्ती वृथा छे" तेणे मदनरेखाने पोताना पाशमां फसाववा माटे एक विचक्षण दासीद्वारा उत्तम तांबूल,वस्त्राभरण, पुष्प विगेरे मोकलाव्या मदनरेखा राजानो आशय समजी शकी नहीं तेथीए राजानो "प्रसाद" समजी ते स्वीकारी लीधुं थोडा दिवस बाद राजाए ते दासीद्वारा पोतानी मदनातुर स्थिति कहेवरावी दासीना वज्र जेवा कठोर वचन सांभळी तेणीए कह्यु के-"गणिका प्रमुख स्त्रीओना बंधुजन पण भोग माटे तेओनी पासे जवा समर्थ थता नथी,तो तारा राजाने सुन्दर अत पुर छतो ते मूढ मारकी अपावनार पर स्त्रीमां केम राचे छे? राजाए तो परस्त्रीनी कदी पण इच्छा न करवी, केमके विश्वने विषे लोको तेनुं ज अनुकरण करे छे जो कदाच राजा मारा पर बलात्कार करशे तो हु मारु शरीर आपघाते बदले मारा प्राण ज आपीश " दासीए आ सर्व हकीकत राजाने कही राजा विशेष कामातुर थयो परन्तु युगबाहुनी हैयातिमा ते कई करी शकवा समर्थ नहोतो एटले त तेने हणवाना उपायो शोधवा लाग्यो

एकदा युगबाहु मदनरेखा साथे क्रीडा करवा उद्यानमां गयेल जळक्रीडा करी रात्रिना समये ते कदलीगृहमां सूतो एवामां मणिरथ पण युगबाहुने हणवानी बुद्धिथी खड्ग लई त्यां आव्यो युगबाहु साथे कृत्रिम वार्तालाप करी, प्रसग साधी तेना प्रत्ये तेणे खड्गनो प्रहार कर्यो युगबाहु घायल थई नीचे पड्यो मदनरेखाना हाहाकारथी पासेना सुभटो दोडी आव्या,पण युगबाहुए कह्यु के-अरे सुभटो ! मारा सहोदरने हणशो नहीं तेना कई दोष नथी, मारा पूर्व कर्मनुं ज आ परिणाम छे मणिरथ पण पोतानुं कार्य सिद्ध थयु जाणी हर्षित थई घेरे आव्यो त्यां तेने अकस्मात् सर्प-दश थयो. कह्यु छे के-अत्युग्र उग्र पुण्य के पापनु फळ आ लोकने विषे ज मळ

गुरुए निर्भर्त्सना करवाथी ते त्यांथी चाल्यो गयो अने स्त्री रहित एकांत स्थाननी शोध करतो एक नदीने सामे किनारे जइ आतापना लेवा लाग्यो तेने कोई पण प्रकारे गुरु-कथन मिथ्या करवु हतु तेनी तपश्चर्या तीव्र हती तेना उग्र तपना प्रभावथी नदीनो प्रवाह, तेनी तरफ वहेतो हतो तेने बदले बीजी दिशामां वहेवा लाग्यो एटले लोकोए तेनी 'कुलवालुक' एवा नामनी प्रसिद्धि करी

देव-प्रभावथी श्रेणिक महाराजने दिव्यकुंडल, अढार सरनो हार, दिव्य वस्त्रो अने सेचनक हस्तीनी प्राप्ति थयेल ते तेमणे पोताना पुत्र हल्ल-विहल्लने अर्पण करेल कुणिकनी पत्नी पद्मावती हमेशां तेनी मागणी कर्या करती श्रेणिकना मृत्यु बाद कुणिके हल्ल-विहल्ल पासे तेनी मागणी करी कुणिक सर्वसत्ताधीश हतो एटले हल्ल-विहल्ल पोताना मातामह चेटक(चेडाराजा)ना आश्रये चाल्या गया कुणिके तेओने सोंपी देवा कहेवराव्यु चेटक महाराजाए शरणागत दोहित्रोने सोंपवाना इन्कार कर्यो कुणिके विशाला नगरी पर हल्लो कर्यो, बने बाजु विपुल सैन्यसमूह एकत्र थयो बंने महारथी अने समर्थ राजवी होइने एकबीजाथी गाज्या जाय तेवा न हता चेटक महाराजाने देवोए अमोघ बाण आपेल, के जेना प्रहारथी अवश्य मृत्यु थाय ज तेमने हमेशां एक ज बाण मूकवानी प्रतिज्ञा हती शरुआतना दश दिवसना युद्धमां हमेशना एक ए प्रमाणे चेटक महाराजाए कुणिकना काल, महाकाल विगेरे दश भाईओने हणी नाख्या आ करुण बनावथी शोकग्रस्त बनी कुणिके अट्ठमतपद्वारा सौधर्मेन्द्र अने चमरेंद्रनु आराधन कर्यु तेओए आवी कह्यु के-चेटक महाराजा जैन होवाथी अमारा साधर्मी छे, अमे तेमने मारी शकशु नहीं परन्तु तमारा बचावने माटे वज्रमय कवच करशु. आ प्रमाणे कहीने तेने शिलाकंटक अने रथमूशळ आप्या तेना प्रभाव ए हतो के शत्रुसैन्यमा एक कांकरो नाख्यो होय तो ते मोटी शिला जेवो थइने अने एक काटो शस्त्ररूप बनीने संहार करतो तेना आवा प्रभावथी चेडा महाराजाना घणा सुभटो मरी गया चेडा महाराजाए अंते युद्धमा आवी कुणिक ऊपर बाण छोड्यु पण ते वज्रमय कवचने कारणे निष्फळ गयु बीजे दिवसे पण तेमज थयु एटले त्रीजे दिवसे तेमणे विशाळा नगरीना दरवाजा बंध कराव्या

विशाळा नगरीनो गढ कब्जे करवो ते अत्यंत दुष्कर कार्य हतु कुणिके घेरो नाख्यो बार वर्ष सुधी घेरो घाल्यो छता परिणाममा शून्य कुणिक गहन विचारमां पडी गयो तपासने अंते जणायु के-विशाळा नगरीमा जे श्रीमुनिसुव्रतस्वामीनो स्तूप छे तेना प्रभावथी विशाळानु पतन थतु नथी, जो ते स्तूपने जडमूळथी खोदी कढावाय आवे तो ज विशाळानु पतन थाय पण आ कार्य कोण करी शके ? लोकोनी श्रद्धानो गेरलाभ ले तेवो कोई साधुपुरुष होय तो ज आ कार्य बनी शके, पण समरभूमि पर साधु लाववा क्यांथी ? तेणे पोताना चरपुरुषोने चारे दिशामा तपास करवा मोकल्या तपासने अंते तेने कुलवालुक मुनिनी बातमी मळी तेने पतित करवा अने कोई पण हिसाबे पोतानी पासे लाववा पोतानी चतुर मागधिका नामनी गणिकाने कह्यु

मागधिका पोताना सुरुकेल कार्यथी अजाणी नहोती तेण साधुने पाशमा पकडवा श्राविकानो स्वांग धर्यो अने जे स्थळे कुलवालुकमुनि आतापना लई रह्या हता त्यां गई. मुनिने वंदना

[स्थविरस्य तपस्विनो वा, बहुश्रुतस्य वा प्रमाणभूतस्य ।
आर्यासंसर्ग्या, जनवचनीयता भवेत् ॥ ६४ ॥
किं पुनस्तरुणोऽबहुश्रुतश्च, न चापि हु विकृष्टतपश्चरणः ।
आर्यासंसर्ग्या, जनवचनीयता न प्राप्नुयात् ॥ ६५ ॥]

गाथार्थ–वृद्ध, तपस्वी, बहुश्रुत अने सर्व जनने मान्य मुनिराजने साध्वीनो संसर्ग लोकनिंदानो हेतु थाय छे तो पछी जे युवान, आगमबोध विनाना, विकृष्ट (अट्ठम उपरांत) तप नहीं करनारा एवा मुनि लोकनिंदाने पात्र केम न थाय ?

विवेचन–विधविध प्रकारनी उग्र तपस्या करनार, आगमना ज्ञाता अने पोताना चारित्र-पालनथी तेमज व्याख्यानशैली आदि कुशळताथी बहुमानने योग्य, पूज्य एवा साधु पण जो साध्वी साथे परिचय राखे, तेनो आणेलो आहार वापरे तो लोको निंदा करे छे के–तेओने परस्पर मेळ होवाथी कंइक हशे, स्नेहना कारण विना कोई संबंध थतो नथी आ प्रमाणे कुशंकाना वमळमां पडी लोको कर्मबंध करे छे अने साधुओ तेमां निमित्तभूत बने छे साध्वीसंगथी आगमज्ञाता अने दीर्घपर्यायी साधु ज्यां निंदाने पात्र बनी शकता होय त्यां तरुण अने नूतन साधुनी तो वात ज शा माटे करवी ? आ संबंधी विशेष वर्णन जणावता कहे छे के–

जइवि सयं थिरचित्तो, तहवि संसग्गिलद्धपसराए ।
अग्गिसमीवे व घयं, विलिज्ज चित्तं खु अज्जाए ॥ ६६ ॥

[यद्यपि स्वयं स्थिरचित्तस्तथापि संसर्ग्या लब्धप्रसरया ।
अग्निसमीपे इव घृतं, विलीयते चित्तं खु आर्यायाः ॥ ६६ ॥]

गाथार्थ–कदाच साधु दृढ अंतःकरणवाळो होय तो पण साध्वीनो संसर्ग वधवाथी, अग्नि समीपे जेम घी ओगळी जाय तेम तेमनुं चित्त जरूर डगी जाय.

विवेचन–साध्वी साधु पासे वारंवार आवे-जाय के साधु साध्वी पासे वारंवार आवे-जाय त्यारे परस्पर संभाषण वधे, एक बीजाना अवयवो जोवानो प्रसंग प्राप्त थाय अने उभयमांथी कोई पण दृढ मनबळवाळा होय तो स्खलना पामवानो प्रसंग उपस्थित थाय शास्त्रकारोए सर्व व्रतोमां ब्रह्मव्रतने सर्वश्रेष्ठ कह्यु छे तेनुं कारण पण एज छे के अग्नि समीपे घी मूकतां तरत ज ते पीगळवा मांडशे तेम मोहराजानी दूती समान स्त्री-संसगरूपी अग्नि पासे कोई विरल पुरुषनुं ज मनरूपी घी अक्षय रही शके. तेवा पुरुषो तो चरमकेवली श्रीजंबू

हकीकतना यचावमा पासत्थादिक कोई कहे के-आवा दोषो तो जे अज्ञानी होय तेने लागे, परन्तु बहुश्रुत होय, जेने ज्ञान परिणमी गयुं होय तेने दोषोत्पत्ति नथी, तो तेने जवाब आपता ग्रंथकार कहे छे के-

थेरस्स तवस्सिस्स व, बहुस्सुअस्स व पमाणभूयस्स ।
अज्जासंसग्गीए, जणजंपणयं हविज्जाहि ॥ ६४ ॥
किं पुण तरुणो अबहुस्सुओ अ, न य वि हु विगिट्ठतवचरणो ।
अज्जासंसग्गीए, जणजंपणयं न पाविज्जा ॥ ६५ ॥

मास, त्रण पक्ष, त्रण दिवस के त्रण प्रहोरमा ज मळे छे मणिरथ मृत्यु पामी चोथी नरके गयो

युगबाहुने घायल थयेल सांभळी तेनो पुत्र चंद्रयशा पण त्यां आव्यो तेणे तथा मदनरेखाए तेने सांत्वन आप्युं अंतसमयनी आराधना करावी एटले शुभ ध्यानपूर्वक मृत्यु पामी युगबाहु ब्रह्मदेवलोकमां देव थयो मदनरेखाए विचार्यु के हवे मणिरथ मने छोडशे नहीं, माटे गुप्त रीते ते उद्यानमांथी ज छटकी गई ते समये ते सगर्भा हती त्यांथी कोई महाटवीमां जतां पुत्र-प्रसव थयो तेने रत्नकंबलमां लपेटी, तरु नीचे मूकी सरोवरमां जतां जळहस्तीए तेने आकाशमां उछाळी कोई विद्याधरे तेने पकडी लीधी ते पण तेना रूपथी मोहित थया छेवटे नंदीश्वरद्वीपे जतां विद्याधर प्रतिबोध पाम्यो मदनरेखाए दीक्षा लीधी प्रसव थयेल पुत्रने पद्मरथ राजा लई गयो तेनुं नमि एवुं नाम राख्युं पद्मरथे दीक्षा लेता नमि राजवी थयो तेना प्रतापथी सर्व राजाए तेने वश थया एकदा तेनो हस्ती आलानस्तंभ उखेडी नाखीने नाठो तेने चंद्रयशाए कब्जे करी सुदर्शनपुरमां राख्यो नमिए ते सोंपी देवा कहेवराव्युं चन्द्रयशाए न मानता बन्ने वच्चे अत्यंत युद्ध मंडायुं आ वातनी साध्वी सुव्रता (मदनरेखा) ने खबर मळतां ते युद्धमेदान पर आवी अने बने भाईओने समजाव्या छेवटे बने प्रतिबोध पाम्या नमिने राज्य सोंपी चन्द्रयशाए संयम लीधुं आ रीते नमि विशाळ राज्यनो स्वामी बन्यो तेने एक दिवस दाहज्वर थयो तेना उपशमन निमित्ते तेनी राणीओ चंदन घसवा लागी वलयनो ध्वनि अत्यंत थवा लाग्यो, ते कर्कश जणातां तेणे तेनो निषेध कराव्यो छेवटे राणीओना हस्तमां सौभाग्यसूचक एक ज कंकण रहेवा दीधुं, एटले ध्वनि बंध थया तेवामां तेणे पुनः प्रश्न कर्यो-शुं राणीओ चंदन घसती नथी? जवाबमां मंत्रीए कह्युं के-घसे छे परन्तु एक ज वलय हस्तमां होवाथी अवाज थतो नथी नमि राजवी आ कथन सांभळी विचारवा लाग्या के-एकमां ज शान्ति छे अनेकमां उपाधि छे जो हुं व्याधिमुक्त थईश तो आ सर्व उपाधिनो त्याग करी दीक्षा लईश भाग्ययोगे आवो विचार करतां ज तेमने ऊंघ आवी गई अने ज्यारे जागृत थया त्यारे व्याधि नाश पाम्यो हतो तेमणे तरत ज संयम स्वीकार्युं देवोए तमने रजोहरण आप्युं, अने तेओ नमि राजर्षि तरीके प्रसिद्धि पाम्या चार प्रत्येकबुद्धोमां तेमनो नंबर प्रथम छे आ संबंधी विशेष वृत्तांत जाणवाना इच्छके भरहेसरबाहुबली वृत्ति भाषांतरमां 'मदनरेखानी कथा' तेमज प्रत्येकबुद्ध चरित्र वांचवुं

[स्थविरस्य तपस्विनो वा, बहुश्रुतस्य वा प्रमाणभूतस्य ।
आर्यासंसर्ग्या, जनवचनीयता भवेत् ॥ ६४ ॥
किं पुनस्तरुणोऽबहुश्रुतश्च, न चापि हु विकृष्टतपश्चरणः ।
आर्यासंसर्ग्या, जनवचनीयता न प्राप्नुयात् ॥ ६५ ॥]

गाथार्थ–वृद्ध, तपस्वी, बहुश्रुत अने सर्व जनने मान्य मुनिराजने साध्वीनो संसर्ग लोकनिंदानो हेतु थाय छे तो पछी जे युवान, आगमबोध विनाना, विकृष्ट (अट्ठम उपरांत) तप नहीं करनारा एवा मुनि लोकनिंदाने पात्र केम न थाय ?

विवेचन–विविधविध प्रकारनी उग्र तपस्या करनार, आगमना ज्ञाता अने पोताना चारित्र-पालनथी तेमज व्याख्यानशैली आदि कुशळताथी बहुमानने योग्य, पूज्य एवा साधु पण जो साध्वी साथे परिचय राखे, तेना आणेलो आहार वापरे तो लोको निंदा करे छे के–तेओने परस्पर मेळ होवाथी कडक हशे, स्नेहना कारण विना कोई संबंध धरावे नहीं आ प्रमाणे कुशंकाना वमळमा पडी लोको कर्मबंध करे छे अने साधुओ तेमा निमित्तभूत बने छे साध्वीसंगथी आगमज्ञाता अने दीर्घपर्यायी साधु जो निंदाने पात्र बनी शकता होय तो तरुण अने नूतन साधुनी तो वात ज शा माटे करवी ? आ संबंधी विशेष वर्णन जणावता कहे छे के—

जइवि सयं थिरचित्तो, तहवि संसग्गिलद्धपसराए ।
अग्गिसमीवे व घयं, विलिज्ज चित्तं खु अज्जाए ॥ ६६ ॥

[यद्यपि स्वयं स्थिरचित्तस्तथापि संसर्ग्या लब्धप्रसरया ।
अग्निसमीपे इव घृतं, विलीयते चित्तं खु आर्यायाः ॥ ६६ ॥]

गाथार्थ–कदाच साधु दृढ अंतःकरणवाळो होय तो पण साध्वीनो संसर्ग वधवाथी, अग्नि समीपे जेम घी ओगळी जाय तेम तेमनु चित्त जरुर डगी जाय.

विवेचन–साध्वी साधु पासे वारंवार आवे-जाय के साधु साध्वी पासे वारंवार आवे-जाय त्यारे परस्पर समार्पण वधे, एक बीजाना अवयवो जोवानो प्रसंग प्राप्त थाय अने उभयमाथी कोइ पण दृढ मनपळवाळा होय तो स्खलना पामवानो प्रसंग उपस्थित थाय शास्त्रकारोए सर्व व्रतोमा ब्रह्मव्रतने सर्वश्रेष्ठ कह्यु छे तेनु कारण पण ए ज छे के अग्नि समीपे घी मूकता तरत ज ते पीगळवा माडशे तेम मोहराजानी दूती समान स्त्री-संसगरूपी अग्नि पासे कोई विरल पुरुषनु ज मनरूपी घी अक्षय रही शके. तेवा पुरुषो तो चरमकेवली श्रीजंबू

स्वामी, स्थूलभद्रजी, श्रीवज्रस्वामी इत्यादिक आगळीन टेरवे गणी शकाय तेटला ज होय छे आ सत्रधमा राजीमती ने रथनेमिनु दृष्टात मारु असवाळु पाडी शके छे बावीशमा तीर्थंकर श्रीअरिष्टनेमिए सयम स्वीकार्या बाद तेना बडोल बधु रथनेमि राजीमती पासे पोताना पाणिग्रहण सबधी प्रस्ताव मूके छे राजीमती दृढ मनोबळवाळी होवाथी तेने भोगविलासनी भावना जागृत ज थती नथी रथनेमि वारवार राजीमती पासे भोगनी इच्छा दर्शाववा लाग्या पछी एक दिवसे तेने प्रतिबोधवा माटे राजीमतीए एक उपाय योज्यो मिष्टान्न आहार करीने ते बेठी हती तेवामा रथनेमि आव्या पछी मदनफळ (मींढोळ) सुघीने तेणे तरत ज उलटी करी अने रथनेमिने कह्यु के-हे दियर ! आ अन्न तमे स्नेहपूर्वक आरोगो रथनेमिए कह्यु के-वमन करेलु धान्य तो कागडा-कूतरा खाय, बीजा तो तेनी इच्छामात्र पण न करे आ जवाब सामळी राजीमती बोली के—मने तमारा भाइ अरिष्टनेमिए वमी छे तो तमे शा माटे मने इच्छो छो ! रथनेमि तरत ज प्रतिबोध पाम्या अने बनेए भगवत पासे दीक्षा लीधी रथनेमि द्वारिकानगरीमा गोचरी लइ पाछा वळता हता तेवामा वृष्टि थवाथी तेओए एक पर्वतनी गुफामा आश्रय लीधो राजीमती पण भगवतने वादी वसतिमा पाछा फरी रह्या हता तवामा तेमना पण वस्त्र भींजाइ जवाथी तेने सुकववा अने आश्रय लेवा जे गुफामा रथनेमि हता ते ज गुफामा दाखल थया उतावळमा कोइ छे के नहीं ? तेनी तपास कर्या विना ज वस्त्रो उतारीने सुकवी नाख्या अने पोते नग्न दशामा रह्या.

आ दृश्य जोता ज रथनेमिनो पुर्वना सुपुप्त रहेलो काम उछळी आव्यो तेओए *तरतज राजीमती पासे भोगनी प्रार्थना करी राजीमती तरत ज घरमाइ गया.* वस्त्र परिधान करी तेमणे शात चित्तथी कह्यु के-" अह च भोगरायस्स, त च सि अधगवह्णिो । मा कुले गधणा होमो, सजम निहुओ चर ॥१॥ "
हु भोगकुळमा जन्मो छु, उग्रसेन जेवा मारा पिता छे, तु समुद्रविजयनो पुत्र *छे आवा उत्तम कुळमा उत्पन्न थइने आपणे गधन सर्प जेवा अधम न थवु माटे* निश्चयतापूर्वक सयमनु पालन करो बे जातिना सर्प छे-एक गधन अने एक अगधन गधन जातिना सर्प कोइने डस्यो होय अने जो मत्रवादी उपचार करे तो पाछो आवीने झेर चूसी जाय अने अगधन जातिना सर्प वादी गमे तेटलो मत्रोपचार करे तो पण मृत्यु पामवु पसद करे पण झेर पाछु न चूसे. तेम हे रथनेमि ! तमोए पूर्वे जे भोगविलासो वम्या छे तेने फरी वार ग्रहण करवानो वाछामात्र पण करवी उचित नथी राजीमतीना आवा उत्तम बोधदायक वचनथी रथनेमिए परमात्मा पासे आवी प्रायश्चित्त स्वीकार्यु रथनेमि जेवा मुनीश्वर पण ज्या चलायमान थइ गया त्या आ काळना सामान्य साधुओनी वात ज शामाटे करवी ?

सव्वत्थ इत्थिवग्गंमि, अप्पमत्तो सया अवीसत्थो ।
नित्थरइ बंभचेरं, तव्विवरीओ न नित्थरइ ॥ ६७ ॥
सव्वत्थेसु विमुत्तो, साहू सव्वत्थ होइ अप्पवसो ।
सो होइ अणप्पवसो, अज्जाण अणुचरंतो उ ॥ ६८ ॥
खेलपडिअमप्पाणं, न तरइ जह मच्छिआ विमोएउं ।
अज्जाणुचरो साहू, न तरइ अप्पं विमोएउं ॥ ६९ ॥

[सर्वत्र स्त्रीवर्गेऽ–प्रमत्तः सदा अविश्वस्त ।
निस्तरति ब्रह्मचर्यं, तद्विपरीतो न निस्तरति ॥ ६७ ॥
सर्वार्थेषु विमुक्तः, साधु. सर्वत्रात्मवशो भवति ।
स भवत्यनात्मवश आर्यायाः अनुचरन् तु ॥ ६८ ॥
श्लेष्मपतितमात्मान, न शक्नोति यथा मक्षिका विमोचयितुम् ।
आर्यानुचरन् साधु–न शक्नोत्यात्मान विमोचयितुम् ॥ ६९ ॥]

गाथार्थ–सर्वत्र स्त्रीवर्गनी अदर हमेशा अप्रमत्तपणे विश्वास रहित वर्तनार साधु ब्रह्मचर्य पाळी शके छे, विपरीतपणे वर्ते तो ब्रह्मचर्य गुमावी बेसे छे. सर्व पदार्थमा ममता रहित साधु स्वतत्र–स्वाधीन होय छे परन्तु जो ते साध्वीना पाशमा बधाय–साध्वीना कथन प्रमाणे अनुसरे तो ते परतत्र–सेवक बनी जाय छे. जेम मळ(श्लेष्म)मां चोंटी गयेल माखी छूटी थई शकती नथी तेम साध्वीना स्नेहपाशमां झकडायेल साधु तेमाथी मुक्त थई अन्यत्र विहार करी शकतो नथी.

विवेचन–कोइ शंका करता पूछे के–स्त्रीनो परिचय वधवाथी स्त्री पुरुषने शु करे ? तेनो जवाब ए छे के–स्त्री पोते तो कई करती नथी परन्तु पुरुष तेने देखीने चलित थाय छे पुरुषनी लागणीओ अने चित्तवृत्तिओ चपळ होय छे, ज्यारे स्त्रीने मैथुननी अभिलाषा विशेष होय छे तमज तेने मोहनीयकर्मनो उदय अधिक होय छे माटे शास्त्रकाराए डगले ने पगले सावचेत रहेवानो उपदेश आप्यो छे श्राविका करता साध्वीनी स्थिति ऊंची ने आदरपात्र छे तेणे जिनेश्वर भगवतनो वेष धारण कर्यो छे. तेने भ्रष्ट करवाथी तीर्थंकरनी आशातनारूप महादोष उपजे छे, समकितनो नाश थाय छे, ससार परिभ्रमण

वधे छे जेम खेतरनु रक्षण करवा माटे तेने फरती वाड करवामा आवे छे तेम ब्रह्मचर्यरूपी क्षेत्रने सुरक्षित राखवा माटे शास्त्रकारोए *नव वाड उप देशी छे तनु जो यथार्थ पालन करवामा आवे तो व्रतशिरोमणि ब्रह्मचर्यथी कदी पण पतित न थवाय

श्लेष्ममा पडी गयेल मक्षिका जेम पोतानो जातने मुक्त करी शकती नथी तेम साध्वीमा अनुरागी बनेल साधु परतन्त्र बनी जाय छे नवकल्पी विहार के दोष रहित आहारनी गवषणा करी शकतो नथी तेमज मोक्षमाग पण साधी शकतो नथी मोक्षमार्गना पथिके तो सदैव साध्वी-सगने वर्ज्य ज गणवो.

आ सबधमा काइ कहेशे के-साध्वी बधनरूप छे तो पछी तेने दीक्षा ज न देवी, तेने बधो आचारविचार शीखवो छो, अध्ययन अर्थे साधु पासे आव, साधु तनी सार-सभाळ लेवा माटे वसतिस्थानमा जाय इत्यादिक कारणोमा साध्वी-ससर्ग करवा पडे छ तो तेमा शो लाभ समजवो? तेनो जवाब ए छे के-विधिपूवक साध्वीओने रावयी तेनी सारसभाळ लेवी ते तो अतीव निर्जरानु कारण छे कह्यु छे के—

साहुस्स नत्थि लोए, अज्जासरिसी हु बंधणे उवमा ।
धम्मेण सह ठवंतो, न य सरिसो जेण असिलेसो ॥ ७० ॥

[साधोर्नास्ति लोके, आर्यासदृशी हु बन्धने उपमा ।
धर्मेण सह स्थापयतो, न च सदृशो जानीह्यश्लेषः ॥ ७० ॥]

गाथार्थ—आ जगतमा साध्वीने अविधिए अनुसरनार साधुने तेना समान बीजु बंधन नथी अने साध्वीने धर्ममार्गमा स्थापन करनारने एना समान बीजी कोई निर्जरा नथी

विवेचन—सर्व सावद्यनु प्रत्याख्यान करी सर्वविरति स्वीकारनार साधुने आ जगतमा कोई पण वस्तु बधनकारक नथी, फक्त एक साध्वी ज बधनकर्ता

---

* शीलव्रतनी नव वाडो आ प्रमाण जाणवी १ स्त्री, पशु अने नपुसक रहित स्थानमा रहेवु, २ स्त्रीनी साथे रागपणे कथा करवी नहीं, ३ स्त्री बेठी होय ते आसने पुरुष बे घडी पर्यंत बेसे नहीं तेमज पुरुष बेठो होय ते आसने स्त्री त्रण प्रहोर पर्यंत बेसे नहीं, ४ सरागपणे स्त्रीना अगोपाग जोवा नहीं, ५ ज्या स्त्री-पुरुष सूता होय तथा कामक्रीडा विषे वातो करता होय त्या भींत प्रमुखने आतरे रहेवु नहीं, ६ पूर्वे स्त्रीनी साथे भोगवेला कामभोग समारे नहीं, ७ विकार जागे तेवो सरस-स्निग्ध आहार करे नहीं ८ नीरस अधिक आहार ले नहीं तेमज ९ शरीरनी टापटीप-विभूषा पण न करे

छे जो तेने न अनुसरे अने धममा स्थिर करे तो साधुने अतीव निर्जरानु कारण थाय श्रीनिशीथसूत्रना पदरमा उद्देशाना भाष्य तथा चूर्णिमा कह्यु छे के-" पुच्छ सहुमीअपरिसो, चउभंगे पढमगे अणुण्णातो । सेसतिगे नाणुण्णा, गुरुगा परियट्टणे ज च ॥१॥" शिष्य पूछे छे क-हे गुरु ! साधु तथा साध्वीना वर्गने भिन्न भिन्न क्षेत्रमा राखवानु आगममा फरमाव्युं छे के जेथी दोष न लागे परन्तु साध्वीओ करीए ज नहीं तो दोषोद्भव क्याथी थाय ? वळी आगममा श्राविकाने दीक्षा देवानो निषेध कर्यो नथी तो पछी तेओने समाळवी कई रीते ? आचार्य तेनो जवाब आपता कहे छे के—जुदा जुदा क्षेत्रमां ज राखवा एवो नियम नथी दीक्षा लीधा बाद विधिपूवक प्रवर्तन करे तो महानिजरानो लाभ ज छे, जो अविधिए प्रवर्तावे तो महामोहनीय कम बधाय अने ससारमा चिर काळ पयन्त भमे क्यो साधु समाळ राखी शके ? साध्वीना पालननो विधि कइ छे ? ते सबधी हु तने सक्षिप्तमा समजावु छु सहू भीयपरिसो-ना चार भागा थाय छे १ सहू भीयपरिसो, २ सहू अभीयपरिसो, ३ असहू भीयपरिसो अने ४ असहू अभीयपरिसो. प्रथम भगनो परमार्थ ए छ के-धैर्यवंत, बळवत, जितेन्द्रिय, सग्रह शील (वस्त्र, पात्रादिकनो सग्रह करवामा समथ), स्थिरचित्त, अल्पाहारी, उपधिक्षेत्रना गवेषक होय ते सहू कहेवाय, तेमज जेनाथी सर्वे साध्वीओ भय पामे, डरने अग कइ पण अकृत्य न करी शके, तेनी मुखप्रतिभाथी ध्रूजती रहे तेने भीयपरिसो कहेवाय आवा साधुना कबजामा साध्वीओ रही शके बाकीना त्रण भागावाळा साधुओ साध्वीओनु यथार्थ पालन करी शके नहीं जो तेओ तेने राखे ता चारमासी गुरु प्रायश्चित्त आवे बीजा भागावाळा साधु पोते धैर्यवंत विगरे गुणवाळा छे परन्तु साध्वीओने अकुशमा राखी शके नहीं, त्रीजा भागावाळा पोते ज समर्थ नथी-शुद्ध चारित्रपात्र नथी तो साध्वीओने कइ रीते अकुशमा राखी शके ? अने चोथा भागावाळा साधु ता समर्थ नथी तेम भय पण उपजावी शक तेम नथी एटले प्रथम भग सिवायना छेल्ला त्रणे भागावाळा साधुओ साध्वीनी सारसभाळ राखी शके नहीं पहेला भागावाळा साधुए यावज्जीव साध्वीओन राखवी जोइए, जो न राखी शक तो चारमासी गुरु दड आवे पहेला प्रकारना साधुए साध्वीने दीक्षा आप्या बाद जो तेनी इच्छा जिनकल्पीपणु स्वीकारवानी थाय ता अन्य गच्छमा तेवा साधुनी निश्रामा साध्वीने सोंप्या पछी ज ग्रहण करी शके एवो कोइ योग्य साधु न होय ता शास्त्रकार जिनकल्पीपणु स्वीकारवानो निषेध करे छ जिनकल्पीपणामा जे निर्जरा थाय तेना करतां अधिक निर्जरा साध्वीओना सरक्षणथी थाय छे कह्यु छे के-" णिणकप्पट्ठि अस्स जा निज्जरा तओ विधीए सजंतीउ अणुपालेंतस्स विउलतरा णिज्जरा भवति॥"

हवे प्रसंगोपात्त श्रीनिशीथसूत्रना आठमा उद्देशाना भाष्य तथा चूर्णिमा जणावेल साधु साथेना साध्वीविहारने लगतु वर्णन करवामा आवे छे पण क्षेत्रमाथी बीजा क्षेत्रमां साध्वीओने जई शकी होय अने मार्गमां भय के उपद्रव थवानी शंका न रहेती होय तो साधु पहेला ते क्षेत्रमा जाय अथवा तो अमुक अमुक आंतरे मुकाम करे मार्गमा भय होय तो साधु आगळ अने पाछळ एम सर्व प्रकारे विचरे साध्वीना संसारी पक्षना कोई सगधीए दीक्षा लीधी होय तो तेने साथे राखीने आचार्य बीजा बे त्रण साधुओ साथे विचरे वळी विघ्ननो भय होय तो सार्थनो आश्रय ले सहस्रयोधी सुभटे दीक्षा लीधेल होय तो तेने साथे लईने जाय कोईक आचार्य आ संबंधमा एम पण कहे छे के-साध्वीओ आगळ जाय ते सारु, कारण के लघुशंकादिनु निवारण करवामा हरकत न आवे आ तो सामान्य विहारनी वात थई, विशेष वृत्तांत तो बृहत्कल्पनी टीकाना पहेला खंडना प्रातभागद्वारा जाणवी

श्रीस्थानांगसूत्रना पांचमा स्थानकमा कह्यु छे के-पांच कारणे साधु-साध्वी एकठा रहे तो पण जिनाज्ञानु उल्लंघन थाय नहीं-१ कोई महाअटवीमां साधु-साध्वी साथे रहे, बेसे, सुवे तथा नैषेधिकी करे, २ कोई गाममा, नगरमां अगर तो राजधानीमा जता चातुर्मासमां साधुओने रहेवा वसतिस्थान मळ्युं होय अने साध्वीओने न मळ्युं होय तो साथे रही शके अथवा साध्वीओने रहेवा उपाश्रय मळ्यो होय अने साधुओने न मळ्यो होय तो साथे रहे, बेसे, नैषधिकी इत्यादि करे, ३ वर्षाद आवतो होय अने बीजी जग्या न मळी शकती होय तो साधु-साध्वी नागकुमार तथा सुवर्णकुमारना मंदिरमा एकत्र रही शके, ४ साध्वीओना वस्त्रो चोराई जवानो भय रहेतो होय तो साधु-साध्वी एकठा रही शके, ५. साध्वीओने युवान तथा रूपवती देखी कोई कामी पुरुष तेनी साथे मैथुन सेवननी अभिलाषा करे तो बन्ने एकत्र रही शके आ पांच कारणो महामुनिओने सेववा घटे सामान्यकाळे तो भेगा रहेवु महामोहनुं कारण छे तेथी ते प्रणालिकानो सर्वथा निषेध करवामा आव्यो छे जिनकल्पी मुनि (जे वस्त्ररहित होय छे ते) पांच प्रसंगोमा वस्त्र सहित साध्वीओनी साथे रही शके-तेमा जिनाज्ञानो भंग थतो नथी ते कारणो आ प्रमाणे-१ कोई साध्वीनु चित्तभ्रम थई गयुं होय, २ कामातुर होय, ३ भूतादिकना वशथी थयेल होय, ४ उन्मादी बनी गई होय अने ५ कोई साध्वीने दीक्षा आपी होय अने बीजी साध्वीओ ते स्थळे न होय आ कारणोमा जो किंचित्मात्र दूषण लगाडे तो महादंडनो भाजन थाय उपर्युक्त वृत्तांतना अनुसंधानमा ज कहे छे के—

वायामित्तेण वि जत्थ, भट्ठचरिअस्स निग्गहं विहिणा ।
बहुलद्धिजुअस्सावी, कीरइ गुरुणा तयं गच्छम् ॥ ७१ ॥

[वाङ्मात्रेणापि यत्र, भ्रष्टचरितस्य निग्रहो विधिना ।
बहुलब्धियुतस्यापि, क्रियते गुरुणा सको गच्छः ॥७१॥]

गाथार्थ—वचनमात्रथी पण चारित्रभ्रष्ट थयेल मुनि कदाच घणी ज लब्धिवाळो होय तो पण ज्यां विधिपूर्वक तेनो निग्रह कराय छे तेने ज खरेखर सदाचारी गच्छ कहेवाय

विवेचन–शास्त्रकार कहे छे के-शिष्य गमे तेवो शक्तिशाळी या तो लब्धिधारी होय परन्तु जो ते व्रतमां दूषण लगाडे तो तेना प्रत्ये अंशमात्र स्नेह राख्या सिवाय तरत ज तेनो त्याग करवो अथवा उचित दंड (शिक्षा) करवो आ संबधमां एक क्षुल्लक साधुनु दृष्टांत जाणवा जेवुं छे

वसंतपुरमां देवप्रिय नामनो श्रेष्ठी हतो तेनी स्त्री युवावस्थामा ज मृत्यु पामी पछीमां त्यां एक मुनिराज पधार्या तेनी देशना साभळता तेने वैराग्य उपज्यो एटले श्रेष्ठिये पोताना आठ वर्षना पुत्र साथे दीक्षा लीधी सयम-पालन करता थोडा दिवसो पसार थया तेवामां बाल (क्षुल्लक) साधुए पिताने कह्यु के-पिताजी! हु पगरखा पहेर्या विना चाली शकतो नथी, मारा पगमा पीडा थाय छे त्यारे पिताए कह्यु के-ठीक, तु पगमा पगरखा पहेर थोडा दिवस बाद पुत्रे कह्यु के-हु ताप सहन करी शकतो नथी पिताए कह्यु-छत्र धारण कर पुत्रे पुन कह्यु-हु गोचरी लेवा जइ शकतो नथी पिताए गोचरी लावी आपवी शरू करी क्षुल्लके वळी कह्यु-हु भूमिशयन करी शकतो नथी पिताए सुवा माटे पाटियु लावी आप्यु पुत्रे पाछु कह्यु-हु लोच करावी शकतो नथी पिताए तेनु मुंडन कराव्यु पछी तो ते सचित्त जळथी स्नान करवा लाग्यो, मलिन वस्त्रो धोवराववा लाग्यो आ प्रमाणे चाली रह्यु हतु तेवामां तेणे एक दिवसे तेना पिताने कह्युं के-हु स्त्री विना रही शकतो नथी, मने परणावो पिताए जाण्यु के-आ अयोग्य छे तेने हवे राखवो उचित नथी, एम विचारी तेने काढी मूक्यो ते पण चारित्र विराधी, मृत्यु पामी पाडो थया देवप्रिय श्रेष्ठी चारित्र पाळी, स्वर्गलोकमां गयो अवधिज्ञानथी पोताना पुत्रनी स्थिति जोता तेने प्रतिबोधवा तेणे सार्थवाहनु रूप लीधु अने पाडाने खरीदी लइ तेना पर अत्यत भार भरवा लाग्यो अतिशय भारथी पाडानी गति मंद पडी गई, तेने कष्ट थवा लाग्यु ते समये सार्थवाह 'हे पिता! हु उघाडे पगे चालवा समर्थ नथी, हु गोचरी लेवा जइ शकीश नहीं, हुं केशलुचन करावी शकीश नहीं' विगेरे क्षुल्लकना वचना शब्दो वारंवार तेने सभळाववा लाग्यो, जे साभळता ज पाडाने जातिस्मरण ज्ञान थयु पछी ते पाडो पश्चात्ताप करी, अणशण स्वीकारी देव थयो दृष्टांतनो परमार्थ ए छे के-पिताए पुत्रमोह न करता जेम तेनो त्याग कर्यो तेम शक्तिधारी, लब्धिधारी शिष्यनो मोह न करता तथा समर्थ शिष्यने पण

प्रायश्चित्त आपवुं अहीं प्रसगथी लब्धिओनुं वर्णन करता कहे छे के–

आमोसही १ विप्पोसहि २, खेलोसहि ३ जल्लओसहि ४ चेव ।
सव्वोसहिसभिन्ने ५–६, ओही ७ रिउ८ विउलमइलद्धी ९ ॥ १ ॥
चारण १० आसीविस ११ केवली अ १२, गणधारिणो अ १३ पुव्वधरा१४।
अरिहंत १५ चक्कवट्टी १६, बलदेवा १७ वासुदेवा १८ य ॥ २ ॥
खीरमहुसप्पिआसव १९–कोट्ठयबुद्धी २० पयाणुसारी य २१ ।
तह बीयबुद्धि २२ तेयग २३–आहारग २४ सीयलेसा य २५ ॥ ३ ॥
वेउव्विदेहलद्धी २६, अक्खीणमहाणसी २७ पुलागा य २८ ।
परिणामतववसेण, एमाई हुन्ति लद्धीओ ॥ ४ ॥

१. आमर्षौषधिलब्धि–मुनिना हाथ, पग विगेरे अवयवना स्पर्शथी रोगीना सर्व व्याधिओ नाश पामे आ लब्धिधारी मुनिनो स्पर्श ज औषधि जेवो होय छे २. विप्रुडौषधिलब्धि–मळ–मूत्रना स्पर्शथी अथवा व्याधिना स्थाने लगाडवाथी सर्व व्याधिओ नाश पामे ३. खेलौषधिलब्धि–श्लेष्म मटले थूक, बडखा के लींटना स्पर्शथी सर्व रोग नाश पामे ४. जल्लौषधिलब्धि–कर्णनो, दांतनो, नासिकानो, जिह्वानो तथा शरीरनो मेल ते जल्ल, तेनाथी व्याधियो विनाश पामे ५ सर्वौषधिलब्धि–केश, रोम, नख आदि सर्व शारीरिक पदार्थद्वारा रोगो नाश पामे लब्धिवंत मुनिना केश, रोम, रुधिर विगेरे पदार्थो सुगंधी होय छे कलिकालसर्वज्ञ–श्रीमद्हेमचन्द्राचार्ये योगशास्त्रना प्रथम प्रकाशनी वृत्तिमां कह्युं छे के–" योगिना कायसंस्पर्शः, सिञ्चन्निव सुधारसैः । क्षिणोति तत्क्षण सर्वा–नामयानामयाविनाम् ॥ १ ॥ योगिनां योगमाहात्म्यात्, पुरीषमपि कल्पते । रोगिणां रोगनाशाय, कुमुदामोदशालि च ॥ २ ॥ तथाहि योगमाहात्म्या–द्योगिनां कफबिन्दवः । सनत्कुमारादेरिव, जायन्ते सर्वरुक्छिदः ॥ ३ ॥ मलः किल समाम्नातो, द्विविधः सर्वदेहिनाम् । कर्णनेत्रादिजन्मैको, द्वितीयस्तु वपुर्भवः ॥ ४ ॥ योगिनां योगसम्पत्ति–माहात्म्याद् द्विविधोऽपि सः । कस्तूरिका परिमलो, रोगहा सर्वरोगिणाम् ॥५॥ नखाः केशा रदाश्चान्य–दपि योगिशरीरगम् । भजते भेषजीभाव–मिति सर्वौषधिः स्मृता ॥ ६ ॥ तथाहि तीर्थनाथानां, योगभृच्चक्रवर्त्तिनाम् । देहास्थिशकलस्तोमः, सर्वस्वर्गेषु पूज्यते ॥ ७ ॥ "
योगीपुरुषनो कायस्पर्श जाणे अमृतथी सिंच्यो होय तेवो हाय छे. तेनाथी

सर्व प्रकारनी व्याधियो नाश पामे छे (१) साधुपुरुषना योगना माहात्म्यथी तेमनु स्थंडिल पण कमळ जेवु सुगंधी अने व्याधिविनाशक बनी जाय छे (२) वळी योगप्रभावथी कफना बिंदुमात्रथी *सनत्कुमार चक्रवर्तीनो मारक

* एकदा देवसभामां नाटक थई रह्यु हतु देवोनो राजा इंद्र तथा अन्य देवो ते [illegible] रह्या हता तेवामां एक अत्यन्त तेजस्वी देव त्यां आव्यो तेने जोईने बीजा देवो [illegible] थोडी वारे ते देव चाल्यो गयो तेना गया पछी देवोए इंद्रने पूछ्यु-आवो [illegible] कोई देव हशे ? इंद्रे कह्युं-सनत्कुमार चक्रवर्तीना रूप आगळ आ सौंदर्य शा हिसाबमां छे ? इंद्रकथननी खातिरी माटे बे देवो ब्राह्मणनु रूप लई मर्त्यलोकमां आव्या [illegible] राजाज्ञा मगावी तेओ राजमहेलमां गया देवो चक्रवर्तीनु रूप जोई चकित थई गया [illegible] पूछाव्यु चक्रीए तेमने तेम करवानु कारण पूछ्यु एटले तेओए कह्यु के-विश्वमां [illegible] वखणाय छे ते जोवा माटे अमे आव्या हता खरेखर तमारा थता वखाण करतां पण [illegible] मनोहर छे चक्रीने आ शब्दो सांभळी अभिमान उद्‌भव्यु गर्वना अतिरेकमां [illegible] कह्यु-मारु रूप जोवु हतु तो अत्यारे शामाटे आव्या ? स्नान करी, पोशाक [illegible] सभामां जईश त्यारे मारु खरेखरु रूप जोजो

स्नानादि विधि पूर्ण करी चक्री राजसभामां गया देवो पण आव्या परन्तु [illegible] उल्लासने बदले उदासीनता छवाई गई चक्री पोतानी प्रशंसा सांभळवा इंतेजार [illegible] तेवामां तेओना मुख ऊपर ग्लानि छवाई गयेल जोई तेणे ज सामो प्रश्न कर्यो-[illegible] पहेला आनन्दमां हता अने हमणां उदास केम थई गया ? ब्राह्मणोए स्पष्ट कह्युं-[illegible] देहमां अचानक फेरफार थई गयो छे, तमारु रूप घणु ज विकृत थई गयु [illegible] लागे छे के तमारा देहमां घणा रोगो उत्पन्न थशे आ प्रमाणे कहीने देवो [illegible]

तेमना गया बाद सनत्कुमारे पोताना देह तरफ दृष्टि करी [illegible] क्षीण थयेली जणाई देहनी असारता विषे विचार करता फलाको [illegible] अविश्वासी देह प्रत्ये खरेखर घृणा उपजी अने संयम स्वीकारी [illegible]

संयम-ग्रहण बाद तेमणे आ देहनो जेटलो लाभ लेवाय [illegible] ऊपर छठ करवा लाग्या अने पारणाना दिवसे पण मात्र चणा ने [illegible] तपश्चर्या ए ज तेमनो जीवन-मन्त्र थई पडयो उग्र तपथी अने [illegible] भयकर सात रोग लागु पड्या आखा शरीरे खस फूटी निकळी, [illegible] कर्यु नहीं तेमणे पूर्ववत् तपश्चर्या चालु ज राखी आवा [illegible] अनेक प्रकारनी लब्धिओ प्राप्त थई हवे पहेलानु अभिमान [illegible] करे तो तेमना रोगो लब्धिथी दूर करी शकत परन्तु आ निःसार देह प्रत्ये [illegible]

एकदा तेओ बेठा हता तेवामां बे वैद्यो आवीने [illegible] थई पण बदलामां आशा वगर मफत दवा करीए छीए [illegible] करवा मागीए छीए सनत्कुमारे तेमने स्नेहभावे [illegible] छो ? शरीरनी के आत्मानी ? शरीरना रोगो तो हुं मटाडी शकुं [illegible] रोगोने [illegible]

सर्व रोगो नष्ट थाय छे (३) सर्वदेहधारीओने मल बे प्रकारनो होय छे-एक कान तथा नेत्रादिकथी उत्पन्न थनारो अने बीजा शरीरथी उत्पन्न थनारो (प्रस्वेद) छता पण योगीओनो बने प्रकारनो मल, योग-प्रभावथी, कस्तूरी जेवी सुगंधी अने व्याधिविनाशक होय छे (४-५) योगीना नख, केश, दांत अने बीजा पण जे अवयवो छे ते औषधिभावने पामेला होय छे (६) तेथी ज रीते धर्मचक्रवर्त्ती तीर्थंकरोना अस्थिओनो समूह देवलोकने विषे पण पूजाय छे ते अस्थिओ पुण्य-परमाणुना निपजेला होय छे तेथी सर्व देवो तेनी पूजा करे छे अने उपद्रव थये छते तेनु न्हवणजळ छांटवाथी विघ्नोप शांति थाय छे (७) वळी कहे छे के-जेम मेघवृष्टिनुं जळ नदीना जळमा मळवा थी जेम नदीनु पाणी रोग हरनारु थाय छे तेम सर्व लब्धिधारी मुनिना शरीर ने स्पर्शीने आवेला वायुद्वारा पण झेरथी मूर्च्छा पामेल प्राणी स्वयमेव सचेत थइ जाय छे विषमिश्रित आहार नजर सामे आव्यो होय तो ते अन्न पण निर्विष थइ जाय छे वळी कोइ पण जातनो विकार होय के वैर होय ते पण तुरत शमी जाय छे. हवे ६ सम्भिन्नश्रोतमूलब्धि-सांभळवानु कार्य कर्णनु छे छता कोई पण इन्द्रियद्वारा सर्व इन्द्रियोना विषयो जाण वानी शक्ति कहु छे के-" सर्वेन्द्रियाणां विषयान्, गृह्णात्येकमपीन्द्रियम् । यत्प्रभावेण सम्भिन्न-श्रोतोलब्धिस्तु सा मता ॥१॥" जे लब्धिना प्रभावथी एक इन्द्रियवडे सर्व इन्द्रियोना विषयोने ग्रहण करी शके ते सभिन्नश्रोतस नामनी लब्धि जाणवी वळी बार योजनमां पडेला चक्रवर्तीना सैन्यना विस्तारमां सर्व स्थळे एक साथे वाजिंत्रो वागता होय ते सर्वने जुदा जुदा समजवानी शक्ति पण सभिन्नश्रोतसलब्धि कहेवाय छे ७ अवधिज्ञानलब्धि-इन्द्रियोनी के मननी मदद लीधा विना आत्मा रूपी द्रव्योने आत्मसाक्षात् जाणे अथवा देखे ८ ऋजुमतिमनःपर्यवज्ञानलब्धि-इन्द्रिय तथा मननी सहाय विना अढी आंगुल न्यून अढी द्वीपमा रहेला संज्ञी पंचेंद्रिय जीवोना मनोगत भावोने जाणे ते मन पर्यवज्ञानलब्धि कहेवाय परतु तेमा जे सामान्यथी अल्प पर्याय जाणे ते ऋजुमतिमन पर्यवज्ञानलब्धि कहेवाय अढी आंगुल उत्सेधांगुल समजवा ९ विपुलमतिमनःपर्यवज्ञानलब्धि-संपूर्ण अढीद्वीपना संज्ञी पंचेंद्रिय जीवोना मनोगत भावो विशेषपणे जाणे १० चारणलब्धि-आकाशमा गमन करवानी शक्ति,

---

शकता हो तो करो आम कही तेमणे पोतानी कोही गयेली आगळी पर मात्र थूक लगाडयु के तराज ते आगळी कनकवर्णी थई गई वैद्यो तेमनी शक्ति जोई तेमना चरणमां नमी पड्या तेओए कह्यु के-अमे वैद्यना रूपमां देवो छीए पहेला आपनु रूप जोवा अमे आवेला आपना जेवा आ जगतमां कोई विरला ज होय छे आ सबधमां विशेष वृत्तांत जाणवाना इच्छुके त्रिषष्ठिशलाकापुरुषचरित्र भाषांतर पर्व ४थुं, सर्ग ७ मो, पृष्ठ १७६-१९३ पर्यंत जोवु

ते बे प्रकारनी छे-(१) जंघाचारण अने (२) विद्याचारण वच्चे विसामो लीधा विना ज तेरमा रुचक द्वीप सुधी जइ, त्यां शाश्वत चैत्यने वंदना करी, पाछा वळता एक विसामे आठमा नंदीश्वर द्वीपे आवी, त्यां शाश्वत चैत्योने वांदी, बीजुं उड्डयन करी स्वस्थाने आवे ते जंघाचारण कहेवाय प्रथम उड्डयने मानुषोत्तर पर्वते जइ, त्यां शाश्वत चैत्योनी वंदना करी, बीजा उड्डयने नंदीश्वरद्वीपे जइ त्यां शाश्वत चैत्योने वांदे अने त्यांथी पाछा वळता एक ज उड्डयने स्वस्थाने आवे आ प्रमाणे तिर्च्छागति संबंधी जाणवुं ऊर्ध्वगतिमां जंघाचारण मुनि एक ज उड्डयनवडे मेरुपर्वतना शिखर पर रहेल पांडुकवन सुधी जइ, शाश्वत चैत्योने वंदना करी, पाछा वळता एक उड्डयनथी नंदन वनमां आवी, त्यां शाश्वत चैत्योने वांदी बीजे उड्डयने स्वस्थाने आवे विद्याचारण तो प्रथम उड्डयने भूमिथी ५०० योजन पर आवेला मेरुपर्वतना नंदनवनमां जई, त्यां शाश्वत चैत्योने वांदी, बीजा उड्डयनवडे मेरुना शिखर पर एटले नंदनवनथी ९८५०० योजन ऊपर रहेला पांडुकवनमां आवी, शाश्वत चैत्योने वांदी, पाछा उतरतां एक ज उड्डयनथी स्वस्थाने आवे जंघाचारण मुनिनी गति जतां वखते विशेष होय छे अने पाछा वळतां ओछी होय छे तेनुं कारण ए छे के जंघाबळ प्रथम वधारे प्रमाणमां होय छे अने पछी थाक लागे तेथी घटी जाय छे विद्याचारणोने प्रथम विद्याभ्यास अल्प होय छे अने पछी जेम जेम विशेष जाप करवामां आवे तेम तेम विद्या विशेष अभ्यस्त (ताजी) थवाथी गति वधे छे एटले प्रथम गति विसामावाळी होय छे अने स्वस्थानके सतत पाछा वळतां बीजी गति विसामारहित होय छे वळी पद्मासनथी के कायोत्सर्गासनथी शरीरने हलाव्या विना आकाशमां उडवानी शक्तिवाळा व्योमचारण कहेवाय छे आ उपरांत बीजा पण घणा भेदो छे कहयुं छे के—जल १ जङ्घा २ फल ३ पुष्प ४ पत्र ५ श्रेण्य ६-ग्निशिखा ७ धूम ८ नीहारा ९ वश्याय १० मेघ ११ वारिधारा ११ मर्कटकतन्तु १३ ज्योतीरश्मि १४ पवनाद्यालम्बनगतिपरिणामकुशलाः १५ । (१) जळचारण-वाव, नदी, सरोवर अने समुद्र विगेरे जळाशयोमां अप्कायनी विराधना कर्या विना जेम भूमि ऊपर पग उपाडीने मूकीने चाले तेम जळमां (जळनी सपाटी ऊपर) पग उपाडीने चाले (२) जंघाचारण-भूमि ऊपर चार आंगळ ऊंचा रहीने चालवानी शक्ति (३) फळचारण-अनेक प्रकारना वृक्षो ऊपर रहेला फळोने अवलंबीने चालवा छतां फळना जीवने अंशमात्र बाधा न पहोंचे (४) पुष्पचारण-अनेक वृक्षादिकना फूलो ऊपर पग मूकीने चालवा छतां पुष्पना जीवने कंइ पण पीडा न थाय (५) पत्रचारण-पत्रो (पांदडां) ऊपर पग मूकीने चालवा छतां कष्ट न थाय (६) श्रेणिचारण-चार सो योजन ऊंचा निषध अने नीलवंत पर्वतनी टंकछिन्न श्रेणिओना अवलंबनवडे (विषम टेकरीओ अने महाशिलाओने अवलंबीने) पग मूकीने चडे तेमज उतरे (७) शिखाचारण-

अग्निनी ज्वाला पर पग मूकीने आकाशमां गमन करे तो पण अग्निकायना जीवने परिताप न थाय तेमज मुनिने दाह पण न थाय (८) धूमचारण-धूमाडो ऊंचो जाय, तिर्च्छो जाय तो पण तेने अवलंबीने आकाशमां अस्खलित गति करी शके (९) नीहारचारण-धूमस के जे जळनुं रूपांतर छे तेने अवलंबीने अप्कायना जीवने किलामणा कर्या सिवाय विचरी शके (१०) अवश्याय-चारण-झाकळना पाणीने अवलंबीने दुःख उपजाव्या सिवाय आकाशमां विचरी शके (११) मेघचारण-आकाशमां चढी आवेला पाणीवाळा वादळाना अप्कायना जीवोने कष्ट उपजाव्या सिवाय आकाशमां विचरी शके (१२) वारिधारा चारण-वरसाद वरसता होय त्यारे पण जळवृष्टिना अप्कायना जीवने उपद्रव कर्या सिवाय विचरी शके (१३) मर्कटतंतुधारण-वांका-तेढा वृक्षोना आंतराओमां करोळिया जे जाळ गूंथे छे ते जाळ ऊपर पग मूकीने चालवा छतां तेना एक तांतणो पण तूटे नहि-तेवी रीते आकाशमां गमन करी शके (१४) ज्योतिरश्मिचारण-चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र अने तारा विगेरेना किरणानुं अवलंबन लई आकाशमां विचरी शके श्रीगौतमस्वामी आ लब्धिप्रभावथी अष्टापद पर्वत ऊपर चढ्या हता ते प्रसिद्ध ज छे (१५) वायुचारण-वायु ऊर्ध्व वातो होय, तिर्च्छो वातो होय, उत्कृष्ट गतिए वातो होय, सीधी गतिए वातो होय के कोई पण दिशामां वातो होय ते दिशानी वायुश्रेणिने अवलम्बीने वायुकाय जीवनी विराधना कर्या विना विचरी शके श्रीसमवायांग सूत्रमां कह्युं छे के-चारण मुनिओ कइक अधिक सत्तर हजार योजन ऊर्ध्व गति करीने पछी तिर्च्छी गति करे कह्युं छे के-" इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ साइरेगाइ सत्तरसजोअणसहस्साइ उड्ढ उप्पइत्ता तओ पच्छा चारणाण तिरयगती पवत्तति त्ति० १०" ११ आशीविषलब्धि-मुनिना दांत-दाढामां झेरना जेवी शक्ति उत्पन्न थाय छे अपने शिक्षा करवा माटे दांतथी करडतां ते मृत्यु पामे छे १२ केवलज्ञानलब्धि-इन्द्रियो अने मननी सहाय विना लोक अने अलोकना सर्व पदार्थोना वर्तेला, वर्तता अने वर्तनारा सर्व भावने जाणे १३ गणधरलब्धि-गणधरपणुं प्राप्त थाय १४ पूर्वधरलब्धि-चौदपूर्वरूप श्रुतज्ञान प्राप्त थाय १५ तीर्थंकरलब्धि-तीर्थंकरपदनी प्राप्ति थाय १६ चक्रवर्ति-लब्धि-चक्रवर्तीपणुं प्राप्त थाय छ खंड राज्य, चौद रत्नो, नवनिधि विगेरेनी प्राप्ति थाय १७ बळदेवलब्धि-बळदेवपणुं प्राप्त थाय १८ वासुदेवलब्धि-वासुदेवपणुं प्राप्त थाय चक्र वगेरे सात रत्नो तथा त्रण खण्ड भूमिनी प्राप्ति थाय १९ क्षीराश्रवादिलब्धि-आ लब्धि त्रण प्रकारनी छे (१) क्षीराश्रव, (२) मध्वाश्रव अने (३) घृताश्रव शेरडीनो चारो चरनारी एक लाख गायोने दोहीने तेनुं दूध पचास हजार गायोने पाय, तेने पाछी दोहीने तेनुं दूध पचीश हजार गायोने पाय, तेनुं दूध पाछुं साडाबार हजार गायोने पाय एम अर्धा अर्धो क्रम करतां छेवट एक

गायने पाय अने तेने दोवाथी जे दुध प्राप्त थाय तेनी मिठाश अजोड होय छे आ लब्धिना प्रभावथी मुनिराजनु आवु मिष्ट वचन थाय के पटले श्रोता जो शारीरिक के मानसिक दु:ख भोगवता होय तो ते शीघ्र दूर थइ जाय छे अने मिष्टान्न जम्या होय तेवो आनंद उद्भवे छे पवी ज रीते मधु जेवा मिष्ट वचन जणाय ते मध्वाश्रव अने ऊपर जणावेल गायनी सख्याना क्रमे छेवट एक गायना दूधनु घी जेम मिष्ट अने धीर्यवान् थाय छे तेम श्रोताजन पण शक्तिमान् अने सन्तुष्ट थाय छ उपलक्षणथी इक्षुश्रव अने अमृताश्रव नामनी लब्धिओ पण छे जेथी शेरडी अने अमृत जेवा मधुर वचन लागे वळी मुनिना पात्रमा पडेला तुच्छ आहार पण दूध विगेरेनो जेवो मिष्ट बनी जाय ते पण क्षीराश्रवादि लब्धिओ कहेवाय छे २० कोष्टबुद्धिलब्धि–धान्य भरवाना माटा कोठारमा नाखेलुं अनाज जेम वर्षो सुधी विनाश पामतु नथी अने तेनी ते ज स्थितिमा रहे छे तेम मुनिए शीखेला सूत्रार्थो वर्षो पर्यन्त स्थिर रहे–भुलाय ज नहीं २१ पदानुसारिणी लब्धि–तेना त्रण प्रकार छे–(१) ग्रन्थनी शरूआतनु पद साभळीने सपूर्ण ग्रन्थनो बोध थाय त अनुस्रोतपदानुसारिणी, (२) छल्ला पदने साभळवाथी सपूर्ण ग्रन्थना बोध थाय त प्रतिस्रोतपदानुसारिणी अन (३) मध्य पदने सांभळवाथी सपूर्ण ग्रन्थनो बोध थाय ते उभयपदानुसारिणी २२ बीजबुद्धि लब्धि–जेम सारा क्षेत्रमा वावेल बीज अनेक बीज प्रगटाव तेम बीजभूत एवा एक ज अर्थपदने साभळीने घोजु सर्व श्रुत यथार्थ जाणी शके. कोइ कहेशे के तो पछी पदानुसारी लब्धि अने आ लब्धिमा तफावत शो ? तेनो जवाब ए छे के–पदानुसारीमा तो एक पद जाणवाथी बीजा पद जाणी शकाय ज्यारे बीज बुद्धिधारी तो एक पदार्थन जाणवाथी अनेक पदार्थोना ज्ञाता थाय आ बीज बुद्धि लब्धि गणधर भगवतोन होय छे पटले तीर्थंकर भगवंतना मुखथी " उप्पनेइ वा विगमेइ वा धुवेइ वा "ए त्रिपदी साभळीने द्वादशांगीनी रचना करी शके छ २३ तेजोलेश्यालब्धि–अत्य त क्रोधने लीधे अनेक योजन प्रमाण क्षेत्रमा रहेल पोताना शत्रु विगरे पदार्थोने दग्ध करी शके अग्नि जेवा उष्ण पुद्गलोने फेंकवानी शक्ति त तेजोलेश्या जे साधु छट्ठने पारणे छट्ठ करे अने पारणाने दिवसे पण एक मुठी अडदना वाकळा खाय अने एक चुल्लुक मात्र पाणी पीए–आथी विशेष खाय–पीवे नहीं–आ प्रमाणे छ महिना पर्यंत तपश्चर्या करे त्यारे तेजोलेश्या लब्धि प्राप्त थाय छे २४ आहारकलब्धि–चौद पूर्वधर मुनि श्रुतशंका टाळवाने अर्थे अथवा जिनेश्वरनी समवसरणादि ऋद्धि जोवाने माटे पोताना शरीरमांथी एक हाथ प्रमाण शरीर विकुर्वी शके कार्य समाप्ति थये आ देहनु विसर्जन करे एक भवमा बे वखत आ प्रमाणे

थाय अने जो बीजी वार कर तो अवश्य मारी जाय २५ शीतलेश्यालब्धि-तेजोलेश्याथी बळता जीव प्रत्ये करुणा उत्पन्न थये छते आ लेश्या मूकवाथी बळता जीवो अगर तो पदार्थो जळना सिंचननी माफक शांति प्राप्त करे छे २६ वैक्रियलब्धि-विविध प्रकारनी क्रियाओ करवानी शक्तिवाळुं वैक्रिय शरीर विकुर्वी शकाय आ लब्धि अनेक प्रकारनी शक्तिवाळी छे (१) अणुत्व-अत्यन्त सूक्ष्म शरीर बनावी, कमळनो नाळना छिद्रमां पण दाखल थई त्यां चक्रवर्तीना जेवा भोग भोगवी शकाय (२) महत्व-मेरुपर्वत जे एक लाख योजन ऊंचो छे तेनो करतां पण मोटुं शरीर बनावी शकाय (३) लघुत्व-वायु करतां पण लघु पटल हळवुं शरीर बनावी शकाय (४) गुरुत्व-वज्र करता पण अत्यंत भारे शरीर बनावी शकाय के जेने इन्द्रादि देवो पण पोताना उत्कृष्ट बळथी उपाडी शके नहीं (५) प्राप्ति-भूमि ऊपर रहीने पोताना हस्त पटलावथी लंबाय के मेरुपर्वत ऊपरना शिखरने स्पर्शी शके (६) प्राकाम्य-जळमां भूमि पर चालवानी माफक चाले तमज भूमि पर डुबकी मारवानी माफक डुबकी मारतो चालो जाय (७) ईशित्व-तीर्थंकर, इन्द्र अने चक्रवर्त्यादिकनी ऋद्धि विकुर्वी शके (८) वशित्व-सर्व जीवोने पोताने आधीन करी शके. (९) अप्रतिघातत्व-खुल्ला मार्गमां जेम अस्खलित गतिए गमन करी शकाय, तेम वज्र पर्वतादि विघ्न आववा छता पण अस्खलित गमन करी शके. (१०) अन्तर्धानत्व-अदृश्य थई जाय के जेथी काई पण जाई शके नहीं (११) कामरूपत्व-एक साथे अनेक प्रकारनां विविध रूपो बनावी शके. आ प्रमाणे वैक्रियलब्धि अनेक प्रकारनी समजवी २७ अक्षीणलब्धि-काई पण पदार्थ खूटे नहीं तेना बे प्रकार छे (१) अक्षीण महानसी-पोताना पात्रमां अल्प आहार होय तो पण आ लब्धिना प्रभावथी अनेक जणने जमाडे तो पण खूटे नहीं परन्तु ज्यारे पोते ते आहार करे त्यारे ज खूटे श्रीगौतमस्वामीए अष्टापदथी नीचे उतरता १५०३ तापसोने आ ज लब्धिना प्रभावथी पारणुं कराव्युं हतुं (२) अक्षीणमहालय-परिमित भूमिमां पण असंख्य देवो तिर्यंचो अने मनुष्यो पोतपोताना परिवार सहित एकबीजाने पीडा उपजाव्या सिवाय सुखपूर्वक बेसी शके. जेमके भगवान् तीर्थंकरादिकना समवसरणमां असंख्य देवादिक समाई शके छे २८ पुलाकलब्धि-चक्रवर्तीना सैन्यने पण चूर्ण करी नाखे आ प्रमाणे अट्ठावीश लब्धिओनुं स्वरूप जाणवुं

बीजी पण मनलब्धि, वचनलब्धि, कायलब्धि विगेरे लब्धिओ अतिशय शुभ परिणामथी अने तपना प्रभावथी प्राप्त थाय छे ज्ञानावरणीय तथा वीर्यान्तराय कर्मना असाधारण क्षयोपशमथी अन्तर्मुहूर्त मात्रमां सर्व श्रुतसमुद्रनु अवगाहन करवानी शक्ति ते मनोलब्धि श्रुतज्ञाननी सर्व वस्तुओमे अन्तर्मुहूर्त

मात्रमा उच्चारवानी जे शक्ति ते वचनलब्धि आ लब्धिथी चौदपूर्वनुं परावर्तन (आवृत्ति) थाय छे अथवा पद, वाक्य अने अलंकार युक्त वचनो मोटा स्वरे बोलवा छतां वाणीनी धारा अस्खलित रहे, वचमां पद पण अक्षरादि तूटे नहीं तेमज प्रारंभमां कंठ जेवो होय तेवो अंतपर्यन्त शक्तिवाळो रहे-हीन न थाय वीर्यान्तरायना असाधारण क्षयोपशमथी बाहुबलिनी माफक वर्ष सुधी कायोत्सर्गध्यानमां निश्चळ ऊभा रहे अथवा बेठा होय तो पण परिश्रम न लागे तेवी शक्ति कायलब्धि कहेवाय श्रुतज्ञानावरण अने वीर्यान्तराय कर्मना उत्कृष्ट क्षयोपशमथी प्रगटेल असाधारण महाबुद्धिने अंगे मुनि द्वादशांगी के चौद पूर्व न भण्या होय तो पण चौदपूर्वधरनी माफक दुर्गम भावार्थो जाणी शके ते प्रज्ञाश्रमण कहेवाय अन्य विशेष भणेल होय अने पोते अल्प भणेल होय तो पण विद्यावेगने कारणे बीजाना वशमां न आवे ते विद्याधरश्रमण कहेवाय

ऊपर जणावेल अठ्ठावीश लब्धिओ पैकी केटली केटली लब्धि कोने होय ते जणावता कहे छे के-भव्य पुरुषने अठ्ठावीश लब्धिओ होय भव्य स्त्रीने (१) तीर्थंकर, (२) चक्रवर्ती, (३) वासुदेव, (४) बळदेव, (५) संभिन्नश्रोतस्, (६) चारण, (७) पूर्वधर, (८) गणधर, (९) पुलाक अने (१०) आहारक शरीरलब्धि-आ प्रमाणे दश लब्धिओ न होय, एटले अढार लब्धि होय छे अनंतकाळे कोई कोई वखत अच्छेरारूपे स्त्री तीर्थंकर थाय छे, जेम के चालु चोवीशीना ओगणीशमा जिनेश्वर मल्लिनाथ, परन्तु तेने आश्चर्यमां गणवाथी स्त्रीने तीर्थंकरलब्धि न होय तेम कह्युं छे अभव्य पुरुषने १५ लब्धि ज होय छे ऊपर जणावेल दश लब्धिओ उपरांत (११) केवळी, (१२) ऋजुमतिमनःपर्यवज्ञान अने (१३) विपुलमतिमनःपर्यवज्ञान ए तेर लब्धि सिवायनी पंदर होय अभव्य स्त्रीने १४ चौद लब्धिओ होती नथी अने चौद होय छे ऊपर कहेल तेर लब्धिओ उपरांत (१४) मधुक्षीराश्रवलब्धि पण होती नथी

लब्धिओनुं विशेष स्वरूप प्रवचनसारोद्धार तेमज योगशास्त्रनी टीकामांथी जाणवुं. आवी लब्धिवाळो शिष्य पण जो चारित्रमां दोष लगाडे तो तेने आचार्य दंड आपे छतां पण शिक्षाप्रदान अने सद्गुणवर्णनवडे गच्छनुं स्वरूप कहे छे

जत्थ य संनिहिउक्खड–आहडमाईण नामगहणे वि ।
पूईकम्मा भीता, आउत्ता कप्पतिप्पेसु ॥ ७२ ॥
मउए निहुअसहावे, हासदवविवज्जिए विगहमुक्के ।
असमंजसमकरते, गोअरभूमट्ठ विहरन्ति ॥ ७३ ॥
मुणिणं नाणाभिग्गह–दुक्करपच्छित्तमणुचरताण ।
जायइ चित्तचमक्कं, देविंदाण वि त गच्छम् ॥ ७४ ॥

[यत्र च संनिध्युपस्कृत-आहृतादीनां नामग्रहणेऽपि ।
पूतिकर्मणः भीता, आयुक्ताः कल्पत्रेपयोः ॥ ७२ ॥
मृदुका निभृतस्वभावा, हास्यद्रवविवर्जिता विकथामुक्ताः ।
असमञ्जसमकुर्वन्ता, गोचरभूम्यर्थं (गोचरभूम्यष्टकं) विहरन्ति ॥
मुनीनां नानाभिग्रह-दुष्करप्रायश्चित्तमनुचरन्तानाम् ।
जायते चित्तचमत्कारो, देवेन्द्राणामपि स गच्छः ॥ ७४ ॥]

गाथार्थ—जे गच्छमा रात्रिए अशनादि राखवामा तेम ज औद्देशिक, अभ्याहृत, पूतिकर्म विगेरे आधाकर्मी उद्गम दोषोनु नाम लेता या स्पर्श थई जतां भय उपजतो होय तेम ज कल्प एटले पात्रा ने त्रेपमां-हस्तादिकने साफ करवामा सावधान, विनयवान, निश्चळ स्वभावी, हांसी-मस्करीथी विरमेल, विकथाथी दूर रहेनार, वगरविचार्यु नहीं करनार, गोचरी अर्थे परिभ्रमण करनार, विविध प्रकारना अभिग्रह तथा दुष्कर प्रायश्चित्त आचरनारा मुनिजनो होय छे ते इन्द्रोने पण आश्चर्ययुक्त करे छे हे गौतम ! तथाप्रकारना गच्छने ज वास्तविक गच्छ जाणवो.

विवेचन—साधु रात्रिए पोता पासे अशनादि राखी मूके ते सनिधि दोष कहेवाय. आ दोषना संबंधमा श्रीनिशीथसूत्रमा अगियारमा उद्देशामा कह्यु छे के-"जे भिक्खू असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा दिया पडिगाहेत्ता दिया भुजइ १, जे भिक्खू असण वा ४ दिया पडिगाहेत्ता राओ भुजइ २, जे भिक्खू असण वा ४ राओ पडिगाहेत्ता दिया भुजइ ३, जे भिक्खू असण वा ४ राओ पडिगाहेत्ता राओ भुजइ ४ । चउसु वि भगेसु आणादिया य दोसा चउगुरु च पच्छित्त तवकालनिसेसिय दिज्जति ॥ " १ जे साधु-साध्वी अशनादि चार आहार दिवसे ग्रहण करीने दिवसे खाय, २ दिवसे ग्रहण करीने रात्रे खाय, ३ रात्रे ग्रहण करीने दिवसे खाय अने ४ रात्रे ग्रहण करीने रात्रे खाय-आ चार भागामां प्रथम भागो शुद्ध छे अने त्रण रात्रिभोजनना दोषथी दूषित छे आ प्रमाणे वर्तनारने जिनाज्ञाभंगनो दोष लागे, चारमासी गुरु प्रायश्चित्त लागे वळी पण कहे छे के-" जे भिक्खू पारियासिय पिप्पलि वा पिप्पलिचुण्ण वा मिरिय वा मिरियचुण्ण वा सिंगबेर वा सिंगबेरचुण्ण वा बिल वा लोण उब्भियं वा लोण आहारेइ आहारन्त वा साइज्जइ ॥" जे साधु-साध्वी रात्रिए राखेल आखो पीपर के पीपरनु चूर्ण, आखा तीखा के तीखानु चूर्ण, सूठ अथवा सूठनु चूर्ण, जे देशमा नमक (मीठु) न होय ते देशमा

खारो पकवे छे तेनु लूण (मीठु) थाय छे ते, समुद्रमा उत्पन्न थनारुं लूण (सिंधव) विगेरे बीना रात्रे राखीने बीजे दिवसे वापरे अगर तो वापरनारने सारो जाणे ते आज्ञाभगने पात्र थाय श्रीबृहत्कल्पना पाचमा उद्देशामा पण कह्यु छे के-दिवसे लावीने रात्रिए राखी मूकेलो आहार अशमात्र कल्पी शके नहीं फक्त अपवादरूपे व्याधिग्रस्तने कल्पो शके, परन्तु अन्यने तो सर्वथा निषेध ज जाणवो निर्युक्तिकार आ सबधमा विशेष अजशालु पाडता कहे छे के-अशनादिक रात्रिए राखला जोइने नूतन शिष्य तथा कोइ श्रद्धावान् मिथ्यात्व पामे तेना पापभाजन साधु थाय वळी उपहासनु कारण थाय जेमके 'जुओ आ निष्परिग्रही साधु रात्रिए आहार राखी मूके छे, पाणीना घडा भरी राखे छे, घृतादिकनो सग्रह करे छे अने पाछा कहे के अमे तो अपरिग्रही-सचय विनाना छीए ' वळी सयमविराधना तथा आत्मविराधना पण थाय रात्रे आहार राखी मूकवाथी ओरणि कादि प्राणियोनी उत्पत्ति थाय, रोटली आदिकमा लाळिया जीवो उपजे, ऊदरो तेना भक्षण माटे आवे, तने वळी बिलाडो प्रमुख खाइ जाय, वळी जळ राखी मूक्यु होय तो तेमा कोडिया डूबी मरी जाय-आ प्रमाणे पापना भागीदार बनवाथी सयमविराधना थाय वळी रात्रिए आहारमा सप तथा ऊदरो लाळ नाखी जाय-एवो झेरी आहार वापरवाथी आत्मघात पण थाय आ प्रमाणे सनिधि दोषना विचार करी तेनो त्याग ज करवो

हवे उद्देशकनु स्वरूप दर्शावता कहे छे के-तेना बे भेद छे (१) ओघ-उद्देशिक अने (२) विभाग-उद्देशिक पोताने अर्थे रसाइ पकावतो वखते कोई आवशे तेने आपवाने माटे काइक आहारनी कल्पना करी राखे ते ओघ-उद्देशिक बीजा विभाग-उद्देशिकना त्रण मूळभेद अने बार उत्तरभेद छे (१) उद्दिष्ट, (२) कृत अने (३) कम ए त्रण मूळभेद छे ते दरेकना उद्देश, समुद्देश आदेश अने समादेशरूप चार-चार भेद छ पटले १ उद्दिष्टोद्देश, २ उद्दिष्टसमुद्देश, ३ उद्दिष्टादेश, ४ उद्दिष्टसमादेश ५ कृतोद्देश, ६ कृतसमुद्देश, ७ कृतादेश, ८ कृतसमादेश, ९ कर्मोद्देश १० कर्मसमुद्देश, ११ कर्मादेश अने १२ कर्मसमादेश एम बार भेद थाय सर्वने उद्देशीने जे अशनादिक कराय ते उद्देश कहेवाय, ते गृहस्थ, भिक्षु अने पाखडी विगेरेने निमित्ते करायेल चरक, परिव्राजकादिने निमित्ते करेल अशनादिक समुद्देश कहेवाय निर्ग्रंथ, शाक्य, तापस, गैरिक, आजीविकोने निमित्ते करेल अशनादिक आदेश कहेवाय अने साधुओने निमित्ते करेल समादेश कहेवाय हवे बार पेटाभेद वर्णवता कहे छे के-विवाहादिक सारा प्रसग स्नेही सबधीओ सर्वे जमी गया पछी अशनादिक वधे त्यारे गृहस्थ मनमा चितवे के-'आ सव राखीने शु काम छे? भिक्षु विगेरेने आपशु ' आ प्रमाणे विचारीने जो भिक्षुआने माटे राखे तो (१) उद्दिष्टोद्देशिक, पाखडीओने माटे राखे तो (२) उद्दिष्टसमुद्देशिक, साधुओने देवा माटे राखे तो (३) उद्दिष्टादेशिक अने निग्रथोने माटे राखे तो (४) उद्दिष्टसमादे-

शिक कहेवाय आवी ज रीते अशनादिक बन्या पछी मोदक विगेरेमां नवो गोळ मेळववो पडे तो मेळवे, घी मेळवे, मकमु विगेरे क्रिया करे, भातमा दहीं विगेरे नाखे अने पछी पुनती माफक संकल्प करे त्यारे आ भिक्षुओने आपवु एम कहे त (५) कृतौद्देशिक, पाखंडीओने आपवानु कहे ते (६) कृतसमुद्देशिक, साधुओने माटे कहे ते (७) कृतादेशिक अने निर्ग्रन्थोने अर्थे कहे ते (८) कृतसमादेशिक कहेवाय आवी ज रीते विवाहादिक शुभ प्रसगे अशनादिक बन्या पछी ते वधेला लाडु, भात, मग विगेरे पदार्थोने अग्नि पर पुन तपाय, मादकमा गोळ नाखे, मग वगेरेने पुन राय-जीरा-मसालाथी वघारे इत्यादि क्रिया करीने पूर्व प्रमाणे सकल्प करे त्यारे भिक्षुओ माटेनो सकल्प ते (९) कर्मौद्देशिक, पाखंडीओने माटेनो (१०) कर्मसमुद्देशिक, साधुओने माटे (११) कर्मादेशिक अने निर्ग्रन्थोने माटे (१२) कर्मसमादेशिक कहेवाय

अभ्याहृत दोषना बे प्रकार छे-(१) आचीर्ण अने (२) अनाचीर्ण आचीर्ण अभ्याहृतना त्रण प्रकार छे जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट. मोटा जमण समये सेंकडो माणस बेठा होय अगर तो मोटु घर होय अथवा पक्तिबद्ध त्रण घरो साथे होय तथा प्रसंग सो हाथनी अदरना अतरमांथी आहार वहोरावे ते उत्कृष्ट आचीर्ण, एक हाथ प्रमाणथी वहोरावे ते जघन्य अने ते बने वच्चेनु प्रमाण ते मध्यम आचीर्ण अभ्याहृत जाणवु आ त्रणे प्रकार कल्पी शके कारण के तेमा उपयोग रहेवानो सभव छे अनाचीर्ण अभ्याहृत तो सो हाथ उपरांत दूरना स्थळेथी आहार आवेल होय तो कल्प नहीं, कारण के तेमां सयमविराधना अने आत्मविराधना बने थाय छे कोइ गृहस्थ अन्य ग्रामादिकथी अशनादिक आहार लावता थका जळमार्गथी आवे तो अप्कायनी तेमज छकायनी विराधना थाय स्थळमार्गे आवे तो पण छकायनी विराधना थाय, चोर हरण करी जाय, शिकारी पशु खाई जाय मार्गना परिश्रमथी ज्वरादिक रोगोद्भव थाय, आ प्रमाणे दूषित होवाथी अनाचीर्ण अभ्याहृत आहार कदापि ग्रहण करवो नहीं

हवे पूतिकर्मनु स्वरूप जणावे छे-आधाकर्मी, उद्देशिकना छेल्ला त्रण भागा, मिश्रजात, अध्यवपूरक, पूतिबादर अने प्राभृतिक आ बधा अविशुद्ध कोटिना छे जेम क्षीरमा मूत्रनो छांटो पडी जता सर्व क्षीर अशुद्ध थई जाय, शुद्ध आहारमा अविशुद्ध आहारनु एक बिंदु जो आवी जाय तो सर्व शुद्ध आहार पण अशुद्ध बनी जाय ते पूतिकर्म कहेवाय छे, तेना बे भेद छे-(१) सूक्ष्मपूतिकर्म-आधाकर्मी हींग प्रमुख अशनादिकनो गध, आधाकर्मी अग्निनी ज्वाळा तथा धूमाडो शुद्ध आहारने लागे तो ते सूक्ष्मपूतिकर्म कहेवाय परन्तु ते आचीर्ण छे-साधुने वहोरवा योग्य छ कारण के आ दोषो अशक्यपरिहार छ. (२) बादरपूतिकर्मक-तेना बे प्रकार छे एक उपकरण-चूलो, कडछो, तावडो, चमचो विगेरे रसोइ करवाना साधनो तेमज घटी, सांबेलु विगेरे

उपकरणो होय तेमाथी प्राप्त थयेल अशनादिक आहार शुद्ध होय तो पण दूषित छे बीजा भक्तपानपूतिकर्म-आधाकर्मी बघार, हींग, निमक, जीरु विगेरेथी त्यात आ बन्ने प्रकार साधुओने कल्पे नहीं

हवे कल्पनो अधिकार दर्शाय छे-भोजन कर्या बाद पात्रा साफ करवा ते कल्प सामान्यपणे सात वखत धोवानो कल्प छे विशेषथी तो तेना जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट एम त्रण भेद दर्शाव्या छे (१) भात, रोटली, मग, वाल, गोळ, चणा, तुर विगेरेना आहार पात्राने विशेष लेप न करे एटले ते जघन्य कल्प तेमा पात्रा त्रण वार धोवा, एक वार अदर, बीजो वार बहार अने त्रीजी वार अदर अने बहार (२) मग तथा अडदनी दाळ, काजी, दही विगेरेना अल्प लेप लागे ते मध्यम कल्प, तेमा पात्रा पाच वार धोवा बे वार बहार, बे वार अदर अने एक वार अदर अने बहार (३) दूध, दही, क्षीर, घी विगेरेना विशेष लेप लागे ते उत्कृष्ट कल्प, तेमा पात्रा सात वार धोवा त्रण वार अदर, बे वार बहार अने बे वार अन्दर अने बहार बधे

श्रेप एटले हस्तने मणिबध(पहोंचा) सुधी जळादिकथी धोवा स्थडिल तथा मात्रादिक प्रसग हस्त धोवो पडे तेथी श्रीनिशीथसूत्रना चोथा उद्देशामा आ सबधी वर्णन करता जणा यु छ के-' जे भिक्खू २ साणुप्पाए उच्चारपासवणभूमिं ण पडिलेहेइ न पडिलिहत वा साइज्जइ । जे भिक्खू २ तओ उच्चारपासवणभूमिओ ण पडिलेहेइ न पडिलेहत वा साइज्जइ । जे भिक्खू २ खुड्डागसि थंडिलसि उच्चारपासवण परिठवइ परिठवत वा साइज्जइ ॥ '' साधु या साध्वीए दिवस ना चोथा भागना चोथा विभाग जेटला दिवस रहे त्यारे स्थडिल तथा मात्राना भूमि प्रमाजवी ना ते प्रमाणे न पडिलेहे अने न पडिलेहनारनी अनुमोदना करे तो ते प्रायश्चित्तने पात्र थने छे जे साधु या साध्वी त्रण उच्चारपासवण भूमि न प्रमार्जे तमज न पडिलेहनारने सारो कहे ते पण दडन पात्र थाय छे जे साधु या साध्वी क्षुल्लक स्थडिलभूमिमा उच्चारपासवण वासरावे अने वासरावनारने सारो कहे ते पण प्रायश्चित्तने योग्य गणाय जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट-एम त्रण प्रकारनु स्थडिलप्रमाण छ त्रसादिक जीवथी रहित भूमि ते स्थडिलभूमि एक हाथ लाबी-पहोळी अने चार आगळ ऊडी अचित्त स्थडिल-भूमि जघन्य कहेवाय आ प्रमाणथी एक आंगळ न्यून भूमिमा स्थडिल-मात्रु परठव तो दोषभाजन थाय आ प्रमाण करता विशेष भूमि ते मध्यम मान जाणवु उत्कृष्ट स्थडिलप्रमाण बार योजननु होय, कारण के चक्रवर्त्तीनी सेना बार योजन विस्तार वाळी होय छे जे साधु या साध्वी ठल्ला या मातरु अविधिपूर्वक परठवे तो एक मासी लघुदड अने आज्ञाभगना दोषपात्र थने तेनी विधि दर्शावता कहे छ के-गृहस्थ प्रमुखनी दृष्टिनु निवारण करवु अने ते माटे ऊर्ध्व, अधो अने तिर्छा सब

दिशामां अवलोकन कर्या पछी ठल्लो मात्रु परठववुं जे लोको न कार्य करतां जोये तो तेओ हांसी करे अने आत्माने कलुषितता प्रगट थवी स्थंडिल प्रमुख पास रावाने चळना कटकाथी गुह्याग जो साफ न करे तो प्रायश्चित्त लागे, पण आ काष्ठथी, वांसना खपाटियाथी, आंगळीथी अथवा लाकडाना सळीथी साफ करे अथवा साफ करनारने सारा माने तेने पक्षमासी लघुदंड आवे पछी जो कोई साधु या साध्वी स्थंडिल प्रमुख परठवीने पछी जळद्वारा हस्त साफ करे नहीं के न करनारने सारा जाणे तो दंडपात्र बने वळी स्थंडिल परठव्यानी समवाय साधु या साध्वीए आचमन न लेवुं आचमन लेवे लेनारनी अनुमोदना करे तो प्रायश्चित्त लागे परन्तु ते हाथना आंतरामां लेप करी शकाय, तेथी विशेष दूर आचमन करे तो पण दोषभागी थाय स्थंडिल-मात्रु परठवी त्रण धोवा प्रमाण जळथी शुद्धि करवी, विशेष जळ न वापरवुं विशेष जळ वपराय तो कीडी प्रमुख जीवोनी विराधना थाय, त्रसजीवने पीडा उपजे, वृक्षना फूल-पत्रादिक तेमां पडे अने पृथ्वीकायादिकनी पण विराधना थाय, केटलाक आचार्यो एम पण कहे छे के-अंजलिना त्रण भाग करवा, पहेला भागथी मळद्वार साफ करे, बीजा भागथी अवयवो साफ करे अने त्रीजा भागथी सर्व शुद्धि करे जेने बोदे वाटे समयने आंतरे स्थंडिल जवुं पडतुं होय, 'हरस' जेवो व्याधि होय तेवा आपवादिक मार्गमां विशेष जळ वापरी शकाय मतिमता परन्तु समजवानुं के-दुर्गंध न रहे, मळना लेप न रहे तेटला प्रमाणमां जळनो उपयोग करवो कारणप्रसंग मूत्रथी पण मळशुद्धि करी शकाय छे बृहत्कल्पना पांचमा उद्देशामां कह्युं छे के-

णो कप्पइ निग्गथाण वा निग्गथीण वा अण्णमण्णस्स मोय आइयत्तए वा आयमित्तए वा णण्णत्थ गाढेसु अगाढेसु वा रोगायकेसु ॥ साधु या साध्वीने परस्परना मूत्रनो उपयोग करवो न कल्पे परन्तु विशूचिका (उलटी) थई होय सर्प करड्यो होय, ज्वरादिक रोगाक्रमण थयो होय तो तेवा अनिवार्य प्रसंगोमां मूत्रनुं आचमन लेवुं या मळशुद्धि माटे ग्रहण करवुं कल्पे आ विषयमां कोई शंका करतां कहे के-आ मूत्रनुं आचमन या ग्रहण अशुचिकारक न कहेवाय ? तो तेने जवाब आपतां ग्रंथकार कहे छे के-वैद्यकशास्त्रमां पण मूत्र-पान उपयोगी मनायुं छे वळी गोमूत्र तो पवित्र मनाय छे अने औषधमां पण वपराय छे साधु तो कारण विना रात्रिए पाणी राखे ज नहीं, परन्तु कोई नूतन दीक्षित होय, विवाहित न होय तेने मूत्र ग्रहण करवामां दुगंछा थाय माटे तेने अर्थे रात्रिए अचित्त जळ राखे, परन्तु जे मातरानी विधिना जाण होय, साधुपणुं बराबर परिणमी गयुं होय तेने अर्थे पछी पाणी राखवानी जरूर नथी कोई शिष्य घणो वखत स्थंडिल जाय अने मूत्रथी शुद्धि करवामां अशक्त होय तेने माटे जळ राखवुं पडे कारण के जो जळ न राखवामां आवे तो तेवा शिष्यने स्थंडिलनी शंका थवा छतां दुगंछाथी स्थंडिल जाय नहीं अने मळनो अवरोध करवाथी

परिताप पामे, मृत्यु पण पामे माटे तेवा प्रसंगमा अळनो सोग राखवो कोई
वाइ आचार्य कल्पत्रेपनो अर्थ चैत्र मासनी असज्झाय उतर्या पछी कर्त्तव्य कर
वानु सूचन छे कोइक एम कहे छे के-आ परपरागम्य छे अने सदैव
कर्त्तव्य छे वळी साधु विनयशाळी होय, निश्चळ-गभीर स्वभाववाळा होय,
जेथी प्रायश्चित्तादिकनो अन्य पासे प्रकाश करे नहीं हास्य-बीजानो उपहास न
करे चार प्रकारनी विकथा(जुओ पृष्ठ २०)थी विरमेल होय गुरुनी आज्ञा
शिरोधार्य गणे-वगरविचार्ये स्वमतिथी विरुद्ध वर्तन न करे वळी गोचरी अर्थे
योग्य भूमिमा परिभ्रमण करे आठ प्रकारनी गोचरभूमि कहेल छे, ते आ प्रमाणे–
१ ऋज्वी, २ गत्वाप्रत्यागतिका, ३ गोमूत्रिका, ४ पतगवीथिका, ५ पेटा, ६
अर्द्धपेटा, ७ अभ्यतरशबूका अने ८ बहि शबूका वळी अनेक प्रकारना अभिग्रहना
धारक तमज महाकठिन प्रायश्चित्तने लगती तपश्चर्या करनारा होय आवा
आचार-परायण अने सयमी साधुवर्योने जोइने इद्र सरखा पण चमत्कार पामे
तो अन्य जननु शु कहेवु ?

अभिग्रह चार प्रकारना छे १ द्रव्याभिग्रह, २ क्षेत्राभिग्रह, ३ काळा
भिग्रह अने ४ भावाभिग्रह १ द्रव्याभिग्रह—आज मारे लेपवाळा मग विगेरे
अथवा लेप(रस) विनाना वाल, चणा विगेरे मळे तो ग्रहण करवा, आजे
रोटलो क तेनो माडो मळे तो ज भिक्षा ग्रहण करवी, कडछी, चमची अथवा
तो भालाना अणीद्वारा काइ वहोरावे त्यारे ज वहोरवु श्रीमहावीरस्वामीए जेम
सुपडाना खुणामा रहेल अडदना बाकळा ग्रहण कर्या हता तेम विविधविध
प्रकारना अभिग्रहो धारण करवा अने ते प्रमाणे ज जो भिक्षा मळे तो ग्रहण
करवी, ते द्रव्याभिग्रह कहेवाय २ क्षेत्राभिग्रह-पूर्वे कही ते आठ गोचरभूमिमा
तथा जे गाममा होय तेमा अगर परगाममा अमुक मर्यादा बाधी गोचरी ग्रहण करवी
ते क्षेत्राभिग्रह कहेवाय हवे आठ गोचरभूमिनु विशेष वर्णन करता जणावे छे के–
१ ऋज्वी-एक दिशाना अभिग्रह करीने उपाश्रयमाथी नीकळया बाद सीधे
मार्गे समश्रेणीमा आवता गृहोने विषे भिक्षार्थे जता ते पक्तिना छेल्ला गृह सुधी
जाय तेटला गृहोमा जो उचित भिक्षा मळी जाय तो ग्रहण करे अने न मळे
तो ते ज गतिए पाछा आवे २ गत्वाप्रत्यागतिका-एक पक्तिमा भिक्षार्थे फरता
तेना छेल्ला गृह सुधी जाय अने तेम करता उचित गोचरी न मळे तो पाछा
फरता बीजा घरोनी श्रेणीमा परिभ्रमण करे ३ गोमूत्रिका-जमणा घरनी पक्तिमाथी
डाबी पक्तिमा अने डाबीमाथी पाछी जमणी पक्तिमा तेम एक बीजी पक्तिमा गोचरी
अर्थे फरवु चालती गाय अने बळदना मूत्रना आकारे आ गोचरी थती
होवाथी तेने गोमूत्रिका कहेवाय छे ४ पतगवीथिका-त्रण चार घर मूकीने
वहोरे, वळी त्रण-चार घर आगळ जइने वहोरे पतगियु उछळी उछळीने

अनिश्चित गति करे छे तेनो माफक आ गोचरी थती होवाथी तेने पतगवीथिका कहेवाय छे ५ पेटा-पेटीना आकारे गोचरी करे ते पेटा पेटीना चार खूणानी माफक चारे दिशाना गृहोने विषे जाय परन्तु ते दिशाना मध्यमा रहेला गृहोने विषे न जाय ६ अर्द्धपेटा-चार दिशाने बदले बे दिशाने निश्चित करीने भमे पण तेनी मध्यमा आवता गृहोमा न जाय ७-८ अभ्यतरशबूका ने बहि शबूका-शखनी पेठे जे गोचरी करवी ते शबूका शखना मध्य भागना आवर्तनी माफक गोचरी करवी एटले मध्य घरोमा भमता भमता क्षेत्रना बहारना भागमा आववु ते अभ्यतरशबूका अने क्षेत्रना बहारना भागमाथी गोचरी ग्रहण करता करता मध्य भागमां आववु ते बहि शबूका वळी ' घरना उबरा मात्रमा होय तो मारे गोचरी लेवी ' एवी जातनो पण अभिग्रह लेवो तेनो क्षेत्राभिग्रहमा समावेश थाय छे श्रीमहावीर परमात्माए आवो अभिग्रह धारण कर्यो हतो अने एक पग उंबरमा अने एक पग बहार राखेल राजपुत्री वसुमती उर्फे चदनबालाए आ अभिग्रह पूर्ण कर्यो हतो वळी पोताना गाम सबधी पण धार्यु क-मारे अमुक लत्ताना घरमा ज गोचरी माटे जवु, अगर तो बीजे गाम भिक्षार्थे जवु आ सर्व प्रकार क्षेत्राभिग्रहना जाणवा ३ कालाभिग्रहना त्रण प्रकार छे आदि, मध्य अने अत गोचरीना समय पहेला पर्यटन करवु ते आदि, भिक्षा मळे तेवा समये गोचरी करवा जवु ते मध्य अने गोचरीनो समय व्यतीत थई गया पछी वहोरवा जवु ते अवसान-अत आ सबधी गुण-दोष दर्शावता कहे छे के-आदि अने अत ए बे प्रकारनी गोचरी अर्थे न जवु, कारण के वखत विना आवेल साधु माटे वहोरावनार गृहस्थादिकनी अप्रीति थाय वळी साधुने पुरः-कर्म अने पश्चात्कर्म इत्यादि दोषो पण लागे माटे मध्य कालाभिग्रह ज उचित छे ४ भावाभिग्रह-जे वासणमा राध्यु होय ते भोजनमाथी बीजाने माटे पूर्वे काढीने राखेल होय तेवो ज आहार लेवो, अमुक गणत्रीवाळो ज आहार लेवो, जेनी सामे नजर पडे ते ज आहार लेवो-आवो जातनो विविध प्रकारनो अभिग्रह ग्रहण करवो ते भावाभिग्रह कहेवाय अथवा तो गायन गातो गातो वहोरावे तो लेवु,बेठो बेठो आपे तो लेवु,आभूषण पहेरेल व्यक्ति आपे तो ज आहार ग्रहण करवो इत्यादिक अभिग्रह धारवा ते पण भावाभिग्रह ज छे तीर्थंकर भगवतोए पण आवा अभिग्रहो धारण करेल छे, माटे तपी-सयमी साधुए अवश्य अभिग्रहो धारण करवा (आ चार प्रकारना अभिग्रहनु स्वरूप प्रकारातरे अगाऊ पृष्ठ १२८ ऊपर आवी गयु छे)

हवे दश प्रकारना प्रायश्चित्तनु स्वरूप दर्शावे छे-१ आलोचना-आहारादिक ग्रहण करता, स्थडिल मात्रु करता, देहरे उपाश्रये जता, पीठफलकादिक पाछा आपता, उपाश्रयथी सो हाथ दूर जता जे दोष लागे ते गुरुने जणावी, तेओ जे प्रमाणे प्रायश्चित्त जणावे ते आलोचना. २ प्रतिक्रमण-मिच्छादुक्कड आपवाद्वारा दोषथी छूटे ते अकस्मात् तथा उपयोगशून्यपणे पाच समिति तथा त्रण गुप्तिने विषे प्रमाद थाय, गुरुआज्ञा-भग थाय, इच्छाकारादिक दश प्रकारनी सामा

चारीमा दूषण लागे, लघुमृषावाद, अदत्तादान तथा परिग्रहनी मूर्च्छा थाय, अविधिपूर्वक श्वास ले, छींक खाय, बगासु खाय, हास्यादिक विकथा करे इत्यादिक जे दोषो लागे ते माटे प्रतिक्रमण करवु लघुमृषावादना पदर प्रकार श्रीनिशीथसूत्रनी पीठिकामा दर्शाव्या छे अनिकाचितपणे (अचोक्कसपणे) बोले ते लघुमृषावाद अने निकाचितपणे बोले ते बादरमृषावाद कहेवाय आज्ञा विना तृण, राख, लेप प्रमुख ग्रहण करे ते लघुअदत्तादान अने कपडा, सारा पात्रा, वसति, सथारो इत्यादिकने विषे ममत्वभाव राखे ते लघुपरिग्रह कहेवाय छे प्रतिक्रमणद्वारा आ दोषो दूर थाय छे ३ तदुभय-सहसात्कार एटले अचानक, अनाभोग-उपयोग रहितपणे, संभ्रम-भूलथी तेमज सिंहादिकना भयथी व्रतमां जे अतिचार लागे तेमज खोटु चिंतववाथी अने ते प्रमाणे खोटु वर्तवाथी जे प्रायश्चित्त लागे ते आलोचना अने प्रतिक्रमण उभयद्वारा नाश पामे माटे तदुभय ४ विवेक-अशन, पान, खादिम अने स्वादिम ए चार प्रकारनो आहार, वस्त्र, पात्र, उपधि, शय्या ग्रहण कर्या पछी 'आ तो अशुद्ध छे, काला मात छे एटले सूर्य ऊग्या पहेला अथवा तो सूर्यास्त पछी ग्रहण करेल छे' एम विचारी ते अशन प्रमुखने यथायोग्य स्थळे वोसरावे ते विनयप्रायश्चित्त ५. काउसग्ग-उपाश्रयथी सो हाथ करतां विशेष दूर जाय के आवे, नावमा बेसे, नदी पार करे, सावद्य स्वप्न देखी जागी उठे—आ सबधी लागेल अतिचार कायोत्सर्गथी दूर थाय ६ तप-छ प्रकारनो बाह्य अने छ प्रकारनो अभ्यतर एम बार प्रकारना तपथी अतिचार दूर थाय ते तप प्रायश्चित्त (आनु वर्णन अगाऊ पृष्ठ १२६ ऊपर आवी गयल छे) ७ छेद-'आटलो तप करवो ए शु मात्र छे ?' एम गर्वोन्मत्त बनेल्ने अथवा तप करवामा असमर्थ साधुने पाच दिवसनी दीक्षानो छेद करवो ते ८ मूळ-पचेंद्रियनो वध करे, मैथुन सेववानी अभिलाषा करे अगर तो सेवे, अभिमानथी पाचे महाव्रतोनो भग करे तेने फरीथी दीक्षा आपवी ९ अनवस्थाप्य-दुष्ट वर्तन करे, द्रव्यादिकनी इच्छाथी अष्टाग निमित्त प्रकाशे, ज्योतिष जोइ आपे, कोईने विघ्न करवा अथवा विघ्न होय ते दूर करवा, धनादिकनी इच्छाथी मत्रप्रयोग करे तेने आ प्रायश्चित्त अपाय छे आ प्रायश्चित्तना भागी उपाध्याय ज होय छे ज्या सुधी आपेल आलोचना पूर्ण न करे त्या सुधी तेना चारित्रपर्याय न गणाय १० पाराचित-तीर्थंकर आचार्य, उपाध्याया दिकनी आशातना करनार, राजानो वध करनार, वीणद्धि निद्रावाळाने, आ दशमु पाराचित नामनु प्रायश्चित्त होय छे आ प्रायश्चित्तना भागी आचार्य ज होय छे अनवस्थाप्य अने पाराचित ए बे प्रायश्चित्तो तो वज्रऋषभनाराच सघयणवाळाने अने चौदपूर्वीने होय छे हालमा तो तेना अभाव होवाथी विच्छेद समजवा लिंगक्षेत्रकाळअनवस्थाप्य अने लिंगक्षेत्रकाळपाराचित तो ज्या सुधी श्रीवीरशासन प्रवतशे त्या सुधी समजवा आ दश प्रायश्चित्तनु स्वरूप अगाऊ प्रकारातरे अमे पृ १३० ऊपर जणावी गया छीए

आ प्रमाणे जे गच्छमां साधु स्वच्छंदे न चालता आचार्यना आदेशने आधीन रही दूषण लागे तो प्रायश्चित्त अंगीकार करे तेवा गच्छने ज सुगच्छ कहेवो प्रायश्चित्त संबंधी विशेष वर्णन श्रीजीतकल्पमांथी जाणवु हवे छकायनी रक्षा संबंधी शिक्षा आपता जणावे छे के—

पुढविदगअगणिमारुअ–वाउवणस्सइतसाण विविहाणं ।
मरणंते वि न पीडा, कीरइ मणसा तयं गच्छम् ॥ ७५ ॥

[पृथिवीदकाग्निमारुत–वायुवनस्पतित्रसानां विविधानाम् ।
मरणान्तेऽपि न पीडा, क्रियते मनसा सको गच्छः ॥ ७५ ॥]

गाथार्थ–पृथ्वीकाय, अप्काय, अग्निकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय अने बेइन्द्रियादिक त्रसकायने ज्यां मरणांते पण मनद्वारा पीडा करवामां न आवे–सर्व जीवोने स्वात्मा समान गणवामां आवे तेवा साधुसमुदायवाळो गच्छ ज सुगच्छ छे.

विवेचन–अर्थ सुगम छे एटले तेना विशेष विवेचननी आवश्यकता नथी चारित्रनो साचो रसी आत्मा तो त्रिकरण त्रियोगथी कोई पण जीवनी हिंसा चिंतवे ज नहीं तो करे तो क्याथी ? यज्ञादिक हिंसक क्रियाकांड करनारा अन्य दर्शनीयो माटे आ गाथा बोधरूप छे पाषाण, रत्न, पारो, सर्व प्रकारनी माटी ते पृथ्वीकाय, पाणीना जीवो ते अप्काय, अग्नि, तणखा, विद्युत, अंगारा ए तेउ काय, झंझावात, मंदवायु, उद्भ्रामक वायु विगेरे वायुकाय कहेवाय छे वनस्पति कायना बे भेद छे साधारण अने प्रत्येक, एक शरीरमा अनंता जीवो होय ते साधारण वनस्पतिकाय, कोमळ फळ, अंकुर, गाजर, बटाटा, मूळानी भाजी विगेरे कन्दमूळ साधारण वनस्पति कहेवाय छे एक शरीरमां एक ज जीव होय ते प्रत्येक वनस्पतिकाय छे, काष्ठ, फळ, फूल, छाल, पांदडा विगेरे शंख, कोडा, जळो, अळसीया विगेरे बेइन्द्रिय (स्पर्श अने रसेंद्रिय), कीडी, माकड, धनेडा, इयळ विगेरे तेइन्द्रिय (स्पर्श रस अने घ्राणेन्द्रिय), वींछी, भमरो, माखी, तीड विगेरे चौरेंद्रिय (स्पर्श, रस घ्राण अने नेत्र) तेमज मनुष्य, नारक, देव अने तिर्यंचो (गाय, बळद, भेंस, पक्षी, सर्प, गोळीयो, मत्स्य) पंचेन्द्रिय (स्पर्श, रस, घ्राण, नेत्र अने श्रोत्रेंद्रिय) त्रसकाय कहेवाय छे त्रस एटले जे पोतानु रक्षण करवा हलन-चलन करी शके ते पृथ्वीकायादिक पंचेंद्रियो स्थावर कहेवाय छे, ते स्थिर होय छे, ते पोतानु रक्षण करवा हलन-चलन (गति) करी शकता नथी आ प्रकारना सर्व जीवो विषे अणुमात्र वैरभाव न दाखवे तेवा साधुवाळो गच्छ ज सुगच्छ छे विशेष वर्णन करता कहे छे के—

खज्जूरिपत्तमुंजेण, जो पमज्जे उवस्सयम् ।
नो दया तस्स जीवेसु, सम्म जाणाहि गोअमा ! ॥७६॥

[खर्जूरीपत्रेन मुंजेन, य उपाश्रयं प्रमार्जयति ।
न दया तस्य जीवेषु, सम्यग् जानीहि गौतम ! ॥ ७६ ॥]

गाथार्थ–खजूरीनी के मुंजनी सावरणीवती जे साधु उपाश्रयने साफ करे-प्रमार्जे तेने जीवो प्रत्ये बिलकुल दया-अनुकंपा नथी, एम हे गौतम ! तु बराबर समजी ले.

विवेचन–मुनिओ माटे खजूरीनी के मुंजनी सावरणी वापरवानो सदंतर निषेध छे, कारण के तेनी तीक्ष्ण अणीथी त्रसजीवोनो घात थाय छे त्रसजीवोना संरक्षण माटे पुंजणीथी अथवा तो दंडासन(मोटी डाडीवाळा ढाबा चरवळा)थी काजो लेवो जोइए अने ते पण पूर्णतया तपासीने ज्यां कोईनो विशेष पदरव-हालचाल न होय तेवा पवित्र स्थानमां जयणाथी परठववो जैनोनी आचीआयी प्रत्येक क्रिया जीवो प्रत्येनी अनुकंपानो अने अहिंसा धर्मनो आविष्कार करे छे वळी विशेष जणावे छे के—

जत्थ य बाहिरपाणिअ-विंदूमित्तपि गिम्हमाईसु ।
तण्हासोसिअपाणा, मरणे वि मुणी न गिण्हन्ति ॥७७॥

[यत्र च बाह्यपानीय-बिन्दुमात्रमपि ग्रीष्मादिषु ।
तृष्णाशोषितप्राणा, मरणेऽपि मुनयो न गृह्णन्ति ॥७७॥]

गाथार्थ–जे गच्छमां ग्रीष्मादिक ऋतुओने विषे तृषाथी पीडित थयेला मुनिओ प्राणान्ते पण तळाव, कूवा, वाव के नदी प्रमुखनु एक बिंदुमात्र सचित्त जळ क्षुल्लक साधुनी माफक ग्रहण करता नथी ते ज गच्छ साचो जाणवो.

विवेचन–बावीश परीषहो पैकी पिपासा-तृषा परीषह बीजो छे शास्त्रकार कहे छे के-ग्रीष्मऋतु होय, मध्याह्न थयो होय, सूर्य अत्यंत तपतो होय, कंठे शोष पडतो होय छतां पण साधु सचित्त जळना बिन्दुमात्रनी पण आकांक्षा न राखे-मरणांत कष्ट आवे तो पण स्वनियमथी चलायमान न थाय तेवा सुविहित साधुवाळो गच्छ ज सदाचारी गच्छ जाणवो क्षुल्लक साधुए आवो परीषह सहन कर्यो हतो, तेनु वृत्तांत नीचे प्रमाणे जाणवु

क्षुल्लक साधुनी कथा—

मालवदेशनी उज्जैनी नगरीमा धनमित्र नामनो व्यवहारी हतो तेने धन धर्म नामनो पुत्र हतो व्यवहारीनी पत्नी मरण पामता तेने वैराग्य उपज्यो तेवामा एक मुनिवर त्यां आव्या, एटले तेमनी पासे पुत्र सहित प्रव्रज्या ग्रहण करी एकदा अ य मुनिवरोनी साथे विहार करता तेओ एलगच्छ नगरना मार्गे चालता मध्याह्न समय हतो, सूर्य पोतानी सपूर्ण कळाथी प्रकाशी रह्यो हतो, रणनो प्रदेश हतो, तृषा सव मुनिवरोने पीडा उपजावी रही हती, अत्यत तृषाथी क्षुल्लक धनधर्मनु मुख करमावा लाग्यु, गति मद पडी गई अने वारवार स्खलना थवाथी ते क्षुल्लक मुनि पाछळ रही जवा लाग्या. धनमित्रे जाण्यु के-पुत्रने तृषा पूरेपूरी सतावी रही छे, पण थाय शु ? तेओ तेनी साथे रहेवा लाग्या बीजा मुनिवरो धीमे धीमे आगळ वधता सहेज आगळ निकळी गया धनमित्र ने धनधम मद गतिए पाछळ पाछळ चाल्या जाय छे तेवामा एक नदी आवी नदी जोता ज धनमित्रने पुत्र प्रत्ये स्नेहमात्र प्रगट्यो पुत्र परत्वेना वात्सल्यभावथी प्रेराई तेणे तेने कह्यु-" हे पुत्र ! अत्यार सुधी तें परीषह सारी रीते सहन कर्यो छे, पण भाग्ययोगे जळ आवी मळ्यु छे तो तु नदीमाथी यथेच्छ जळ पी ले ज्यारे राजमार्ग चीकणो थई गयो होय त्यारे लोको केडी(पगदडी)नो आश्रय ले छे तु सचित्त जळ पी ले प्राण टकशे तो चारित्रनु पालन थशे अने आ व्रतभगनी आलोयण पण कराशे " आ प्रमाणे धनमित्रे पुत्रने कह्यु छता ज्यारे तेणे नदीनु जळ पीधु नहीं त्यारे तेणे विचार्यु के-मारी लज्जाने कारणे पुत्र जळ-पान करता अचकाय छे तेथी हु दूर जतो रहु आ प्रमाणे निर्णय करी, नदी उतरी थोडे दूर जइ बेठो पण क्षुल्लक साधुए जळपान न कर्यु अने त्या ज शुभ ध्यानमा मृत्यु पाम्यो

केटलाको आ सबधमा एम पण कहे छे के-धनमित्रना गया पछी धनधर्मे विचार्यु के-पिताए कह्यु ते सत्य छे प्राण हशे तो चारित्र पळाशे,प्रायश्चित्त पण लेवाशे अने अ य धार्मिक अनुष्ठानो पण थशे,माटे पाणी तो पीउ आम विचारी जळनो खोबो भर्यो के तरत ज अ य विचार उद्भव्यो के-माराथी अपकायना जीवोनो नाश केम कराय ? एक जीवना रक्षण माटे असख्य जीवोनो विनाश करवो ए कोई पण प्रकारे उचित नथी श्रीतीर्थंकर भगवतोए जेना निषेध कर्यो होय तेनु आचरण माराथी थाय ज केम ? न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पद न धीराः । धीरपुरुषोए कदापि काळे स्वप्रतिज्ञाथी अशमात्र पण चलायमान न ज थवु कह्यु छे के-"एकम्मि उदगबिंदुम्मि, जे जीवा जिणवरेहिं पण्णत्ता । ते पारेवयमित्ता, जबुद्दीवे न मा एज्जा ॥ १ ॥ " पाणीना एक बिंदुमा जेटला जीवो छे तेटला जीवो पारेवा जेवडु रूप धारण करे तो समग्र जबूद्वीपमा न समाय एम तीर्थंकर भगवतो जणावे छे वळी कह्यु छे के-"जत्थ जल तत्थ वर्ण,जत्थ वण तत्थ निच्छओ तेऊ।

तेऊ वाउसहगओ, तसा य पचक्खया चेव ॥ २ ॥ ता हतुण परपाणे, अप्पाणं जो करेइ सप्पाण । अप्पाण दिवसाण, कएण नासेइ अप्पाण ॥३॥" ज्या जल होय त्या वनस्पति होय, वनस्पतिकाय होय त्या जरूर अग्निकाय होय ज अग्निनी साथे हमेशा वायु होय ज अने त्रसकाय तो प्रत्यक्ष जणाय छे माटे सचित्त जळना पानथी विराधनानो पार ज न आवे जे छकायना जीवोने हणीने पोताना आत्माने पुष्ट करे छे तेनो आत्मा पण थोडा दिवसमा ज विनाश पामे छे अहा! शु हु असख्य जीवोने हणीने मारा आत्माने ससारमा भमाडु? आत्माने माटे हिंसा करवी ते अतीव दु खदायी छे अहिंसा ज खरेखर भगवती-पूज्य अने सुखदाता छे ते भगवती अहिंसाने अपरिमित ज्ञान-दर्शन धारण करनार, शीलवत, शुद्ध सयम पालक १ श्रीतीर्थंकर भगवतोए रूडे प्रकारे जोई छे, २ अवधिज्ञानीए भला प्रकारे जाणी छे, ३ ऋजुमतीमन पर्यवज्ञानीए जाई छे, ४ विपुलमतिमन पर्यवज्ञानीए रूडा प्रकारे जाणी छे, ५ चौदपूर्वधरे पठित करी छे, ६ वैक्रियलब्धिधारीए प्ररूपी छे तेम ज ७ मतिज्ञानी, ८ श्रुतज्ञानी, ९ मन पर्यवज्ञानी, १० केवळज्ञानी, ११ आमर्षौषधिलब्धिधारी, १२ खेलौषधिलब्धिधारी, १३ जल्लौषधिलब्धिधारी, १४ विप्रुडौषधिलब्धिधारी, १५ सर्वौषधिलब्धिधारी, १६ बीजबुद्धिलब्धिधारी, १७ काष्ठबुद्धिलब्धिधारी, १८ पदानुसारीलब्धिधारी, १९ सभिन्नश्रोतसलब्धिधारी, २० श्रुतधर, २१ मनबली, २२ वचनबली, २३ कायबली, २४ ज्ञानबली, २५ दर्शनबली, २६ चारित्रबली, २७ क्षीराश्रवलब्धिधारी, २८ मध्वाश्रवलब्धिधारी, २९ सर्पिराश्रवलब्धिधारी, ३० अक्षीणमहानसलब्धिधारी, ३१ चारणलब्धिधारी, ३२ *विद्याधर, ३३ चतुर्थ भक्त (एक उपवास) करनार, ३४ छ मासी तपश्चर्या करनार, ३५ उत्क्षिप्तचर, ३६ निक्षिप्तचर, ३७ अतचर, ३८ पतचर, ३९ लूखचर, ४० समुदानचर, ४१ अग्लान, ४२ मौनचर, ४३ ससक्तकल्पी, ४४ तज्जातससक्तकल्पी, ४५ उपनिधिया, ४६ शुद्धैषणक, ४७ सख्यादत्ती, ४८ दृष्टलाभी, ४९ अदृष्टलाभी, ५० पुट्ठलाभी, ५१ आयबिल करनार, ५२ पुरिमड्ढ करनार, ५३ एकासन करनार, ५४ निवि करनार, ५५ भिन्नपिण्डचारी, ५६ परिमित पिण्डचारी, ५७ अन्ताहारी, ५८ पन्ताहारी, ५९ अरसाहारी, ६० विरसाहारी, ६१ लूखाहारी, ६२ अन्तजीवी, ६३ पन्तजीवी, ६४ लूखजीवी, ६५ तुच्छजीवी, ६६ उपसन्तजीवी ६७ पसन्तजीवी, ६८ विविक्तजीवी, ६९ अक्षीणमधुसर्पी, ७० अमधमासभोक्ता, ७१ पठाणा, ७२ प्रतिमा स्थापनारा, ७३ एक स्थानक रहनारा, ७४ वीरासन रहनारा, ७५ निषद्याए रहेनारा, ७६ लाकडानी माफक रहेनारा, ७७ लगडानी माफक सूनारा, ७८ एक पडखे सूनारा, ७९ आतप लेनारा, ८० अप्पा, ८१ खखार (श्लेष्म) नहीं करनारा, ८२ खाज नहीं खणनारा, ८३ मस्तक, दाढी, मूछ, पापणी विगेरेना वाळ न वधावनार तथा न धोनार इत्यादि अनेक

* आ लब्धिओनु वर्णन पृष्ठ २२८ उपर बतावाइ गयु छे

महापुरुषोए "अहिंसा" भगवतीने रूडी कही छे, रूडी जाणी छे अने हिंसाने मिथ्या ज वर्णवी छे तो मारा अल्प जीवितने माटे आवी घोर हिंसा हुं केम करुं ? आ अल्प जीवितव्यने अर्थे हिंसा करी भवोभवनुं परिभ्रमण कोण वधारे ? आ प्रमाणे विचारी, समभावी थइ, विशिष्ट वैराग्यवंत बनीने हाथमां ग्रहण करेल जळ पाछुं नदीमां मूकी दीधुं पछी नदी उतरी, साम काठ भर, तृषाथी पीडित बनीने अणशण स्वीकार्युं अने नवकार मंत्रना पदमात्र स्मरणपूर्वक काळ करी स्वर्गवासी थया. देवशय्यामां उपजता ज तेणे अवधिज्ञानद्वारा जोयुं तो पोताना पूर्वभव दीठा. तरत ज क्षुल्लकना पहेला देहपिंजरमां दाखल थइ जे साधुओ आगळ जइ रह्या हता तेना साथे थइ गया. पछी ते साधुओनी तृषा तथा क्षुधा संबंधी कष्ट विचारी तेना निवारण माटे ते प्रदेशमां थोडे दूर पोतानी शक्तिथी एक गोकुळ विकुर्व्युं. साधुओ ते गोकुळमां आइ रह्या भिक्षार्थे गया अने दोष विगर शुद्ध आहार वहोर्यो. ते स्थळमां एक साधुनो संथारानो वींटो देव पोतानी शक्तिथी भूलावी दीधो. थोडे दूर गया पछी ज्यारे सर्व साधुओ आसन पाथरी बेसवा लाग्या त्यारे ते साधुने पोतानो संथारो याद आव्यो. तरत ज तेओ गोकुळवाळा स्थळे आव्या अने संथारानो पडेलो वींटो लइ लीधो परन्तु जुए छे तो गोकुळ जन नं मळे. साधु आश्चर्यमां गरकाव थइ गया थोडा समय पहेलां जे गोकुळमांथी दोष विगर आहार ग्रहण कर्यो हतो ते गोकुळ क्यां गयुं ? ते विचारमां ने विचारमां तेओ पोताना साधु-संघ पासे पहोंच्या अने वृत्तांत कही संभळाव्यो. आ कथन सांभळी सर्व साधुओ चमत्कार पाम्या. एवामां ते देव प्रत्यक्ष थया अने धनमित्र सिवायना सर्व साधुगणने वंदन कर्युं. धनमित्रने वंदन केम न कर्युं ? एम पूछतां देवे पोतानो पूर्वभव कही संभळावी जणाव्युं के-तेमणे मने सचित्त जळ पीवानुं सूचव्युं हतुं. ए मारा पिता छे, पण मने खोटो उपदेश आपनार जाणी तेमने में वंदन न कर्युं. में पाणी न पीधुं तो देव थयो पण व्रतभंग करी दूषण लगाड्युं होत तो मारे संसारमां घणुं परिभ्रमण करवुं पडत. खरेखर भगवती अहिंसानो प्रभाव चमत्कारी छे. तेना अल्प पालनथी हुं देवऋद्धि प्राप्त करी शक्यो. आ प्रमाणे कही देव अंतर्धान थइ गयो. धनमित्रे पण पोताना कथननी आलोचना लीधी. हे गौतम ! आवो गच्छ होय ते ज सुविहित गच्छ जाणवो.

इच्छिज्जइ जत्थ सया, बीयपएणावि फासुयं उदयम् ।
आगमविहिणा निउणं, गोअम ! गच्छं तयं भणियम् ॥७८॥

[इष्यते यत्र सदा, द्वितीयपदेनापि प्रासुकमुदकम् ।
आगमविधिना निपुणं, गौतम ! गच्छः सको भणितः ॥७८॥]

गाथार्थ–जे गच्छमां साधुओ अपवाद प्रसंगे पण शुद्ध (निर्जीव) जळ

सदा शास्त्रोक्त विधिवडे डहापणद्वारा ग्रहण करवा इच्छे छे ते ज गच्छ प्रमाण छे.

विवेचन—फासु एटले जेमांथी जीव च्यवी गया होय तेवु जळ पाणीने तपाव्या मात्रथी नहीं परन्तु त्रण उकाळाद्वारा पूरेपूरुं उष्ण करवाथी फासु थाय छे शास्त्रकार कहे छे के-अपवादना प्रसग पण साधुने फासु जळ ज कल्पी शके तो उत्सर्ग मार्गने माटे तो कहेवु ज शु ? श्रीदशवैकालिक सूत्रमा जे अनाचारो जणाव्या छे तेमा फासु जळ ग्रहण न करे तने पण अनाचारी ज दर्शाव्या छे कह्यु छे के- "गिहिणो वेयावडिय, जायपाजीववत्तिया । तत्तानिव्वुडभोइत्त, आउरस्सरणाणि य ॥ १ ॥" गृहस्थनी सेवा आदि कामकाज करे, लोकोने विषे पोतानी जाति तथा कुलादिकना प्रकाश करे, शिल्पादिक कृत्य पग्ले छोकराओने भणावी आजीविका करे अने त्रण उकाळा विनानु जळ ग्रहण करे ते सर्वना अनाचारमा समावेश थाय छे तपलु पाणी तो मिश्र होय छे पण ज्यारे त्रण उकाळा आवे त्यारे ज पाणी खरेखर प्रासुक(निर्जीव) थाय छे आवु प्रासुक जळ पण विधिपूर्वक स्वीकारवानु विधान छे श्रीआचारागसूत्रमा कह्यु छे के-"से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जाव समाणे सेज्ज पुण पाणगजाय जाणिज्जा त जहा-उस्सेइम वा १ ससेइम वा २ चाउलोदग वा ३ अन्नतर वा तहप्पगार पाणगजाय अहुणा धोत अणबिल अव्वोकत अपरिणत अविद्धत्थ अफासुय जाव णो पडिगाहेज्जा । अह पुणेव जाणेज्जा चिरा धोय अबिल वुक्कत परिणय विद्धत्थ फासुय जाव पडिगाहेज्जा ॥" पाणीनी भिक्षार्थे गयेला साधु-साध्वीए त्रण प्रकारना जळ जाणवा १ उत्स्वेदिम—आटानु धोवण अथवा लोटमिश्रित हस्तधोवणनु जळ २ सस्वेदिम-तल अथवा अरणादिकथी लेपित थयेल भाजनने धोवाथी प्रगटेल जळ आ बन्ने प्रकारना जळनुं पहेली तथा बीजी वारनु धोवण जळ अचित्त जाणवु त्रीजी अने चोथी वार प्रगटेल जळ मिश्र (सचित्ताचित्त) होय छे, पछी कालातरे (मुहूर्त पछी) अचित्त थाय छे ३. चावलोदक—चोखानु धोवण तेना त्रण अनादेश छे, त आ प्रमाणे-१ ज्या सुधी ते जळमा परपोटा होय, २ जे वासणमा चावल धोया होय तेना जळबिंदुओ सुकाणा न होय अने ३ धोयेला चोखा चूल रधाइ गया न होय-आ त्रण क्रियाओ न थइ होय त्या सुधी चावलोदक न ग्रहण करी शकाय ज्यारे ते चावलोदक डहोळु मटी जइ स्वच्छ थइ जाय त्यारे ज ते ग्रहण करी शकाय वळी जेना स्वाद न फरी गया होय, जीव च्यवी न गया होय, परिणत न थयु होय अने फासुक न थयु होय एवु ऊपर जणावेल त्रणे प्रकारनु जळ ग्रहणीय नथी तेथी विपरीत अबिल, वुक्कत विगेरे प्रकारनु जळ कल्पी शके आ उपरात विशेष प्रकारनु जळ कल्पी शके, ते आ प्रमाणे-४ तिलोदक-ताइ प्रकारे

तत्द्वारा प्रासुक करेल, ५ तुषोदक-जुदी जुदी जातनी डांगरनु धोवणजळ, ६ जवोदक, ७ आचामलादक-ओसामणनु जळ, ८ सौवीर-काजीनु जळ काजी मरुधरमा प्रसिद्ध छे जेनी सुवर्ण, लोढु विगेरे धातु तपावीने जे जळमा बोळे ते जळने पण काजी कहेवाय छे ९ शुद्ध विकट-त्रण वार उकाळेल पाणी, १० अम्बपानक-आंबाना धोवणनु जळ, ११ कपित्थपानक, १२ बीजोरानु धोवण जळ, १३ द्राक्षना धोवणनु जळ, १४ दाडमनु धोवण जळ, १५ खजूर विगेरे नु धोवण जळ, १६ नालियेरनु धोवण जळ, १७ करडानुं जळ, १८ नाना तथा मोटा बोरनु जळ, १९ आमळानु जळ तथा २० आंबलीना धोवणनुं जळ- आ प्रमाणे कुल वीश प्रकारना जळ दर्शाव्या छे आ उपरांत बीजा प्रकारो पण छे आवु पपणीय जळ जोया पछी श्रावक या श्राविकाने साधु कहे-'मने आ जळ वहोरावो' ज्यारे त गृहस्थ अथवा गृहस्थिनी वहोरावे त्यारे ग्रहण करवु अथवा तेओ एम कहे के-' हे साधो ! आ जळ तमे तमारा पात्रा वडे अथवा लघु पात्रीवडे तम ज पाणीनु वासण उपाडीने तमारी इच्छा प्रमाणे ग्रहण करो ' आ प्रमाण गृहस्थनी आज्ञाथी पण जळ ग्रहण करी शकाय आ बीश प्रकारो पैकी द्राक्ष, बोर तथा आमळाना धोवणनु जळ शीघ्र अचित्त थइ जाय छ ज्यारे आंबा विगेरेनु जळ बे-त्रण दिवसे प्रासुक थाय छे वळी जे पाणीमा छाल, बीज विगेरे मिश्रित होय ते पाणी श्रावक साधुने निमित्ते चालणी तथा वस्त्रप्रमुख उपकरणोथी गाळे, वारंवार गाळे, बीजादिकने कष्ट पडे तेवु पाणी साधु समीपे लावीने वहोरावे तो ते पाणी कल्पे नहीं, कारण के ते उद्गमादि दोष युक्त छ श्रीआचारांग सूत्रना चूर्णिकार आ संबधमा लखे छ के-गोल नामना देशमा आम्रफळना फाडिया करीने तेने सूकवे छे ते कटकाओनु धोवण ते दशमु अम्बपानक कहेवाय छे आ विधि साधारण विधि जाणवी कारण के सदा काळ आ विधि प्रवृत्तिमा आवे छे, परन्तु श्री कल्पसूत्रमा वर्षाऋतुने आश्रयीने विशेष विधि कहेल छ पर्युषण करीने रहेल तथा नित्य भोजन करनारा साधुने सर्व प्रकारना (उष्ण तथा धोवण जळना एकवीश प्रकार तेमज अन्य) जळ कल्पी शके उपवास करनारने १ उत्स्वेदिम, २ संस्वेदिम, ३ चावलोदक, छट्ठ करनारने १ तिलोदक, २ तुषोदक अने ३ जवोदक, अट्ठम करनारने १ आचाम्लोदक, २ सौवीर अने ३ शुद्ध विकट, अट्ठम उपरात पछी चार उपवासथी प्रारम्भी छ मास पर्यंत तप करनारने फक्त उकाळेलु अने ते पण गळेलु नहि न कल्पे अणशण करनारने गळेलुं ने एक वखत उकाळेलु पाणी कल्पे त्रण उपवास उपरात तप करनारनु शरीर देवाधिष्ठित होय छे तेणे गळेलु जळ थोडु थोडु पीवु विशेष पीवाथी अजीर्णादिक व्याधिओ थाय वळी पाणीमा हरडे प्रमुख फळ नाखवाथी पण जळ प्रासुक थने

छे श्रीवृहत्कल्पना प्रथम उद्देशाना भाष्यमां कह्यु छे के-"तुवरे फले अ पत्ते, रुक्खसिलातप्पमद्दणाईसु । पासदणे पवाए, आयवतत्ते वहेयवहे ॥ १ ॥" अटवीमां विचरण करता साधुने शुद्ध जळनो योग न थयो होय, कांजी प्रमुख प्राशुक जळ उपलब्ध थइ शके तेम न होय त्यारे जे जळमा हरडाना फळ के पादडा, खाखराना पादडा पड्या होय ते जळने परिणित पटले प्राशुक मानवुं वळी वृक्षना कोटरमा कडवां फळ के पादडावडे अचित्त थयेल जळ ग्रहण करवु अने तेवु पण जळ न मळे तो शिला(पत्थर)ना वचला खाडामा सूर्यना तडकाथी तपी गयेल जळ पण ग्रहण करवु श्रीनिशीथसूत्रना भाष्यनी पीठिकामा पण आ वात जणावी छे, परन्तु महान् कारण उपस्थित थाय त्यारे ज आ पद्धतिनो उपयोग करवो आ हकीकत गीतार्थ साधुने माटे जणावी छे, अगीतार्थ के कोई अन्य प्रकारनो साधु, आवी छूट आपेल छे एम जाणी ते प्रमाणे वर्तन करे तो ससार-परिभ्रमण वधारशे खरी वात ए छे के-प्राण जाय तो पण सचित्त जळ ग्रहण न करवुं अने ते सबधी दृष्टांत आपणे ऊपरनी गाथामा जोई गया छीए. अहीं तो प्रसगथी आपवादिक मार्ग दर्शाव्या छे हवे अग्निकाय सबधी वर्णन करता कहे छे के—

जत्थ य सूलविसूइय, अन्नयरे वा विचित्तमायके ।
उप्पण्णे जलणुज्जालणाइ, कीरइ न मुणि ! तयं गच्छम् ॥७९॥
बीयपएण सारूविगाइ–सड्ढाइमाइएहिं च ।
कारिंती जयणाए, गोयम ! गच्छ तय भणियम् ॥ ८० ॥

[यत्र च शूले विशूचिकाया, अन्यतरस्मिन् वा विचित्रातङ्के ।
उत्पन्ने ज्वलनोज्वालनादि, क्रियते न मुने ! सको गच्छः ॥ ७९ ॥
द्वितीयपदेन सारूपिकादि–श्रद्धादिआदिभिश्च ।
कारयन्ति यतनया, गौतम ! गच्छः सको भणितः ॥ ८० ॥]

गाथार्थ–शूळ, विशूचिका के अन्य अनेक प्रकारना प्राणघातक व्याधिओ उत्पन्न थये छते जे गच्छमा मुनियो अग्निनी आरभादिक क्रिया करता ज नथी अने अपवादरूप आवश्यक प्रसगे यतनापूर्वक अग्निनो आरभ साधुवेषधारी सारूपिक पासे, तेना अभावमा सिद्धपुत्र पासे, तेना अभावमा चारित्रभ्रष्ट पश्चात्कृत पासे, तेना अभावे व्रतधारी श्रावक पासे, तेना अभावे भद्रिक परिणामी अन्यदर्शनीय गृहस्थ पासे करावे तेने हे गौतम ! वास्तविक गच्छ जाणवो.

विवेचन-उत्सर्ग मार्ग तो एवु सूचवे छे के-शीतलेश विषम व्याधिओ थाय तो पण साधु पोताना निमित्ते अग्निकायनो आरंभ कराये नहीं साचो साधु जाणे छे के-जे वस्तु आपणे आपी शकता ज नथी ते अन्य पासेथी एर लेवानो आपणने अधिकार नथी प्राणो पवी चीज छे के जे आपणे कोईने पण आपी शकता नथी तो पोताना निमित्ते अ य जीवोनी हिंसा करवानो आपणने क्यो अधिकार छे ? आषाढाचार्ये आ नियमनो भंग कर्यो हतो तेथी तेमनो अवहे लना थई हती वेदनीय कर्मना उदयथी व्याधिओ थाय तो तेने समभावे सहन करी ते कर्म खपाववु ए ज श्रेष्ठ मार्ग छे, छता पण शास्त्रकार कहे छे के-कोइ साधुनी सहनशक्ति सविशेष न होय, शूळ, विशूचिका जेवो अत्यत दु खप्रद व्याधि थयो होय अने आत्मा आर्त्त के रौद्रध्यानने वश जतो होय तेवा प्रसगे अपवादरूपे अग्निकायना उपयोग करवो, परन्तु ते पण खप पूरतो ज अने यतना युक्त तेना सघधमा ग्रंथकार कहे छे के-तेवा प्रसगमां कोनी कोनी सहाय लेवी तेनो क्रम नीचे प्रमाणे जाणवा के-१ सारूपिक-मायु मुंडावे, श्वेत वस्त्र पहेरे, चोळपट्टो राखे, स्त्रीनो त्याग करे अने भिक्षा मागीने खाय ते सारूपिक कहेवाय, २ सिद्धपुत्र-स्त्री राखे अगर न राखे, सफेद वस्त्रा पहेरे, माथु मुंडाव पण चोटली(शिखा) राखे, पात्रा न राखे पण लोकना गृहने विषे जईने भोजन करे, ३ पश्चात्कृत-प्रथम चारित्र ग्रहण कर्या पछी तेनो त्याग कर्यो होय तेमज वेष पण त्यजी दीधेल होय, ४ श्राद्ध-अणुव्रत स्वीकार्या होय तेवो समकिती श्रावक, ५ भद्रिक परिणामी अ यलिंगी गृहस्थ-आ प्रमाणे एक-एकना अभावमा अ यनी अग्निकाय सबधमा सहाय लेवी आ क्रिया पण यतना पूर्वक करे, पहले अग्नि जो घोजेथी मळी आवे तो त्यांथी लावे, अने न मळे तो ज पोते सळगावे, इत्यादि यतनानी सविशेष विधि श्रीनिशीथसूत्रनी पीठिकामा दर्शावेल छे हवे वनस्पतिकायना सबधमा वर्णवता कहे छे के—

पुप्फाण वीयाण, तयमाईणं च विविहदव्वाण ।
सघट्टणपरिआवण, जत्थ न कुज्जा तय गच्छम् ॥ ८१ ॥

[पुष्पाना बीजाना, त्वगादीना च विविधद्रव्याणाम् ।
सङ्घट्टन परितापन, यत्र न कुर्यात् स गच्छः ॥ ८१ ॥]

गाथार्थ-पुष्प बीज तथा वृक्षादिकना मूळ, पत्र, अकुर, फल, छाल प्रमुख सचित्त वस्तुनो सघट्ट के परिताप आदि जे गच्छमां मुनिओ न करे ते ज गच्छने प्रमाण मानवो.

विवेचन—बे प्रकारना पुष्पो होय छे एक जळमा अने बीजा स्थळमा

उत्पन्न थनारा कमळ विगेरे जळमां अने कोरंटकादिक स्थळमा थाय छे स्थळमा थनारा पुष्पोना पण बे प्रकार छे-(१) अतिमुक्तादिक वृंतबद्ध अने बीजा (२) नालबद्ध पुष्पोमा नालबद्ध संख्याता अने वृंतबद्धमा असंख्याता जीवो होय छे स्नुही ना प्रमुख पुष्पमा अनंता जीवो होय छे शालि(डांगर), गोधूम (घउ) अने जव विगेरे बीजो कहेवाय वळी छाल, मूळ, अंकुरा अने फळ (बोर प्रमुख) तेमज अनेक प्रकारनी वनस्पतिकायनो साधुए स्पर्श करवो घटे नहीं, तेमज ते प्रकारना वनस्पतिकायना जीवोने लेशमात्र पीडा पण न उपजावे आवा मुनिओ जे गच्छमा होय ते गच्छ सुगच्छ कहेवाय आ उत्सर्ग मार्ग दर्शाव्यो प्रसंगे अपवाद मार्गनु सेवन करी शकाय श्रीआचारांगसूत्रना बीजा स्कंधना तृतीय अध्ययनना बीजा उद्देशामा कह्यु छे के-" से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगाम दूइज्जमाणे अंतरा से वप्पाणि वा फलिहाणि वा पागाराणि वा तोरणानि वा अग्गलाणि वा अग्गलपासगाणि वा गड्डाउ वा दरीउ वा सति परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा णो उज्जुयं गच्छेज्जा, केवली बूया आयाणमेयं, से तत्थ परक्कममाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा से तत्थ पयलमाणे पवडमाणे वा रुक्खाणि वा गुच्छाणि वा गुम्माणि वा लयाउ वा वल्लीउ वा तणाणि वा गहणाणि वा हरियाणि वा अवलंबिय २ उत्तरेज्जा,जे तत्थ पाडिपहिया उवागच्छति ते पाणी जाएज्जा, ततो संजयामेव अवलंबिय अवलंबिय उत्तरेज्जा,ततो संजयामेव गामाणुग्गाम दूइज्जेज्जा ॥" साधुने विचरता मार्गमा किल्लो, गढ, रण, खाडा, गुफा आवे त्यारे ते मार्गनो त्याग करीने बीजे मार्गे जवुं, कारण के अन्य मार्ग न जाय तो खाडामा पडता के गुफामा जता वृक्ष प्रमुखनो आश्रय लेवो पडे,परन्तु जो बीजो मार्ग ज न होय तो ते मार्ग जवु अने तेमा पोतानी जातने पडती अटकाववा माटे वेल, वृक्ष प्रमुखनो आधार लेवो वळी कोइ पथिक जन मळी जाय तो तेना हस्तनु अवलंबन लेवु आ संबंधमा कोई शंका करता कहेशे के-आ सूत्रनो आवो अर्थ न करवो वनस्पतिनो संघट्टो थतां हिंसा थाय माटे तेवा मार्गे गमन ज न करवु ते हितावह छे टीकाकार तेने जवाब आपता कहे छे के- हिंसानी पकली गणत्री कामनी नथी नदी उतरता पण अपकायनी विराधना थाय छे छतां आज्ञा आपी छे तेम आ संबंधमा पण आपवादिक छूट समजवी हवे हास्यादिकना त्यागनु वर्णन करे छे—

हास खेड्डा कद्दप्प, नाहियवाय न कीरए जत्थ ।
धावणडेवणलंघण-ममकारावण्णउच्चरणम् ॥ ८२ ॥
[हास्य खेला कान्दर्पी, नास्तिकवादो न क्रियते यत्र ।
धावन डेपनलङ्घन, ममकारोऽवर्णोच्चारणम् ॥ ८२ ॥]

गाथार्थ–हास्य, बाळक्रीडा, कामकथादिक कुचेष्टा, नास्तिकवाद, अकाळे (वर्षाकल्प) कारण वगर लुगडा धोवां, वडी तथा खाडादिक ठेकवा, साधु या श्रावक प्रत्ये क्रोधादिकथी लाघण करवी,वस्त्र–पात्र ऊपर ममता राखवी तेमज पूज्य वडील जनना अवर्णवाद बोलवा–आ बधी क्रियाओ जे गच्छमा न थती होय ते गच्छ सम्यग् गच्छ जाणवो.

विवेचन–सोगठा रमवा, कोडीथी रमवु ते क्रीडा कहेवाय. कोई कहे के–ज्ञानबाजी रमवामा हरकत शी छे? तेनो पण शास्त्रकार निषेध करता कहे छे के–ते पण जुगारनो एक प्रकार छे, माटे तेवी क्रीडा न करवी इन्द्रजालादिक क्रिया पण कौतुकरूप छे, माटे तेवी पण क्रीडा न करवी कामकथादिक कुचेष्टा पांच प्रकारनी छे, ते आ प्रमाणे–१ कदर्पी, २ आभियोगिकी, ३ किल्बिषिकी, ४ आसुरी अने ५ मोही (१) कदर्पी–श्रीउत्तराध्ययनसूत्रमा प्रात कह्यु छे के–"कदप्पकोकुयाई, तह सीलसहावहासविगहाहि। विम्हावितो अ परं, कदप्प भावणं कुणइ ॥ १ ॥" अत्य त हसवु, निरर्थक बोलवु, गुरु प्रमुख वडील जन प्रत्ये निष्ठुर वचन बोलवु, कामभोगनी वातो करवी, तेनी प्रशसा करवी ते कदर्प कहेवाय हसतो हसतो आख या भृकुटी वांकी करे जेथी अन्य जनो हसे ते कायकौकुच्य कहेवाय अने जे वाणी बदवाथी लोको हसी पडे अथवा बिलाडी, गाय, बकरी प्रमुखनी भाषा बोली अन्य जनोने हसावे ते वचनकौकुच्य कहेवाय छे उपहास,ठठ्ठा–मश्करी करी लोकोने हसावे तेवो साधु तेवा अभ्यासने अंत काळ करीने हलकी कोटिनो एटले कदर्प जातिनो देव थाय (२) आभियोगिकी–" मताजोग काउं, भूईकम्म च जे पउजति। सायरसइड्ढिहेउं, अभिओगं भावण कुणइ ॥ २ ॥ " वशीकरण आदि मन्त्र साधे, चूर्णद्वारा सुवर्णादिक सिद्धि करे, रक्षार्थ राखडी बांधे, मिष्ट भोजनार्थे या अ य सुखाभिलाषाथी कौतुक करे ते आभियोगिक चेष्टा जाणवी अने तेना *अभ्यासथी साधु काळ करी आभियोगिक (किंकरस्थानीय) देव थाय ऊपरना* श्लोकमा मन्त्रादिकनो प्रयोग पोताना सुखने अर्थे करवानो निषेध कर्यो छे, आपवादिक प्रसंगे शासनोद्योतना कार्यमा मन्त्रप्रयोग करवानो निषेध न जाणवो (३) किल्बिषिकी–" नाणस्स केवलीणं, धम्मायरियस्स सघसाहूणं। माई अवण्णवाई, किब्बिसियं भावणं कुणइ ॥ ३ ॥ " ज्ञान, केवळी, धर्माचार्य (पोताने धर्म पमाडनार) तथा साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकारूप चतुर्विध धर्मनो अवर्णवाद (निंदा) ते किल्बिषिकी तेज काया (शरीर) छे, तेज व्रतो छे, प्रमाद अने अप्रमाद विगेरे पण तेज छे तो मोक्षाभिलाषीए योनि तथा ज्योति विगेरेनु ज्ञान प्राप्त शा माटे करवु? वळी ज्ञान भणीने शु करवु छे? अज्ञानी होय तेने पाप न लागे अने घणु भणेल घणु अभिमान करे माटे ज्ञाननी जरुरियात नथी

आ प्रमाणे कहे ते ज्ञाननि दा, केवळज्ञान ने केवळदर्शननो क्रमे क्रमे उपयोग थाय छे एटले ज्यारे ज्ञाननो उपयोग होय त्यारे दर्शननु आवरण अने दर्शननो उपयोग होय त्यारे ज्ञाननु आवरण थाय वळी जो बन्ने एक साथे थाय तेम मानशो तो ज्ञान ने दर्शन एक थइ जशे तो तेने बे कम मानवा ? आ प्रमाणे बोले ते केवळीनी निन्दा, आ आचार्य हलका कुळमा जन्मेला छे, आचार विचारनु तेमने भान नथी, नीच जातिमा जन्मेला विशेष शु जाणे ? इत्यादिक प्रकारे कहे ते धर्माचार्यनिन्दा, घणा शियाळोनो समूह सिंहने शु करी शके ? तेम आ सघ मने शु करवानो छे ? एम विविध प्रकारे सघनी विडबना करे ते सघनिन्दा, साधुओ परस्पर सपीने रही शकता नथी माटे जुदी जुदी दिशामा चाल्या जाय छे, वळी चालवामा घणा समर्थ होय छता बगलानी पेठे कपट राखीने मद गतिए चाले छे–आ प्रमाणे विविध प्रकारे साधु सबधी विपरीत वर्णन करवु ते साधुनिंदा, एवी ज रीते साध्वी, श्रावक अने श्राविकानी निंदा पण जाणी लेवी आवा प्रकारनो निंदाखोर माणस काळ करीने अस्पृश्य जाति जेवा किल्बिषीया देवोमा उपजे छे (४) आसुरी–" अणुबद्धरोसपसरो, तह य निमित्तमि होइ पडिसेवी । एएहिं कारणेहिं, आसुरिय भावणं कुणइ ॥ ४ ॥ " हमेशा क्रोधी रहेनारो अने कारण विना पण अतीत, अनागत अने वर्तमान ए त्रणे काळना निमित्तो कह्या करे ते आसुरी भावना कहेवाय, अने आवी भावनावाळो साधु काळ करीने असुर देवनिकायमा उपजे छे (५) मोही–"सत्थग्गहण विसभक्खण च, जलण च जलपवेसो अ । अणयारभडसेवा, जम्मणमरणाणि बधन्ति ॥ ५ ॥" खड्गादिक शस्त्रथी, विषभक्षणथी, अग्निमा झपापात करवाथी, जळमा डूबी जवाथी पोताना आत्मानो घात करे तेमज शास्त्रमर्यादामा न रहेता उपकरण प्रमुख भोगवे ता सन्मार्ग मूकी उन्मार्गनु सेवन कर्यु कहेवाय अने तेथी ससारमा अनता भवो करवा पडे मोही भावनानु लक्षण कह्यु छे के–" उम्मग्गदेसओ मग्गनासओ, मग्गविप्पडीवत्ती । मोहेणे य मोहित्ता, सम्मोह भावण कुणइ ॥१॥ " मिथ्या मार्ग एटले हिंसादिना मार्ग ग्रहण करे अने सन्मार्गना नाश करावे–त्यजावे तेमज मोहथी मोहित थयो होय तेने मोही भावनावाळो कहेवाय हवे आ बाबतमा कोइ शका करता पूछे छे के–पूर्वे भावनानु फळ देवगति जणावी छे अने पाछळथी अन्य (भवभ्रमण) फळ दर्शाव्यु छे तो परस्पर विरोध नहीं आवे ? तेनो खुलासो आपता ग्रंथकार जणावे छे के–अनतर फळ देवगति जाणवी, परपर फळ तो अनत ससार परिभ्रमण ज जाणवु साधुपणामा किंचित् द्रव्य क्रिया करे तेथी नीच देवपणु प्राप्त थाय अने ते पापानुबधी पुण्य खलास थइ जाय त्यारे परपर फळ पामे कह्यु छे के–" एयाउ भावणाओ, भावित्ता देव दुग्गइ जति । तत्तोय चुया सता, पडति भवसागरमणंतम् ॥ १ ॥ " आवा

प्रकारनी भावना भावीने साधु देवरूप दुर्गतिमा जाय पटले नीच देव थाय अने त्यांथी च्यवीने अनंत जन्म-मरणरूप भवसागरमा भटके. आवी भावना वाळा साधुओ जे गच्छमा न होय ते सुगच्छ जाणवो

जीवाजीवादिक पदार्थने न माने ते नास्तिक कहेवाय तेओ कहे छे के-" सन्ति पच महब्भूया, इहमेगेसिमाहिया । पुढवी १ आऊ २ तेऊ ३, वाऊ ४ आगासपचमा ५ ॥ १ ॥" १ पृथ्वी-कठिनतारूप, २ पाणी-द्रव (पातळापणा) रूप, ३ तेज-अग्नि उष्णतारूप, ४ वायु-हलनचलनरूप अने ५ आकाश-पोलाण, शून्यरूप-आ पाच प्रकारना महाभूतो सर्वत्र व्यापी रहेल छे आ पाचे महाभूतो सर्व बाल-गोपालमा प्रत्यक्ष नजरे पडे छे, माटे कोइ पण आ महाभूतोनो निरास करी शके तेम नथी आ पाचे महाभूतो एकत्र थाय त्यारे शरीर, जीव एवो आत्मा थाय छे आ भूतोथी भिन्न एवो कोइ पदार्थ नथी तेम आत्मा पण नथी आ प्रमाणे नास्तिकवादीनु कथन छे, तेमा कोइ शका करी तेमने पूछे छे के-जो तमो एम कहेशो तो कोइ जीव मरण पामे छ त्यारे तमे कोने मरण पामेलो जाणशो ? तेना जवाबमा नास्तिकवादी कहे छे के-कोईनु देवदत्त एवु नाम होय अने ते मरण पामे त्यारे पाच महाभूतो पैकी अग्नि के वायुनो नाश थयो होय लोको शरीरधारी देवदत्तनो नाश थयो एम कहे छे अने तेथी देवदत्त मरी गया एम जणाये छे जीव मरीने परलोकमा जाय एवो कोई जीव ज नथी आवा प्रकारनु नास्तिक मतवादीनु कथन श्रीसुयगडागसूत्रमा विस्तारथी दर्शावेल छे तेनो सचोट उत्तर ते ज स्थळे आपवामा आव्यो छे वळी श्रीदशवैकालिक सूत्रनी निर्युक्तिमा पण कह्यु छे के—

अत्थि चि दारमहुणा, जीवो अत्थि त्ति निज्जए नियमा ।
लोगाययमयघायत्थ-मुचए तत्थिमो हेऊ ॥ १ ॥
जो चिंतेइ सरीरे, नत्थि अह स इव होइ जीवु त्ति ।
न हु जीवम्मि असते, ससयउप्पायओ अन्नो ॥ २ ॥
जीवस्स एस धम्मो, जा ईहा अत्थि नत्थि वा जीवो ।
थाणुमणुस्साणुगया, जह ईहा देवदत्तस्स ॥ ३ ॥
सिद्ध जीवस्स अत्थित्त, सद्दादेवाणुमीयए ।
नासओ भुवि भावस्स, सद्दो होइ केवलो ॥ ४ ॥
अत्थि त्ति निव्विगप्पो, जीवो नियमाउ सद्दओ सिद्धी ।
कम्हा सुद्धपयत्ता, घडखरसिंगाणुमाणाओ ॥ ५ ॥

मुद्धपयत्ता सिद्धी, जइ एव सुन्नसिद्धि अम्हपि ।
त न भवइ मतेण, ज सुन्न सुन्नगेह व ॥ ६ ॥
मिच्छा भवे उ सव्वत्था, जे केइ पारलोइया ।
कत्ता चेवोपभुत्ता य, जइ जीवो न विज्जइ ॥ ७ ॥
पाणिदया तव नियमा, बभ दिक्खा य इदियनिरोहो ।
सव्वनिरत्थयमेय, जइ जीवो न विज्जइ ॥ ८ ॥
लोइआ वेइआ चेव, तहा सामाइआ विऊ ।
निच्चो जीवोपि हू देहा, इइ सव्वे ववत्थिया ॥ ९ ॥
लोए अच्छिज्जभिज्जो, वेए सपुरीसदद्धगासियालो ।
समए अहमासि गओ, तिविहो दिव्वाइससारो ॥ १० ॥
अत्थि सरीरविधाता, पडिनिअताकारमाइभावाओ ।
कुभस्स जइ कुलालो, सो मुत्तो कम्मसजोगा ॥ ११ ॥
फरिसेण जहा वाऊ, गिज्झइ कायससिओ ।
नाणाईहिं तहा जीवो, गिज्झइ कायससिओ ॥ १२ ॥
अणिंदियगुण जीव, दुन्नेय मसचक्खुणा ।
सिद्धा पासति सव्वण्णू , नाणसिद्धा य साहुणो ॥ १३ ॥

हव आस्तिकप्रकार एटले जीव चोक्कस विद्यमान छे ते जणाव छे नास्तिक मतना खडन अर्थे जीवनी विद्यमानता जणावे छे (१) जे काई 'हु शरीरमा नथी' एवु चितव छे ते चितवनारो कोण छे ? ते ज जीव जाणवो जीव विना सशय उपजावनार बीजो काइ नथी, कारण के भूतोमा तेवी शक्ति नथी ज (२) 'विचार करवो' ए ज जीवनो धर्म छे, कारण के छता पदार्थनो विचार अजीव करी शके ज नहीं दा त दूरथी झाडनु ठूठु देखीने विचार थाय छे के आ पुरुष छे के ठूठु ? आवा (ईहा) विचार पुरुषने थया पण ठूठाने न थयो तेथी जीवना स्वभाव 'विचार' छे (३) 'जीव' एवा शब्द बोलवाथी ज जीवनु अस्तित्व साबित थाय छे आ अनुमान खोटु नथी कारण के जे अविद्यमान छे तेना स्वतन्त्र शब्द होता नहीं जे केवळ शब्द छे ते पदार्थ अवश्य छे दा त खरविषाण-गधेडाना शींगडा. आ वस्तु एक साथे घटी शके नहीं, कारण के गधेडाने शींगडा होता ज नथी, पण जो खर=गधेडा अने विषाण=शींगडा भिन्न भिन्न शब्दो लईए तो घटी शके आ असजोगी शब्द छे, एटले तेनी विद्यमानता न होय तेवी ज रीते आकाशपुष्प आकाशनु फूल आकाश अवकाशरूप होई त्या कदापि पुष्पोत्पत्ति

होई शके ज नहीं आकाश अने पुष्प भिन्न भिन्न मानीए ता बने घटी शके जीव शब्द एकलो न छे तेथी ते घटी शके छे (४) शुद्ध घट, पट, खर इत्यादि शब्दोना अनुमानथी जीव छे, तेमा काई पण विकल्प नथी घट, पट इत्यादि शब्दो छे तेम निश्चयथी शब्दद्वारा जीवनी सिद्धि थाय छे (५) आ समयमा नास्तिकवादी शका करता प्रश्न उठावे छे के-शुद्ध शब्द छे माटे जीवनी सिद्धि करो छो तो पण अमारा शून्य, नष्ट एवा शब्दो पण शुद्ध ज छे, माटे अमारु कथन पण सत्य ज छे तेना जवाब आपता कहे छे के-शून्यने शून्य के नष्टने नष्ट कहीए ते बरोबर कहेवाय परन्तु जे विद्यमान होय तेने शून्य के नष्ट केम कहे वाय? देवदत्त घरमा न होय त्यारे ते गृह शून्य कहेवाय परन्तु ते गृहमा बेठो होय छता तेने शून्य केम कहेवाय? कोई पण एक स्थळे घडो न होय तो तेने नष्ट कहेवाय परंतु छता घडो नष्ट न कहेवाय आ नयथी जीव शब्दनु छता पणु होवाथी तेनु नास्तिपणु केम कहेवाय? जो जीव न होय तो नास्ति कहेवाय पण वास्तविक भाव छते ते नास्ति न कहेवाय (६) जो जीव नथी एम मानीए तो परलोकादिक सब असत्य ठरे अने ते जूठा होय तो कर्ता अने भोक्ता काई पण निर्णीत नहीं थाय (७) जो जीव नथी तो जीवदया पाळवी, विवेक आचरवो, तपश्चर्या करवी, ब्रह्मचर्यनुं पालन करवु, दीक्षा ग्रहण करवी तथा इन्द्रियोनो निरोध करवो इत्यादि सर्वे निरर्थक ज निवडे (८) पुराणना रचनाराओ, वेदो तथा वैदिकमतिओ, त्रिपिटकादि मतधारी अने शैव धर्मी पंडितो कहे छे के-जीव नित्य छे, अनित्य नथी केटलाक एम पण अभिप्राय धरावे छे के-शरीरथी जीव भिन्न छे जो जीव न मानो तो ते सर्वना मतमा मताग्रह नीचे प्रमाणनुं जीवनु लक्षण निष्फळ निवडशे (९) भगवद्गीतामा जीवन अंग कह्यु छे के—अच्छेद्योऽयमभेद्योऽय मनिकार्योऽयमुच्यते । नित्य सततगः स्थाणूरचलोऽय सनातनः ॥ वेदमा पण कह्युं छे के—शृगालो वै एष जायते यः सपुरीषो दह्यते—जे पुरीष सहित बळे छे ते मरीने शियाळ थाय छे वळी त्रिपिटकमा कह्यु छे के—अहमासीत् गज । पहेले हु हाथी हतो वळी केटलाक अन्य मतिओ त्रण प्रकारनो (देव, तिर्यंच अने मनुष्य) अने केटलाक चार प्रकारनो (देव, मनुष्य, तिर्यंच अने नरक) ससार माने छे जो जीव न मानीए तो ऊपर कहेल सर्व दृष्टातो निष्फळ जाय (१०) शरीरना कर्ता अने शरीरथी भिन्न प्रकार कोई जीव छे जेम कुभार घडानो कर्ता छे पण ते बने एक ज नथी तेवी रीते जीव ज्यारे कर्मथी मुक्त थाय छे त्यारे सिद्ध बने छे (११) कोई कहेशे के त केवी रीते जाणी शकाय? अमने जीव तथा शरीर जुदा करी देखाडो तेनो जवाब आपता कहे छे के-जेम वायुने आपणे जोई शकता नथी छता स्पर्श लागवाथी जाणी शकीए छीए के वायु छे तेम ज्ञानादिक गुणोए करीने जीव जाणी शकाय छे। (१२) जीव अतींद्रिय छे एटले नेत्रथी जोवामा

न आवे परन्तु केवली भगवंत तथा ज्ञानी साधु तेना स्वरूपने जाणे-देखे छे तेथी ते प्रत्यक्ष सिद्ध छे आपणी तो चर्मचक्षु छे तेथी आपणे जीवने प्रत्यक्ष जोई शकीए ज नहि, पण अनुमानथी जाणी शकाय (१३) जेओ आ प्रमाणे जीवनी मान्यता स्वीकारता नथी ते नास्तिकवादी छे एनी पण विशेष पुष्टि माटे संपूर्ण जीवस्थापन-कुलक बनावे छे--

जीवो अणाइनिहणो, अविणासी अक्खओ धुवो निच्चम् ।
दव्वट्ठयाइनिच्चो, परियायगुणेहि य अणिच्चो ॥ १ ॥
जह पउराउ मउणी, घडाउ वयराणि कुसुआ पुरिसो ।
एव न चेव भिन्नो, जीवो देहाउ समारी ॥ २ ॥
जह खीरोदगतिलतिल्ल-कुसुमगधाण दीसइ न भेओ ।
तह चेव न जीवस्सवि, देहाद्यभिन्नो भेओ ॥ ३ ॥
सन्तोअनिकोएहि अ, जहकम देहलोअभिन्नो वा ।
हरियस्स व कुसुमस्स व, पएसमग्गा समा चेव ॥ ४ ॥
कालो जहा अणाई, अविणासी होइ तिसु वि कालेसु ।
तह जीवो वि अणाई, अविणासी तिसु वि कालेसु ॥ ५ ॥
गयण जहा अरूवी, अवगाहगुणेण घिप्पई त तु ।
जीवो तहा अरूवी, विन्नाणगुणेण घित्तव्वो ॥ ६ ॥
जह पुढवी अविणट्ठा, आहारो होइ सव्वदव्वाण ।
तह आहारो जीवो, नाणाईण गुणगणाण ॥ ७ ॥
अक्खयमणतमउल, जह गयण होइ तिसु वि कालेसु ।
तह जीवो अविणासी, अवट्ठिओ तिसु वि कालेसु ॥ ८ ॥
जह कणगाओ कीरति, पज्जवा मउडकुडलाईया ।
दव्व कणग त चिय, नामविसेसो इमो अन्नो ॥ ९ ॥
एव चउगईए, परिब्भमतस्स जीवकणगस्स ।
नामाइ बहुविहाइ, जीवदव्व तय चेव ॥ १० ॥
जह कम्मयरो कम्म, करेइ भुजेइ सो फल तस्स ।
तह जीवो वि अ कम्म, करेइ भुजेइ तस्स फलम् ॥ ११ ॥
उज्जोवेउ दिवस, जह घरो वच्चई पुणो अत्थ ।
नय दीसइ सो घरो, अन्न खित्त पयासतो ॥ १२ ॥

जह सूरो तह जीवो, भवतरं वच्चए पुणो अन्नम् ।
तत्थ वि सरीरमन्न, खित्त व रवी पयासेइ ॥ १३ ॥
फुल्लुप्पलकमलाण, चदणअगरूण सुरहिगधीणम् ।
घिप्पइ नासाइ गुणो, नय रूव दीसए तेसिं ॥ १४ ॥
एव नाणगुणेण, घिप्पइ जीवो वि बुद्धिमतेहिं ।
जह गधो तह जीवो, न हु सक्खा कीरए भिन्नम् ॥ १५ ॥
भभामउद्दमद्दल-पणवमकुदाण संखसन्नाणम् ।
सद्दुविय सुन्नइ, केवलु त्ति न हु दीसइ रूवम् ॥ १६ ॥
पच्चक्ख गहगहिओ, दीसइ पुरिसो न दीसइ पिसाओ ।
आगारेहि मुणिज्जइ, एव जीवो वि देहट्ठिओ ॥ १७ ॥
हसइ निरूमइ रूसइ, नचइ गाएइ रूयइ सुहदुक्खम् ।
जीवो देहमझगओ, विविहपयार पयसेइ ॥ १८ ॥
जह आहारो भुत्तो, जिआण परिणमइ सत्तभेएहिं ।
वस १ सोणिय २ मस ३–ट्ठिअ ४, मज्जा ५ तह मेय ६ सुक्केहिं ७ ॥१९॥
एव अट्ठविह चिअ, जीवेण अणाइसहगय कम्मम् ।
जह कणग पाहाणे, अणाइसजोगनिप्फन्नम् ॥ २० ॥
जीवस्स य कम्मस्स य, अणाइम चेव होइ सजोगो ।
सो वि उवाएण पुढो, कीरइ न वलाउ जह कणगम् ॥ २१ ॥
ज(इ)ह पुव्वयर कम्म, जीवो वा जइ हविज्ज वइ कोइ ।
सो वत्तव्वो कुक्कुडि–अडाण भणसु को पढमो ॥ २२ ॥
जह अडसंभवा, कुक्कुडि त्ति अड च कुक्कुडिइभव ।
नय पुव्वावरभावो, जह तह कम्माण जीवाणम् ॥ २३ ॥
अणुमाणपहे सिद्ध, छउमत्थाण जिणाण पच्चक्खम् ।
गिण्हसु गणहर ! जीव, अणाइय अक्खयसरूवम् ॥ २४ ॥
कत्थ य जीवो बलिओ, कत्थ य कम्माइ हुन्ति बलियाइ ।
जीवस्स य कम्मस्स य, पुव्वनिबद्धाइ वेराइ ॥ २५ ॥

इति जीवस्यापनकुलकम् ॥

जीव अनादिअनत छे, एटले तेनी आदि नथी तेम अत पण नथी,

अविनाशी, अक्षय, ध्रुव-अचलायमान अने द्रव्यार्थनयवडे नित्य अने पर्यायनयवडे अनित्य छे ज्यारे गतिमा जन्म, मरणादिक पर्यायो करे छे ते हेतुथी पर्यायार्थिकनयवडे अनित्य दर्शाव्या छे (१) प्रतिवादी शंका करता कहे छे के-तो तमे जीवने जुदो करी बतावो, तेनो उत्तर ए छे के-जेम पांजरामां पक्षी, घडामा बोर अने कंचुक (चोळी) थी मानवी भिन्न छे तेम शरीरथी जीव भिन्न नथी तो कयो रीते देखाडी शकाय? अनुमानप्रमाणथी ज ते जाणी शकाय (२) दूध अने पाणी, तिल ने तेल, पुष्प ने सुगंध साथे होवाथी जेम ते भिन्न भिन्न देखाता नथी तेम जीव अने शरीरनो भेद देखातो नथी (३) जीवनो संकोच-विकोच एटले ह्रस्व, दीर्घ थाय छे जरूर पडये ते चौदह राजलोक प्रमाण विशाळ थई शके छे कुंथुआना शरीरमा तेना जेवडा ह्रस्व अने हस्तिना देहमा तेना जेवडो दीर्घ थाय ता पण बन्ने शरीरमा प्रदेश तो असंख्याता ज छे (४) जेम काळ अनादि अने अविनाशी छे छता त्रणे काळ-अतीत, अनागत अने वर्तमान-मा सदा काळ छे तेम जीव अविनाशी अने अनादि होवा छता हमेश छे (५) कोई कहे के-जीव अरूपी छे, तेने ज्ञान गुणद्वारा जाणी शकाय छे तेम आकाश अरूपी छे छता तेनो गुण अवकाश छे तेम जीवनो गुण ज्ञान छे (६) जेम पृथ्वी सर्व द्रव्यना आधारभूत छे एटले रूपी द्रव्यनो आधार पृथ्वी छे तेम ज्ञानादिक गुणसमूहनो आधार पृथ्वी छे (७) जेम अक्षय, अनंत ने निर्मळ आकाश त्रण काळने विषे छे, छे ने छे ज तेवी ज रीते त्रण काळने विषे अविनाशी, अवस्थित एवो जीव छे, छे ने छे ज (८) जीव मृत्यु पामीने जुदा जुदा प्रकारना वेष थाय छे? तेना खुलासामा जणावे छे के-कोई सुवर्णना घडा, मुकुट, कुंडल विगेरे विविध प्रकारना घाट घडावे पण ते सर्वमा सुवर्ण तो तेनु तेज छे पण रूप-पर्याय नवा थया ते प्रमाणे जीव मृत्यु पामीने नरक गतिमा, तिर्यचपणामा, मनुष्यमा, देवमा, स्त्री, पुरुष, ब्राह्मण, क्षत्रिय-एम विविध प्रकारे उपजे ते तेना पर्यायो समजवा, जीव द्रव्य जे छे ते तो तेनु ते ज छे, तेमा कइ पण फेरफार थता नथी (९-१०) जे प्राणी जेवु कार्य करे ते तेवु कर्मफळ भोगवे तेम जीव पण कर्म बांधे तेना रस-फळ भोगवे (११) जेम सूर्य दिवसे प्रकाश करीने अस्त थाय अने पछी बीजा क्षेत्रमां प्रकाश करे पण नाश न पामे तेम जीव पण भवांतरमां जइने बीजा शरीर धारण करे छे, पण नाश पामतो नथी (१२-१३) कोइ कहे के-जीवनु स्वरूप तो देखातु नथी तेनुं केम? तेनो उत्तर ए छे के-कमळ प्रमुखना पुष्पमा, चंदन तथा अगुरु धूपमा सुगंध होवा छता ते जणाती नथी पण नासिकाद्वारा ते जाणी शकाय छे के-आ अमुक पुष्पनो सुगंध छे तेम बुद्धिवंत पुरुष ज्ञान गुणद्वारा जीवने जाणी शके जेम नेत्रथी सुगंध न पारखी शकाय तेम अज्ञानी प्राणी जीवने जाणी शकता नथी (१४-१५) भेरी, मृदंग, वीणा ढोल विगेरे वाजित्रोना शब्द संभळाय छे, पण जोवाता नथी वळी कोई मायासने भूत

चळ्यु होय त्यारे ते माणसने आपणे जोईए छीए, भूत-पिशाचने जोई शकता नथी पण मानीए छीए के पुरुषना शरीरमां पिशाच छे तेम हलन, चलन, श्वासोश्वास विगेरे कारणोथी आपणे जाणी शकए के शरीरमां जीव छे जे इंद्रियो देखातो नथी (१६-१७) वळी कोई प्राणी क्रोध करे, नाचे, गाय, रोवे, सुख दु:ख अनुभवे-आ प्रकारना लक्षणोद्वारा शरीरमां रहेलो जीव जाणी शकाय छे (१८) जे आहार आपणे करीए छीए ते सात प्रकारे-१ धरवी, २ लोही, ३ हाडका, ४ मांस, ५ मज्जा, ६ मेद अने ७ वीर्यरुपे परिणमे छे तेथी रीते जीवने आठे कर्म लागेला छे जेम सुवर्ण अने पाषाणनो सजोग अनादि छे तेम जीव अने कर्मनो सजोग पण अनादि छे (१९-२०) जो अनादि सजोग छे तो तेने केम दूर करी शकाय? ते प्रश्नो उत्तर आपता जणावे छे के-जेम पाषाण ने सुवर्णना अनादि सयोग अग्निद्वारा छूटी जाय छे तेम तप-जपादिद्वारा कर्मनो जीव साथेनो अनादि सयोग पण नाश पामी जाय (२१) कोई प्रश्न करे के-जीव पहेलो के कर्म? तेना जवाबमा तेने पूछवु के-कुकडी पहेली के इंडु? तेना जवाबमा ते कहेशे क-तेमा पहेलु अने पछी जेवु कइ नथी ते ज रीते जीव ने कर्ममा पण पूर्वापर जेवु कई नथी (२२-२३) छद्मस्थ प्राणिओ जीवने अनुमान प्रमाणथी जाणे अने केवळी भगवंत तो प्रत्यक्ष देखे छे माटे जीव छे तेवु सिद्ध कथन ग्रहण करवु (२४) कोइक प्रश्न करे के-जीव बलवान के कर्म? तेनो खुलासो ए छे के-कोइक स्थळे जीव बळवान अने कोइक स्थळे कर्म बळवान जाणवु. जीवने कर्मनो सबध पूर्व कालनो छे, नवो सयोग नथी (२५) जीवस्थापनाकुलक-मांहेनो विचार जाणी कदापि नास्तिकवाद ग्रहण न करवो

नास्तिकवादनो बीजो अर्थ ए पण छे के-धूर्तनी माफक असबद्ध के निरर्थक वचन उच्चारवा ते सबधमा धूर्तानु दृष्टांत आपतां जणावे छे के-

अवंती देशनी उज्जैणी नगरीनी उत्तर दिशामा जीर्ण नामना उद्यानमा घणा धूर्तो (ठगारा) भेगा थया तेमा १ शशक, २ एलासाढ, ३ मूलदेव अने ४ खडपाणा स्त्री-आ चार मुख्य हता पहेला त्रण पाच सो धूर्तोना उपरी हता अने खडपाणा पाच सो स्त्रीनी स्वामिनी हती एकदा अतिवृष्टि थवा लागी सात दिवस पसार थइ गया छता वृष्टि चालु ज रही एटले चारे धूर्तो विचारवा लाग्या के-आपणने भूख लागी छे आ अतिवृष्टिना समयमा कोण खवरावे? त्यारे मूळदेव बोल्यो के-जेणे जेवु देख्यु के सांभळ्यु होय तेनी वार्ता कहे ते कथा सांभळीने जे तेने जूठी कहे ते सर्व धूर्तोने भोजन करावे कथा सांभळीने बाकीना तेने उपनयथी घटावे-सत्य समजावे तो कांइ पण भोजन न करावे धूर्तोए मूलदेवनु वचन स्वीकार्यु अने पहेली कथा एलासाढे शरू करी-हु एकदा केटलीक गायोने लइने अटवीमा गयो तेवामा त्यां केटलाक चोरो आव्या एटले में मारी कांबळी पाथरीने तेमां सर्व गायोने बांधी लीधी पोटकु माथे मूकी हुं

चाली नीकळयो नजीकना गाममा गयो त्या केटलाक गोवाळो रमता हता तेनी रमत जोवा ऊभो रह्यो तेवामा किलकिलाट करतां ते चोरो पण मारी पाछळ त्या आवी पहोंच्या पटले गोवाळो, गाम गायो अने हु एक चीभडामा पेसी गया ते चीभडाने एक बकरी गळी गइ ते बकरीने एक अजगर गळी गयो अजगरने ढींकण नामनु पंखी गळी जइने उडयु अने वडलाना मोटा झाड ऊपर जई बेठु एक पग झाड नीचे लटकतो राख्यो तेवामा राजाए पोताना लश्कर साथे ते झाडनी नीचे पडाव नाख्या पक्षीना लटकता पगने वडवाइ समजी त्या हाथी बाध्यो तेवामा ढींकण पक्षी उडयु एटले हाथी पण आकाशमा उछळयो आ प्रमाणे जाइ सैनिकोए राजाने वात करी राजाए शब्दवेधी बाण चलावनारने हुकम कर्यो पटले तेणे बाण चलाव्यु पक्षी मृत्यु पामी भूमि ऊपर पडयु राजाए तेनु पेट चीराव्यु तो अजगर नीकळ्यो अजगरने फाडयो तो बकरी नीकळी, बकरीमाथी चीभडु नीकळ्यु चीभडामाथी गाम, गोवाळो, गायो अने हु नीकळ्या सब लोक पोतपोताना स्थाने गया अने हु पण गायोने मूकीने अहीं तमारी पासे आव्यो एहो भाइओ, मारी वात साची के नहीं ? सर्व धूर्तोए कह्यु के-तारी वार्ता साची ज छे, तेमा कांइ पण असत्य नथी पटले एलासाढे पुन कह्यु क-गायो कावळीमा केम समाइ अने आखु गाम चीभडामा केम रही शक ? त्यारे बाकीना त्रणे धूर्तो बोल्या-भाइ, तेमा शु आश्चर्य छे ? तें महाभारत साभळ्यु नथी ? तेमा कह्यु छे क पहेला आ जगत् जळमय हतु तेमां एक इडु उत्पन्न थयु तेमाथी पर्वत, वन, नगर सब उपज्यु जेम इडामा सर्व समाणु तेम तारी कावळमा गायो समाइ वळी तु कहे छे के-ढींकणना पेटमा अजगर, अजगरना उदरमा बकरी, बकरीना पेटमा चीभडु अने चीभडामा गोवाळ, गाय विगेरे केम समाइ शके ? तेनु कारण ए छ के-विष्णुना पेटमा सुर, असुर, तिर्यंच, वन, पर्वतादिक सब समाणा, ते विष्णु देवकीजीना उदरमा रह्या, देवकी पण शय्यामां समाया आ सर्व पुराण कथा साची होय तो तारी वात केम असत्य मनाय ?

बाद शशक कहेवा लाग्यो के-अमे खेतरमा तल वाव्या शरद् ऋतुमा पटले आसो मासमां अमे तल कापवा गया त्यारे जोयु तो तल्नु झाड एवु विशाळ थयेलु क-कुहाडाथी कापीए तो पण कपाय नहीं तेथी हु त झाडनी चारे तरफ भमवा लाग्यो तवामां एक हाथी त्या आव्या अने मने मारवा माटे दोडया पटले हुं नासवा लाग्यो, परन्तु कोइ पण आश्रयस्थान न मळवाथी हुं ते तलना झाड ऊपर चढी गयो हाथी त्या आव्या पण हुं ऊपर होवाथी कइ करी शक्यो नहीं पटले गुस्से थइने तलना झाडने सुढमा पकडीने धूजाववा लाग्यो आम थवाथी झाड ऊपरना ... मेघवृष्टिनी जेम नीचे खरवा लाग्या अने तेमा हाथी चारे तरफ फरवाथी ... पीलाय तेम तल पीलाइ गया तेलनी महानदी वहेवा लागी पृथ्वी ... भामी गयो तेमा हाथी खुची गया अने मृत्यु पाम्यो पटले मैं ... हाथीनु चम लइ लीधु. तेनो एक दडो बनाव्यो मने भूख ...

प्रमाण (पुष्कळ) खाळ खाधी अने दश घडा तेल पीधु पछी तेल भरेलो दडो खभा ऊपर लइने हु गाम तरफ चाल्यो गाम बहार झाड ऊपर ते दडो मूकीने हु घरे गयो पुत्रने कह्यु के-गाम बहार झाड ऊपर दडो मूक्यो छे ते लइ आव मारो पुत्र गयो त्या घणा पण तने दडो मळ्यो नहीं पटले आखु झाड उपाडीने घर आव्यो ते तलना दडो घरमा मूकीने अने ते झाड छोईने चाल्यो आवुं छु. बोलो भाइओ, आ वात साची के नहीं ? त्यारे धूर्तोए कह्यु के-तमे कह्यु ते सत्य छे त्यारे तेणे पुन कह्यु के कइ रीत साची ते जणावो त्यारे धूर्तोए कह्यु के-आवी घटना पूर्वे बनी गइ छे महाभारत तथा रामायणमा अमे साभळी छे कह्यु छे के-" तेषां करटतटभ्रष्टै र्गजानां मदबिन्दुभिः । प्रावर्तत नदी घोरा, हस्त्यश्वरथवाहिनी ॥ १ ॥" अर्थात् राम ज्यारे युद्ध करवा उद्युक्त थया त्यारे तमनी साथे जे हाथीओ हता तना गंडस्थळमाथी पटलो बधो मद झर्यो के तेनी नदी वहवा लागी अने तना प्रवाहमा हाथी, घोडा तथा रथो तणाइ गया आवी रीते मदजळनी नदी वही हती तो तें जे तलना तेलनी नदी वहेवानी वात करी तमा आश्चर्य जेवु शु छे ? वळी त कह्यु के-में भार प्रमाण खाळ खाधो अने दश घडा तलना पीधा, परन्तु तेमा कइ विस्मयजनक नथी भीमे बक राक्षसने हण्यो त्यारे तेना बलि निमित्ते आणेल एक पाडो, मोळ गाडी अनाज अने मदिराना एक हजार घडा पीधा हता वळी रावणनो भाइ कुंभकर्ण मदिराना एक हजार घडा पीतो अने अनेक मनुष्य तथा पशुओनु भक्षण करी जतो तो तें कहेली वात खोटी केम कहेवाय ? वळी तें तलना झाडनी वात करी पण पुराणमा तो अडदना वृक्षना ताल कर्यानो उल्लेख छे पटले तेमा पण कइ आश्चर्यकारक नथी वळी ते दडो उपाड्यो अने तारो पुत्र झाड उपाडी लइ आव्यो तो तमा पण कइ विशेषपणु नथी, कारण के पुराणमा कह्यु छे के-श्रीकृष्णे गोवर्धन पर्वत पोतानी कनिष्ठा आंगळी ऊपर उपाडी लीधो हतो पटले तें कही ते वात सर्व सत्य छे

बाद बीजा मूळदेव पोतानी कथा आरम्भता कह्यु के-हु ज्यारे युवान हतो त्यारे मने स्त्री परणवानी उत्कंठा थइ पटले शंकरने प्रसन्न करवा हु चाल्यो मारा एक हाथमा छत्र, बीजा हाथमा कमंडळ तथा साथु लइने चाल्यो जतो हतो तवामा एक पर्वत जेवो महान् हाथी सामो मळ्यो तेने जोता ज हु डरी गयो अने कोइ पण स्थळे संताइ जवा हु स्थान शोधवा लाग्यो, पण मने तेवु एक पण स्थान न मळ्यु पटले कमंडळना नाळचामा हु प्रवेशी गयो ते हाथी पण मने मारवा माटे मारी पाछळ ते नाळचामा दाखल थइ गयो हु भयथी पाछो कमंडळमा भरायो तो हाथी पण मारी पाछळ आव्यो पटले में आमतेम दोडी-दोडीने छ मास पर्यन्त ते हाथीने भमाड्यो, पण हु हाथमा न आव्यो छेवटे हु नाळचामा थइने बहार निकळी गयो पटले हाथी पण नाळचामाथी

बहार निकळवा लाग्यो, तेथामा ते आखो निकळी गयो पण तेना पूछडाना एक वाळ तेमा भराइ गयो हु बहार निकळी आगळ चाल्यो तो सामे ज गंगा नदी आवी ते नदी हु सहेलाइथी तरीने उतरी गयो अने शकरना मंदिरमा गयो मने आयत भूख अने तरस लागी हती छता हु त्या छ मास सुधी रह्यो अने गगा पडती हती तेने मारा मस्तक पर धारण करी आ प्रमाणे छ मास सुधी करी, मारा स्वामी शकरने नमस्कार करीने हमणा ज हु चाल्यो आवु छु कहो भाइओ, मारी वात साची के नहीं ? साची होय तो दाखला आपो अने नहीं तो बधा भूख्या धूर्तोने भोजन करावो त्यारे बाकीना धूर्तोए कह्यु के-भाइ मूळदेव ! तारी वात साची ज छे ब्रह्माना मुखथी ब्राह्मण, हाथथी क्षत्रियो, साथळमाथी वैश्यो अने पगमाथी शूद्रो निकळ्या छे जो आटला देशोना देशो भराय तेटला ब्राह्मणादिक ब्रह्माना उदरमा समाया हता तो पछी तु अने हाथी कमडळमा रह्या तेमा शु आश्चर्य ? ब्रह्मा अने विष्णु महादेवना लिंगनु माप करवा निकळ्या अने एक हजार वर्ष पर्यन्त चाल्या ज कर्या तो पण शिवना लिंगनो अत ज न आव्यो अने छेवटे ते लिंग पार्वतीनी योनिमा समायु तो तु अने हाथी कमडळमा छ मास सुधी चाल्या कर्या तेमा शु अधिक छे ? वळी तु पूछशे के-हाथी निकळी गयो अने वाळ केम भराई गया ? तेनु पण पुराणमा कथन छे जगतना कर्ता विष्णु समुद्रमा शयन करीने रह्या तेनी नाभि माथी कमलनाळ प्रगटयु अने तेमाथी ब्रह्मा उपज्या आ प्रमाणे ब्रह्मा आदि सर्वे निकळ्या अने कमळ तो नाभिने वळगी रह्यु तेम तु अने हाथी निकळी गया अने हाथीना पूछडानो वाळ अटकी गयो ए वात बराबर छे वळी तें कह्यु के-हाथवडे हु गगा नदी तरी गयो, तो तेमा पण कइ असत्य नथी रामचद्रनो दूत हनुमान सीताने शोधवा निकळ्यो हतो त्यारे समुद्र तरीने लका गयो हतो अने सीतानी खबर लइ पाछो राम पासे आव्यो हतो सीताए हनुमतने तेना आगमननो मार्ग पूछ्यो त्यारे हनुमंते पोते कह्यु के-समुद्र तरीने हु आव्यो शु आ सबधी श्लोक छे के-" तव प्रसादात् वचसः प्रसादात्, भर्तुश्च ते देवि ! तव प्रसादात् । साधुप्रसादात् च पितुः प्रसादात्, तीर्णो मया गोपदवत्समुद्रः ॥ १ ॥ " हे देवि ! तारी कृपाथी, तारा वचनना प्रभावथी, तारा स्वामी रामचन्द्रना प्रभावथी, साधुपुरुषना प्रभावथी, तारा पिता जनक राजाना प्रभावथी आ समुद्रने हुं गायना पगलानी माफक तरी गयो आवो पुराणमा उल्लेख छे तो गगा नदीने तरयो तेमा शु आश्चर्य ? वळी तें गगाने छ मास पर्यंत धारण करी ते पण सत्य छे कारण के पुराणमां कथन छे के-हजारो वर्षो सुधी तपश्चर्या करता घणा लोको पर देवो तुष्टमान थइ गगाने कहेवा लाग्या के-हे गगादेवि ! तमे पृथ्वी पर जइ लोकोने सुखी करो त्यारे गंगाए कह्यु के-

मने कोण धारण करी राखे ? देवो विचारमां पडी गया त्यारे शंकरे कह्युं के-हुं पडती एवी गंगाने धारण करी राखीश बाद गंगाने शंकरे पोतानी जटामां देवोना हजारो वर्षो सुधी धारण करी राखी छे तो तारी वातमां कांई आश्चर्य नथी

बाद खण्डपाणा कहेवा लागी के-हे धूर्तो ! तमे बधा मने हाथ जोडीने प्रणाम करो तो तमने सर्वने भोजन करावुं त्यारे धूर्तोए कह्युं के-अमे एम जेवा समर्थ होए तो तारी पासे आवा दीनतासभर्या शब्दो केम बोलीए ? एटले खण्डपाणा हास्यपूर्वक कहेवा लागी के-हुं राजाना धोबीनी पुत्री छुं एक वखत मारा पिता साथे वस्त्रानुं गाडुं भरीने धोवा गइ हजार नोकरोने साथे लीधा नदी ऊपर आवी, वस्त्रो धोइ तडके सुकव्या तेवामां झंझावात प्रगट्यो अने सर्व वस्त्रो उडी गया नोकरो बधा नाशी गया राजाना भयथी हुं पण नाशी गइ एक वनमां भराणी त्यां घो थइने एक राता अशोकवृक्षना कोटरमां रही वळी मने कोइ मारी नाखशे तेवा भयथी आम्रनी लता थइ गइ आ बाजु राजाना मनमां एवो विचार उद्भव्यो के-महावायुथी वस्त्रो उडी गया तेमां धोबी बिचारो शुं करे ? तेथी न्यायी राजाए पडहो वगडाव्यो के-जे कोइ धोबी होय ते बधा खुशीथी मारा राज्यमां रहो राजानी आ घोषणा सांभळी बधा धोबी पाछा नगरमां आव्या आ वात सांभळी हुं पण आम्रलतानुं रूप त्यजी दइ, मारा मूळरूपे थइ नगरमां आवी मारो पिता गाडुं लेवा गयो तो बळदोने वाघ के शियाळ खाइ गया, तेथी बाघनी आजुबाजु तपास करता एक उंदरनी पूंछडी मळी आवी तेनाथी आखा गाडाने वींटीने ते घर लइ आव्या आ सर्व सत्य साबित करो आपो, नहीं तो प्रतिज्ञा प्रमाणे बधा धूर्तोने जमाडो धूर्तोए कह्युं के-तमे कहेली सर्व हकीकत सत्य छे रामायणमां कह्युं छे के हनुमन्ते पोताना पुंछडावडे समस्त लंकाने वींटी लीधी हती अने पोताना पुंछडे गोदडां विगेरे वींटी लइ, तेने तेलमां पलाळीने लंकाने सळगावी दीधी वांदराना पुंछडा करता उंदरनी पुंछडी तो मोटी होय तेथी गाडुं केम न बंधाय ? पछी तुं घो अने आम्रलता थइ गइ ते पण असम्भवित नथी पुराणमां कह्युं छे के-गन्धार नामनो राजा कदरूपो थइने वनमां गयो बीजा एक महापराक्रमी राजाए इन्द्रने जीती लीधो त्यारे इन्द्रे तेने श्राप आप्यो के-तुं अजगर थइ जा ते जंगलमां अजगर थइने रह्यो तेवामां कांइ वखत ते वनमां पाण्डवो आव्या भीम जंगलमां आमतेम फरतो हतो तेवामां अजगर तेने गळी गयो थोडीवारे युधिष्ठिर आव्या तेने अजगरे सात प्रश्नो पूछ्या युधिष्ठिरे तेना जवाब आप्या एटले अजगरे राजी थइने भीमने पाछो आप्यो अने पोते पण राजा स्वरूपे थइ गयो आ वात सत्य छे तो तुं घो अने आम्रलता थइ गइ तेमां शुं आश्चर्य ?

खण्डपाणाए पुनः कह्युं के-हे धूर्तो ! हजु पण मने प्रणाम करो तो हुं सर्वने जमाडुं जो हुं तमने जीती लइश तो तमारी फूटी कोडी जेटली पण किंमत नहीं रहे त्यारे अभिमानी धूर्तो बोल्या के-अमने जीतवा कोण समर्थ छे ?

बृहस्पति पण अमारी पासे रक छे त्यारे तेओनो गर्व उतारवा खण्डपाणाए कह्यु के-हे धूर्तो! राजाए मने हुकम कर्यो छे के-उडी गयेला ते वस्त्रो लई आव अने नाशी गयेला चाकरोने पण तेडी लाव तेथी हु तेओनी तपास करता करता अहीं आवी चढी छु तमे बधा मारा नोकरो छो अने आ पहेरेला वस्त्रो पण ते ज छे जो आ सत्य होय तो वस्त्रो काढी आपो अने राज्यमां चालो, अने जो असत्य होय तो बधाने जमाडो धूर्तो तेनु बुद्धिकौशल्य जोइ नमी पड्या अने विनति करी के-हे खण्डपाणा! तु खरेखर बुद्धिमती छे हवे अमने कोइ पण प्रकारे तु भोजन कराव

बाद खडपाणा तरत ज श्मशानमा गइ अने त्या तरतना मरी गयेला एक बाळकने उपाडी लावी तेने नवरावी, पोताना खोळामा लई उज्जैन नगरीमा एक श्रीमंतने त्या गइ श्रेष्ठीनो व्यवसाय घणो हतो जइने शेठने कालावालापूर्वक कहेवा लागी के-हु अने मारो आ नानो पुत्र घणा वखतथी भूख्या छीए माटे अमने भोजन करावो श्रेष्ठीए आ बलाने काढवा पोताना नोकरोने हुकम कर्यो नोकराए धक्को मारता ज खडपाणा पडी गइ अने 'मारो छोकरो आ शेठे मरावी नाख्यो' एवा कल्पात करवा लागी शेठने आ दृश्य जोता ज कपारी छूटी राजा जो आ वात जाणशे तो दडशे एटले कोई पण प्रकारे खडपाणाने समजावी लेवा तेणे प्रयास कर्यो छेवटे एक रत्नजडित मुद्रिका तने आपी विदाय करी ते मुद्रिका लई खंडपाणा बधा धूर्तो पासे आवीने कहेवा लागी क-जोइ मारी बुद्धि' हवे आ मुद्रिका वेचीने तमे बधा यथेच्छ भोजन करो आ सबंधी विशेष वृत्तात श्रीनिशीथ सूत्रनी पीठिकामा जणावेल धूर्ताख्यानद्वारा जाणवो आ लौकिक मृषावाद कहेवाय सम्यग् गच्छमा आवो नास्तिकवाद-आवी कथा-वार्ता न होय

हवे वस्त्र-धोवननी हकीकत जणावता कहे छे के-धावणना बे अर्थ छे एक वस्त्रधोवण अने बीजो अर्थ निष्प्रयोजन उतावळी गति(चाल) विना काळे-अकाळे जे गच्छमा वस्त्र न धोवाता होय ते सम्यग् गच्छ जाणवो बीजा अर्थ सबधमा कौशिक तापसनो वृत्तात जाणवा योग्य छे—

चडकौशिकनु वृत्तात—

भगवान् महावीरस्वामी छद्मस्थावस्थामा श्वेतांबी नगरी जता हता तेवामा मार्गमा गोवाळीयाए कह्यु के—भगवन्! आप जे मार्गे जाओ छो ते मार्ग तो सीधो छे, परन्तु रस्तामा कनकखल नामनो तापसाश्रम आवे छे तेमां दृष्टिविष सर्प रहे छे, ते रस्ते पखी पण जता नथी तो आप ते मार्ग केम जइ रह्या छो? ते दृष्टिविष सर्प सर्व कोईने पोतानी विषज्वाळाथी मृत्यु पमाडे छे गोवाळीए आ प्रमाणे कह्या छतां भगवान् महावीर तो ते ज मार्गे चाल्या, कारण के तेमने तो ते चडकौशिक सर्पने प्रतिबोधवो हतो पोताना उपसर्गनी

तेमने अंशमात्र पण चिंता न हती भगवान् ते आश्रममां पहोंच्या अने यक्ष-मंडपमां काउसग्गध्याने रह्या पीडा के कष्टने तो तेओ गणता ज न हता ते चंडकौशिक सर्प पूर्वभवमां कोण हता ते तपासीअे-पूर्वे ते मासखमणने पारणे मासखमण करनार उत्तम मुनि हतो आ तपस्वी मुनि एकदा मासखमणने पारणे गोचरी जता हता तेवामां मार्गमां तेना पग नीचे एक देडकी चंपाईने मरी गई साथे रहेल क्षुल्लक चेलाए तेमनु ध्यान दोर्यु के-तमारा पग नीचे देडकी मरी गई तपस्वी साधुने क्रोध चढयो पण ए समये तो एटलुं ज कह्यु के-लोकोए मारी नाखी जणाय छे, छतां जो मारा पगथी मरी गई हशे तो सांजे प्रतिक्रमण समये आलोयण लई लईश सांज पडी, छतां तपस्वी साधु आलोचना कर्या विना ज प्रतिक्रमणमां बेठा एटले क्षुल्लक साधुए देडकी संबंधी आलोयणा लेवानु स्मरण कराव्युं, जेथी तेने अत्यन्त क्रोध चडयो अने तेने मारवा दोडयो क्षुल्लक साधु ऊभा थईने नाशवा लाग्या तेनी पाछळ दोडतां थांभला साथे तपस्वी साधुनुं मस्तक अफळायुं अने त्यां ज काळधर्म पामी ज्योतिषी देव थयो त्यांथी च्यवीने पांचसो तापसोनो कुलपति, जे कनकखल आश्रममां रहेतो हतो तेना पुत्र तरीके उत्पन्न थयो तेनुं कुल कौशिक होवाथी कौशिक एवा नामथी प्रख्याति पाम्यो कालांतरे कुलपति मरण पाम्यो एटले कौशिक आश्रमपति बन्यो ते अतिशय क्रोधी होवाथी तापसोए तेनु चंडकौशिक एवु नाम राख्यु तेने पोताना आश्रम प्रत्ये अत्यंत आसक्ति हती. कोईने पण ते फळफूल लेवा देतो नहीं, एटले धीमे धीमे सर्व तापसो चाल्या गया एकदा चंडकौशिक लाकडी लेवा जंगलमां गयो तेवामां श्वेतांबिका नगरीना राजकुमारो तेना आश्रममां आवी चढया अने फळफूल विगेरे लई बाडीने भांगी नाखवा लाग्या आ हकीकत कोईए चंडकौशिकने जणावतां तेने अत्यन्त क्रोध चढयो अने कुहाडी लई ते कुमारोने मारवा माटे दोडयो तेने आवतो जोई राजकुमारो नाशी गया अने चंडकौशिक पण रस्तामां एक खाडो आवतां तेमां लपस्यो अने पोतानो ज कुहाडो पोताना मस्तकमां वागतां त्यां ने त्यां ज मृत्यु पाम्यो मरीने ते ज स्थळे दृष्टिविष सर्प थयो तेनी ज्वाळा एवी उग्र हती के नजरे चडनारने पोतानी विषज्वाळाथी दग्ध करी नाखतो तेना त्रासथी कोई पशु, पक्षी के मनुष्य पण ते स्थळमां आवी शकतुं नहीं घणा काळे भगवानने आवेला जाणीने सर्प चिंतववा लाग्यो के-शुं आ पुरुष मारुं सामर्थ्य जाणतो नथी के अहीं आवीने ऊभा रह्या छे? पछी तेणे सूर्य सामे नजर करी भगवान् प्रति पोतानी विषज्वाळा फेंकी पण तेनी कंई असर न थई सर्प अचंबो पाम्यो अत्यार सुधी पोतानी ज्वाळाथी कोई पण बच्युं नथी अने आ शुं? तेणे वारंवार सूर्य सामे जोई-जोईने विषज्वाळाओ परमात्मा प्रत्ये फेंकवी शरू करी पण जेम मृगथी सिंह पराजय न पामे तेम भगवन्त अचल रह्या एटले ते निर्दयीए दाढीने परमात्माना चरणमां डंख मार्यो अने विषथी व्याप्त थयेल परमात्मा मरण पामीने

पोताना ऊपर न पडे तेम विचारी थोडे दूर जई ऊभो रह्यो परन्तु महावायुथी जेम मेरु पर्वत चलायमान न थाय तेम प्रभु तो अकंप रह्या हमणा विषनी असरथी भगवाननो देह पडी जशे तेम विचारतो सर्प वारंवार परमात्माना मुख प्रत्ये जोई रह्यो छतां भगवन्तनी मुखमुद्रा तो अमृत सरखी शांत अने सूर्य सरखी तेजस्वी हती बाद परमात्माए सर्पने उद्देशीने कह्यु के-हे चण्डकौशिक ! प्रतिबोध पाम, मुंझा मा परमात्माना वचन सांभळता ज सर्पने ईहा प्रगटी अने छेवटे जातिस्मरण ज्ञान पण थयु पोतानो पूर्वभव जाण्यो पटले पोताना कृत्योनी, अपराधनी निन्दा करता अने परमात्माने खमावता त्रण प्रदक्षिणा दईने तेणे अणशण स्वीकार्युं अने पोतानु मुख बिलमा राख्यु, रखेने कोई पण जीव पोतानी विष-ज्वाळाथी मृत्यु पामे भगवन्तने घणा समय सुधी त्यां रहेला जाणी गोवाळो त्यां गया तो परमात्माने निश्चळ काउसग्ग ध्यानमा ऊभेला जोया सर्प पण अवळु मुख राखी बिलमा रह्यो हतो गोवाळोने आ दृश्य निरखी अचंबो थयो तेओए थोडा पथरना घा कर्या तो पण सर्प न हाले के चाले छेवटे तेओ धीमे धीमे नजीक गया अने लाकडीवती हलाववा लाग्या तो पण सर्पने निश्चळ जोई तेओ गाममां गया अने लोकोने वात करी सर्वत्र वात प्रसरी जता लोकोना टोळेटोळा त्यां आव्या लोको परमात्मानो प्रभाव जाणी विस्मय पाम्या केटलाक लोकोए घीवडे सर्पनी पूजा करी पटले सुगंधाथी आकर्षायेली कीडीओ सर्पना शरीरने करडवा लागी सर्पने अतिशय वेदना थवा लागी तो पण ते समये तेना भावो बदलाई गया हता ते विचारवा लाग्यो के-मारा कर्म-क्षयमां आ कीडीओ मने मदद करी रही छे आ प्रमाणे समभावपूर्वक वेदना सहन करतो सर्प पंदर दिवसनु अणशण पाळी, मृत्यु पामी आठमा सहस्रार नामना देव लोकमां देव थया अतिशय वेगथी चालवाथी कौशिक तापस दुःख पाम्यो तेथी जे गच्छमां साधुओ संयमपूर्वक गति करनारा होय ते गच्छ ज सुगच्छ जाणवो

लंघन पटले दोडवु, कूदवु, वगेरे उल्लंघवा वडे लंघनना बीजो अर्थ ए छे के-क्रोधना कारणथी अन्य साधु या तो श्रावकने उद्देशीने लांघण करवी-अन्नपाननो त्याग करवो जे गच्छमां आ लंघन वर्ज्य होय ते सुगच्छ जाणवो आ संबन्धमां नीचेनुं दृष्टान्त उपयोगी छे—

अर्हन्मित्र साधुनु वृत्तांत–

क्षितिप्रतिष्ठित नगरने विषे अर्हन् अने अर्हन्मित्र नामना बे भाईओ रहेता हता मोटा भाईनी स्त्री पोताना दियर अर्हन्मित्र प्रत्ये अनुरागवाळी थई अर्हन्मित्रे विचार्युं के-मोटा भाईनी स्त्री साथे भोगविलास केम कराय ? पटले ते तेणीना हावभावथी चळ्यो नहीं त्यारे अर्हननी स्त्रीए जाण्यु के-पोतानो भाई हयात होय त्यां सुधी लघु बंधु अनुचित आचरण केम करे ? माटे जो हु

मारा स्वामीने मारी नाखु तो यथेच्छ भोगविलास करी शकु तेणे पोताना धणीने मारी नाखीने दियरने पोताना मनोभिलाषा तृप्त करवा कह्यु पोतानी भाभीना आवा घोर कृत्यथी अर्हन्मित्रने वैराग्य उत्पन्न थयो अने तेणे दीक्षा लीधो तेना वियोगथी मरण पामी अर्हन्नी स्त्री आर्त्तध्यानने अगे एक गाममा कृतरी थई 'अर्हन्मित्र विहार करतां करतां ते गाममां आवी चढया कृतरीए तेमने जोया पछी जाणे पूर्वभवनो स्नेह प्रगटया होय तेम ते मुनिनी पाछळ पाछळ भमवा लागी अने तेमनो स्पर्श करवा लागी अर्हन्मित्र साधु त्यांथी नाशी गया, पाछळ कृतरी मरण पामी कोईएक वनमा वांदरी थई क्षेत्रस्प र्शना करतां करता अर्हन्मित्र मुनिवर ते वनमां नीकळ्या तेने जोईने वांदरी तेनी आगळ जई भोगनी चेष्टा दर्शाववा लागी महामुश्कीयते ते वादरीनो त्याग करी मुनि चाल्या गया त्या पण तेमना वियोगथी मरण पामी अकाम निर्जराथी यक्षिणी थई अवधिज्ञानथी जोयुं तो मुनिए पोताने अगीकार न करी तेथी वारवार मरण पामी तो हवे ते मुनिने हु कष्टमा पाडु एवु विचारी यक्षिणी मुनिना छिद्रो जोवा लागी कोई वार सरखे-सरखा साधु अर्हन्मित्र मुनिनी हासी करता कहेवा लाग्या के-तमे तो कृतरी अने वादरीने पण प्रिय छो एकदा मुनि जळना नाळा पासे आव्या अने विचारवा लाग्या के-आ नाळु उल्घी जाउ आम प्रमादथी आ प्रमाणे विचारी जेवो पग पहोळो कर्यो के तरतज ते यक्षिणीए छिद्र जोईने तेमनो पग साथळमाथी कापी नाख्यो अने मिथ्या दुष्कृत देता देता मुनि जळनी पहार उढी पडया आ दृश्य जोई नजीकमा रहेल सम्यग्दृष्टि देवीए ते यक्षिणीने नसाडी मूकी अने तेमना चरण सारा कर्या बाद ते समकिती देवीए ते मुनिने कह्यु के-तमारे कदापि भाव, कृपा के नाळनु उल्घन न करवुं

वस्त्र-पात्र प्रत्ये ममत्वभाव पण न दर्शाववो तेमज अवर्णवाद पण न उच्चारवा, कारण के ते दुर्लभबोधिपणानु लक्षण छे श्रीस्थानागजीमा कह्यु छे के—" पचहिं ठाणेहिं जीवा दुल्लभबोहियत्ताए कम्म पगरंति । ते अरिहंताणमवन्न वदमाणे १, अरिहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स अवण्ण वदमाणे २, आयरियउवज्झायाणमवन्न वदमाणे ३, चाउवण्णस्स सघस्स अवन्न वदमाणे ४, विवक्कतवबमचेराण देवाण अवण्ण वदमाणे ५। " १ अरिहतना, २ अरिहतप्ररूपित धर्मना, ३ आचार्य तथा उपाध्यायना, ४ चतुर्विध सघना अने ५ तप तथा ब्रह्मचर्यनो जेने उदय आव्यो छे ते देवना अवर्णवाद बोलवाथी दुलभबोधिपणु प्राप्त थाय छे आ संबधमा वराहमिहिरनु वृत्तांत बोधदायक छे—

वराहमिहिरनु वृत्तांत—

प्रतिष्ठानपुरमा चौद विद्यानो पारगामी अने विचक्षण भद्रबाहु नामनो

पंडित हतो तेने वराहमिहिर नामनो लघुबंधु हतो एकदा ते नगरना उद्या नमां चौद पूर्वधर, नव तत्त्वना ज्ञाता अने महाकल्याणकारी श्रीमान् यशोभद्रसूरि पिराज्या एटले लोकोना समूह तेमने वन्दन करवा गयो लोकोने जता जोइने हर्ष पामीने भद्रबाहु पण पोताना बंधु साथे वांदवा गयो वांदीने बने भाइओ पोताने उचित जग्या उपर बेठा गुरुमहाराजे देशना प्रारंभता कह्यु के-चार गति अने चोराशी लाख जीवायोनिरूप आ संसार दु खमय ज छे कारण के जीवित तृणनी टाच उपर रहेला जळबिंदुनी जेम चचळ छे अने संपत्ति वीजळीना झबकारानी जेम क्षणिक छे जेओ धमकर्ममा चतुर थशे तेज आ दुस्तर भवसागरने तरशे आ ससारसागरने तरवा माटे क्षमादिक दश प्रकारना यतिधर्मरूप नावनु आलबन ग्रहण करवु जाइए. दश दृष्टान्ते दुर्लभ मानवभवने सफल करवा इच्छता हो तो साधुधर्म अने ते न बने तो छेवटे श्रावकधर्म स्वीकारो आ गुरुराजनी देशना साभळी भवभीरू भद्रबाहुने दीक्षा-ग्रहणनी तल्लीनता थइ तेणे लघु बधु वराहमिहिरने कह्यु के-हु तो ससार सागर तरवा माटे आलंबनभूत प्रव्रज्या ग्रहण करवा इच्छु छु तमे ससारमा रही व्यवहारमा विचक्षण थजो वराहमिहिरे कह्यु के-साकर नाखेली क्षीर तमने एकलाने ज मीठी न लागी शके, ते ता जो काइ चाखे तने मीठी लाग, माटे हु पण आपने ज अनुसरवा मागु छु छेवटे बन्ने भाइओए श्रीयशोभद्रसूरि पासे दीक्षा अगीकार करी क्रमश शास्त्राभ्यास करता भद्रबाहु मुनि चौद पूवना ज्ञाता थया भद्रबाहुस्वामीनु शुद्ध चारित्रपालन, शासनप्रेम अने गभीरता जोई गुरुमहाराजे तेमने सर्व सुविहितोमा अग्रणी स्थाप्या यशोभद्रसूरिने एक सम्भूतिविजय नामना क्रियापात्र अने निर्मळ चारित्रवाळा शिष्य हता पोतानु आयु नजीक जाणी यशोभद्रसूरिए श्रीभद्रबाहु अने सम्भूतिविजयने आचाय पदप्रदान करी पोतानी पाटे स्थाप्या पाते अणशण स्वीकारी स्वर्गे संचर्या

बन्ने पट्टधरो सूय चन्द्रनी माफक मिथ्यात्व-तिमिरनो नाश करी गच्छनुं रक्षण करता वराहमिहिर पण सूर्यप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति आदि अनेक शास्त्रोनो अभ्यास करी ज्योतिषमा पारगत थया, पण तेमनामा अभिमान विशेष हतुं श्रीयशोभद्रसूरिए भद्रबाहुने आचाय पद आप्युं अने पाताने न आप्यु तेथी तेने पोतानु स्वमान घवातु होय तेवु दु ख उपज्युं श्रीयशोभद्रसूरिए तेनो प्रकृति ज्ञानथी जाणी हती तेथी तेने आचार्यपद न आप्यु, कारण के कह्यु छे के-

"वूढो गणहरसद्दो, गोयममाईहिं धीरपुरिसेहिं । जो त ठवइ अपत्ते, जाणतो सो महापावो ॥ १ ॥" एटले के, गणधर' एवा शब्द गौतमस्वामी जेवा प्रभा विक ने उत्तम मुनिवराए धारण कर्यो हतो तेवा श्रेष्ठ शब्द जो कोई गुरु अयोग्य व्यक्तिने जाणतो थको आपे तो ते गुरुने महापापी समजवा वराहमिहिरने हवे साधुपणामां रहेवुं एसद न पडयु पूर्वकमना उदयथी ऊचे चडेलो वराहमिहिरनो

आत्मा अधःपात करवा तैयार थयो कर्मनी गति खरेखर विचित्र छे ! जैन साधुना वेशनो त्याग करी ते गृहस्थी बनी गया कहेवत छे के-प्राण ने प्रकृति साथे ज जाय अर्थात् प्रकृति (स्वभाव) कदापि न बदलाय कह्यु छे के-"प्रकृत्या शीतलं नीर-मुष्णं तद् वह्नियोगतः । पुनः किं न भवेच्छीतं, स्वभावो दुस्त्यजो यत. ॥ १ ॥" प्रकृतिथी पाणी शीतळ छे, परन्तु अग्निना ससर्गथी ते उष्ण बने छे, पण शु पाछु ते शीतळ नथी बनी जतु ? अर्थात् ठडु थइ जाय छे खरेखर शुभाशुभ पडेल स्वभावनो त्याग करवो ते दुष्कर छे

हवे वराहमिहिरे पोते भणेल सूर्यप्रज्ञप्ति प्रमुख ग्रन्थोमाथी उद्धरीने सवा लाख श्लोकप्रमाण "वाराहीसहिता" बनावी पोते ज्योतिषवेत्ता बन्यो लोकोने कहेवा लाग्यो के-हु बार वर्ष सुधी सूर्यमडळमा रह्यो छु सूर्ये मारा ऊपर महेर बानी करी अने ज्योतिषना प्रचारने माटे पृथ्वी ऊपर मोकल्यो छे ब्राह्मणोए तेनु कथन स्वीकारी लीधु अने धीमे धीमे तेनी प्रतिष्ठा वधी, कारण के अज्ञानी लोकोने भोळववा ए कइ मोटी वात नथी ते मत्र-तत्रादिकथी अने मोहनीय विद्याथी लोकोने चमत्कार पमाडतो राजा पर्यंत तेनी कीर्ति प्रसरी अने राजाए तेने पोताना पुरोहित बनाव्यो तेवामा श्रीभद्रबाहुस्वामी पोताना परिवारयुक्त प्रतिष्ठानपुरना उद्यानमा समवसर्या

राजा तथा प्रजाजन तेमने वादवा गया राजानु मान साचववा वराहमिहिर पण साथे गयो राजा भद्रबाहुनी देशना साभळी रह्यो हतो तेवामा राजपुरुषे वधामणी आपी के-युवराजनो जन्म थयो छे राजाने वृद्धवय थया छता पुत्र नहोतो तथी आ वधामणी साभळी तेने अतीव हर्ष थयो तरतज पासे बेठेला वराहमिहिरने राजाए कह्यु के-राजकुमारनो जन्मकुडली बनावो अने ते केवो विद्यावंत, बुद्धिमान अने आयुष्यवाळो थशे ते जणावो भद्रबाहुस्वामी पण ज्योतिषना श्रेष्ठ ज्ञाता छे, तमो पण विचक्षण छो, तो तमे बने विचार करीने मने कहो वराहमिहिरे गणत्री करी जणाव्यु के-राजपुत्र सो वर्षना आयुवाळो, अढार विद्यानो पारगामी अने पुत्र-पौत्रादिकने पूजनिक थशे

बाद राजाए श्रीभद्रबाहुस्वामी प्रत्ये जोयु भद्रबाहुस्वामी जाणता हता के-जिनमतमा निमित्त कहेवानो निषेध छे, छता राजा प्रमुख लोकोमा जैन शासननी प्रभावना करवा माटे तेमणे कह्यु के-आ राजपुत्रनु आयु सात दिवसनु छे अने सातमे दिवसे ते बिलाडाद्वारा मृत्यु पामशे बने ज्योतिर्विदोना कथनमा महद् अतर जाणी राजा विस्मय पाम्यो पोताना कथनथी विरुद्ध भद्रबाहुस्वामीनु सूचन जाणी वराहमिहिर क्रोधथी रक्त बनी गया अने रोषा वेशमा ज राजाने कह्यु के जो भद्रबाहुस्वामीनु कथन असत्य निवडे तो तेमने महा दड आपवो राजा सहित वराहमिहिर राजमहेले गयो अने राजपुत्रने तथा धाव

माताने गुप्तावासमा सख्त चोकी पहेरा नीचे राख्या दरवाजे वराहमिहिर पाते पहेरा भरवा लाग्यो, अने कोइ पण बिलाडाने आववा देतो नहीं

परंतु कर्मनी गति विचित्र छे तेनी पासे बळवानमा पण बळवान सत्तानु कशु जोर चालतु नथी चक्रवर्ती अने तीर्थंकर जेवान पण कर्मने वश थवु पडे छ तो पामर प्राणीनु शु गजु ? बराबर सातमे दिवसे बारणाना काष्ठना आगळियो अकस्मात् राजकुमारना मस्तक ऊपर पड्यो अने तत्काल तेनु मृत्यु निपज्यु धावमाता हाहाकार करवा लागी अन्त पुरमा तरत ज वीजळीवेग समाचार प्रसरी गया सर्वत्र होहाहाह थवा लागी वराहमिहिर पण विलाप करवा लाग्यो राजा विचक्षण हता होनहार कदापि मिथ्या थतु ज नथी एवी पूर्ण श्रद्धावाळा हता धावमाताने बोलावी कया कारणथी पुत्रमृत्यु थयु ते पूछयु तेणे लाकडाना आगळिया बताव्यो राजाए बारीकाइथी आयु ता तेना अग्रभाग ऊपर बिलाडाना आकृति कातरेली हती श्रीभद्रबाहुस्वामीना वचनमा तने पूरेपूरी श्रद्धा उत्पन्न थइ बाद विलाप करता वराहमिहिरने बहु फ-तम भण्या छा पण गण्या नथी राजाना आ तिरस्कारथी वराहमिहिर वनमा चाल्यो गयो अने परिव्राजक थइ, तापसी दीक्षा पाळी, मृत्यु पामी अल्प ऋद्धिवाळा व्यतर देव थया

राजाए तरत ज श्रीभद्रबाहुस्वामी पासे जइ, वदन करी वराहमिहिरनु वचन असत्य निवडवानु कारण पूछयु गुरुए जणाव्यु क-वराहमिहिर गुरुप्रत्यनीक छ गुरुना अवर्णवाद बोलता तेने लगार मात्र पण शरम नथी आवी एटले तनु वचन असत्य निवड्यु छ राजाए तरत ज मिथ्यात्वनो त्याग करी समकितमूळ जैनधर्म अगीकार कर्यो

व्यतर थयेला वराहमिहिरे पोताना पूर्वभवना वैरनो बदलो लेवा माटे साधुओना छिद्रो जोवा शरू कर्या, तेमा पण ते नाशीपास थया अप्रमत्त साधु-साध्वीना एक वाळ पण वाको वाळवा त समर्थ न थयो त्यार खेदयुक्त बनतो ते श्रावकान विविध प्रकारना उपसर्गो करवा लाग्यो अग्रेसर श्रावकाए एकत्र थइ विचार कर्यो क-सिंह विना हाथीना नाश नहीं थाय, सूर्यप्रकाश विना अन्धकार दूर न थाय, माटे श्रीभद्रबाहुस्वामीनी सहाय विना आपणु आ कष्ट विनाश नहीं पामे तेआए एकमत थइ आ हकीकत जणाववा अने कष्ट निवारणार्थे विज्ञप्ति करवा कटलाक मुख्य श्रावकोने श्रीभद्रबाहुस्वामी पास मोकल्या श्रीभद्रबाहुस्वामीए ज्ञानद्वारा वराहमिहिरनु आ कृत्य जाण्यु एटले तेओने "उवसग्गहर" नामनु श्रीपार्श्वनाथनु अति चमत्कारिक स्तोत्र रची आपी प्रति दिन तेना पाठ करवानु कह्यु आ प्रभाविक स्तोत्र-स्मरणथी, जेम वायुथी वादळाओ विखराइ जाय तेम वराहमिहिरकृत उपसर्गो नाश पाम्या लोको प्रति दिन ते स्तोत्रना जाप करवा लाग्या अद्यापि पर्यंत ते स्तोत्र श्रीसंघमा प्रचलित छ

बाद श्रीभद्रबाहुस्वामीए १ आचारांग, २ सुयगडांग, ३ आवश्यक, ४ दशवैकालिक, ५ उत्तराध्ययन, ६ दशाकल्प, ७ बृहत्कल्प, ८ व्यवहारसूत्र, ९ सूर्यप्रज्ञप्ति, १० ऋषिभाषित, ए दश सूत्रोनी नियुक्तिओ रची, अने जैनशासननी अपूर्व प्रभावना करी पंचम श्रुतकेवली पद मानवंतु बिरुद पण प्राप्त कर्युं छेवटे आयुष्य नजीक जाणी, अणशण स्वीकारी समाधिमरणे स्वर्ग सिधाव्या वराहमिहिरनी माफक जे गुरुना अवर्णवाद बोले ते गच्छ सुगच्छ न कहेवाय हवे पण सुगच्छना विशेष लक्षणो दर्शावता कहे छे के—

जत्थित्थीकरफरिसं, अंतरियं कारणे वि उप्पन्ने ।
दिट्ठिविसदित्तग्गी–विसं व वज्जिज्जए गच्छे ॥ ८३ ॥
बालाए वुड्ढाए, नत्तुअदुहियाइ अहव भइणीए ।
न य कीरइ तणुफरिसं, गोयम ! गच्छं तयं भणियं ॥८४॥

[यत्र स्त्रीकरस्पर्शं, अन्तरित कारणेऽपि उत्पन्ने ।
दृष्टिविषदीप्ताग्नि–विषमिव वर्जयेत् गच्छे ॥ ८३ ॥
बालाया वृद्धाया नप्तृकाया दुहितायां अथवा भगिन्याः ।
न च क्रियते तनुस्पर्शः, गौतम ! गच्छः सको भणित ॥८४॥]

गाथार्थ.–कारण उत्पन्न थये सते पण वस्त्रादिकनु अन्तर करीने स्त्रीना हस्तादिकनो स्पर्श दृष्टिविष सर्प, प्रज्वलित अग्नि के हळाहळ झेरनी जेम जे गच्छमां त्यजी देवातो होय ते गच्छने ज सुगच्छ जाणवो. ८३

वळी बाळकुमारी, वृद्धा, पुत्री, पौत्री के बहेन विगेरेना शरीरनो पण स्पर्श जे गच्छमां न करातो होय ते गच्छने हे गौतम ! सुगच्छ जाणवो. ८४

विवेचन–वस्त्र प्रमुखथी ढांकला स्त्रीना हस्तादिकना स्पर्श करवानो निषेध कर्यो छे तो उघाडा अंगोपांगने माटे तो कहेवु ज शु ? पगमां कांटो वागी गयो होय, महाविषम व्याधि थया होय छता पण स्त्री–स्पर्श वर्ज्य मणव्यो छे तो विना कारणना स्पर्श माटे तो कहेवु ज शु ? ग्रंथकारे स्त्रीना स्पर्शने दृष्टिविष सर्प, प्रज्वलित अग्नि अने काळकूट झेरनी उपमा आपी छे उपर्युक्त त्रणे वस्तुथी प्राणी दूर रहे छे तेम साधुए स्त्रीस्पर्शथी सदतर वेगळा ज रहेवु लघुवयवाळी बालिकाना स्पर्श पण निषेध्या छे तो यौवनवंती स्त्रीने माटे तो कहेवापणु ज क्या रह्यु ? वृद्धाना पण निषेध छे तो अन्तर्गत यौवनवाळा एटले के लगभग सोळ वर्षनी आदि लइ चाळीश वर्षनी स्त्री माटे तो कहेवु शु ? आ करता पण आगळ वधी ग्रंथकर्ता महापुरुष कहे छे के–पातानी पुत्री, पौत्री, बहेन विगेरे

स्वजनने स्पर्श न करवो पोताना कुटुंबीजनो साथे अकार्य करवानी कोई कल्पना पण न करी शके छता पण शास्त्रकारे तेवी व्यक्तिओना करस्पर्शादिकनो निषेध फरमाव्यो छे तो बीजा माटे तो पूछवानु ज क्या रह्यु ? आटला वक्तव्य उपरथी साबित थशे के आज्वल्यमान अग्निनो स्पर्श करवो सारो परन्तु स्त्री स्पर्श तो प्राणाते पण न करवा, कारण के तेथी व्रतभंगनो महादोष आवी पडे छे श्रीनिशीथसूत्रना पदरमा उद्देशकमा प्रत्याधिकारमा कह्यु छे के-स्पर्शादिक वस्तु अने सुगधथी पुरुष तेमज स्त्री उभयने सरखो मोह उपजे छे जेम धतुराना पानथी पुरुषनी इद्रियो चलायमान थाय छे तेम स्त्रीनो इद्रियो पण चपळ बने छे तेमज शब्द, रूप, रस विगेरे पण उभयने माटे सरखी असर उत्पन्न करे छे आ सबधमा पुरुषपक्षे अने स्त्रीपक्षे भजना जाणवी पटले के पुरुषने पुरुष स्पर्श करे तो मोहोदय थाय अगर न पण थाय अथवा थाय तो मंद थाय, परन्तु जो पुरुषने स्त्री स्पर्शे तो अवश्य मोहोदय थाय एवी रीते स्त्रीने स्त्री स्पर्श करे तो मोहोदय थाय किंवा न पण थाय अथवा अल्प थाय, परन्तु जो पुरुष स्पर्श करे तो अवश्य मोहोदय थाय आवी रीते शब्द, गध इत्यादि सबधी पण जाणवु श्रीनिशीथचूर्णीना अगियारमा तथा आठमा उद्देशामा स्पर्श सबंधी नीचेनु दृष्टात आप्यु छे

अनग राजपुत्र तथा सुकुमारिकानु वृत्तांत—

आणदपुर नामना नगरमा जितारी नृपने विसच्या नामनी राणीथी अनंग नामना पुत्र जन्म्या बाळवयमा ज ते राजपुत्रने नेत्र-रोग थयो तेथी सदैव रुदन ज कर्या करे एकदा राणी नग्नावस्थामा हती तेवामा ते रुदन करवा लाग्यो त्यारे तात्कालिक तेने माथाळ ऊपर येमाडी चाप्यो पटले गुह्यप्रदेशना स्पर्शथी राजपुत्र रोतो बध थई गयो राणीए विचार्यु के-राजपुत्रने छानो राखवानो उपाय आ ज छे पछ ज्यारे ज्यारे पुत्र रोवा माडे त्यारे त्यारे राणी नग्न थइने तेने छाती साथे चापती आम करता पुत्र मोटो थयो सो पण राणी तेम ज करती जितारी नृप मृत्यु पाम्यो, पछी राजा थयो तो पण अनग पोतानी माताने पूर्वनी पेठ ज भोगवतो आ कथाना उपनय ए छे के-पोतानी माताना स्पर्शथी पण जे कामी बन्यो ते बीजी स्त्रीना स्पर्शथी विषयाभिलाषी बने तेमा शी नवाई ?

कृष्ण वासुदेवना मोटा भाइ जराकुमारना पुत्र जितशत्रुने शसक अने भसक नामना बे पुत्रो अने सुकुमारिका नामनी एक पुत्री हती एकदा मरकीना उप द्रव थवाथी तेनु समग्र कुळ नाश पाम्यु फक्त बे भाइयो अने एक बहेन आ त्रण जीव न बच्या वैराग्य पामी त्रणे जणाए दीक्षा लीधी सुकुमारिका यौवनवती थइ त्यारे तेनु रूप अत्यत खील्यु निकळ्यु गोचरी जाय त्यारे पण युवान पुरुषो तेनी पाछळ-पाछळ ममता लाग्या प्रवर्तनीए आ वात गुरुने कही गुरुए तेना रक्षण माटे शसक ने भसक बने भाइयोने भलामण करी शसक अने भसक बंने

महायोद्धा हता. पहेला एक हजार सुभटने पूरा पडे तेवा हता. एक जण उपाश्रयमां सुकुमारिकानुं रक्षण करतो अने एक जण गोचरीए जता. जे कोई युवान पुरुषो आवता तेने नसाडी मूकतो. आवी रीते घणा माणसोने मार मारीने तेओ घणे ए विराधना करी. बाद तेओ त्यांथी विहार करी सुकगिणी नगरीमां गया. त्यां रहेला तापसो साधुओने उपद्रव करवा लाग्या. एटले शशक ने भसक तेनी साथे क्लेश करवा लाग्या. पोताना भाइ प्रत्येनी अनुकंपाथी सुकुमारिकाए अणसण कर्युं. घणा दिवसना उपवासथी तेने मूर्च्छा आवी गइ अने जाणे मृत्यु पामी गइ होय तेवी देखावा लागी. बन्ने भाईओए जाण्युं के सुकुमारिका मरी गइ छे एटले एके तेने पोताना खभे उपाडी अने बीजाए तेना उपकरणो उपाड्या. ते समये पुरुषना स्पर्शथी तेमज शीतळ वायुना प्रचारथी सुकुमारिका सचेत थई. पुरुषनो स्पर्श थयो जाण्या पण सुखानुभवथी कंई पण बोली नहीं. अरण्यमां तेनो त्याग करीने बन्ने भाईओ तो गुरु पासे गया. तेओना गया बाद सुकुमारिका पण सचेत थईने बेठी. तेवामां एक सार्थ निकळ्यो. सार्थवाहे सुकुमारिकाने अतिशय रूपवंत जोइने पोतानी साथे लीधी अने तेने पोतानी स्त्री करी. काळ जतां विचरतां विचरतां शशक ने भसक बन्ने ते सार्थवाहने गृहे गोचरी गया. सुकुमारिकाए ऊभी थई तेओने गोचरी वहोरावी पण बन्ने जणा विस्मय पामी तेने जोवा लाग्या.

सुकुमारिकाए पूछयुं-शुं जुओ छो ? तेओए कह्युं-अमारी बहेन जेवी जणाय छे पण ए वात केम संभवी शके ? कारण के अमे तो तेने वनमां मरणावस्थामां त्यजी दीधी छे. सुकुमारिकाए कह्युं-हुं तमारी बहेन ज छुं. पछी सर्व वृत्तांत कही संभळाव्यो. एटले तेओए सार्थवाह पासेथी पोतानी बहेनने मुक्त करावीने दीक्षा अपावी. बाद अणशण स्वीकारीने स्वर्गमां गई. आ कथानो सार जाणी कदापि साधुए स्त्रीस्पर्श करवो नहीं. आ ज हकीकतनी पुष्टि करतां विशेष कहे छे के—

अत्थित्थीकरफरिसं, लिंगी अरिहोवी सयमवि करिज्जा ।
त निच्छयओ गोयम !, जाणिज्जा मूलगुणे भट्ठम् ॥ ८५ ॥
कीरइ बीअपएण, सुत्तमभणिअं न जत्थ विहिणा उ ।
उप्पन्ने पुण कज्जे, दिक्खाआयंकमाईए ॥ ८६ ॥

[यत्र स्त्रीकरस्पर्शं, लिङ्गी अर्होऽपि स्वयमपि (स्वयमेव)कुर्यात् ।
त निश्चयतो गौतम !, जानीयात् मूलगुणभ्रष्टम् ॥ ८५ ॥
क्रियते द्वितीयपदेन, सूत्राभणित न यत्र विधिना तु ।
उत्पन्ने पुनः कार्ये, दीक्षाऽऽतङ्कादिके ॥ ८६ ॥]

गाथार्थ--साधुवेषधारी अने आचार्य पदवीथी विभूषित एवा मुनि पण जो स्वय स्त्रीनो कर-स्पर्श करे तो हे गौतम ! जरूर जाणवु के ते गच्छ मूळगुणथी भ्रष्ट छे अपवाद मार्गथी पण स्त्रीनो करस्पर्श करवानो निषेध कर्यो छे परन्तु दीक्षानो नाश थाय तेवु गभीर कारण आवी पडे तो जे गच्छमां आगमोक्त विधि जाणनारा द्वारा ज स्पर्श कराय तेवा गच्छने सुगच्छ जाणवो. ८५-८६

विवेचन--स्त्रीस्पर्श केटलो कामोत्तेजक छे ते आपणे पूर्व जोइ गया छीए माटेज शास्त्रकारे आचार्यपदवी विभूषित तेमज प्रौढ विचारशील साधुने पण तेना स्पर्शनो निषेध कर्यो छे श्रीमहानिशीथ सूत्रना पांचमा अध्ययनमां कह्यु के--"जत्थित्थीकरफरिसं, अतरिया कारणे वि उप्पन्ने। अरिहावि करिज्ज सय, त गच्छ मूलगुणमुक्कम् ॥ १ ॥" जे गच्छमा पदवीधर साधु वस्त्रादिकथी आच्छादित स्त्रीनो हाथ, कारण उत्पन्न थये सते पण स्पर्शे तेने चारित्र गुणरहित जाणवो ते ज अध्ययनमा विशेष कह्यु छे के--"जण्ण गोयमा ! मेहुण त एगतेण ३ णिच्छयओ ३ बाढ ३ तहा आउतेउ-समारभ च सव्वहा सव्वप्पयारेहिं सयय विवज्जेज्जा।" अर्थात् हे गौतम ! मैथुन अने अप्काय तथा अग्निकायना आरंभने सर्व प्रकारे निश्चयपूर्वक हमेशा वर्जवो शास्त्रकार विशेषमां फरमावे छे के-दीक्षा के रोगनु कष्ट आवी पडे तो पण आगम विधि जाणनार ज स्त्री-स्पर्श करी शके आगमना ज्ञाता होय, प्रौढ होय, पदवीधर होय तेवा मात्र पुरुषने माटे पण आगम विधि मुजब स्पर्शनु फरमान छे तो जेओ अज्ञानी छे तेओने माटे कहेवु ज शु ? श्रीबृहत्कल्पना छट्ठा उद्देशामां आगमविधि शु छे ? तेनु वर्णन आपेल छे के--"निग्गथस्स य अहे पादंसि खाणू वा कटए वा हीरे वा सक्करे वा परियावज्जेज्जा, त च निग्गथे नो सचाएज्जा नीहरित्तए वा विसोहित्तए वा, त निग्गथी नीहरमाणी वा विसोहेमाणी वा नाइक्कमइ ॥ १ ॥ निग्गथस्स य अच्छिसि पाणे वा बीए वा रए वा परियावज्जेज्जा, त च निग्गथे नो सचाएज्जा नीहरित्तए वा विसोहित्तए वा, त निग्गथी नीहरमाणी वा विसोहेमाणी वा नाइक्कमइ ॥ २ ॥ निग्गथीए अहे पादंसि खाणू वा कटए वा हीरए वा सक्करे वा परियावज्जेज्जा, त च निग्गथी नो सचाइज्जा नीहरित्तए वा विसोहित्तए वा, त निग्गथे नीहरमाणे वा विसोहेमाणे वा नाइक्कमइ ॥ ३ ॥ निग्गथीए अच्छिसि पाणे वा बीए वा रए वा जाव निग्गंथे नीहरमाणे वा नाइक्कमइ ॥ ४ ॥" (१) कांइ निर्ग्रथने पगमा ठाठानी सळी, कांटो, हीरो कांकरो के रेती पेसी गइ होय

अने ते कांटा प्रमुखने काढवा पोते समर्थ न होय त्यारे साध्वी पासे विशुद्धि करावे तो ते बने भगवंतनी आज्ञानुं उल्लंघन करता नथी, एटले आ कारण-प्रसंगथी साधु-साध्वीनो स्पर्श थाय तो पण ते बने आज्ञा-धारक ज छे (२) बीजा सूत्रमां दर्शाव्युं छे के-कोई साधुनी आंखमां मच्छर प्रमुख सूक्ष्म जीव, सूक्ष्म बीज, सचित्त अचित्त पृथ्वीनी रज (धूळ) पडी होय अने ते जीवादिकने काढवा समर्थ थाय तो साध्वी सहाय करी जाय आम करवाथी श्रीतीर्थंकर भगवंतनी आज्ञा उल्लंघाती नथी (३-४) जेवी रीत साधु संबंधी कह्यु तेवी ज रीते साध्वीना पगमां कंटक प्रमुख पेसी गया होय अने आंखमां सूक्ष्म जीवादिक पेसी गया होय तो साधु तेमने सहाय करी शके, ए वात त्रीजा-चोथा सूत्रमां दर्शावी छे-आ चार अपवादो उत्कृष्ट कारण आवी पडे त्यारे ज सेववाना छे, कारण के निर्युक्तिकार कहे छे के-" पाए अच्छि वि लग्गे, समणाण संजएहिं कायव्वं । समणीण समणीहिं, वोच्चुत्थे होंति चउगुरुगा ॥१॥" जे साधुने पगमां कंटकादिक लाग्या होय अथवा आंखमां सूक्ष्म जीवादिक प्रवेश्या होय तो बीजा साधु तेनी विशुद्धि करे अने जो न करे तो चारमासी गुरु प्रायश्चित्त लागे वळी ज रीते साध्वीना पगमां कंटकादिक पेसी गया होय त्यारे बीजी साध्वी तेनी विशुद्धि करे अने जो न करे तो तेने पण चारमासी गुरु प्रायश्चित्त लागे आ उपरथी समजी शकाय छे के-उत्कृष्ट कारण आवी पड्या सिवाय ऊपर दर्शावेला चार अपवादनो आश्रय न लेवो जो ते प्रमाणे न वर्ते तो कई रीते दोषापत्ति थाय छे ते नीचेना श्लोकोथी जणाशे "अण्णत्तो चिअ कुटसि, अन्नत्तो कंटओ गत जात । दिट्ठं पि हरति दिट्ठिं, किं पुण अदिट्ठइअरस्स ॥ २ ॥ कंटककणुए उद्धर, धणित अवलंब मे भमति भूमी । सूलं च वत्थिसीसे, पेल्लेहि घणं थणो फुरति ॥ ३ ॥" साध्वी पासेथी कांटो कढावतो साधु धूर्तताथी तेमज स्वभावथी पोताना वस्त्रादिक बराबर ढांक्या विना बेसे एटले साध्वी तेने जेम होय तेम देखवाथी चलित चित्त वाळी बने अने खातरवानुं स्थान मूकी अन्य स्थळे खोतरे त्यारे साधु 'अहीं खोतर अहीं खोतर' एम अन्य अन्य स्थान दर्शावता बनेनो परस्पर वधतो वार्तालाप छेवटे चारित्रभ्रष्टतामां परिणमे जे भुक्तभोगी स्त्री होय ते पण अन्यनुं लिंग देखी विह्वळ थई जाय छे तो जेणे कदापि लिंग न्हाळ्युं ज नथी तेवी स्त्री मन चलिता बने तेमां आश्चर्य शुं ? जो साध्वी साधु पासे कंटकादिक कढावे के आंखमांथी रज दूर करावे तो स्पर्श मात्रथी विह्वळता वधे अने पछी साध्वी कहे के-मने चक्करी आवे छे, पृथ्वी फरती जणाय छे, मारा मस्तकमां पीडा थाय छे, मारा स्तन धडकवा लाग्या छे माटे मने अवलंबन आपो आ प्रमाणे कथा-परिचय वधता तत्काळ चारित्रनो नाश थाय बीजा पण घणा दोषो आवा प्रकारना वतावाथी उपजे छे तेनुं विस्तृत विवेचन श्रीसूयगडांगसूत्रना

" ओपरिशा " नामना अध्ययनमा आपेल छे ते पैकी रोहा नामनी तापसीनी कथा जाणवा योग्य छे, जे नीचे प्रमाणे—

रोहा तापसीनी कथा—

कोई एक अजापालक (भरवाड) जाबूना वृक्ष ऊपर बेठो हतो तेवामा रोहा नामनी तापसी त्या आवी चढी भरवाडनु सुन्दर रूप अने मरावदार चहेरा जाइने तने त पसन्द पडया पछी विचायु क-आ भरवाड केवो चतुर छे तनो परीक्षा करु आ प्रमाणे विचारी तेणे तेनी पासे जाबुडा माग्या, पछी अजापालके कह्यु क-ऊना आपु के ठडा ? रोहाए कह्यु क-ऊना आप पछी भरवाडे पाकेला जाबुडा नीचे धूळमा नाख्या त्यारे तापसी तने फूकी फूकीने खावा लागी अने पूछयु के-आ जाबुडा ऊना क्यां छे ? त्यारे भरवाडे कह्यु के-जे ऊना होय ते फुकीने ठडा करी खवाय आ साभळी रोहाए जाण्यु के-भरवाड छे तो चतुर पछी कपट करी तेने कहेवा लागी के-मारा पगमा काटो वाग्यो छे ते तु काढ भरवाड नीचे उतरी काटा काढवा लाग्यो त्यारे रोहा कइक हसी, पण पगमा काटा क्या हता के निकळे ? थोडीवार आम तेम तपास कर्या बाद अजापालके कह्यु के-तारा पगमा काटो देखातो नथी बाद रोहा त भरवाडने पुठ दइने बेठी अने हावभाव दर्शाववा लागी छेवट तनी साथे भाग भागवी चाली गइ आ प्रमाणे रोहाए कटकता मिषथी अजापालकने भ्रष्ट कर्यो तेम साधु या साध्वीए परस्पर कटकादि न कढाववा

आ सबधने अनुलक्षीने विशेष वर्णन करता टीकाकार कहे छे के—

मिच्छत्ते उड्डाहो, विराहणा फासभावसवन्धो ।
पडिगमणादी दोसा, भुत्तमभुत्ते य णेयव्वा ॥ ५ ॥
दिट्ठे सका भोइय—घाडिगणातीयगामबहियाए ।
चत्तारि छच लहुगुरु, छेदो मूल तह दुग च ॥ ६ ॥
आरक्खियपुरिसाण, तु साहणे पावती भवे मूल ।
अणवट्टप्पो सेट्ठीण, दसम च निवस्स कथितम्मि ॥ ७ ॥
एए चेव य दोसा, असजतीकाहि पच्छकम्म च ।
गिहिएहि पच्छकम्म, तम्हा समणेहि कायव्व ॥ ८ ॥
एव सुत्त अफल, सुत्तनिवातो तु असति समणाण ।
गिहि १ अण्णतित्थि २ गिहिणी ३—परउत्थिगिणी तिविहभेदो ॥ ९ ॥
जतिसीसम्मि न पुछति, तणुपोचेसु व न यावि पप्फोडे ।
तो से अच्चेसिऽसति, दव दलती उ मा दग घाते ॥ १० ॥

माया भगिणी धूया, अज्जियणत्तीयसेसतिविहाओ ।
आगाढकारणमि, कुसलेहिं दोहि कायव्व ॥ ११ ॥
गिहि अण्णतित्थिपुरिसा, इत्थीवि य गिहिणि अण्णतित्थीया ।
सवधि ईतरा वा, वइणी एमेव दो एते ॥ १२ ॥
त पुण सुण्णारण्णे, दुट्ठारण्णे व अकुसलेहिं वा ।
कुसले वा दूरत्थे, ण वएइ पदपि गतु जे ॥ १३ ॥
परपक्खपुरिसगिहिणी, असोयकुसलाण मोत्तु पडिवक्खं ।
पुरिसजयतमणुण्णे, होन्ति मपक्खेतरावत्ते ॥ १४ ॥
सल्लुद्धरणक्खेण व, अत्थि व वत्थतर व इत्थीसु ।
भूमीकट्ठतलोरुसु, काऊण सुसवुडा दोवि ॥ १५ ॥
एमेव य अच्छिमि, चपादिट्ठ तु नवरि णाणत्त ।
निग्गथीण तहेव य, णवरिं तु असवुडा काई ॥ १६ ॥

लाका साधु या साध्वान परस्परना काटा काढता देखे त्यारे विचारे के-आ लाका थाले छ त प्रमाण वतता जणाता नथी साध्वीए साधुना चरण ग्रहण कर्या ता तआन बीजा पण सबध हावा जोइए-कुकर्म करता हशे आवा प्रकारनी हीलणा थाय अन साथोसाथ सयमविराधना पण थाय, कारण के भुक्त भागी पण परस्परना स्पर्शजन्य सुखथी चलित थाय छे ता बीआनी ता वात ज शी करवी ? (५) साधुने साध्वीना काटा काढता काइ देखे त्यारे तने शका थाय क-शु आ मैथुनने माटे उपासना करता हशे ? आवी शका करनारने चारमासो लघुदड आव, ज्ञाने कहे ता चारमासो गुरुदड आव, मित्रने वात कहे ता छमासा लघुदड अन ज्ञातिन जणाव ता छमासो गुरुदड आवे (६) गामना कोटवाळने कहे ता मूळ प्रायश्चित्त, गामना श्रेष्ठिने कहे तो अन सहधाप्य अन राजाने वात कहे ता छेदनु पाराचित नामनु प्रायश्चित्त आव (७) हव चारित्र विनाना स्त्री के पुरुष पासे काटा कढावे ता कया दाषा लाग त जणावता कहे छ क-पूर्वे कह्या त ज बधा दाषो लाग असयती हाथ प्रमुख धाव तो पश्चात्दाष पण लाग एटले के साधुना काटा साधु पासे ज कढाववा पण साध्वी या ता गृहस्थ के गृहस्थिनी पासे न कढाववा तथा ज रीत साध्वीए काटो साध्वी पासे ज कढाववा परन्तु साधु या ता गृहस्थ के गृहस्थिनी पास न कढाववा (८) आ सबधमा प्रतिवादी शका करता पूछ छ क-जा आ प्रमाण कहेशा ता अगाऊ वर्णवल सूत्र निष्फळ निवडशे आचार्य भगवान तेना उत्तर आपता कहे छे के-सूत्र निरथक नथी जा साधुना सर्वथा अभाव हाय ता साध्वी काटो काढे ए सूत्र सफळ ज छे सवप्रथम

ता गृहस्थ श्रावक पासे कांटो कढाववो, तेना अभावमां अन्यमति गृहस्थ पासे, तेना अभावमां श्राविका पासे अने तेना अभावमां अन्यमति स्त्री पासे कांटा कढाववा ते प्रत्येकना पण त्रण त्रण भेदो छे गृहस्थ १ पश्चात्कृत, २ श्रावक अने ३ भद्रक-एम त्रण प्रकारे छे तेवी रीते अन्यमति गृहस्थ पण त्रण प्रकारना जाणवा अन्यमति गृहस्थिनी स्त्री पण १ डाशी, २ मध्यम वयवाळी अने ३ युवान-एम त्रण प्रकारनी जाणवी गृहस्थ पासे कांटा कढाववो पडे तो प्रथम पश्चात्कृत पासे कढाववा, तेना अभावमां श्रावक पासे अने तेना अभावमां भद्रक पासे कढाववा साथासाथ तेने सूचना आपवी के-तुं जळथी हाथ धोईश नहीं आ ते शौचवादी न होय तो पोताना बने हाथ परस्पर घसीने साफ करी ले, अगर तो वस्त्रथी लूछी नाखे (९) आ कांटो काढनार शौचवादी होय तो तेने सूचववुं के-मारा मस्तकद्वारा अगर वस्त्रद्वारा तारा हाथ साफ करी ले, छतां पण ते तेम न करे तो तेने सूचववुं के-घरे जईने तमे अचित्त जळथी हाथ धोजो तेना घरे तथा जळनो जोगवाई न होय तो पोतानी पासे रहेल अचित्त जळथी तेना हाथ धोवराववा, कारण के आ तेम करवामां न आवे तो घरे जईने ते पुरःकर्म काचुं (सचित्त) पाणी वापरे जेथी पृथ्वीकाय तेमज अप्कायना जीवोनी विराधना थाय (१०) गृहस्थादिकना अभावे होय तो माता, बहेन, पुत्री, दादी, पौत्री विगेरे पासे कढावे अने ते सघना अभावमां वृद्धा, मध्यमा अने युवती पासे कढावे कदाच सघो पण संयोग न होय अने गाढ कारण आवी पडयुं होय तो वे डाह्या पुरुषने पासे राखीने एक पासे कांटो कढाववा (११) बे डाह्या पटले एक गृहस्थ ने एक अन्यतीर्थिक अथवा तो एक गृहस्थिनी अने बीजी अन्यतीर्थी स्त्री (१२) साधुना अभाव क्यारे होय ते दर्शावता कहे छे के-सिंहादिकथी व्याप्त अटवी होय अथवा शून्य अरण्य होय, रागादिकने कारणे साधु एकला पाछळ रही गया होय अने कांटा लाग्या होय त्यारे बीजा साधुना अभावमां ऊपर दर्शावेल पद्धति अनुसार कांटो कढाववो (१३) हवे यतना दर्शावता कहे छे के-पोताना सभागी मळ्या साधु पासे कांटो कढावे, तेना अभावमां असभागी मळ्या साधु पासे अने तेना अभावमां पासत्था पासे कढावे आ प्रमाण आ पोतानो पक्षना साधु न मळे तो पछी अनुक्रमे परपक्षी गृहस्थ, अन्यतीर्थिक, गृहस्थिणी, अन्यतीर्थी स्त्री, कुशळ अशौचवादी, कुशळ शौचवादी पासे कढावे ते बधा पैकी एक पणनो संयोग न मळे तो माता, बहेन इत्यादिक सघळी साध्वी पासे कढावे, तेना अभावमां वृद्धा, मध्यमा अने युवती स्त्री पासे कढावे (१४) हवे साध्वी कांटो कयी रीते काढे ते दर्शावता कहे छे के-नख हरणीवडे पगने स्पर्श्या विना ज कांटा काढे, अने तेम न बनी शके तो पगने वस्त्रवडे वींटीने, जमीन ऊपर या लाकडा ऊपर मूकीने कांटो काढे अने त

चखते थे साधु या तो साध्वी पासे थेसे. (१५) जेवी रीते पगना कांटादिक काढवाना उत्सर्ग अने अपवाद मार्ग कह्यो तेवी ज रीते आंखनी रज संबंधी पण जाणवु (१६) साधुनी आंखमा पडेल तृणना संबंधमा सुभद्रानु दृष्टांत छे, जे नीचे प्रमाणे—

सती सुभद्रानु वृत्तांत—

वसंतपुरमा जिनदास नामना जैनधर्मरक्त श्रेष्ठी हता तेने तत्त्वमालिनी पत्नीद्वारा सुभद्रा नामनी पुत्रीनो प्राप्ति थइ सुभद्रा जेवी रूपवान हती तेवी ज गुणवान सती पण हती जिनदासे पण पोतानो एकनी एक पुत्रीने लाडकोडमा उछेरी जिनदास शेठना धार्मिक संस्कारो पण सुभद्राए झाल्या अने ते शुद्ध समकितधारिणी बनी सुभद्राए यौवनवयमा प्रवेश करता जिनदासने तेने योग्य पति माटे चिंता उत्पन्न थइ तेनी इच्छा सुभद्राने योग्य जैनधर्मी कुळमां परणाववानी हती

आ अरसामा चंपानगरीनो बौद्धधर्मी बुद्धदास नामनो व्यापारी वसन्तपुर आवी चढ्यो एकदा जिनदास श्रेष्ठीना महेल पासेथी पसार थता तेणे सुभद्राने जोइ जोता ज तेने अनुभव थयो के–आ युवती वादळामाथी छूटी पडेली वीजळी तो नहीं होय? सुभद्राना रूपराशिए बुद्धदासनु चित्त आकर्षी लीधुं पण तेने प्राप्त करवा शुद्ध जैनधर्मी थया सिवाय छूटको नहोतो, कारण के जैन धर्मीने ज पोतानी कन्या परणाववानी जिनदासनी मान्यता अचल हती पोताना कार्यनी सिद्धि माटे बुद्धदासे जैन शास्त्रोनो अभ्यास करवा माड्यो अने श्रावकोचित करणी सामायिक, प्रतिक्रमण, जिनपूजा, व्याख्यानश्रवण, गुरुवंदन अने नवकारसी आदिक प्रत्याख्यान पण करवा लाग्यो सुभद्राना रूप तेमज गुण ऊपर मुग्ध थयेला बुद्धदासे जिनदास पासे तेनी पुत्रीना पोतानी साथे लग्न करवानी मागणी करी अनुकूळ समये बुद्धदास अने सुभद्रा लग्नग्रंथीथी जोडाया

सांसारिक जीवन शरू कर्या बाद बुद्धदासने पोतानी मातृभूमिनु आकर्षण थयु, पण जिनदास श्रेष्ठी पोतानी कन्याथी जुदा पडवा तैयार न हता वळी सुभद्राने जैनधर्मी नहीं पण एक चुस्त बुद्धधर्मी कुटुम्बमां वसवानु हतु आ कारणथी बुद्धदास पण मनमा मूंझातो जिनदास शेठ जमाइनी मूंझवण समजता हता आ समये बन्ने धर्मो वच्चे तीव्र स्पर्धा चालती हती एटले जिनदास जेवा चुस्त जैन पोतानी कन्याने इतरधर्मी कुटुम्बमा वसवा माटे परवानगी आपे ते असंभवित हतुं छेवटे सुभद्राए समजाववाथी अने जमाइना आग्रहथी जिनदासे रजा आपो अने साथासाथ जुदा घरमा वसवाना अने सुभद्राना धर्म-विचार अने आचार-स्वतंत्रता संरक्षवानो बुद्धदासने भलामण करी

चम्पानगरीमा आवी सुभद्रा पण नित्यनियम मुजब वर्तन करवा लागी तेनु सौभाग्य सुख अन्यने आंखना कणानी जेम खूचवा लाग्यु तेना सासु-ससराने बुद्धदास स्त्रीना दास जेवा लागवा लाग्यो, परन्तु तेओनो कशो उपाय न चाल्यो

धीमे धीमे धुधवातो आ ईर्ष्याग्नि घरना आगणामा आवी पहोंच्यो पोताना कुटुंबमां वहु जैनधर्मी थी पोताना धर्मनु यथार्थ पालन करे ते तेना सासु-ससराथी सहन न थयु तेओ तेना उघाडा विरोध करवा लाग्या, पण तेनी बुद्धदासे कंई दरकार न करी

हवे तेना मोसरियाओए सुभद्राना छिद्रो जोवा शरू कर्या एकदा तेओनी धारणा फलिभूत थई पटले मासक्षमणने पारणे कोई तपस्वी मुनि सुभद्राना गृहे गोचरी अर्थे पधार्या तेमनी आंखमा पवनना वेगथी एक तणखलु पडेलु, पण देह प्रत्ये उदासीन भाववाळा ते मुनिवरने तेनो दरकार न हतो सुभद्राए गोचरी वहोरावतां मुनिश्रीने थती व्यथा निहाळी पटले लघुलाघवी कळाद्वारा पोतानी जीभवडे आंखमांथी तणखलु चपळताथी लई लीधुं परन्तु तेम करता पोताना भाल प्रदेशमा करेल ताजा तिलकनु कंकु पण मुनिश्रीना कपाळमा चोंटी गयु दूरथी आ दृश्य तेनी सासुए जोयु पटले तेना अत्यार सुधी महामहेनते दबावेलो क्रोध-दावानळ भभूकी उठ्यो तेणे पोताना पुत्रने बोलावी सब हकीकत वर्णवतां कह्यु-जो, तारी स्त्रीना चरित्र! ज्या सुधी वात बहार नथी गई त्या सुधी सारु छे पण आवी वात प्रसरता शहेरमा तारी लाखनी प्रतिष्ठा राखना मूल्यनी थशे, माटे पाणी पहेला ज पाळ बांध अने कडक समज बळतामा घी होमवानी माफक बुद्धदासने माताना वचननी असर थई तेणे सुभद्रा साथेनो व्हेवार बध करी दीधो बुद्धधर्मी भक्तोए आ हकीकतना शहेरमा वायुवेगे प्रचार कर्यो जैन श्राविका सुभद्रानी स्थळे स्थळे निंदा थवा लागी आ बाजु सुभद्रा ता मेघाच्छादित सूर्यनी माफक निर्विकार अने प्रतापी ज हती कलंक, निंदा अने अप वादनी मध्यमा पण तेने अशमात्र क्रोध के आवेश स्पर्शी शक्या नहीं शात चित्तथी तेणे आ कारण माटे शासनदेवीनी सहाय मागी अने तेनी आराधना माटे कायोत्सर्ग कर्यो अट्ठमनी प्राते शासनदेवीए पण प्रत्यक्ष थई तेनु कलंक दूर करवा वचन आप्यु सुभद्राए कायोत्सग पारी पारणुं कर्यु

बीजा दिवसनो प्रातःकाळ थता ज नगरमा हाहाकार प्रवर्ती गयो शहेरना चारे दिशाना दरवाजा ओचींता (आपमेळे ज) बंध थई गया बहारनी दुनिया साथेना चपारासीओनो व्हेवार तूटी गयो जो दरवाजा न खुले तो समग्र नगरी क्षुधा-तृषाना सकटमा सपडाई जाय नगरवासीओनी व्याकुळता वधी गई राजा पासे प्रात पहोंची राजाए द्वारपाळोने बोलाव्या द्वारपाळोए कह्यु के-दैवकृत उपसर्ग सिवाय अमने बीजु कशु कारण जणातु नथी, माटे देव-प्रार्थना करावो धूप-दीप-पुष्पादिकना बलि समर्पीने राजवीए देवने संबोधीने प्रार्थना करता ज देव-वाणी थई के-"आ नगरनी कोई पण साचो सती स्त्री काचा सुतरना तातणाद्वारा चालणी बाधी ते चालणीद्वारा कूवामाथी पाणी खेंची द्वारा ऊपर छाटशे त्यारे ज ते दरवाजा उघडवाना" राजाए आवी सती स्त्रीनी शोध माटे, नगरीमा पडह वगडाव्यो

सतीत्वना घमंडवाळी केटलीय युवतीओ कृपाकाठे आवी निराश थईने चाली गई कोईनो सुतरनो तातणो तूटी जतो, कोईनो तातणो कायम रहे तो पण चालणीमा पाणी न भराय अने कदाच ते बने बने तो पण चालणी ऊपर आवता पाणीनु बिन्दु मात्र पण न मळे राजा पण आवी आतना बनावथी शोकग्रस्त बनी गयो नागरिक लोको ऊपर पण चितानु वादळ छाइ रह्यु सुभद्रा पोते जाणती के-मारा कलकना निर्मन माटे ज शासनदेवीए योजेल आ युक्ति छे एटले सब श्रीओए अन्नमायश करी लीधा पछी ते पोतानी सासु पासे गई अने नम्र वाणीमा आ कसोटीमाथी पसार थवा तेनो आज्ञा मांगी परंतु धगधगता ज्वाळा मुखी पर्वतमाथी जेम ज्वाला बहार आवे तेम सासुनो रोषभर्यो वाग्-धसारो वहेतो थयो-"तारु चरित्र मलिन छे तेथी तो अमे शरमना मार्या कोईने मों पण बतावी शकता नथी, माटे वधु फजेती न करावतां तु छानीमानी घरमा ज बेसी रहे ते ज उचित छे! तारे त्यां जईने अमारी अधूरी रहेली मश्करी पूरी कराववी छे?" आवा कटु वचन सामळी सुभद्रा पोताना आवासे गई अने स्नानादिकथी शुद्ध थई, पचपरमेष्ठीना स्मरणपूर्वक कूवाकाठे गई काचा सुतरना ततुथी चालणी बाधी कृवामा उतारी हजारो नेत्रो तेना प्रत्ये आकर्षाई गया, कारण के तेनी सफळता ऊपर तेओनी जीवन-आशा निर्भर हती सौ कोईना आश्चर्य वच्चे चालणी जळ-भरपूर बनी ऊपर आवी अने बध दरवाजा ऊपर पाणी छाटतां ज ते तत्काळ खुली जवा लाग्या उत्तर, पश्चिम अने दक्षिणना त्रण दरवाजाओ उघाड्या पछी, 'हजु पण कोईने पोताना सतीत्वनु अभिमान होय तो आ पूर्व दिशानो दरवाजो उघाडे' एवा सूचन साथे सुभद्राए ते दरवाजो बध रहेवा दीधो जे अद्यापि बध छे चपाना नृपतिए सुभद्रानु बहुमान कर्यु, लोकोए "सुभद्रानी जय जय" पोकारो अने बुद्धदासे पण पत्नीने देवी मानी तेना सासु ससरा वस्तुस्थितिनु सत्य भान थतां जैनधर्मी बन्या आ प्रमाणे धर्मनो प्रभाव दर्शावी सुभद्राए प्राते दीक्षा स्वीकारी आत्म-कल्याण साध्यु

साधु गमे तेटला गुणवान होय पण मूळगुणमा दोषित होय तो तेवा साधुने जे गच्छ बहार करे ते गच्छ जाणवो ते सबधमा जणावे छे के—

मूलगुणेहिं विमुक्कं, बहुगुणकलियं पि लद्धिसपन्नम् ।
उत्तमकुले वि जायं, निद्धाडिज्जइ तयं गच्छम् ॥ ८७ ॥

[मूलगुणैर्विमुक्तो, बहुगुणकलितोऽपि लब्धिसम्पन्नः ।
उत्तमकुलेऽपि जातो, निर्घाट्यते स गच्छः ॥ ८७ ॥]

गाथार्थ–अनेक गुणोथी युक्त, लब्धिसंपन्न अने उत्तम कुळमा जन्मेल एवो साधु पण जो पचमहाव्रतरूप मूळगुणथी रहित होय तो तेवा साधुने गच्छबाह्य कराय ते ज गच्छ प्रमाणभूत छे,

विवेचन—राजन्य जेवा उत्तम वंशमां जन्म्यो होय, चंद्रादि उत्तम कुळमां दीक्षित थयो होय, अनेक *लब्धिओथी विभूषित होय, बीजा पण अनेक गुणो होय छतां पण जो ते साधु प्राणातिपातविरमणादि पांच महाव्रतरूप मूळगुणथी रहित होय तो तेने थीणद्धि निद्रावाळा अथवा कषायदुष्ट शिष्यनी जेम गच्छबाह्य करवा जोइए मूळगुण ए संयमरूपी महेलनो पायो छे जो पायो मजबूत न होय तो तेना ऊपर ऊभो करेल बारी-बारणायुक्त महेल टकी शकतो नथी तेम ज महाव्रतोना अभावमां बीजा बारी-बारणारूप गुणो पण टकी शकता नथी मूळगुण ते एकडाना आंक छे एकडा विनाना घणा मींडा पण निरर्थक छे तेम महाव्रतो सिवायना शेष गुणो शून्य जेवा छे श्रीनिशीथसूत्रनी पीठिकामां थीणद्धि निद्रावाळाना केटलाक दृष्टांतो आपेला छे

कोई एक गाममां एक कौटुंबिक वसता हता ते प्रतिदिन मांस पकावीने खातो अने घणी हिंसा करतो एकदा तेने चारित्रपात्र मुनिना संयोग थयो धर्मोपदेश सांभळी कौटुंबिकने वैराग्य उद्भव्यो एटले दीक्षा लीधी स्थविरोनी साथे विहार करता करता एक नगरमां आव्यो मार्गे जतां एक हृष्ट पुष्ट पाडो तेना जोवामां आव्यो एटले तेने तेनु मांस खावानी इच्छा थइ, पण साधुवेशमां शु थइ शके? तेनो अभिलाषा वधता त्यागी पण थाय शु? गोचरीए गया तो पण अभिलाषा तेनी ते ज गोचरी करी, स्थंडिल गया, छेल्ली पोरसी भणावी, सांजनी आवश्यक विधि करी, छेवटे संथारा पोरसी पण करी छतां मांस खावानी इच्छा नाश न पामी रात्रिए सूता पछी तेने ×थीणद्धि निद्रा आवी ते उठीने ज्यां पाडाओ बांधेला हता त्यां गया, पाडाने मारी तेनु मांस तृप्ति प्रमाणे खाधु अने बाकीनु लइने उपाश्रये आव्या छापरा ऊपर मूकी पुन सूइ गया प्रभाते जागृत थइ गुरुमहाराज पासे आव्या अने कहेवा लाग्या के-आजे मने आवुं स्वप्नु आव्यु हतु के-में एक पाडाने मारी नाख्यो, तेनु मांस खाधु अने शेष रह्यु ते उपाश्रय ऊपर मूक्यु गुरुए तपास करावी तो उपाश्रयना छापरा ऊपर मांस पडेलु एटले तेमने थीणद्धि निद्रावाळो अयोग्य जाणीने ते ज वखते गच्छबहार कर्या

कोइ एक साधु गोचरी गया तेवामां एक स्थळे लाडुनुं भोजन जोइने ऊभा रह्या घणी वार ऊभा रह्या छतां गृहस्थे ते वहोराव्या नहीं अने साधु पण कशुं बोल्या नहीं मोदक लीधा विना उपाश्रये आव्या पण तेमनी इच्छा नाश

---

* लब्धियोनु वर्णन आगळ पृष्ठ २२८ थी २१४ ऊपर आवी गयु छे

× थीणद्धि निद्रा ए दर्शनावरणी कर्मनी नव प्रकृति पैकी एक छे दर्शनावरणीय कर्मनी नव प्रकृति आ प्रमाणे-१-निद्रा, २-निद्रानिद्रा, ३-प्रचला, ४-प्रचलाप्रचला, ५-थीणद्धि, ६-चक्षुदर्शन, ७-अचक्षुदर्शन, ८-अवधिदर्शन अने ९-केवलदर्शन

न पामी गोचरी आदि सर्व कार्यो कर्या छतां मनमांथी मोदकनी तृष्णा नाश न पामी रात्रे सूता पछी थीणद्धि निद्राना पराथी उठीने ते गृहस्थना घरे गया अने रखवाळने मारी नाख्यो, द्वारनां कमाड तोडीफाडी नाखी यथेच्छ मोदको खाधा अने शेष रह्या ते पात्रामां भरी लई उपाश्रये आवी सुई गया प्रात काळे पात्रानी प्रतिलेखना करतां अन्य साधुओए मोदक जोया पछी तेमनो रात्रि संबंधी सब व्यतिकर सांभळीने गुरुए तेमने गच्छबहार कर्या

कोई एक कुंभारे एक योग्य गच्छमां दीक्षा लीधी थीणद्धि निद्राना कारणे ते रात्रिए ऊभो थयो अने जेवी रीते माटीना घडा दोरडाथी कापतो हतो तेवी ज रीते साधुओना माथां कापवा लाग्या साधुओना कलेवर पर थानु अने माथा बीजी बाजु नाखवा लाग्या प्रभाते उठी गुरुने कह्यु के-रात्रिए मने आवा प्रकारनु स्वप्नु आवेल छे गुरुए तपास कराथी तो तेमणे रात्रिमां घणा साधुओनो संहार करी नाखेल गुरुए तेमने गच्छबहार कर्या

कोई एक साधु गोचरीए गया त्यांमां राजानो हाथी सामो मळ्यो हाथीए साधुने धीकडाव्या पछी ते साधुने क्रोध चढ्यो रोषमां ने रोषमां साधु सूई गया थीणद्धि निद्राने कारणे रात्रिमां ऊभा थई, ते हाथी पासे जई तेना दांत बहार खेंची काढ्या बाद ते लई, उपाश्रये आवी, ते दंतुशळने बारणा पासे मूकी सूई गया रात्रि प्रतिक्रमण समये गुरुमहाराजने पोताने तेवा प्रकारनुं स्वप्न आवेल तेवी वात करी पछी प्रात काळे तपास करी तो बारणा पासे बन्ने दंतुशळ पडेला जाईने ते ज थयेले गुरुए तेमने गच्छबहार कर्या

कोई एक साधु गोचरीए गया तेवामां मार्गमां मोटु शालनु वृक्ष आव्यु तेनी शाखाओ घणी विस्तृत होवाथी तेमने थोडो रस्तो फरीने लांबु फरवु पडवु पड्यो हतो, घणा साधुओनी गोचरी लाववानो होवाथी भार पण विशेष हतो, तृषा पण लागी हती, भूख पण पीडी रही हती तेथी उतावळे उतावळे पाछा फरतां ते वृक्षनी डाळी साथे जोरथी अथडाया अने मस्तक फुटी गयुं रोषमां ने रोषमां ते उपाश्रये आव्या रात्रे थीणद्धि निद्राना कारणथी उठीने ते शाळ वृक्ष पासे गया अने तेने मूळमांथी उखेडी, लभे उपाडी लावी उपाश्रय पासे नाख्यु प्रात काळे गुरुने खबर पडतां तेमने गच्छबहार कर्या केटलाक आचार्यो आ संबंधमां कहे छे के-आ साधु पूर्वभवमां वनहस्ती हता ते समये तेणे घणा वृक्षो उखेडी नाखेला तेना अभ्यासथी आ भवमां पण शाळवृक्षने मूळमांथी खेंची काढ्यु

आ संबंधमां प्रतिवादी शंका करता पूछे छे के-थीणद्धि निद्रावाळा साधुने गच्छबाह्य ज शामाटे करवो ? तेवा साधुनो तो वध ज करवो जोईए. तेनो उत्तर आपतां ग्रंथकार कहे छे के-थीणद्धि निद्रावाळाने वासुदेव करतां अर्ध बळ होय छे अने वज्रऋषभनाराच संघयण होय छे तेने कोई पण जीती शके नहीं वळी जो तेने विशेष क्रोधित कर्यो होय तो गच्छना सघनाश

करी नाखे, माटे तेमने पारांचित प्रायश्चित्त आपवुं उचित छे हवे श्रीनिशीथ सूत्रना अगियारमा उद्देशानी चूर्णिमां जणावेल कषायदुष्ट साधुओना दृष्टांतो जणावे छे

कोइ एक साधु गोचरीए गया गोचरीमां तेमने सरसवानुं शाक मळ्युं शाक स्वादिष्ट हतुं तेथी तेमां तेमने आसक्ति थइ गुरु पासे आवी गोचरी बतावतां गुरुए ज बधुं शाक लइ लीधुं ने खाइ गया शिष्यने अत्यन्त क्रोध चढयो गुरुए तेने खमाव्यो तो पण तेनो क्रोध शान्त न थयो अने कह्युं के-हुं तमारा दांत पाडी नाखीश त्यारे ज जपीश गुरुए विचार्युं के-आ साधु क्रोधना आवेशमां न करवानुं करी बेसशे एटले गच्छमां योग्य शिष्यने आचार्य तरीके स्थापी पोते अन्य गच्छमां चाल्या गया ते शिष्य पण अन्य गच्छमां गया अने त्यां गुरु संबंधी पूछपरछ करी शिष्योए जाण्युं के-आ ते ज दुष्ट शिष्य जणाय छे तेओए कह्युं के-आजे ज गुरु काळधर्म पाम्या छे अने तेमना शरीरने परठावी दीधुं छे त्यारे ते दुष्ट शिष्ये कह्युं के-मने ते स्थळ बतावो शिष्योए स्थळ बताव्युं अने पछी गुप्त रीते सताइ ते दुष्ट शिष्य शुं करे छे ते जोवा लाग्या ते कषायदुष्टे गुरुना शरीरने बहार काढी, पत्थरथी तेना दांत पाडी नाख्या अने बोलवा लाग्या के-आ दांतने ज सरसवानुं शाक मीठुं लाग्युं हतुं बीजा शिष्योए तेनुं दुष्ट वर्तन जाणी गच्छमांथी काढी मूक्यो

कोइ एक साधु पासे सारी मुहपत्ति हती गुरुए तेनी पासेथी ते लइ लीधी एटले तेने अत्यन्त क्रोध चढयो गुरुए तेने पाछी देवा मांडी पण तेणे ते लीधी नहीं अने मनमां डंस राख्यो एकदा बीजा शिष्यो आघापाछा गया हता तेवामां लाग जोइने तेणे गुरुनुं गळुं दबाव्युं गुरुए पण तेनुं गळुं पकडयुं छेवटे बन्ने मृत्यु पाम्या आवा दुष्ट चेलाने कदापि पासे न राखवो

कोइ एक साधु सूर्यास्त थया पछी पण वस्त्र सीववा लाग्या त्यारे गुरुए तेने कह्युं के-हे उलूक (घूवड)! शुं तुं अत्यारे पण देखे छे ? शिष्य क्रोधे भराणो अने कह्युं के-मने आम कहेनारना बे ने आंख हुं काढी नाखीश भय पामी गुरु अन्य गच्छमां जता रह्या अने त्यां अणशण स्वीकारी काळधर्म पाम्या क्रोधी शिष्य पण ते गच्छमां गया अने गुरु संबंधी पृच्छा करी बीजा साधुओए जाण्युं के-आ ते ज दुष्ट शिष्य हशे तेओए तेने गुरुने परठवेल ते स्थळ बताव्युं अने गुप्त रीते ते शुं करे छे ते जोयुं तो ते दुष्ट शिष्ये पोताना रजोहरणमांथी लोढानुं चप्पु (चाकू) काढी गुरुनी बन्ने आंखो फोडी नाखी साधुओए तेने गच्छबहार काढी मूक्यो

एक साधुने गोचरीमां शिखरण मळ्युं उपाश्रये आव्या आचारधर्म मुजब गुरुने बतावतां ते सर्व पी गया एटले शिष्य रोषे बळीने पत्थर लइने गुरुने मारवा आव्यो बीजा शिष्योए तेने वार्यो तो पण तेनो क्रोध शांत न थयो,

गुरु अणशण स्वीकारी, कालधर्म पाम्या शिष्यो तेने परठवी आव्या बाद जे ठकाणे गुरुने परठव्या हता त्या आगळ ते दुष्ट शिष्य गया अने मुडदा देहने बहार काढी पत्थरा मार्या त्यारे ज तेना आत्मामां शांति थई आ प्रकारना शिष्यो दशमा पारांचित प्रायश्चित्त योग्य छे

हवे सोना-रूपा विगेरेना परिग्रह विनाना गच्छने सुगच्छ वर्णवता कहे छे के-

जत्थ हिरण्णसुवण्णे, धणधण्णे कंसतंबफलिहाण ।
सयणाण आसणाण य, झुसिराण चेव परिभोगो ॥८८॥
जत्थ य वारडियाणं, तत्तडिआण च तह य परिभोगो।
मुत्तु सुक्किलवत्थ, का मेरा तत्थ गच्छम्मि? ॥ ८९ ॥
जत्थ हिरण्णसुवण्ण, हत्थेण पराणगंपि नो छिप्पे ।
कारणसमप्पियं पि हु, निमिसखणद्धपि त गच्छम् ॥९०॥

[यत्र हिरण्यसुवर्णयो-र्धनधान्ययो. कांस्यताम्रस्फटिकानाम् ।
शयनानामासनानाञ्च, शुषिराणा चैव परिभोगः ॥ ८८ ॥

यत्र च रक्तवस्त्राणा, नीलपीतादिरञ्जितवस्त्राणाञ्च परिभोग.।
मुक्त्वा शुक्ल वस्त्र, का मर्यादा तत्र गच्छे ? ॥ ८९ ॥
यत्र हिरण्यसुवर्णे, हस्तेन परकीयेऽपि न स्पृशेत् ।
कारणसमर्पितेऽपि हु, निमेषक्षणार्धं स गच्छ. ॥ ९० ॥]

गाथार्थ—जे गच्छमा सोनानो, रूपानो, धननो, धान्यनो, कासा तेम ज तांबाना पात्रोनो, स्फटिक रत्नमय भाजनोनो, खाट पलग आदि शयनीयनो, बेसवानी खुरशी, माची आदि आसननो तेम ज सच्छिद्र(पोलां) पीठ फलकनो उपभोग कायम करवामा आवतो होय तेम ज मुनिने योग्य श्वेत वस्त्रनो त्याग करीने राता, लीला के पीळा वस्त्रोनो उपयोग करातो होय ते गच्छने मर्यादावाळो क्याथी कही शकाय ? वळी जे गच्छना साधुने भय के स्नेहादिकना कारणे कोई गृहस्थ सोनु, रूपु अर्पण करे छता पण साधु अर्धनिमेष मात्र समय पर्यन्त पण तेने हाथवती स्पर्शे नहीं ते गच्छ ज प्रमाण जाणवो.

विवेचन—हिरण्य शब्दनो अर्थ रूपु अथवा नहीं घडेलु सोनु थाय अने सुवर्णनो अर्थ घडेलु सोनु थाय छे धन एटले रोकड रुपिया, सोनामहोर, माणिक्य प्रमुख धान्य चोवीश प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे-१ यव, २ गोधूम (घउ), ३ शाळ ४ व्रीहि-जुदी जुदी जातना चोखा, ५ साठी चावल, ६ कोद्रवा, ७ जुवार, ८ कांग-मोटा शाली, ९ रालग-नाना शाली, १० तल, ११ मग, १२ अडद, १३ अतसि-क्षमाकुरी, १४ काळा चणा, १५ तिउडा-बावटा, १६ वाल, १७ मठ, १८ मोटा चावल, १९ वटो, २० मसुर, २१ तुर, २२ कळथी, २३ धाणा अने २४ गोळ ध्यत चणा (काबुली चणा) प्रधातरमा धान्य-संख्या तथा नाममा फेरफार जोवाय छे कांसाना पात्र-थाळी, कचोळा, वाटका विगेरे, त्रांबाना पात्र-कमंडलु कळश विगेरे-आवा प्रकारना परिग्रहना त्यागवाळा साधुओ जे गच्छमां होय तेने सुगच्छ जाणवो श्रीनिशीथसूत्रना अगियारमा उद्देशामा अढार प्रकारना पात्रोनो त्याग उपदिश्यो छे, ते आ प्रमाणे-१ लोढाना, २ कांसाना, ३ त्रांबाना, ४ तरवाना, ५ सोनाना, ६ रूपाना, ७ सीसाना ८ कथीरना, ९ हीरपुट (लोहपुट), १० मणिना, ११ काचना, १२ शंखना, १३ शींगडाना, १४ दांतना, १५ चल पट्ट वस्त्र प्रमुखना, १६ पाषाण-पत्थरना, १७ चामडाना अने १८ वज्ररत्नना-आवा अढार प्रकारना पात्रो पोते राखे, बीजा पासे रखावे अने राखनारने सारो कहे अथवा पोते मागे, बीजा पासे मगावे अने मागनारने भलो कहे तेने चारमासी प्रायश्चित्त लागे वळी जे पात्रने लोढाना, त्रांबाना, कांसाना यावत् उपर कह्या ते अढार प्रकारना बंधनथी बांध्या होय तेवा काष्ठना पात्रने पोते राखे, बीजा पासे रखावे अने राखनारनी अनुमोदना करे तेने पण चारमासी प्रायश्चित्त लागे

माची, हिंडोळा प्रमुख आसनो पण वजवा कारण के तेनी प्रतिलेखना बराबर थई शकती नथी मळमां ज 'चेष' शब्द मूक्यो छे ते गादी, तकिया, गालमसूरिया विगेरे कोमळ अने पोला शयनादिक सूचवनारा छे, तेनो पण निषेध समजवो

लाल, पीळा के लीला वस्त्र साधुए न पहेरवा फक्त श्वेत वस्त्र ज देह ऊपर धारण करवा १ आचारांग, २ उत्तराध्ययन, ३ कल्पसूत्र टीका, ४ कल्पसूत्र चूर्णी अने ५ निशीथ सूत्र मूळ तेमज चूर्णीमा श्वेत वस्त्रनु प्रतिपादन करेल छे कारण के बीजा विचित्र रंगोवाळा वस्त्रमां मर्यादा सचवाती नथी।

ऊपर आपणे जोई गया के रंगेल वस्त्र पण साधु न राखी शके तो पछी सुवर्ण के रूपु पासे राखवानी वात करवी ते केम शोभे ? सिद्धांतकार कहे छे के-कोई पण गंभीर कारण उपस्थित थये छते कोई गृहस्थ, साधु पासे सोनु-रूपु मूकवा आवे तो पण तेने अर्धनिमेष जेटला समय पूरतु पण ग्रहण न करवु

आंख मींचीने उघाडीए तेटला समयने निमेष कहेवामां आवे छे. आटलो सूक्ष्मकाळ पण ते पण जेनो निषेध कर्यो छे तेनो संसर्गनी तो कथा ज शामाटे करवी ? शास्त्रकारे आ मध्यमां अपवाद मार्ग पण दर्शाव्यो छे. श्रीनिशीथसूत्रमां परिग्रहना अधिकार छे त्यां दर्शाव्युं छे के—"गिलाणमंगीकृत्य धेज्जहुताय हिरण्णंपि गेण्हेज्जा उरालस्यापवाद, विसे कणगं ति विषग्रस्तस्य कनक-सुवर्णं त घेत्तु घसिऊण विसणिग्घायणट्ठा तस्स पाणं दिज्जति, अतो गिलाणट्ठा उरालियग्गहणं करेज्ज त्ति ॥" ग्लान साधुना उपचार माटे, वेचन आपवा माटे अने कोई साधुने विस्फोटक थयुं होय त्यारे सोनुं घसीने पावा माटे उपयोगमां लेवुं पडे तेटलो समय सोनुं ग्रहण करे परन्तु कार्य परिपूर्ण थये अर्ध निमेष मात्र समय पर्यन्त पासे राखी शकाय नहीं.

आ त्रण गाथामां धन, धान्य विगेरेने लगती जे मर्यादा बतावी छे ते मर्यादाने साचवे-पाळे ते ज सुगच्छ कहेवाय. हवे साध्वी संबंधी गच्छमर्यादा वर्णवे छे—

जत्थ य अज्जालद्धं, पडिगहमाईवि विविहमुवगरणम् ।
परिभुज्जइ साहूहिं, तं गोयम ! केरिसं गच्छम् ? ॥ ९१ ॥
[यत्र चार्यालब्धं, पतद्ग्रहाद्यपि विविधमुपकरणम् ।
परिभुज्यते साधुभिः, स गौतम ! कीदृशो गच्छः ? ॥ ९१ ॥]

गाथार्थ—जे गच्छमां साध्वीओए मेळवेल पात्रादिक उपकरणोनो साधुओ वगरकारणे उपभोग करता होय तेने हे गौतम ! केवो गच्छ कहेवो ? अर्थात् ते सुगच्छ नथी ज.

विवेचन—साध्वीए आणेल पात्रादिक उपकरणो पण साधुए स्वीकारवानो निषेध छे तो पछी तेनो लावेल आहार तो केम ज कल्पी शके ? श्रीजीत कल्पमां कह्युं छे के—" गुरुउवहिअपडिलेहे, छप्पइअसोहिकम्मि तद्ग्गहणे । लहुया गुरुगज्जाणं, सयमेव य वत्थपायगहे ॥१॥ " गुरुनी उपधि पडिलेहे नहीं, तेमां जू विगेरेनी तपास न करे तो लघुचारमासी दंड आवे अने गृहस्थ पासे वस्त्र, पात्रादिक ग्रहण करे तो चारमासी गुरुदंड लागे. साध्वीने गृहस्थ पासेथी वस्त्रादिक ग्रहण करतां कया दोषो उद्भवे ते जणावतां कहे छे के—साध्वीने ए प्रमाण ग्रहण करतां कोई नूतन श्रावक जुए तो मिथ्यात्वी बने, वळी 'साध्वीओ तो पात्रादिकना मिषथी भाडुं ले छे' तथा शंका कोईने उपजे, स्त्रीजाति स्वभावथी चपळ होय छे तथी तेनी साथे मैथुन-सेवननी इच्छाथी गृहस्थ वस्त्र-पात्रादिक वहोरावे अने जो तेनो

इच्छानो अनादर थाय तो लोकमा हासी करे, वळी स्त्रीजातिनु सत्त्व (धैर्य) अल्प होय छे एटले मारा वस्त्रादिकथी लोभाइ जाय छे अने तेने अगे अकार्य करवा प्रेराय छे वळी रूपवती साध्वीने जोइने मोह पामेल कोइ गृहस्थ वशीकरणद्वारा तेने व्यामोह पण पमाडे-इत्यादिक अनेक कारणोथी शास्त्रकारे साध्वीने वस्त्र-पात्रादिक ग्रहण करवानो निषेध फरमाव्यो छे

साध्वीने वस्त्रादिक तो जोइए ज, तो तेमणे क्याथी मेळववा ? ते प्रश्नना जवाबमा जणाववामा आवे छे के-तेणे पोतानी जरूरियात पोताना आचार्यने जणाववी अने आचार्य पण विधिपूर्वक साध्वीने आपे ते विधि कई छे ? ते जणावता कहे छे के-आचार्य साध्वीने योग्य उपधि मगावीन सात दिवस पोतानी पासे राखे, बाद कल्प करीने स्थविराने पहेरावे अने विकार न थाय तो सुन्दर रीते परीक्षा करीने ते उपधि प्रवर्तनीने आपे अने ते पण योग्य विधिपुरस्सर साध्वीने आपे जो परीक्षा कर्या विना उपधि आपे अगर तो सीधेसीधा साध्वीने आपे तो आचार्यने चारमासी गुरु प्रायश्चित्त लागे प्रवर्तनीने सोंप्या सिवाय कोइ साध्वीने आचार्य सीधा उपधि आदि आपे तो अन्य साध्वी विचारे के-साध्वी युवान ने रूपवती छे तेथी आचार्य तेने वस्त्र-पात्रादिक सीधा आप्या आवी रीते कुशका करवानु कारण मळे उपधि आपवा सबधी विस्तृत अधिकार श्रीनिशीथसूत्रना पन्दरमा उद्देशानी चूर्णिमा छे

अपवादमार्ग दर्शावता कह्यु छे के-साधुना अभावमा साध्वीए वस्त्रादिक उपकरणो ग्रहण करवा पण तेमा स्थविरानो क्रम साचववो जो स्थविरा साध्वी न होय तो युवती साध्वी अन्य साध्वी साथे जइने आपे आ सबधमा विशेष पुष्टि करता कहे छे के—

अइदुल्लहभेसज्ज, बलबुद्धिविवड्ढणपि पुट्ठिकरम् ।
अज्जालद्ध भुज्जइ, का मेरा तत्थ गच्छम्मि ? ॥ ९२ ॥

एगो एगित्थिए सद्धिं, जत्थ चिट्ठिज्ज गोयमा ! ।
सजइए विसेसेण, निम्मेर त तु भासिमो ॥ ९३ ॥

दढचारित्त मुत्त, आइज्ज मयहर च गुणरासिं ।
इक्को अज्जावेई, तमणायार न त गच्छम् ॥ ९४ ॥

[अतिदुर्लभभैषज्य, बलबुद्धिविवर्धनमपि पुष्टिकरम् ।
आर्यालब्ध भुज्यते, का मर्यादा तत्र गच्छे ? ॥ ९२ ॥

एक एकाकिस्त्रिया सार्धं, यत्र तिष्ठेत् गौतम ! ।
संयत्या विशेषेण, निर्मर्याद तं तु भाषामहे ॥ ९३ ॥
दृढचारित्रा निर्लोभा, आदेया महत्तरा च गुणराशिम् ।
एकाकी अध्यापयति, सोऽनाचारः न स गच्छः ॥ ९४ ॥]

गाथार्थ-जे गच्छमां साधुओ साध्वीए आणी आपेल, धन ने बुद्धि वधारनारा पुष्टिकारक, अति दुर्लभ औषध-भेषजनुं सेवन करता होय ते गच्छमां मर्यादा क्यांथी होय ? एकलो साधु एकली स्त्री अथवा साध्वी साथे रहे तेने हे गौतम ! अमे विशेष प्रकारे मर्यादा विनानो ज गच्छ कहीए छीए. वळी दृढ चारित्रशील, निर्लोभी, आदेय वचनवाळी, महामतिवंत अने गुणना निधान रूप महत्तरा (सर्व साध्वीओनी स्वामिनी) साध्वीने साधु एकलो भणावे तो ते पण अनाचार ज छे.

विवेचन—आगुमी गाथामां आपेल मेरा शब्द देशी छे अने तेनो अर्थ मर्यादा थाय छे जे गच्छ मर्यादावाळा नथी ते तीर्थंकरनी आज्ञा बहार छे दुष्प्राप्य, बुद्धि वधारनार, शक्ति-दाता एवुं औषध पण जो साध्वीओ लावेल होय तो साधुथी वापरी शकाय नहीं

साधुने एकली स्त्री साथे वात करवानो पण निषेध कर्यो छे, तो एकली साध्वी साथे वास के वार्तालाप तो थाय ज क्यांथी? एकांतवास बहु बुरी चीज छे एकांतमां रहेता परस्परना अंग-प्रत्यंग जोवाय छे अने परस्परना विशेष वार्तालापथी मन चलित थई जाय छे एकदा श्रेणिक महाराजा अने राणी चेलणाने भगवाननी पर्षदामां जोईने तेमज तेमना रूपादिकना विचार करीने श्रीमहावीर भगवंतना साधु तथा साध्वीए भवांतरमां तेवा थवानुं नियाणुं कर्युं हतुं श्रीमहावीर परमात्माना दृढ अने क्रियापात्र साधु-साध्वीनुं मन चलित थई गयुं तो पछी बीजा सामान्य साधु या साध्वी माटे तो शुं कहेवुं ! माटे ज शास्त्रकारे एकांतमां तो स्त्री साथे वातचीत करनार साधुने मर्यादाहीन अने साध्वी साथे वास करनारने विशेष प्रकारे मर्यादाहीन कहेल छे

चारित्रना स्थिर परिणामवाळी, स्पृहा रहित, गुणवान अने महत्तरा (सर्व साध्वीओनी स्वामिनी) पदने प्राप्त थयेल एवी वृद्ध साध्वी पण जो साधु पासे एकांतमां भणवा बेसे तो ते गच्छ अनाचारी छे साधुओना समुदायमां जे स्थान आचार्यनुं छे तेवुं ज स्थान (प्रतिष्ठा) महत्तरा(आचार्याणी)नुं छे महत्तरा पदवी क्यारे प्राप्त थाय ते संबंधमां कह्युं छे के–" सीलत्था कयकरणा, कुलजा परिणामिया य गंभीरा । गच्छाणुमया वुड्ढा, महत्तरत्तं लहइ अज्जा ॥ १ ॥"

शियळवती, सुकृत करनारी, कुलीन, वृद्धा, गभीर अन्त करणवाळी, गच्छमा मान्य थयी साध्वी महत्तरा पदने प्राप्त कर ने इत्यु पण आ सब धर्मा विशेष वणन करता कहे छे क—

घणगज्जियहयकुहए-विज्जूदुग्गिज्जगूढहियियाओ।
अज्जा अवारियाओ, इत्थीरज्ज न त गच्छम् ॥ ९५ ॥
[घनगर्जितहयकुहक-विद्युद्दुर्ग्राह्यगूढहृदया ।
आर्या अनिवारिता , स्त्रीराज्य न स गच्छः ॥ ९५ ॥]

गाथार्थ—मेघनो गर्जारव, अश्वना उदरमा रहेलो वायु अने वीजळीना चमकारनी जेम जेमना हृदय कळी न शकाय एवी साध्वीओ ज्या स्वेच्छा मुजब गमनागमन करे ते स्त्रीराज्य छे पण गच्छ नथी

विवेचन—मेघ गर्जे त्यारे निर्णित न कही शकाय क-आ वरसशे के नहीं वरसे वळी घोडा दोडे त्यारे तेना पेटमा एक प्रदेशमा सम्मूर्च्छिम वायु उपजे छे अने तथी तना उदरमा खळ-खळ थवा अवाज थाय छे पण ते मालूम पडतो नथी कलिकालसर्वज्ञ श्रीमद हेमचन्द्राचार्ये परिशिष्ट पवमा कह्यु छे के-
" दक्ष्यौ च स्वर्णकारोऽपि, चरित योषितामहो ! । अश्वाना कुहकाराव-मिव को वेत्तुमीश्वरः ॥ १ ॥" ज्ञाता थवा सानी स्त्रीनु चरित्र अने अश्वना उदरमा थतो 'कुहक' थवा शब्द जाणवाने कोण समर्थ छे ? अर्थात् ते सर्व जाणी शकाता ज नथी पटल कहवानु तात्पर्य ए छ क-स्त्री ए कपटना करडिया छे तेना स्वभाव चचळ होवाथी तेनु हृदय न कळी शकाय तनु होय छे आवी स्त्रीओ (साध्वीओ) जे गच्छमा अकुश विना वतती होय त गच्छने गच्छ न कहेवाय पण स्त्रियाराज्य ज कही शकाय लौकिक शास्त्रोमा पण स्त्री-चरित्र सबधी कह्यु छे के—

अश्वप्लुत माधवगर्जित च, स्त्रीणां चरित्र भवितव्यता च ।
अवर्षण चाप्यतिवर्षणञ्च, देवा न जानन्ति कुतो मनुष्या ? ॥ १ ॥
जलमज्झे मच्छपय, आगासे पक्खियाण पयपति ।
महिलाण हिययमग्गो, तिन्निवि लोए न दीसन्ति ॥ २ ॥
यदि स्थिरा भवेद्विद्युत्, तिष्ठति यदि वायवः ।
दैवात् तथापि नारीणां, न स्थेम्ना स्थीयते मन ॥ ३ ॥

घोडाना पेटमा खळ-खळ थता थता ध्वनि, गाजता मेघ वर्षशे के कम ? स्त्रीनु चरित्र भविष्यमा शु थवानु छे अने शु थवानु नथी ? आ वात देवो

पण जाणी शकता नथी तो पछी मनुष्योनी शक्ति कई गणत्रीमां ? जळमां माछलानो पग, आकाशमा उडता पक्षीओना पगनो पक्ति तेमज स्त्रीनु हृदय-आ त्रण थाना जगतमां देखी शकाता नथी कदाच दैवयोगथी वीजळी स्थिर बनी जाय, पवनो पण एक जग्यामा रहे परन्तु स्त्रीनु मन ता कदापि स्थिर रहे ज नहीं

साध्वी पण स्त्रीजाति ज छे तेथी ते पण चपळ ने चचळ मनवाळी होय छे जो तेने लगाम विनाना अश्वनी माफक छूटी मूकवामा आवे तो ते कल्याण साधवाने बदले उलटु हानिकर ज वर्तन आचरे ए स्त्रीजातिने केटला अकुशनी जरूर छे ते नीचेना श्लोकथी बरावर स्पष्ट समजाशे कह्यु छे के—

" पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने । पुत्रस्तु स्थविरे भावे, न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति ॥१॥ " बाळवयमा कुमारी होय त्या सुधी स्त्रीनु रक्षण पिता करे छे, बाद युवती थाय त्यारे धणी पोषण करे अने वृद्धा थाय त्यारे पुत्र विगेरे तेनु रक्षण करे, पण स्त्री स्वतत्र न रहे स्त्रीनु चित्त कदलु दुष्ट होय छे ते विषयमा रेवतीनु वृत्तान्त सारो प्रकाश फेंके छे—

रेवतीनु दृष्टान्त—

राजगृही नगरीमां श्रेणिक राजा राज्य करता हता नगरनी बहार गुणशील नामनु यक्षनु मदिर हतु ते नगरीमा महाशतक नामना धनाढ्य गाथापति वसता हता तेना आठ क्रोड सोनैया भडारमा हता, आठ क्रोड व्यापारमा हता अने आठ करोड सोनैयानु घरेणु हतु आ उपरात दश-दश हजार गायोनु एक गोकुल एवा आठ गोकुल एटले एसी हजार गायानो ते स्वामी हतो तेने तेर पत्नीओ हती तेमा रवती मोटी हती रेवती पोताना पियरथी आठ क्रोड सोनैया अने आठ गोकुल करियावरमा लावी हती ज्यारे बाकीनी बारे पत्नीओ एक एक क्रोड सोनैया अने एक-एक गोकुल लावी हती आ रीते महाशतकनी सपत्ति अने ऋद्धि अढळक हतो

भगवान महावीर विहार करता करता राजगृहीना गुणशील उद्यानमा समवसर्या सत्र लोकोनी साथे महाशतक पण वदनार्थे गयो प्रभुनी अमृतमय देशना साभळी समस्त पर्षदा आनदित बनी सर्वे पोतपोताने स्थाने गया बाद महाशतके परमात्माने विज्ञप्ति करी के-हे प्रभो ! हु पचमहाव्रतरूप सर्व विरति ग्रहण करवा अशक्त छु परतु मने समकितमूळ श्रावकना बार व्रतरूप धर्म उच्चरावो भगवते कह्यु क-'धर्मस्य त्वरिता गतिः' धर्मना सारा कार्यमा कदापि ढील न करवी महाशतके श्रावकना व्रतो अगीकार कर्या आनद श्रावके करता विशेष ए ग्रहण कर्यु के-चावीश क्रोड सोनैया उपरात सपत्ति वधे तो तेनो धर्ममार्गमा व्यय करवो अने प्रतिदिन व्यापार करता बे कासाना पात्र भराय तेटलु रूपु उपार्जन थाय त्यारबाद व्यापारनो त्याग करवो तेम ज रेवती आदि

तेर स्त्रीओ उपरांतनो पण त्याग धीमे धीमे महाशतक जीवाजीवादिक नव तत्वना ज्ञाता थया महावीर भगवंत पण अन्यत्र विहार करी गया.

एकदा रात्रिसमये रेवती जागृत थइ गइ अने कुटुम्ब संबन्धी विचारणा करवा लागी तेवामा तेने विचार आव्यो के-आटली बधी सम्पत्ति अने ऋद्धि होवा छता हु महाशतक साथे यथेच्छ भोगविलासो भोगवी शकती नथी वळी मारी शोक्यो अंतरायभूत (वचमा आवे) छे माटे तेने अग्निना उपद्रवथी, शस्त्रप्रहारथी के विषप्रयोगथी मारी नारु आ प्रमाणे दृढ विचार करी पोतानी शोक्याना छिद्रो जोवा लागी तेमा वच्चे परस्पर अंतर पडावी रेवतीए छ शोक्याने शस्त्रप्रहारथी अने छने झेर आपीने मारी नाखी तेना बार क्रोड सोनैया अने बार गोकुलपण पोते लइ लीधा

बाद रेवती महाशतक साथे यथेच्छ भोगो भोगववा लागी विशेष भोग भोगववानो लालसायी ते मांसलोलुपी थइ अने प्रतिदिन तळेला, अग्निमा शेकेला विगरे प्रकारना मांस खावा लागी मांसनी साथे मदिरानु व्यसन पण थयु

एकदा राजगृही नगरीमा पर्वना दिवसोमा अमारी पडह वाग्यो एटले रेवतीने मांसने माटे मुश्केली ऊभी थइ राजाज्ञानु उल्लंघन थाय तो शिक्षापात्र थवाय एटले मांसना अभावमा रेवतीए पोताना गोकुलना माणसने बोलावीने कह्यु के-तारे हमेशा बे वाछडाओने मारीने तेनु मांस मने मोकलाववु आ प्रमाणे आवतां मांसने शेकीने, तळीने रेवती प्रतिदिन खावा लागी

महाशतक श्रावक व्रत-पालन करता चौद वर्ष व्यतीत कर्यां एकदा पाछला रात्रे धर्म-जागरिकामा विचार कर्यो के-गृहस्थावस्थामा में आटला वर्षो गाळ्या, हवे तो प्रातःकाळे पुत्रने सर्व कारभार सोंपी हु श्रावकनी प्रतिमा धारण करु. प्रातःकाळमा कुटुम्बीजनोने जमाडी, पुत्रने भार सोंपी, जिनेश्वरे कहेल धर्म अंगीकार करीने तेणे पौषधशाळामा वास कर्यो आ अवसरे मांस तथा मदिराथी मदोन्मत्त बनेल रेवती पोताना केश छूटा मूकी, ओढणाना छेडाओ आघापाछा करती पौषधशालामा ज्यां महाशतक बेठा छे त्यां आवीने कहेवा लागी के-हे श्रावक! तु चारित्र धर्मनी इच्छा करे छे, पुण्य वांधे छे, मोक्षनी वांछा करे छे पण ते धर्म, पुण्य, स्वर्ग अने मोक्ष विगरे शु छे? धर्म करीने देवलोक जवानी तारी इच्छा छे पण मारी साथे यथेच्छ भोग-विलासो भोगव तो देवलोकनु सुख तो अहीं ज तने दइशु मोक्षमा तो स्त्री नथी, अने स्त्री विनानु सुख कयु? वळी परलोक कोण जोवा छे? माटे मारी साथे मनगमता विषयसुखो भोगव रेवतीना आवा कष्टदायक वचन सांभळवा छता महाशतक अंश मात्र चलायमान न थया त्यारे रेवती जेवी आवी हती तेवी चाली गइ

बाद महाशतक श्रावक क्रमश श्रावकना अगियारे पडिमा वहन करी पहेली प्रतिमा-जिन धर्मने विषे रुचि, मिथ्यात्वनो त्याग, पोषह के उपवास

विगेरे न करे परन्तु समकित रूडी रीते पाळे बीजी त्याग न करे बीजी प्रतिमा-समकित होय, श्रावकना बार व्रतो रूडी रीते पाळे पण सामायिक तथा देशावगासिक न करे त्रीजी-सर्व प्रकारे समकित पाळे, श्रावकना बार व्रत पाळे, सामायिक तेमज देशावगासिक करे परन्तु आठम, चौदश, पूनम के अमावास्याने दिवसे पोषह न करे चोथी-समकित, बार व्रत, सामायिक विगेरे करे, आठम-चौदश विगेरे दिवसोने विषे पोषध करे परन्तु रात्रिने विषे काउसग्गध्यान करे पांचमी-चोथीमां दर्शावेला प्रमाणे सर्व क्रिया करे, उपरांत रात्रिभोजननो त्याग करे, रात्रिप्रतिमा करे-काउस्सग्ग करे, स्नान न करे, रात्रि भोजन न करे, धोतियु माकळु पहेरे, दिवसे ब्रह्मचर्य पाळे, रात्रिए भाग-प्रमाण करे-आ प्रमाणे जघन्यथी एक, बे के त्रण दिवस अने उत्कृष्टथी पांच मास पर्यन्त विचरे छट्ठी-पांचमीमां दर्शावेला उपरांत रात्रिमैथुननो पण त्याग करे, परन्तु सचित्तनो त्याग न होय आ प्रमाणे जघन्यथी एक, बे के त्रण दिवस अने उत्कृष्टथी छ मास पर्यन्त विचरे सातमी-छट्ठीमां दर्शावेला उपरांत सचित्तनो त्याग होय परन्तु आरम्भनो त्याग न करे, आ प्रमाणे जघन्यथी एक, बे के त्रण दिवस अने उत्कृष्टथी सात मास पर्यन्त विचरे आठमी-सातमीमां दर्शावेला उपरांत पोते आरम्भ न करे परन्तु बीजा पासे कराववानो त्याग नथी-आ प्रमाणे जघन्यथी एक, बे के त्रण दिवस अने उत्कृष्टथी आठ मास पर्यन्त विचरे नवमी-आठमीमां दर्शावेला उपरांत पोताने अर्थे पण बीजा पासे आरम्भ न कराये पण बीजा कोई पोताने अर्थे आरम्भ करता होय तो तेनो त्याग नथी-आ प्रमाणे जघन्यथी एक, बे के त्रण दिवस अने उत्कृष्टथी नव मास पर्यन्त विचरे दशमी-नवमीमां दर्शावेला उपरांत पोताने अर्थे करेल भोजननो त्याग करे, मस्तक मुंडावे, चोटी राखे, कोई वस्तु माटे पुत्रादिक पूछे तो बे अक्षर-हा के ना कहे जाणता होय तो हा कहे अने न जाणता होय तो ना कहे-आ प्रमाणे जघन्यथी एक, बे के त्रण दिवस अने उत्कृष्टथी दश मास पर्यन्त विचरे अगियारमी-दशमीमां दर्शावेला उपरांत मस्तक मुंडावे के लोच करे, साधुनो जेम वेष अने पात्रादिक राखे तेम राखे, साधुनी माफक ईर्यासमितिपूर्वक चाले, गोचरी अर्थे गृहस्थने घेर जाय त्यारे भात के दाळ रंधाई गया होय तो तेने कल्पे, भात रंधाईने उतरी गया होय अने दाळने उतरवानी वार होय तो भात कल्पे गृहस्थना घरमां जईने कहे छे के-हुं श्रावकनी पडिमा अंगीकार करेलो श्रावक छुं माटे मने भिक्षा आपो आ प्रमाणे मार्गमां विचरता पण कोई प्रश्न करे के-तमो कोण छो? तो कहे के-हुं पडिमाने वहन करनारो श्रावक छुं आ प्रमाणे जघन्यथी एक, बे के त्रण दिवस अने उत्कृष्टथी अगियार मास पर्यन्त विचरे आ बाबत कोई प्रश्न करे के-तो पछी तेओ साधु केम थई जता नथी? कारण के छेल्ली अगियारमी पडिमामां तो साधुना जेवी ज आचरणा छे आ प्रश्ननो खुलासो ए छे के-हजी स्वजनवर्गनो स्नेह तूट्यो नथी एटले सर्व

विरति न ग्रही शख महाशतक श्रावकें आ अगियारे प्रतिमानु वहन कर्यु अने तपश्चर्यादिकने कारणे तेनो देह दुर्बल थनो गयो लोही तथा मांस सुकाई गया अने नाडीमां श्वासमात्र रह्यो आ प्रमाणे कायाकष्ट सहन करता एकदा पाछली रात्रिमां धर्म-जागरण करता तने विचार उद्भव्या के-देह दुर्बल थयो छे, लोही-मांस क्षीण थइ गया छे अने नाडीमां श्वास छे तो हु अणशण स्वीकारु बाद चार आहारना त्यागपूर्वकनु अणशण स्वीकारी विचरता तेमने शुभ अध्यवसायाने अंगे अवधिज्ञान उत्पन्न थयु पूर्वदिशामां लवणसमुद्रना हजार योजन, दक्षिण अने पश्चिम दिशामां पण हजार-हजार योजन पर्यन्त अने उत्तर दिशामा चुल्लहिमवंत पर्वत पर्यन्त जाणवा-देखवा लाग्या ऊर्ध्वदिशामा सौधर्म देवलोक पर्यन्त अने अधोलोकमां रत्नप्रभा नारकीना लोलुय नामना पाथडामां चोराशी हजार वर्षना आयुष्य प्रमाणने जाणवा-देखवा लाग्या

एकदा महाशतक पोतानी पौषधशाळामां छे तेवामां रेवती पूर्वनी माफक मदिरा-मस्त बनीने तेमनी पासे आवी अने केश छूटा मूकी, ओढवानु वस्त्र आघुं-पाछु करती, हावभाव दर्शावती विषयसेवन माटे याचना करवा लागी रेवतीए एक वार, बीजी वार अने त्रीजी वार पण ए ज प्रमाणे कह्यु पटले महाशतकने माथ उद्भव्यो अने अवधिज्ञानथी जोइ तेने कह्यु के-"हे रेवती! तारा अकृत्य अने दुष्ट आचरणथी तु आजथी सातमी रात्रिए अलस रोगनी व्याधिथी मृत्यु पामी, रत्नप्रभा नारकीना लोलुय नामना पाथडामां चोराशी हजारना आयुष्यवाळा नारकी तरीके उपजीश" महाशतकना आवा कठोर वचन सांभळता ज रेवतीने भान आव्यु तेने जणायु के-महाशतक मारा ऊपर रुष्ट्यो छे अने मने धीरे धीरे मारी नाखशे वळी मने शाप दीधो छे तो माह शुं थशे? एम भयभ्रांत थती पोताना आवासे गइ अने आर्तध्यानना योगथी प्रतिदिन झूरवा लागी तेना परिणामे तेने अलस नामनो व्याधि थयो अने बराबर सातमे दिवसे मृत्यु पामी नारकीमा गइ

आ बाजु पृथ्वी ऊपर उपकार करता करता भगवंत श्रीमहावीरस्वामी ते नगरीमां समवसर्या पर्षदा एकत्र थइ अने भगवंते उपदेश आप्यो पर्षदाना विसर्जन बाद भगवंत गौतमस्वामीने कह्यु के-हे गौतम! आ नगरीमां महाशतक श्रावक अणशण स्वीकारीने पोतानी पौषधशाळामां रहेल छे तेणे पोतानी पत्नी रेवतीने कठोर वचन कह्यु हतु. अणशण स्वीकार्या पछी साचु होय तो पण अनिष्ट अने अप्रिय वचनो कोईने पण न कहेवा जोइए, क्रोध पण न करवो घटे; माटे तमे तेमनी पासे जाओ अने प्रायश्चित्त आपी तेनी शुद्धि करो भगवंतनु वचन स्वीकारी गौतमस्वामी महाशतकनी पौषधशाळा तरफ चाल्या गौतमस्वामीने आवता जोइ महाशतक श्रावक अतीव आनंदित थयो बाद गौतमस्वामीए भगवंते कहेल सर्व वृत्तांत जणावीने तेमने आलोयणा आपी

वीस वर्ष पर्यन्त श्रमणोपासकपणु धारण करी, छेवटे साठ टकनी मारणांतिक सलेखना स्वीकारी, कालधर्म पामी सौधर्म देवलोकमां अरुणवडिंस नामना विमानमां चार पल्योपमने आउखे देव थयो बाद त्यांथी च्यवी, महाविदेह क्षेत्रमां उत्पन्न थई मोक्षे जशे आ कथानो सारांश ए छे के-स्त्रीजातिनो स्वभाव ज चपळ होय छे माटे साध्वीना संसर्ग न करवो तेमज तेनी पासे बेसवु नहि स्त्री-चरित्र माटे पातालसुंदरीनुं कथानक पण बोधक छे, जे नीचे प्रमाणे–

पातालसुंदरीनी रसिक कथा—

विशालापुरीना जयसेन राजाए एकदा गर्वथी पोताना सभासदोने पूछ्यु के-एवी काइ कळा बाकी छे जेमां हुं निपुण न होउं? राजसभामां 'हाजी हा' कहेवावाळा घणा हता छतां एक सत्त्वशाली पुरुषे जणाव्युं के—राजन्! आप हजी स्त्रीचरित्रनी कळा जाणी शक्या नथी स्त्रीचरित्र आगळ देवो, दानवो, मंत्रतंत्रवादीओ विगेरे मुग्ध बन्या छे जालंधरे स्त्रीने भोंयरामां राखीने अनेक रक्षको राखया तो पण ते जालंधरने छेतरी भ्रष्टाचारी थई हती राजा आ वात सांभळी आश्चर्य तो पाम्यो पण तेणे निर्णय कर्यो के-मारे हवे एक शुद्ध शीयळवंत स्त्री साथे परणवुं अने ते सती स्त्रीने भोंयरामां राखीने हुं तेना सतीत्वनुं रक्षण करीश बाद सामंतरायनी तरतनी जन्मेली एक स्वरूपवंत कन्या साथे ते परण्यो राजमहेलमां एक गुप्त भोंयरुं बनाव्युं, तेमां तेने राखी अने धायमाताने पण तेनुं कार्य थई रह्या पछी विशेष बोलवा-चालवाना के बेसवाना निषेध कर्यो अनुक्रमे ते यौवनावस्था पामी अने पातालमां राखवाथी राजाए तेनुं पातालसुंदरी एवुं नाम राख्युं राजा तेनी साथे यथेच्छ विषयसुख भोगवे छे अने तेना निर्मळ शीयळथी संतोष पामे छे, बीजी राणी करतां तेनुं अधिक सन्मान साचवे छे, राजकाजमां विशेष ध्यान आपतो नथी, राजसभामां पण मोडो आवी वहेलो चाल्यो जाय छे

एक समय त्यां रत्नद्वीपनो अनंगदेव नामनो व्यापारी विशालापुरी आव्यो अने राजाने आमळा जेवडा मोतीनो एक महामूल्यवान हार भेट कर्यो राजाए तेनुं दाण माफ कर्युं एटले व्यापार करतां तेने करोडो सोनैयानो लाभ थयो ते नगरीमां तेणे पोतानुं मणिगृह बंधाव्युं अने राजानी कामपताका नामनी वेश्याने घणुं द्रव्य आपी वश करी एकदा सार्थवाहे कामपताकाने पूछ्युं के—हमणां राजा राजकार्यमां शिथिल मनवाळा केम जणाय छे? कामपताकाए कह्युं के—हुं कई विशेष जाणती नथी, परन्तु अंतःपुरमां एवी वात चाले छे के—राजा भोंयरामां राखेली एक रूपवती राणीना मोहमां पड्या छे, बीजी राणीओनी खबर पण लेतो नथी अने तेथी राजकाजमां पण मंदता आवी जणाय छे

अनंगदेवने पण पातालसुंदरी जोवानुं मन थयुं. जेणे सूर्यने पण देख्यो

नथी यथी ते राजकन्या केवी गुणवंती ने रूपाळी हशे ? लाग मळे तो मारे प्रेम पण करवा, एवो निर्णय करी अनंगदेवे प्रतिदिन विविध भेटणा धरी राजानु मन वश करी लीधु अने अन्तःपुरमा पण धवलो आव-जाव करी शके तेवो विश्वास संपादन करी लीधो क्रमे क्रमे भोंयरानु स्थान विगेरे जाणी लीधु बाद पोताना महेलथी भोंयरा सुधी एक सुरंग पण खोदावी एक दिवसे राजाना पाताळसुन्दरी पासेथी जवा बाद अनंगदेव सुरंगद्वारा त्यां गयो जुए छे तो पाताळसुन्दरी ऊभ छे तेनु स्वरूप जोई अनंगदेव घडीभर तो जाणे चित्रित होय तेम स्थिर थई गयो बाद तेनी पासे जई, कोमळ वचनथी बोलावी तेने प्रसन्न करी

कोई पण वखत राजा सिवाय अन्य पुरुषने जोयेल नहीं होवाथी पाताल-सुन्दरी अनंगदेवने जोता ज विस्मय पामी धीमे धीमे परिचय अने वार्तालाप थतां अनुराग वध्यो अने बन्ने परस्पर प्रेमी पण बन्या धीमे धीमे गाढ प्रेम जामता अनंगदेवनु मन शंका रहित बनी गयु पछी राजाना जवा बाद ते प्रतिदिन पातालसुन्दरी पासे जवा लाग्यो. एकदा पातालसुन्दरीए कह्यु के-मने तारा प्रासादे लई जई नगररचना देखाड अनंगदेव तेने पोताना आवासे लई गयो पातालसुन्दरी गवाक्षमां बेसी नगरचर्या जोवे छे तेवामा राजा पण हस्ती ऊपर बेसी आडम्बरपूर्वक उद्यानमा गयो तेने जोई पातालसुन्दरी विचारवा लागी के-मने केदीनी माफक भोंयरामां छानी राखे छे अने पोते यथेच्छ विहार करे छे राजाने पण हुं मारी चतुराई बतावु तो ज खरो आ प्रमाणे दृढ निर्णय करी पातालसुन्दरीए सार्थवाहने कह्यु के-राजाने तारा घरे जमवानु आमन्त्रण आप हु बधी रसोई तेने जाते ज पीरसीश तेनु कथन सांभळी अनंगदेव तो दिग्मूढ ज थई गयो अने अनंगदेव बोल्यो के-राजाने आमन्त्रण आपी तारे मने यमदेवनो अतिथि बनाववो छे के महाअनर्थ उत्पन्न करवो छे ? तेम पूछता पातालसुन्दरीए कह्यु-तु शा माटे भय पामे छे ? वाणियानी जात डरपोक कही छे ते खोटु नथी हु कहु छु तेम कर, नहिं तो तने पण मारे हाथ बताववो पडशे राजाने हुशियारी बहु ज अभिमान छे, माटे तेनु अभिमान उतारवु छे छेवटे सार्थवाहे राजाने आमन्त्रण आप्यु

पछी भोजनसमये पातालसुन्दरी पोतानी हम्मेशनी साडी पहेरी राजाने पीरसवा लागी राजानी तेना तरफ नजर जता ते विचारमा पडी गयो के-आ पातालसुन्दरी अहीं क्याथी ? हमणा ज हु भोंयरामांथी चाल्यो आवु छु अने अहीं पण तेने ज देखु छु तो आ शु ? पण आ तो पातालसुन्दरी जेवा स्वरूप वाळी अनंगदेवनी स्त्री हशे एम विचारी मन वाळ्यु बीजी वार पण ते ज पीरसवा आवी अने राजानु मन चकडोळे चढ्यु जमता जमता स्खलना थवा लागी पातालसुन्दरीथी कशु अजाण्यु न रह्यु त्रीजी वार ते पीरसवा आवता राजाए तेनी साडी ऊपर निशानी माटे कढीनो छांटो नाख्यो पातालसुन्दरी राजानी

कपटकळा समजी गई, पण जाणे कशु जाणती ज न होय तेम पीरसवा लागी हवे पातालसुन्दरीए राजानी पूरेपूरी मश्करी करवानो उपाय रच्यो

पोते एक थाळी लई राजानी बाजुमां बेठी अने कहेवा लागी-हे राजन्! आ समयानी वस्तु केम जमता नथी खरी वात तो ए छे के-वाणियाना घरनु भोजन राजाने फावती नथी ने? पछी अनगदेवनी सामु जोई कहेवा लागी-अमारा घरमा रहेली बधी वस्तु छे के-राजा तेने जोईने आश्चर्यमा डूबी गया छे! राजा बराबर जमता नथी अने विचारमा बराबर तल्लीन थई गया होय तेम जणाय छे. पीरसेलु भोजन पण हजु तेमनु तेम ज पडेल छे पण हा, हु खरेखर भूली गई मोटा पुरुषने भूख ज बहु अल्प होय छे आ प्रमाणे मोटी मश्करी करी शीतळ जळ आप्युं राजा पण मुखवास लईने पातालसुन्दरीनी उपासना विचारमां ने विचारमा जल्दी अन्त पुरमां गयो

पातालसुंदरी पण कढीना छांटावाळी साडी बदलावी, तेना जेवी ज बीजी साडी पहेरी, सुरंगद्वारा भोयरामां आवी सुई गई राजाए आवी जोयु तो पातालसुन्दरी घोर निद्रामा ऊंघती हती साडीनो पालव जोयो तो कढीनो डाघो पण न मळे एटले निर्णय कर्यो के-पातालसुन्दरी जेवी अनगदेवनी पत्नी पण हशे पछी पातालसुन्दरीने जगाडतां ते पण कपटपूर्वक जाणे गाढ निद्रामांथी उठी होय तेम आळस मरडी, राजानी साथे पूर्वनी पेठे भोगविलास करवा लागी खरेखर आ जगतमां स्त्रीचरित्रनो पार कोण पाम्यु छे?

बाद पातालसुन्दरीए सार्थवाहने कह्यु के-आपणे हवे आ देशमां रहेवु नथी, माटे स्वदेश जवानी तैयारी करो, हु पण साथे आवु छु सार्थवाह तो पातालसुन्दरीनी वात सांभळी हरखवा लाग्यो पोताना प्रपंच खुल्लो थई जवानी अने साथोसाथ मृत्युदंडनी भीति पण जणाई पातालसुन्दरीए कह्युं के-तमे डरो नहीं हु कहुं तेम करो सर्व लेण-देण सरखेरु करो, व्यापार ओछो करी नाखो अने वहाणो तैयार राखो अमारा पिताना घरनो पत्र आव्यो छे एम जणावी अत्यारथी ज राजा पासे रजा मागो निरुपाये अनंगदेवे ते प्रमाणे कर्युं राजाए घणो आग्रह कर्यो परन्तु अनगदेव तो पातालसुंदरीना वचनथी बंधायेल हता अतीव स्नेहना बदलामा राजाए कइक मागवानु कहेतां तेणे जणाव्यु के-मारी पासे धन, धान्य विगेरे अखूट छे जो तमे समुद्रकांठा सुधी मने वळावा आवो तो आ देशमा अने परदेशमां पण मारी प्रतिष्ठा वधे राजाए ते कबूल कर्युं

पछी शुभ मुहूर्ते प्रयाण नक्की थयु राजा, अनगदेव अने पातालसुंदरी त्रणे पालखीओ समुद्र तरफ रवाना थई पातालसुन्दरीए पोतानी पालखी राजानी पालखी पासे रखावी अने तेमनी साथे वातचीत शरू करी हे राजन्! आपना प्रसादथी मारा स्वामीए घणु धन पेदा कर्युं छे अमे रातदिवस आपने भूली शकता नथी, पण कोई वखत आ सेवकने संभारजो राजाने अमारा जेवा वाणिया

भगवन्ते तेमने पांच सो साधुओना आचार्य तरीके स्थाप्या. शास्त्राध्ययन करी स्कन्दक मुनि गीतार्थ बन्या

एकदा तेमणे श्रीमुनिसुव्रतस्वामी पासे पोतानी बहेन तथा बनेवीने प्रतिबोधवा जवा माटे आज्ञा मागी त्यारे परमात्माए कह्यु के-त्यां जवाथी तमने उपसर्ग थशे स्कन्दक मुनिए पूछयु के-विराधक थशे के आराधक ? भगवन्ते कह्यु के-तमारा सिवाय सर्व मुनि आराधक थशे फक्त एक तमो ज विराधक थशो मारा सिवाय सर्वेनुं कल्याण सधातु होय तो सारु एम विचारी स्कन्दक मुनि तो पांच सो मुनिना परिवारयुक्त विहार करवा लाग्या आ बाजु पालक पुरोहितने आ वातना समाचार मळतां ज तेणे पोताना पूर्वना वैरनो बदलो लेवानी युक्ति रची नगरनो बहार अग नामनु उद्यान हतु तेमां पांच सो शस्त्रो गुप्त रीते संताडाव्या नगरनी समीप आवी पहोंचेला स्कन्दक मुनिए ते ज उद्यानमां वास कर्यो नगरमा समाचार मळतां ज पौरजनो वांदवा गया पुरंदरयशा पण अतीव आनन्द पामी मुनिने वांदी रत्नकम्बल वहोराव्यु

आ बाजु पालके राजाना कान भंभेर्या हे स्वामिन् ! आ स्कन्दक मुनि परिश्रम सहन करी शकता नथी दीक्षाथी कंटाळी गया छे पोताना राज्यमां कंइ पण कारी फावे तेम न होवाथी पांच सो सुभटो साथे आवी तमारु राज्य लइ लेवा मागे छे राजाए कह्यु के-तने आ वातनी खबर केम पडी ? पालके कह्यु के-तमने मारी नाखवा माटे साधुओना रूपमा सुभटो साथे लाव्या छे अने शस्त्रो उद्यानमा गुप्त रीते संताडया छ राजाए तपास करावी तो पालके पोते ज गुप्त रीते मुकावेला शस्त्रो मळी आव्या एटले दंडक राजाने अतिशय क्रोध थयो अने तेणे आवेशमां ने आवेशमा पालकने आज्ञा आपी के-हे पालक ! ते दुष्टोने तने उचित लागे ते शिक्षा कर "आईतु हतु ने वैद्ये कह्यु" ए उक्तिनी माफक पालकने मनगमतु मळी गयु

तरत ज तेणे शेरडी पीलवानी घाणी मगावी स्कन्दक मुनिने एक स्थंभ साथे बांध्या, अने एक पछी एक चेलाने घाणीमा तल पीले तेम पीलवा माड्या स्कन्दक पालकने कह्यु के-प्रथम मने पीली नाख, पण पालकने तो तेमने पूरेपूरु कष्ट उपजाववु हतु एटले एक पछी एक शिष्याने पीलवा माड्या स्कन्दक मुनि दरेक शिष्योने कहेवा लाग्या के-हे मुनिवरो ! परीषह सहन करवो ए साधुनु कर्तव्य छे समताभावे परीषह सहन करजो वगेरे तेने आलोयण आपी अणशण कराववा लाग्या आ प्रमाणे ४९९ शिष्याने पीली नाख्या छवटे एक बाल शिष्यनो वारो आव्या आ लघुशिष्यना घात जोवा स्कन्दक मुनि माटे दुःसह हतो एटले तेमणे पालकने कह्यु-हवे, मने पीली नाख, पछी आ लघुशिष्यनो वारो काढ पण पालकने तो कोइ पण प्रकारे स्कन्दक मुनिने पीडा ज उपजाववी हती, एटले तेमना कथन दरकार न करी लघुशिष्यने ज पीली नाख्या. हवे ते कारणे

छतां पण जे गच्छमां आवा प्रकारनो निषेध न होय ते गच्छ कहेवातो ज नथी, परन्तु स्त्री-साम्राज्य ज कहेवाय छे श्रीओघनिर्युक्तिनी १९८-१९९मी गाथानी वृत्तिमां कह्युं छे के-साधुए उपाश्रयमां मांडली करवी, उपाश्रय न मळे तो शून्य गृहमां, देवना देरामां अथवा उद्यानमां करवी ज्यां लोकोनुं आवागमन न होय शून्य घरमां कोई गृहस्थ आवतो जणाय तो आडो पडदो करवो तेवो पण योग न मळे तो अरण्यमां निर्जन स्थळे जवुं अने अरण्य पण भययुक्त होय तो गुप्तस्थान शोधवुं संक्षिप्तमां कहेवानो सार ए छे के-कोई पण प्रकारे साध्वीनो परिचय न वधारवो हवे कषायत्याग संबंधी दर्शावे छे—

जत्थ मुणीण कसाया, जगडिज्जंता वि परकसाएहिं ।
नेच्छन्ति समुट्ठेउं, सुनिविट्ठो पंगुलो चेव ॥ ९७ ॥

[यत्र मुनीनां कषायाः, उदीर्यमाणा अपि परकषायैः ।
नेच्छन्ति समुत्थातुं, सुनिविष्टः पंगुलः चेव ॥ ९७ ॥]

गाथार्थ-सुखपूर्वक बेठेल पांगळा माणसनी माफक जे मुनिना कषायो बीजाओना क्रोधादिक कषायोवडे उद्दीपन कराया छतां उदय पामता नथी तेने हे गौतम ! गच्छ जाणवो.

विवेचन—पांगळो सुखपूर्वक बेठो होय त्यांथी पोतानी मेळे ऊभो न थाय तेम जे मुनिना कषायो बीजाना चलाव्या न चळे-उदयमान न थाय ते साधु ज खरेखर सत्पुरुष छे अने तेवा साधुओना वसवाटवाळो गच्छ ज सुगच्छ छे आ बाबतमां ग्रंथकार (१) स्कंदकाचार्यना शिष्यो (२) अर्जुनमाळी अने (३) दमदंत मुनिना दृष्टांतो आपे छे

स्कंदकाचार्यना शिष्योनुं दृष्टांत—

चंपा नगरीमां खंधक (स्कंदक) नामना राजाने पुरंदरयशा नामनी बहेन हती, तेने कुंभकारकड नगरना राजवी दंडक साथे परणावी हती ते दंडक राजाने पालक नामना मिथ्यात्वी पुरोहित हता ते एकदा दूत बनीने चंपा नगरीए आव्यो अने राजसभामां जैन धर्म तेम ज साधुओनो अवर्णवाद बोलवा लाग्यो खंधके पोते तेनी साथे वाद करी तेने परास्त कर्यो पालक अत्यंत क्रोधायित थई पोताना नगरे पाछो आव्यो तेना मनमां वेरनी ज्वाळा बळती हती खंधकनो बदलो लेवानो तेणे नक्की मनसूबो कर्यो

खंधके योग्य अवसरे वैराग्य-वासित थई, पुत्रने राज्य सोंपी श्रीमुनिसुव्रत स्वामी पासे प्रव्रज्या लीधी पांच सो व्यक्तिओए तेमनी साथे दीक्षा लीधी

भगवन्ते तेमने पांच सो साधुओना आचार्य तरीके स्थाप्या. शास्त्राध्ययन करी स्कन्दक मुनि गीतार्थ बन्या

एकदा तेमणे श्रीमुनिसुव्रतस्वामी पासे पोतानी बहेन तथा बनेवीने प्रतिबोधवा जवा माटे आज्ञा मागी त्यारे परमात्माए कह्यु के-त्यां जवाथी तमने उपसर्ग थशे स्कन्दक मुनिए पूछयु के-विराधक थशो के आराधक? भगवन्ते कह्यु के-तमारा सिवाय सर्व मुनि आराधक थशे फक्त एक तमो ज विराधक थशो मारा सिवाय सर्वनु कल्याण थवानु होय तो सारु एम विचारी स्कन्दक मुनि तो पांच सो मुनिना परिवारयुक्त विहार करवा लाग्या आ बाजु पालक पुरोहितने आ वातना समाचार मळता ज तेणे पोताना पूर्वना वैरनो बदलो लेवानी युक्ति रची नगरनो बहार अग नामनु उद्यान हतु तेमा पांच सो शस्त्रो गुप्त रीते संताडाव्या नगरनी समीप आवी पहोंचेला स्कन्दक मुनिए ते ज उद्यानमा वास कर्यो नगरमा समाचार मळता ज पौरजनो वांदवा गया पुरंदरयशा पण अतीव आनन्द पामी मुनिने वांदी स्वस्थानके पहोंच्यु

आ बाजु पालके राजाना कान भंभेर्या हे स्वामिन्! आ स्कन्दक मुनि परिश्रम सहन करी शकता नथी दीक्षाथी कंटाळी गया छे पोताना राज्यमा कई पण कारी फावे तेम न होवाथी पांच सो सुभटो साथे आवी तमारु राज्य लई लेवा मागे छे राजाए कह्यु के-तने आ वातनी खबर केम पडी? पालके कह्यु के-तमने मारी नाखवा माटे साधुओना रूपमा सुभटो साथे लाव्या छे अने शस्त्रो उद्यानमा गुप्त रीते संताड्या छे राजाए तपास करावी तो पालक पोते ज गुप्त रीते मुकावेला शस्त्रो मळी आव्या एटले दंडक राजाने अतिशय क्रोध थयो अने तेना आवेशमा ने आवेशमा पालकने आज्ञा आपी के-हे पालक! ते दुष्टोने तने उचित लागे ते शिक्षा कर "जोईतु हतु ने वैद्ये कह्यु" ए उक्तिनी माफक पालकने मनगमतु मळी गयु

तरत ज तेणे मोलडी पीलवानी घाणी मगावी स्कन्दक मुनिने एक स्थंभ साथे बांध्या, अने एक पछी एक चेलाने घाणीमा तल पीले तेम पीलवा मांड्या स्कन्दक पालकने कह्यु के-सौप्रथम मने पीली नाख, पण पालकने तो तेमने पूरेपूरु कष्ट उपजाववु हतु एटले एक पछी एक शिष्यने पीलवा मांड्या स्कन्दक मुनि दरेक शिष्योने कहेवा लाग्या के-हे मुनिवरो! परीषह सहन करवो ए साधुनु कर्तव्य छे समताभाव परीषह सहन करजो बाद तेने आलोयण आपी अणशण कराववा लाग्या आ प्रमाणे ४९९ शिष्योने पीली नाख्या छेवटे एक बाल शिष्यनो वारो आव्यो आ लघुशिष्यनो घात जोवो स्कन्दक मुनि माटे दुःसह्य हतो एटले तेमणे पालकने कह्यु-हवे मने पीली नाख, पछी आ लघुशिष्यनो वारो बाद पण पालकने तो कोई पण प्रकारे स्कन्दक मुनिने पीडा ज उपजाववी हती, एटले तेमना कथननो दरकार न करी लघुशिष्यने ज पीली नाख्यो हवे ते कारणे

स्कन्दक मुनिना क्रोध मर्यादामा न रह्या तेमणे नियाणु कर्युं के-मारा चारित्रनु फल होय तो हु राजा प्रमुख सव नगरनो नाश करनार थउ छेवटे पालके तेमन पण पोला नाख्या स्कदक मुनि मृत्यु पामी अग्निकुमार देव थया

एकदा बपोरना समये पुरन्दरयशा विचारवा लागी के-मुनिओ हजु गोचरी माटे केम न निकळ्या ? तेवामा स्क दक मुनिना लाहीथी खरडायेलो ओघो, कोइ पक्षीए मास समजीने उपाडेल ते वजन न उपाडी शकवाथी, महेलनी अगाशीमा ज पडता मूच्छा पुरन्दरयशा आ दृश्य निहाळी रडवा लागी सर्व हकीकत जणाता तेणे राजाने कह्यु व-तमारा विनाश नजीक छे हवे मारे तो चारित्र स्वीकारवु ए ज श्रेयस्कर छे तवामा अग्निकुमार देव त्या आव्या अने पोतानी बहेनने, श्री मुनिसुव्रत पासे परिवार सहित मूकी अने नगरमा सवर्तक वायु ने अग्नि प्रगटाव्या सव नगर बळीने भस्म थइ गयु आजे पण त दडकारण्यना नामे प्रसिद्ध छ त जमीनमा कई पण फळ-झाड ऊगता नथी आ कथानो सार ए छ क-स्क दक मुनि विराधक थया पण तमना पाच सो शिष्यो आराधक थाय तेम साधुए क्रोधना निमित्तो मळे तो पण कदी पण कषायभाव धारण करवा नहीं

अर्जुनमालीनी कथा—

राजगृही नगरीमा श्रेणिक राजा राज्य करता चेलणा नामनी तेमनी राणी हती अर्जुन नामनो माली त नगरीमा वसतो तेने पण बधुमती नामनी पत्नी हती नगरीनी बहार गुणशील नामनु चैत्य हतु बधुमती रूपवत अने सुकुमाळ हती अर्जुन सुखी सपत्तिशाळी अन ज्ञातिमा प्रतिष्ठापात्र हता नगरीनी बहार तना एक मोटो बगीचा हतो ते बगाचाथी बहु नजीक नहीं तेमज बहु दूर पण नहीं तवा स्थानमा मोगरपाणी नामना यक्षनु देवळ हतु आ यक्ष तना गोत्र देव हता पेढी दर पढीथी तना पूर्वजो तनी पूजा-मानता करता अर्जुनमाळी पण पुष्पना मोटा करंडियो भरी, यक्षना दरे आवी, भक्तिथी पुष्प चढावी, पचांग प्रणिपात करी नगरीमा जतो अने पु पो वेची आजीविका चलावतो

त राजगृही नगरीमा ललिय नामनी गोठी (धूर्त) वसता हता ते मह-र्द्धिक तम ज पापथी गाज्या न जाय तवा हता एकदा नगरीमा महामहोत्सव शरू थवाना पडहो वाग्या, जे सामळी अर्जुनमालीए विचार्यु के—हवे फूलोनी घराकी सारी रहश पटल मोटा मोटा करंडिया लइ, बधुमती पत्नीने साथे लई त पोताना बगीचे गया मोटा मोटा पुष्पो एकत्र कर्या, करंडिया भरी ते मोगरपाणी यक्षना मदिर तरफ आववा लाग्या आ बाजु पेला ललिय पोताना बीजा छ मित्रो साथे यक्षना मंदिरमा आवी रमत रमी रह्या छ तवामां पेला छ मित्राए अर्जुनने पोतानी भार्या साथे आवतो जोयो, बधुमतीने निरखतां ज ते बधाना मन विह्वळ बनी गया अने परस्पर विचारवा लाग्या क-आपणे बधाए अर्जुनने बांधीने तेनी स्त्री साथे न्यारा पेठे भोग भोगवशो, एम विचार करी तओ

द्वारनी पाछळ संताई गया. अर्जुने मंदिरमां दाखल थई, पुष्प चढावी तेने प्रणाम कर्यो के तरत ज ते छ मित्राए पाछळथी आवी तेने अवळे बंधने बांधी लीधो. पछी बंधुमती साथे ते मंदिरमां ज विषयसुख भोगव्युं. आ दृश्य निहाळी अर्जुनने अतीव घृणा उपजी. ते विचारवा लाग्यो के—आ यक्षने हाजराहजुर अने प्रभाविक मानी हुं अत्यार सुधी भक्तिभावथी पूजतो हतो परन्तु मने जणाय छे के आ मूर्ति तो पत्थर सदृश ज छे. काई पण चमत्कारिक नथी. जो तेनामां देवत्व होत तो मने तेना शरीरमां आवुं कष्ट केम पडे? मोगरपाणी यक्षे अर्जुनना विचार जाणी लीधो. पहेले ते तरत ज तेना शरीरमां दाखल थई गया. तडतड करता तेना बंधनो तूटी गया अने हजार पल प्रमाण मोगर(गदा) वडे ते छ मित्राने अने सातमी पोतानी स्त्रीने मारी नाख्यो. बाद ते यक्षावेष्टित अर्जुनमाळी हमेशां छ पुरुष अने एक स्त्री एम सात जणने नगरीनी बहार मारी नाखवा लाग्या. नगरीमां त्रास फेलाई गयो. हमेशां आ प्रमाण मृत्यु थतां होवाथी राजाए नगरमां पडह वगडाव्यो के कोईए पण तृण, पाणी के काष्ठ माटे नगरीनी बहार जवुं नहीं, जशे ते यमना अतिथि बनशे.

ते नगरीमां सुदर्शन नामनो श्रेष्ठी वसतो हतो. ते जीवाजीवादिक नव तत्त्वनो ज्ञाता हतो. शुद्ध देव, गुरु अने धर्म ऊपर अत्यंत श्रद्धावाळो हतो. ते नगरीना गुणशील नामना उद्यानमां श्रीमहावीर परमात्मा समवसर्या. परमात्मानुं नाम सांभळवा मात्रथी पाप नाश पामे तो तेओनी देशना सांभळवाथी केवो अपूर्व लाभ थाय? एम विचारी सुदर्शन श्रेष्ठीए परमात्माने वांदवा जवा माटे तैयारी करी. ते जाणी सुदर्शनना मात-पिताए नगरीनी बहार जवा माटे घणा आग्रहपूर्वक निषेध कर्यो, कारण के अर्जुनमाळीनो भय हतो. सुदर्शनने घणो समजाव्या छतां तेणे पोतानो निश्चय त्यज्यो नहीं, एटले मातपिताए निरुपाये आज्ञा आपी, त्यारे स्नान करी, शुद्ध वस्त्र पहेरी, पग चालतां सुदर्शन नगरनी बहार नीकळी गुणशील उद्यान तरफ चालतां चालतां मोगरपाणी यक्षना मंदिर नजीक आव्या. आ यक्षना त्रासथी नगरीनी बहारनी भूमि उज्जड थई गई हती, कारण के यमनी नजरे जे कोई चढतुं ते पोताना नाशने ज नोतरतुं. घणा समय पछी सुदर्शनने आवतां जोई यक्ष पोतानी गदा उछाळतो-उछाळतो सुदर्शन तरफ आव्यो. यक्षने आवतो जोई सुदर्शन श्रावक अंशमात्र भय के कंप अनुभव्या सिवाय उपसर्ग-सहन करवाने तैयारी करी अने ते स्थळे ऊभा रह्या, सागारिक अणशण स्वीकार्युं 'आ उपसर्गमांथी बचुं त्यारे ज कायोत्सर्ग पारुं नहींतर मारे यावज्जीव चारे आहार तेमज प्राणातिपातादि अढारे पापस्थानकोना पच्चक्खाण छे.' सुदर्शनना श्रेष्ठ भावनाथी यक्ष तेने कंई पण उपद्रव करवा शक्तिमान थयो नहीं. हजार पळ प्रमाण गदा लईने कायोत्सर्गमां रहेला श्रेष्ठीनी आसपास

चारे बाजु फरवा लाग्यो श्रेष्ठी काउसग्ग-ध्यानमा दृढ ज हता छेवटे यक्ष थाकी, अर्जुनमालीना शरीरमांथी निकळी, पोतानी गदा लई जे दिशामांथी आव्यो हतो ते दिशामां चाल्यो गयो, एटले अर्जुनमालीनो देह तरत ज भूमि उपर पड्यो ते पश्चाद् मुहूर्त पछी सचेतन थया उपद्रव नाश पाम्यो जाणी सुदर्शने काउस्सग्ग पार्या त्यारे अर्जुने तेने पूछ्यु के-हे देवानुप्रिय ! तमे कोण छो ? क्याथी आव्या ? अने कई तरफ जाओ छो ? त्यारे सुदर्शने सर्व हकीकत आदिथी कही संभळावता अर्जुने पण कह्यु के-चालो, हु पण तमारी साथे भगवंत पासे आवु छु भगवंतनी ते अमृतवाहिनी ने वैराग्यवासिनी धर्मदेशना सांभळी अर्जुनने पोताना कृत्यनो पश्चात्ताप थयो देशना सांभळी सर्व लोको यथास्थाने गया पछी तेणे भगवंत पासे आवी नम्रतापूर्वक दीक्षा आपवा प्रार्थना करी बाद उत्तर दिशामां जई पंचमुष्टि लोच कर्यो अने साधु-जीवन शरू कर्यु प्रभुए तेने साधु-धर्म उचित शिक्षा आपी

दीक्षा स्वीकारी ते दिवसथी ज अर्जुनमालीए परमात्मा पासे अभिग्रह धारण कर्यो के-छट्ठ-छट्ठनी तपश्चर्या करवी आ प्रमाण यावज्जीव महातपश्चर्या शरू करी छट्ठना पारणाना दिवसे पहेली पोरसीमां स्वाध्याय करे, बीजीमां ध्यान धरे अने त्रीजीमां पात्रानी पडिलेहणा करी, गौतमस्वामी तथा भगवंतनी आज्ञा लई ईर्यासमितिपूर्वक नगरीमां गोचरीए जाय नगरीमां गोचरी अर्थे परिभ्रमण करता लोको कहेता के-आ मुनिए मारा पिताने हण्या छे, कोई कहेता के मारी स्त्रीने हणी छे, एवी रीते विविध लोको पोतानी पुत्री, बहेन, पौत्र, भाई विगेरे स्वजनना नामो उच्चारी तेना घातक तरीके अर्जुनमाली मुनिने ओळखावता केटलाक युवान तथा उछाछळा पुरुषो, लघु बाळको द्वारा मुनिनी पाछळ पथरा पण उछळावता, छता अर्जुनमाली मुनिवर सर्व समभावे सहन करी गोचरी अर्थे परिभ्रमण करता शुद्ध एषणीय गोचरी मळती ते लावीने, भगवंतने के गौतमस्वामीने बतावीने आहार करता अने पाछा पोताना स्वाध्यायमां तल्लीन बनी जता जो गोचरी न मळता तो तप करता आ प्रमाण प्रतिदिनना व्यवहारथी अर्जुनमालीनु चारित्र शुद्ध अने निष्कलंक थयु थोडा समय पछी परमात्मा अन्यत्र विहार करी गया अर्जुनमाली मुनि पण छ मास पर्यन्त साध्वाचार पाळी छेल्ले पखवाडीयानु अणशण स्वीकारी अंतकृत्केवळी थई मोक्षगामी थया

जेवी रीते अर्जुनमालीए पौरजनोना अपवाद सहन कर्या, अने परीषह पण सारी पेठ सहन कर्या तेवी ज रीते जे मुनिवर प्रसंग पण क्षमापूर्वक उपशमावे तेवा साधुवाळा गच्छने ज सुगच्छ जाणवो

दमदंत राजर्षिनी कथा—

हस्तिशीर्ष नगरमां दमदंत नामना राजवी हता तेमना अतुल प्रतापथी तेमनी कीर्ति दिगंतमां फेलाणी हती संग्राममां पोताना शत्रु राजाओना हस्तीओना गण्डस्थल फाडी नाखवाथी तेणे पोतानु नाम सार्थक कर्यु हतु. एक वखत

अधिपति प्रतिवासुदेव जरासंधे तेने सेवामां बोलाव्यो होवाथी ते राजगृही नगरीए गया तेथामां लाग जोईने पांडवोए तेना राज्यप्रदेश लूटी लीधो आ समाचार दमदंतने मळतां ज तेणे मोटुं सैन्य लई, लवणसमुद्र जेम जंबूद्वीपने फरी वळे तेम हस्तिनापुर नगरने घेरी लीधुं पांडवो सामे युद्ध करवा आव्यो शक्या नहीं दमदंते दूत मोकली कहेवराव्युं के-तमे तो कायरना जेवुं काम कर्युं छे, कारण के कह्युं छे के-" छलमुचिय कीवाण, कीवाणय घणियविरहिए ठाणे। बलवताण नराण, न एम मग्गो सुवसाण ॥ १ ॥ " स्वामी विनाना प्रदेशमां आवी तेने लूटवुं ए कायरोनुं काम छे जे शूरवीर होय छे अने श्रेष्ठकुळमां उत्पन्न थयेल छे तेनो आ मार्ग नथी-ते तो सिंह सामे वाघ भीडे मारी गेरहाजरीमां तमे मारो प्रदेश लूट्यो ते तो शियाळना जेवुं काम कर्युं खरेखरा शूरवीर हो तो मारी सामे संग्राम करो पांडवो पटला बधा भयभीत बनी गया हता के नगरनो किल्लो बंध करीने अंदर बेसी गया

दमदंते घणा वखत सुधी घेरो घाल्यो, छेवटे तेओना राज्यप्रदेशमां आण वर्तावीने पोताना नगरे पाछो वळ्यो नीतिपूर्वक राज्य चलावता केटलाक समय बाद ते नगरमां श्रीनेमिनाथ भगवतना शिष्य श्रीधर्मघोषसूरि पधार्या तेमनी सुरम्य वैराग्यमय अने असरकारक देशना सांभळी दमदंत राजवीने ज्ञानगर्भित वैराग्य उद्भव्यो, तेथी तेमणे दीक्षा लीधी शास्त्राभ्यास करी तेओ गीतार्थ थया तपश्चर्या तपी राजर्षि खरेखरा तपस्वी पण थया तेमनो समभाव परा काष्ठाए पहोंच्यो हतो तेओ विहार करता करता एकदा हस्तिनापुर नगरनी बहारना उद्यानमां आवी काउसग्ग ध्याने ऊभा रह्या

पवामां पांडवो रयवाडीना अर्थे निकळ्या दमदंत मुनीश्वरने जोतां ज युधि[illegible] हस्ती उपरथी नीचे ऊतर्या अने भावपूर्वक वंदन कर्युं थोडा वखत बाद दुर्यो-धन पण पोताना परिवार साथे त्यां आ रा मुनिने जोतां ज तेने द्वेष [illegible] थयो 'आ मुनिए ज मारा बाप-दादानी आबरु नष्ट करी हती ' एम [illegible] रोषमां ने रोषमां तेणे पोताना हाथमां रहेल बीजोरुं फेंक्युं [illegible] करीने बीजा कौरवोए तेमज सैनिकोए ते मुनि प्रत्ये पत्थर आदि [illegible] पत्थरो मोटा ढग थई गया के दमदंत राजर्षि तेनी ओथे अंदर [illegible] थोडो समय वीत्या बाद युधिष्ठिर ए ज रस्ते पाछा फर्या [illegible] स्थाने तेमने न जोतां युधिष्ठिरे पोताना सैनिकने [illegible] राजर्षि काउसग्ग ध्यानमां ऊभा हता ते क्यां गया? अने [illegible] क्याथी? सैनिके दुर्योधन संबंधी सर्व हकीकत [illegible] युधिष्ठिरने अतिशय दुःख थयुं तेमणे तरत ज पोताना [illegible] दूर करवा आदेश फरमाव्यो बाद अत्यंत चतुर [illegible] आपी, मुनिना शरीरे मर्दन कराव्युं तेमज [illegible] वंदन करी पांडवो स्वस्थाने गया

पाडवो अने कौरवोए पोतपोताने उचित वर्तन कर्युं परन्तु दमदत्त राजर्षि ते न पाडवो उपर राग प्रगट्यो के न कौरव प्रत्ये द्वेष उपज्यो तेओ तो विचारता हता के-" एगो मे सासओ अप्पा, नाणदसणसजुओ । सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे सजोगलक्खणा ॥ १ ॥ " मारो आत्मा शाश्वत छे, ज्ञान-दर्शनथी युक्त छे, आ देह मारो नथी, ए तो सर्व सयोग लक्षण छे, कर्मना कारण छे आ प्रमाणे विशुद्ध आत्मभाव भावता, सवेग रगमा निमग्न थता क्षपकश्रेणीए आरुढ थइ केवळज्ञान पामी शिवगतिना सुखभाजन थया

दमदत्त राजर्षिनी पेठे जेओ समभावमा रहे, शत्रु प्रत्ये वैरभाव न धरे अने मित्र प्रत्ये अनुराग न दर्शावे तथा मुनिओवाळो गच्छ ज सुगच्छ कहेवाय वळी पण कहे छे के—

धम्मंतरायभीए, भीए संसारगब्भवसहीणं ।
न उदीरन्ति कसाए, मुणी मुणीणं तय गच्छम् ॥९८॥

[धर्मान्तरायभीता, भीताः ससारगर्भवसतिभ्यः ।
नोदीरयन्ति कषायान्, मुनयो मुनीना सको गच्छः ॥ ९८ ॥]

गाथार्थ-सर्वज्ञकथित धर्मना अतरायथी बीता तेमज ससारभ्रमण अने गर्भावासना त्रासथी भयभीत बनता मुनिजनो जे गच्छमा कषायोने उदीरता नथी-जागृत करता नथी ते गच्छ ज सत्य जाणवो.

विवेचन-अगाउना विवेचनथी आपणे जाणी शक्या छीए के-आ ससार-भ्रमणनु मूळ कारण क्रोधादि कषायो छे कषायो पण छूपा चोर छे के तेने जाणी शकवा पण मुश्केल छे चोर कोइ पण जातनी चोरी करी जाय तो तरत ज खबर पडे छे के-आपणा अमुक पदार्थोनी चोरी थइ, पण आ कषायो एवा गुढ चोर छे के-आपणु केंगु करेलु आत्मधन तेओ चोरी गया तेनी खबर ज पडवा देता नथी, तेथी ज शास्त्रकार फरमावे छे के-आवा छूपा चोरथी सर्वदा सावचेत रहो आधना विषयमा चडकौशिक सर्पनु दृष्टान्त अगाउ (पृ १६७) आपणे जाणी गया छीए क्रोध मानना सबधमा अचकारी भट्टानु वृत्तात जाणवा योग्य छे

क्रोध-मानविषये अचकारी भट्टानी कथा—

क्षितिप्रतिष्ठित नगरमा जितशत्रु नामनो राजा हतो सुबुद्धि नामनो तेनो प्रधान हतो धारणी नामनी राणी हती धन नामना ते नगरीमा श्रेष्ठी हतो तेने भद्रा नामनी पत्नीथी नवलीभट्टा नामनी पुत्री थई नवलीभट्टा श्रेष्ठीने अतीव प्रिय हती तेथी तणे पोताना स्वजनवर्गने कह्यु के-नवलीभट्टाने कोइए

अज्ञानपणु दर्शाव्युं त्यारे गुरुए आर्याने पूछयु तेणे जेवी हती तेवी हकीकत कही पटले गुरुए कह्यु–भद्रे! पण न करवु आर्याए मिथ्या दुष्कृत आप्यो, परन्तु पाछुरथी लोकोना आदर-सत्कार विना रही शकायु नहीं पटले बीजी वार, त्रीजी वार वशीकरण विद्यानु आह्वान कर्युं गुरुए निषेध करवाथी त्रण वार आलोचना लीधी चोथी वार पाछा विद्यानो उपयोग कर्या अने गुरुए कारण पूछ्यु त्यारे गुरु हवे जरूर ठपको आपशे तथा भयथी कपट करी पाछुरे जवाब आप्यो क-लाओ ता पूर्वना अभ्यासथी चाल्या आवे छे हु कई विद्यानो प्रयोग करती नथी आ प्रमाण माया करी, आलोचना कर्या सिवाय कालधर्म पामवाथी सौधर्म देवलोकमा ऐरावण नामना देवनी अग्रमहिषी थई पुन भव जोई श्रीमहावीर भगवतने वांदवा आवी अने देशनाने अ त भगवान महावीर पासे हाथणी रूपे जई मोटा मोटा शब्दपूर्वक वातचीत करवा लागी आ दृश्य जोई श्रीगौतम स्वामीए भगवानने कारण पूछयु पटले भगवन्त तेना पूर्वभव कही सभळावी मायाना निषेध उपदेश्या

लोभ संबधमा आर्य मगुसूरिनी कथा—

आर्य मगु सारा शास्त्रज्ञाता हता आ उपरात तेमनी उपदेशक–शक्ति पण सारी हती विहार करता करता तेओ पोताना शिष्यपरिवार साथे मथुरा नगरीमा आव्या समर्थ साधु जाणी श्रावको तमने घृत विगरना स्वादिष्ट आहार वहोराववा लाग्या प्रतिदिन रसयुक्त आहार मळवाथी मगुसूरिनो रसगृद्धि वृद्धि पामी अन्यत्र विहार करवाना विचार पण तमने न आव्या साथेना शिष्यो गुरुनी आसक्ति जाणी गया पटले अन्यत्र विहार करी गया गुरु एकला रह्या तमनु वर्तन साधुधर्मने उचित न हतु छवट आलोचना विना कालधर्म पामवाथी अधोलोकमा व्यतर निकायमा उपज्या मथुरा नगरनी खाळना अधिष्ठायक यक्ष थया

कालयोग तेमना शिष्यो विहार करता करता पुन मथुरा नगरीमा आव्या तेओने यक्षमंदिर पासे थईने स्थंडिल भूमिए जवानु हतु तेओ प्रात काळे स्थंडिल जता निकळ्या त्यारे यक्षे पोतानी प्रतिमामा प्रविष्ट थई जीभ बहार काढी हलाववा माडी प्रतिमामा जीभ हालती जोई साधुओ आश्चर्य पाम्या तेओए तेनु कारण पूछता यक्षे पोताना पूर्वभव कही सभळाव्यो अने कह्यु क–हुं जिह्वाना लोलुपीपणाथी हु महोत्तम नरभव हारी गया अने व्य तर थयो तेम तमो पण आ रसगृद्धिमां आसक्त थशो तो मारी माफक पस्ताशो आ दृष्टातथी आपणने लोभनु दुष्परिणाम यथार्थ समजाशे

गच्छमा कोई साधु कोईनी साथे क्लेश-कंकास करता होय तो बीजा साधुए तेने रोकवा-समजाववा, समजावता छता न माने तो ते साधुने काढी मूकवा पण उपेक्षा न करवी, आ संबधमां नीचेनु दृष्टांत जाणवा योग्य छे—

भाई बाणी सर्व हकीकत कही एटले वैद्यने द्रव्य आपी, पोतानी बहेनने मुक्त करावी, पोताना नगरे लावी, अनेक औषधोपचार करावी पूर्ववत् बनावी प्रधान पण तेने पोताने घरे तेडी गया अने तेने गृहस्वामिनी बनावी पूर्ववत् गृहस्थाश्रम शरू कर्यो

अचकारी भट्टाए क्रोध तथा माननु प्रत्यक्ष फळ अनुभवी कदी पण क्रोध के मान न करवानो अभिग्रह कर्यो व्रत-नियमनी परीक्षा-कसोटी थाय त्यारे ज तेनी निश्चळता जणाय छे भट्टाए लक्ष औषधिवाळु अने लक्ष द्रव्यना मूल्य वाळु लक्षपाक तेल बनाव्यु हतु एक घडो लाख-लाख द्रव्यनी किंमतनो हतो दैवयोगे बे साधुओ औषधार्थ ते लेवा तेना गृहे आव्या भट्टाए पोतानी दासीने लक्षपाक तेलनो घडो लाववा आदेश कर्यो दासी लइने आवे छे तेवामा घडो फसकाइ पडथो अने तेल ढोळाइ गयु भट्टाए बीजो लाववा कह्यु तो बीजो पण फूटी गयो, त्रीजो पण फूटी गयो छता भट्टाए अंशमात्र दासी उपर क्रोध न कर्यो, कमके क्रोधना परिणाम ते स्वय अनुभवी चूकी हती छेवटे ते पोते ऊभी थइ, चोथो घडो लावी मुनिराजाने तेल वहोराव्यु

आ कथानो साराश ए छे के-अचकारी भट्टा जेवी श्राविकाए क्रोध तथा मानने हण्या तो साधुओए तो सर्वथा क्रोध मानने त्यजवा ज जोइए

माया संबंधी पाडुर आर्यानी कथा—

एक पासत्थी साध्वी विशेष उपकरण राखी शरीरनी शोभा करती धोइने श्वेत वस्त्र पहेरे एटले लोकोए तेनु पांडुर आर्या एवु नाम स्थाप्यु ते आर्या मत्र, तत्र, वशीकरण विगेरे विद्या जाणती लोकोने दोरा-धागा पण करी आपती, तेथी लोकोमा तेनी ख्याति विशेष हती लोको तेनु बहुमान करता अने मस्तक पण नमावता तेनी पासे लोको स्वार्थ साधवा माटे वारम्वार आव्या करता एटले लोकोना ससर्ग सारा प्रमाणमा रहेतो आ कार्य करता घणाय वर्षो व्यतीत थइ गया ते वृद्धा बनी गई तेने वैराग्य उद्भव्या एटले गुरु पासे गइ गुरु पासे तेणे पोताना दुष्कृत्यनी आलोचना मागी गुरुए कह्यु के-जो तु मन्त्र-तत्र विद्यादिक सर्वनो त्याग करे तो तने आलोयण आपु पांडुर आर्याए कह्यु के-हु दीर्घ समय दीक्षा पाळी शकीश नहि त्यारे गुरुए अमुक साधु-साध्वीने तेनी पासे राखी अणशण कराव्यु थोडा साधु-साध्वीने पोतानी पासे निहाळी ते आर्तध्यान करवा लागी पूर्वे सेंकडो माणसोने पोतानी पासे जोयेला अने ए रीते समय व्यतीत करेलो एटले तेने आ स्थितिमा आनद न आव्यो जेथी मानसिक रीते वशीकरण विद्यानु आह्वान कर्यु विद्याना प्रभावथी अल्प काळमा ज गाम-परगामना हजारो माणसो धूप, दीप लइ, आभूषणो तथा स्वच्छ वस्त्रो परिधान करी पांडुर आर्या पासे आववा लाग्या गुरुए पासे राखेला साधु-साध्वीने पूछ्यु-शु तमे लोकोने पांडुरना अणशणनी वात करी पोतानु तेडाए?

गाथार्थः—गुरु-ग्लानादिकनी वेयावच्चादिक कारणे के वगर कारणे पण मुनिओने जो कषायनो उदय आवे अने उदय आव्या पछी तेने रोके अने तदनन्तर खमावे तेने हे गौतम ! गच्छ जाणवो.

विवेचन—कषायो थवाना बे कारणो छे एक बाह्य कारण अने बीजुं आंतरिक पदल कर्मोदय बाह्य कारणमां कोइना कहेवाथी के विरुद्ध वर्तनथी कषायो थाय छे क्रोध, मान, माया अने लोभ—ए चार मुख्य कषायो छे तेना अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान अने संज्वलन ए चार प्रकारे दरेक कषायो गणतां सोळ कषायो थाय छे तेमां हास्य, रति, अरति, भय, शोक, जुगुप्सा (निंदा), पुरुषवेद, स्त्रीवेद अने नपुंसकवेद—ए नव नोकषाय मेळवतां कुल पचीश कषाय थाय छे ग्रंथकार कहे छे के—कषायोदय थवो ते स्वाभाविक छे पण उदयमां आव्या पछी तेने अटकाववा मिच्छामि दुक्कडं मागवो अने क्षमापना याचवी ए ज खरेखर कर्तव्य छे

क्षमापनानुं महत्त्व—

आत्मा अंगारा जेवो सदा प्रज्वलित छे अंगारा ओलवावा माटे—तेना ऊपर राख छवावा माटे त्यारे जो थोडो पवन नाखीए तो धीखता अंगारा ऊपरनी राख दूर थाय छे अने अंगारा पुनः सतेज बने छे कषायो ए आवरण (राख) सदृश छे जो तेने क्षमापनारूप पवन नाखीए तो ते कषायरूपी राख दूर थई आत्मारूपी अंगारानो अग्नि सतेज बने छे आ छे क्षमापनानुं मूल्य ने महत्त्व जो राखने दूर करवामां न आवे तो धीमे धीमे अंगारा बूझाई जाय छे तेवी रीते जो कषायरूपी राख दूर करवामां न आवे तो आत्मा सदंतर कषायोथी अवराई जाय, माटे कषायनो स्हेज पण प्रवेश थाय के तरत ज तेने हांकी काढवानो प्रयत्न करवो मात्र छूटीछवाई रज के मेल ज्यां लाग्यां होय त्यां स्हेज सावरणी फेरववाथी ते धूळ के रज शीघ्र दूर करी शकाय छे तेम कषायोदयनी कल्पना थतां ज तेने दूर करवा प्रयास करशो तो तमने बहु महेनत नहीं पडे

श्रीआराधनापयन्नामां अने ते ऊपरथी उपाध्याय श्रीविनयविजयजी महाराजे रचेला 'श्रीपुण्यप्रकाशना' स्तवनमां खामणानी अगत्य जणावी छे शिवगति प्राप्त करवाना तेमणे दश प्रकारो ते स्तवनमां जणाव्या छे, ते पैकी त्रीजुं स्थान क्षमापनाने आप्युं छे तओश्री ते स्तवनमां कहे छे—

जीव सवे खमावीए साहेलडी रे, योनि चोराशी लाख तो;
मनशुद्धे करो खामणा साहेलडी रे, कोई शुं रोष न राखवो. १

एक महाअटवीमा सुन्दर सरोवर हतु सरोवरमा पाणी पण पुष्कल हतु ते सरोवरनी आसपास सुन्दर वन हतु जलमा मत्स्यादिक जळचरो अने वनमा स्थलचरो तथा पक्षी विगेरे खेचरो रहेता हता हाथीओनु माटु टोळु पण ते वनमा वास करतु ग्रीष्म ऋतुना सख्त तापथी अकळाइ हाथीआनु टोळु सरोवरमाथी निकळी वृक्षनी छायामा सुतु हतु एवामा बे काकीडा (करकेटिया) थाडे दूर लडवा लाग्या ते वखते वनदेवताए बधा पशु-पक्षीओने उद्देशीने कह्यु के-आ वन काकीडाने लडता निवारो, पण देवनु काइए साभळ्यु नहीं पक्षीओए विचार्यु के-आपणे शु ? आपणने क्या मारवा आववाना छे ?

लडता लडता एक काकीडा भाग्या अने नाशीने सुतेला हाथीनी सुंढमा पेशी गयो तेनी पाछळ बीजा पण दाखल थइ गयो हाथीनी सुढमा पण बने लडवा लाग्या तथी हाथी अकळाणा वदना थवाथी ते हाथी पण क्रोधा वित थयो वृक्षाने मूळमाथी उखेडी नाखवा लाग्यो बीना हाथी पण भया वित बनी तेम करवा लाग्या, जेथी घणा वनचर जीवाना नाश थया पछी सरोवरमा हाथीओ पडया अने तेनी पाळ तोडी नाखी तेथी पण घणा जळचर जीवा नाश पाम्या

आ दृष्टातना उपनय आ प्रमाण जाणवा तळाव, वृक्ष विगेरेनी शाभा सरखा गच्छना आचार, जळचरादिक जीवा समान बाळ, वृद्ध तथा ग्लानादिक साधुओ, हस्ति समान मर्यादावत गीतार्थादिक साधु, काकीडा समान नीच के तुच्छ साधु, वनदेव समान आचार्य ते गीतार्थादिक सघने कहे छे के-कषाय-क्लेश न करवा सरोवरनी पाळ समान गच्छ-मर्यादा जाणवी काकीडाने काइम थावा नहा तो परिणाम महाहानिकारक आव्यु अने जळचर, स्थळचर अने खेचर प्रमुख घणा प्राणीओ विनाश पाम्या तेम जो लडता साधुने निवारवामा न आवे तो गच्छ-मर्यादाना नाश थाय अने चारित्र विनाश पामे

आ उपरात (१) साधुओ जो परस्पर लडे तो लोकोमा गच्छनो अपयश थाय, (२) गच्छभेदन अगर बन पक्षना साधुओ पैकी काइ राज-फरियाद करे तो राजदड थाय (३) कलह कर्या पछी मन सतापमा पडे, चिता रह्या करे, (४) समकितनी हानि थाय, (५) क्रोधादिकना वेग वधता जाय तेम तेम चारित्रनी नाश थाय आ सबधी विशेष विस्तार श्रीनिशीथचूर्णिना दशमा उद्देशामा छे

कारणमकारणेण अह, कहवि मुणीण उट्ठहि कसाए ।
उदएवि जत्थ रुंभहि, खामिज्जहि जत्थ तं गच्छम् ॥ ९९ ॥

[कारणेन अकारणेनाथ, कथमपि मुनीना उत्तिष्ठन्ति कषाया. ।
उदयेऽपि यत्र रुन्धन्ति, क्षमयन्ति यत्र स गच्छ. ॥ ९९ ॥]

मुख्य माणसने फरियाद करी त्यारे तेणे कह्यु-में पण सांभळ्युं हतुं के कुमार एक बळदथी ज गाडुं चलावतो हतो कुंभारे वारंवार कहेवा छतां पण बळद न मळ्यो एटले रोषे भराइने ते पोताने गाम चाल्यो गयो

वर्षाऋतु बाद खेतरमां धान्यना खळां तैयार थइ रह्यां हतां त्यारे कुंभारे दुरवग गाममां जइ रात्रिना ते बधाना खळां बाळी नाख्यां आ प्रमाणे सात वर्ष सुधी खळां बाळी नाख्यां दुरवग गामना लोको विचारमां पडी गया, पण कइ कारण न समजायु आठमा वर्षे ते गाममां मल्लयुद्धना महोत्सव थयो ते समये घणा गामना लोको एकत्र थया कुंभार पण गयो गामना डाह्या माणसे ते वखते पोताना माणसद्वारा घोषणा करावी के-अमोए कोइनो कइ पण अपराध कर्यो होय तो तेने खमावीए छीए अने अमोए कोईनुं कइ पण लीधुं हशे तो तेने पाछु आपीशु अमारु धान्य कोइए बाळ्युं नहीं घोषणा सांभळी कुंभारे ते ढोल पीटनारने कह्यु के-तुं आ प्रमाण घोषणा कर-
" अप्पिणह त बइल्लं, दुरुयगा! तस्स कुंभकारस्स। मा भे दिहिहो गाम, अन्नाण वि सत्त वासाणि ॥ १ ॥ " जो कुंभारनो बळद न लीधो होय तो सात वर्ष सुधी तमारु धान्य न बळत जो हजु पण बळद नहीं आपो तो बीजा सात वर्ष सुधी धान्य बाळीश गामना लोको समजी गया ते कुंभारने खमाव्यो अने बळद पण पाछो आपी दीधो

आ दृष्टान्तनो साराश ए छे के-असयती-अज्ञानी लोकोए खमाव्यो अने कुमार खम्या तो जेओ साधु छे, चारित्र लीधु छे तेओए तो अवश्य क्षमापना करवी ज जोईए

द्रुमकनु दृष्टान्त—

कोइएक दरिद्रीना दीकराए आसो मासमां धनिकना घरमां खीरनुं भोजन थतु निहाळी पोताना पिता पासे क्षीर मागी दरिद्री गाममां जइ दूध तथा चोखा मागी लाव्यो तेनी स्त्रीए क्षीर राधवा मांडी, दरमियान लाकडानो भारो लाववा ते खेतरे गया एटामां गाममां चार लोकोनी धाड पडी तेओए गाम लूटी लीधु आ दरिद्रीना घरे आवी खीरनो हाडो लइ लइ पोताना सेनापतिने आप्यो दरिद्री खेतरथी पाछो फरतां विचार छे के-आज तो दीकरा साथे बेसी क्षीर खाइश घरे आव्यो के तरत ज छोकरो रोवा लाग्यो तेनी पत्नीए सघ हकीकत कही एटले ते क्रोधे भराणो लाकडानो भारो नीचे नाखी तरत ज ते चोरना सेनापति पासे गया चार लोको पाछा गाममां गया हतां सेनापति एकलो ज हतो पासे ज खीरनो हाडो पडयो हतो दरिद्रीए तरवारथी सेनापतिनु माथु कापी नाख्यु चार लोकोने आ खबर पडतां तेओ गाममांथी नाशी गया पल्लीमां आवी सेनापतिनो अग्निसंस्कार

सर्व मित्र करी चिंतवो साहेलडी रे, कोई न जाणो शत्रु तो,
राग द्वेष इम परिहरी साहेलडी रे, कीजे जन्म पवित्र तो. २
साहमी संघ खमावीए साहेलडी रे, जे उपजी अप्रतीत तो,
सज्जन कुटुम्ब करो खामणा साहेलडी रे, ए जिनशासन रीत तो. ३
खमीए ने खमावीए साहेलडी रे, एही ज धर्मनो सार तो,
शिवगति आराधनतणो साहेलडी रे, ए त्रीजो अधिकार तो. ४

चारे गाथा सरळ छे तेथी तेना विशेष विवेचननी आवश्यकता नथी. उपलक कीया-मात्र देखाव पुरती मन विनानी क्षमापनाने आमां स्थान नथी एटला माटे ज "मनशुद्धे करो खामणा" एम स्पष्ट कहेवामां आव्युं छे. आपणा महामान्य श्रीकल्पसूत्रमां पण कहेवामां आव्युं छे के—"खमियव्वं खमावियव्वं उवसमियव्वं उवसमावियव्वं सुमइसंपुच्छणा बहुलेण होयव्वं। जो उवसमइ तस्स अत्थि आराहणा, जो न उवसमइ तस्स नत्थि आराहणा, तम्हा अप्पणा चेव उवसमियव्वं। से किमाहु भंते! उवसमसारं खु सामण्णं" अर्थात् साधुए पोते खमवुं अने बीजाने उपशांत करवा निर्मळ चित्तथी बीजाने सुखशाता पूछवी, रागद्वेष रहित बुद्धि ते सुमति, ते सुमतिपूर्वक सूत्रार्थ संबंधी विशेष प्रकारे पूछपरछ करवी अथवा सुखशाता पूछवी एटले के जेनी साथे कलह के कंकास थया होय तेनी साथे निर्मळ चित्तथी वातचीत करवी. कलह करनार बंनेमांथी एक पक्ष न खमाय तो शुं? तेनो जवाब ए छे के-जे उपशांत थाय छे-जे क्षमाशील बने छे तेने आराधना छे जे नथी खमावतो तेने आराधना नथी. श्रामण्य उपशमप्रधान ज छे. आ संबंधमां लौकिक अने लोकोत्तर बे दृष्टांतो आपे छे—

कुंभारनुं वृत्तान्त—

'आरिय' जनपद पासेना गामडामां एक कुंभार रहेतो हतो. ते वासणोनुं गाडुं भरीने वेचवा माटे पासेना कुदंग नामना गाममां गयो. ते गामना लोको लुच्चा हता. तेमणे कुंभारनो एक बळद लई लेवानो विचार कर्यो. जेवामां कुंभार गाम नजीक आव्या तेवामां तेओ कपटपूर्वक बोल्या के-अरे भाईओ! एक आश्चर्य तो जुओ आ कुंभार एक ज बळदथी गाडुं हांके छे. कुंभारे विचार्युं के-आ गामना लोक बहु ज कपटी अने नीच छे. बे बळद छे छतां एक कहे छे. पछी ते कुंभार गामना बजारमां गयो. गाडामांथी वासणो उतारी वेचवा लाग्यो. तेवामां लाग जोईने ते कपटी लोको कुंभारनो एक बळद लई गया. वासणो वेची रह्या बाद कुंभारे जोयुं तो एक बळद न मळे. कुंभारे गामना

सोनी पासेथी क्रोड सोनैया लई पोताना पुत्रने आप्या अने वहाण हंकारी मूक्यु

केटलाय दिवसो पसार थया बाद पचशैल द्वीप नजीक तेनु वहाण आवु त्यारे वृद्ध नाविके सोनीने सूचना करी के-हवे आगळ जता समुद्रनु वमळ आवशे ते वमळमां-भमरमां जता ज नाव चकावे चडशे अने तेमा डूबी जई आ वहाण नाश पामशे, हु पण मृत्यु पामीश जो तमारे बचवु होय अने पचशैल द्वीपे जवुं होय तो साथु जे वडलानु झाड देखाय छे तेनी नीचेथी वहाण आगळ जाय के तरत ज तेनी शाखा पकडी लेजो आ विशाळ वटवृक्ष ऊपर रात्रिना पचशैल द्वीपना पक्षीओ आश्रय लेवा आवशे अने प्रात:काळ थता उडी जशे ते समये भारड पक्षीना पगे लटकीने तमे त्या ज शकशो स्वार्थसिद्ध करवा माटे मानवी शुं न करे ? सोनीए ते प्रमाणे कर्यु अने पचशैल द्वीप पहोंच्यो पण हासा ने प्रहासाने क्या जइ शोधवी ?

ते उद्यानमा आमतेम भटकवा लाग्यो तेवामा हासा प्रहासा तेनी नजरे चडी पोतानी महेनत अने साहस सफळ थया जाणी तेणे संपूर्ण संतोष अनुभव्यो वने देवीओने तरत ज पोताने आवासमा लई जवा कह्यु नीतिकारे खरेखर साचु ज कह्यु छे के—

> दिवा पश्यति नो घूकः, काको नक्तं न पश्यति ।
> अपूर्वः कोऽपि कामान्धो, दिवानक्तं न पश्यति ॥ १ ॥

घूवड दिवसे जोई शकतु नथी, कागडो रात्रे जोतो नथी, परन्तु कामांध पुरुष तो दिवसे के रात्रे पण कशु जोई शकतो नथी, अर्थात् सारासारनो सर्वथा विवेक ज भूली जाय छे

वने देवीओए तेना उत्कट कामाग्नि ऊपर शीतळ जळ रेडवु शरू कर्यु, जे साभळता ज अनगसेनना होशकोश उडी गया पोतानी मूर्खाईनु तेने हवे बराबर भान थयु, पण हवे थाय शु ? बने देवीओए तेने कह्यु—

" प्रिय अनगसेन ! तारी आ साहस-कथा जरूर प्रशसापात्र छे, पण अमारा देहना आलिगन सामान्य अने सहेता नथी अमारु प्रथम दर्शन तो तने लोभावावानु हतु कामी मानवीना हाथमा अमे रमकडा नथी बनता जो तने अमारा संगनी खरेखर उत्कट इच्छा ज होय तो बीजी परीक्षा पसार-पास कर 'आवता भवमा हु हासा-प्रहासानो पति थाउ ' एवा नियाणापूर्वक मरण स्वीकारी तेम करवाथी तमारो देवयोनिमा जन्म थशे अने तमने आ सप्त धातुमय औदारिक शरीरने बदले अमारा जेवु मनोहर वैक्रिय शरीर प्राप्त थशे "

हासा-प्रहासानु सूचन साभळता ज अनगसेनना गात्रो गळी गया, कामाग्निनो तीव्र ताप शमी गयो आ मनुष्य देहथी कई शुभचार थवानो नथी

कर्यो पछी तेना स्थाने तेना नाना भाईने स्थाप्यो त्यारे तेनी बहेन, मा विगेरे स्वजनो कहेवा लाग्या के-तु सेनापति थवा छतां ते दरिद्री जीवतो रहे ते बने ज केम? धिक्कार छे तारा सेनापति पदने! आ प्रमाणे बान्धव-बोल चढाववाथी ते सेनापति गाममां गया ने दरिद्रीने वेढो नाखी पल्लीमां पकडी लाव्या पछी तेने मारवा माटे खड्ग हाथमां लीधु अने दरिद्री ब्राह्मणने पूछ्यु के-बोल, तने केवी रीते मारु? त्यारे समयसूचकता वापरी तेणे कह्यु के-शरणे आवेलने जे रीते मराय तेवी रीते मार। तेनु आवु वचन सांभळी सेनापति पोतानी मा बहेन सामु जोवा लाग्यो तेनी मा विगेरे तेनो भाव समजी गया, अने कह्यु के-भाई! शरण आवेलाने मारवो ए आपणो धर्म नथी त्यारे ते ब्राह्मणने छोडीने, तेनी पूजा करीने दक्षिणा आपीने रजा आपी

आ दृष्टांतनो सार ए छे के-अज्ञानी एवा चोरे पण माफी मागवाथी दरिद्री ब्राह्मणने छोडी मूक्यो, तो परलोकभीरु साधुओए तो पोतानी जेवा सर्व जीवोने जाणी वात्सल्यभाव दर्शाववो घटे

उदायन राजर्षिनी कथा—

चंपा नगरीमां *अनंगसेन नामनो सोनी वसतो हतो ते अति विषयाभिलाषी हतो जे रूपवती कन्या देखे तेने घणु धन आपीने परणी लेतो आ प्रमाणे ते पांच सो स्त्रीनो स्वामी थयो

पंचशैल नामना द्वीपनो विद्युन्माली नामनो यक्ष च्यवी गयो त्यारे हासा ने प्रहासा नामनी मुख्य देवीओए विचार्यु के-कोईने लोभमां पाडीए तो ते आपणो स्वामी थाय अने तेनी साथे यथेच्छ भोग भोगवी शकीए अनंगसेनने स्त्रीनो लोभी जाणीने बन्ने तेनी अशोक वाटिकामां आवी सोनी तेना रूप तथा हावभाव जोई मोहित बनी गयो मानवी स्त्री पण जो सुंदर होय छे तो तेना रूपराशि ऊपर केटलाय मानव-भ्रमर मोहित थाय छे तो आ तो देवीओ तेना रूप पासे अनंगसेन जेवो कामी पाणी-पाणी थई जाय तेमां शु आश्चर्य! हासा तथा प्रहासाए पण तेने बराबर पोताना पाशमां फसाववा हावभाव दर्शावी कटाक्ष फेंक्या कामातुर सोनी जेवो तेओना मस्तके हाथ मूकवा जाय छे तरत ज तेओए कह्यु-जो तारे खरेखर अमने मळवु ज होय तो पंचशैल द्वीपे आवजे आ प्रमाणे कहीने बन्ने चाली गई

कामांध सोनी पंचशैल जवानी तैयारीमां पड्यो पंचशैल द्वीपे जवु एटले मृत्युने आमंत्रण आपवु कोई पण नाविक तेने लई जवा तैयार न थयो त्यारे उद्घोषणा करावी के-जे कोई पंचशैल द्वीपे पहोंचाडशे तेने क्रोड सोनैया आपीश एक वृद्ध नाविके पडह स्वीकार्यो नाविके विचार्यु के-हवे वृद्ध थयो छु, मृत्युने किनारे बेठो छु तो क्रोड सोनैया मेळवी पुत्रने तो सुखी करतो जाउं

* केटलेक स्थळे कुमारनंदी एवु पण नाम जणावेल छे

न जोई शकवाने कारणे विद्युन्माळीए पोतानो हाथ मुख आगळ आडो धरवा माड्यो नागिले तेने पूछ्युं–ओळखे छे ? विद्युन्माळीए नकार जणावता नागिले कह्युं–हुं तारो मित्र नागिल तारुं अज्ञानताभर्युं बाळमरण निरखी मारुं मन वैराग्य तरफ वळ्युं निरतिचार चारित्र पाळी, शेष जीवनमां तप तपी हुं बारमा देवलोकमां देव थयो छुं अवधिज्ञानवडे तारी शोचनीय स्थिति जाणी तारी पास आव्यो छुं

विद्युन्माळीए तेने संबोधीने कह्युं–मित्र ! तारी हितशिक्षा अवगणी तेनुं आ परिणाम आव्युं छे, पण हवे पश्चात्ताप करवाथी शो लाभ ? हवे तो आ जीवनमांथी छूटवानो कोई सुमार्ग होय तो बताव नागिल देवे तेने आश्वासन आपता कह्युं–मित्र ! निराश थवानी जरूर नथी पुरुषार्थीने सर्व कांई सुलभ छे चरम जिनपति श्रीमन्महावीरदेवनी गोशीर्षचन्दननी मूर्ति भरावी, तेनी सारा आचार्यद्वारा प्रतिष्ठा करावी तेनी हरहमेश पूजा कर ए प्रकारनी जिनभक्तिथी तारां अशुभ कर्मो नाश पामशे तारा आयुना अंतभागे तेने सारा नगरमां पहोंचती करजे के ज्यां ते प्रतिमानी सारी रीते पूजा थाय

अट्ठाई महोत्सव पूर्ण थया बाद विद्युन्माळी देव चुल्लहिमवंत पर्वत ऊपर जई गोशीर्ष चन्दननी प्रतिमा बनावी अने तेने रत्नना सर्व आभरणोथी अलंकृत करी घणा काळ सुधी तेनी पूजा कर्या बाद तेने सुयोग्य स्थळे पहोंचाडवानो ते विचार करे छे तेवामां समुद्रमां एक वणिकनुं नाव छ महिनाथी खूंची गयेलुं मालूम पड्युं छ महिनाना प्रयास छतां नाव न निकळ्युं एटले वणिक पण मूंझाणो तेणे धूप, दीप विगेरे पूजन सामग्री धरी इष्टदेवनुं स्मरण कर्युं विद्युन्माळी देव त्यां आवी ते वणिकने कह्युं–हे वणिक ! मुंझाईश नहीं जो तुं काष्ठनी पेटीने वीतभय नगरे महाराजा उदायनने पहोंचाडवानुं कबूल करे तो तारुं वहाण सहीसलामत वीतभय नगरे पहोंची जशे अने तारो आपत्ति–काळ दूर थशे वणिके ते कथन स्वीकार्युं विद्युन्माळी देव काष्ठनी पेटीमां श्रीमहावीरस्वामीनी मूर्ति मूकीने तेने सोंपी देवप्रभावथी बीजे ज दिवसे वहाण वीतभयनगरे पहोंची गयुं

वणिके राजा पासे भेटणुं धरी सर्व हकीकत कही संभळावी अने देवाधिदेवनी पेटी हाजर करी पेटीना देखाव ज मंत्रमुग्ध करे तेवा हता एनी कारीगरीमां, एना प्रत्येक आलेखनमां दैवी शक्तिना चमत्कार जणाता हता वायुवेगे वात नगरमां प्रसरी गई अने मानवसागर उभरायो राजाए जेनामां शक्ति होय तेने पेटीना द्वार खोलवा आमंत्रण आप्युं जनतामां द्वार उघाडवा सबधी स्पर्धा चाली, पण मत्याग्रह दाखाने निराशा मळी समच घघा लाग्या अने मानवमेदनी विखरावा लागी राजानी धीरज खूटवा लागी, पण पेटीना द्वारोए कोईने अंश मात्र पण खुलवानी आशा न आपी परंतु आदरेलो समारंभ

एवा विचारथी तेना मुख ऊपर निराशा फरी वळी तेना मुखमांथी सहसा बोलाई जवायु के-" मारी दशा धोबीना श्वान जेवी थई न रह्यो घरनो न रह्यो घाटनो देवांगनाओ मळी नहीं अने मानवल्लनाओ हती ते पण गुमावी थई गई "

हासा-प्रहासाए तेनी व्याकुळता पारखी लई कह्युं " सुवर्णकार ! रच मात्र तमारे निराश थवानी जरूर नथी अमो तमने तमारा नगरमां क्षणभरमां सुखपूर्वक पहोंचाडी दइशु तमारा अमारा पर साचो स्नेह होय तो अमे जणावेला मार्गे चालजो साचा स्नेह विना समागमनु सुख नहीं माणी शकाय '

देवशक्तिने शु अशक्य छे ! आंख उघाडता ज सोनीए पोताने चंपा नगरीमा पोताना आवासमा सुतेलो जोयो दरियानी मुसाफरी, भारंड पक्षीना पगे वळगवु, हासा-प्रहासाना दर्शन, सुदर उपवन, मनोहर वार्तालाप विगेरे इन्द्रजाळनी माफक तेनी नजर समक्षथी सरी गयु तेनो अनुभव हजी ताजो ज हता हासा-प्रहासाए चढावेल नशो तेनी स्मृतिमां हता तेणे अग्निप्रवेश करवानो निर्णय कर्यो आ वातनी तेना मित्र नागिलने खबर पडता ते त्यां आव्यो अने अनगसेनने अनेक प्रकारे समजाव्यो नागिल दृढ जैनधर्मी अने समजु हतो देवांगनाना संयोग पाछळ आत्मानो केटलो अधःपात थाय छे ते सर्व समजाव्यु, पण ते बधु छार पर लींपण समान निरर्थक निवडयु बाद ते जीवता बळी मुओ अने नियाणाना प्रभाव पंचशैल द्वीपमा देवी-युगलना विद्युन्माली नामे देव थयो

नानु बाळक ज्यां सुधी मुद्रिकानी किंमत समजतु नथी त्यां सुधी मीठाईना बदलामां ते काढी आपे छे, पण पेंडानी कीमत समजता ते कदी छेतरातु नथी तेम आ प्राणीने अनुभवे ज खरेखर ज्ञान प्राप्त थाय छे अनंगसेन भले व्यंतरनिकायमा देवत्वनी प्राप्ति थवा छता तेने संतोष न थयो देवी साथे समागमना दिवसो पाणीना रेलानी माफक चाल्या गया ए जीवन हमेशनु बनी जता पहेलानी देवीओ प्रत्येनो मोह पण अदृश्य बनी गयो

एक वार नंदीश्वर द्वीपनी यात्रानो प्रसंग आव्यो तरतज देवेन्द्र तरफथी हासा-प्रहासाने नृत्य करवानो अने विद्युन्मालीने मृदंग वगाडवानो आदेश थयो आ हुकम सांभळता ज अनंगसेनना जीवने उचाट थई आव्यो पण देवराजनी आज्ञा अलंघनीय हती दरेक यात्राप्रसंग हासा-प्रहासानु नृत्य अने विद्युन्मालीनु मृदंग-वादन आधाररूप हता तेनी अनिच्छा छता मृदंग तेना गळे बंधाई गयु दुःख ने ग्लानि अनुभववा छता तेने मृदंग वगाडता वगाडता आगळ चालवु पडयु आ बाजु तेना मित्र नागिल उत्तरावस्थामां चारित्र पाळी अच्युत देवलोकमा देव थया तेणे आ स्थिति निहाळी तेने पोताना मित्र माटे दुःख थयु ने तरतज तेनी पासे आव्यो नागिल देवना देदीप्यमान तेज आगळ विद्युन्मालीनु मुख सूर्य आगळ तारा सदृश जणावा लाग्यु अत्यंत तेजस्वी मुख

फळो क्या मळे छे ? तापसे कह्यु-मारी साथे तमे एकला आवो तो देखाडु राजा तेम ने तेम अलकार युक्त तापसनी पाछळ पाछळ गयो थोडे दूर गया पछी एक वन देखायु, तेमा प्रवेश करता थोडे दूर एक तापसाश्रम देखायो राजाने आवतो जोइ घणा तापसो एकत्र थइ गया अने राजाने सर्व वस्त्राभूषणथी सज्ज जोई, तेने मारी नाखी तेना सव अलकार लइ लेवानो विचार करवा लाग्या तेओनो तेवो विचार जाणी राजा भय पामी त्याथी नासवा लाग्यो थोडे दूर जता ते ज वनमा मनुष्योनो विशाळ समूह आयो पोताने शरण मळशे तेवा हेतुथी राजा त्या गया तो कामदेव जेवा स्वरूपवान, सौम्यमूर्ति, बृहस्पति समान विद्वान् साधुसमूहने अने तेना पासे उपदेश साभळता चतुर्विध सघने जोयो आचार्ये राजाने निर्भय बनवा कह्यु राजा त्या बेठो अने स्थिर चित्तथी उपदेश साभळ्यो जैनधर्मनो अगीकार पण कर्यो राजानी जैनधर्ममा दृढ श्रद्धा थइ जाणी प्रभावती देवे पोतानी सर्व माया सहरी लीधी एटले राजाए पोताने एकला सिंहासन ऊपर बेठेला जोया जाणे हु काइ गया नथी तेम आव्यो नथी आ शु थयु ? तेम विचार छ तवामा प्रभावती देवे प्रत्यक्ष थई कह्यु के-आ सर्व में ज तमने प्रतिबोध पमाडवा विकुर्व्यु हतु हव तमे जैनधर्मनु यथाथ पालन करजो अने भविष्यमा कइ पण विघ्न उपस्थित थाय त्यारे मारु स्मरण करजो

आ बाजु प्रभावती राणीना चारित्र-स्वीकार पछी पूजनादिनु काय एक कुबडी दासीए स्वीकार्यु तेना मनमा चमत्कारिक बिंबप्रत्ये भाव हता एटले स्वच्छाथी पूजारिणी पद स्वीकार्यु धीमे धीमे आ प्रतिमानु माहात्म्य देश-देशावरमा प्रसरी गयु हतु

गधार देशना काइ एक श्रावक दीक्षा लेवानो भावनावाळो थयो दीक्षा लीधा पहेलां तेने तीर्थंकरोना जन्म, दीक्षा, केवळ अने निर्वाणभूमिओना दर्शन कर वानी इच्छा थइ ए प्रमाणे परिभ्रमण करतां ते घणा मुनिओना ससर्गमा आव्या एकदा काइ मुनिराज पासे साभळ्यु के-वैताढ्य पर्वतनी गुफामा श्रीऋषभदेव आदि चोवीश तीर्थंकरोनी रत्नमय मूर्तिओ अलौकिक अने चमत्कारिक छ ते प्रतिमाओना दर्शन करवानी भावनाथी गधार श्रावक महामुश्केलीथी त्या गया देवाराधन करी, तेणे ते स्फटिक रत्नमय प्रतिमाओना भावपूर्वक दर्शन कर्या ते स्थळमा रत्नना अतिशय ढगला छताइ तेनु मन लेश मात्र चलायमान न थयु तेथी देवे तुष्मान थइ तेने 'वर' मागवा कह्यु निर्लोभी गधार श्रावक पोतानी अनिच्छा दर्शावी त्यारे 'अमोघ देवदर्शनम्' एम जणावी देव तेने एकसो आठ गुटिकाओ आपी अने कह्यु के-आ गुटिकाओना प्रभावथी मनचिंतित दरेक काय सफळ थशे त्याथी पाछा वळता वीतभयनगरना श्रीमहावीर जिनबिंबनी प्राभाविकता साभळी ते त्या आव्यो थोडा दिवस त्या रही प्रभुभक्तिनो अपूर्व लाभ लीधो

पूर्ण कर्या विना राजाथी ऊभा पण केम थवाय ? राजानी मूंझवणमां पण हवे वधारो थवा लाग्यो.

आटला बधा प्रयास छतां पेटी न खुली त्यारे लोकोने दैवी करामतनी कल्पना आववा लागी. कोइए शंकरना नामे, कोइए विष्णुना नामे, कोइए गजाननना नामे स्तुति करी पण सब व्यर्थ. राजानो भोजननो समय पण वीती गयो. राणी प्रभावतीए बे वार दासीने आमंत्रण आपवा मोकली पण राजाथी उठाय तेम ज न हतुं. दासीमुखथी देवाधिदेव संबंधी हकीकत जाणी प्रभावती देवी पण घडीभर आश्चर्यमुग्ध बनी गई. ते खरी जैनधर्मिणी हती. तेने सात्त्विक विचार आव्यो के 'देवाधिदेव' तो राग-द्वेषादि अढार दूषण रहित श्रीजिनेश्वर ज होइ शके. बाद स्नान करी, शुद्ध वस्त्रोमां सज्ज थइ, पूजननी सामग्री साथे प्रभावती पेटी समीप आवी. नम्रभाव करातां स्तुतिना सुन्दर स्वरनी साथे ज पेटाना द्वार आपमेळे खुली गया अने गोशीर्षचंदननी महावीर भगवंतनी मूर्ति सौ कोइनी नजरे पडी. सर्वत्र आनंद छवाइ गयो. राजवीनो चिंतानो अंत आव्यो. सुंदर प्रासाद बनावी तेनी प्रतिष्ठा करी प्रभावती प्रतिदिन तेनी पूजा करती. राजा पण पूजनसमये वाजिंत्र वगाडी राणीना भक्तिभावने वधारतो.

एक प्रसंगे स्नान करी राणीए दासी पासे पूजाना श्वेत वस्त्रो माग्यां. दासीए ते लावी हाजर कर्यां छतां भ्रमवश राणीने ते रातां जणायां, एटले आवेशमां ने आवेगमां तेनाथी बोली जवायुं के-आ शृंगारने योग्य वस्त्रो शा माटे लावी ? गुस्सामां तेणे ते दासी तरफ दर्पण फेंक्युं, जे तेना मर्मस्थळमां वागतां ते मृत्यु पामी. वस्त्र तो श्वेत हतां ते राणीने जणातां ज पोताना अविचारी कृत्य माटे घणो ज संताप थयो. आवो ज एक बीजो प्रसंग बनी गयो. राणी पूजन बाद नृत्य करी रही हती अने राजा वाजिंत्र वगाडी रह्या हता. तेवामां राजाने राणीनुं शिर-विहूणुं मात्र धड ज जाणे नाचतुं होय तेम जणायुं. तेना गात्र ढीलां पडी गयां अने वाजिंत्र अटकी गयुं. राणीना नृत्यमां भंग पडतां तेणे कारण पूछ्युं. अतिशय आग्रह बाद राजाए सत्य हकीकत कही. एटले दासीना अवसान बाद जे वात भुलाती मांडी हती ते पुनः ताजी थइ. राणीए निश्चय कर्यो के-हवे पोतानुं आयु अल्प छे. तेणे राजा पासे आत्मकल्याणना पंथे जवा रजा मागी. राजाए एक शरते रजा आपी के-जो तुं काळ करीने देव थाय तो मने प्रतिबोध पमाडवो. प्रभावतीए चारित्र पाळी स्वर्गप्राप्ति करी.

देव थया पछी प्रभावतीए राजाने प्रतिबोधवा अने जैनधर्मी बनाववा केटलाय प्रयासो कर्यां पण राजा तो तापसभक्त रह्या. प्रभावती देवे तेने प्रतिबोधवा तापस वेश ग्रहण कर्यो अने राजाने एक अत्यंत मनोहर फळ आप्युं. तेना स्पर्शथी राजाने आनंद थयो, तेनो गंध पण उत्तम हतो अने तेनो स्वाद तो अमृत फळ जेवो जणायो. एटले राजाए ते तापसने पूछ्युं के-आवां

ફળો ક્યા મળે છે ? તાપસે કહ્યુ-મારી સાથે તમે પધારો આવો તો દેખાડુ રાજા તેમ ને તેમ અલકાર યુક્ત તાપસની પાછળ પાછળ ગયો થોડે દૂર ગયા પછી એક વન દેખાયુ, તેમા પ્રવેશ કરતા થોડે દૂર એક તાપસાશ્રમ દેખાયો રાજાને આવતો જોઇ ઘણા તાપસો એકત્ર થઇ ગયા અને રાજાને સવ વસ્ત્રાભૂષણથી સજ્જ જોઈ, તેને મારી નાખી તેના સવ અલકાર લઈ લેવાનો વિચાર કરવા લાગ્યા તેઓના તેવો વિચાર જાણી રાજા ભય પામી ત્યાથી નાશવા લાગ્યો થોડે દૂર જતા તે જ વનમા મનુષ્યોનો વિશાળ સમૂહ જોયો પોતાને શરણ મળશે તેવા હેતુથી રાજા ત્યા ગયો તો કામદેવ જેવા સ્વરૂપવાન, સૌમ્યમૂર્તિ, બૃહસ્પતિ સમાન વિદ્વાન્ સાધુસમૂહને અને તેના પાસે ઉપદેશ સાભળતા ચતુર્વિધ સઘને જોયો આચાર્યે રાજાને નિર્ભય બનવા કહ્યુ રાજા ત્યા બેઠા અને સ્થિર ચિત્તથી ઉપદેશ સાભળ્યો જૈનધર્મનો અગીકાર પણ કર્યો રાજાની જૈનધર્મમા દૃઢ શ્રદ્ધા થઇ જાણી પ્રભાવતી દેવે પોતાની સર્વ માયા સહરી લીધી એટલે રાજાએ પોતાને એકલા સિંહાસન ઉપર બેઠેલો જોયો જાણે હુ ક્યાઇ ગયા નથી તેમ આવ્યો નથી આ શુ થયુ ? તેમ વિચાર છે તેવામા પ્રભાવતી દેવે પ્રત્યક્ષ થઇ કહ્યુ કે-આ સવ મેં જ તમને પ્રતિબોધ પમાડવા વિકુર્વ્યુ હતુ હવે તમે જૈનધર્મનુ યથાથ પાલન કરજો અને ભવિષ્યમા કઇ પણ વિઘ્ન ઉપસ્થિત થાય ત્યારે મારુ સ્મરણ કરજો

આ બાજુ પ્રભાવતી રાણીના ચારિત્ર-સ્વીકાર પછી પૂજનાદિનુ કાર્ય એક કુબડી દાસીએ સ્વીકાર્યુ તેના મનમા ચમત્કારિક બિંબમત્યે ભાવ હતા એટલે સ્વેચ્છાથી પૂજારિણી પદ સ્વીકાર્યુ ધીમે ધીમે આ પ્રતિમાનુ માહાત્મ્ય દેશ-દેશાવરમા પ્રસરી ગયુ હતુ

ગધાર દેશના કોઇ એક શ્રાવક દીક્ષા લેવાની ભાવનાવાળો થયો દીક્ષા લીધા પહેલા તેને તીર્થંકરોના જન્મ, દીક્ષા, કેવળ અને નિર્વાણભૂમિઓના દર્શન કરવાની ઇચ્છા થઇ એ પ્રમાણે પરિભ્રમણ કરતા તે ઘણા મુનિઓના સત્સગમા આવ્યા એકદા કોઇ મુનિરાજ પાસે સાભળ્યુ કે-વૈતાઢ્ય પર્વતની ગુફામા શ્રીઋષભદેવ આદિ ચોવીશ તીર્થંકરોના રત્નમય મૂર્તિઓ અલૌકિક અને ચમત્કારિક છે તે પ્રતિમાઓના દર્શન કરવાની ભાવનાથી ગધાર શ્રાવક મહામુશીબતે ત્યા ગયા દેવારાધન કરી, તેણે તે સ્ફટિક રત્નમય પ્રતિમાઓના ભાવપૂર્વક દર્શન કર્યા તે સ્થળમા રત્નના અતિશય ઢગલા જોઇ તેનુ મન લેશ માત્ર ચલાયમાન ન થયુ તેથી દેવ તુષ્ટમાન થઇ તેને 'વર' માગવા કહ્યુ નિર્લોભી ગધાર શ્રાવકે પોતાની અનિચ્છા દર્શાવી ત્યારે ' अमोघ देवदर्शनम् ' એમ જણાવી દેવે તેને એકસો આઠ ગુટિકાઓ આપી અને કહ્યુ કે-આ ગુટિકાઓના પ્રભાવથી મનચિંતિત દરેક કાર્ય સફળ થશે ત્યાથી પાછા વળતા વીતભયનગરના શ્રીમહાવીર જિનબિંબની પ્રભાવિકતા સાભળી તે ત્યા આવ્યો થોડા દિવસ ત્યા રહી પ્રભુભક્તિનો અપૂર્વ લાભ લીધો

कषायने उपशमावी क्षमापना करी तो पच महाव्रतधारी साधुए अवश्य करवी ज जोईए, कारण के चारे कषाय ससाररूप विशाळ महेलना मजबूत पाया छे तेने शिथिल करशो तो ससारी महेलातने धराशायी थता वार नहीं लागे मोहराजाना ए त्रण पौत्रो अने मायारूपी पौत्रीथी सदा सावधान रहेवु ते पण छूपा चोर छे के तेना आगमननी अने लूटनी आपणने खबर पडती नथी आ त्रणे दृष्टान्तो श्रीनिशीथचूर्णीना दशमा उद्देशामा आपेला छे सुगच्छना लक्षणो बतावता हजु पण ग्रन्थकार जणावे छे के--

सीलतवदाणभावण-चउविहधम्मंतरायभयभीए ।

जत्थ बहू गीअत्थे, गोअम ! गच्छ तयं भणिअम् ॥ १०० ॥

[शीलतपोदानभावना-चतुर्विधधर्मान्तरायभयभीताः ।

यत्र बहवो गीतार्थाः, गौतम ! गच्छः सको भणितः ॥१००॥]

गाथार्थ-दान, शील, तप अने भाव-आ चार प्रकारना धर्मना अतरायथी भय पामेला गीतार्थ साधुओ जे गच्छमा घणा होय तेने हे गौतम ! तु सुगच्छ जाण.

विवेचन-चार कषाय ए जेम ससाररूपी महेलना पाया छे तेम दानादि चार धर्मो धर्मरूपी महेलना आधारभूत चार स्थभो छे श्रीश्राद्धदिनकृत्य वृत्तिमा त्रण प्रकारना दान कह्या छे दानशीलतपोभावै' स तु धर्मश्चतुर्विधः। दान तावत् त्रिधा ज्ञानाऽभयोपग्रहभेदतः ॥ १ ॥ बीजाने भणावे, श्रुत समजावे, तीर्थंकरप्ररूपित आगमनु मुमुक्षु जीवोने अध्ययन करावे ते १ ज्ञानदान, २ अभय दान-स्वभावथी ज दु ख पामेला जीवोने पीडा न करे अने ३ उपकरणदान-ज्ञान तथा अभय आपनाराने आहारादिक आपीने उपग्रह करे ते, अथवा जे वस्तुना दानथी चारित्रने सहाय थाय ते पण धर्मोपकरण दान कहेवाय छे

दाननी माफक शीळना पण त्रण प्रकार छे १ शुद्ध आचार-निरवद्य (निष्पाप) श्रावक या साधुधर्मनु पालन करवु, २ *अढार हजार शीलाग रथनु पालन-तेमां

* ३ योग, ३ करण, ४ सज्ञा, ५ इद्रियो, १० पृथ्वीकाय आदि (५ स्थावर, ४ त्रस अने १ अजीव) अने १० यतिधर्म-आ सवने परस्पर गुणता १८००० भेद थाय छे, ते नीचे प्रमाणे--

क्षांतियुक्त, पृथ्वीकायसंरक्षक, श्रोत्रेंद्रियने सवरण करनार अने आहारसज्ञा रहित मुनि मनथी पाप-व्यापार न करे एवी रीते क्षांतिना स्थाने मार्दव, आर्जव आदि नव यतिधर्म कहेवाथी १० भेद थया आ दश भेद 'पृथ्वीकायसरक्षक' पदना योगथी थया, तेवी रीते अप्कायथी प्रारभी अजीव सुधी प्रत्येकना दश-दश भेद करवाथी १०० भेद थया आ सो

लेशमात्र पण दोष न लगाडवो अने ३ ब्रह्मचर्य पाळवुं

तप बार प्रकारनो छे छ बाह्य अने छ अभ्यंतर आ तपने लगतुं विस्तृत विवेचन अगाउ पृष्ठ १२६ ऊपर आवी गयेल छे आ संबंधमा विशेष वणवता कहे छे के-१ मघा, २ भरणी, ३ पूर्वाफाल्गुनी, ४ पूर्वाषाढा अने ५ पूर्वाभाद्रपद आ पांच उग्र नक्षत्रमा खास करीने तप करवो गुरुगुणषट्त्रिंशिकावृत्तिमा शरीर, वचन अने काया ए त्रण प्रकारनो तप कह्यो छे १ शरीर तप-देव, साधु, गुरु, सिद्धांतनी पूजा-बहुमान करे, शौच पाळे, ब्रह्मचर्य पाळे, सरळता राखे कपट न करे तेमज हिंसा न करे ते शरीर तप कहेवाय, २ वचनतप-बीजाने उद्वेग थाय तेवुं न बोले सत्य प्रिय हित ने मित वाक्य ज बोले, स्वाध्याय करे, स्वाध्याय वधारे ते वचन तप जाणवो ३ मन तप-मनने आनंदित राखे, मौनपणुं राखे दुर्ध्यान न करे मन निर्मळ राखे आ त्रण प्रकारना तप अनुक्रमे एकथी एक उत्कृष्ट समजवा सात्त्विक, राजस् अने तामस्-ए त्रण प्रकारनो पण तप होय छे फळनी वांछा विना करातो तप सात्त्विक, पूजा, सत्कार अने बहुमाननी इच्छाथी करातो तप ते राजस, अने आत्माने पीडीने बीजाना नाश माटे जे तप कराय ते तामस् कहेवाय छे

भावना बार प्रकारनी छे, ते आ प्रमाणे-१ अनित्य भावना-तारो वैभव, तारा संयोगो, तारी चीजो नित्य तारी पासे रहेवानी नथी, तारुं शरीर पण सदाने माटे तारुं नथी २ अशरण भावना-तने व्याधि थाय तो पीडामा कोई भाग पडावे तेम नथी, दुःखमां कोई टेको आपी शके तेम नथी, तारे तारो ज आधार छे ३ संसार भावना-समग्र संसारमा कर्म राजा जे नाटक करावी रह्या छे अने आखो आ भवप्रपंच चाली रह्यो छे तेनो विवेक पूर्वक ऊभा रही विचारणा करवी ४ एकत्व भावना-आ प्राणीनो आत्मा एकलो ज छे, तेनुं कोई नथी ते पण कोईनो नथी, ए पता पोतानो ज मालेक छे ५ अन्यत्व भावना-आपणा आत्मा सर्वथी अन्य छे-भिन्न छे, एनुं काई सगुं नथी, एनुं पोतानुं शरीर पण एनाथी अन्य छे आ स्वपरभाव विचारणा करवी ६ अशुचि भावना-मांस रुधिर, मेद, हाडका, लोही अने चामडीनुं बनेलुं आ शरीर अपवित्रतानी पेटी छे, एना ऊपर मोह करवा जेवुं नथी, तेना खरेखरो उपयोग करी लेवा जेवो छे ७ आश्रव भावना-जीव अव्रतीपणाथी, मिथ्यात्वथी, कषायोथी अने [illegible]

भेद ' श्रोत्रेंद्रिय ' पदना संयोगथी थया, तेवी रीते चक्षु आदि अन्य चार इंद्रियो संबंधी चारसो भेद करवाथी कुल ५०० भेद थया आ पांचसो भेद [illegible] थया, अन्य त्रण संज्ञाओना संबंधी पंदरसो थवाथी कुल बे हजार [illegible] ' करण ' पदनी योजनाथी थया तेवी रीते ' करावण अने अनुमोदन ' [illegible] मेळवता ६००० थया आ छ हजार भेद मन संबंधी थया तेवी रीते [illegible] संबंधी छ-छ हजार मेळवता कुल १८००० भेद थाय छे.

कायाना योगोथी कर्म बांधे छे, कर्मथी मारे थाय छे अने संसारमां रखडे छे ८ संवर भावना-क्षमादि दश यतिधर्मो, आठ प्रवचनमाता, बार भावनाओ, बावीश परिषहो विगेरे द्वारा आवता कर्मो रोकी शकाय तेवी विचारणा ९ निर्जरा भावना-वृत्ति ऊपर अंकुश, अनशनादि बाह्य तपस्या तथा विनय-वैयावच्चादि आंतर तपस्याथी लागेलां कर्मोनी मुक्ति वगर भोगवे शक्य छे तेवी विचारणा १० धर्मसूक्तता भावना-आत्मानु स्वरूप, धर्म स्वरूप, धर्मनो संबंध, मुक्तिमार्ग, तेना उपाय अने तेनु उपादेयपणु धर्ममा बताव्युं छे तेनी पुष्टिरूप विचारणा ११ लोकपद्धति भावना-लोकाकाशनु स्वरूप, लोकनु स्वरूप, तेमां थतां आत्मानां जन्म मरणनी स्थिति अने रखडपाटाना स्थानोनी विचारणा *१२ बोधिदुर्लभभावना-साचा मार्गनी ओळखाण, प्राप्ति अने संरक्षण मुश्केल छे पण ए रत्नत्रयोनी प्राप्ति करवी ए खास कर्तव्य छे तेवी विचारणा आ बार प्रकारनी भावना उपरांत मैत्री, प्रमोद, कारुण्य अने माध्यस्थ्य-ए चार भावना गणता सोळ भावना पण थाय छे

'भाव्यते इति भावना' अर्थात् संसार प्रत्ये वैराग्य प्रगट करवा माटे मनमा वारंवार जेनु स्मरण करवामां आवे अने ते द्वारा आ संसारबंधनथी आत्माने मुक्त करवामां आवे अगर तो आत्माने मोक्ष सन्मुख करवामां आवे ते भावना कहेवाय छे

भावनानुं क्षेत्र आपणा सर्व संबंधोनु पृथक्करण करवानु छे अने ते रीते ए भूमिकानी शुद्धि करे छे शुद्ध करेली भूमिका ऊपर सुन्दर चित्रामण थाय तेम भावनावासित आत्मा ऊपर वैराग्यनी सुन्दर भूमिका रचाय छे समजण अने ज्ञान वगर कांई पण क्रिया तेना वास्तविक स्वरूपमां थती नथी 'आपणे कोण छीए? क्यां छीए? शा माटे छीए? आ संसार-परिभ्रमणनो हेतु शो?' ए बराबर विचारवानु क्षेत्र भावना छे भावना आपणने अन्दर ऊंडा ऊतारे छे अने तेटला ज खातर कहेवामा आव्यु छे के-भावना भवनाशिनी।

हवे त्याग करवा योग्य गच्छनु स्वरूप जणावता कहे छे के—

जत्थ य गोयम पंचण्ह, कहवि सूणाण इक्कमवि हुज्जा।
तं गच्छं तिविहेणं, वोसिरिअ वइज्ज अन्नत्थ ॥ १०१ ॥

---

* भावनानु विशेष स्वरूप समजवा माटे उपाध्याय श्रीविनयविजयजीकृत "शांत सुधारस" ग्रन्थ वांचवो ते संस्कृत पद्य ऊपर श्रीयुत मोतीचन्द गिरधरलाल कापडियाए गुजराती भाषामा "शांत सुधारस"ना लखेल बन्ने भागो खास वांचवा लायक छे विवेचन बहु ज सुन्दर अने सरल भाषामा समजी शकाय तेवु छे

सूणारंभपवत्तं, गच्छं वेसुज्जलं न सेविज्जा ।
ज चारित्तगुणेहिं, तु उज्जल त तु सेविज्जा ॥ १०२ ॥
जत्थ य मुणिणो, कयविक्कयाइ कुव्वति संजमब्भट्ट ।
तं गच्छ गुणसायर !, विसं व दूरं परिहरिज्जा ॥ १०३ ॥
[यत्र च गौतम ! पञ्चाना, कथमपि सूनानामेकमपि भवेत् ।
त गच्छ त्रिविधेन, व्युत्सृज्य व्रजेदन्यत्र ॥ १०१ ॥
सूनारम्भप्रवृत्त, गच्छ वेशोज्ज्वल न सेवेत ।
यश्चारित्रगुणैः तूज्वलस्त तु सेवेत ॥ १०२ ॥
यत्र च मुनयः, क्रयविक्रयादि कुर्वन्ति सयमभ्रष्टाः ।
त गच्छ गुणसागर !, विषमिव दूरतः परिहरेत् ॥ १०३ ॥]

गाथार्थ—हे गौतम ! जे गच्छमा १ घटी, २ उखल-खारणीयो, ३ चूलो, ४ पाणीयारु अने ५ सावरणी—आ अनेक अशरण जतुओना वधस्थानो पैकी एक पण होय ते गच्छनो मन-वचन-कायाथी त्याग करीने अन्य सारा गच्छनो आश्रय लेजे जीवहिंसाना कारणभूत खारणीया विगेरेना आरंभमा प्रवर्तेला अने उज्ज्वळ वेश धारण करनारा दभी साधुओना गच्छनी सेवा न करवी, परन्तु समिति-गुप्तिरूप चारित्र गुणोथी विभूषित गच्छनी वैयावच्चादिक सेवा करवी. वळी जे गच्छनी अदर मुनियो क्रय-विक्रय आदि करे, करावे के अनुमोदे ते साधुओ सयमभ्रष्ट जाणवा. हे गुणना सागर समान गौतम ! तेवा साधुओने तो हळाहळ झेरनी माफक दूरथी ज त्यजी देवा.

विवेचन—घटी प्रमुख जीवहिंसाना हेतुभूत छे साधुओने त्रिविधे त्रिविधे हिंसानु प्रत्याख्यान होय छे. अन्य दर्शनीय ग्र थोमा पण हिंसाना हेतुभूत आ कारणोना निषेध फरमाव्या छे श्रीशुकसंवादमा कह्यु छे के-"खडनी १ पेषणी २ चुल्ली ३ जलकुम्भः ४ प्रमार्जनी ५ । पञ्चसूना गृहस्थस्य, तेन स्वर्गं न गच्छतीति ॥ " अर्थात् खाडणी, घटी, चूलो, जळना घडो (पाणीया०) अने सावरणी-आ पाच वस्तुना गृहस्थोए त्याग करवो, कारण के तेथी स्वर्गे जवातुं नथी आ पाच प्रकारोमा आसक्ति धरावता होय तेवा श्वेतवस्त्रधारी साधुओना पण शीघ्र त्याग करवो, कारण के तेवा उज्ज्वळ वेषधारक साधु नथी पण दभी

जाणवा उज्ज्वळ वेषथी विभूषा थाय छे, विभूषाथी चीकणा कर्म बंधाय छे अने चीकणा कर्मबंधथी संसार-भ्रमण वधे छे श्रीदशवैकालिक सूत्रमां कह्युं छे के-
"विभूसावत्तिअं भिक्खू, कम्मं बंधइ चिक्कणं। संसारसायरे घोरे, जेण पडइ दुरुत्तरे ॥ १ ॥" उज्ज्वळ वेष-परिधानथी ब्रह्मचर्यनो नाश थाय छे कदरूपा प्राणी होय ते पण श्वेत वस्त्रविभूषाथी रूडा जणाय छे, तेने तेवा प्रकारनो देखी स्त्रीओ मन मोहवा योग्य जाणी तेना प्रत्ये आकर्षाय छे तेमज वळी जो गात्र रमणीय होय तो स्त्रीओना कटाक्षादिकथी क्षोभ पाम्यो छतो ब्रह्मचर्यथी भ्रष्ट थइ वळी लोकोने विषे पण तेवा साधु निंदाना पात्र थाय छे, कारण के तेवा प्रकारना साधु जोइने लोको कहे छे के मुनि घणा कामी जणाय छे, नहीं तो संसारनो त्याग कर्या पछी वळी वस्त्रनी टापटीप शा माटे करे ? हे गौतम ! आवा गच्छनो त्याग करी सुगच्छनो आश्रय लेवो

कोइ शंका करता पूछे के-पांचमा आराना प्रभावथी अत्यारे निरतिचार चारित्र पालन दुष्कर छे तो तेनो उपाय शुं छे ? के-जे दोष लागे तेनी गर्हा-निंदा करे ते निरतिचार चारित्र जाणवुं जेम वस्त्र मलिन थाय तेने धोवाथी ते मेल रहित थाय छे तेम अतिचार लाग्या होय तेनी गर्हा-निंदा करवाथी निरतिचार चारित्र पळाय छे

वळी जे साधुओ पात्रादिकनो, औषधनो, पुस्तक, पोथीनो क्रयविक्रय करता होय, करावता होय अगर तो तेनुं काम करनारनी अनुमोदना करता होय तेवा साधुओने वेर करता पण विशेष हानिकर जाणवा वेर साधु छतुं एक वखत ज प्राणनो नाश करे छे पण आवा संयमभ्रष्ट साधुना संसर्गथी तो अनेक भवोमां भटकवुं पडे छे हे गौतम ! आवा गच्छनो पवन पण न खावो वळी पण आ संबंधमां विशेष दर्शावतां कहे छे के—

आरंभेसु पसत्ता, सिद्धंतपरंमुहा विसयगिद्धा।
मुत्तुं मुणिणो गोयम !, वसिज्ज मज्झे सुविहियाणम् ॥ १०४॥
[आरम्भेषु प्रसक्ताः, सिद्धान्तपराङ्मुखा विषयगृद्धाः।
मुक्त्वा मुनीन् गौतम ! वसेत् मध्ये सुविहितानाम् ॥ १०४ ॥]

गाथार्थ—हे गौतम ! आरंभ-समारंभोमां रक्त बनेला शास्त्र-सिद्धांतना वचनोथी विरुद्ध वर्तनारा, कामभोगमां गृद्ध-लंपट बनेला एवा दुष्ट साधुओनो संग सर्वथा त्यजीने सुविहित साधुओना समुदायमां वास करवो.

विवेचन—पृथ्वीकायादिकना आरंभमां रक्त होय, काचुं पाणी तथा अग्निकाय विगेरेना आरंभ करावता होय, गृहस्थ पासे भार उपडावता होय,

शरीरनी शोभा-विभूषा करता होय, वारवार हाथ-मुख धोता होय तेवा साधुओनो संग वर्जवो, कारण के तेथी संसार सागर तरवाने बदले तेमां पतित थवाय छे शब्दादिक विषयो पण प्राणीने हेरान करी मूके छे तो सिद्धांत विरुद्ध आचरण माटे तो पूछवु ज शु ? शब्दादिक पंच विषयोने अंगे राम, चपलाक्ष, गंधप्रिय कुमार, मधुप्रिय कुमार अने महेंद्र राजकुमार ए पांचेना वृत्तांतो जाणवा योग्य छे

श्रोत्रेंद्रियना विषयमां रामनी कथा—

मल्लस्थळ नामना नगरमां भुवनचंद्र नामनो राजा हतो तेने राम नामनो पुत्र हतो ते पुरुषनी बोंतेर कलामां निपुण हतो राजाए तेने योग्य उमरनो जाणी एकदा प्रधानने पूछयु के-आपणे रामने युवराजपदे स्थापीए. प्रधाने कह्यु-हे राजन् ! आ राम राजा थवा लायक नथी राजाए कारण पूछता प्रधाने कह्यु के-ते परवश छे, कारण के ते श्रोत्रेंद्रियना विषयमां आसक्त छे तेने हमेशां संगीत प्रिय छे ते दोषने अंगे तेने युवराज पद आपवु योग्य नथी तेथी पर्ण जे बीजो राजपुत्र छे ते राजाना सर्वे लक्षणोथी युक्त छे माटे तेने युवराज पद आपो राजाए कह्यु-प्रधानजी ! संगीत ए तो राजानु लक्षण छे, तेने दोष केम कहेवाय एटले प्रधाने जणाव्यु के-" जह अग्गीइ लवो वि हु, पसरंतो दहइ [illegible] नगराइ । इक्किक्कमिंदियपि हु, तह पसरंतं समग्गगुणे ॥ १ ॥ " [illegible] अग्निनो कणियो जो फेलावो पामे तो अनेक गाम तथा शहेरो [illegible] भस्म थाय छे तेम इंद्रियना विषयो वृद्धि पामे तो सर्व गुणोनो नाश करे [illegible] प्रधानना निषेध छता राजाए रामने युवराज पद आप्यु [illegible] मृत्यु पामता राम राजा थयो अने पोताथी नाना भाईने युवराज [illegible]

राम नित्य संगीत सांभळे, पोते पण [illegible] [illegible]

डुंब जातिना लोक संगीतमां घणा हुशियार होय छे [illegible] तेओ पासे नित्य संगीत गवरावे श्रवणेंद्रियना [illegible] न्यायादिकने माटे पण अवकाश मेळवी शकतो नहीं. [illegible] डुंबडा तेना आश्रममां आवी ते घणु ज मिष्ट गातो तेनो [illegible] राजाए तेने पोता पासे राखी, तेना रूप ऊपर ते मोहित थयो [illegible] छाडी तेनी साथे भोग भोगववा लाग्यो [illegible] विचार करी तेने राज्य ऊपरथी उठाडी मूक्यो तेना नाना भाई [illegible] भमी मृत्यु पाम्यो मरीन मृग थयो. [illegible] तेने पकडीने मारी नाख्यो [illegible] उपज्यो त्यां पण संगीतनो विलासी [illegible] पाम्ये एक वखत डुंब लोको गाता [illegible]

परन्तु निद्रावश थइ त्यारे आ कुबा विदाय आपने पोतपोताना स्थानमां जवा ऊठी गया, परन्तु पुरोहित पुत्रने संगीतमां रस आववाथी तमने रजा न आपी बीजे प्रहरे महाबळ अचानक जागी गया तो तेणे त्यां गायन गाता जोया एटले पुरोहित-पुत्र ऊपर पोताना आदेश-भंग माटे क्रोध चड्यो सवारे सीसुं उकाळी तेना कानमां रेडाव्युं, जेथी वेदनाथी ते तरत ज मृत्यु पाम्यो

आ अविचारी कार्य कर्या पछी महाबळने घणो ज पश्चात्ताप थयो तथा विचरता विचरता एकदा भगवंत आवी चड्या तेने वांदीने राजाए पुरोहित-पुत्रनी वात पूछता करुणा भगवंत राजाना मनथी मांडी सर्व वृत्तांत कही संभळाव्यो, ते सांभळी महाबळ राजाने तीव्र वैराग्य थयो बाद निरतिचार चारित्र पाळी ते मोक्षे गयो

चक्षुइंद्रियना विषयमा चपलाक्षनी कथा—

विजयपुर नगरमां विश्वंभरी नामना राजा हता तेने वृषभ नामना प्रधान हतो ते नगरमां धराधर नामनो श्रेष्ठी हतो आ बंनेने परस्पर घणी प्रीति हती एकदा ए बंनेने एक साथे पुत्रो थया ए बंने युवान थया एकदा प्रधाने श्रेष्ठीने कह्युं के-तमारो पुत्र सदाचारी नथी हुं ठीक पूछुं छुं केम ? प्रधाने कह्यु के-राजमार्गमां राजाना अंतःपुरनी राणीओ प्रत्ये कुदृष्टि करे छे राणीओने जोवा माटे वारंवार ते मार्ग पर फर्या करे छे, माटे भविष्यमां ते विनाशने नोतरशे माटे तेने तुं समजावजे श्रेष्ठीए पुत्रने घणो समजाव्यो पण तेणे पोतानुं कुव्यसन तज्युं नहीं एकदा राजाए श्रेष्ठीपुत्रने राणीओने सरागदृष्टिथी जोतो जोयो एटले राजाए तेने काढी मूक्यो अने पोताना महेलमां आववानो निषेध कर्यो श्रेष्ठीने पण पोताना पुत्रना कुराचारथी घणुं दुःख थयुं लोकोए पण तेनुं चपलाक्ष एवुं नाम प्रसिद्ध कर्युं

श्रेष्ठीए तेना दुष्टतमथी कंटाळी पोताना नोकर साथे परदेश मोकल्यो त्यां पण ते चक्षुइंद्रियनी आसक्तिथी नगरना प्रासादो, मंडपो, देवलोको जोतो फरे छे बाग, बगीचा तथा वावडीओ ने तळावमां पण भटक्या करे छे आ प्रमाणे फरतां फरतां तेणे एक महेलमां अत्यंत सुन्दर पाषाणनी पूतळी जोइ तेने जोइने ते त्यां ज बेसी रह्यो भोजन करवानुं पण न सांभर्युं नोकर तेने तेडवा आव्यो तो पण ते न उठ्यो पछी नोकरे पाषाणनी पूतळी जेवी बीजी पूतळी करावी अने ते पाषाणनी पूतळीने ठेकाणे स्थापी थोडो वार पछी ते पूतळी छूटी पोताना उतारा तरफ चालवा मांडी चपलाक्ष पण ते पूतळीने साची पूतळी मानीने तेनी पाछळ-पाछळ उतारे आव्यो नोकर हवे पोताना नगर प्रति प्रयाण कर्युं एटले चपलाक्ष पण तेनी साथे चाल्यो रस्तामां चोर लोकोए धाड पाडी सर्वस्व लूंटी लीधुं पूतळी लुंटाइ जवाथी चपलाक्ष गांडो थइ गयो अटवीमां भमवा लाग्यो तथामां राजाने राणीने त्यां क्रीडा करता निहाळी तेना साम एक दृष्टिथी जोइ

रह्यो पछी राजपुरुषोए तेने मारी नाख्यो मरीने ते पतंगीयो थयो ते भवमां पण दीवामां पडी बळी मुओ आ प्रमाणे चक्षुरिंद्रियना दोषपणाथी अनेक भवमा तेणे भ्रमण कर्यु

घ्राणेंद्रियना विषयमां गंधप्रियनी कथा—

पद्मखंड नामना नगरना राजा प्रजापतिने एक पुत्र हतो तेने सुगंध ऊपर घणो ज प्रेम जे कोई वस्तु होय तेने सुंघे तेथी लोकोए तेनु गंधप्रिय एवु नाम पाड्यु एकदा ते राजपुत्र नदीमां क्रीडा करवा गया लाग जोईने तेनी अपर माताए चूर्णयोगनो पडीको करीने नदीना प्रवाहमां वहेतो मूक्यो आ चूर्णनो गंध महारौद्र होय छे अने तेने सुंघता ज मृत्यु थाय राजकुमारे ते पडीको झाल्यो कोई पडले तरत ज तेने लई लीधो साथेना राजपुरुषोए तेने तेम करता वार्यो छता राजपुत्रे ते पडीको उघाडीने सूंघ्यो के तरत ज चूर्णना तीव्र गंधथी मृत्यु पाम्यो मरीने भ्रमर थयो त्या पण गंधनी आसक्तिथी कमळमा पेठो तेवामा हस्तीए आवीने ते कमळ खाधु त्याथी मृत्यु पामीने ते अनंत संसार रखड्यो

रसनेन्द्रियना संबंधमां मधुप्रियनी कथा—

सिद्धार्थपुर नगरमा विमल नामनो शेठ हतो तेने रसनेन्द्रियमा आसक्त एक पुत्र हतो तीखो, मधुर, खाटो विगेरे भोजन हमेशा जमे हमेशा नवी नवी वस्तुओनी शोध कर्या करे पण व्यापारमा चित्त न परोवे आ प्रमाणे घणी नवीन चीजो खाधा पछी तेने विचार आव्यो के-में घणी नवी नवी चीजो खाधी हवे मांस-मदिरानो स्वाद करु पछी ते मांस खावा लाग्यो मदिरा पण पीवा लाग्यो लोकोए तेनु मधुप्रिय एवु नाम पाड्यु तेवामां तेनो पिता मृत्यु पामतां लोकोए तेनो तिरस्कार कर्या पछी ते देशांतरमां गयो परदेशमा मांस ना लालुपीपणाथी मांसलोकोना छोकरा मारी नाखीने खावा लाग्यो कोटवाळे तेने पकडीने फासीए चडाव्यो मरीने नरकादिकमा अनंत संसार रखड्यो

स्पर्शेन्द्रियना विषयमां महेन्द्र राजपुत्रनी कथा—

विष्णुपुर नगरमा धरणेंद्र राजाने महेन्द्र नामनो पुत्र हतो तेने नगरशेठ-ना पुत्र मदन साथे मित्राचारी हती मदनने चंद्रवदना नामनी सुंदर स्त्री हती एकदा महेन्द्र तेना घरे गयो त्यारे मदन घरे नहोतो चंद्रवदनाए तेनो सत्कार करी तेने तांबूल आप्यु ते वखते तेना स्पर्शथी राजपुत्रने सुख उपज्यु तेनो कोमळ स्पर्श अनुभवी ते तेना प्रत्ये आसक्त थयो पण मदनने मार्या विना चंद्रवदना मळे तेम न हतु एटले मदनने मारी नाखवा माटे तेणे गुप्त पुरुषो राख्या तेओए एकांत साधी मदनने पकड्यो अने मार मारवा लाग्या तेवामा ते स्थळे कोटवाळ आवी चढ्यो तेणे तओने पकडीने राजा समक्ष रजू कर्या राजाए पूछतां तेओए महेन्द्रकुमार संबंधी सर्व हकीकत जणावी राजाए महेन्द्रकुमारने देशवटो आप्यो अने नाना राजपुत्रने राज्य आपी दीक्षा लई मोक्षे गयो मदनने

वैद्ये औषधद्वारा साजो कर्यो महेन्द्र चन्द्रवदनाने लई परदेश चाल्यो गयो. मदन पण स्त्री-चरित्र जोई वैराग्यवासित थई, चारित्र पाळी देवलोकमां गयो परदेश भमतां महेन्द्र तथा चन्द्रवदनाने चोरोए लूटी लीधा अने बर्बरकूळमां वेची दीधा त्यांना लोकोए तेनु रुधिर काढवु पडने तेनी महावेदनाथी मरीने अनंत संसार भम्यो

आ प्रमाणे एक एक इन्द्रियना वशवर्तीपणाथी जीवो कष्ट पामे छे तो जेओ पांचे इन्द्रियोना विषयो भोगवे छे तेनी पीडानु तो पूछवु ज शु ? वाचकवर उमा स्वातिरचित श्रीप्रशमरतिमां कह्यु छे के-

कलरिभितमधुरगांधर्व-तूर्ययोषिद्विभूषणरवाद्यैः ।
श्रोत्रावबद्धहृदयो, हरिण इव नाशमुपयाति ॥ १ ॥
गतिविभ्रमेङ्गिताकार-हास्यलीलाकटाक्षविक्षिप्तः ।
रूपावेशितचक्षुः, शलभ इव विपद्यते विवशः ॥ २ ॥
स्नानाङ्गरागवर्तिक-वर्णकधूपाधिवासपटवासैः ।
गन्धभ्रमितमनस्को, मधुकर इव नाशमुपयाति ॥ ३ ॥
मृष्टान्नपानमांसौ-दनादिमधुररसविषयगृद्धात्मा ।
गलयन्त्रपाशबद्धो, मीन इव विनाशमुपयाति ॥ ४ ॥
शयनासनसम्बाधन-सुरतस्नानानुलेपनासक्तः ।
स्पर्शव्याकुलितमति-र्गजेन्द्र इव बध्यते मूढः ॥ ५ ॥
एवमनेके दोषाः, प्रनष्टशिष्टेष्टदृष्टिचेष्टानाम् ।
दुर्नियमितेन्द्रियाणाम्, भवन्ति बाधाकरा बहुशः ॥ ६ ॥
एकैकविषयसङ्गा-द्रागद्वेषातुरा विनष्टास्ते ।
किं पुनरनियमितात्मा, जीवः पञ्चेन्द्रियवशार्त्तः ॥ ७ ॥
पादाहतः प्रमदया विकसत्यशोकः, शोकं जहाति बकुलो मुखसीधुसिक्तः ।
आलिङ्गितः कुरवकः कुरुते विकाश-मालोकित सतिलकस्तिलको विभाति ॥ ८ ॥

मनोहर स्वर, सुन्दर संगीत, वाजिंत्रनो नाद अने स्त्रीना नूपुरादि आभूषणोना ध्वनि-आ प्रकारना सुन्दर स्वर तथा तालना मिश्रणथी श्रोत्रेन्द्रियमां आसक्त थयेला प्राणी हरिण माफक मृत्यु पामे छे (१) स्त्रीओना हावभाव, अंगविकार, हास्य, नेत्रकटाक्षादिथी चलित अने रूप-लावण्यमां मुग्ध थयेल प्राणी नेत्रेन्द्रियना वशवर्तीपणाथी पतंगनी माफक विनाश पामे छे (२) चन्दनरस, अगर, धूप, कस्तूरी, पटवास, अत्तर विगेरे सुगन्धी वस्तुओने विषे जे आसक्त थाय छे ते प्राणी भ्रमरनी माफक घ्राणेन्द्रियना परवशपणाथी नाश पामे छे (३) स्वादिष्ट भोजन, मद्य-मांस तथा मिष्ट रसपानमां लुब्ध थयेला रसनेन्द्रियना वशथी गळामां यन्त्रपाशबद्ध माछलीनी माफक मृत्यु पामे छे (४)

सुकोमळ शय्या, बेसवाना सुन्दर बिछाना, सुन्दर सिंहासनादिक तेमज शरीर मसळाववु, पीठी कराववी, स्नान करीने चन्दनादिकनु विलेपन कराववु, अत्तर लगाडवु विगेरे स्पर्शेन्द्रियना विलासमां पडेलो प्राणी *हाथीनी माफक कष्ट पामे छे (८) आ प्रमाणे ऊपर दर्शावेला इन्द्रियोना कष्टो, जेओ केवळी भगवते दर्शावेला मार्गने स्वीकारता नथी तेओने अनेक प्रकारे दुःखदायक थाय छे (९) एक-एक इन्द्रियना प्रसगथी प्राणी राग-द्वेषने अंगे विनाश पामे छे, तो जेओ पांचे इन्द्रियोमां लुब्ध थया छे तेओने माटे तो कहेवु ज शु ? अर्थात् एक इन्द्रियनी आसक्ति प्राणीने हणवामां समर्थ छे तो पांचेनो जे उपभोग करे छे ते अवश्य विनाश पामे ज (७) वस्त्रालंकारथी सुशोभित युवान स्त्री अशोक वृक्षने पाटु मारे त्यारे ते विकस्वर थाय छे, मोढामां मदिरानो कोगळो भरी स्त्री बकुल ऊपर छांटे त्यारे ते शोक रहित थाय अर्थात् विकस्वर बने, कुरब नामना वृक्षने ज्यारे स्त्री आलिंगन करे छे त्यारे ते प्रफुल्लित थाय छे अने तिलक वृक्षने स्त्री कटाक्ष युक्त निहाळे त्यारे विकास पामे छे एकेन्द्रियमां पण इन्द्रियनो रस प्रबळ होय छे. जेओ आवा प्रकारना इन्द्रियना रसने जीते छे ते ज गच्छ सुगच्छ जाणवो हवे आ चोथो साधुस्वरूप अधिकारनो उपसंहार करतां कहे छे के—

तम्हा सम्म निहालेउ, गच्छं सम्मग्गपट्ठियम् ।
वसिज्ज पक्खमास वा, जावज्जीव तु गोयमा ! ॥ १०५ ॥
खुड्डो वा अहवा सेहो, जत्थ रक्खे उवस्सयम् ।
तरुणो वा जत्थ एगागी, का मेरा तत्थ भासिमो ॥ १०६ ॥

[तस्मात् सम्यग् निभाल्य गच्छं सन्मार्गप्रस्थितम् ।
वसेत् पक्ष मास वा, यावज्जीव तु गौतम ! ॥ १०५ ॥
क्षुल्लो वाथवा शैक्षो, यत्र रक्षेत् उपाश्रयम् ।
तरुणो वा यत्र एकाकी, का मर्यादा तत्र भाषामहे ? ॥ १०६ ॥]

* हाथी महाबळवान होवाथी तेने वश करवा माटे युक्ति करवी पडे छे हाथी स्पर्शमां बहु ज आसक्त होय छे तेथी तेने पकडवामां कुशळ माणस सौ-प्रथम मोटो खाडो खोदे छे, तेना ऊपर तृण वगेरेनु आच्छादन करी तेने ढांकी दे छे पछी कागळनी चितरेली के कोतरेली हाथणी ते खाडा ऊपर गोठवे छे, एने जोइने हस्ती दूर-दूरथी खेंचाई त्यां आवे छे जेवो हाथणीनो स्पर्श करवा जाय छे तेवो खाडामां पडे छे केटलाक दिवसो सुधी तेमां तेने भूख्यो राखी, पछी वश बनावी आलानस्तंभे लई जाय छे

गाथार्थ-सन्मार्ग प्रतिष्ठित गच्छने कुशळ बुद्धिथी तपासीने तेवा गच्छमा पक्ष, मास अथवा जीवन पर्यन्त हे गौतम ! वसवु

जे गच्छनी अदर बाळवयवाळो अथवा नवदीक्षित साधु अथवा तो युवान यति उपाश्रयनी सारसभाळ करतो होय ते गच्छमा तीर्थंकर भगवत तेमज गणधर महाराजानी आज्ञारूपी मर्यादा क्याथी होय ?

विवेचन-जेने दीक्षा लीधा छ महिना थया होय तेने शैक्ष अथवा नव दीक्षित जाणवो बाळवयवाळा शिष्यने उपाश्रये एकलो मूकी जतां दोषोत्पत्ति थाय, जेमके-एकलो रहे तो रमत करवा लागे, अन्य रमता छोकराने जोइ तेनी साथे रमवा जाय तो धूर्त पुरुषो तेनी उपधि आदि लइ जाय, कोईनी लालचमा जपटाई जाय, नाटक-प्रेक्षणक थतु होय ते जोवा चाल्यो जाय, एकलो रहेवाथी तेना परिणाम फरी जाय तो उपधि विगेरे लइने चाल्यो पण जाय, माटे बाळ के नवदीक्षितने उपाश्रये एकला मूकवा नहीं युवान साधुने उपाश्रये एकाकी राखवाथी कया दोषो लागे ते जणावता कहे छे के-मोहनीय कर्मना उदयथी ते हस्तकर्म करवा प्रेराय, अग मरोडे, लिंगलेपन करे, कोई स्वरूपवती स्त्रीने देखीने चोथा महाव्रतनो भग करे, तेनी साथे हास्यादिक चेष्टा करे, विशेष मोहनीयना जोरथी गच्छनो त्याग करीने जतो रहे इत्यादिक अनेक दोषोनो सभव जाणी कदी पण बाळ, नवदीक्षित के युवान साधुने उपाश्रये एकला राखवा नहीं आ सबधी विशेष वर्णन श्रीनिशीथचूर्णिमा आपेल छे

यतिस्वरूप नामना आ बीजो अधिकार सपूर्ण थाय छे आ बीजा अधिकारनो साराश ए छे के-जे आचार्य फक्त गच्छनु नाम धारण करी विचरे छे, भ्रष्ट गच्छनी सामाचारी आचरे छे एकलविहार करे छे, आचार्यनी आज्ञा उल्लघे छे, शरीरनी टाप-टीप करे छे, गादी तकीया मूकीने बेसे छे, गृहस्थो पासे काम कराये छे, हाथ-पग-मुख विगेरेनु प्रतिदिन प्रक्षालन करे छे, साबुथी वारवार वस्त्रो धोवे छे, आवा प्रकारना यतनयुक्त साधुवाळा गच्छने प्र कार कहे छे के-आमे गच्छ कहेता ज नथी आवा दुःशीलने जा साधु तरीके स्वीकारीए तो मिथ्यात्व लाग



॥ साध्वीस्वरूपनिरूपणे तृतीयोऽधिकार. ॥

लघु, नवदीक्षिता अथवा युवती साध्वीने उपाश्रयमां एकाकी राखतां शु दोषोत्पत्ति थाय ? ते दर्शावतां कहे छे के—

जत्थ य एगा खुड्डी, एगा तरुणा उ रक्खए वसहिं ।
गोयम ! तत्थ विहारे, का सुद्धी बंभचेरस्स ? ॥ १०७ ॥
[यत्र चैकाकिनी क्षुल्लिका, एकाकिनी तरुणी तु रक्षति वसतिम् ।
गौतम ! तत्र विहारे, का शुद्धिः ब्रह्मचर्यस्य ? ॥ १०७ ॥]

गाथार्थ—हे गौतम ! जे गच्छमां बाळ वयवाळी, नवदीक्षित युवान साध्वी एकली उपाश्रयमां रहेती होय त्यां ब्रह्मचर्यनी निर्मळता क्यांथी जळवाय ?

विवेचन—ऊपर १०६ ठ्ठी गाथामां बाळ, नवदीक्षित के युवान साधु माटे जे जे दोषो दर्शाव्या ते बधा बाळ, नवदीक्षित के युवान एकाकी साध्वीने पण घटो शके छे. विशेष ए के-लघु साध्वीने एकाकी देखीने कोई बळात्कारे तेनी साथे भोग भोगवे, तेनुं रूप-लावण्य देखी बळात्कारे अपहरण करी जाय. ब्रह्मचर्यनो भंग थतां युवती साध्वीने गर्भ रहे तो तेने औषधोपचारथी पडावे, जो न पडावे अने गर्भ वृद्धि पामे तो शासननी हीलना थाय. पूर्वे भोगवेली क्रीडा याद आवी जाय तो गच्छनो त्याग करवा पण मन ललचाय अने प्रांते यदृच्छा जेवी स्थिति भोगवी महादुःखी थाय, माटे साध्वी समुदाये उपाश्रयमां बाळ, नवदीक्षित के युवती साध्वीने एकली मूकवी नहीं.

हजु पण साध्वी-मर्यादा संबंधी जणावतां कहे छे के—

जत्थ य उवस्सयाओ, बाहिं गच्छे दुहत्थमित्तंपि ।
एगा रत्तिं समणी, का मेरा तत्थ गच्छस्स ? ॥ १०८ ॥
जत्थ य एगा समणी, एगा समणो य जपए सोम ! ।
निअबंधुणावि सद्धिं, तं गच्छं गच्छगुणहीणं ॥ १०९ ॥

जत्थ जयारमयार, समणी जपइ गिहत्थपच्चक्खम् ।
पच्चक्खं संसारे, अज्जा पक्खिवइ अप्पाणं ॥ ११० ॥
जत्थ य गिहत्थभासाहिं, भासए अज्जिआ सुरुट्ठावि ।
तं गच्छं गुणसायर !, समणगुणविवज्जिअं जाण ॥ १११ ॥
गणिगोअम ! जा उचिअं, सेअवत्थं विवज्जिउ ।
सेवए चित्तरूवाणि, न सा अज्जा विआहिया ॥ ११२ ॥

[यत्र चोपाश्रयात् बहि-र्गच्छेद् द्विहस्तमात्रामपि ।
एकाकिनी रात्रौ श्रमणी, का मर्यादा तत्र गच्छस्य ? ॥ १०८ ॥
यत्र च एकाकिनी श्रमणी, एकाकी साधुश्च जल्पते सौम्य ! ।
निजबन्धुनापि सार्धं, तं गच्छं गच्छगुणहीनम् ॥ १०९ ॥
यत्र जकारमकार, श्रमणी जल्पति गृहस्थप्रत्यक्षम् ।
प्रत्यक्षं संसारे, आर्या प्रक्षिपति आत्मानम् ॥ ११० ॥
यत्र च गृहस्थभाषाभिः, भाषते आर्या सुरुष्टाऽपि ।
तं गच्छं गुणसागर !, श्रमणगुणविवर्जितं जानीहि ॥ १११ ॥
गणिन् गौतम ! या उचितं, श्वेतवस्त्रं विवर्ज्य ।
सेवते चित्ररूपाणि, न सा आर्या व्याहृता ॥ ११२ ॥]

गाथार्थ—जे गच्छनी अदर रात्रिये एकली साध्वी बे हाथप्रमाण भूमि उपाश्रयनी बहार जाय ते गच्छनी मर्यादा केवी होय ? अर्थात् न ज होय. हे सौम्य गौतम ! जे गच्छनी अदर एकाकी साध्वी पोताना बधु मुनि साथे चाले अथवा तो एकलो साधु पोतानी भगिनी साध्वी साथे वातचीत करे ते गच्छने तारे गुणहीन समजवो. जे गच्छनी अदर साध्वी गृहस्थ साभळतां जकार, मकार विगेरे (शासननी हीलना थाय तेवा) अवाच्य शब्दो बोले ते वेष विडबक साध्वी पोताना आत्माने चतुर्गतिरूप ससारमा भमाडे छे. वळी जे गच्छमा अतिशय क्रोधाग्निथी प्रज्वलित थयेली साध्वी गृहस्थना जेवी सावद्य भाषा बोले छे—क्लेश करे छे ते गच्छने हे गौतम ! तारे साधुगुणथी रहित जाणवो. हे गौतम ! जे साध्वी योग्य श्वेत—मानोपेत वस्त्र तजीने विविध-

रंगी, भरत विगेरेथी विभूषित वस्त्र वापरे छे ते साध्वी नहीं पण शासननी हीलना करावनारी वेषविडंबिनी जाणवी.

विवेचन—साध्वीने रात्रिए उपाश्रयथी बहार निकळवानो निषेध कर्यो छे तेनुं कारण ए छे के-परस्त्रीरमण करनारा लोको साध्वीने एकली देखीने हरी जाय, राजा एकला नगरचर्या जोवा निकळ्या होय अने साध्वीने उपाश्रय बहार एकली जुए तो तेने कुदृष्टि थाय वळी चौरादिक निकळ्या होय तेओ पण तेना वस्त्रादिक खेंची जाय, पूर्वना भोग याद आव्या होय तो गुरुणी के वडील साध्वीने पूछ्या विना एकांतमां चाली जाय, परिणामे शासननी अपभ्राजना थाय माटे ए गीतने रात्रे एकली साध्वी उपाश्रयनी बहार निकळे ते गच्छने हुं मर्यादावाळो कहतो नथी.

सगो भाई बहेन पण जो दीक्षित थया होय तो भाइ पोतानी बहेन साथे के बहेन पोताना भाइ साथे एकांतमां वातचीत करे तो तेने पण भ्रष्ट समजवा. कारण के परस्पर वार्तालापथी दोषोत्पत्ति थाय छे कंदर्प महादुष्ट छे, ते प्राणीना छिद्रो जोया करे छे अने लाग मळतां पोतानुं शस्त्र नबळा मनना प्राणी उपर अजमावे छे परस्पर वार्तालापथी केवा दोषो थाय ते संबंध कह्युं छे के—

सद्दसणेण पीई, पीईउ रई रईओ वीसंभो ।
वीसंभाओ पणओ, पंचविहं वड्ढए पिम्मं ॥ १ ॥
जह जह करेमि नेहं, तह तह नेहो भिवड्ढइ तुममि ।
तेण नडिओ मि बलिय, जं पुच्छसि दुब्बलतरोसि ॥ २ ॥
मित्ति मम इय सद्दसणसमासणेण, संदीविओ मयणवण्ही ।
बभाई गुणरयणे, डहइ अणिच्छ वि पमायाओ ॥ ३ ॥
मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा, न विविक्तासनो भवेत् ।
बलवानिन्द्रियग्रामः, पण्डितोऽप्यत्र मुह्यति ॥ ४ ॥

सारी रीते जोवाथी प्रीति थाय छे, प्रीति थवाथी रति उपजे छे, रति (अभिलाषा) थवाथी विस्रंभ थाय-एटले भोगनो विश्वास थाय, विश्वासथी मन स्नेहमां परिणमे अर्थात् मळवानी इच्छा थाय-आ पांच प्रकारे प्रेमवृद्धि थाय छे (१) जेम जेम स्नेह करवामां आवे छे तेम तेम ते वृद्धि पामे छे बळवानने पण आ स्नेह (प्रेम) पतित कर्या छे तो पछी दुर्बळ एवा तारी तो वात ज क्यां रही ! (२) मित्राई कोने कहीए ? 'आ मारो छे' एवी ममता उपजे तेने मित्राई कहेवाय एटली तेने जुए, बोलावे, स्नेह-सल्लाप करे त्यारे कामदेवरूपी अग्नि जागृत थवाथी प्रमादथी अनिच्छाए (तेने न इच्छे तो पण) ब्रह्म

चयरूपी गुणरत्न वळी जाय-विनाश पामे (३) पोतानी माता, बहेन के दीकरी पासे एकला न बेसवु, कारण के इन्द्रियोना विषयो महाबलिष्ठ छे तेना चक्कर मा शाणा अने पंडितजनो पण मुझाई जाय छे (४)

साध्वीए आवेशमा आवी जइ गृहस्थ समक्ष गाली-वचन बोलवा न जोईए, कारण के तेनो आधार तो समता भावना छे गाली प्रमुख वचन क्रोध कषाय ना हेतुभूत छे गृहस्थनी भाषा पण साध्वीथी न बोलाय 'तारु घर बळो, तारी आंखो फुटी जाय, तारा पग कपाई जाय, तु ठुठो था, तु बहेरो था' इत्यादिक श्रापना वचनो पण साध्वी न बोली शके, कारण के ते तेने उचित नथी, केमके ते बधा आक्रोश वचनो कषायो ज छे, कोई पण प्रसंगे साध्वीए पोताना मगजनु समतोलपणु न गुमाववु जोईए गृहस्थनो दोष होय, ते इरादा पूर्वक साध्वीने उतारी पाडवा क्लेश करतो होय तो पण साध्वीए समभाव राखी स्वपर श्रेय ज इच्छवु, ए जिनाज्ञानो साचो मर्म छे

साध्वीए श्वेत वस्त्रो पहेरवा जोईए लाल के पीळा वस्त्र वापरवानो निषेध छे छता तेवा वस्त्रो धारण करनार गच्छभ्रष्ट जाणवी आवी विचित्र वेषधारिणी साध्वीने साध्वी तरीके मानवामा आवे तो पण मिथ्यात्वनु दूषण लागे आ वापतमा शंका करतो कोई कहे के-आचरणाथी रंगेल वस्त्र पहेरे तो शो बाधो? तेनो जवाब ए छे के-आचरणा जो सावद्य होय तो तेनु फळ संसार-भ्रमण छे आचरणा एवी होवी जोईए के जेनो जिनागममा निषेध न होय जो साध्वी मनगमता चित्रविचित्र रंगेला वस्त्रो पहेरे तो ते गृहस्थिणी माफक देखाय, लोकोमा निंदा थाय माटे रंगेला वस्त्रोनो तथा उपलक्षणथी पात्रा दांडा प्रमुख उपकरणोनो त्याग ज करवो हेतु पण साध्वीना आचार संबंधी कहे छे के—

सीवणं तुन्नण भरण, गिहत्थाण तु जा करे ।
तिल्लउव्वट्टण वा वि, अप्पणो अ परस्स य ॥ ११३ ॥

[सीवन तुन्नन भरण, गृहस्थाना तु या करोति ।
तैलोद्वर्तन वापि, आत्मनोऽपरस्य च ॥ ११३ ॥]

गाथार्थ-जे साध्वी गृहस्थ विगेरेनु सीववु, तुणवु के भरवु विगेरे क्रिया करे अथवा पोताने के बीजाने तेल आदिथी उद्वर्तन करे तेने साध्वी न जाणवी.

विवेचन-साध्वीए गृहस्थना के अन्यतीर्थीना वस्त्र, कांबल, रेशमी वस्त्रादिक सीवी आपवा नहीं. तेमा भरतादिक चित्रामण पण करवु नहीं शरीरे तेल चोळाय, दूधनी तरवडे पीठी चोळाय, साबु लगाडी स्नान करे,

आंखे काजळ आंजे तेमज गृहस्थादिकना छोकरांने आभूषणो पहेरावे, तेना हाथ, पग, मुख विगरे धोवे, तेना गाले के कपाळे तिलक करे, तेना अंग पीठी चाळे, इत्यादिक कार्यो जे साध्वी करती होय तेने साध्वी न जाणवा पण वेष विडंबिका तेमज पासत्थी जाणवी तेनु मुख पण जोवु माद नहीं आ संबंधमां निरियावलि उपांग सूत्रमां सुभद्रानु अने श्रीज्ञाताधर्मकथा सूत्रमां कालीनु उदाहरण आप्यु छे

सुभद्रानी कथा—

राजगृही नगरीमां श्रेणिक राज्य करता हतो तेने चेलणा नामनी अति सुकुमार राणी हती नगरीनी बहार गुणशील नामनु चैत्य हतु परमात्मा श्री महावीर विहार करता करता त्यां चैत्यमां समवसर्या श्रेणिक राजा तथा पौरजना वांदवा आव्या पर्षदा समक्ष परमात्माए अमृतधारावर्षिणी देशना आपी पर्षदाना लोको पातपोताना स्थाने गया तेवामां 'बहुपुत्रिका' नामनी देवी पोताना परिवार सहित भगवंतने वांदवा आवी

सौधर्म देवलोकमां 'बहुपुत्रिका' नामनु विमान छे तेमां सुधर्मा नामनी सभा छे तेमां बहुपुत्रिका नामनु सिंहासन छे ते ऊपर बसनारी आ बहुपुत्रिका नामनी देवी जाणवी चार हजार सामानिक देव, चार सपरिवार महत्तरिका, त्रण पर्षदा, सात सेनापति, सोळ हजार आत्मरक्षक देवो एटलो तेनो परिवार छे आटला परिवार उपरांत ते विमानवासी बीजा देव-देवीओनी साथे ते देवी वीणा, करताल, घनवाद्य मृदंग, ढोल विगरे प्रकारना वाजिंत्र नादपूर्वक दिव्य देवताई भोगो भोगवती हती एकदा अवधिज्ञानद्वारा जंबूद्वीपने जोतां जोतां तेणे भगवान महावीरने राजगृही नगरीमां समवसरेला जाण्या एटले पोताना सिंहासनथी उठी सात-आठ पगला आगळ गई, जेम सूर्याभदेवे शक्रस्तवपूर्वक वंदना करी हती तेम परमात्माने नमस्कार कर्या वांदीने पोताना सिंहासन ऊपर पूर्वाभिमुख बेसीने, पोताना आभियोगिक देवने बोलावीने, जेम सूर्याभदेवे सुघोषा घंटा वगडावीने घोषणा करावी हती तेम बहुपुत्रिका देवीए पण उद्घोषणा करावी के-श्रमण भगवान महावीरने वंदन करवा जवु छे माटे सर्वे देव देवीओ सज्ज थईने आवो बाद देवीए सूर्याभदेवना विमानना माफक एक हजार योजन विशाळ एक विमान विकुर्व्यु, तमाम देव-देवीओनी साथे उत्तर दिशामांथी असंख्याता द्वीप समुद्रनु उल्लंघन करीने, सूर्याभनी माफक भगवन् पासे आवी विधिपूर्वक प्रदक्षिणा आपीने वांदीने बेठी पछी भगवंत धर्मकथा कही ते सांभळीने हर्षित बनेली देवीए देशनाने अंते ऊभा थई पोतानो जमणो हाथ लांबो करी तेमांथी १०८ देवकुमार विकुर्व्या अने डाबा हाथ लांबो करी १०८ देवकुमारीओ विकुर्वी त्यारबाद ते लघु बाळक-बालिका विकुर्व्या पछी भगवंतनी समक्ष सूर्याभदेवनी माफक दिव्य नाटक कर्यु

पणु दुष्कर छे सुभद्राए श्रेष्ठीनु वचन अणमाभळ्युं करी फरी वार पोतानी इच्छा दर्शावी एटले सार्थवाह तेने अनेक प्रकारे समजावी छता सुभद्राए पोतानो दृढ निश्चय जणाव्यो त्यारे श्रेष्ठीए तेने चारित्र-स्वीकारनी संमति आपी

यथावसरे पोताना स्वजन-संबंधी वर्गने भोजनार्थ निमंत्रण आपी भद्र सार्थवाहे सौने जमाड्या अने तेओनो सत्कार कर्यो बाद सुभद्राने स्नान करावी, विलेपन करी, आभूषणो पहेरावी, उत्तम वस्त्रो परिधान करावी, हजार पुरुषो उपाडे तेवी शिबिकामां बेसारी ज्ञातिजनो साथे गीतवाजिंत्रना नादपूर्वक भद्र सार्थवाह वाणारसी नगरीनी मध्यमा थईने सुव्रता साध्वीना उपाश्रय पासे आव्यो सुभद्राने आगळ करीने भद्र श्रेष्ठी साध्वी पासे जई कहेवा लाग्यो-हे पूज्य ! आ मारी भार्या मने अत्यंत वल्लभ छे तेने वात पित्तादिकनो व्याधि न थाय ते माटे में तेनी घणी काळजी राखी छे तेने हवे भागवती दीक्षा स्वीकारवानी जिज्ञासा थई छे तो तमे तेने दीक्षा आपो श्रेष्ठीनु कथन सांभळी सुव्रता साध्वीए कह्यु—जहा सुहं, मा पडिबंध करेह । अर्थात् जेथी तमने सुख उपजे तेम करो सारा कार्यमा विलंब न करो साध्वीना वचनथी हर्ष पामेली सुभद्राए स्वहस्ते ज अलंकारोने त्याग करीने पंचमुष्टी लोच कर्यो अने साध्वी पासे आवी, त्रण प्रदक्षिणा आपी वांदीने चारित्र ग्रहण कर्यु पांच समिति अने त्रण गुप्तिपूर्वक संयम धर्मनु आराधन करवा लागी सुव्रता साध्वी साथेना सह वासथी सुभद्रानु ज्ञान पण वृद्धि पाम्यु

एकदा लोकोना नाना नाना छोकराओने जोईने सुभद्रानो अत्यार सुधी सुषुप्त रहेलो संतानमोह जागृत थयो वासनानो सर्वथा नाश ज करवो जोईये, नहीं तो ते घडियाळनी कमान माफक प्रसंग आवता छटकी जाय छे सुभद्राना संबंधमा पण एमुज बन्यु तेणे चारित्र स्वीकार्यु हतु परन्तु संतानमोह निर्मूळ थयो न हतो ते नाना छोकराओने तेल चोळती, पीठी मसळती, अचित्त पाणीथी स्नान करावती, तेओना केश ओळती, आंखमा काजळ आंजती, हाथ-पग अळताथी रंगती, चंदनादिकनु विलेपन करती, रमवाना घुघरा प्रमुख रमकडाथी रमाडती, खीर प्रमुख खावानी वस्तुओ खवडावती, इत्यादिक अनेक प्रकारोथी छोकराओ साथे चेष्टा करती छोकराओ पण खीर, मोदक प्रमुखना प्रलोभनथी तेनी पासे वारंवार आवता दिनप्रतिदिन बाळको साथेनी चेष्टाथी तेना चारित्र पालनमा शिथिलता आववा लागी हवे तो सुभद्रा साध्वी बाळकोने खोळमा बेसाडवा लागी, पाळामां रमाडवा लागी, जुदी जुदी दिशाओमा बेसाडी तेमनी साथे क्रीडा करवा लागी केटलाकने जांघ ऊपर, केटलाकने छाती ऊपर, केटलाकने खभा ऊपर, केटलाकने मस्तक ऊपर बेसाडवा लागी बाळकना हाल रडा गाई तेमने रक्षित करवा लागी तेना आवा प्रकारना आचरणथी सुव्रता साध्वीए निषेध कर्यो निर्ग्रंथीणीना धर्म समजाव्यो सुभद्राने कह्यु के-नगरजनोना

छोकराओ रमाडवा ए अनाचार छे तेनी आलोचना ले अने निर्विकार मनथी चारित्रनु पालन कर सुभद्राए सुव्रता साध्वीनु कथन स्वीकार्यु नहीं कारण के तेने तो बाळ क्रीडानो रग लाग्यो हतो सुव्रता साध्वीनु कथन सुभद्राए न मानता पोतानो पूर्ववत् करणी चालु राखी त्यारे अन्य साध्वीओ तेनी निंदा ने निभत्सना करवा लागी त्यारे सुभद्राने मनमा विपरीत विचार आव्या खरेखर हठाग्रहीओ पोताना वाकु ने ओता मामाना दोष ज जुए छे पूर्वक पोताना दोषोना विचार न करता सूयप्रकाशन ज दोषित गणे छे कहेवा हता हितकर वाक्य वदनार प्रत्ये कदापि क्रोध न करवो, कारण के तेमा तेने कशो लाभ नथी तेनो हेतु तो हितशिक्षामण आपवानो छे परन्तु आ प्राणीनो ए स्वभाव पडी गयो विचित्र छे के-पोताना इच्छित मार्गमा कदापण अंतराय के विघ्न आवे तो लाभालाभनो विचार कर्या विना ते पोताना आग्रहने ज पकडी राखे छे, एटला माटे ज कह्यु छे के—अप्रियस्यापि पथ्यस्य, वक्तरि च मित्रे ऽप्यलम् । सुभद्रा साध्वीने पण पोताना बाळकोनी साथेनी रमतना निषेधथी विपरीत विचार आव्या ते विचारवा लागी के-ज्यारे हु श्राविका हती त्यारे तो आ साध्वीओ मारो बहुमान करती, मारो आदर-सत्कार करती, मने सारा सारा वचनथी बोलावता, वळी ते वखते हु स्वतंत्र हती, हवे हु साध्वी थई त्यारे तेओ मारी निंदा करे छे, मारी ईर्ष्या करे छे माटे हवे तो आवता कालथी आ गच्छनो त्याग करी अन्यत्र चाली जाउ

बीजे दिवसे तो विचारने तेणे अमलमा पण मूक्या सुव्रता साध्वीना संगनो त्याग कर्या हवे तो ते निरकुश बनी, कोई अटकावनारु न रह्यु स्वच्छंद वर्तनथी ते घणा लोकोना छोकराओ ऊपर मूर्च्छित बनी पूर्ववत् तेने रावडावनी, पीठी चोळवानी, तेल मसळवानी, केश समारवानी विगेरे बधी क्रियाओ करवा लागी आ प्रमाणे लाबा समय सुधी पासत्थिणी प्रमाण वर्तन चलावी, ते मार्गनी आलोचना कर्या विना, अनाचारनु मिथ्यादुष्कृत आप्या सिवाय पदर दिवसना अणसणपूर्वक मृत्यु पामीने सौधर्म देवलोकमा बहुपुत्रिका विमानमा देवी तरीके उपजी

गौतमस्वामीए भगवतने पूछ्यु के-हे भगवत ! तेनु नाम बहुपुत्रिका केम पड्यु ? भगवते जवाब आप्यो के-शक्रेन्द्रनी उत्सव सभा थाय त्यारे आ देवी आठ नव वर्षना कुमार कुमारीओ विकुर्वीने दिव्य नाटक बतावे छे ए कारणथी तेनु बहुपुत्रिका एवु नाम छे बाद गौतमस्वामीना प्रश्नना जवाबमा भगवते कह्यु के-तेनु आयु चार पल्योपमनु छे, पछी गौतमस्वामीए पुन प्रश्न कर्यो के-हे स्वामी ! ते देवी अहींथी च्यवीने क्या उपजशे ? तेना जवाबमा भगवते तेना आगामी भव वर्णवता कह्यु के—

जम्बूद्वीपना भरतक्षेत्रमां विंध्याचळ पर्वतनी तळेटीमां बेभेल गामना सनि-वेशमां ब्राह्मणकुळने विषे आ देवी उपजशे. बारमा दिवसे तेना मातपिता तेनुं 'सोमा' नाम पाडशे. सोमा यौवनवय पामतां तेनुं सौंदर्य खीली निकळशे. सोमा विनयी, विवेकी ने बुद्धिशाळी थशे. माळ थवानी वय तेना मातापिता पोताना भाणेज राष्ट्रकूट साथे तेने परणावशे. राष्ट्रकूट पण तेनी रसनकरादिया प्रथम तेने क्षणमात्र सारसंभाळ राखशे. तेने बाळ, पित्तादिक व्याधि न थाय तेनी पण राष्ट्रकूट पूर्ण काळजी राखशे. राष्ट्रकूट साथे भोग भोगवतां सोमाने प्रतिवर्ष एक-एक जोडलुं जन्मशे. ए प्रमाणे सोळ वर्षमां तेने बत्रीश संतानो थशे. आ प्रमाणे तेने केटलाक छोकराओ, केटलीक कुमारीओ, केटलाक बाळको बधां रमतां. केटलाकने सुवाडशे, केटलाकने खोळामां लेशे, केटलाकने स्तनपान करावशे, वळी कोईने चालतां शीखवाडशे, कोईने स्नान करावशे, वळी कोई दूध मागशे, कोई खावा मागशे, कोई रमवा रमकडां मागशे, कोई लाडु, खीर प्रमुख मागशे, कोई पाणी मागशे, वळी कोई सामाने ताडन करशे, कोई रीसाई जशे, कोई रुदन करवा लागशे, कोई लात मारशे, कोई मारीने नासी जशे, कोई रोदां पाडशे, कोई पछाडो खाशे, कोई धडाधीत करशे, कोई लघुशंका करशे. आ प्रमाणे विविध प्रकारनी क्रियाओथी सोमा रात्रिदिवस काममां ज रहेशे. राष्ट्रकूट पासे भोग भोगववा माटे असमर्थ बनशे. वळी पुत्रादिकने कारणे सोमा अशुचिमय रहेवाथी तेनो देखाव पण मलिन लागशे. राष्ट्रकूटने तेनी पासे जवानुं मन नहीं थाय.

एकदा रात्रिने विषे जागृत थतां ते विचारशे के–हुं आटला बधा पुत्रपरिवार वाळी छोकराओना मळ-मूत्रमां ज लिप्त रहुं छुं. पति साथे मनगमता भोगविलास पण भोगवी शकती नथी, माटे जेओने पुत्र-पुत्री नथी ते ज खरेखर धन्य छे. एवामां सुव्रता साध्वी विहार करतां करतां ते विभेल सन्निवेशमां आवी पहोंचशे. तेना संघाडानी बे-त्रण साध्वी गोचरी अर्थे भमतां भमतां सोमाने त्यां जशे. साध्वीओने आवतां जोई सोमा आसन उपरथी ऊभी थशे. आदर सत्कारपूर्वक वंदन करी चार प्रकारना आहार वहोरावीने कहेशे के–हे पूज्य आर्याओ! मारे पति साथे भोग भोगवतां सोळ वर्षमां सोळ जोडलां जन्म्यां छे. तेना मळ-मूत्रादिक साफ करतां अने अन्य सारसंभाळ करतां हवे हुं कंटाळी गई छुं. माटे मने धर्म संभळावो. साध्वीओ जिनेश्वरभाषित धर्म समजावशे, ते सांभळी सोमाने श्रद्धा उपजशे. प्रातःकाळे पति पासे दीक्षित थवा माटे आज्ञा मागशे, पण राष्ट्रकूट ना पाडी भुक्तभोगी थया पछी दीक्षा लेवानी रजा आपशे. पछी दीक्षा ग्रहणनो विचार पडतो मूकी, सुव्रता साध्वी पासे उपाश्रये बळात्कार सनी थशे. त्यां श्राविका धर्म स्वीकारशे. सुव्रता साध्वी अन्यत्र विहार करी जशे. सोमा श्राविका धर्मनुं रूडी रीते पालन करशे.

थोडा समय बाद सुव्रता साध्वी फरीथी ते सन्निवेशमां पधारशे त्यारे आज्ञा मेळवी सोमा दीक्षा लेशे छठ्ठ, अठ्ठमनी तपस्या करशे निरतिचार चारित्र पाळी, प्रांते एक मासनुं अणशण करी, काळधर्म पामी शक्रेन्द्रनो सामानिक देव थशे त्यां बे सागरोपमनुं आयुष्य पाळी, च्यवी, महाविदेह क्षेत्रमां जन्मीने, सर्व विरति चारित्र स्वीकारीने मोक्षे जशे

कालीनी कथा—

राजगृही नगरीने विषे श्रेणिक राजा हता तेने चेलणा नामनी राणी हती ते नगरीमां गुणशील नामनुं चैत्य हतुं तेमां भगवान महावीर आवीने समवसर्या पर्षदा वांदवा आवी वांदीने ते गया बाद काली नामनी देवीए सपरिवार आवी प्रभुनी समक्ष दिव्य नाटक कर्युं काली देवीना परिवार विगेरे हकीकत उपरनी सुभद्रानी कथामां दर्शावेल बहुपुत्रिका देवीनो माफक जाणवी काली देवी चमर चंचा राजधानीमां कालवडंसग नामना भुवनने विषे काल नामना सिंहासनने शोभावती हती भगवतने समवसर्या जाणी, पोताना सिंहासन उपरथी उठी, सात-आठ पगलां आगळ आवी, शक्रस्तवपूर्वक चैत्यवंदन कर्युं पछी बहु पुत्रिकानी माफक विचारीने, आवीने भगवंत समक्ष नाटक कर्युं नाटक करीने तेना गया बाद श्रीगौतमस्वामीए तेनो पूर्वभव पूछयो एटले भगवंते जणाव्युं के—

आ जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां आमलकल्पा नामनी नगरी हती ते नगरीमां अंबशालवन नामनुं चैत्य हतुं जितशत्रु राजा हतो ते ज नगरीमां काळ नामना गाथापति हतो तेने काळश्री नामनी पत्नी द्वारा काली नामनी पुत्रीनी प्राप्ति थई तेने परणावनार योग न मळवाथी काली वृद्ध थई गई वृद्ध थई जवाथी वर मळवानी आशा नाश पामी गई तेथी ते मनमां ने मनमां ज संताप अनुभववा लागी स्वाभाविक रीते ज तेना स्तन नीचा नमी गया, अंगोपांग शिथिल थई गया, गाल उपर करचलीओ पडी गई लोको तेने "वृद्धकुमारी" एवा नामथी ओळखवा लाग्या

एवामां त्रेवीशमा तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथ अंबशालवनमां समवसर्या तेमनी काया नव हाथप्रमाण ऊंची हती सोळ हजार साधु तथा आडत्रीश हजार साध्वी ओना परिवार हता पुरुषादाणी एवा तेमने समवसरेला जाणी पौरजनो तथा राजा आडंबरपूर्वक वांदवा चाल्या काली पण मातपितानी आज्ञा मेळवी, स्नान करी, शुद्ध वस्त्रालंकार पहेरी, घणी दासीओना परिवारयुक्त धर्मरथमां बेसीने आडंबरपूर्वक वंदनार्थे गई परमात्माने त्रण प्रदक्षिणा आपी, वंदन करीने बेठी एटले परमात्माए धर्मकथा कही ते देशना सांभळी कालीने संसार उपर अनासक्ति थई भगवंतने कह्युं के—मारी दीक्षा लेवानी भावना थई छे हुं मारा मातपितानी आज्ञा लई आवुं त्यां सुधी आप अहीं ज स्थिरता करशो

बाद ते अश्वरथमा बेसी काली स्व-आवासे आवी अने मात-पिताने पोतानी इच्छा जणावी एटले तेओए संमति आपी अने स्वजन-संबंधीओने भोजनार्थे निमंत्र्या पछी कालीने सोना रूपाना कळशवडे स्नान करावीने, रत्नमय आभूषणो पहेरावीने, रेशमी वस्त्रो परिधान करावीने, हजार पुरुषो उपाडे तेवी शिबिकामां बेसारीने सर्व परिजन वर्ग सहित महोत्सवपूर्वक भगवंत समीप आव्या अने पंचमुष्टी लोच करीने परमात्मा पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी काली पांच समिति अने त्रण गुप्तिपूर्वक साध्वीधर्मनुं पालन करवा लागी पुष्पचूला आर्या पासे अगियार अंगनो अभ्यास कर्यो छठ्ठ, अट्ठम आदि तपश्चर्याओ पण अनेक विध करी आ प्रमाणे संयम धर्मनुं पालन करती पृथ्वी उपर विचरवा लागी

एकदा कर्मसंयोगे ते काली साध्वी शरीरनी शोभा करवा लागी, वारंवार हाथ-पग धोवा लागी स्तनना आंतरा, कांखना अंतरप्रदेश, गुह्यप्रदेश वारंवार धोवा लागी ज्यां ज्यां बेसे त्यां त्यां पाणी छांटीने बेसे सुवे तो पण पाणी छांटीने, पछी ज शयन करे आ प्रमाणे तेने करती जोइने पुष्पचूला साध्वीए तेने कह्युं के-आपणे तो श्रमणी कहेवाइए आपण निर्ग्रंथीओने आम करवुं न शोभे-न कल्पे, माटे तमे आलोचना करो काली साध्वीए तेमनुं कथन न स्वीकार्युं अने पूर्ववत् पोतानी करणी चालु ज राखी एटले अन्य साध्वीओ तेमनी निर्भर्त्सना-निंदा करवा लागी काली पोतानी भूल कबूल न करता विपरीत विचार करती के-साध्वी थइ एटले आ लोको मारी निंदा, इर्ष्या विगेरे करे छे हुं गृहस्थिनी हती त्यारे तो स्वतंत्र हती हवे तो हुं आ गच्छनो त्याग करी जउं बीजे दिवसे ते गच्छनो त्याग करी चाली गइ हवे तो ते निरंकुश रीते हस्त-पाद, शरीरना अंगोपांग धोवा लागी छेवटे पंदर दिवसनुं अणशण करी, आलोचना के प्रतिक्रमण कर्या वगर मृत्यु पामी एक पल्योपमना आउखे काली नामनी देवी थई बाद गौतमस्वामीए तेना भविष्य संबंधी पृच्छा करता भगवंते कह्युं के-त्यांथी च्यवीने महाविदेहक्षेत्रमां उत्तम कुळमां जन्मशे अने त्यांथी चारित्र धर्मनुं सम्यग् रीते आराधन करी मोक्षे जशे

हे गौतम ! काली नामनी साध्वीनी माफक राइ प्रमुख २०६ साध्वीओ भगवंत पार्श्वनाथने हती ते पैकी ११८ भवनपतिमां गइ, ६४ व्यंतरेंद्रो थइ, ४ सूर्यनी ने चार चंद्रनी अग्रमहिषी थइ, आठ सौधर्मेंद्रनी अने आठ इशानेंद्रनी अग्रमहिषी थई आ बधी साध्वीओ त्यांथी च्यवी, महाविदेहमां उत्तम कुळमां जन्मी, चारित्र ग्रहण करी मोक्षे जशे

आ प्रमाणे सुभद्रा ने काली प्रमुख साध्वीनी माफक जे संतानमोह राखे छे अगर तो शरीर-शुद्धि पर आसक्ति धरावे छे ते पोतानुं श्रेष्ठ संयम-फळ गुमावी बेसे छे अने कोटी मूल्यनुं रत्न एक कोडीमां वेची नाखवा जेवुं आचरण करे छे, माटे साध्वी थया पछी पासत्थीणाने योग्य वर्तन कदापि पण न करवुं हवे

कई साध्वी गच्छ-शासनने शत्रुरूप छे ते दर्शावे छे—

गच्छइ सविलासगई, सयणीअ तूलिअं सविब्बोअं ।
उव्वट्टेइ सरीरं, सिणाणमाईणि जा कुणइ ॥ ११४ ॥
गेहेसु गिहत्थाण, गतूण कहा कहेइ काहीआ ।
तरुणाइ अहिवडते, अणुजाणे साइ पडिणीआ ॥ ११५ ॥

[गच्छति सविलासगति , शयनीय तूलिका सविब्बोकम् ।
उद्वर्तयति शरीर, स्नानादीनि या करोति ॥ ११४ ॥
गृहेषु गृहस्थाना, गत्वा कथा कथयति काथिका ।
तरुणादीन् अभिपतत', अनुजानाति सा प्रत्यनीका ॥११५॥]

गाथार्थ—विलासयुक्त गतिथी वेश्यानी माफक भ्रमण करे, रु आदिथी भरेली तळाईमा ओशीकापूर्वक शयन करे, तेलादिकथी शरीरनु उद्वर्तन (पीठी) करे, स्नानादिकथी शरीर-शोभा वधारे, गृहस्थोना घरे जई इच्छानुसार कथा करे, सामा आवता युवान पुरुषोने सत्कार-वचनना आडबरथी अभिनंदे-आवा वर्तनवाळी साध्वीने शासननी शत्रु जाणवी.

विवेचन—अगना मरोड करवो, लहेकापूर्वक नेत्रकटाक्ष करवो, वांकी नजर करी जोवु-ए बधा विलासना लक्षण छे केटलाक आचार्यो नेत्रना विकारने (कटाक्षने) विलास कहे छे पींजेला रुना भरेला गादलानो तेमज ओशीकानो शयनसमये उपभोग करवो के बेसती वखत पण रुनी भरेली नानी-नानी गादडीना उपयोग करवो ते चारित्रपात्र साध्वी माटे उचित नथी पीठी चोळी स्नान करवाथी शरीर उपरनो मळ दूर थाय छे अने देहकाति वधे छे परतु साध्वीने माटे ते बधा निषिद्ध छे आ तेवु वर्तन करे तो तेने साध्वी नहि परन्तु शासननी शत्रु जाणवी

साध्वीए गृहस्थना घरे जईने के उपाश्रयमा पण रहीने सयमयोग सिवायनी बीजी कथा न करवी स्वाध्यायादि करवाने स्थाने देशकथादि चार विकथा करे ते साध्वीधर्मने उचित नथी वळी आहारादिने अथ, वस्त्र पात्रने निमित्ते, पोतानो यश फेलाववाने अथ ए पोताना बहुमान-पूज्यभावने अर्थे जो धर्मोपदेश करे तो पण ते साध्वीधर्मने लायक नथी आ बाबतमा वादी प्रश्न करता पूछे छे के-भगवते तो पाच प्रकारनी वाचना(सज्झाय)कही छे-धर्मकथा, वाचना, पृच्छना, अनुप्रेक्षा ने परावर्तना स्वाध्यायमां धर्मकथानो समावेश थाय

छे अने तेनाथी भव्य जीव प्रतिबोध पामे छे, तीर्थनी वृद्धि थाय छे, धर्म कथाथी निर्जरा थाय छे तो तेनो तमे निषेध शा माटे फरमावो छो? आचार्य भगवत तेनो जवाब आपता कहे छे के-धमकथा ए स्वाध्यायनु पांचमु धग छे ते बराबर छे, परन्तु दिवस ने रात आठे पहोर धमकथा न करवी बधो समय धर्मकथामा व्यतीत करवाथी हानि थाय पडिलेहणादिक चारित्रना योग छे माटे ते करवाना समये स्वाध्याय न करवो, सूत्र, अर्थनी पोरिसीने समये स्वाध्याय न करवा कमक तेथी शिष्यादिकने भणाववानो अतराय पडे, वळी आचार्य, उपाध्याय के ग्लान साधुनी वेयावच्चमा खामी आवे आ प्रमाणे धर्मकथानो खामी समजवा उपरात धमकथा कहेवामा खूब काळजी राखवी जोइए (१) क्षेत्र जोइने विचारवु के-आ क्षेत्रमा साधु-साध्वीनो निर्वाह थशे, लोको भद्रिक होवाथी धम समजशे, दाननी रुचि रहेशे, श्रद्धावाळा थशे, साधु-साध्वीने उपकारक थशे-आवो विचार करी योग्य क्षेत्र होय तो ज धम कथा करवी (२) राजादिक महर्द्धिक पुरुष आवे तो धर्मोपदेश करवो (३) उत्तम कुळनी कोई व्यक्ति आवे तो उपदेश आपवो कारण के तेनी साथोसाथ नगरजनो पण प्रतिबोध पामे आ प्रमाणे पूर्वापरनो विचार कर्या वगर जे साधु या साध्वी धर्मकथा कर्या करे छे ते काथिक-कथा करनार जाणवो श्रीनिशीथ-चूर्णीना तेरमा उद्देशाना प्रातभागमा कह्यु छे के-"जे भिक्खू काहीअ वदइ वदत वा साइज्जति" जे साधु काथिकने वादे छे, अन्य पासे वदाव छे अने वंदन करनारने सारा कहे छे ते प्रायश्चित्त पात्र थाय छे

युवान रूपवत पुरुषने आवता जाणी कहे के—"तमे भले आव्या, वळी पण वारवार आवजो, कई काम होय तो कहेजो" आ प्रमाणे आदर-सत्कार करना वचनो उचारे ते साध्वी न जाणवी पण शासननी शत्रु जाणवी, कारण के ते भगवतनी आज्ञा लोपनारी छे आ विषयने वधु स्पष्ट करता कहे छे के—

वुड्ढाणं तरुणाण, रत्तिं अज्जा कहेइ जा धम्म ।
सा गणिणी गुणसायर !, पडिणीआ होइ गच्छस्स ॥ ११६ ॥
जत्थ य समणीणमसं—खडाइ गच्छम्मि नेव जायति ।
तं गच्छं गच्छवर, गिहत्थभासा उ नो जत्थ ॥ ११७ ॥

[वृद्धाना तरुणाना, रात्रौ आर्या कथयति या धर्मम् ।
सा गणिनी गुणसागर !, प्रत्यनीका भवति गच्छस्य ॥ ११६ ॥
यत्र च श्रमणीना-मसखडानि गच्छे नैव जायन्ते ।
स गच्छो गच्छवर!, गृहस्थभाषास्तु न यत्र ॥ ११७ ॥]

गाथार्थ—हे इंद्रभूति गौतम ! रात्रिसमये जे मुख्य साध्वी वृद्ध के तरुण वयवाळाने धर्मकथा संभळावे छे तेने गच्छनी वैरिणी जाणवी

जे गच्छमा साध्वीओ परस्पर क्लेश-कंकास करती नथी तेमज गृहस्थना जेवी सावद्य के खुशामतभरी वाणी बोलती नथी ते गच्छ सर्व गच्छोमां श्रेष्ठमा श्रेष्ठ जाणवो.

विवेचन—साध्वीए रात्रिने विषे युवान तेमज वृद्ध पुरुषोनी समक्ष, उपलक्षणथी स्त्री के पुरुषोनी संयुक्त सभा समक्ष के दिवसे पुरुषो समक्ष धर्मकथा करवानो निषेध छे अहीं सूत्रमां 'गणिनी' एवो शब्द आप्यो छे तेनो अर्थ मुख्य साध्वी छे तेना उपलक्षण थी एम छे के—गच्छमां वडील साध्वीने पण रात्रिने विषे धर्मकथा करवानो निषेध छे तो बीजी साध्वीओने माटे पूछवु ज शु ?

अहीं वादी प्रश्न करता पूछे छे के—पुरुषोनी सभामां साध्वी धर्मोपदेश करे तेमा शो दोष ? तेनो जवाब ए छे के—जेम साधुने एकली स्त्रीओनी सभामा उपदेश करवानो निषेध छे तेम केवळ पुरुषोनी सभामां साध्वीने उपदेश आपवानो निषेध छे श्रीउत्तराध्ययनसूत्रमां कह्यु छे के—" नो इत्थीण कह कहित्ता हवइ से निग्गंथे, त कहमिति ? आयरियाह-निग्गंथस्स खलु इत्थीण कह कहेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पज्जेज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायंक भवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसिज्जा, तम्हा खलु निग्गंथे नो इत्थीण कह कहेज्ज " सि० एनो अर्थ के—स्त्रीओनी कथा कहेता साधुने ब्रह्मचर्यमा शंका थाय अर्थात् मन चलित थाय, ब्रह्मचर्यनु फळ ता क्यारे मळशे ? एम वितिगिच्छा थाय होय तो विषयसेवन करवानी वांछा थाय, चारित्रनो भंग थाय, उन्माद प्रगटे दीर्घकालीन रोगोत्पत्ति थाय, केवलीप्ररूपित धर्मथी भ्रष्ट थवाय माटे साधुए केवळ स्त्रीओनी समक्ष धर्मकथा न करवी आवी ज रीते साध्वीए केवळ पुरुषो समक्ष कथा न करवी, तेथी ब्रह्मचर्यना दश स्थानो पैकी चोथा स्थानना भंग थाय छे

वळी श्रीस्थानांग सूत्रमा पण कह्यु छे के—" नो इत्थीण कह कहेत्ता हवई " जेवी रीते साधुओ बीजी ब्रह्मचर्यगुप्ति जाण्वे छे तेम साध्वीए पण पाळवी जोईए तेथी जेम साधुने स्त्रीओने मध्ये कथा करवानु वर्जन कर्यु तेम स्त्रीने पुरुषोने विषे धर्मकथन करवानु निषिद्ध छे जे साध्वी आ आज्ञानु उल्लंघन करे छे तेने शासननी शत्रुभूत जाणवी

जे गच्छमां साध्वीओ परस्पर कलह-कंकास के ईर्ष्यादि न करती होय निंदा-कुथली-गृहस्थकथानी न करती होय, 'आ मारा मामो, आ मारो भाई, आ मारा पिता, आ मारी माता' इत्यादि गृहस्थोचित भाषा बोलती न होय तेमज गृहस्थ साथे 'आवो, अमुक वस्तु लावजो, आ काम करजो' ए प्रमाणे सावद्य भाषापूर्वक वातचीत न करती होय तेमज 'तमारा जेवा दानवीर कोण छे? तमे ज शासनने शोभावनार छो, तमो धर्मात्मा छो' तेवी खुशामत भरी भाषा न बोलती होय ते गच्छ ज श्रेष्ठ गच्छ जाणवो. स्वेच्छाचारी साध्वीना विशेष कुलक्षणो जणावता कहे छे के—

जो जत्तो वा जाओ, नालोअइ दिवसपक्खिअं वावि ।
सच्छंदा समणीओ, मयहरिआए न ठायंति ॥ ११८ ॥
विंटलिआणि पउंजति, गिलाणसेहीण नेव तप्पंति ।
अणगाढे आगाढं, करंति आगाढि अणगाढं ॥ ११९ ॥
अजयणाए पकुव्वंति, पाहुणगाण अवच्छला ।
चित्तलयाणि अ सेवंते, चित्ता रयहरणे तहा ॥ १२० ॥
गइविब्भमाइएहिं, आगारविगार तह पगासंति ।
जह वुड्ढगाण मोहो, समुईरइ किं तु तरुणाण ? ॥ १२१ ॥
बहुसो उच्छोलिंती, मुहनयणे हत्थपायकक्खाओ ।
गिण्हेइ रागमंडल, सोइंदिअ तहय कव्वट्टे ॥ १२२ ॥

[यो यावान् वा जातः, नालोचयन्ति दैवसिकं पाक्षिकं वापि ।
स्वेच्छाचारिण्यः श्रमण्यः, महत्तरिकाया न तिष्ठन्ति ॥ ११८ ॥
विंटलिकानि प्रयुञ्जन्ते, ग्लानशैक्ष्यान् नैव तर्पयन्ति ।
अनागाढे आगाढं, कुर्वन्ति आगाढे अनागाढम् ॥ ११९ ॥
अयतनया प्रकुर्वन्ति, प्राघूर्णिकानां अवत्सला ।
चित्रलानि च सेवन्ते, चित्राणि रजोहरणानि तथा ॥ १२० ॥
गतिविभ्रमादिभिः, आकारविकारं तथा प्रकाशयन्ति ।
यथा वृद्धानां मोहः, समुदीर्यते किं पुनः तरुणानाम् ? ॥ १२१ ॥

सहसा उच्छोलयन्ति, मुखनयनानि हस्तपादकक्षाः ।
गृह्णन्ति रागमंडल, श्रवणेन्द्रियं तथैव करपस्था. ॥ १२७ ॥]

गाथार्थ—दैवसिक, रात्र, पाक्षिक, चातुर्मासिक अथवा सांवत्सरिक जे अतिचार जेटलो थयो होय तेटलो न आलोचे, मुख्य साध्वीनी आज्ञामां न रहे, अष्टांग निमित्तादिक अथवा मंत्रतंत्रादिकनो प्रयोग करे, ग्लान के नव दीक्षितनी औषध, वस्त्र, पात्रादिकवडे सारसंभाळ न करे, खास न करवा जेवुं कार्य होय ते, अवश्य करवा लायक जेवुं लेखी करे अने खास करवा जेवुं कार्य बेदरकारी राखी न करे, संयमकरणी वेठ उतारवानी माफक यतना रहित करे, ग्रामांतरथी आवेल थाकेला, भूख्या के तरस्या साध्वीओनी निर्दोष अन्न-पाणी वडे भक्ति-बहुमान न करे, विविधरंगी वस्त्रो वापरे तेमज विचित्र रचनावाळा रजोहरण वापरे, गति-विलासादिकवडे स्वाभाविक एवा हावभाव देखाडे के-वृद्ध स्थविर साधुओने पण तत्काळ मोह [वेदोदय] जागे, वगर कारणे वार वार मुख, नेत्र, हाथ, पग अने कक्षादिक धोवे अने रमत के मल्हारादिक राग-रागिणीओ शीखी लई एवी रीते ललकारे के जेथी तरुण पुरुषोनी के बाळकोनी श्रवणेंद्रियने आकर्षित करे. हे गौतम ! आवी साध्वीओने अनार्या, नटडी तेमज स्वच्छंदाचारिणी जाणवी

विवेचन—गच्छमां वडेरी साध्वीने महत्तरिका कहेवामां आवे छे जेम पुत्रे पितानी, शिष्ये गुरुनी किंकरे शेठनी आज्ञामां रहेवुं जोइए तेम साध्वीए महत्तरिकानी आज्ञामां रहेवुं जोइए, कारण के आज्ञा ए अंकुश छे अंकुश विनाना प्राणी क्यारे भूल करी बेसे ते न कहेवी शकाय तेवी वात छे छद्मस्थ जीव मात्र भूलने पात्र छे, तो शास्त्रकारे बुद्धिमान मानवीओने पण आज्ञारूपी अंकुशमां रहेवा फरमाण करी छे तेथी साध्वी महत्तरिकानी आज्ञा उत्थापे अने दैवसिक रात्रिक, पाक्षिक, चातुर्मासिक के छेवट सांवत्सरिक अतिचार न आलोचे ते साध्वी आर्या नथी पण अनार्या ज छे

१ निमित्त के मंत्र-तंत्रादिकनी वात करवी नहीं तेमज तेनो उपयोग पण न करवो, कारण के तेमां रक्त रहेवाथी रोगी वा तो नवीन साध्वीनी औषधादिकथी सारसंभाळ लई शकाती नथी तेमज अध्ययन कराववा योग्य साध्वीने अभ्यास कराववामां खामी आवे छे वळी निमित्त के मंत्र-तंत्रनुं काम एक वार शरू कर्या पछी तेनो मर्यादा सचवाती नथी निमित्तशास्त्रमां प्रावीण्य प्राप्त थया पछी कीर्ति के यशनी वांछा थवे छे अने चारित्ररक्षाना नियमो जाळववामां शिथि

त्ता आव उ आटला खातर ज श्रीपुक्खरवरदी(श्रुतस्तव)मा कह्यु छे के-सीमाधरस्स वंदे। अवश्य करवा योग्य क्रिया आगाढ कहवाय छे योगवहनादि क्रियामा य तु-अल्पु आवरण करे त साध्वी धर्मने लायक नथी

जेम माता पुत्र या पुत्रीनु रूडी रीते पालन करे तेम पाच समिति अने त्रण गुप्तिरूपी अष्ट प्रवचन माता सयमधर्मनु रक्षण कर छ साध्वीए गमना गमनमा इर्यासमिति अन बोलवामां भाषासमिति विगेरेनु पूण लक्ष राखवु जोइए तेन बदले वेठ* उतारवानी माफक अयतनापूर्वक-उपेक्षाभावथी करण कराय ते कदापि फळदायक थतो नथी गृहस्थाश्रममा पण अतिथि आव तो तेनी आगता-स्वागता करवानो रिवाज (फरज) छे तेम अन्य कोइ साध्वी ग्रामातरथी आवी होय तो तेना सत्कार करवा, तेनो श्रम दूर करवानो प्रयास करवा अने शुद्ध अन्नपानादिकथी बहुमान करवु, जो आ प्रमाण न वर्ताय ता साध्वी पोताना सयमधर्मथी भ्रष्ट थाय छ रंगेला वस्त्र क डांडो वापरे, किनारवाळा भरेला आघा राख त साध्वी स्वच्छन्दाचारी जाणवी.

मुख मचकोडे, नेत्र वाका करे, स्तन ऊचा बाधे, हाथणीनी पेठे गति करे, चालता चालता आडु अवळु जोया करे-आ बधा विकारना लक्षणो छ आवी रीत वतन करतो साध्वी वृद्ध वयवाळाने पण मोहित करे, कामज्वर प्रगटाव तो अन्य युवान वयवाळाने माटे तो पूछवु ज शु ? तेओने तो मोह प्रगटे ज आवी रीत मोहोदय प्रगटावबाथी परिणाम विपरीत आव अने परिणामे शासन नी विडंबना थाय माट आवी भ्रष्टाचारी साध्वीथी गच्छनु रक्षण करवु

जे साध्वी निरतर वगर कारण हस्त-पादादिनु प्रक्षालन कर्या करे, जुदी जुदी राग-रागणीओ शीख्या करे ते पात स्वच्छन्दथी चूक छे अन अन्यने मोह पमाडे छ गातादिक कारण मोहनो छ अन ए रीत एक वार तेनी शरुआत थइ क पछी क्रम चूकाइ जवाय छ अन जेम पर्वतना शिखर ऊपरथी पडेलो प्राणी नीचे तळेटीए ज पहोंचे छे तेम साध्वी आ रीत पतित थई त अध पतन ज पामे छ पछी तने माथा ऊपर शणगार करवानी, नेत्रमा अंजन करवानी, मस्तकमा सिंदुर पूरवानी, कपाळमा तिलक करवानी, गळामां पुष्पमाळा पहेरवानी, मुखमा ताबूल राखवानी, शरीर चदनादिक्नु विलेपन करवानी इच्छा थाय छ

१२८ मी गाथाना उत्तराध पाठांतरमा आ प्रमाण पण आव्या छे-गेण्हणरामण मडणभोयति य सा उ वच्चइ। आ उत्तराधना अर्थ ए छे क-गृहस्थना बाळकने

* राजा अगर तो अधिकारीओ पोताना कार्य माटे हलका वर्णना लोकोने बोलावे छे अने तेनी पासे काम करावी लई पण बदलो आपता नथी तेने 'वेठ' कहेवामा आवे छे एकाजन अने ते लोकोने काम करवु पडे छे पण तमना मनमा काम करवानो उत्साह होतो नथी

ग्रहण करे, तने विविध क्रीडापूर्वक रमाडे अने तने भोजन करावे ते साध्वी नथी पण नटडी जाणवी गृहस्थाना बालकोने रमाडवाथी, तेना अतिशय परिचय करवाथी कवु विपरीत परिणाम आव छे ते माटे अगाउ पृ ३३९ ऊपर बहुपुत्रिका(सुभद्रा)नी कथा आवी गई छे हवे कवी रीते साध्वीए शयन करवु ते जणाव छे—

जत्थ य थेरी तरुणी, थेरी तरुणी अ अतरे सुअइ ।
गोअम ! त गच्छवरं, वरनाणचरित्तआहारं ॥ १२३ ॥

[यत्र च स्थविरा तरुणी, स्थविरा तरुणी च अतरिताः स्वपन्ति ।
गौतम ! त गच्छवर, वरज्ञानचारित्राधारम् ॥ १२३ ॥]

गाथार्थ—जे गच्छमा स्थविरा (वृद्ध) साध्वी पछी तरुणी अने तरुणी छी स्थविरा एम अतरे सूवे छे ते गच्छने हे गौतम! उत्तम ज्ञान अने चारित्र-ना आधाररूप जाणवो

विवेचन—बे वृद्ध साध्वीना वच्च एक तरुण साध्वीने सूवु उचित छे, कारण के जो युवान साध्वीओ पासे पासे सूवे तो शयनावस्थामा एकबीजाना हस्त जाय स्तन के बीजा अवयवाने स्पर्शो ते समये पूर्व करेल क्रीडा याद आवता मन विकृत बनी जाय परन्तु जो वृद्ध साध्वी वच्चे सूता होय तो वावी स्थिति न बने माटे जे गच्छमा आवो क्रम सचवातो होय ते गच्छ ज्ञानवृद्धानने माटे आधारस्थभ समान छे

हवे कइ साध्वीओ फक्त मुंडित छे पण साची साध्वीओ नथी ते त्रण गाथावडे जणावे छे—

धोयंति कंठिआओ, पोअति तह य दिंति पोत्ताणि ।
गिहिकज्जचिंतगाओ, न हु अज्जा गोअमा ! ताओ ॥१२४॥
खरघोडाइट्ठाणे, वयति ते वावि तत्थ वच्चति ।
वेसत्थीसंसग्गी, उवस्सयाओ समीवम्मि ॥ १२५ ॥
सज्झायमुक्कजोगा, धम्मकहाविगहपेसणगिहीण ।
गिहिनिस्सिज्ज वाहिंति, सथव तह करतीओ ॥ १२६ ॥

[धोवन्ति कण्ठिका, प्रोतयन्ति तथा च ददति वस्त्राणि ।
गृहिकार्यचिन्तिकाः, न हु आर्या गौतम ! ता. ॥ १२४ ॥
खरघोटकादिस्थाने, व्रजन्ति ते चापि तत्र व्रजन्ति ।
वेश्यास्त्रीसंसर्गि , उपाश्रयः समीपे ॥ १२५ ॥
स्वाध्यायमुक्तयोगा., धर्मकथाविकथाप्रेषणगृहिणाम् ॥
गृहिनिषद्या बाधन्ते, संस्तवं तथा कुर्वन्त्यः ॥ १२६ ॥]

गाथार्थ—जे साध्वी वगरकारणे जलथी कंठप्रदेशने धोवे, गृहस्थोना मोती आदि परोवी आपे, बाळको माटे वस्त्र-औषधादि आपे-आ प्रमाणे गृहस्थोचित कार्य करवामा तत्पर रहे ते साध्वीने हे गौतम ! साध्वी न कहेवी.

*जे साध्वी हाथी, घोडा, गधेडा आदिना स्थाने जाय अथवा तेओ साध्वीना उपाश्रय पासेथी निकळे त्यारे खुशी थाय, वेश्या स्त्रीनो संग करे अथवा तो जेना उपाश्रयनी नजीक वेश्यागृह होय तेने साध्वी न कहेवी

वळी स्वाध्याय योगथी रहित होय, धर्मकथाने स्थाने विकथा करे, गृहस्थोने विविध प्रकारनी प्रेरणा करे, गृहस्थना आसन ऊपर बेसे अने गृहस्थोनो परिचय करे तेने फक्त उदरभरी साध्वी जाणवी.

विवेचन—जे साध्वो वगर प्रयोजने कंठप्रदेश धोवे गृहस्थना मोती परोवी आपे, परवाळानी माळा करी आपे, सायमा दोरो परोवी आपे, तेना आभरणादिक स्वच्छ करी आपे, बाळकने माटे वस्त्रनु दान करे, तेने दूध आपे, मांदा बाळकनी मावजत माटे पोतानी पासेथी औषधादि आपे, जडीबुट्टी वापरे, प्रस्वेदादिकने लुछवा माटे जळथी आर्द्र(भीना) करेला वस्त्रो शरीर ऊपर वार वार घसया करे, "आ गृहस्थने घरे दीकरो आवे तो सारु,अमुक गृहस्थ व्यापारमा सारु कमाय तो ठीक, अमुक गृहस्थ स्त्रीने परस्पर प्रेम वृद्धि पामे तो सारु " ए प्रमाण गृहस्थोचित चिंताओ वारवार कर्या करे तेवी साध्वीने हे गौतम ! तारे आर्या न समजवी पण गृहस्थनी चाकरडी मात्र जाणवी

गधेडा, बळद घोडा, हाथी, बकरा विगेरे तिर्यचो जडबुद्धिवाळा होय छे तेओ पोताना स्थानमा गमे ते स्थितिमा रहेता होय छे तेवी साध्वीने तेवा

* १२५ मा गाथाना पूर्वार्धना अर्थ बीजा रीते पण आपेल छे, जे नीचे प्रमाणे-"ज्या दास-दासी जेवा तमज जुगारी जेवा धूर्तजनोनी पासे काळे-भदाळे साध्वीओ जाय अगर तो तेवा शठ लोको साध्वीना उपाश्रये आवे " आ अर्थ उचित लागे छे

स्थाने जवाय नहि, कारण के स्त्रिनी चित्तदशा जोता कामादीपन थाय माटे शास्त्रकारोए तेवा तुच्छ स्थानमा जवाना निषेध फरमाव्या छे 'मरो' नो अर्थ दास दासी अने घोडनो अथ लुच्चा माणस पण थाय छे तेनो परमार्थ ए छे के-दास दासी जेवा लुच्चा ने जुगारी, भाट, भवाया जेवा धूतजनो ज्या वसता होय तेवा स्थळे साध्वीए जवु नहीं तेमज तेवा लोकोने साध्वीए स्वसमीपे पटले प उपाश्रये आववा देवा नहीं कारण के तेवा लोको छिद्र वेषी होय छे प्रसग मळे तो मन चलायमान पण समय थाय के तेथी तेवा मळजनानो ससर्ग इच्छवो ज नहीं श्रीव्यवहारभाष्यना सातमा उद्देशामा कह्यु छे के—"तह चेव हत्थि साला-घोडगमालाण चेव आसन्ने । अति तह जतसाला, काहीयत्तव कुव्वति ॥ १ ॥" जे साध्वी हस्तिशाळा, अश्वशाळा के शस्त्रागार पासे थईने जाय तनमा कथिकपणु करे ते साध्वी नथी

वेश्या के पण्यागनानो कदापि साध्वीए ससग न करवो तेनी पासे तो विलास अने मोजशोखनीज कथा होय छे वळी उपाश्रयनी नजीक वेश्या स्त्रीनो वास होय तो तेवा स्थाननो त्याग करवो कारण के वेश्या स्त्रीने त्यां जनारा अनेक छेलबटाउ, विलासी लोकोनी आवजाव विशेष थाय छे अने तेओनु आवागमन उपाश्रयनी पासे थईने थाय पटले पण ब्रह्मचर्यनी गुप्तिमा खामी आवे वळी वेश्या स्त्रीने त्या सगीत के नृत्यादिक थाय त्यारे चचळ चित्तने लीधे स्वाध्यायमा, पडिलेहणादि आवश्यक क्रियामा तेमज यथार्थ चारित्र पालनमा स्खलना थाय माटे तेवा स्थाननो तो अवश्य त्याग ज करवो वेश्यानी साथोसाथ तेनी दासानो, ओगणी प्रमुख वेषधारिणीओ पण परिचय न राखवो हे गौतम ! जे साध्वीओ उपर कह्या तेवा प्रकारनो आश्रय लेती होय ता ते साध्वी ज नथी पण केवळ भ्रष्टाचारिणी समजवी

स्वाध्याय पटले भणवु भणाववु, ते कायथी वेगळी रहे अर्थात् प्रथम पद "सज्झायमुक्कजोगा" ने स्थाने पाठातरमा "छकायमुक्कजोगा" पवो पाठ छे तेना अर्थ ए छे के-षड्जीवनिकायनी यतनामा बेदरकार रहे, धर्मध्यान स्थाने परस्पर के विधवादिक स्त्रीओनी साथे राजकथा, भक्तकथादिक चार प्रकारनी विकथा करे, गृहस्थना कायसबधी चिंता राखे, गृहस्थ आवे तो तेने क्षेमथी आसन आपे, पोते गृहस्थने त्या जाय त्यारे चाकळा, गादी प्रमुख ऊपर बेसे, गृहस्थना घरमा आटो फेरा मारे, गृहस्थनी रूबरूमा के पाछळ खुशामत करे, तेना स्वजनोनी प्रशसा करे, गृहस्थनी साथे रातदिवस वाता ज कर्या करे 'हु कहु तमे आ कार्य करो, तमारे आम करवु जोइए' ए प्रमाणे गृहस्थोचित कार्यमा आसक्ति धरावे तेवी साध्वीने हे गौतम ! तारे उदरभरी-फक्त पेट भरनारी ज जाणवी

कई साध्वी गणिनी पदने योग्य छे ते बे गाथावडे दर्शावे छे-

समा सीसपडिच्छीणं, चोअणासु अणालसा ।
गणिणी गुणसंपन्ना, पसत्थपुरिसाणुगा ॥ १२७ ॥
संविग्गा भीयपरिसा य, उग्गदंडा य कारणे ।
सज्झायज्झाणजुत्ता य, संगहे अ विसारया ॥ १२८ ॥

[समा शिष्यप्रतीच्छिकाना, चोदनासु अनलसा ।
गणिनी गुणसम्पन्ना, प्रशस्तपुरुषानुगता ॥ १२७ ॥
संविग्ना भीतपर्षद् च, उग्रदंडा च कारणे ।
स्वाध्यायध्यानयुक्ता, संग्रहे च विशारदा ॥ १२८ ॥]

गाथार्थ—पोतानी शिष्याओने तथा प्रतीच्छिकाओने समान गणनार, चोयणा, पडिचोयणादिकमां आळस रहित, प्रशस्त पुरुषोने अनुसरनारी अने ज्ञान-दर्शन-चारित्रगुणसपन्न साध्वीने महत्तरिका-गणिनीपद योग्य जाणवी वैराग्य रंगमां लीन चित्तवाळी, भवभीरु परिवारवाळी, अपराध आव्ये सख्त शिक्षा करनारी, सज्झाय ध्यानमां सावधान सुसाध्वीओना उपकारार्थे वस्त्र-पात्रादिकनो संग्रह करवामां कुशळ एवी साध्वी गणिनी पदने लायक छे.

विवेचन—महत्तरिका-वडेरी साध्वीना लक्षणो दर्शावता कहे छे के-ते समभावी होय पोतानी शिष्याओ तेमज ज्ञान या वैयावच्चादिक कारणोने अंगे आवेली अ यगच्छीय साध्वीओ प्रत्ये समानभाव राखे जेवी काळजी पोतानी शिष्याओना वस्त्र-पात्रादिक के औषध-भेषजनी राखे तेवी ज काळजी प्रतीच्छिका-अन्य शिष्याओ माटे राखे चोयणा-पडिचोयणादिकवडे तेने प्रेरणा कर्या करे, तेमां कोई पण प्रकारनो प्रमाद न दर्शावे जेम वहेतु जळ निर्मळ रहे छे तेम चोयणा, पडिचोयणादिकवडे संयम शुद्ध रीते पळाय छे चारित्र पालनमां कंईक प्रमाद थतो जोवाय के मुख्य साध्वी प्रेरणा करे पंचम गणधर श्रीसुधर्मास्वामीए प्ररूपेलो शास्त्रविहित मार्ग ज शुद्ध छे एम मानीने जैन धर्मनु यथार्थ पालन करनारी, तथा तेमणे दर्शावेला विधि-निषेधने अनुसरनारी तेमज ज्ञान, दर्शन अने चारित्रना गुणोथी युक्त साध्वी गणिनी पदने योग्य छे

'यथा राजा तथा प्रजा' ए सूत्रने अनुसारे मुख्य पुरुषनु जेवु वर्तन होय छे तेवु आचरण तेनी नीचेना माणसो आचरे छे गच्छमां वडेरी साध्वीनो वर्ताव संवेगरसाढ्य न होय तो तेनी प्रतिभा अन्य साध्वीओ ऊपर न पडे तेटला खातर

आ शास्त्रकारे पहेलुं विशेषण ए आप्युं के-ते वैराग्य रंगमां लीन होवी जोईए साथे वसनारी साध्वीओने तेना डर-भय लागवो जोईए, कारण के तेवो भय होय तो लघु शिष्यादिक वड पण अकार्य करता संकोच पामे आवो भयभीत परिवार होय ते बीजुं लक्षण कह्यु, छतां पण कोई साध्वी भूलने पात्र थती तो तेने उग्र प्रायश्चित्त आपता संकोच न राखे जो ए प्रमाणे एक वार अपराधनी शिक्षा न करे तो देखादेखीथी या तो गुरुणीनी नबळाई जाणी अईने अन्य साध्वीओ भूल करवा प्रेराय माटे मुख्य साध्वीए कारण प्रसंगे पोतानी सत्तानो उपयोग करवो जोईए पहेले के आलोचना आपवी गच्छनी सारसंभाळ करतां जे शेष समय रहे तेमां पांच प्रकारनो स्वाध्याय करे अने चार प्रकारना ध्यान पैकी बे धर्म अने शुक्ल ध्यावे जेम एक गृहस्थ पोताना कुटुंबना पालनार्थे सर्व प्रकारनी चिंता धरावे छे तेम मुख्य साध्वीए पण पोताना परिवारनी साध्वीओना उपकारार्थ निर्दोष वस्त्र, पात्र, औषध, ज्ञानोपकरण विगेरे वस्तुओनो संग्रह करी राखवो जोईए वळी पोतानो परिवार वधारवामां-नवीन शिष्याओ करवामां पण ते कुशळ होवी जोईए आ प्रमाणेना लक्षणो जे साध्वीमां होय ते महत्तरिका पदने लायक गणाय छे

वचनगुप्तिने आश्रयीने साध्वीए केवुं वर्तन करवुं जोईए ते त्रण गाथावडे बतावे छे—

जत्थुत्तरपडिउत्तर, वडिआ अज्जा उ साहुणा सद्धिम् ।
पलवंति सुरुट्ठावी, गोअम ! किं तेण गच्छेण ? ॥ १२९ ॥
जत्थ य गच्छे गोयम !, उप्पण्णे कारणमि अज्जाओ ।
गणिणीपिट्ठिठिआओ, भासती मउअसद्देण ॥ १३० ॥
माऊए दुहिआए, सुण्हाए अहव भइणिमाईणम् ।
जत्थ न अज्जा अक्खइ, गुत्तिविभेयं तय गच्छम् ॥१३१॥

[यत्र उत्तर प्रत्युत्तर, वृद्धा आर्याः साधुना सार्धम् ।
प्रलपन्ति सरोषा अपि, गौतम ! किं तेन गच्छेन ? ॥ १२९ ॥
यत्र च गच्छे गौतम !, उत्पन्ने कारणे आर्याः ।
गणिनीपृष्टिस्थिता, भाषन्ते मृदुकशब्देन ॥ १३० ॥
मातु' दुहितुः स्नुषायाः, अथवा भगिन्यादीनाम् ।
यत्र न आर्या आख्याति, गुप्तिविभेद सको गच्छः ॥ १३१ ॥]

गाथार्थ—जे गच्छमां मुख्य या तो वृद्ध साध्वी कलह के खेदवश थईने उत्तर-प्रत्युत्तर करे तेमज क्रोधवश थईने जेम तेम प्रलाप करे तेवा गच्छथी हे गौतम ! शुं प्रयोजन अथवा तेवा गच्छने हुं गच्छ कहेतो नथी.

हे गौतम ! जे गच्छमां कार्य प्रसंगे लघु साध्वीओ मुख्य साध्वीनी पाछळ रहीने स्थविर गीतार्थ प्रमुखनी साथे सहज, सरळ अने निर्विकार वाक्योवडे मृदु वचन बोले ते ज वास्तविक गच्छ जाणजे. वळी वगरकारणे स्वपरवर्गमां 'आ मारी माता छे, आ मारी पुत्री के पौत्री छे, आ मारी बहेन छे' इत्यादि जाहेर न करे अथवा मातादिकनी गुह्य वात होय तो ते मर्म प्रकाशित न करे आवी वचनगुप्तिवाळा गच्छने ज हे गौतम ! तु साचो गच्छ जाणजे

विवेचन—गृहस्थ वर्गमां पण कहेवत प्रचलित छे के–"कलहकरनासथी तो गोळाना पाणी पण सुकाय छे" अर्थात् क्लेशथी सुखसंपत्ति नाश पामी जाय छे जेओ संसारनो त्याग करी संयमना मार्गे चढ्या छे तेओए तो कदापि पण क्लेश-कलह न करवो जोइए क्लेशथी कर्मबंध थाय छे, आर्त्त ने रौद्र ध्यान थाय छे अने आवी रीते कलह करता दीलरकनो जुए त्यारे शासननी अपभ्राजना थाय क्रोधादिक कषायो छुपा चोर छे ते क्यारे आपणा मनमां प्रवेश करी कब्जो करी वाळे छे तेनो ख्यालपणने ख्याल रहेतो नथी, माटे क्रोधादिक करवाना प्रसंगो उपस्थित थाय त्यारे अत्यंत सावचेत रहेवु हे गौतम! आवा प्रसंग जेओ आत्मभान भूली जेम फावे तेम बोले छे ते गच्छने हु साचो गच्छ कहेतो नथी

शास्त्राभ्यास करवाने अंगे तो गमे ते शास्त्रादिनी पृच्छा करवा माटे साधु समीप जवु पडे त्यारे पण मुख्य साध्वीने आगळ करीने, तेमनी पाछळ रहीने साध्वीए पृच्छा करवी उचित छे एकाकी साधु पासे जवु कल्पतु नथी साधु साथे वातचीत करवामां पण मृदु अने मिष्ट भाषा वापरवी जोइए बोलवामां पण विवेक राखवो विवेक ए मधु वशीकरण छे विवेकथी सघळा कार्य सिद्ध थाय छे श्रीसूक्तमुक्तावलीमां विवेक संबंधे कह्यु छे के—

हृदयघर विवेके प्राणी जो दीप भासे, सकळ भवनणो तो मोह-अंधार नाशे ।
परम धरम वस्तू तत्त्व प्रत्यक्ष भासे, करम भरम पतंगा त्यांग तेवा विनाशे ॥
विकळ नर कहीजे ते विवेके विहीना, सकळ गुण भर्या ते जे विवेके विलीना।
जिम सुमति पुरोधा भूमिगेहे वसते, युगति जुगति कीधी जे विवेके उगते ॥

गच्छमा साध्वीओए परस्पर कौटुंबिक संबंध पण न दर्शाववा कारण के तथी वचनगुप्तिनो भंग थाय छे श्रीदशवैकालिक सूत्रमां कह्युं छे के–
"अज्जिए पज्जिए वा वि, अम्मो माउसिअ त्ति अवि। उसिसए भायणिज्ज त्ति, धूए नत्तुणिइत्ति अ ॥ १ ॥ अज्जए पज्जए वा वि, बप्पो चुल्लपिउत्ति अ। माउला भाउणिज्जत्ति, पुत्ता नत्तुणिइत्ति अ ॥२॥" हे माता, हे दादी, हे भाणेज, हे पुत्री, हे बहेन, हे काकी, हे भार्या, हे मामी इत्यादि सांसारिक संबंध सूचवता शब्दो साधु या साध्वीए बोलवा नहीं हुं अमुकनी माता छुं, हुं अमुकनी पुत्री छुं, हुं अमुकनी स्त्री छुं विगेरे संबंध दर्शावता वाक्यो पण न बोलवा वळी मातादिकनी गुप्त वात होय तो तेनो प्रकाश न करवो जेम बने तेम वचनगुप्तिनुं यथार्थ पालन करनार गच्छने ज हे गौतम! हुं गच्छ कहुं छुं

हवे जिनाज्ञा मार्गनुं उल्लंघन करनार साध्वीओने शुं प्राप्त थाय ते दर्शावे छे–

दंसणियार कुणई, चरित्तनासं जणेइ मिच्छत्तम्।
दुण्हवि वग्गाणज्जा, विहारभेय करेमाणी ॥ १३२ ॥
[दर्शनातिचारं करोति, चारित्रनाशं जनयति मिथ्यात्वम्।
द्वयोरपि वर्गयोः आर्या, विहारभेदं कुर्वाणाः ॥ १३२ ॥]

गाथार्थ–जे साध्वी दर्शनातिचार लगाडे, चारित्रनो नाश करे अथवा मिथ्यात्व उत्पन्न करे, बन्ने वर्गना (साधु तेमज साध्वीना) मास कल्पादि विहारनी मर्यादानुं उल्लंघन करे ते साध्वी खरेखरी आर्या नथी.

विवेचन–पंचांगीना जे पिस्तालीश प्रमुख आगमो छे, तेमां दर्शाव्या प्रमाणे विधिपूर्वक जे साध्वी चारित्र पाळे ते साची आर्या छे जो ते मर्यादानुं उल्लंघन करे तो समकितमां दूषण लगाडे छे, चारित्रनो नाश करे छे अने मिथ्यात्व उपजावे छे आवी उन्मार्गे चालनारी साध्वी गच्छमां न राखवी विहारनी मर्यादा संबंधी बेंतालीशमी गाथामां वर्णन थई गयुं छे छतां पण अहीं कंईक विशेष दर्शावे छे

श्रीबृहत्कल्पना चोथा उद्देशामां कह्युं छे के–"नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा इमाओ पंच महण्णवाओ महानदीओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ वंजियाओ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा संतरित्तए वा तं जहा–गंगा जउणा सरऊ कोसिया मही।" जेमां विपुल जळ छे तेमज घणी ऊंडी छे तेथी नदीओ महार्णवा एटले समुद्र तुल्य गणाय छे तेवी नदीओ–

गंगा, यमुना, सरयु, काशिका अने मही-आ पांच नदीओ महिनामां बे वार के त्रण वार उतरवी योग्य नथी आ सूत्र ऊपर निर्युक्तिकार विस्तारथी मम जण आपता कहे छे के-"पचण्ह गहणे ण, सेसाविय सूइया महासलिला। तत्थ पुरा विहरिंसु, नय ताउ कयाइ सुक्कंति ॥१॥" ऊपर जे पांच नदीओ जणावी तेवी रीते बीजी पण तेवी मोटी नदीओ के जेमां अगाध जळ होय अने हमेशा वहेती होय तेना पण समावेश जाणी लेवो आ बाबतमां प्रतिवादी शंका करता पूछे छे के-सर्व नदीओ शा माटे गणवी ? जो तेमज होय तो सूत्र कार पांच नदीना ज नामो शा माटे जणावे ? तेनो उत्तर ए छे के-गंगादिक पांच महानदीओ जे देशोमां छे ते स्थळोमां पूर्वे साधुओ विचर्या हता अने ते नदीओ कदी पण शुष्क बनती नथी तेथी तेओना नामो जणाव्या छे, परंतु उपलक्षणथी तेना जेवा विशाळ, दीर्घ पुष्कळ जळवाळी अने ऊंडी नदीओ पण साथोसाथ समजी लेवी

वळी पण श्रीबृहत्कल्पना चोथा उद्देशामां कह्युं छे के--" अह पुण एवं जाणिज्जा एरवई कुणालाए जत्थ चक्किया एगं पायं जले किच्चा एगं पायं थले किच्चा एवण्हं कप्पइ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा संतरित्तए वा, एवं नो चक्किया एवण्हं नो कप्पइ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा । " ऐरावती नामनी नदी कुणाला नगरीनी पासे वहे छे ते अर्ध जंघाप्रमाण ऊंडी छे ते नदी तथा तेवा प्रकारनी बीजी नदी विधिमां दर्शाव्या प्रमाणे उतरी शकाय एक पग जळमां अने एक पग थळमां (आकाशमां) ऊंचो राखवाना क्रमथी साधु या साध्वी चाली शकवा समर्थ होय तो एक मासमां बे के त्रण वार नदी पार उतरे अने पाछा आवी शके ऐरावती नदी कुणाला नगरी पासे बे गाउना पहोळा पट(विस्तार)वाळी अने अर्ध जंघा प्रमाण ऊंडाईवाळी छे गोचरीना निमित्ते पात्रादिकना लेपनादिकना निमित्ते साधु या साध्वी मासमां बे त्रण वखत जयणापूर्वक नदी पार करी शके आ सूत्रथी ऊपर जे पांच नदीना ग्रहणथी तेवा प्रकारनी सर्व नदीयोना स्वीकार जणाव्या तेने पुष्टि मळे छे

ऐरावती नदीमां स्थलीक आगामां ज्यारे पाणी सूकाइ जाय छे त्यारे ते नदी पार करीने गोचरी अर्थे जवामां आवे त्यारे ऋतुबद्ध काळमां जतां त्रण संघट्टो थाय, पण वळतां पण त्रण थाय एटले छ संघट्टा थाय चोमासामां सात संघट्टा थाय अने पाछा आवतां सात थाय कुल चौद संघट्टा थाय ज्यां सुधी ते क्षेत्रमां चातुर्मास होय त्यां सुधी आटला संघट्टा करी शकाय, तेथी विशेष संघट्टा थाय तो दोष लागे वळी ज्यां विशेष जळ-संघट्टो लागे त्यां उतरवानो पण निषेध छे मासकल्प पूर्ण थया पछी बीजो मासकल्प करवा माटे ते नदी उतर्या सिवाय अन्यत्र थइ शकतो होय तो तेम करवु चातुर्मास पण

ते नदी उतर्या सिवाय बहारली शकातु होय तो तेम न करवु. कोई पण बीजो उपाय न होय तो नदी उतरवी, ए जिनाज्ञा छे. संघट्टा संबंधमां कह्यु छे के-
"सत्त उ वासासु भवे, दगसङ्घट्टा तिण्णि हुंति उडुबद्धे। ते तु न हणंति खित्तं, भिक्खायरियं च न हणंति ॥ २ ॥ जह कारणंमि पुण्णे, अंतो तह कारणंमि असिवादी। उवहीगहणे लिंपण, नावा य गते वि जयणाए ॥ ३ ॥" वर्षा कालमां सात अने मासकल्पमां त्रण जळना संघट्टा साधुने होई शके. आ रीते क्षेत्रमां रहे तो तेनु क्षेत्र हणाय नहीं तेमज भिक्षाचर्या पण निषिद्ध न जाणवी अर्थात् ए रीते ते क्षेत्रमां रही शके अने गोचरी अर्थ जई शके. कोई पण कारण उत्पन्न थये सते मासकल्प बाद तेमज चोमासा पछी तेवु बीजुं क्षेत्र न मळे तो अथवा उतर मासकल्पमां पण कंई उपद्रव थाय, मारी-मरकी जेवा व्याधि उत्पन्न थाय, वस्त्रादिक उपकरणनी जरूरत उत्पन्न थाय तो नदी उतरीने पण लावी शके. जरूर पडे नावमां बेसीने पण जई शके, परन्तु तेमां जयणा तथा विधि साचववा जोइये.

नाव उतरवा संबंधी हकीकत नीचे प्रमाणे जाणवी—"नावथललेवहेट्ठा, लेवो वा उवरिए व लेवस्स। दोण्णी दिवड्ढमेकं, अद्धं नावाइपरिहाति ॥ ४ ॥" जे स्थळे नावमां बेसवानु होय ते स्थळे जावु के गमनस्थळे पहोंचवा अर्थ बे योजनना फेर थशे तो शास्त्रकार कहे छे के-बे योजननो फेरो खावो परन्तु नावमां न बेसवु १, तेवी ज रीते संपूर्ण लेप न लागे तेवु जळ उतरवानु होय, परन्तु दोढ योजनना फेरावी स्थळमार्गे जवानु होय तो तेम करवु पण नावमां न बेसवु २, तेवी ज रीते लेप लागे तेवु जळ उतरवानु होय परन्तु एक योजनथी स्थळमार्गे जवानु होय तो तेम करवु पण नावमां न बेसवु ३, लेप ऊपर जळ लागे तथा मार्गमां पण अर्ध योजनना फेरा खावा पण नावमां न बेसवु ४, आ प्रमाणे तपास करता छता पण बीजो कोई मार्ग ज न होय त्यारे साधु नावमां बेसी शके; परन्तु निष्कारण कदी न करवु.

श्रीनिशीथचूर्णीना बारमा उद्देशाना प्रान्तभागमां नाव संबंधी वर्णन करतां कह्यु छे के—

अघातारिमकत्थइ, कत्थइ बाहाहि अप्पणा न तरे।
कुंभे दतिए तुंबे, नावा उडुवे य पण्णीए ॥ १ ॥
समासतो जलसंतरण, दुविहं थाहमथाहं च।
जं थाहं तं तिविहं, संघट्टो लेवो लेवोवरियं च ॥ २ ॥

एत्तो एक्कतरेणं, तरिअव्व कारणमि जातमि ।
एतेसि निच्चासे, चाउम्मासा भवे लहुगा ॥ ३ ॥
नवानवे भिमासा उ, भावितामाविए वि य ।
तदण्णभाविए चेव, उड्डाणोल्ले य मग्गणा ॥ ४ ॥
असती य परिरयस्सा, दुविहे तेणे य सावते दुविहे ।
सघट्टणलेवुवरी, दुजोयणा हाणिजा नावा ॥ ५ ॥
जघड्डा सघट्टो १, नाभिलेवो २ परेण लेवुवार ३ ।
एगो जले थलेगो, निप्पगलणतीरमुस्सग्गो ॥ ६ ॥
निभए गारत्थीण तु, मग्गतो चोलपट्टमुस्सारे ।
सभए अत्थग्घे वा, उत्तिण्णेसु घण पट्ट ॥ ७ ॥
दगतीरे ता चिट्ठे, निप्पगलो जाव चोलपट्टो ।
उ सभए पलनमाण, गच्छति काएण अफुसंतो ॥ ८ ॥
असति गिहि णालियाए, आणक्खेउ पुणो वि पडिअरण ।
एगा भोगपाडिग्गह, वेई सव्वाणि नो पुरओ ॥ ९ ॥
ठाणतिय मोत्तूण, उवउत्तो तत्थ ठाति णावाहे ।
दतिओड्डु व तुंबेसु वि, एस विही होति संतरणे ॥ १० ॥

जे नाव द्वारा जळ उतराय ते नावडु तारिमा कहेवाय छे संक्षेपथी जळ उतरवाना बे प्रकार छे-(१) थाह (थोडु) अने (२) अथाह (अगाध) थाहना त्रण प्रकार छे-(१) सघट्ट, (२) लेप अने (३) लेपोपरि कोईक नदीमा थोडु जळ होय, अने कोईक नदीमा पुष्कळ जळ होय अगाध जळवाळी नदीमा बने भुजा द्वारा तरवु नहीं, केमके तेम करवाथी घणा अप्काय जीवोनी हिंसा थाय, माटे जळमा तरवाना साधना दर्शाव्या छे, ते प्रमाणे आचरण करवु प्रथम ता घडा होय तो तेनाथी तरवु, घडो न होय तो दत्तीथी तरवु अने ते पण न मळे तो तुंबाथी नदी बतरवी ते पण न मळे तो उडुप (लघुनाव)थी तरवु अने ते पण न मळे ता पर्णीथी तरवु अने छवट नावनु ग्रहण करवु आ आज्ञा विरुद्ध आचरण करे तो लघु चारमासी प्रायश्चित्त लागे कुभ मळवा छता कुभथी न तरता दत्तीथी तरे ता आज्ञानु खडन कर्यु कहेवाय पर्वो रीत पवकन अभावे तरे तो दड न समजवा

नाव बे प्रकारना छ जूनु अने नवु जूनु नाव बतरवाना उपयोगमा न लेवु कारण के तेनाथी कष्ट उपजे अने सयोगवशात् तूटी जता बूडी जवाय नवा नावना पण बे प्रकार छे (१) भावित अने (२) अभावित भावित एटले

जळमां गति करेल, तेवा भावित नथा गायथी नदी उतरवी, परन्तु अभावित थी नहीं, केमके अभावित नवुं गाय जळमां भाववाथी घणा जीवोनी हिंसा थाय. भावित गाय जळमां वारंवार गति करेल होवाथी नवीन विराधना थती नथी. तेना पाडिया, पाथदा विगेरे रूढ थइ गयेल होय छे, परन्तु नवा गायने जळना संसर्ग थतां घणी ज विराधना थाय छे. भावित गायना पण बे प्रकार छे: ते ज जळमां भावित थयेल अने अन्य जळमां भावित थयेल. जे ते ज जळमां भावित होय तेवी गाय द्वारा उतरवुं योग्य छे, कारण के एक जळ बीजा जळने माटे शस्त्ररूप छे. आपणामां पण प्रचलित रिवाज छे के-एक कूवा या तो वावना पाणीमां बीजा कूवा या तो वावनां नाखवां. आ भूलथी पण अन्य स्थळे नाखवामां आवे छे तो ते अप्कायना जीवोनी हिंसा थाय छे. मीठा कूवानुं पाणी खारा कूवाना जळमां नथी नाखवामां आवतुं तेमां पण आ ज हेतु समायेलो छे. आ प्रमाणे वृषादिक भावित गायना पण बे प्रकार समजवा—(१) कूवादिनी जळ (२) बाह्य नदी वगेरे. भावित गायथी ज उतरवुं, कारण के तेने जळमां प्रवेश करावतां ज ते जळ कूवना मांहि छे अने ए रीते अप्कायना जीवोनी विराधना थाय छे, माटे स्व भावित गायनो ज उपयोग करवो अने ते प्रमाणे वर्ततां यतनाना पूर्णपणे उपयोग राखवो.

जेटली सुधी जळ होय अने तेमां उतरे तेना संघट्ट कहेवाय, नाभि सुधी जळ ऊंडुं होय ते लेप कहेवाय अने नाभि उपरांत जळ होय अने तेमां उतरे तो लेपोपरि कहेवाय. [illegible] मां [illegible] समजवा कहे छे के-एक पग जळमां मूकवो अने एक पग अधर (आकाशमां) राखवो-ए प्रमाणे [illegible] उतरवुं, परन्तु [illegible] [illegible] [illegible] पण [illegible] पाणी [illegible] [illegible] [illegible] सुधी [illegible] [illegible] इरियावहिया पडिक्कमे अने [illegible] [illegible], आ [illegible] करवा [illegible]

[illegible]

सुधी कांठा ऊपर उभा रहेवु जो भय होय तो चोलपट्टो लांबो करीने पटले के-हाथमा लांबो करीने जाय अथवा दोरा ऊपर राखीने जाय, पण ते भीना चोलपट्टाने पोताना शरीर साथे स्पर्श न कराये जो गृहस्थ साथे न होय तो आ विधि प्रमाणे वर्तवु परन्तु गृहस्थ होय तो पेम करवु ते पण दर्शावता कहे छे के-जे स्थळे बीजा वटेमार्गु उतरता जणाय ते स्थळेथी उतरवु, अने कोई पण वटेमार्गु न होय तो जे स्थळेथी पूर्वे लोको गया होय तेथी पगदंडी जोवी अने पोताना देहप्रमाण करता चार आगळ अधिक दंड होय तेने "नालिया" कहे छे ते नालिया ग्रहण करीने जळनु प्रमाण तपासता तपासतां नदी उतरवी नालिया पासे न होय तो अन्य तरवाशाळानी राह जोवी आ लेप प्रमाण जळ उतरवानी विधि दर्शावी

हवे अथाह-अथाग पाणी उतरवानी विधि कहे छे, तेमा नाव संबंधी हकीकत आ विवेचनमा पूर्वे जणावी दीधी छे हवे नावमा कइ रीते बेसवु ते जणावता कहे छे के-सर्व पात्रादिक उपकरण एकत्र करीने बांधवा, पछी छींकामा ऊंधे मुखे राखीए तेम राखवा केटलाक आचार्यो आ संबंधमा एम पण जणाये छे के-भंडोपकरणने पडिलेहीने, मस्तकथी ते पग पर्यन्त शरीरनो प्रतिलेखना करीने नावमा बेसवु नावमा पण आगळ न बेसवु केम के तेथी प्रवर्तन दोष पटले नाव चालवानो दोष लागे नावना पाछळना भागमा पण न बेसवु कारण के अतिशय जळप्रमाणने कारणे भय उपस्थित थाय, माटे नावना मध्यभागमा ज बेसवु तेमा पण त्रण स्थान-१ देवस्थान, २ कूपस्थान अने ३ निर्यामकस्थान वर्जीने बेसवु नावना अग्रभाग ते देवस्थान, मध्यमा कूप स्थान अने पाछळ तोरणस्थान-आ त्रण जग्या पण वर्जवी जे स्थळे अन्य कोइ न बेसे ते स्थळे उपयोगपूर्वक, नवकारमन्त्रनु स्मरण करीने बेसवु सागारिक पच्चक्खाण पण करवु के-जो कइ पण उपद्रव थाय अने काळधर्म पमाय तो मारे सर्वस्वनो त्याग छे नाव जळमार्ग पसार करीने कांठे आवे त्यारे पण सौ प्रथम आगळना भागे न उतरे तेमज पाछळना भागे पण न उतरे जेम मध्य भागमा बेसे तेथी ज रीते मध्य भागे उतरे पछी कांठे उतरीने इरियावही पडिक्कमी कायोत्सर्ग करे जळनो संघट्ट न थयो होय तो पण आ प्रमाणे विधि करवी ज इत्ती, उडुप अने तुंब विगेरेनो विधि पण आज प्रमाणे जाणवो विशेष ए के नते मूकीने पछी इरियावहियादि क्रिया करवी आ प्रमाणे नावद्वार जाणवु.

हवे विहार संबंधी वर्णन जणावे छे श्रीनिशीथसूत्रना दशमा उद्देशानी चूर्णिमा कह्यु छे के-

> ऊणाइरित्तमासे, अट्ठ विहरिऊण गिम्हहेमंते ।
> एगाह पचाह, मास च जहा समाहीए ॥ १ ॥

काऊण मासकप्प, तत्थेव उवागयाण जयणाए।
चिक्खल्लवासरोहेण, वा वि तेण ट्ठिया ऊणा ॥ २ ॥
वासासिचालमे, अद्धाणाईसु पत्तमहिगाओ।
साहगव्वाघाएण, अपडिकमिउ जइ वयति ॥ ३ ॥
पडिमा पडिवण्णाणं, एगाह पचहो वहा लदे।
जिणसुद्धाण मासो, निक्कारणओ य थेराण ॥ ४ ॥
ऊणाइरित्तमासा, एव थेराण अट्ठ नायव्वा।
इयरे अट्ठ विहरिउ, नियमा चत्तारि अच्छन्ति ॥ ५ ॥

चार मास हेमंत ऋतुना एटले शियाळाना अने चार मास ग्रीष्म ऋतुना एटले उनाळाना आ आठ मास दरमियान ओछो या अधिको विहार कर्यो होय केवी रीते विहार करवा ? ते संबंधे जणावता कहे छे के-प्रतिमाधारीए विहार करता करतां आ आठ मास दरमियान ग्राम वा नगरमा एक अहोरात्रि स्थिर रहेवु यथालंदक कल्पवाळा साधुओ एक स्थळे पांच अहोरात्रि रहे १ जिनकल्पी, २ शुद्ध परिहारिक अने ३ स्थविरकल्पी-ए साधुओ एक मास पर्यंत एक स्थळे वास करी शके आ प्रमाणे ज्ञान, दर्शन तथा चारित्र ए रत्न त्रयीनी समाधि थाय-सुखशातिपूर्वक आराधना थाय तेवी रीते विहार करीने वर्षा समये चातुर्मास योग्य स्थाने जवु

आठ मासथी ओछो के अधिक विहार केवी रीते थाय ते जणावतां कहे छे के—कोई एक स्थळमां आषाढ मासकल्प कर्यो एटले के आषाढ मासमा वास कर्यो अने पछी ते ज स्थळमा चातुर्मास रह्या एटले आषाढ मासने गण त्रीमा न लेता सात मास विहारना थया आवी रीते ऊण आठ मास कहीए. बीजी रीते पण ऊण आठ मास थई शके छे, ते आ प्रमाणे-जे स्थळे चातुर्मास रह्या होय त्यांथी विहार करवाना मार्गमां कादव होय, वर्षाद वरस्या करतो होय, पासेना ग्राम-नगरादिकने घेरा घलाया होय अगर तो मारी-मरकी आदिक उपद्रव थयेल होय इत्यादिक कारणोथी मागशर मास पछी विहार थाय तो ऊण आठ मास थाय आठ मासथी अधिक केवी रीते थाय ? ते जणावता कहे छे के-आषाढ मासमा चातुर्मास योग्य स्थळ न मळ्यु होय तो पछी एक मास अने वीश दिवस पर्यंत क्षेत्र मेळवी शकाय छे. भाद्रवा शुदि पांचमने दिवसे पर्युषण कल्प करवानो होय आ प्रमाणे नव मास ने वीश दिवस पर्यंत विचरण थई शके सार्थवाहनी साथे विहार करवो पडे त्यारे मन-इच्छित विचरण न थवाथी चातुर्मास माटे आषाढ मास व्यतीत थई जवा उपरांत पांच अहोरात्रि यावत् एक मास ने वीश अहोरात्रि व्यतीत

पड़ माव वळी दैववशात् वृष्टि ज न थई होय तो आश्विन या कार्तिक मासमा विहार करवो पडे त्यारे पण अष्ट मास अधिक थाय कोई पण विघ्न आवी पडवानु होय, उपद्रव थवानो होय, कार्तिकी पूर्णिमा पछी विहार करवानु मुहूर्त न आवतु होय, नक्षत्र तेमज चन्द्रनु बळ सारु न होय अथवा अन्य कोई पण कारणे कार्तिकी पूर्णिमा पछी विहार करवानो दिवस ज न आवतो होय तो चउमासी प्रतिक्रमण कर्या पूर्व ज विहार करवो पडे-आवी रीते भिन्न भिन्न कारणोने अगे आठ मास उपरात पण विहार करवो पडे

प्रतिमाधारी एक अहोरात्रि स्थिरवास करे अने यथालन्दक पाच अहोरात्रि रहे शेष काळमा विहार कर्या करे शुद्ध परिहारिक शब्दथी प्रायश्चित्त पामेला परिहारादिक साधुनो निषेध दर्शाव्यो छे १ जिनकल्पी, २ शुद्ध परिहारिक अने ३ स्थविरकल्पी साधुओने माटे मासकल्पी विहार दर्शाव्यो छे जो कोई पण प्रकारनो व्याघात होय अथवा तो अन्य कोई पण कारण उपस्थित थयु हाय तो स्थविरकल्पी मासमा ओछु या अधिक करी शके छे पटले ए रीते स्थविरकल्पीने माटे ऊण अष्ट मास या तो अधिक अष्ट मास विहार कह्यो छे परन्तु १ प्रतिमाधारी, २ यथालन्दक, ३ शुद्ध परिहारिक अने ४ जिनकल्पीने माटे तो जेम आठ मास सबधी विहार कह्यो छे तेम विहार करीने चातुर्मासना चार मास एक क्षेत्रमा ज व्यतीत करे

चोमासु केवा क्षेत्रमा रहेवु तेमज गाम-नगरादिकमा केवी रीते प्रवेश करवो ते सबधी हकीकत जणावता कहे छे के—

आसाढपुण्णिमाए, वासावासम्मि होइ ठायव्वम् ।
मग्गसिरबहुलदसमी उ, जाव एगम्मि खित्तम्मि ॥ ६ ॥
बाहिट्ठियवसभेहिं, खित्त गाहित्तु वासपाउग्गम् ।
कप्प कहित्तु ठवणा, वासाण सुद्धदसमीए ॥ ७ ॥
इत्थ य अणभिग्गहिय, वीसइराय सवीसई मासम् ।
तेण परमभिग्गहिय, गिहिणाय कत्तिओ जाव ॥ ८ ॥
असिवाइकारणेहिं, अहवा वास न सुट्ठु आरद्धम् ।
अहिवड्ढियमि वीसा-इयरेसु सवीसई मासो ॥ ९ ॥
एत्थ उ पणग पणग, कारणिय जा सवीसई मासो ।
सुद्धदसमीठियाण, आसाढी पुण्णिमोसरणम् ॥ १० ॥

आषाढ पूर्णिमाए चातुर्मास रहेवु पटले के जे स्थळे चातुर्मास करवु होय ते स्थानमा आषाढ पूर्णिमाए प्रवेश करवो अने कार्तिकी पूर्णिमा सुधी

मास करवो अथवा तेवीज कार्तिक वदि दशम (मारवाडी मागशर वदि दशम) सुधी पण रही शकाय केटलाको आ दश दिवसनी वृद्धिने लईने के दश रात्रि (वीश दिवस) अधिक गणीने मागशर मास पर्यन्त रहेवानो हुकम माने छे

केवी रीते गाम या नगरमां प्रवेश करवो ते संबंधी हकीकत [illegible] कहे छे के-जे स्थळमां आषाढ मासकल्प कर्यो या अथवा [illegible] भावना कहवी पछी पर्युषणा कल्प कहीने आषाढ शुदि दशमीए [illegible] पना करवी केटलाक आषाढ वदि पांचम (मारवाडी श्रावण वदि [illegible] वर्षाकाळ सामाचारी स्थापवानु कहे छे आ प्रमाणे आषाढ मासनो [illegible] अगर तो आषाढ वदि पांचमे पर्युषणा कल्प वांचीने रहे तो पण जो [illegible] चातुर्मास संबंधी पूछे तो संदिग्ध उत्तर आपवो, एटले के "हजी अमारे [illegible] मास रहेवानु निश्चित नथी" आ प्रमाणे जवाब आपे आ प्रमाणे [illegible] थोडा दिवस पर्यंत संदिग्ध उत्तर आपवो आवी रीते संदिग्ध उत्तर [illegible] कारण शु ? ते जणावतां कहे छे के-ते स्थळमां अचानक [illegible] स्थित थाय, वरसाद सारो न वरसे, एक मास ने वीश दिवसमां [illegible] काप थाय, राजा दुष्ट होय, पाखंडीओनु जोर होय इत्यादिक [illegible] छतां पण आ साधु चातुर्मास रहे तो जिनआज्ञाना भंग [illegible] अहीं चातुर्मास रह्या छीए" आ प्रमाणे गृहस्थने [illegible] कारणो आवी पडये छते विहार करवो पडे तो लोकोमां [illegible] थाय अने मिथ्यात्वी लोको उपहास करतां कहे के-साधु [illegible] अमे तो सर्वज्ञ-पुत्र छीए तो तमनु सर्वज्ञपणु क्यां गयु " [illegible] चोमासु रह्या छीए अने हवे संकट आवतां चाल्या [illegible] तो जुओ केवा निश्चित रीते बहे छे-अमे चोमासु [illegible] गृहस्थो आय कारण के-लोको जाणे के-साधु [illegible] सारो आवशे, नवु धान्य घणु पाकशे एम धारी [illegible] चलावे, खडूता हळ विगेरे तैयार करे, [illegible] इत्यादि घणा आरंभ-समारंभादिकना कार्यो [illegible] अने दोषभागी बने

जो अभिवर्द्धित वर्ष होय तो श्रावण [illegible] चंद्र वर्ष होय तो एक मास ने वीश रात्रि [illegible] मास होय ते अभिवर्धित वर्ष कहेवाय [illegible] थाय छे जो अंतमां होय तो ते भाद्र [illegible]

बे ते मास वधे छे तो अभिवर्धित वर्षमां वीश रात्रि अने चंद्र वर्षमां एक मासने वीश दिवस एम कहेवानो शो हेतु छे? ए बन्ने मास चातुर्मासमां तो आवता नथी गुरु तेनो प्रत्युत्तर आपतां जणावे छे के-आषाढ मास ग्रीष्म ऋतुमां वधे छे तेथी ते मास ग्रीष्म ऋतुमां गया जाणवो अने तेथी ज अभिवड्ढियवरिसे वीसरातिय। एवो पाठ छे आषाढी पूर्णिमाए डगलादिक ग्रहण करे, पर्युषण कल्प कहे अने पांच दिवस बाद आषाढ वदि (मारवाडी श्रावण वदि) पांचमे पर्युषण करे एम कारण कारणे पांच-पांच दिवस वधारे आ रीते वधारतां-वधारतां भादरवा शुदि पांचमने दिवसे पर्युषण करे आषाढ पूर्णिमाए पर्युषण करे ते उत्सर्ग मार्ग कहेवाय अने आषाढ वदि पंचमी के अन्य दिवसे करे ते अपवाद मार्ग कहेवाय भादरवा शुदि पंचमीए तो अवश्य पर्युषणपर्व करवुं ज एक मास ने वीश दिवसमां पण जो चातुर्मास योग्य क्षेत्र न मळे तो छेवटे वृक्ष हेठळ पण पर्युषण करवां, पण भादरवा शुदि पंचमी उल्लंघवी नहीं

शिष्य पुनः शंका करतां पूछे छे के-हालमां अपर्वतिथि भादरवा शुदि चोथने दिवसे पर्युषणा केम करवामां आवे छे? आचार्य महाराज जवाब आपे छे के-कारणिया चउत्थी। कारणे चतुर्थीए पर्युषणा करवी पडे छे शिष्य पूछे छे के-हे भगवंत! एवुं ते कयुं कारण आवी पडयुं के जेथी पांचमनी चोथ करवी पडी? गुरु उत्तर आपे छे के-श्रीमान कालकाचार्ये ते प्रवर्तावेल छे शिष्य पुनः प्रश्न कर्यो के-कोण कालकाचार्य अने तेमणे शा माटे पंचमीनी चतुर्थी करी? गुरुए जणाव्युं के-

श्रीमान् कालकाचार्य विहार करतां करतां उज्जैणी नगरीमां आव्या ने त्यां चातुर्मास रह्या ते नगरीमां बलमित्र नामनो राजा हतो अने तेनो लघु बंधु भानुमित्र युवराज हतो तेने भानुश्री नामनी बहेन हती अने बलभानु नामनो भाणेज हतो बलभानु भद्रक स्वभाववाळो अने विनयी हतो साधुओनी वैयावच्च करवामां सदा तत्पर रहेतो एकदा आचार्ये ते बलभानुने उपदेश आप्यो, धर्मनुं यथार्थ स्वरूप समजाव्युं, भवितव्यताना योगे ते उपदेश बलभानुना हृदयमां सचोट उतरी गयो तेने संसारनी स्वार्थता अने असारता समजाणी अने तेणे आचार्य श्रीकालकसूरि पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी बलमित्र तथा भानुमित्रने आ समाचार मळतां ज तेओ क्रोधी थया अने चातुर्मास होवा छतां आचार्यने नगरी बहार काढी मूक्या।

बीजा एम पण कहे छे के-बलमित्र अने भानुमित्र कालकाचार्यना संसारी पणामां भाणेज हता तेओ प्रतिदिन तेमना व्याख्यानमां जता अने तेनुं बहुमान करता श्रावकमां पुरोहितने आ पसंद न पडयुं तेणे राजाना कान भंभेरवा मांडया के-आ लोको तो पाखंडी छे, वेद धर्मने मानता नथी तेमना

आचार विचारमां कशुं ठेकाणुं नथी तेमनुं धर्माचरण तो धतींग छे राजाए परस्पर वाद-विवाद गोठव्यो अने सूर्य समीप जेम आगियो (खद्योत) झांखो थई जाय तेम पुरोहितजी हारी गया पुरोहितजीनो पराजय थयो पण तेमणे पोताना मनथी [illegible] डख न मूक्यो तेणे राजाना कान भंभेरवा शरू कर्या एकदा तेणे कह्युं के हे राजन् ! जे मार्गे आ साधुओ चाले छे ते मार्गे चालवाथी राजा के [illegible] नाश थाय छे काचा कानना राजाए आ हकीकत साची मानी [illegible] आचार्यने नगरी बहार काढी मूक्या कहेवाय छे के-आचार्य [illegible] पोताना गृहस्थावस्थाना मामा होवाथी तेमने सीधी रीते चाल्या [illegible] तो न आप्युं, पण समस्त नगरीमां सूझतो आहार न मळे तेवो प्रबन्ध [illegible] जेथी आचार्यश्री [illegible] अन्यत्र विहार करी गया

विहार करीने तेओ प्रतिष्ठान नगरे गया त्यांना लोकोने [illegible] कह्युं आव्या पछी पर्युषणा करजो त्यांनो राजा शालिवाहन [illegible] तेने कालकाचार्य आवता जाणी अत्यंत हर्ष प्रदर्शित कर्यो [illegible] आडंबरपूर्वक गुरुनो प्रवेश कराव्यो गुरुए फरमाव्युं के-भादरवा [illegible] दिवसे पर्युषणापर्व करवानुं छे ते समये राजाए विज्ञप्ति करी [illegible] आवता ते दिवसे मारे इन्द्र महोत्सव करवानो छे, तेथी [illegible] चैत्यपरिपाटी करी शकुं नहि तो आप छठनो पर्युषणा [illegible] जणाव्युं के-भादरवा शुदि पांचम ओळंगवी नहीं तेथी [illegible] पुन विनंति करी के-तो चोथनुं पर्व राखो गुरुए ते [illegible] युगप्रधान होवाथी तेमणे प्रवर्तावेल चतुर्थी [illegible] हालमां पण चतुर्थीए ज पर्युषणापर्वनी आराधना [illegible] छे

शालिवाहन राजाए पोतानी सर्व राणीओने [illegible] अमावस्याना उपवास करी अने प्रतिपदाने दिवसे [illegible] दिवसे) साधुओने वहोरावीने, पारणुं करावीने पछी [illegible] चार-पांच दिवसनुं तलाधर पर्व करशो [illegible] पालन कर्युं अने प्रतिपदाने दिवसे साधुओने [illegible] दिवसे ते प्रदेशमां "साधुपूजा"नुं पर्व प्रवर्त्युं छे

हवे पांच पांच दिवसनी हानि [illegible] पटल रहेवानुं प्रमाण दर्शावे छे

इय सत्तरी जहन्ना, [illegible] च ।
जइ वासइ मग्गसिरे, [illegible] उक्कोसो ॥

काऊण मासकप्पं, तत्थेव ठियाण जाव मग्गसिरो ।
सालंबणाण छम्मा-सिओ उ जिट्ठुग्गहो होइ ॥ १२ ॥
जइ अत्थि पयविहारो, चउपाडिवयंमि होइ निग्गमणम् ।
अहवावि अणिताण, आरोवणपुव्वनिद्दिट्ठा ॥ १३ ॥
राया सप्पे कुंथू, अगणिगिलाणे य थंडिलस्सऽसई ।
एएहिं कारणेहिं, अप्पत्ते होइ निग्गमणम् ॥ १४ ॥
काइयभूमी संथारए अ, संसत्त दुल्लहे भिक्खे ।
एएहिं कारणेहिं, अप्पत्ते होइ निग्गमणम् ॥ १५ ॥
वासं वा नोवरमई, पंथा वा दुग्गमा सचिक्खल्ला ।
एएहिं कारणेहिं, अइक्कंते होइ निग्गमणम् ॥ १६ ॥
असिवे ओमोदरिए, रायदुट्ठे भये व गेलन्ने ।
एएहिं कारणेहिं, अइक्कंते होइ निग्गमणम् ॥ १७ ॥

आषाढ चतुर्मासथी एक मास ने वीस दिवस गये छते पर्युषणा करे तो ते सित्तेर दिवसनुं जघन्य चातुर्मास थयुं कारण के चार मासना एकसो वीस दिवस पैकी पचास दिवस जतां ७० दिवसनुं जघन्य चातुर्मास थयुं जो श्रावण वदि (मारवाडी भाद्रवा वदि) दशमे पर्युषणा करे तो ८० दिवसनो मध्यम वर्षाकाळ थाय जो श्रावण सुदि पुनमनुं पर्युषण पर्व करे तो ९० दिवसनो मध्यम वर्षाकाळ थाय जो आषाढ वदि (मारवाडी श्रावण वदि) दशमे पर्युषणा कल्प करे तो ११० दिवसनो मध्यम वर्षाकाळ थाय अने जो आषाढ पूर्णिमाथी करे तो तेने १२० दिवसनो उत्कृष्ट वर्षाकाळ थाय आ प्रमाणे वचली आंतरो पण समजी लेवो

आ प्रमाण वर्षाकाळ व्यतीत करीने कार्तिक वदि एकमने दिवसे तो विहार करी जवा, परन्तु जो मागशर मासमा पण वरसाद होय, रस्तो कादवबालो होय, रस्तामा जळ भरेल होय तो अपवाद तरीके एक, बे अने उत्कृष्टा त्रणथी दश रात्रि पर्यन्त स्थिरता करे अथवा उग्र कारणे मागशर मासनी पूर्णिमा सुधी रहे त्यारबाद जो मार्ग कादव-कीचडवाळो होय, रस्तामां जळ भरेलुं होय, जळ उतरवानो प्रसंग प्राप्त थतो होय तो पण अवश्य विहार करवो ज जो विहार न करे तो चार गुरुमासी प्रायश्चित्त आवे आ प्रमाणे पांच मासनुं उत्कृष्ट चोमासुं थयुं

आषाढ मासना कल्प कर्यो होय अने पछी चातुर्मास योग्य अन्य क्षेत्र न मळ्या तेथी ते ज स्थानमां चातुर्मास करीने, वर्षादिकने कारणे मागशर मासमां

विहार करवो पडे तो चोमासानो छ मासनो उत्कृष्ट काळ जाणवो जो कादव अने वृष्टि प्रमुखनु कारण न होय अने रस्ता चोक्खा थइ गया होय तो कार्तिक (मारवाडी मागशर) वदि १ ने दिवसे अवश्य विहार करवो जोइए जो न करे तो पूर्वे कहेल प्रायश्चित्त आवे

कारण उपस्थित थये चार पडवाओ पहेलां पण अन्यत्र विहार करी जवो पडे त कारणो नीचे प्रमाणे जाणवा १ राजा दुष्ट होय, २ उपाश्रयमा सपना प्रवेश थयो होय, ३ उपाश्रयमां कुंथुआना उपद्रव थयो होय, ४ अग्नि लागवाथी उपाश्रय भस्मीभूत थइ जाय, ५ ग्लान साधुनी वैयावच्च करवा जवु पडे ६ ग्लान साधुना औषधार्थे अन्यत्र जवु पडे ७ स्थंडिल जवानी सारी जग्या न होय वगेरे कारण उपस्थित थये चारे पडवाना दिवसे पण विहार करी जवा पडे, ते कारणो नीचे प्रमाणे-१ स्थंडिल-मात्रादिकनी जग्या जीवाकुळ होय, २ संथारामा जीवादिक होय, ३ दुःखपूर्वक गोचरी मळती होय, ४ पोताने के अन्यने मोहोदय थयो होय, ५ मरकी प्रमुख रोगोना उपद्रव उपस्थित थयो होय

चार पडवा व्यतीत थइ गया होय छता पण नीचेना कारणोथी आगळ विहार करवाना निषेध फरमाव्य छे, ते कारणो आ प्रमाण छे-१ विहार करवानो माग कठिन विषम होय, २ विहारना मार्गमा स्थळे स्थळे जळ भरेलु होय, ३ मार्गमा अतिशय कादव होय, ४ वरसाद वरसतो बध न रहेता होय वळी कया कारणे विहार न थाय ते जणावता कहे छे क-१ मरकी प्रमुखना देशमा उपद्रव चालता होय ते अशिव, २ भिक्षा ओछी मळती होय ३ राजा दुष्ट होय, ४ रोगादिक व्याधिओ उत्पन्न थइ होय अने ५ चोर लोकोनो भय होय आ गाढ पाच कारणाने अगे चोमासा पछी पण साधु विहार न करे

आ वर्णन श्रीपर्युषणकल्पनी निर्युक्तिनी चूर्णिमा तेमज श्रीनिशीथसूत्रना दशमा उद्देशानी चूर्णिमा पण करेल छ आ प्रमाणे आगमोक्त विधि प्रमाणे विचरे ते गच्छ जे साध्वी आ प्रमाणे विचरण न करे त विहारभेद करनारी तेमज मिथ्यात्व वधारनारी समजवी

हवे साध्वीए कयु वचन अने भाषा बोलवी ते आ गाथाद्वारा दर्शावे छे—

तम्मूल ससार, जणेइ अज्जा वि गोयमा ! नूण ।
तम्हा धम्मुवएस, मुत्तु अन्न न भासिज्जा ॥ १३३ ॥
मासे मासे उ जा अज्जा, एगसित्थेण पारए ।
कलहे गिहत्थभासाहिं, सव्व तीइ निरत्थय ॥ १३४ ॥

[तन्मूल ससार जनयति, आर्याऽपि गौतम ! नूनम् ।
तस्मात् धर्मोपदेश मुक्त्वा, अन्यत् न भाषेत ॥ १३३ ॥

मासे मासे तु या आर्या, एकसिक्थेन पारयेत् ।
कलहे गृहस्थभाषाभिः, सर्वं तस्याः निरर्थकम् ॥ १३४ ॥]

गाथार्थ—हे गौतम ! धर्मोपदेश सिवायनु वचन संसार-भ्रमण करावे तेवु छे तेथी साध्वीओए धर्मोपदेश सिवाय अन्य वचन बोलवु नहीं मासक्षमण जेवा उग्र तपने पारणे कुरादिक रूक्ष एक सिक्थ(दाणा)वडे पारणु करनारी साध्वी पण जो परमर्मप्रकाशन, आल के मकार चकारादिक गाली प्रदानरूप गृहस्थ योग्य सावद्य (दोषित) भाषा बोले तो तेनु सघळु तप निष्फळ जाणवु.

विवेचन—धर्मोपदेश सिवायना वचनोच्चार ए केवळ विकथा ज गणाय. राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा अने भक्तकथा-ए विकथाना चार प्रकार अगाउ पृ ६४ उपर वणवाइ गया छे अत्यारे वाणी-व्यापार एटलो बधो वृद्धिगत थयो छे के बोलनारने पोताने पण खबर शु बोले छे ? कई जातनी विकथा करी रह्यो छे तेनु भान रहेतु नथी शास्त्रकार तो त्या सुधी कहे छे के-बीजाने कडवु लागे, दुःख लागे तेवु वचन न बोलो ते पण एक प्रकारनो भाव हिंसा ज छे भाषासमिति अने वचनगुप्तिनो यथार्थ मर्म समजनार कदापि धर्मोपदेश सिवाय अन्य कुथली (निंदा) न करे श्रीमहानिशीथसूत्रनी छेतालीशमी गाथामा पण एज भाव भर्यो छे के-चिरसंचियपावपणासिइ, भवसयसहस्समहणीए ॥ चउवीसजिणविणिग्गयकहाइ, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ अर्थात् अनेक भवमां उपार्जन करेला पापराशिने नष्ट करनारी, लाखो भवोनो अंत करनारी एवी चोवीश तीर्थंकर परमात्मानी कथा करवावडे करीने मारा दिवस व्यतीत थाओ ! आवा अतुल लाभ आपनार धर्मकथा छोडीने साध्वीए अन्य विकथामां शा माटे आसक्त थवु घटे ?

मासखमण-मासखमणनी उग्र तपश्चर्या करनारी अने पारणाने दिवसे मात्र एक दाणो रूक्ष आहार करनारी साध्वी पण जो भाषासमिति न जाळवे, गृहस्थ योग्य सावद्य भाषा बोले, पारकाना मर्म प्रकाशे, अन्यने आळ आपे, कोइना पर क्रोधित बनी श्राप आपे तो शास्त्रकार कहे छे के-तेवी साध्वीनी तीव्र तपश्चर्या निरर्थक जाणवी कह्यु छे के-" क्रोधे क्रोड पूरवतणु संयमना फळ जाय । " मात्र क्रोधना अवलम्बनथी कौशिक तापस मरीने चंडकौशिक सर्प थयो अने पूर्वभवना तीव्र संस्कारने कारणे दृष्टिविषद्वारा अनेकना प्राण हरवा लाग्यो आ माटे ज शास्त्रकार कहे छे के-साध्वीए कदापि क्रोधावेशमा आवीने गृहस्थोचित सावद्य भाषा बोलवी नहीं।

॥ इति साध्वीस्वरूपनिरूपणस्तृतीयोऽधिकार ॥

उपसंहार–

आ गच्छाचार प्रकीर्णक कया कया सूत्र-सिद्धांतमांथी उद्धरेल छे ते दर्शावता ग्रंथकार कहे छे —

महानिसीहकप्पाओ, ववहाराओ तहेव य ।
साहु साहुणि अट्ठाए, गच्छायार समुद्धिओ ॥ १३५ ॥
पढतु साहुणो एय, असज्झाय विवज्जिउ ।
उत्तम सुअनिस्सदं, गच्छायार सुउत्तमम् ॥ १३६ ॥
गच्छायार सुणित्ताण, पठित्ता भिक्खुभिक्खुणी ।
कुणतु ज जहा भणिय, इच्छन्ता हियमप्पणो ॥ १३७ ॥

[महानिशीथकल्पात्, व्यवहारात् तथैव च ।
साधुसाध्वीनामर्थाय, गच्छाचार समुद्धृत ॥ १३५ ॥
पठन्तु साधव एतद्, अस्वाध्यायिक विवर्ज्य ।
उत्तम श्रुतनिस्यन्दम्, गच्छाचार सूत्तमम् ॥ १३६ ॥
गच्छाचार श्रुत्वा, पठित्वा भिक्षवः भिक्षुण्यः ।
कुर्वन्तु यथया भणित, इच्छन्तो हितमात्मन ॥ १३७ ॥]

गाथार्थ – श्रीमहानिशीथ, श्रीबृहत्कल्प अने व्यवहारभाष्यमांथी तेमज निशीथादिक(छेद)सूत्रोमाथी साधु—साध्वीओने माटे आ गच्छाचार प्रकीर्णक उद्धृत करेल छे

श्रीस्थानांगसूत्रमां दर्शावेल दश प्रकारनी असज्झाय वर्जीने महानिशीथ, बृहत्कल्पादिक प्रधान श्रुतना निचोडरूप–तत्त्वसाररूप आ गच्छाचार पयन्नानु साधु तेमज साध्वीओए भणवु, गणवु तथा परिशीलन सुविचार करवु.

श्रेष्ठ साधु-साध्वीओनी मर्यादारूप आ गच्छाचार पयन्नो सद्‌गुरु पासे अर्थरूपे सांभळी तेमज योगोद्‌वहनरूप विधिवडे सूत्ररूपे ग्रहण करी आत्मानु कल्याण इच्छनारा साधु-साध्वीओए जेम आ गच्छाचार पयन्नामा वर्णव्यु छे तेवु समाचरण करवु

विवेचन—आ गच्छाचारपयन्नो श्रीमहानिशीथ, बृहत्कल्प अने व्यवहार भाष्य जेवा प्रमाणभूत सूत्रोमांथी उद्धरीने बनावेल छे एटले ते प्रमाणिक अने माननीय छे वळी प्रकीर्णकोनी रचना प्रत्येकबुद्ध मुनिवर के तीर्थंकर भगवंतना विशिष्ट शिष्यद्वारा थाय छे एटले पण प्रकीर्णकोनी सगुद्धरता स्वयमेव ज साबित थई जाय छे

आवा पयन्नानु पठनपाठन-परिशीलन अस्वाध्याय वर्जीने करवु श्रीस्थानांग सूत्रना दशमा स्थानकमा दश प्रकारनो असज्झायो नीचे प्रमाणे जणावी छे—

दसविहे अंतलिक्खिए असज्झाइए पन्नत्ते त जहा—उक्कावाए १, दिसिदाहे २, गज्जिए ३, विज्जुए ४, निग्घाए ५, जुवए ६, जक्खालित्तए, ७, धूमिआ ८, महिआ ९, रयउग्घाए १०, आकाशथी दश प्रकारनो असज्झाय उत्पन्न थाय छ १ उल्कापात-तारानु खरवु विगेरे, २ दिग्दाह-कोईएक दिशामा जाणे महा नगर बळे तेनो आकाशमा जे उद्योत थाय ते, ३ गर्जना-अकाळे मेघनी गर्जना थाय, ४ विद्युत्-अकाळे आकाशमा विजळी थाय, ५ निर्घात-वादळयुक्त के वादळ रहित आकाशमा व्यंतरदेवोना करेला महाध्वनि, ६ जुवक-चन्द्रमानी प्रभा अने सध्यानी प्रभा ए बने साथे थई जाय, एटले मिश्र थई जाय चन्द्रनी प्रभाथी ढंकायेल संध्या ज्या सुधी जाणवामा न आवे त्या सुधी शुक्ल प्रतिपदादिकमा सध्यानो छेद जाणता छता काळ न जणाय माटे त्रण दिवस प्रादोषिक काळ ग्रहण न करवो, पछी कालिक सूत्रनो स्वाध्याय न थाय, ७ यक्षादीप्त-आकाशमा यक्षदीप्त थाय एटले उजाश थई जाय ते समये स्वाध्याय करे तो क्षुद्र देव छळवा आवे, ८ धूमिका-महिकाना भेद, ते वर्णथी धूम्र वर्णादि छ, ९ महिका-झीणा झीणा वरसाद, १० रजघात-विस्रसा परिणामथी चारे दिशामा धूळ वरसवा माडे

बीजी रीते पण दश प्रकारनो असज्झाय कही छे, ते आ प्रमाणे—

दसविहे ओरालिए असज्झाइए पन्नत्ते त जहा—अट्ठी १ मसे २ सोणिए ३ असुइसामते ४ सुसाणसामते ५ चदोवराए ६ सूरोवराए ७ पडणे ८ रायवुग्गहे ९ उवस्सयस्स अंतो उरालिए सरीरे १०। औदारिक शरीरनी असज्झाय दश प्रकारनी छ १-३ अस्थि एटले हाडका मस एटले मांस शोणित एटले रुधिर-लोही अने चर्म विगेरे औदारिक शरीरना आ चार पदार्थो साठ हाथनी अंदर पडेला होय तो जे काळमा पडेला होय त्यारथी त्रण पहोरनी असज्झाय बिलाडीए उदर प्रमुख मार्या होय तो एक अहोरात्रनी असज्झाय आ तिर्यंचना हाड-मासनी माफक मनुष्यना हाड-मास विगेरेनी असज्झाय जाणी लेवी जो मनुष्यादिकना हाड-मास सो हाथनी अंदर पडेला होय तो जे काळे पडेला होय त्यारथी अहोरात्रिनी असज्झाय जाणवी स्त्रीना ऋतुकाळनी त्रण दिवसनी

असज्झाय, पुत्र जन्मी सात दिवसनी ... दाटेला प्राणीनी पण असज्झाय ... नजीक होय तो असज्झाय, ६ ... सेसो स्वाध्याय न करवो ६-७ चद्र ... च द्र अने सूर्य ग्रहणावस्थामा ... महारात्रिनो त्याग करवो अने ... थाय तो चन्द्र समयथी त रात्रिना ... समयथी काळ पय त असज्झाय ... हेतु प छे प-तओना विमान औ,... सेनापति य कादयाळ विगरनु मृत्यु ... सुधी अस्वाध्याय जाणवो ... नगर शेठ य बहु कुटुम्बनो ... थाय तो एक अहोरात्रिनो असज्झाय ... होय तो गुप्त रीते करे ... पवा निदय छ, राइनी ... संग्राम होय, सेनापति विगर ... स्त्री-पुरुष लडता होय, ... कारण क तमां देवने ... शरीरनु छेदन भेदन थयु होय ... छेदन-भेदन न थयुं होय परन्तु ... होय तो पण असज्झाय जाणवी ... असज्झाय न रहे

आ प्रमाण थोडा प्रकारनो ... हकीकत विशेष वर्णन श्रीनिशीथसूत्रना ... आवश्यकनियुक्ति प्रमुख ग्रन्थामाथी जाणवु

आ पवित्र उत्तम ... आचार-विचारनु सारो रीत पालन ... पवित्र थने अने चार ... समर्थ थई शके ...

गारत्थियं वा वाएइ वायंतं वा साइज्जइ । इत्यादि० आ वाक्यनी चूर्णिमां जणाव्यु छे के-जे साधु-साध्वी अन्यमतिने, अल्पबुद्धिवाळा स्वधर्मीय गृहस्थने वाचना आपे या तो वाचना आपनारने सारो धर्दे तो चार लघुमासी प्रायश्चित्त प्राप्त थाय वळी जो पासत्थाने, ओसन्नाने, कुशीलीयाने, संसक्तने, सूत्रनी वाचना आपे तो पण चारमासी लघु दंड अने अर्थनी वाचना आपे तो चारमासी गुरु दंड आवे यथाच्छंदकने सूत्रवाचना आपे तो चारमासी गुरुदंड अने अर्थनी वाचना आपे तो छमासी लघु दंड आवे आ सर्वमां अपवाद दर्शावतां कहे छे के-कोइ श्रावक दीक्षा लेवा तैयार थयो होय तो तेने छज्जीवणिया अध्ययनथी पिण्डेषणा सुधी वाचना आपवी, उपरनो भाग तो श्रावकने वाचना आपवानो नथी

आ गच्छाचार पयन्नाना श्रवणथी, तेना मननथी अने परिशीलनथी साधु साध्वीओ जो पोताना आचार सम्यग्रीतिमां परिणमावे तो स्वकल्याणकारक थवा उपरांत परहित करवामां पण समर्थ बने

आ गच्छाचारपयन्नानी टीका तपागच्छरूपी गगनमां सूर्य समान भट्टारकपुरंदर श्रीआणंदविमलसूरीश्वरजीना चरणकमळसेवी (शिष्य) श्रीविजय-विमलगणिए करेल छे गच्छाचार टीकानु प्रमाण ५८५० श्लोक छे श्रीविजय-विमलगणिए वि सं १६३४ मां वर्षे आ टीकानी रचना करी हती अत्रे तेमनी विस्तृत पट्टपरम्परा ग्रंथवृद्धिना भयथी रजु नहि करतां अमारी मान्य राखेल पट्टपरंपरानो क्रम नीचे प्रमाण जणाव्यो छे

१ चरमजिनपति श्रीवर्द्धमानस्वामीजी
२ श्रीसुधर्मस्वामीजी
३ श्रीजंबूस्वामीजी
४ श्रीप्रभवस्वामीजी
५ श्रीशय्यंभवसूरिजी
६ श्रीयशोभद्रसूरिजी
७ श्रीसंभूतिविजयजी अने श्रीभद्रबाहुस्वामीजी
८ श्रीस्थूलिभद्रजी
९ श्रीआर्यमहागिरिजी ने श्रीआर्यसुहस्तिसूरिजी
१० श्रीसुस्थितसूरिजी श्रीसुप्रतिबद्धसूरिजी
११ श्रीइन्द्रदिन्नसूरिजी
१२ श्रीदिन्नसूरिजी
१३ श्रीसिंहगिरिजी
१४ श्रीवज्रस्वामीजी
१५ श्रीवज्रसेनसूरिजी
१६ श्रीचन्द्रसूरिजी
१७ श्रीसामंतभद्रसूरिजी
१८ श्रीवृद्धदेवसूरिजी
१९ श्रीप्रद्योतनसूरिजी
२० श्रीमानदेवसूरिजी

रिजी

२४ श्रीदेवानदसूरिजी
२५ श्रीविक्रमसूरिजी
२६ श्रीनरसिंहसूरिजी
२७ श्रीसमुद्रसूरिजी
२८ श्रीमानदेवसूरिजी
२९ श्रीविबुधप्रभसूरिजी
३० श्रीजयानंदसूरिजी
३१ श्रीरविप्रभसूरिजी
३२ श्रीयशोदेवसूरिजी
३३ श्रीप्रद्युम्नसूरिजी
३४ श्रीमानदेवसूरिजी
३५ श्रीविमलचन्द्रसूरिजी
३६ श्रीउद्योतनसूरिजी
३७ श्रीसर्वदेवसूरिजी
३८ श्रीदेवसूरिजी
३९ श्रीसर्वदेवसूरिजी
४० श्रीयशोभद्रसूरिजी }
श्रीनेमिचद्रसूरिजी }
४१ श्रीमुनिचद्रसूरिजी
४२ श्रीअजितदेवसूरिजी
४३ श्रीजयसूरिजी
४४ श्रीसोमप्रभसूरिजी }
श्रीमणिरत्नसूरिजी }
४५ श्रीजगचंद्रसूरिजी
४६ श्रीदेवेंद्रसूरिजी }
श्रीविद्यानदसूरिजी }
४७ श्रीधर्मघोषसूरिजी
४८ श्रीसोमप्रभसूरिजी
४९ श्रीसोमतिलकसूरिजी
५० श्रीदेवसुन्दरसूरिजी
५१ श्रीसोमसुदरसूरिजी
५२ श्रीमुनिसुदरसूरिजी
५३ श्रीरत्नशेखरसूरिजी
५४ श्रीलक्ष्मीसागरसूरिजी
५५ श्रीसुमतिसाधुसूरिजी
५६ श्रीहेमविमलसूरिजी
५७ श्रीआनदविमलसूरिजी
५८ श्रीविजयदानसूरिजी
५९ श्रीहीरविजयसूरिजी
६० श्रीविजयसेनसूरिजी



गारत्थिय वा वाएइ वायंत वा साइज्जइ । इत्यादि० आ वाक्यनी चूर्णिमां जणाव्युं छे के-जे साधु-साध्वी अन्यमतिने, अल्पबुद्धिवाळा स्वधर्मीय गृहस्थने वाचना आपे वा ते वाचना आपनारने सारा कहे तो चार लघुमासी प्रायश्चित्तने पात्र थाय वळी जो पासत्थाने, ओसन्नाने, कुशीलीयाने, संसक्तने, सूत्रनी वाचना आपे तो पण चारमासी लघु दंड अने अर्थनी वाचना आपे तो चारमासी गुरु दंड आवे यथाच्छंदने सूत्रवाचना आपे तो चारमासी गुरुदंड अने अर्थनी वाचना आपे तो छमासी लघु दंड आवे आ सूत्रमां अपवाद दर्शावता कहे छे के-कोई श्रावक दीक्षा लेवा तैयार थया होय तो तेने छजीवणिया अध्ययनथी पिण्डैषणा सुधी वाचना आपवी, उत्सर्ग मार्गे तो श्रावकने वाचना आपवानो नथी

आ गच्छाचार पयन्नाना श्रवणथी, तेना मननथी अने परिशीलनथी साधु साध्वीओ जो पोताना आचार सम्यग्रीतिमां परिणमावे तो स्वकल्याणकारक थवा उपरांत परहित करवामां पण समर्थ बने

आ गच्छाचारपयन्नानी टीका तपागच्छरूपी गगनमां सूर्य समान भट्टारकपुरंदर श्रीआणंदविमलसूरीश्वरजीना चरणकमळसेवी (शिष्य) श्रीविजयविमलगणिए करेल छे गच्छाचार टीकानुं प्रमाण ५८५० श्लोक छे श्रीविजयविमलगणिए वि. सं. १६३४ मा वर्षे आ टीकानी रचना करी हती अत्रे तेमनी विस्तृत पट्टपरम्परा ग्रन्थवृद्धिना भयथी त्यजी दईने फक्त अमारी मान्य राखेल पट्टपरंपराना क्रम नीचे प्रमाणे जणाव्या छे

१ चरमजिनपति श्रीवर्द्धमानस्वामीजी
२ श्रीसुधर्मस्वामीजी
३ श्रीजम्बूस्वामीजी
४ श्रीप्रभवस्वामीजी
५ श्रीशय्यंभवसूरिजी
६ श्रीयशोभद्रसूरिजी
७ श्रीसंभूतिविजयजी अने श्रीभद्रबाहुस्वामीजी
८ श्रीस्थूलिभद्रजी
९ श्रीआर्यमहागिरिजी ने श्रीआर्यसुहस्तिसूरिजी
१० श्रीसुस्थितसूरिजी श्रीसुप्रतिबद्धसूरिजी
११ श्रीइन्द्रदिन्नसूरिजी
१२ श्रीदिन्नसूरिजी
१३ श्रीसिंहगिरिजी
१४ श्रीवज्रस्वामीजी
१५ श्रीवज्रसेनसूरिजी
१६ श्रीचंद्रसूरिजी
१७ श्रीसामंतभद्रसूरिजी
१८ श्रीवृद्धदेवसूरिजी
१९ श्रीप्रद्योतनसूरिजी
२० श्रीमानदेवसूरिजी
२१ श्रीमानतुंगसूरिजी
२२ श्रीवीरसूरिजी
२३ श्रीजयदेवसूरिजी

२४ श्रीदेवानंदसूरिजी
२५ श्रीविक्रमसूरिजी
२६ श्रीनरसिंहसूरिजी
२७ श्रीसमुद्रसूरिजी
२८ श्रीमानदेवसूरिजी
२९ श्रीविबुधप्रभसूरिजी
३० श्रीजयानंदसूरिजी
३१ श्रीरविप्रभसूरिजी
३२ श्रीयशोदेवसूरिजी
३३ श्रीप्रद्युम्नसूरिजी
३४ श्रीमानदेवसूरिजी
३५ श्रीविमलचन्द्रसूरिजी
३६ श्रीउद्योतनसूरिजी
३७ श्रीसर्वदेवसूरिजी
३८ श्रीदेवसूरिजी
३९ श्रीसर्वदेवसूरिजी
४० श्रीयशोभद्रसूरिजी }
श्रीनेमिचद्रसूरिजी }
४१ श्रीमुनिचद्रसूरिजी
४२ श्रीअजितदेवसूरिजी
४३ श्रीविजयसिंहसूरिजी
४४ श्रीसोमप्रभसूरिजी }
श्रीमणिरत्नसूरिजी }
४५ श्रीजगच्चंद्रसूरिजी
४६ श्रीदेवेंद्रसूरिजी }
श्रीविद्यानन्दसूरिजी }
४७ श्रीधर्मघोषसूरिजी
४८ श्रीसोमप्रभसूरिजी
४९ श्रीसोमतिलकसूरिजी
५० श्रीदेवसुन्दरसूरिजी
५१ श्रीसोमसुन्दरसूरिजी
५२ श्रीमुनिसुन्दरसूरिजी
५३ श्रीरत्नशेखरसूरिजी
५४ श्रीलक्ष्मीसागरसूरिजी
५५ श्रीसुमतिसाधुसूरिजी
५६ श्रीहेमविमलसूरिजी
५७ श्रीआनन्दविमलसूरिजी
५८ श्रीविजयदानसूरिजी
५९ श्रीहीरविजयसूरिजी
६० श्रीविजयसेनसूरिजी

प्रशस्ति.—

श्रीमत्सौधर्मगच्छः प्रवरमतियुतः कल्पवृक्षः प्रतीतो,
गच्छाचारैकचारप्रशमरसधरः सूरिमुख्यो विशालः ।
संसारोन्मूलनेभश्रमणगणशुभः शान्तिचारु प्रफुल्लः,
सोऽयं सौधर्मगच्छो जयति जगति वो बोधिबीजं तनोतु ॥१॥
तद्गच्छे सूरिराजा वरचरणधरा भूरिभूता यतीशाः,
पारम्पर्येण जातस्तपविरुदधरो विश्वसौभाग्यरूप ।
चञ्चच्चन्द्राभचन्द्रस्तपगणगगनेऽभूज्जगच्चन्द्रसूरि,
कस्मिंश्चित्पट्टयाते यवनवरपतिज्ञानहीराख्यसूरिः ॥ २ ॥
केचित्पट्टाश्च जाताः प्रकटसुरसमो देवसूरिर्बभूव,
तस्माच्छ्रीरत्नसूरिः सकलमतविदो यक्षनाथैः सपूज्यः ।
तच्छिष्यो निष्कलङ्को विविधतपधरः श्रीक्षमासूरिरासीत्,
तत्पट्टे लोकशास्ता सुविहितमुनिराट् श्रीदेवेन्द्रसूरिः ॥३॥
तत कल्याणसूरिर्वो, मुनीशो मोहनाशकृत् ।
प्रमोदविजयाचार्यः, साधुसम्पत्सुशोभितः ॥ ४ ॥
शिष्येणाखिलबोधाय, कृता राजेन्द्रसूरिणा ।
गच्छाचारस्य भाषेयं, सञ्चरेद्धि सतां हृदि ॥ ५ ॥
सुशोधिता सुधियैषा, धनविजयादिमुनिवरेण तथापि हि ।
दोषस्थापनपटुभिः, शोधनीया समयसुविज्ञैः ॥ ६ ॥
वेदवेदाङ्कचन्द्रेऽब्दे, पौषशुभ्रे तथोत्तमे ।
पञ्चमीविधुवारे च, सम्पूर्णाऽभूदियं शुभा ॥ ७ ॥

रणे सुश्रमोऽकारि, चास्य ग्रन्थस्य शोधने ।
विजयायगुलाबादि-चतुष्टयेन साधुना ॥ ८ ॥

त्ताग्रे द्विसहस्राब्दे, वैशाखे चाऽर्बुदोपरि ।
प्रसादादादिनाथस्य, ग्रन्थोऽय पूर्णमाप्तवान् ॥ ९ ॥

जे सौभाग्यशाळी सौधर्मगच्छ विशिष्ट बुद्धिवाळो, कल्पवृक्ष समान, छना आचारोनु पालन करवामा ने प्रशमरस-समतामात्रने धारण करवावाळो, म सूरिमहाराजाओना परिवारवाळो, विशाळ, ससाररूपी वृक्षनु छेदन करवामां ती समान, साधु-श्रमण समूहनी शोभावाळो, मनोहर शातरस पधान अने करसर छे तेमज विश्वमा विजयरत वर्ते छे ते श्रीसौधर्मगच्छ तमारा धिबीज(समकित)ने विस्तार करो. १

ते गच्छमां श्रेष्ठ चारित्रने पाळनारा घणा आचार्य थई गया. तेओनीज परामां 'तपस्वी' एटले तप बिरुदवाळा, विश्वने विषे सौभाग्यशाळी, तपगच्छ गगनप्रदेशमा चद्रनी जेम प्रकाशित श्रीजगचद्रसूरि थया. त्यार बाद लाक पट्टधरो थया बाद यवनराज(मोगल शहेनशाह अकबर)ने प्रतिबोध देनार विजयहीरसूरीश्वर थया २

त्यारबाद केटलाक पट्टधरो थया पछी साक्षात् देवसमान स्वरूपवाळा श्री देवसूरि थया तेमनी पाटे सकल मतोने जाणनार अने यक्षराजोथी पल श्रीविजयरत्नसूरि थया तेमना पाटे निर्मळ चारित्रवाळा, विविध रनी तपश्चर्या करनारा शिष्य श्रीविजयक्षमासूरि थया. तेमनी पाटे लोको र प्रभाव पाडनारा, सुविहितोमां अग्रणी पडित श्रीविजयदेवेन्द्रसूरि थया ३

त्यारबाद मोहराजानो पराभव करनार (निर्मोही) श्रीविजयकल्याणसूरि . तेमनी पाटे साधुगुणरूप सपत्तिथी विभूषित श्रीविजयप्रमोदसूरि थया ४

ते श्रीविजयप्रमोदसूरिजीना शिष्य आचार्य श्रीविजयराजेन्द्रसूरि थया णे समस्त लोकना बोधन माटे आ गच्छाचार प्रकीर्णकनु विवरण कर्यु त सज्जन पुरुषोना हृदयमा सचार पामो-सारी रीते प्रवेश पामो ५

आ ग्रंथनु वाचनाचार्य बुद्धिमान् श्रीधनविजयादि मुनिवर्गे संशोधन क
छे, तो पण दोष निकालवामां अने दोषोनी स्थापना करवामां पण चतुर
सिद्धांतोने जाणनारा एवा विज्ञ पुरुषोए आ ग्रन्थमां कई पण स्खलना-दोष जण
तो सुधारी लेवा कृपा करवी. ६

वि. सं. १९४४ ना पौष शुदि पांचम ने सोमवारना दिवसे आ सुंदर
भाषाग्रंथ पूर्ण करवामां आव्यो ७

आ ग्रंथनु प्रूफ आदि संशोधन करवामां तेमज मुद्रणकार्य कराववामां
श्रीगुलाबविजयादि चार मुनिवरोए सारो प्रयास करेल छे ८

संवत् २००२ ना वैशाख मासमां श्रीअर्बुदाचल ऊपर विराजमान आदि
तीर्थपति भगवान श्रीआदिनाथजीनी कृपाथी तेमनी यात्रामां ज आ ग्रंथ
मुद्रणकार्य संपूर्ण थयुं छे. ९

इति श्रीगच्छाचारप्रकीर्णस्य टीकानुसारेण श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरिणा भाषा कृत
वाच्यमाना श्रेयस्करी भूयात् ॥
सर्वत्र श्रीशुभं भवतु ॥

